



सिद्धोऽस्मिमुक्तोऽस्मिपूर्णोऽस्मिपूर्णतयाऽक्षतिः । अक्षरश्चप्रमाणात्मानन्दवर्तिसाक्षिदृष्टिपः ॥





❀ श्री ❀

वेदांत सिद्धांत मुक्तावली

की

भाषा टीका

तथा मूल कारिका की भाषाटीका

जिसको

श्रीमत्साधुगुरदित्तसिंहजी ने निर्माण किया

और

श्रीमत्साधु मुकन्दसिंहजीने संशोधन कर

लवपुरस्य-पञ्जाब प्रिंटिंगवर्क्स यन्त्रालय में मुद्रित कराकर

प्रसिद्ध किया ।

❀ सं० वि० १९७१ ❀

॥ ओ३म् ॥

विदित हो कि श्री वेदान्त सिद्धान्त मुक्तावली की अद्भुत भाषा को श्रवण कर कितनेक धर्मात्मा पुरुषों को यह संकल्प हुआ कि यह मनोहर पुस्तक सर्व महात्मा तथा सत्संगी जनों के लाभ अर्थ किसी यंत्रालय में मुद्रित होना चाहिये ऐसे उनके संकल्प अनुसार उनही के द्रव्य से योग्य अधिकारियों को धर्म अर्थ देनेके लिये यह पुस्तक लवपुरस्थ "पंजाब प्रिंटिङ्ग वर्क्स" यंत्रालय में मुद्रित कराकर प्रसिद्ध किया गया। उन सबके यह निम्न लिखित नाम हैं :—

१—श्रीमान् भाई उत्तमसिंह ईश्वरसिंहजी दुभेरन ग्राम निवासी ॥

२—श्रीमान् सरदार नंदलालजी दुभेरन ग्राम निवासी ॥

३—श्रीमान् राय राजारामजी सब-जज कसबा मंगोवाल निवासी॥

४—श्रीमान राय शंकरदासजी अफ़सरमाल अमृतसर निवासी ॥

५—श्रीमान लाला हरनामदासजी तहसीलदार लवपुर निवासी॥

६—श्रीमान् महन्त रामसिंहजी बरयांहवाले अमृतसर निवासी ॥

७—श्रीमान् लाला जगतरामजी आनरेरी मुजिस्ट्रेट अमृतसरनिवासी

कवित्त--उत्तमेशहरीरामप्रियवितवंतजानसिरीवंतकृपनकेनामहियेजानिये
रायराजारामपुन जगतकेराममिल हरिनामदास जगउत्तम बखानिये
निरमलमहानश्रीरामहरिजगजान शंकरकेदास ईशमालकोपछानिये
इनींसज्जनानमिलकियोसुज्ञानहितसज्जनसमाजहियमांहियहमानिये॥

(ले०) (ग्रंथकर्ता)

॥ ओ३म् ॥

अथश्री वेदान्त सिद्धांत मुक्तावली भाषापूर्वार्द्धगत विषयानुक्रमणिका ।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ

(इति उत्तरार्द्धम्)

अथ मूलकारिकाकी भाषा टीका

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता ॥

❁ ओ३म् ❁

भूमिका

इस संसार मंडल में महा मोह रूप महान् शत्रु को तथा तिसकी कामादिक सैना को समूल नाश करने वाला विचार जन्य ब्रह्मात्मा का अभेदज्ञान एक ही अतिरथि योधा समर्थ है। जिसके होने से सत् ब्रह्म भाव की प्राप्ति तथा जिसके न होने से महान् हानि की प्राप्ति श्रुति भगवती बोधन करती है ॥ तथाहि—

इहचेदवेदीदथ सत्य मस्तिनचे दिहवेदीन् महति विनष्टिः के० उ० ॥ २ ॥ ११

अ०—इस लोक में यदि यह मनुष्य ब्रह्म को अपना आत्मा रूप कर साक्षात्कार करता है तो सत्य ब्रह्म स्वरूप ही होता है। और यदि इसलोक में यह मनुष्य ब्रह्म को अपना आत्मा रूप कर नहीं जानता तो जन्मादि रूप अनंत विस्तार वाली हानि को प्राप्त होता है ॥ इति ॥ और तिस अभेद ज्ञान को सर्व अनर्थ का बाधकपना तथा मोक्ष का साधकपना यह अर्थ भी श्रुति भगवती ने बोधन किया है तथाहि—

तमेव विदित्वाति मृत्यु मेतिनान्यः पन्था विद्यते ऽयनाय ॥ श्वे० ३ । ६ । १५

अ०—तिस ब्रह्म को अपने आत्मा से अभिन्न जानकर ही यह पुरुष अज्ञान तत्कार्य को बाध करता है। इसलिये मोक्ष के अर्थ अन्य कोई साधन नहीं किंतु ब्रह्मात्मा का अभेद ज्ञान ही एक साधन है ॥ इति ॥ याते जो अधिकारी मनुष्य अभेद ज्ञानरूप अतिरथि योधा की शरण को प्राप्त होता है। अर्थात् साधन संपत्ति से अपने अन्तःकरण में तिसको संपादन करता है सो अधिकारी महामोह रूप शत्रु को सैना के सहित समूल नाश करके अमृत भाव रूप मोक्ष को प्राप्त होता है। यह अर्थ भी श्रुति में प्रसिद्ध है—

ज्ञात्वा देवं सर्वपाशा ऽपहानिः ॥ श्वे०उ०॥१॥११॥
ये पूर्वं देवा ऋषयश्च तद्विदुस्ते तन्मया अमृतावे बभूवुः ॥ श्वे०॥५॥६॥

अ०—स्वप्रकाश ब्रह्मको अपने से अभिन्न साक्षात्कार करकरके यह अधिकारि। अविद्यादिपंच क्लेशरूप पाशोंको अत्यंतनाशकरता है। और पूर्वकाल में जिसदेवता तथा ऋषियों मनुष्यादि ने तिस ब्रह्मको अपना आत्माजाना वह सर्व ही मृत्यु से रहित ब्रह्मभाव रूपमोक्ष को प्राप्तहूए इति। और जिस आत्मज्ञान कामहान् प्रभाव देवराजइन्द्र ने महाराज प्रतर्दन के प्रति कथन किया है और मनुष्यों के प्रति अत्यंत हिततमरूप कर जिसका वर्णन किया है। यह वार्ता कौषीतिकी उपनिषद् मे प्रसिद्ध है। और श्री वसिष्ठ भगवान् जी ने श्री रामचन्द्र जी के प्रति जिस अभेद ज्ञानका ही वारंवार उपदेश किया है। तथा श्री मद्भगवद्गीता मे श्री कृष्ण भगवान्

जी ने अनेक प्रकार से जिस अभेद ज्ञान का प्रशंसन किया है ॥ और इस कलियुगमे होने वाले श्री शंकराचार्य्य तथा श्री गुरु नानक देव आदिक सर्वज्ञ महापुरुषों ने भी अभेद ज्ञान ही मोक्ष का साधन अनेक विध से निरूपण किया है ॥ इस प्रकार श्रुतिस्मृति इति हास पुराण तथा सर्वज्ञ पुरुषों को संमत वह अभेद ज्ञान ही मोक्ष के अर्थ मुमुक्षु जनों को अत्यंत यत्न से संपादन करने योग्य है । और भेद ज्ञान दूर से ही त्यागने योग्य है । क्योंकि भेद अनर्थ का हेतु है । तथा हि–

यदाह्येवैषएतस्मिन्नुदर मन्तरं कुरुते अथ तस्य भयं भवति ॥ तै० उ० ब्र० अ० ७॥

सर्वंतंपरादाद्यो ऽन्यत्रात्मनः सर्वं वेद ॥

ब्र० उ० मै० ब्रा०

अ०–जिस काल में यह पुरुष इस ब्रह्मात्मा में अल्प मात्र भी भेद देखता है तिस को भेद दर्शन से अनंतर भय अर्थात् जन्मादि अनर्थ की प्राप्ति होती है । और सर्व ही तिस का तिरस्कार करते हैं । जो सर्व को अपने आत्मा से भिन्न जानता है ॥ इति ॥ इत्यादिक अनेक श्रुतियोंने भेदको अनर्थ की हेतुता प्रतिपादन की है । और पक्षपात से रहित होकर यदि विचार किया जाए तो व्यवहार भूमि में भी भेद दर्शन अनर्थ का हेतु है परमार्थ में भेद दर्शन को अनर्थ की हेतुता में तो क्या ही कथन करना है । ॥ तथाहि ॥ यदि राजा मंत्री को अथवा मंत्री राजा को अपने आत्मा से भिन्न जानता है तो दोनो द्वेष को प्राप्त होकर राज्य

संपदा से भ्रष्ट होजाते हैं और गृहस्थ में पति स्त्री को अथवा स्त्री पति को यदि अपने आत्मा से परस्पर भिन्न जानते हैं तो तिस द्वैत दर्शन से वह दोनो सांसारिक सुख से भ्रष्ट होजाते हैं। तैसे सूक्ष्म शरीर गत इन्द्रिय तथा मन एक भाव को यदि न प्राप्त हों तो वह किसी रूपादिक विषय के ज्ञान को नहीं प्राप्त हो सकते! और स्थूल शरीर गत वात पित्त कफ यह तीनों दोष जब समता को त्याग विषमता रूप भेद को पाते हैं तब अनेक रोगों कर यह शरीर पीडित होता है। बहुत क्या कहें अद्वैत के आश्रयण से बिना कोई व्यवहार नहीं सिद्ध हो सकता। इस प्रकार व्यवहार दशा में भेद दर्शन अनर्थ का कारण है। और आत्मा से ब्रह्म का भेद दर्शन तो महान् जन्मादि अनर्थ का हेतु है इस कारण से अनर्थकारि भेद भ्रम को त्याग कर अभेद साक्षात्कार मुमुक्षु पुरुषों को अवश्य संपादनीय है यह सिद्ध हुआ। तिस अभेद ज्ञान के दो साधन श्रुति में प्रसिद्ध हैं। तथाहि–

तत्कारणं सांख्य योगाधि गम्यं॥ श्वे० उ० ६।१३।

अ०–वह प्रकृतकारणता उपलक्षित ब्रह्म सांख्य तथा योग करके विद्या द्वारा प्रत्यक रूपता से प्राप्त होने योग्य है। और श्री कृष्ण भगवान् जी ने भी यह दो ही साधन अर्जुन के प्रति निरूपण किये हैं॥ तथाहि॥—

यत् सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते॥

भ० गी० ५।५

एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विंदते फलम् ॥
गी० ५ । ४ ।

अ०—जिस ब्रह्म को अपना आत्मारूप कर विद्या द्वारा सांख्यी अर्थात् श्रवणादिकों के अनुष्ठान करने वाले पुरुष प्राप्त होते हैं । तिसी ब्रह्म स्वरूप को योगी अर्थात् निर्गुण ध्यान करने वाले पुरुष भी प्राप्त होते हैं । इन दोनों साधनों में किसी एक को भी सम्यक अर्थात् सांगोपांग अनुष्ठान करता हुआ पुरुष दोनों के फल को अर्थात् मोक्ष को विद्या द्वारा प्राप्त होता है ॥ इति ॥ यद्यपि इस वाक्य में योगपद को निर्गुण ध्यान परता नहीं सिद्ध होसकती । क्योंकि गीताभाष्य में भाष्यकारों ने तिस पदको कर्म योग परताकर व्याख्यान किया है । तिन से विरोध होगा । तथापि योग पद को ध्यान में रूढ होने कर वास्तव से कर्म परता का अभाव है ॥ और इस वचन के मूलभूत पूर्व उदाहरण की हुई श्रुति मे योग पद का ध्यान अर्थ भाष्यकारों ने शारीरक भाष्य मे कथन किया है इस कारण से इस गीता वाक्य में भी योग पदध्यान का ही वाचक है । और कर्मयोग को मुख्ययोग अर्थात् निर्गुण ध्यान द्वारा ब्रह्मज्ञान की साधनता है । साक्षात् साधनता नहीं । इस अर्थ के बोधन करने के लिये कर्म विषयक योगपदका प्रयोग श्रीभगवान् जीका तथा तिसके अनुसारी भाष्यकारों का व्यख्यान कर्मपरता से संभवता है । याते तिनसे किंचित् भी विरोध नहीं । और गीता के त्रयो दशेअध्याय मे *श्रीभगवान् जीने स्पष्ट ही आत्मविद्या* के दोनो साधन विकल्प करके निरूपण किये हैं ॥ तथाहि ॥

ध्यानेनात्मनि पश्यंतिकेचिदात्मान मात्मना ।
अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे ॥

भ० गी० १३ । २४ ।

अ० । शब्दादिक विषयों से श्रोत्रादिक इन्द्रियों को मनमे उपसंहार करके और मन को ब्रह्मात्मामे उपसंहारकर एकाग्रता से जोचिंतन है अर्थात् तैल धारांकी न्याई निरंतर विच्छेद रहित प्रत्ययों का नाम ध्यान है ।।तिस ध्यान करके योग मार्ग मे निष्ठा वाले कोईक अधिकारि अपने अंतःकरण मे ध्यान संस्कृत मन से आत्मा को ब्रह्मरूप कर साक्षात्कार करते हैं । और यह सत्व रज तम तीनों गुण तथा तिनके कार्य्य मुझ आत्मा के दृश्य हैं और मै गुण तथा तिनके कार्य्यों से भिन्न तिनके व्यापार का साक्षि नित्य गुणों से विलक्षण ब्रह्मस्वरूप हूं । इस प्रकार के विचार का नाम सांख्य है । तिस सांख्य योग करके सांख्य मार्ग में निष्ठा वाले कोईक अधिकारि अपने अंतःकरण में विचार संस्कृत मन से आत्मा को ब्रह्म रूपता से साक्षात्कार करते हैं । और कोईक अधिकारी कर्म योग से अंतस्करण की शुद्धि द्वारा सांख्य अथवा योग मार्ग मे आरूढ होकर आत्मा को देखते हैं । इति ।। कोईक सज्जन योग मार्ग के अत्यंत प्रेमी सांख्य मार्ग को भी योग के अंतः पाति ही निरूपण करके योग मार्ग से विना आत्म साक्षात्कार का असंभव कथन करते हैं । परंतु यदि पक्षपात से रहित होकर पूर्व उक्त वाक्यों को तथा इनके सदृश और अनेक वाक्यों को अवलोकन किया जाय तो योग की

न्याई सांख्य नाम वेदांत विचार स्वतंत्र आत्म साक्षात्कार का साधन है। और श्रीवसिष्ट भगवान् जी ने वासिष्ट ग्रंथ मे बाहुल्यता से विचार को ही आत्मज्ञान की हेतुता निरूपण की है। तिन के कितनेक वचन यहां पर इसी अर्थ के बोधक लिखे जाते हैं।

सामान्येन विचारेण क्षयमायाति दुष्कृतं।
योग्य वाक्य विचारेण कोनयाति परं पदम्।

उ० प्र० स० ८। ४१

अ०—यदि सामान्य से वेदांत विचार कर पाप नाश को प्राप्त होता है। तो अभेद बोधक वाक्यों के विशेष विचार से कौन अधिकारि परम पद को नहीं प्राप्त होता किंतु अवश्य प्राप्त होता है। इसी अर्थ को स्पष्ट करते हैं।

अज्ञान मुच्यते पापं तद्विचारेण नश्यति।
पाप मूलच्छिदं तस्माद्विचारं न परित्यजेत्।

स० ८। ४२

अ०—सर्व पापों का हेतु होने से यहां अज्ञान को ही बुद्धिमानों ने पाप कहा है वह अज्ञान वेदांत विचार कर नाश होता है। तिस से पापों का मूल अज्ञान जिस विचार से विद्या द्वारा बाधित हो जाता है। तिसी कारण से यह अधिकारि विचार को कभी न त्यागे। तथा—

बलिवत् प्रविवेकेन नित्योहमिति निश्चयात्
पदमासादयाद्भूतं पौरुषेणीवराधव। उ० स० २६। ४०।

अ०—हेराम बलि की न्याईं पुरुषप्रयत्न से तीक्ष्ण विवेक कर मैं नित्य ब्रह्मस्वरूप हूं ऐसा निश्चय उत्पन्न होता है तिससे तुम अद्वैत पदमोक्ष को संपादन करो। तथाहि—

सर्वसंभ्रम संशांत्यै परमाय फलाय च।
ब्रह्म विश्रांति पर्य्यंतो विचारो ऽस्तुतवानघ।

अ०—हे निष्पाप श्रीराम सर्व भ्रमों को अत्यंत नाशकरने के लिये और परमफल अर्थात् मोक्ष के लिये और ब्रह्म मे विश्रांति पर्य्यंत तुझको विचार ही करने योग्य है। तथाहि—

नास्त्यविद्येति संजाते निश्चये शास्त्र युक्तितः
गलत्यविद्या तापेन तुषार कणिका यथा

उ० स० ३७।४०

अ०—शास्त्र तथा युक्ति से अविद्या तत्कार्य तीनो काल मे मुझ ब्रह्मात्मा मे नहीं है ऐसा निश्चय उत्पन्न हूए यह अविद्या कार्य सहित बाधित हो जाती है। जैसे सूर्य्य के तेज से हिमकाकण विनाश होजाता है। और—

विचारोत्थात्म विज्ञानं ज्ञान मंगविदुर्बुधाः

स० ६३।२१

अ०—हे प्रिय श्रीरामजी वेदांत विचार से उत्पन्न हूआ जो अपरोक्ष ज्ञान है तिसी को तत्त्वदर्शी महात्मा ज्ञान कहते हैं। तिस विचार का ही अभ्यास सर्वदा करना योग्य है यह कहते हैं॥

अश्नन्गच्छन्स्वपंस्तिष्ठन्नितिराघवचेतसा ।
सर्वत्रप्रज्ञयातज्ज्ञः प्रत्यहंप्रविचारयेत् ॥
उ० स० ८१ । १७ ॥

अ०॥ हे श्रीरामब्रह्मतत्त्वकाजिज्ञासुशुद्धचित्ततथा एकाग्रबुद्धि से सर्वदेशोंमे तथा सर्वकालोंमे अर्थात् भोजन करता हूआ तथा गमनकरताहूआ औ शयनकरताहूआ तथास्थितहूआ निरंतरब्रह्मात्मा का विचार करे । इति और—

अथातोब्रह्मजिज्ञासा—

इस वेदान्त शास्त्र के आदि सूत्र में श्रीवेदव्यासजी ने भी ब्रह्मज्ञानके अर्थ वेदान्त विचारही विधान किया है और महाभारत के शांति पर्वगत मोक्ष धर्म में स्वपुत्रके प्रति तिन्होंने दोनों मार्ग पृथक् निरूपणकरके सांख्यमार्गकोयोगसेश्रेष्ठताकथनकीहै । तथाहि

सांख्ययोगौतुयावुक्तौमुनिभिः समदर्शिभिः ।
मार्गौतावप्युभावेतौसंश्रितौ न च संश्रुतौ ॥
मो० अ० १९६ । ८

अ० ॥ ब्रह्मदर्शनसम्पन्न मुनियोंने सांख्य तथायोग यह दोनों जो मार्ग कथनकियेहैं । वह दोनों ही मार्ग मुमुक्षुपुरुषोंने आत्म-साक्षात्कारके अर्थसम्यक् आश्रयणकियेहैं । तिनदोनोंमें सांख्यमार्ग में जपादिक्रियाका विधाननहीं । इसप्रकार दोनोंमार्गोंकोकथनकरके सांख्य तथायोगके अनुष्ठाता पुरुषोंके लक्षण और तिनकोब्रह्मविद्या द्वारा मोक्षकालाभ कथनकरके सांख्यमार्गको योगमार्गसे श्रेष्ठकथन किया । तहां नीलकंठी टीका ॥

सांख्ययोगपक्षयोर्मध्येसांख्यमेवश्रेय इत्याह ।
अथेति ॥

अ० ॥ सांख्य तथायोग इनदोनोंपक्षोंमें सांख्यही बुद्धिमान् पुरुषको आत्मज्ञान द्वारामोक्षका श्रेष्ठसाधनहै । यहअर्थअगलेश्लोक में कहते हैं ॥

अथज्ञानप्लवांधीरोगृहीत्वाशांतिमात्मनः ।
उन्मज्जंश्चनिमज्जंश्चज्ञानमेवाभिसंश्रयेत् ॥

अ० ॥ गुरुके उपदेशसे अनन्तर यहविवेकादि साधन सम्पन्न पुरुष अपने मोक्षका साधन ज्ञानाभ्यासरूपनावको ग्रहणकरकेविषय रूप संसार सागर में ऊर्द्ध्व अधः को प्राप्तहोताहुआज्ञानाऽभ्यासको ही सम्यक् आश्रयणकरे ॥

और सिद्धांतलेशकेसंग्रहकर्ताअप्पयदीक्षित आचार्यनेप्रथम श्रवणादिरूपसांख्यमार्गकोनिरूपणकरकेपश्चात्योगमार्गकानिरूपण किया और तिसयोगमार्गके निरूपणकीसमाप्तिमें यह कथन किया–

इयांस्तुविशेषः प्रतिबंधरहितस्यपुंसः श्रवणादि प्रणाड्याब्रह्मसाक्षात्कारोझटितिसिद्ध्यति इतिसांख्य मार्गोमुख्यः कल्पः । उपास्त्यातुविलंबेन इतियोग मार्गोऽनुकल्पः ॥ सि० ले० प० ३

अ० ॥ परन्तु योगमार्गसे सांख्यमार्गमें इतनी विशेषताहै कि बुद्धिमंदतादिप्रतिबंधसे रहितपुरुषको श्रवणादिकों की परंपरासे ब्रह्म साक्षात्कारशीघ्रसिद्धहोताहै । यातेसांख्यमार्गही प्रधान्यतासेअनुष्ठान करने योग्य है और निर्गुणध्यानसे विलंबकरके ब्रह्मसाक्षात्कारसिद्ध

होताहै।यानेयोगमार्गअनुकल्पहैअर्थयहकि सांख्यकेअलाभहूएपश्चात् योगअनुष्ठानकरनेयोग्यहै। इसप्रकारशीघ्रसिद्धिकाहेतुसांख्य मार्गही मुमुक्षुवोंको अनुष्ठानकरनेयोग्यहै। औरजिसअधिकारिकीरुचियोग मार्गमेंहो यह तिसीकाअनुष्ठानकरेइसमें कुछ आग्रहनहीं॥ क्योंकि रुचियोंकीविचित्रता है। दोनोंका फलएकहीआत्मसाक्षात्कारहै।याते दोनोंमेंसेजिसमार्ग में रुचिहोउसीकोश्रद्धापूर्वकअनुष्ठानकरे। केवल दोनों मार्गोंकीवार्तामें कुशलपुरुषफलको नहींपाता! फलतो किसी एक साधनके अनुष्ठानसेही होगा। यातेतिनके अनुष्ठान परायण मुमुक्षुको होनाउचितहै॥ इति॥ पूर्व श्रेष्ठ रूपताकर कथन किया जो सांख्यमार्गहै तिसमेंयहभीविचारणीयहै। बहुतआचार्योंकेमतमें तो श्रवणमनन निदिध्यासनइनतीनोंका नामसांख्यहै। तथाविचार भी इनतीनोंकोहीकहतेहैं।औरवार्तिककारसुरेश्वराचार्योंकेमतमेंश्रवण तथामननकोहीसांख्ययाविचारकहाहै॥ तथाहि॥बृहदारण्यकउपनिषद् के चतुर्थतथाषष्ठाऽध्यायगत मैत्रेयीब्राह्मणमें यहपठनकियाहै—

आत्मावा अरेद्रष्टव्यः श्रोतव्योमंतव्योनिदि-ध्यासितव्यः॥

तिसकेअनंतरचतुर्थाऽध्यायगत मैत्रेयीब्राह्मणमेंयहपठनकिया—

आत्मनोवा अरे दर्शनेनश्रवणेनमत्याविज्ञानेन।

और षष्ठाध्याय गत मैत्रेयी ब्राह्मण में यह पठनकिया—

आत्मनिखल्वरे दृष्टेश्रुते मते विज्ञाते।

तहां यह शंका रूप वार्तिक वचन है =

अनुवादेयथोक्तानांप्रक्रांतेदर्शनादिषु।

विज्ञानेनेत्ययथकथंनिदिध्यासनमुच्यते ॥ १ ॥

अ०—"आत्मा वाअरेदृष्टव्यः"

इत्यादि श्रुतिसे कथनकियेहुए दर्शनादिकोंकाअनुवादप्राप्तहुए तिन दर्शनादिकोंके मध्यश्रवणकिया जो निदिध्यासनहै । सोविज्ञान पदसेंकैसेअनुवादकियाहै । क्योंकिदर्शनादिदोंकासमानपदोंसेंअर्थात् दर्शनादिपदोंसेंही अनुवाददेखने में आताहै । याते निदिध्यासनका भी "निदिध्यासनेन" इस समान पदसेंही अनुवादहोना योग्य था "विज्ञानेन" इसपदसेतिसका अनुवादकरनायुक्तनहीं ।।इति।।इसशंक का समाधान रूपवार्तिक वचन—

ध्यानाशंकानिवृत्त्यर्थं विज्ञानेनेति भण्यते ।
निदिध्यासनशब्देनध्यानमाशंक्यते यतः ॥२॥

अ० ॥ निदिध्यासनशब्दध्यानकावाचकहै । इसकारणसेश्रवण तथा मननसे अनंतर आत्मसाक्षात्कारका अंग रूपताकरध्यानही निदिध्यासनशब्दसे श्रुतिनेविधानकियाहै । ऐसीआशंकापूर्वपक्षिकी जिसकारणसेप्राप्तहोतीथी इसीकारणसेतिस आशंकाको निवृत्तकरने के लियेअनुवादकालमेंस्थितहोकर पूर्ववाक्यमे" निदिध्यासन" जो है वह ज्ञानरूप विवक्षित है तहां तिसपदसे ध्यानविवक्षित नहीं याते"निदिध्यासितव्यः"इसपदसेपूर्वउक्तश्रुतिमेंध्यानविधिकीआशंका काअवकाशनहीं।इसअभिप्रायवालीश्रुतिभगवती'विज्ञानेन'इसविज्ञान पदसे निदिध्यासनकाअनुवादकरतीहै । इति । ध्यानकोअनुभवका अंगमाननेमे कौनदोषहै जिससे तिसआशंकाको श्रुतिनिरासकरती है ऐसीजिज्ञासाके हुए कहते हैं ॥

विज्ञानोत्पत्तिहेतुत्वंध्यानादेः प्रागवादिषम् ॥

अ० ॥ ध्यानादिकोंको विज्ञान उत्पत्तिकी कारणतामे जो दोष कहनेयोग्यथासोहमपूर्वग्रंथमेविस्तारपूर्वककहआएहैं।औरतिसीवार्तिक के अन्यस्थलमेभी यहअर्थनिरूपणकियाहै तत्त्वंपदार्थविषयकश्रवण तथा मननकाअनेकवार अभ्यासकरनेमेतत्त्वंपदार्थोंके लक्ष्यअर्थोंका निर्णयहूएवाक्यार्थज्ञानकाहीअवसरप्राप्तहोनेकरध्यानविधिकाअवकाश नहीं औरयदिऐसेकहोकितिनदोनोंसे प्रमाणतथाप्रमेयगतअसंभावना के निवृत्तहुएभी विपरीत प्रत्ययकर प्रतिबंध होनेसे वाक्यार्थरूपअभेद ज्ञानकी उत्पत्ति नहीं होगी तिसप्रतिबंधकेनिवारणकरनेकेलियेध्यान की आवश्यकता है सोयह कथनभीनहींसंभवता। क्योंकि श्रवणतथा मननका अनेकवार कियाजोअभ्यासतिसके प्रभावसेही विपरीतप्रत्यय की निवृत्तिभीसंभवतीहै।औरवाक्यार्थज्ञानकरनिवृत्तहोने योग्यविपरीत प्रत्ययकोवाक्यार्थज्ञानकाप्रतिबंधकपनाभीनहींसंभवता। क्योंकि लोक मे विपर्यय को स्वविरोधिज्ञानका प्रतिबंधकपनाकहीं भी देखा नहीं। यांतेविपर्ययकीनिवृत्तिअर्थध्यानकीअपेक्षानहीं॥इति।यदिनिदिध्यासन शब्द का अर्थयहां ध्याननहीं है तोतिसका क्याअर्थ है। ऐसीआकांक्षा के हुए कहते हैं। वार्तिकवचन ॥

अपरायत्तबोधोऽत्रनिदिध्यासनमुच्यते ॥

अ०–"श्रोतव्यः" इसवाक्यमें अपरायत्तबोधही निदिध्यासन शब्दसे कहाजाताहै। जैसेध्यानमें पुरुष प्रयत्नकीअपेक्षाहै तैसे बोध मेंनहीं किन्तुपुरुष प्रयत्न अनपेक्षत्व है यहही तिस बोधमें अपराय त्तत्व है। ऐसे बोधके अर्थश्रवणतथा मननका अभ्यासकरने योग्य

है यह कहतेहैं ॥

यावद्यथोक्तविज्ञानमाविर्भवतिभास्वरम् ।
श्रवणादिक्रियातावद्कर्तव्येति प्रयत्नतः ॥

अ०—यावत्कालपर्यंतपूर्वजेमाकथनकियाबोधप्रकाशात्मकप्राद्रुर्भाव अर्थात् उत्पन्नहो तावत्काल पर्य्यंत श्रवण तथामननअत्यंतप्रयत्नसे अनुष्ठानकरनेयोग्य है ॥इति॥ श्रवणतथामननकेअभ्यासकीप्रपक्कता से आत्मसाक्षात्कार होता है यहकहते हैं ॥

श्रुत्वामत्वातुतंसाक्षादात्मानं प्रतिपद्यते ॥

अ०—श्रवण तथा मनन की प्रपक्कता से उत्पन्न हूआ जो तत्त्वंपदोंके लक्ष्यार्थोंकानिर्णयतिससेअनंतरयह अधिकारिमहावाक्य से ब्रह्मको अपनाआत्मारूपकरके साक्षात् अनुभव करताहै ॥इति॥

इसप्रकार वाक्यार्थके ज्ञानवाले पुरुषको कृतार्थताकी प्राप्तिहोती है यहकहते हैं ।

अनन्यायत्तविज्ञानेश्रवणादेरुपायतः ।
जातेनापेक्षतेकिंचित्प्रतीचोऽनुभवात् परम् ॥

अ०—श्रवणतथा मननरूप उपायकेअभ्याससे अपरायत्तबोध के उत्पन्नहूए तिसकर अविद्या तत्कार्य्यकी निवृत्तिपूर्वक निजस्वरूप प्रत्यगात्मामे ब्रह्मभावके स्फुरणसे अनंतर यहअधिकारि किंचित्मात्र भीअपेक्षानहीं करताकिंतु कृतकृत्यताको प्राप्तहोताहै ॥इति॥ इसरीति सेवार्तिककारके मतमेश्रवण तथामननका नामहीसांख्य है । यद्यपि वार्तिककारकापूर्व उक्तश्रुतिका व्याख्यान मानेहूए निदिध्यासनपद की द्रष्टव्यपदकेसाथ पुनरुक्तिहोगी ॥ क्योंकिदोनोपदोंसे साक्षात्कार

काही ग्रहणकियाहै। तथापिदर्शनका उद्देशकरके श्रवण औमननके विधानसे अनंतरपुनःफलकाजोकथनहै तिसकोपूर्वउपक्रम कियेदर्शन के उपसंहार परताका संभवहोनेसे पुनरुक्तिकी शंकानहीं संभवती। अथवा द्रष्टव्यपदसे विचारके प्रयोजक आपात दर्शनका अनुवादहै। और निदिध्यासनपदसे विचारके फलभूत साक्षात्कारका अनुवादहै। इसप्रकार पुनरुक्तिकी शंकाका परिहार संभवता है ॥ इति ॥ इसप्रकार वार्तिककारसुरेश्वराचार्य्यके मतमे सांख्यमार्गमे ध्यानकाअभावहै। और भाष्यकारोंकोभी सांख्यमार्गमे ध्यानका अभावसंमतहै। तथाहि—

एतेनयोगः प्रत्युक्तः ॥ ब्रा० २।१।२

इस अधिकरण के भाष्य मे ॥

तत्कारणं सांख्ययोगाधिगम्यं ॥

इसश्रुतिकेव्याख्यानमेभगवान्भाष्यकारोंने यहकथनकियाहै ॥

वैदिकमेवज्ञानं ध्यानं च सांख्ययोगशब्दाभ्यामभिलप्येते ॥

अ०—पूर्वउक्त श्रुतिमे सांख्य और योग शब्दसे वेदोक्तज्ञान अर्थात् ज्ञानाऽभ्यास और ध्यान यह दोनों ही कथन किये हैं ॥ इति॥ और सांख्य मार्गमे ध्यानाभावके अभिप्रायसेही सर्वज्ञात्म मुनियों ने भी निदिध्यासन पदका ज्ञान ही अर्थ कहा है ॥ तथा हि—

श्रवणमनन बुद्ध्योर्जातयोर्यत्फलं तन्निपुणमातिभिरुच्चैरुच्यतेदर्शनाय। अनुभवनविहीनायेवमेवेतिबुद्धिः श्रुतमननसमाप्तौतन्निदिध्यासनंहि ॥ सं० शा०

अ०--श्रवण तथा मनन जन्य निश्चयके उत्पन्नहूए जो फल होताहै वह कुशल बुद्धि वाले पंडितों ने आत्म दर्शन के अर्थ उच्च स्वर से कहा है इसी अर्थको स्पष्ट करते हैं। श्रवण तथा मनन यह दोनों ही दीर्घ काल तथा निरंतर और आदर से अनुष्ठान किये हुए तिनकी प्रपक्वता से अविद्या के निवर्तक साक्षात्कार से भिन्न "यह इस प्रकार ही है" ऐसी जो बुद्धि उदय होती है अर्थात् मैं चिदात्मा ब्रह्मस्वभावही हूं और ब्रह्मचिद् एकरस प्रत्यगात्म स्वभाव हीहै। इसप्रकारजो तत्त्वंपदके लक्ष्यार्थका निर्णयरूप ज्ञानसो निदि ध्यासनशब्द का अर्थ है ध्यान तिसका अर्थ नहीं॥ इनके मत मे भी श्रवण तथा मननही दीर्घकाल पर्य्यंत अनुष्ठान करने योग्य हैं निदिध्यासन अनुष्ठान करने योग्य नहीं। क्योंकि तिसके उत्पन्न हुए उत्तर काल में साक्षात्कार उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार जो आचार्य्य श्रवणादि तीनों को ही सांख्य कहते हैं। तिनके मत में भी निदिध्यासन ध्यान रूप विवक्षित नहीं। और जिन आचार्य्यों के मत में निदिध्यासन क्रिया रूप माना है तिन की रीति से भी वह योग मार्ग गत ध्यान से विलक्षण है। क्योंकि निदिध्यासन श्रवण तथा मनन पूर्वक ही होता है और ध्यान में तिन की अपेक्षा नहीं। और सांख्य मार्ग में ध्यानाऽभाव के अभिप्राय से ही स्वामि विद्या रण्य जी ने भी ध्यान दीप में ज्ञान के उदय होने पर्य्यंत विचार की कर्त्तव्यता ही विधान करी है॥ तथाहि--

विचार्य्याप्यपरोक्षेण ब्रह्मात्मानं नवेत्तिचेत्।
अपरोक्षा वसानत्वात् भूयोभूयो विचारयेत्॥

विचार यन्नामरणं नैवात्मानं लभेत् चेत् ।
जन्मांतरे लभेतैव प्रति बंधक्षये सति ॥

पं० द० ध्या० दी० १२।१३

अ०—यदि यह अधिकारिपुरुष वेदांतविचारकरकेभी अपरोक्षरूपताकर ब्रह्मात्मा को नहीं जानता । तौपुनः पुनः विचारका ही अनुष्ठान करे। क्योंकि अपरोक्षबोधपर्य्यंत विचारही करनेयोग्यहै॥१॥और यदिकिसी प्रतिबंधके बलसेमरणपर्य्यंतविचारकरतेहुएपुरुषकोभी आत्मसाक्षात्कार उदय नहो तो प्रतिबंधके नाशहुएदूसरे या तीसरेजन्ममें अवश्य आत्म साक्षात्कारकोयहपुरुषप्राप्तहोताहै।इति। औरतिसीपंचदशीगत आत्मानंद प्रकरण के अंत में ध्यानसे रहित केवल सांख्यनामवाले विचारकोभीसर्व अंशमें ध्यानकेतुल्य आत्मसाक्षात्काररूप फलकीजनकताबहुतप्रकार से निरूपणकीहै।इति। पूर्वउक्तसमग्र श्रुतिआदिक वचनोंका यहरहस्यहै॥ कि विचारकाअपरपर्याय सांख्यमार्गयोगमार्गसेभिन्नस्वतंत्रआत्मसाक्षा त्कारकासाधनहै।योगसेविनाबोधनहींहोतायहकईकपुरुषोंकाकथनश्रुति स्मृति तथाविद्वानोंके अनुभवसे विरुद्धहै । इसप्रकारमुमुक्षुपुरुषोंको आत्मसाक्षात्कारकासुगम तथामुख्यउपाय सांख्यसंज्ञकविचारहै । सो विचारश्रीशंकराचार्य्यतथा तिनकेशिष्यसंप्रदायमेंप्रविष्टसुरेश्वराचार्य्या- दिकोंनेबहुतविस्तारसे स्वस्वग्रन्थों मे निरूपणकिया ॥ तिन ग्रंथोंको अतिविस्तृततथाकठिनदेखकर श्रीप्रकाशानंदसरस्वतीसंज्ञकमहानुभाव ने वेदांतसिद्धांतमुक्तावलीग्रन्थमें इसमार्गका निरूपण संक्षिप्त औ मनोहर युक्तियोंसे किया ॥ यहमहानुभाव श्रीसर्वज्ञात्ममुनियोंसे कुछ कालपश्चातहुएहैं । ऐसाअनुमानहोताहै॥ क्योंकिउनकेवचनप्रमाण

रूपतासे अनेकस्थानोंमें इसग्रंथमें देखेजाते हैं । इनका रचनाकिया हुआ यह एकहीग्रंथभेदवादरूप अंधकारके दूर करनेको मार्तण्डकी न्याईप्रसिद्धहै ॥ इसग्रन्थकीअद्भुत रचनासर्वविद्वानों के चितकोरंजन करनेवाली तथाविस्मयकाजनकहै । औरएकहीप्रथम कारिकाका व्याख्यानरूप समग्र ग्रंथहै ॥ क्योंकि तिसमेंकथनकियेविशेष्य आत्म वस्तुके चारविशेषणोंकाही विस्तारसे निरूपणसमग्रग्रंथमेंहै । और तिन विशेषणोंके निरूपणकालमें प्रसंगसे प्राप्त अन्यभी वेदांतप्रक्रियाका समस्त तथाव्यस्तरूपतासेनिरूपण है ॥ तथाहि ॥ प्रथम देहादिकोंकी आत्मरूपना पूर्वपक्षीकी रीतिसे कहकर सिद्धांत मेंदेहादिभिन्न आत्माकीसिद्धि तथाअव्ययपदकी व्याख्यानिरूपणकी।पुनःएकदेशीकीरीतिसे अज्ञानके आश्रय और विषयका भेदकहकर सिद्धान्तमतमे अज्ञानके आश्रयऔ विषयकाअभेदनिरूपण किया । और पुनःतिसमे उपयोगि जीवब्रह्मके स्वाभाविकतथाऔपाधिकभेदका खंडनकरके अज्ञानतथाजीवकाएकत्वस्थापनकिया।और पुनःउत्तमअधिकारियोंको अद्वैतबोधमेंउपयोगी एकजीववादमेंबंधमोक्षादि व्यवस्थाश्रुतिप्रमाण पूर्वक अनेक युक्तियोंसेस्थापनकी। औरसर्वअनात्मपदार्थोंकीअज्ञात सत्ताकाखंडनकरके ज्ञातसत्तातिनमेंस्थापनकी । औरतिसकेअवांतर मध्यमअधिकारियोंको दृष्टिसमकालीनसृष्टि पक्षकाभीनिरूपणकिया। औरपुनःउत्तम अधिकारियोंकेलिये ज्ञानज्ञेयकाभेद अनेकयुक्तियोंसे निराकरणकरकेदृष्टिमात्रसृष्टिपक्षकानिरूपणकिया।पुनःप्रमाणकेअभाव सेआत्माकोअसत् कहनेवाले नास्तिकका पक्षअनेकयुक्तियोंसेनिराकरणकरकेआत्माका स्वतःसद्भावऔरस्वयंज्योतिपनानिरूपणकिया ।

औरपुनःविशेष्यआत्म पदार्थकानिरूपणकरके तिसमेंअपुरुषार्थत्वकी आशंकाके निषेधपूर्वकतिसकीपरमपुरुषार्थरूपतानिरूपणकी। तिसके अनंतरआत्मसाक्षात्कारमें एकदेशिकेमतसेमनकोकरणता दिखलाकर तिसके निराकरणपूर्वक महावाक्यरूप शब्दको करणतास्थापनकी। तिसके अनंतर महावाक्योंमें लक्षणाकेअभावकी शंकाकरके तिसके निषेधपूर्वकभागत्यागलक्षणाका निरूपणतथा बीचमेंही लक्ष्यार्थके उपस्थायकसत्यादिपदोंमें शक्तिवृत्तिसेलक्ष्यार्थका उपस्थापकत्वनूतन रीतिसेप्रतिपादनकिया। औरपुनःअनात्मप्रतियोगिकऔरआत्मअनुयोगिकधर्मभेद तथा स्वरूपभेदका निराकरणअनेक नूतनयुक्तियोंसे करकेप्रपंचमेंमिथ्यात्वकी सिद्धिकेअर्थब्रह्मकारणत्ववादिनी औरअज्ञान कारणत्ववादिनी श्रुतियोंका परस्परविरोध परिहार करके साक्षिसिद्ध अज्ञानकोप्रपंच भ्रममेंनिमित्तमात्रतास्थापनकी। औरपुनःअज्ञानकी असिद्धिकी शंकाके निषेधपूर्वकभ्रमसिद्ध अनादिअनिर्वचनीयत्वादि रूपअज्ञानकास्वरूप निरूपणकिया॥ औरपुनःअज्ञानादिकोंकेबाधका स्वरूप निरूपण में एक देशियोंकी रीतिसे बाधका स्वरूप निषेधकर के नूतन रीतिसे बाधकास्वरूप निरूपण किया। औरतिससे अनंतर विद्या औ अविद्याके विरोधका स्वरूप निरूपण करके एक जीववादमे गुरुशिष्यकीपरम्परारूपसंप्रदायकेलोपकीआशंकाकासमाधाननिरूपण किया॥औरपुनःआनंदस्वरूप आत्मामे आनंदत्वादि धर्मन्का विचार चलाकर आनंदत्व सामान्यतथा आनंदव्यक्ति उभयरूपताआत्माकी अपूर्वरीतिसे प्रतिपादनकी॥ औरतिससेअनंतर आत्माकी आनन्द रूपता दृढकरानेकेलिये अद्वयानंदके आविर्भावमेंमिथ्याद्वैतदर्शनको

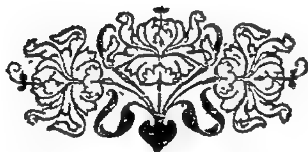
प्रतिबंधकपना निरूपणकिया। औरपुनःद्वैतद्रष्टाके स्वरूपविषयकगुरु शिष्यद्वारा अनेकप्रकारका विचारचलाकरद्वैतद्रष्टाका अभावनिरूपण करकेआत्माकी अदृष्टद्वयता प्रतिपादनकी औरबीचमेंही उत्तमअधिकारियोंकेप्रति प्रपंचका तुच्छवाद और मध्यम अधिकारियोंके प्रति विवर्तवादभी अनेकयुक्तियोंसे निरूपणकिया ॥

औरपुनः विद्वन्केअनुभव सिद्धकृतकृत्यताकोनिरूपणकरकेग्रंथ कोसमाप्तकिया। इसप्रकार उक्तानुक्त अनेकवेदांत सिद्धांतरूप अमूल्य मौक्तिकोंकीयहश्रेणीहै। जोसुकृतिपुरुष इसकोअपने कंठमेंधारणकरतेहैं वहअतिशयशोभावालेहोतेहैं। औरमुमुक्षुपुरुषोंकोयहग्रंथश्रवणरूपभीहै क्योंकिवेदान्तवाक्योंकेतात्पर्य्यकानिर्णयअनेकस्थानोंमेंकियाहै। और यहग्रंथमननरूपभी है क्योंकिभेदकीबाधक तथाअभेदकीसाधक अनेक श्रुतिअनुसारीतर्कइसमेंनिरूपणकीहैं। इससेयहग्रंथसाक्षात्‌हीआत्मज्ञान काजनकहै। औरग्रंथोंमेंकहींकहींआत्मविचारकालाभहोताहै। औरइस ग्रंथमें शीघ्रही जिज्ञासुकी बुद्धि आत्मविचारको प्राप्तहोती है। यहभी अन्यग्रंथोंसे विचित्रता है। इसलिये संस्कृतके पाठकजिज्ञासु जनोंको यहग्रंथ आत्मविद्याके संपादनमें अत्यंतहीउपयोगीहै। औरवादियोंके जयकरनेकी इच्छावाले पुरुषोंकोभी इसीकाअभ्यास करनेयोग्यहै। यहअवांतरफलभी इसका स्वयंमूलकारने कथनकियाहै। सर्वथायह ग्रंथअनुपम है। औरजैसे उत्तमजातिवाले मौक्तिकोंकी श्रेणी सुंदर मंदरमेंदीपकसे प्रकाशितकीहुई अत्यन्तशोभाको धारणकरती है तैसे यहसिद्धान्तमुक्तावली जिज्ञासुवोंके हृदयरूपमंदिरमें श्रीनानार्दाचित विद्वान्‌कर निर्मित दीपकानाम्नी टीकारूपदीपककर प्रकाशितकीहुई

अत्यन्तशोभायुक्तहै । परन्तु व्याकरणादिरूप द्रव्यसेविना भाषाग्रंथों के पठनपाठनमें निपुणमति सज्जनपुरुष अत्युत्तम इसमुक्तावलीको स्व कंठमेंधारणकर अपूर्वशोभाको नहींलेसकतेथे वहसज्जनभीइसको कंठमेंधारणकर सुशोभितहों यहविचारकरके शमादिनिरत श्रीमुक्तिपूदस्थेगेंद्रशांतात्मास्वमित्रवर्य्य ने मुझको इसग्रंथकेभाषाकरनेकीप्रेरणा की।तिनकीप्रेरणाकोहृदयमे धारणकरउन्हीकीसहायतासेइसदुर्गमअर्थ वालेग्रंथकेमूलतथाटीकाकोयथायोगमिलाकरभाषाकरना आरंभकिया। यहशरीरप्रायःव्याधिग्रस्तथा । परंतुजिसजिसकालमेशरीरकी किंचित् स्वस्थदशादेखीतिसतिसकालमे किंचित् भाषाअनुवाद लिखतेहुएयह ग्रंथनिर्विघ्नसमाप्तहोगया । तिस से अनंतर रिषीकेशनिवासी श्रीमान् विरक्तात्मापंडितस्वयंज्योतिजीकी सहायता से यहग्रंथसंशोधनकिया गया । यद्यपिइसग्रंथकोभाषाकरतेहूएअनेकवारचित्तमेलज्जाभी आती थी । क्योंकिशास्त्र मे निपुणमति पंडितइसकेदेखकरहंसेंगे।यहविचार करचित्तऊपरतभी होजाताथा परंतु यह वक्ष्माण विचारचित्तको पुनः उसीकार्यमेलगादेता था कि शास्त्र मे निपुणमतिपंडित इसभाषाको दूषितजानकरऔर सुंदर रचनावाली इसग्रंथकीभाषाकरनेमे प्रवृत्तहोंगे तिससेभीसर्वउपयोगीयहकार्यसिद्ध होजायगा । अथवावहपंडितजन दयालूभीहोतेहैं। इसलिये इसकीही न्यूनता तथादोषोंकोदूरकरकेइसी भाषाकोसुधारकरसुभूषित करदेंगे तिससे भी यहकार्य्य सिद्धहोगा । औरपरमकारुणिकश्रीगुरोंके मुखाविंदसे श्रवणकियाहूआअर्थविस्मरण नहो।इसलियेभी इसग्रंथकोभाषामेलिखनाउचितजाना । यद्यपिवेदांत सिद्धांतमुक्तावलीगत सिद्धांत मौक्तिकों की पहचान अत्यंत दुर्लभ

तथा वह अमोलिक हैं । तथापि जैसे अमोलिक मौक्तिकों की पहचानस्वस्वबुद्धि अनुसार सर्वोपरीक्षिक पुरुषकरतेहुए अन्यपुरुषों कोतिनकास्वरूप स्वस्वभाषामें यथायोग्यकहते हैं। तैसे इनसिद्धांत मौक्तिकोंकी पहचान स्वबुद्धिअनुसार परमकारुणिक श्रीगुरोंसे पाकर भाषामेंइनकेस्वरूपका अनुवादकरना उचितहीहै। आशाहैकिसमग्र महात्माविद्वान् तथा औरसज्जन विचारशीलपुरुष मेरेदोषोंको क्षमा करेंगे औरइसको अवलोकनकरके मेरेप्रयत्नको सफलकरेंगे।

॥ इति ॥



❋ ओ३म् ❋

अथ

श्रीवेदान्तसिद्धान्तमुक्तावलीभाषा

पूर्वार्द्ध प्रारम्भः ।

दोहा—सत्यचिदानन्द, विभुजो कर्तापुरुषअकाल ॥
ताहि निजातमलखरिदे, होवत सदा अकाल ॥ १ ॥

कवित्त—सांख्यआदितर्कसेन चालितकदापिजोऊ वेदकेसिद्धान्त माहि जोऊसेदागतहै । मूलहीनआगमन ताहिकोऊजानसके यातेभूतपञ्चककी जनिलयथित है ॥ जनमविनाशते विहीन जोचिदातमाहै व्यापककर्तासव जननकोगत है । ताहिजान- कीशको भजोंमें सदावारवार जोऊजगनामरूप प्रकटकरतहै॥२॥

दीनप्रतिपारनको संतनउवारनको असुरसंहारनको सदाजह चाउहै । एकनारीव्रतजोऊ पितुआज्ञारतजोऊ धरमधरतजोऊ सीतलस्वभाउहै ॥ पट्भगपूरन नहोवेंकवीऊरन त्रिलोकमाहि पूरन सुजाहिकोप्रभाउहै । ताहिरघुनाथको निवाऊंसदामाथको दिखावेंमोछ्पाथको जोआनन्दस्वभाउहै ॥ ३ ॥

वेदीकुलव्योममाहि जगगुरुशशिआहि सुयशप्रभाहैताहि फैलीतीनलोकमे । गुरुमुखचकोर दोनोदृगनकोजोर करेंध्यान ताहिओर हीहोवतअशोकमे ॥ मनमुखनेहीवाम जलेंदुःखआठो जाम सुनकरजाहिनाम धरेचितशोकमे। शशिगुरुनानक त्रिताप करेहानक सुध्यावोंसुखदानक नसावेपापरोकमे ॥ ४ ॥

स्वैया–भूमिसमानक्षमाजिनमे पुनशोधकवायु समानहैजोई।व्योमसमंजु असंगसुभाव रुदोपनदाहकपावकजोई ॥ शीतल नीरसमंपिखिये वरतंसबकेहितमेपुनजोई ॥ तागुरुअंगदके पदपंकजजोर नमो करहोंकरदोई ॥ ५ ॥

स्वैयाछंद–जाकीकरनीसकललोकमेंहैप्रसिद्धजानतसबकोय । गुरु सेवाकीरीतिदिखारीजिन सम कर नसकत है कोय ॥ शीलवंत तपसातनुधारी सहनशीलजासमनहिकोय । श्रीगुरुअमर अमर पदवीप्रदध्यावों विघ्ननलागेकोय ॥ ६ ॥

त्रिभंगीछन्द–सोढीकुलभानू कलितमभानू भक्तिप्रभानुनामरते । जहवाक्यरसाम्रित अचकरपाम्रितहोवतआम्रित सामगते ॥ जो जनहितकारी परमउदारी भवदुखटारी शरणगते । तागुरुरमदा-सह पदकमलासह गमरिदवासह जामहते ॥ ७ ॥

स्वैया–जहहारद के तमनाशनको रविकीरसमं उपदेश विथारा । भवसिन्धुपरे जनतारनको गुरुग्रंथ जहाज कियोबहुसारा॥ गण आसुरकौरव कोदलजो समअर्जुन के जहने दलडारा । तागुरु अर्जुनपापविभर्जन केपदकञ्जनमो बहुबारा ॥ ८ ॥

छैलछबील रसीलजुवेन सुलोचनहैं करुणारसमाते । पीरन पीरसुमीरनमीर जुवीरनवीरसदा रणमाते ॥ अमरारिमलेच्छन मेघनकेदलवायु समानकरे जिनहाते । ताहरिगोविन्द राजनके पदकञ्ज सदा मनमोर सुहाते ॥ ९ ॥

यह याहजहान असायमहा तहमाहियिजीवसहें दुखभारे । तांअतिदीनदशा पिखके हरिराय गुरुकरुणा चितधारे॥ हारसमं

निजदैउपदेशहु काढ्यररोग सुकीनसुखारे । पंकजतेवरतातगुरुके पद वारहिवार प्रणामहमारे ॥ १० ॥

चौ०—कृष्णभये हरिकृष्ण स्वरूपा । इन्द्रियगणगोपिनके भूपा ॥ मनकाली रिपुमर्दनहारे । नमोंकरोंसदवयसकुमारे ॥ ११ ॥

कवित्त—जाहिउपदेशसुन होवतवैरागमन भयेज्ञानवानजन काटें भवबन्धको । संपदविपदमाहि सदासमचित्तजाहि पालहशरणागताह धर्मधुरन्धको ॥ तिलकजनेऊकाज निजशिरदीनोगाज हिन्दुनकीराखीलाज काटीजरअन्धको । तांहरिगोविन्दनन्द जुकेजोपदारविंद करोंसदाताहिवन्द काटहपापवन्धको ॥ १२ ॥

सवैया—शेशनिशेशदिनेशमहेश सदापदपंकजजाहिमनावें । व्यास पराशरनारदऔ सनकादिकसेजहकोयशगावें॥ सोउअकालभये गुरुगोविन्द सिंहसरूपमलेच्छन घावें । तांगुरुतेगवहादुरनन्दन दूखनिकन्दनकोहमध्यावें ॥ १३ ॥

कवित्त—कोऊव्यासमुनिभनेरामगुरुकोऊगने कपिलस्वरूपकहकोऊ गुनगावते । योगवचजिनोंसुनाशेपरूपतिनोभना भीपमस्वरूप-कोऊऔरनवतावते ॥जाहिकोचरितपेख होवतहुलासमन विसम विसमहीयेहोतसवीजावते । यातेसखातमस्वरूपहरिहरजान ताहि गुरुमूरतिकोसदाहमध्यावते ॥ १४ ॥

दो०—तां गुरुके पदपद्मकी, गहीशरण जवआय ।
हरीहीयकी जाड्यता दोपमूलसवघाय ॥ १५ ॥

चौपाई—महानुभाव जुजगतमझारी । अभिवंदन है तिनेहमारी ॥
यहममकाजहोयनिर्विघ्नो । जोसवजनकेहितकरवरनो ॥ १६ ॥

दो०-विदांतसिद्धान्तमुक्तावलिदुर्गमअर्थविशाल ।
तहभाषाकरनेविषेममतिअल्पविहाल ॥ १७ ॥
तथापिश्रीगुरुवदनतेजहविधश्रवणसुकीन ।
तामे जोसमरन रहियोवरनों तिसे अदीन ॥ १८ ॥
सोरठा-श्रीगुरु चरन मनाय वाकवादिनी ध्यायके ।
भाषा करों बनाय पेख मुदित ह्वैधीरजन ॥ १९ ॥

❋ अथमूलटीकाकारकृतमंगल ❋

सर्वजगत् के ईश्वर जो श्रीमहादेव तिनको मै प्रणामकरता हूं । तथासर्वजगत्कीउत्पत्ति औ स्थिति तथा संहारके करनेवाले जो श्रीगणेशजी हैं। तिनकोमे प्रणाम करता हूं। तथावाक् अभिमानी देवता जो श्रीसरस्वती जी हैं तिनकोमैंप्रणामकरताहूं । तथा अल्पअक्षरोंवालेपदोंकर घटितऔविस्तृततथासारभूतअर्थ के कर्ता जो श्रीवेदव्यासजीहैं। तिनको मैं प्रणाम करता हूं। तथासूत्रअनुसारीपदोंसेसूत्रकेअर्थ जिसमेकथनकीएजाएं औ अपनेकठिनपदों की व्याख्याहोजिसमे इसलक्षणयुक्तभाष्यके कर्ता औतीनोंलोकोंमे प्रकटताहैजिनकी ऐसेश्रेष्ठआचार्यजो श्रीशंकरजीहैंतिनकोमे प्रणाम करताहूं ॥ १ ॥

तथा आनंदहैअंतमेजिसके सो आनंदअंतकहीएहै । तिससे अभिन्नजो प्रकाशानुभवपद अर्थात् प्रकाशकेअनुभवकाजनक जो प्रकाशपद वहहैपदकहियेनामजिनका सो आनंदान्त प्रकाशानुभव पदपदकहेजातेहैं ॥ ऐसेजो सद्गुरुश्रीप्रकाशानंदसरस्वतीतिनको मैं प्रणामकरताहूं । औविद्याकेनिधि जोश्रीनृसिंहाश्रम तथाशमदमादि

साधनोंमे प्रीतिवाले तथा संन्यासीयों के स्वामीश्रीराघवेन्द्रसरस्वती इनदोनों विद्यागुरवोंकोमै प्रणाम करताहूं ॥ २ ॥

संन्यासियोंकरके वंदनाकरनेयोग्य तथाजिनके शिष्यपरशिष्यों केसमूहसे भारतवर्षके सर्वदेशप्रसिद्धहोरहेहैं तिन ईश्वरस्वरूप श्री प्रकाशानन्द स्वसद्गुरोंको पुनः मै प्रणामकरताहूं ॥ ३ ॥

* अथफलसहितटीकाकेआरम्भकीप्रतिज्ञा *

वेदान्त सिद्धान्तरूपी मौक्तिकोंकी जोश्रेणीतिसके प्रकाशअर्थ तथाप्रतिपक्षरूपीसमूहअन्धकारके नाशकरनेवाली प्रदीपिकानाम्नी टीकाको मैंरचनाकरताहूं ॥ ४ ॥

* अथमूलग्रन्थव्याख्याप्रारम्भः *

प्रथमतिसग्रन्थके आदिमे शिष्टपुरुषोंके आचारसे प्राप्ततत्वानुसंधानरूपमंगलकोसूचनकरतेहुए औरवेदान्तोंका विषयतथाप्रयोजन साक्षात् प्रतिपादनकरके कर्तव्यअर्थकी प्रतिज्ञाकरतेहैं क्योंकि प्रतिज्ञा से अनन्तरहीनिरूपण करनेयोग्य अर्थनिरूपण कियाजाताहै ॥

अदृष्टद्वयमानंदमात्मानंज्योतिरव्ययम् ।
विनिश्चित्यश्रुतेः साक्षाद्युक्तिस्तत्राभिधीयते ॥ १ ॥

दो०—अद्वय दृष्टि आनंद चित अव्यय आतम जान ।
साक्षात् वेदसे ताहमे युक्ती करों वखान ॥ १ ॥
जाके चिंतन करेते होवत बुद्धि विशाल ।
तांते ज्ञान सुदृढ भयो नाश करे भ्रमजाल ॥ २ ॥

टीका—यहां मूलकारिकामें 'अदृष्टद्वय' औ 'आनंद' तथाज्योति' औ 'अव्यय' यहचारआत्माके विशेषणहैं औरआत्मवस्तुविशेष्यपदार्थ

है । तिनकथनकिये चारविशेषणयुक्त आत्माको साक्षात् उपनिषत् प्रमाणसे जानकर चारविशेषणयुक्त तिसआत्मामें श्रुतिअनुसारीतर्क निरूपण करतेहैं ॥ अर्थयह किद्वैतदर्शनसेरहित तथा परमपुरुषार्थ तथास्वप्रकाश तथाविनाशसे रहित आत्माको सोमैंहूं इसप्रकारसाक्षात्महावाक्योंसे जानकर तिसकेज्ञानकीप्रतिष्ठाकेलिये श्रुतिअनुसारीतर्क निरूपणकरतेहैं । क्योंकि श्रुतिसेविरुद्धतर्क आत्मज्ञानमें उपयोगीनहीं यहवार्ताश्रुतिमें प्रसिद्धहै ॥

नैषातर्केणमतिरापनेया ॥ क०उ०अ० १।व०२ म०६

अ०—यहआत्मविद्या शुष्कतर्कसे प्राप्तहोनेयोग्यनहीं । याते श्रुतिअनुसारीतर्कही यहांग्रहणकरनेयोग्यहै । तिसके चिंतनकरनेसे बुद्धितीक्ष्णअर्थात्सूक्ष्मअर्थके ग्रहणकरनेयोग्यहोतीहै। औरबुद्धिकी सूक्ष्मतासे आत्मज्ञान अतिदृढताकोप्राप्तहोताहै । भावयहहैकिभेदवादीपुरुषोंकी तर्कोंसेसंशयरूप कलंकसहित नहींहोता । औरदृढ अपरोक्षज्ञानसे अविद्यातत्कार्यरूपभ्रमजालकी अत्यन्तनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूप मोक्षहोताहै ॥ इति ॥

❋ आत्माकेचारविशेषणोंकाफलनिरूपण ❋

देहादिकोंसे आत्माकेभेदकी सिद्धिकेलिये (अव्ययं) यह विशेषणकथनकियाहै । औरआत्मामेंयदि कोईप्रमाणकहो तोप्रमाणकाविषय होनेसे घटादिकोंके समान अनात्मपनाहोगा । औरयदि आत्मामेंकोई प्रमाणनहींकहोगेतो वंध्यापुत्रकेसमान असत्पनाहोगा। ऐसीप्रतिवादीकीशंका दूरकरनेकेलिये (ज्योतिः) यहविशेषणकथन

कियाहै। औरआत्माही परमपुरुषार्थरूपहै इसअर्थके कथनकरनेकेलिये (आनन्दं)यहविशेषणकथनकियाहै।औरसजातीयविजातीयस्वगतभेद के दूरकरनेकेलिये तथाप्रपंचको मिथ्यात्व प्रतिपादनकरनेकेलिये (अदृष्टद्वयं) यहविशेषण कथनकियाहै। औरयद्यपि "श्रुतेः विनिश्चित्य" इतनेकथनसेही आत्मामें श्रुतिप्रमाणकीसिद्धि होसकतीथी पुनःसाक्षात्पद कथनकरना निष्फलहै। तथापिमहावाक्यरूपश्रुतिही अपरोक्षज्ञानकासाधनहै। इसअर्थके प्रकटकरनेकेलिये (साक्षात्) यहपदकथनकियाहै॥ इति॥

शंकापूर्वकग्रन्थकेव्याख्यानकीयोग्यताकानिरूपण

शंका—यहग्रन्थव्याख्यानके योग्यनहीं। क्योंकि विप्रलिप्सादिक दोषोंसेरहित अथवावेदप्रमाणकेअंगीकारकरनेवाला जो शिष्टपुरुष तिसकररचितनहींहै। जोशिष्टपुरुष होताहै वहग्रन्थकेआदिमें मंगल का अनुष्ठान अवश्यकरताहै। इसग्रन्थकेकर्ताने मंगलअनुष्ठाननहीं किया यातेअशिष्टहै। और नमःआदिकपदके अभावसेमंगलकाअभाव स्पष्टहीहै। औरतेसेही ग्रंथकेआरम्भमें चारअनुवंध अवश्यनिरूपण करनेयोग्यहोतेहैं क्योंकिअनुबंधोंके जानेबिनाश्रोताजनोंकी ग्रन्थके पठनपाठनमें प्रवृत्तिनहींहोती। यहसम्प्रदायवेत्ता पुरुषोंकीमर्यादाहै। यद्यपितिनअनुबंधोंमें युक्तिको विषयपनाप्रतीतहोताहै। तथापिप्रयोजनकाकथन यहांनहींकिया। जोऐसेकहोकि महावाक्यजन्य अपरोक्षज्ञानहीयुक्तिकाप्रयोजनहै। सोकथनभी नहींसंभवता। क्योंकियहां "क्त्वा" प्रत्ययकाकथनहोनेसे तिसज्ञानकी प्रथमहीसिद्धिहै। जैसे (स्नात्वागच्छति) अ०—स्नानकरके गमनकरताहै यहांपरस्नानप्रथम

हीसिद्धहै।तैसे(श्रुतेःविनिश्चित्य)अ०--श्रुतिसे निश्चयकरके तिसमेंयुक्ति कहतेहैं। यहांपरभीज्ञान प्रथमहीसिद्धहै। यातेतिसको युक्तिकाप्रयोजननहींकहसकते। औरजोऐसेकहोकियहां "आनन्द" पदप्रयोजन कथनकरनेकेलियेहै सोकथनभीनहींसंभवता। क्योंकि तिसकोमहावाक्यजन्यज्ञानका प्रयोजनहोनेसे युक्तिकाप्रयोजन तिसकोनहींकह सकते। तैसेविषयऔरप्रयोजनके अभावसे अधिकारी औरसंबन्धभी यहांनिरूपणनहींकिये। यातेअनुबंधचतुष्टयके अभावसेभी यहग्रन्थ व्याख्यान करनेकेयोग्य नहीं॥

समाधान--हे वादिन् प्रथम जो मंगल केनअनुष्ठानकरनेसे दोषकहा। सोनहींसंभवताक्योंकि अनारोपित ब्रह्मतत्त्वकाअनेक प्रकार सेचिंतनरूपमंगलयहां किया है। औरब्रह्मकेबोधकअनेकपदोंका यहां प्रयोगहोनेसे चिंतनकोअनेकपनाहै। औरजोपूर्वकहाकियहां प्रयोजननहींकहा सोभीसंभवेनहीं। क्योंकिआनंदपदहीतिसप्रयोजन काबोधकहै। औरमहावाक्यजन्य अपरोक्षज्ञानकाफल आनंदहैयुक्ति का फलनहीं। यहकथनभीनहींसंभवता। क्योंकिप्रधानकेफलकरके ही अंगफलवालेहोतेहैं। जैसे दर्शादिकअंगीयागकेफलकरकेहीप्रया जादिकअंगफलवालेहोते हैं। तैसे महावाक्यजन्यअपरोक्षबोधरूप अंगीका फलआनंदहै और तिस ज्ञानमेंअंगयुक्ति है। यातेजोज्ञान का फलहैवहीयुक्तिकाफलहै। ज्ञानमे युक्तिको अंगपनाभट्टपादोंने भीकथनकिया है॥

धर्मेप्रमीयमाणोहिवेदेनकरणात्मना।
इतिकर्तव्यताभागंमीमांसापूरयिष्यति॥ १॥

अ०—प्रमाणरूपवेदसेहीधर्मकानिश्चयसंपादन करनेमे कथं भावअकांक्षारूपइतिकर्तव्यता भागको युक्तिपूर्णकरेगी ॥ १ ॥ जैसे यहांधर्मज्ञानमेंयुक्तिकोअंगरूपताहै। तैसेहीब्रह्मज्ञानमेंयुक्तिकोअंगरूपताहै यद्यपिज्ञानकोपूर्वहीसिद्धहोनेसेतिसकेप्रतियुक्तिकोअंगरूपतानहीं संभवती। तथापि ज्ञानकोपूर्वसिद्ध मानेहूएभीतिसकीदृढताका हेतुपनायुक्तिकोसंभवताहै। यहवार्ताभाष्यकारोंनेभीकथनकी है ॥

ब्रह्मात्मैक्यविद्याप्रतिपत्तयेसर्ववेदान्ताआरभ्यंतइति॥

शा० भा० अ० १ पा० १

अ०—ब्रह्मात्माके अभेदज्ञानकीदृढताकेअर्थसर्ववेदांत आरंभ अर्थात्विचारकियेजातेहैं। औरयदिवादीऐसेकहेकियुक्तिको आत्मज्ञानकीदृढताकाहेतुमानेहूए आत्मज्ञानकीदृढताही तिसकाफलहै आनंद तिसकाफलनहीं यहकथनभीनहींसंभवता। क्योंकिसाक्षात्तथापरंपरा करकेदोनोफलयुक्तिकेमाननेमेकोई विरोधनहीं। तहां साक्षात्फलतो आत्मज्ञानकीदृढताहै। औपरंपरा फल आनंदहै जैसेग्रंथकासाक्षात्विषय युक्तिहैऔरपरंपराविषय जीवब्रह्मकाअभेदहै।तैसेप्रयोजनभीदोप्रकारका जानना। इसप्रकारदोप्रकारकाविषयऔरप्रयोजनहोनेसेही "वेदांतोंका विषयऔप्रयोजनसाक्षात्प्रतिपादनकरकेकर्तव्यकीप्रतिज्ञा करतेहैं" ऐसा पूर्व कथनकियाहै ॥ इति ॥

अथवा—युक्तिकाकथनआचार्य को अपनेअर्थतोनहींसंभवता क्योंकिवहआपतोदृढज्ञानवालाहै। किंतुजिज्ञासूकेअर्थयुक्तिकाकथन है। तिसकोज्ञानकीउत्पत्तिके लिये युक्ति कीअपेक्षाहैयातेयुक्तिको अभिधेयताहै। इसप्रकारजिज्ञासूको आत्मसाक्षात्कारकेअर्थयुक्तिकी

अपेक्षाहोनेसेवहज्ञानकाअंग कैसे नहींहोसकतीकिंतुहोसकतीहै।और मूलकारिकामें (अदृष्टद्वयमात्मानं) इनदोनोंपदोंकीसमानाधिकरणता सेब्रह्मात्माका अभेदरूपविषय साक्षात् कथन कियाहै। सोयहग्रंथ कापरंपराविषयहै। और (आनंदं) इसपद से प्रयोजन साक्षात्कथन कियाहै। सोयहग्रंथ का परंपरा पूयोजनहै। औरइसग्रंथमेंयुक्तिपूति पादनकरनेयोग्यहैयाते कथनकाविषय युक्तिइसग्रंथकासाक्षात्विषयहै यद्यपि साक्षात् पूयोजन इस ग्रंथका आदिमें नहीं कथन किया। तथापिग्रंथकेअंतमेकथनकीजो बुद्धिकी अतिशयतारूपविशालतासो यहांग्रंथआदिमेभीजाननेयोग्यहै। औरसाक्षात्तथापरंपराभेदसेजोदो पूकारकापूयोजनतिसकीकामनावालापुरुषहीअधिकारीजानना। और विषयादिकोंकेसाथग्रंथादिकोंका पूतिपाद्यपूतिपादकतादिरूपसंबंधभी भलीप्रकारसंभवताहै। याते अनुबंधचतुष्टकेसंभव से भीयहग्रंथअवश्य व्याख्यानकरनेयोग्यहै ॥इति॥

❀ आत्मपदार्थकीविशेष्यताकानिरूपण ❀

शंका॥ जिसवस्तुकेबोधकशब्दका पूथमउच्चारणकरें सोवस्तु उद्देश्यकहाजाताहै॥ इसन्यायसेअदृष्टद्वय पदार्थकी पूधानतापूतीत होतीहै॥ क्योंकितिसके बोधकशब्दका पूथमउच्चारणहोनेसेतिसको उद्देश्यताहै॥ औरजोउद्देश्यहोताहै वही पूधान होताहै॥ इसरीतिसे अदृष्टद्वयको पूधानता होनेसेविशेष्यताहै आत्मामेंविशेष्यता नहीं॥ समाधान॥ हेवादिन्, "प्रसिद्धपदार्थकाउद्देश्यकरके अप्रसिद्धपदार्थ विधान कियाजाताहै" इसन्यायसे आत्माकोविशेष्यपनाहै क्योंकि, अहमस्मि, इसप्रकारके अनुभवसे आत्मासर्वको प्रसिद्धहैतिसकाउद्देश्य

करके अपूर्सिद्ध 'अदृष्टद्वयादि' पदार्थविधानकियेहैं ॥ औरजोउद्देश्य होताहैवहीप्रधानहोताहै । इसप्रकारप्रधानता होनेसेआत्माकोविशेष्य पनासंभवताहै औरइतरपदार्थ गौणहोनेसेतिसकेविशेषणहैं॥औरश्लोकों मेंयो जनावाक्यसे अन्वयबोधहूआकरताहै इसलियेयहां " आत्मानं अदृष्टद्वयमित्यादि" योजनाकरनेसे पूर्वउक्तन्यायका विरोधभी नहीं प्राप्तहोता ॥ इति ॥

❀ श्रुतिपदकेअर्थकानिरूपण ❀

यहां मूलकारिकामें कथनकियाजो श्रुतिपदतिससे उपनिषदग्रहणकरने योग्यहै ॥ क्योंकि—

तंत्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि । बृ० उ० अ० ३ ब्रा० ६ कं०२६

अ०॥ उपनिषदोंकरकेजाननेयोग्यआत्माकास्वरूप मैं तुझको पूछताहूं ॥ इसश्रुतिमें "औपनिषदत्व" अर्थात् उपनिषदोंकरकेजानने योग्य यह आत्माका विशेषणकथनकियाहै । यातेश्रुतिपदसेउपनिषद् का ग्रहणहै ॥ अथवा ॥

सर्वेवेदायत्पदमामनन्ति ॥ क० उ० अ० १ व० २।।० १५॥

अ० ॥ सर्ववेद जिसपरमपदको तातपर्यवृत्तिसेबोधनकरते हैं॥ इस श्रुतिकोआश्रयणकरनेसे श्रुतिपदवेदमात्रका बोधकहै ॥ इति ॥

शंका ॥ मूलकारिकामें "तत्र" इसपदसेआत्माकापरामर्शनहींसंभवता क्योंकि अनेक पदोंका व्यवधान है ॥ समाधान ॥ हेवादिन् सर्व नामशब्दोंको बाधकके अभावहुए प्रधानपरामर्शित्वका ही नियमहै याते "तत्र" इसपदसेचारविशेषणयुक्त आत्माकाहीपरामर्शसंभवताहै । क्योंकि आत्मपदार्थप्रधानहै ॥ और इतरपदार्थनका "तत्र" पदसे

परामर्शनहींसंभवता॥क्योंकिवहआत्माकेविशेषणहोनेसेगौणहैं॥इति॥

※ अबपूर्वपक्षीकीरीतिसेआत्मामेंश्रुतिप्रमाणकी निर्पेक्षताऔदेहादिकोंकीआत्मरूपताकानिरूपण ※

शंका ॥ मूलकारिकामें श्रुतिपदइतरप्रत्यक्षादिक प्रमाणोंके बोधन करनेकेलियेहै ॥ अथवातिनकी निवृत्तिकेलियेहै ॥ प्रथमपक्ष में श्रुतिकोऽर्थनाहोगी ॥ क्योंकि श्रुतिसेभिन्नप्रत्यक्षादिकोंकरके हीआत्माकासाक्षात्कार होजायेगा ॥ पुनः श्रुतिकीकछुअपेक्षानहीं औरशक्यार्थकी अनुपपत्तिसेविनाहीलक्षणाकीप्राप्तिरूपदोषभीहोगा॥ औरयदिइनदोनों दोषोंके दूरकरनेकेलिये श्रुतिपद "अवहन्यात्"इस पदके समान अपने विधानकेलिये और दूसरेप्रमाणोंके निषेधकेलिये है अर्थ यहजैसेयागमे उपयोगी व्रीहोंके तुषोंकी निवृत्ति दोउपायनसे होतीहै ॥ एकनखविदलनसे औ दूसरामूसल अवहननसे ॥ तहां ॥ "अवहन्यात्"यहपदनखविदलनकीनिवृतिकरके अपनाविधायकहै ॥ तैसे श्रुतिपद अन्यप्रमाणोंका निषेधकरके अपनाविधायकहै ॥ यह दूसरापक्षयादिस्वीकारकरो तोयहभी नहींसंभवता । क्योंकि आत्म साक्षात्कारमेंश्रुतिकी किंचितभीअपेक्षानहीं । यद्यपिक्षुधापिपासादि षट्ऊर्मीयोंसेरहितआत्माको प्रत्यक्षादिकप्रमाणविषयनहींकरसकते ॥ तिसमेंश्रुतिकीअपेक्षा केमेनहींसंभवती । तथापिदेहादिकोंमें भिन्न औरकोईआत्मानहीं । किंतुदेहादिकहीआत्माहैं॥यहांयहतात्पर्यहै । ज्ञानकाआश्रयआत्माहोनाहै यहबार्ताविवादरहितहै ॥ औज्ञानप्रथम देहकाधर्मप्रतीतहोताहै क्योंकि "मैमनुष्यहूं" इसप्रतीतिकेबलमेंअहं

शब्दकेअर्थचेतनकामनुष्यत्व जातिवालेदेहकेसाथधर्मधर्मीभावप्रतीत होताहे ॥ औरचेतनहीज्ञानहै यातेस्थूलदेहकोज्ञानकाअधिकरणहोने सेआत्मपनाप्रसिद्धहै । इसीरीतिसेइन्द्रियादिकोंको भीआत्मपनाऊहा करनेयोग्यहै ॥ तथाहि ॥

काणोऽहम् "बधिरोऽहम्" इत्यादिक प्रतीतियों से काणत्वादि धर्मविशिष्ट इन्द्रियनके साथ अहंशब्दके अर्थ चेतनका धर्मधर्मिभाव प्रतीतहोताहै । औरचेतनहीज्ञानहै और ज्ञानका अधिकरण आत्मा होताहै यहपूर्वकथनकियाहै। यातेज्ञानका अधिकरण इन्द्रियादिकभी आत्माहैं। यहां (इन्द्रियादिक) इसआदिपदसे प्राण औरमन तथा बुद्धि आदिकोंका ग्रहणकरना। इसप्रकार प्रत्यक्षप्रमाणसे देहादिकोंमेंआत्म रूपतासिद्ध है । तैसेही इच्छादि परिशेषाऽनुमानसे भी तिनमेंआत्म रूपतासिद्धहै तिसअनुमानका यहआकारहै—

* इच्छादयः देहाद्याश्रिताः अन्यानाश्रितत्वेसति गुणत्वात् व्यतिरेकेणघटादिवत् *

अ० इच्छादिक जोहैं वह देहादिकोंके आश्रित हैं । अन्यके अनाश्रितहुए गुणहोनेसे । जोजोदेहादिकोंके आश्रितनहीं है सोसो अन्यके अनाश्रितहुआ गुणभीनहीं है । जैसेघटादिक हैं ॥ इति ॥ इसप्रकार इच्छादिकों की अधिकरणता देहादिकों में सिद्धहुए पुनः इच्छादिमत्त्वलिंग से तिनमें आत्मता सिद्धकरनी तिस अनुमानका यहआकारहै ।

* देहेंद्रियादयः आत्माभवितुमर्हन्ति इच्छादि-मत्वात् यन्नैवं तन्नैवं यथा घटादि *

अ०देहतथाइन्द्रियादिकआत्माहोनेकोयोग्यहैं।इच्छादिधर्मवालेहोने

से। जो आत्मा नहीं है। सो इच्छादि धर्मवाले भी नहीं हैं जैसे घटादिक जडपदार्थ हैं। इति। और जो सिद्धांती ऐसे कहे कि देहादिकोंकी आत्मताहम निवारण नहीं करते। तथापि तिस देहादिरूप आत्माको श्रुतिप्रमाणकी अपेक्षा क्यों न हो। सोयह कथन भी नहीं संभवता क्योंकि अनधिगत अर्थका बोधक ही प्रमाण होता है और देहादिरूप आत्मामें प्रत्यक्षादिक प्रमाणकी विषयता होनेसे अनधिगतपनेका अभाव है। इसी कारणसे श्रुतिको तिसमें प्रमाणता नहीं संभवती।

यद्यपि साक्षिरूप प्रत्यक्षसे देहादिरूप आत्माकी सिद्धि मानेहुये भी अनधिगतपना दूर नहीं होसकता क्योंकि साक्षीकरके ही विषयनिष्ठ अज्ञातपना सिद्ध होता है। और चेतनरूप साक्षिसे विना अन्य किसी प्रमाणसे अज्ञानकी सिद्धि भी नहीं संभवती। क्योंकि अज्ञानके साथ इन्द्रियादिकोंके संबंधका अभाव है। याते देहादिरूप आत्मामें अज्ञातताके सिद्धहूये तिसमें श्रुतिप्रमाणकी विषयता संभवती है। तथापि लौकिक प्रत्यक्षादिकोंकरके सिद्ध देहादिरूप आत्मामें अनधिगतपनेका अभाव है याते तिसमें श्रुतिप्रमाणकी विषयता नहीं संभवती अथवा अव्ययपदसे निवृत्तिके योग्य देहादिकोंकी आत्मरूपता सो इस पूर्वपक्षमें कथन कीहै ॥ इति ॥

❀ पूर्वपक्षके संग्रहका श्लोक ❀

देहादिरात्मानः सिद्धो लौकिकादेवमानतः ।
नापेक्षते श्रुतिं तस्मात् स्वसाक्षात्कृतये पुनः ॥ १ ॥

अ० ॥ चौ० ॥ देहादिक आतमहै जोई॥ लौकिकमान सिद्ध भा सोई॥ याते स्वे सिद्धीके माहीं॥ श्रुतिप्रमाण सु चाहे नाहीं १॥ समाधान।

❀ अथपूर्वपक्षके निराकरणपूर्वक अव्ययपदव्याख्या निरूपण ❀

आत्मानित्योऽथवा नित्योभेदस्त्वाद्येस्फुटोमतः ।
अन्त्येतुकृतहानिः स्यादकृताभ्यागमस्तथा ॥ २ ॥

॥ सवैयाछंद ॥ आतमनित्यकहोतुमवादिन अथवाताहिअनित्यवखान ॥ आदिपक्ष महिभेदस्पष्ट यहउरनीकेलेहुपचान ॥ अंतपक्षमेंकृतकर्मनकोभोगे विनासुहोवतहान । तथानकीयेहोवहप्राप्तयही दोषभाषेंमतिमान ॥ २ ॥

टी० हेवादिन् आत्मानित्यहैअथवाअनित्यहै ॥ प्रथमपक्षजो स्वीकारकरोतोदेहादिकोंसे भेदस्पष्टहीसिद्धहोताहै । औरजोदूसरापक्ष कहोतो "कृतनाश" अर्थात्कियेहुयेकर्मनकाफलभोगसे विनाहीनाश रूपदोष तथा "अकृताभ्यागम" अर्थात् नकियेहूयेकर्मनकीप्राप्तिरूपदोष प्राप्तहोगा । यहांयहतात्पर्यहै । आत्माको नित्यहोनेसे देहादिकोंको आत्मरूपतानहींसंभवती ।

यद्यपि देहात्मवादि के प्रति आत्माका नित्यत्व असिद्ध है । तथापि आगे कथनकीहुईयुक्तिसे सो नित्यत्वप्रसिद्धहै । तिसयुक्तिको ही दिखलातेहैं ॥ इससंसारमंडलमें कोईसुखीहै कोईदुःखीहै कोईबद्धहै कोईमुक्तहै ॥ इसप्रकार जगत्की रचना विचित्र प्रतीतहोतीहै । इसमें कोईविवादनहीं । सोविचित्रता कार्य्यहोनेसे हेतुसहितहै । यहां यह अनुमान जानना ।

जगद्वैचित्र्यं सहेतुकं कार्यत्वात् पटवत् ।

अ०--जगत्कीविचित्रता कारणसहितहै कार्यहोनेसे जोजोकार्य

होताहे सोसोकारण पूर्वकहीहोताहे पटकीन्याई ॥ इति ॥ इसअनुमान से जगत्कीविचित्रताकोकारणपूर्वकताकेसिद्धहुये सोकारणभीविचित्र ही कथनकरना होगा अन्यथा कार्यकी विचित्रतासिद्ध नहीं होगी। यहवार्ता अन्यग्रंथमें कथनकीहे।

वैचित्र्यंनसमस्येति।

अ०--विचित्रतासे रहितपदार्थको विचित्रता की कारणतानहीं संभवती ॥ इति ॥ सोविचित्रकारण अदृष्टहीमाननाहोगा। क्योंकि दृष्टजोयागादिक हैं तिनको शीघ्रविनाशीहोनेसे कालांतरमेंहोनेवाले सुखादिकों का वहकारण नहीं होसकते इसी अभिप्राय से जगत्की विचित्रताके हेतुअदृष्ट कथनकियेहें। यहांयह अनुमानजानना-

इदंजगत् विचित्रकारणकं विचित्रकार्यत्वात् विचित्रपटवत्।

अ०—यहजगत्विचित्रकारण वालाहे विचित्रकार्यहोनेसे जोजो विचित्रकार्य होताहै सोसोविचित्र कारणपूर्वकही होता है विचित्रपट कीन्याई॥ इति ॥ इसअनुमानसे विचित्रकारणकी सिद्धिहै सोविचित्र कारणअदृष्ट ही है। इसप्रकार विचित्रताके कारण अदृष्टकी सिद्धिहुये तिसकाआश्रय रूपताकरके नित्यआत्माकी सिद्धिहोतीहै ॥ इति ॥ शंका। विचित्रकार्य क्रियाजन्यहोताहै वहक्रियादेह जन्यहै। क्योंकि देहमेंहीक्रिया देखीजातीहै। यातेदेहकोही क्रियाद्वारा सुखादिकोंका जनकहोनेसे वहदेहहीआत्माहै। औरवहही विचित्रताकाकारणहै। तिस सेभिन्नऔर कोईअदृष्ट विचित्रताकाकारणनहीं। जिसकाआधार रूपताकर नित्यआत्माकी सिद्धिहो। समाधान। दृष्टकारणजोक्रिया

रूपतुमने कथनकियाहै । तिसकोशीघ्र विनाशी होनेसें चिरकालमें होनेवाले सुखादिकों का वहसाचात् कारणतोनहीं संभवता । और यदिकोईद्वार कल्पनाकरोगे । तौहमको अभिमत अदृष्टबलात्कार से सिद्धहोगा ॥ शंका ॥ शरीरकेसिद्ध हुयेअदृष्टकी सिद्धितथाअदृष्ट के सिद्धहुए शरीरकीसिद्धि ऐसेमानेहुये दोनोंकोअपनी सिद्धि में परस्परअपेक्षा होनेसे अन्योऽन्याश्रयदोषकीप्राप्ति है ॥समाधान॥ जैसे बीजऔरअंकुरकापरस्पर कार्यकारणभावनिमित्तक अन्योऽन्याश्रयदोष प्रवाहरूपताकर अनादिहोनेसे परिहारकियाजाताहै । तैसेशरीर औ अदृष्टकेप्रवाहको अनादि होनेसे परस्परआपेक्षाहुयेभी अन्योऽन्याश्रय दोषकी प्राप्तिनहींहोसकती ॥ शंका ॥ अदृष्टको अनादिमानेहुयेभी तिसकाआश्रयरूपताकरके आत्मा कीसिद्धिनहीं संभवती । क्योंकि अदृष्ट आकाशादिक भूतोंके आश्रित है ॥ समाधान ॥ पञ्चभूतों कोसर्वशरीरोंमें समहोनेसे तिनकेआश्रित अदृष्टभी सर्वकोसाधारण होगा । औरतिसकाफल सुखतथा दुःखका भोगभी सर्वकोसाधारण होगा । सोयहवार्ता अनुभवसे विरुद्धहै । क्योंकिसर्वको भिन्नभिन्न हीभोगदेखा जाताहै । याते प्रतिनियतभोगकेअसंभवसे अदृष्टका आश्रयपञ्चभूतनहीं हैं । और निराश्रयभी वहअदृष्टनहीं रहसकता इसलिये अन्यप्रकारसे अनुपपन्नहुया वहअदृष्ट अपनाआश्रयरूपता करके आत्माकीकल्पनाकराताहै । इसप्रकार अदृष्टकाआश्रयआत्मा सिद्धहुया ॥ शंका ॥ पूर्वउक्त प्रकारसे आत्माकी सिद्धिहो तथापि तिसको नित्यपना कैसेसिद्धहुया ॥ समाधान ॥ अदृष्टको पूर्वजन्म कासंबंधिहोनेसे प्रवाहरूपताकरतिसकीअनादितासिद्धहै । तिस अनादिअदृष्ट के प्रवाहका आधारहोनेसेआत्माभीअनादिहै । याते

आत्मानित्यहै ॥ शंका ॥ अनादित्वमात्रहेतु नित्यत्वकासाधकनहीं क्योंकि प्रागभावमें अनादित्वहेतु व्यभिचारीहै ॥ समाधान ॥ जो अनादिभावहोताहै सो नियमकरके नित्यहोताहै । आत्माभीअनादि भावरूपहै यातेनित्यहै औरप्रागभावमें अनादित्वकेहुयेभी भावरूपता नहीं यातेअनादि भावत्वहेतु निर्दोषहै ॥ शंका ॥ जगत्के उपादान कारणअज्ञानको अनादिभावरूपता आपके सिद्धांतमें स्वीकारहै । यातेपूर्वउक्तहेतुका पुनःअज्ञानमे व्यभिचारहै॥समाधान ॥ अज्ञानको अनिर्वचनीयरूप होनेसे सद्रूप भावत्व तिसमें स्वीकारनहीं । इस लियेपूर्वउक्त हेतुनिर्दोषहै ॥ शंका ॥—

❀ आत्मानित्यः अनादित्वेसतिसद्रूपभावत्वात् ❀

इस अनुमानमेंयदि आकाशादिकोंको दृष्टांतमानोगेतो तिस दृष्टांतमें हेतुकी विकलता होगी ।

क्योंकिवेदान्तसिद्धांतमेंआकाशादिकोंको अनिर्वचनीयहोनेसेसद्रूप भावत्वतिनमें स्वीकारनहीं । समाधान ॥ आकाशादिकोंमेहेतुकी विकलताहमकोइष्टहै । शंका॥ अनादिसद्रूपभावत्वहेतुकोआकाशा दिकसपक्षसेव्यावृतमानेहुये वहअसाधारणहेत्वाभासहोगा । क्योंकि जोविपक्षसपक्ष दोनोंसेव्यावृतहोकर पक्षमात्रमेंवृतिहो सोअसाधारण हेत्वाभासहोताहै । औरयहअसाधारणकालक्षणपूर्वउक्तहेतुमेप्राप्तहै । क्योंकि अनादिसद्रूपभावत्वहेतु घटादिकविपक्षतथाआकाशादिक सपक्षसेव्यावृतहोकर पक्षमात्रआत्मामेंवृतिहै यातेदुष्टहेतुहै। समाधान श्रुतिमेंआकाशादिकोंकी उत्पत्तिकथनकीहै औरउत्पत्तिवाला पदार्थ घटादिकोंकीन्याईनियम करकेअनित्यहीहोताहै । यातेनित्यत्वसाध्य

काभीआकादिकोंमें अभावहोनेसेसपक्षत्वकाअभावहै।यातेहेतुगतपूर्व उक्तदोषनहींप्राप्तहोसकता । औरयहांकेवलव्यतिरेकिलिंग स्वीकार होनेसेभीपूर्वउक्तदोषनहीं । यहांकेवलव्यतिरेकिकायहआकारहै ।

*आत्मानित्यः अनादिभावत्वात्
यन्नैवं तन्नैवंयथा घटादि *

अ०॥ आत्मानित्यहैअनादिभावरूपहोनेसेजिसमेंनित्यत्वकाअभावहै तिसमेंअनादिभावत्वकाभीअभावहैजैसेघटादिकहैं॥इति॥यद्यपि केवल व्यतिरेकिलिंगमानेहूयेनित्यत्वसाध्यकीअप्रसिद्धिहोगी तथापिसामान्य तोदृष्टअनुमानसे अनिश्चितहैधर्मिजिसका ऐसेनित्यत्वधर्मके सिद्धहूये केवलव्यतिरेकिअनुमान आत्मामेंहीनित्यत्वको स्थापनकरताहै॥याते नित्यत्वसाध्यकी अप्रसिद्धिनहीं । यहांसामान्यतोदृष्टानुमानका यह आकार है ।

* नित्यत्वंक्वचिदाश्रितं धर्मत्वात् रूपादिवत् *

अ० ॥ नित्यत्वधर्मकिसीके आश्रितहै धर्मरूपहोनेसेजोजो धर्महोताहैसोसोकिसी धर्मिकेआश्रितहोताहै रूपादिकोंकीन्याई।इति। अथवायहांनैयायिकमतकेअनुसारआत्मामेंनित्यत्व सिद्धकरनेसेआका शादिकसपक्षमेंनित्यत्वसाध्यऔअनादिभावत्वहेतुइनदोनोंकीविकलता नहीं । क्योंकि वह आकाशादिकोंको नित्य तथा अनादिभावरूप मानते हैं ॥इति ॥ यहांतककारिका के पूर्वार्द्धका व्याख्यानहूया ॥ अब नित्यत्वके साधकअनुमानमें विपक्षविषयक बाधकको निरूपण करतेहुये कारिकाके उत्तरार्द्धका व्याख्यान करतेहैं । यदिआत्मा को अनित्यमानोगे तो कियेहूयेकर्मनका फलभोगसेविनानाश और न

क्यिंहुएकर्मनका फलभोगजो कृतनाशतथा अकृताभ्यागमरूप दोष तिसकीप्राप्ति होगी, भावयहपूर्वउक्तअनुमानसे आत्माकी नित्यता सिद्धहोनेपरभी जोवादीका अनित्यताकथनहै यहहीविपक्ष है, और पूर्वउक्तदोषकी प्राप्तिही विपक्षमेंबाधक है। औरआत्माको अनित्य मानेहुयेकर्ता औभोक्ताकाभी एकत्वनहींहोगा। क्योंकि वादीकेमत मेंदेहरूप आत्माहीकर्मकाकर्ता है। वहतोयहांहीभस्मीभूत होगिया औरनवीन उत्पन्नहूयादेव शरीररूपआत्मा कर्मफलकाभोक्ताहोगा। ऐसेमानेहूयेलोकमें प्रसिद्धकर्ताभोक्ताकेएकत्वका नियमभंगरूपदोष वादीकोप्राप्तहोगा। क्योंकिलोकमेंजोभक्षणक्रियाकाकर्ता है वहीतिस केफलतृप्तिकोप्राप्तहोताहै। अन्यनहीं यदि ऐसानमाने तोदेवदत्तके भोजनकरनेसेयज्ञदत्ततृप्तहूयाचाहिये। सोऐसादेखनेमेंनहींआता याते कर्ताऔ भोक्ताका एकत्वहीमानना उचितहै। जब ऐसे माना तब आत्माकीनित्यता बलात्कारसेसिद्धहूयी॥ शंका॥

❀ धर्मिकल्पनातोधर्मकल्पनावरमिति ❀

अ०॥ धर्मिकीकल्पनासेधर्ममात्रकी कल्पनाकरनेमेंलाघवहै। इसन्यायसे शरीरादिक प्रसिद्धधर्मियोंमें आत्मत्व धर्मकीकल्पना क्यों नहींकरते। समाधान॥ शरीरादिककार्यवर्ग्यमें आत्मत्वकाअसंभव है। क्योंकि, इसकोअनित्यहोनेसेऔ कार्यहोनेसे तथारूपवालाहोनेसे औजडहोनेसे तथापरिछिन्नहोनेसे औदृश्यहोनेसे अनात्मतानिश्चित है। इसकथनसेकारिकाके *द्वितीयपादका व्याख्यानहूया* ॥ शंका॥ पूर्वउक्त युक्तिकेबलसे आत्माकीनित्यता सिद्धहुयेभी नैयायिकमतमें तिसकोमानसप्रत्यक्षका विषयहोनेसे तिसके साक्षात्कारकेअर्थ श्रुति प्रमाणकीकिंचितभी अपेक्षानहीं॥

* आत्मामे श्रुतिप्रमाणकीअपेक्षानिरूपण पूर्वक अव्ययपदार्थका निरूपण *

समाधान ॥ विशिष्टआत्माकोमानस प्रत्यक्षका विषयहूयेभी शोधनक्रियाहूयातत्त्वंपदकालक्ष्यार्थअकर्ताअभोक्ताशुद्धआत्मामानस प्रत्यक्षका विषयनहीं होसकता याते ।

* अविनाशीवाऽरेअयमात्मानुच्छितिधर्मा । निष्कलमिति *

बृ० उ० मै० ब्रा० कं० (१४)

अ० ॥ अरेमैत्रेयीयहआत्माअविनाशीहै तथाविनाशसेरहित धर्मवालाहै और निरवयव है। इत्यादिक श्रुति सिद्धनित्यआत्माके साक्षात्कारकेअर्थअन्यप्रमाणका अभावहोनेसे श्रुतिप्रमाणकीअवश्य अपेक्षाहै। यहांपूर्वउक्तश्रुतिनेतीनप्रकारका विनाशजोआत्मामेभ्रान्ति करप्राप्तथा।तिसकानिषेधकियाहै। वहतीनप्रकारकाविनाशयहहै। एक तोस्वरूपनाशप्रयुक्तनाशहै । जैसेविद्युतकाविनाश स्वरूपसेहोताहै । औरदूसराधर्मनाश प्रयुक्तनाशहै । जैसेकुंडलरूपधर्मके अभावहोनेसे सुवर्णरूपधर्मीका अभावहै । क्योंकिउत्पत्तितथा विनाशकोप्राप्त होता हुआधर्मअपनेआश्रयरूप धर्मिकोभीविकारिकरदेताहै। औरतीसरा अवयवोंके विनाशप्रयुक्तनाशहै । जैसे तंतूरूप अवयवके विनाश होनेसेवस्त्रकानाशहै । इसीकोशास्त्रमेअपक्षयशब्दसेकथनकियाहै । इनमे स्वरूपनाश प्रयुक्तनाशका आत्मामे निषेध करने के लिये "अविनाशी" यह पद श्रुतिने कथनकिया है । और दूसरेनाश

के निषेधकरनेकेलिये "अनुछित्तिधर्मा" यहपदकथनकियाहै। और तीसरेविनाशके निषेधकरनेकेलिये "निष्कलं" यहपदकथनकियाहै। इसीअभिप्रायसेप्रथमकारिकामें (अव्ययं) यहआत्माकाविशेषणकथन कियाहै। यद्यपियहांव्ययनामविनाशकाहै नजोविनाशहोउसकानाम अव्ययहै। इसप्रकारकासमास कियेहुयेअविनाशीरूपताआत्माकी सिद्धनहींहोसकती। क्योंकिअपनेविनाशसेभिन्नजो घटादिकप्रति-योगीहैं तिनमेंअनित्यपनाहीदेखाहै। तैसेस्वनाशसेभिन्नआत्मामेंभी अनित्यपनाहोगा। तथापियहांपूर्वउक्तसमासनहीं किन्तुसमासांतर है। सोदिखलातेहैं॥

न विद्यतेऽव्ययोविनाशोधर्मतः स्वरूपतोऽवयवतो यस्यसअव्ययः॥

अ०—जिसकाधर्मसे और स्वरूपसे तथाअवयवसे विनाशनहो तिसकोअव्ययकहतेहैं। "अर्थयह" आत्माकोनिरवयवहोनेसे अव-यवनाशप्रयुक्त नाशनहींहोता। और निर्धर्मकहोनेसे धर्मनाश प्रयुक्तनाश नहींहोता॥ औरनित्यहोनेसे स्वरूपनाशप्रयुक्त नाश नहींहोता॥ शंका॥ सांख्यमतमें प्रकृतिको परिणामिनित्यमानाहै तिसका स्वरूपसे जैसेनाशहोताहै तैसे आत्माकाभीनाशहोगा समा-धान। परिणामिनित्यपदार्थकीन्याई आत्माकास्वरूपसे अर्थात्परि-णामरूपसेनाशनहींहोता, क्योंकिआत्माकूटस्थनित्यहै, अर्थात्परिणाम रूपविकारसे रहितनित्यहै और परिपूर्णहै॥ इतिअव्ययपदव्याख्या॥

॥ अथ ज्योतिपदव्याख्याप्रारंभः॥

श्रुतिसिद्धआत्माके साक्षात्कारकेअर्थ श्रुतिप्रमाणकीअपेक्षाहै।

यहअर्थपूर्वनिरूपणकिया ॥ तहांआत्माकोश्रुतिसिद्धयत्वनिषेध करने केलियेपूर्वपक्षीकोईएकनास्तिकभूमकारचनाकरताहै ॥

॥ अथ पूर्वपक्ष ॥

❀ आत्मामेप्रमाणकेअभावसे, असत्यताका निरूपण ❀

हेसिद्धांतिन् जिसआत्माकीनित्यता आपप्रतिपादन करतेहो तिसमेकोईप्रमाणहै अथवानहीं ॥ यहांप्रथमपक्षमेंबहुतवक्तव्यहोनेसे द्वितीयपक्षमेंप्रथम दूषणदिखलातेहैं॥ तहांद्वितीयपक्षतोनहींसंभवता। क्योंकिप्रमाणके आधीनहीवस्तुकीसताहै। प्रमाणकेअभावहुयेआत्मा कोअसत्‌रूपताकी प्राप्तिअवश्यहोगी ॥ शं १ ॥ हेवादिन् प्रमाणके आधीनवस्तुकीसत्ताहै । इसतुम्हारेनियमका प्रमाणमें व्यभिचारहै ॥ क्योंकिप्रमाणमेंप्रमाणका अभावहुएभीतुमनेप्रमाणकी सत्तामानीहै । समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् यहआपकाकथन नहींसंभवता ॥ क्योंकि स्वपरकासाधकजोप्रमाण तिसकोहमप्रकाशकस्वभावमानतेहैं ॥ याते तिसमेंप्रमाणकेअभावहुएभीअसतरूपतानहींहोसकती ॥ औरआत्मा तोप्रमेयएकस्वभावहै ॥ इसीसेप्रमाणके अभावहुए आत्माकोअसत् रूपकीप्राप्तिआवश्यकहै ॥ यदिऐसेनमानेतो प्रमाणकेअभावहुए नर शृंगादिकभी सत्यहुएचाहिये।सोनरशृंगादिकोंकी सत्ताहमदेखतेनहीं॥ यातेप्रमाणकेअभावसे जैसेनरशृंगादिक असतहैं।तैसे आत्माभीअसत् रूपहोगा ॥

❀ आत्मामेलौकिक प्रमाणकाअभावनिरूपण ❀

औरयदिप्रथमपक्षमानोतो तिसमेंयहकहनाचाहिये। वहप्रमाण

लौकिकहैअथवावेदहै। प्रथमपक्षमेंभीयहविचार करनेयोग्यहै। वहलौकिकप्रमाणप्रत्यक्षहैवाअनुमानहैअथवाशब्दहैवाइनसेकोईभिन्नहै।प्रथमपक्ष तोनहींसंभवता क्योंकि शब्दादिकगुणोंकोआकाशादिकभूतोंकाधर्म होनेसेऔरस्मृतिज्ञान तथाइच्छादिकगुणोंको अंतस्करणका धर्महोनेसे आत्मासर्वधर्मोंसे रहितहै । औरयदि निर्धर्मकआत्मामेभी इन्द्रियकी विषयतामानो तोनहींसंभवती । क्योंकिनेत्रइंद्रियरूपवान् वस्तुकोही विषयकरताहै । रूपरहितकोनहीं । अन्यथावायुका प्रत्यक्षभीनेत्र इंद्रियसेहूयाचाहिये । ऐसेहीश्रोत्रत्वक्रसनाघ्राणयहचारोइंद्रियभीशब्द औस्पर्शवान्तथारसऔगंधमात्रकोविषयकरतेहैं।शब्दादिकोंसेविलक्षण आत्माकोनहींविषयकरसकते।।औरइन्द्रियोंकोबाह्यवस्तुकेदेखनेका स्वभावहै। आत्मातुमनसेसर्वसेअंतरमानाहै । यातेभीइंद्रियोंकी आत्मामें प्रवृत्ति नहींहोसकती । औरअनुमानप्रमाणकाभीआत्मा विषय नहीं। क्योंकिआत्मव्याप्तहेतुका अनिश्चयहै । भावयह आत्माकानिश्चायकजोहेतुहैसो आत्माकरकेव्याप्तहीग्रहणकरनेयोग्यहै।तिसआत्मव्याप्त लिंगकेग्राहकइन्द्रियहैंयहकथनतोनहींसंभवता। क्योंकिरूपादिवान्तथा बाह्यवस्तुकोहीइन्द्रियविषयकरतेहैं।यहपूर्वकथनकियाहै। और अनुमान सेभी तिसआत्मव्याप्त लिंगकाग्रहण नहींहोसकता । क्योंकिअनवस्था दोषकीप्राप्तिहै । भावयह आत्माको अतीन्द्रिय होनेसे आत्मविशिष्ट हेतुभी अतींद्रियकहनाहोगा । तिसहेतुकेज्ञान अर्थऔर अनुमान कीअपेक्षा होगी । तथादूसरे अनुमानकोभी लिंगज्ञान जन्यहोनेसे लिंगकेज्ञान अर्थ तीसरेअनुमानकी अपेक्षाहोगी । औरतीसरेअनुमान कोचौथेकीअपेक्षा होनेसे अनवस्थाकी प्राप्तिअवश्यहोगी ।।शंका।।

हेवादिन् जहांअन्वयिलिंगसे साध्यकी सिद्धिहोवहां साध्यव्याप्तहेतुका निश्चय अनुमानकाअंग है । औरजहांकेवल व्यतिरेकिलिंगसेसाध्य कीसिद्धहोवहां व्यतिरेकव्याप्तिका निश्चय अनुमानका अंगहै । इस कथनसेयह अर्थसिद्धहुया । प्राणादिमत्व रूपव्यतिरेकि लिंगसेआत्मा कीसिद्धिहोती है । तिसअनुमानकायह याकारहै ।

※ जीवच्छरीरंसात्मकं प्राणादिमत्वात्
यन्नैवंतन्नैवं यथाघटादि ※

अ०—जीवत्शरीर आत्मासहितहै । प्राणादिवालाहोनेसे जोजो आत्मासहित नहींहै । सोसोप्राणादि वालाभीनहीं है । जैसेघटादिक हैं ॥ इति ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् प्रतियोगीज्ञान विना अभाव काज्ञाननहींहोता यहनियमहै । जैसेअग्निरूप प्रतियोगीकेज्ञान विना अग्निकेअभावको कोईनहींजानसकता । तैसेहीआत्मारूप प्रतियोगी केज्ञानविना आत्माकेअभावरूप साध्याभावकी प्राणादिमत्वाभावरूप साधनाभावकेसाथ व्याप्तिकाग्रहण कैसेहोगा । औरइसी अनुमानसे आत्माकाज्ञान मानेहुए कैसेअन्योऽन्याश्रयदोपनहीं प्राप्तहोगा क्योंकि आत्माकीसिद्धिहुए इसअनुमानकी प्रवृति औ अनुमानके प्रवृत्तहुए आत्माकी सिद्धि माननीहोगी ॥ ऐसेदोनोंको अपनी सिद्धि में परस्परआपेक्षाहोनेसे अन्योऽन्याश्रय दोपस्पष्टही है ॥ औरइसकेवल व्यतिरेकि अनुमानमें अप्रसिद्धविशेषण वालापक्षभीहै ॥ क्योंकि ॥

सर्वकार्यंसर्वविचित्कर्तृपूर्वकं कदाचित्क-
त्वात् यन्नैवं तन्नैवंयथा आकाशादि ।

अ०—सर्वकार्य सर्ववित्कर्तृपूर्वकहै अर्थात्किसीसर्वज्ञकर्ताकर

रचितहैं । कदाचित्कहोनेसे जोजोसर्ववित्कर्तृपूर्वकनहींहैं सोसोकदा-चित्कभीनहींहैं । जैसेश्राकाशादिकहैं ॥ इति ॥ जैसेइसअनुमानसे पूर्वसर्ववित्वादिविशेषणकी अप्रसिद्धिहोनेसे अप्रसिद्धप्रविशेषणवाला पक्षहै । तैसेहीसिद्धांतीनेश्रात्माकीसिद्धिअर्थकथनकियाजो अनुमान तिसकीप्रवृतिसेप्रथमजीवतशरीररूपपक्षमें सात्मकत्वरूपसाध्यकीअप्-सिद्धिहोनेसे अप्रसिद्धविशेषणवालापक्ष प्रसिद्धहीहै । यातेप्राणादि मत्वहेतु श्राश्रयसिद्धिरूपदोषकर दुष्टहोनेसेभी आत्माकासाधकनहीं । इसप्रकारश्रात्माअनुमानकाविषयनहीं। अबतीसरेपक्षकोदूषितकरतेहैं । श्रौरलौकिकशब्दभी श्रात्माकोविषयनहींकरसकताहैं । क्योंकिप्रत्यक्ष श्रौरअनुमानकीजहांविषयताहोवहांहीलौकिकशब्दप्रवृत्तहोताहै। श्रौर श्रात्मामेंपूर्वउक्तरीतिसे प्रत्यक्षादिकोंकी विषयताकाअभावहै । याते लौकिकशब्दभीतिसमें प्रमाणनहीं । श्रौरइनतीनोंसेभिन्नअन्यकिसी प्रमाणकीसंभावनाभीनहींहोसकती । क्योंकिअर्थापतिप्रमाणतो अन्य प्रकारसे उपपन्नहै । सोऐसेहै । शरीरकाजीवनप्राणोंसेविना अनुप-पन्नहुया प्राणश्रात्माकी कल्पनाकराताहै ॥ इति ॥ श्रौरअनुपलब्धि प्रमाणकी श्रात्मामेंयोग्यताहीनहीं ।

ॐ अथआत्मामेंवेदप्रमाण की विषयता का निषेध निरूपण ॐ

अन्वयादिमें कथन कियाजो दूसरापक्षथा तिसको वादीनिषेध करताहै । दूसरेपक्षमेंभी यहविचारकरने योग्यहै। वेदजन्यज्ञानभास्यत्व रूपविषयत्वश्रात्मामेंहै ॥ अथवा ॥ प्रकारांतरसेभासमान श्रात्मामें वेदजन्य ज्ञानसे निवृत्तहोनेयोग्य अज्ञानकी विषयतारूप विषयत्व है

यहांवेदजन्यज्ञानसेनिवृत्तिके योग्यअज्ञानकरजोआच्छादितपनाहैयही आत्मामेंअज्ञानकीविषयताजाननी॥ वेदजन्यज्ञानभास्यत्वरूपविषयत्व हैइसप्रथमपक्षकोदूषितकरतेहैं । प्रथमपक्षमेआत्माकोवेदजन्यज्ञानका विषयहोनेसेघटादिकोकीन्याईजड़ताहोगी। औरजडताहोनेसेअनात्म पनाहोगा । यहांयहअनुमानजानना ॥

आत्माअनात्माभवितुमर्हतिजडत्वात्घटादिवत्

अ० ॥ आत्माअनात्माहोनेकेयोग्यहै । जडहोनेसे । जोजो जडहोताहैसोसोअनात्माहोताहै । जैसेघटादिकहैं ॥ इति ॥ शंका॥ हेवादिन्यहांचिद्काविरोधिजडत्वकहतेहोअथवाचिद्काअनधिकरणत्व जडत्वहै । यहदोनोंप्रकारकाजडत्वआत्मामेनहींसंभवता । क्योंकि आत्माचिद्रूपहै । तिसमेज्ञानकीविषयतासेजडपनातुमकैसेआपादन करतेहो । औरजडत्वहेतुअनात्मताकासाधकभीनहीं । क्योंकितिसमें ज्ञानाऽनाश्रयत्वउपाधिहै । सोएसेहै । जहांजहांअनात्मत्वहैतहांतहां ज्ञानाऽनाश्रयत्वहै । जैसेघटादिकोंमेंहै । औरजहांजहांजडत्वहैतहां तहांज्ञानाऽनाश्रयत्वनहीं । जैसेआत्मामेहै। इसप्रकारअनात्मत्वसाध्य केसाथव्यापकऔरजडत्वहेतुकेसाथअव्यापकहोनेसे ज्ञानाऽनाश्रयत्व कोउपाधिरूपताकासंभवहै । यातेजडत्वहेतुसोपाधिकनामाहेत्वाभास है । स्वसाध्यकासाधकनहीं । समाधान । हेसिद्धांतिन्आत्मामेज्ञान भास्यत्वमानेहूएचेतनरूपताकीअसिद्धिहै ॥ क्योंकि भास्यरूपअर्थात् दृश्यभीहोपुनः वहचेतनहोऐसेकहींभी प्रसिद्ध नहींहै । औरज्ञानमें वेद्यत्वभीस्वीकारनहींउलटातिसकोअवेद्यस्वभावमानाहै।औरज्ञानाऽना श्रयत्वमेउपाधिरूपताभीनहींसंभवती । क्योंकिनैयायिकमतमेंवहपक्ष

इतरत्वहै । यदिपक्षेतरत्वकोभीउपाधिरूपमानलेंतोसर्वहीसतहेतुदुष्ट होजायेंगे । क्योंकिसर्वहीसतहेतुपक्षेतरत्वरूपउपाधिकरयुक्तहीहैं । यातेपक्षेतरत्वकोउपाधिरूपतानहींसंभवती । किंवा।यहउपाधिसाधन केसाथभीव्यापकहै। क्योंकिजहांजहांजडत्वहैतहांतहांज्ञानाऽनाश्रयत्व भीहै । जैसेशरीरबाह्यदेशावच्छिन्नआत्मामेंहै । इसरीतिसेज्ञानाऽना श्रयत्वकोउपाधिपनेकेनबननेसे जडत्वहेतु निर्दोषहुआ अनात्मत्वका साधकहै ॥ इति ॥ औरद्वितीयपक्षमेभीयहविचारकर्तव्यहै । वह प्रकारांतरसे आत्मामेभासमानत्वक्याहै । स्वयंभासमानताहैअथवा अन्यकिसीप्रमाणसेभासमानताहै । अंत्यपक्षमेतो दोषपूर्वकथनकर आयेहैंयातेपुनःकथनकीआवश्यकतानहीं । औरस्वयंप्रकाशरूपतासे भासमानआत्माअज्ञानकरआच्छादितहैयहप्रथमपक्षशेषरहताहैवहभी नहींसंभवता । क्योंकिस्वयंप्रकाशस्वरूपआत्मामेअज्ञानकीविषयताका हीअसंभवहै। अर्थयह। अज्ञानकाविषयआत्माकोमानेहूयेअभासमानता होगी । सोस्वयंभासमानआत्मामेंनिरूपणनहींहोसकती ॥ शंका ॥ हेवादिन्‌जैसेस्वयंभासमानसूर्यमेअभासमानताकीसंभावनाउल्लूकादिक करतेहैं । तैसेहीस्वयंभासमानआत्मामेभीअभासमानताकीसंभावना अज्ञजनोंकोहोजायेगी ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन्‌जैसेमध्यान्हकाल वर्तिस्वयंप्रकाशमानसूर्यमेकोईभीअंधकारकीसंभावनानहींकरसकता । औरसूर्यकोअंधकारकरके आच्छादितहोनेसेउल्लूकादिकतिसकोनहीं देखतेयहवार्तानहीं । किन्तुसूर्यके प्रकाशसेतिनकीदृष्टिमंदहोजाती है तिसदिवांधत्वरूपदोषसे वहसूर्यकोनहींदेखसकते । तैसेहीस्वयंप्रकाश आत्मामेअज्ञानविषयत्वकेअसंभवसेवेदप्रमाणकीविषयतानहींसंभवती।

यातेदेहादिकोंसेभिन्नआत्माअसतहै । यहअर्थसिद्धहुआ ॥ इति ॥

* अथएकदेशिवेदांतिकीरीतिसेपूर्वपक्षका समाधाननिरूपण *

हेवादिन्आत्मामें अज्ञानविषयत्वके अभावसे वेदप्रमाणकीविषयतानहीं संभवतीयहपूर्वतुमनेकथनकिया।सोक्याअज्ञानकीविषयता जीवमेंनहींसंभवती यहतुमकहतेहो । अथवा ब्रह्ममेंनहींसंभवती यह तुमकहतेहो । तिनमेंप्रथमपक्षतोहमकोभी स्वीकारहै । क्योंकिकर्ता औरभोक्तारूपसंसारीजीवको वेदनहींप्रतिपादनकरता । तिसकेप्रतिपादनमेंकोईप्रयोजननहीं । औरद्वितीयपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकि ब्रह्ममेंअज्ञानकीविषयता "ब्रह्मनजानामि"इसअनुभवसेसिद्धहै । याते वेदजन्यज्ञानकरके निवृत्तिकेयोग्य अज्ञानविषयत्वरूपवेदप्रमाणकीविषयताकैसेनहींसंभवती । इसप्रकारकाजोएकदेशीकामतहै । तिसको दूषितकरनेकेलिये पूर्वपक्षीतिसकोप्रकटकरताहै । पूर्वआत्मामेंप्रमाण काअभावनिरूपणकिया। तिसप्रमाणकपनेके निषेधमेंकोईकमंडनमत को आश्रयणकरनेवाले औरआगेकथनकीहुईरीतिसे आत्माअज्ञान काविषयहै इसकोनसहनकरतेहुये उत्तरदेनेकोपूर्वपक्षीके सन्मुखअवस्थितहोतेहैं ॥ शंका ॥ पूर्वब्रह्मविषयकअज्ञान तुमनेमानाहै और जीवविषयकनहींमाना ॥ सोकथननहींसंभवता ॥ क्योंकि—

* अयमात्माब्रह्म *

अ०—यहआत्माब्रह्मस्वरूपहै।इसश्रुतिवचनसेजीवब्रह्मसेअभिन्नहै यातेवहकैसेअज्ञानकाविषयनहीं किंतुअज्ञानकाविषयहै॥समाधान॥ हे वादिन्श्रुति सिद्धअद्वैतकोसंकोचकरके जीवऔरब्रह्म तथाजीवोंका

परस्परभेदहमकल्पनाकरतेहैं । यातेजीवअज्ञानकाविषयनहीं ॥शंका॥ यदिवास्तवद्वैतके आश्रयणकरनेसेही जीवात्माअज्ञानका विषयनहीं यहनिषेधबनसकताहै तोप्रमाणशून्यअद्वैतकासंकोच किसलियेकरतेहो ॥ समाधान ॥ हेवादिन् ॥

❀ यत्परःशब्दःसशब्दार्थ ❀ पू० मी०

अ०-जिसकोतात्पर्यवृत्तिसे शब्दबोधनकरे सोईशब्दकाअर्थ होताहै। इसन्यायकोआश्रयणकरनेसे अद्वैतश्रुतिप्रत्यक्षादिकप्रमाणों को अभासरूपताकरके प्रत्यक्षादिसिद्धद्वैतकोबाधकर अद्वैतकोस्थापन करतीहै। यातेअद्वैतअप्रमाणकनहीं। इसीकारणसे अपनेमतकीसिद्धि केअर्थअद्वैतकासंकोच अवश्यकरनेयोग्यहै। इसमेंकारणयहहै । एक जीवऔरतिसकासंपादक एकअज्ञानस्वीकारकियेहुये साधनोंके अनु-ष्ठाताकिसी एकपुरुषकोतत्त्वज्ञानके उत्पन्नहुयेजगत्के उपादानभूतअ-ज्ञानकाविनाशहोनेसे इसवर्तमानकालमें किसीकोभी संसारकाअनुभव नहींहोगा । औरतैसेहीकोईबद्धहै कोईमुक्तहै। इसप्रकारकीव्यवस्था भी सिद्धनहींहोगी । यातेजीवब्रह्मकेभेदसे विनाबद्धमुक्तादिकव्यव-स्थाकीअनुपपत्तिसेअद्वैतकासंकोचअवश्यकरनेयोग्यहै॥इति॥शंका॥ हेएकदेशिन् यदिआत्माविषयकअज्ञाननहींहै तोक्याअज्ञाननिर्विषयही है। औरयदियहकहो अज्ञानकाविषयब्रह्महै॥सोनहींसंभवता॥ क्योंकि ब्रह्मस्वयंप्रकाशस्वरूपहै । तैसेअज्ञानकाआश्रयभी कोईनहींनिरूपण होसकता।यद्यपिजीवहीअज्ञानकाआश्रयहैतथापितिसकोअज्ञानविशि-ष्टहोनेसे अज्ञानकीआश्रयतानहींसंभवती । क्योंकिआत्मआश्रयदोष प्राप्तहोताहै ॥ सोइसप्रकारहै ॥

❀ विशिष्टवृत्तिधर्मस्यविशेषणावृत्तित्वानियमात् ❀

अ०—विशिष्टमेंवर्तनेवाले धर्मकाविशेषणमे वर्तनेकानियमहै। इसन्यायसे अज्ञानविशिष्टमेंवृत्तिजोअज्ञानकीआधारता सोविशेषणी भूतअज्ञानमेंभी अवश्यवर्तेगी यातेआत्माश्रयदोषहोनेसे जीवभीअज्ञान का आश्रयनहीं। औरब्रह्मकोभी अज्ञानकीआश्रयतानहींसंभवती। क्योंकि ब्रह्मकोतुमनेअज्ञानकाविषयमानाहै। विषयहोनेसेहीतिसको आश्रयतानहींसंभवती। औरअज्ञानकोआश्रय तथाविषयके भेदकी अपेक्षाहोनेसेभीएकहीआश्रय तथाविषयनहीं बनसकता। औरब्रह्मको अज्ञानकाआश्रयमानेहुये जीवकीन्याईं अल्पज्ञहोनेसे सर्वज्ञताकीभी हानीहोगी। इसरीतिसेअज्ञानकाआश्रय तथाविषयकोईभी निरूपण नहीं होसकता॥ इति॥ समाधान॥

❀ अथएकदेशीकीरीतिसेअविद्याकेआश्रय तथाविषयकाभेदनिरूपण ❀

जीवाश्रयाब्रह्मपदाह्यविदयातत्त्वविन्मता।
तद्विरुद्धमिदंवाक्यमात्मात्वज्ञानगोचरः॥ ३॥

चौ०—जीवाश्रितऔब्रह्मविषैनी। याहिअविद्याबुधजनवैनी॥ अज्ञान विषयआत्मपुनगायो। ततविरुद्धयहवचननभायो॥ ४॥

टी०—ब्रह्मकोस्वयंप्रकाशहोनेसे तिसमेंअज्ञानकी विषयतानहीं संभवती यहपूर्ववादीनेकथनकिया सोअसंगतहै। क्योंकिअविद्याकी कल्पनाकरनेवालेजीवकेप्रति वहब्रह्मस्वयंप्रकाशरूपतासे सम्यक्भात्र

नहींहोता। औरजिसकेज्ञानसे मोक्षहो तिसकेअज्ञानसेही बंधहोताहै यहनिर्विवादहै। औरब्रह्मकेज्ञानसे मोक्षहोताहै यहवार्ता —

❀ ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ❀

अ०—ब्रह्मकेजाननेवाला ब्रह्मस्वरूपहोताहै। इसश्रुतिमेंप्रसिद्ध है। इसीकारणसेबंधभीब्रह्मके अज्ञानसेही होताहै। यातेकिसप्रकार तुमब्रह्ममें अज्ञानकी विषयताका अभाव प्रतिपादन करतेहो। और जीव को अज्ञानका आश्रय मानने में जो आत्माश्रय दोष तुमने पूर्वकहाथा। वहभीनहींसंभवता। क्योंकिअज्ञानको उपाधिरूपता सेतटस्थहोकर जीवभावकानियामकहोनेसे जीवकोटिसे वहबाह्यहै। इतनामूलकारिकामेजो (हि) शब्दहै तिसकाअर्थजानना॥शंका॥ व्याकरणमे (आप्लृ) धातूव्याप्तिअर्थात्पूर्णअर्थमेंहै तिसधातूसेआत्म शब्दकीसिद्धिहोनेकरतिसकोब्रह्मकावाचकपनाहीप्रतीतहोताहै॥ और ब्रह्ममेंअज्ञानकीविषयतातुममानतेहो ॥ औरपूर्वउक्तरीतिसेब्रह्मऔर आत्माएकहीपदार्थहै॥ यातेआत्मामेअज्ञानकीविषयताकाअभावतुम कैसेकथनकरतेहो॥ समाधान॥हेवादिन्यद्यपियोगवृत्तिसेआत्मशब्द ब्रह्मकावाचकहै॥ तथापि॥

❀ रूढियोंगमपहरति ❀

अ० ॥रूढिवृत्तियोगवृत्तिकोहरलेतीहै॥ इसन्यायसेआत्मशब्द जीवकाहीवाचकहै॥ सोजीवअज्ञानकाआश्रयहैविषयनहीं॥ विषय तोअज्ञानकाब्रह्महीहै ॥ इसप्रकारअज्ञानकीविषताहोनेसेहीवेदजन्य ज्ञानकरकेनिवृत्तिकेयोग्यअज्ञानविषयत्वरूपजोवेदप्रमाणकी विषयतासो ब्रह्ममेंसंभवेहै॥ इति॥ शंका ॥ जीवअज्ञानकाआश्रयहोपरन्तुतिसे

कोएकहोनेसेबद्धमुक्तादिकव्यवहारकैसेसिद्धहोगा ॥ समाधान ॥ हे वादिन्ब्रह्मअज्ञानका आश्रयरूप जीवनानाहैं अन्यथाबद्धमुक्तादिक व्यवहारनहींबनेगा।जीवोंकाभेदबद्धमुक्तादिकव्यवहारकासाधकहैइसी अर्थकोस्पष्टकरतेहैं ॥ जिसअधिकारिकोश्रवणादिकोंकेअभ्यासकी पुष्कलतासेब्रह्मही आत्मामैंहूं ॥ इसप्रकारकासाक्षात्कारहुआहै ॥तिस पुरुषकामोक्षहोताहैऔरतिससेभिन्नबद्धरहताहै ॥ यहांमुख्यसामानाधि करणयकीन्याईपदोंकाबाध सामानाधिकरणयमानेहुयेभी ब्रह्मस्वरूपही आत्माहैतिसब्रह्मसेइतरनहीं क्योंकिकल्पितपदार्थकी अधिष्ठानसेभिन्न सत्तानहींहोती ॥ यातेपूर्वउक्तबोधकाआकारबनसकताहै ॥ यहभाव है ॥शंका॥ यद्यपिपूर्वउक्तरीतिसेजीवअनेकहोंतथापितिनकाउपाधि रूपअज्ञानकोएकहोनेसेब्रह्मज्ञानकरतिसएकअज्ञानके निवृत्तहुये पुनः संसारकीप्रतीतिकिसीकोनहींहोगी ॥ समाधान ॥ हेवादिन्पूर्वउक्त बद्धमुक्तादिकव्यवहारकी अनुपपत्तिसेअज्ञानभी अनेककल्पनाकिये जातेहैं ॥ यातेसंसारकीप्रतीतिकासंभवहै ॥ शंका ॥ साधारणतथा असाधारणप्रपंचकाउपादानऔरप्रतिबिंबतुल्यअनेकजीवोंके आश्रित औब्रह्मकोविषयकरने वाला एकहीअज्ञान बद्धमुक्तादिक व्यवहार का साधकक्योंनहो ॥ इसीअर्थकोदिखलातेहैं जिसअधिकारिजीव में तत्त्वसाक्षात्कार उत्पन्नहोताहै । तिसआश्रयको विरोधसेत्याग कर औरआश्रयरूपजीवोंमें अज्ञानवर्ततताहै । जिसआश्रयको अज्ञा नत्यागताहै । तिसकोमुक्तकहतेहैं । जिनमेंस्थितहोताहै तिन कोबद्ध कहतेहैं । तैसेमानेहुये एक अज्ञानसेही अनेकप्रकार का बद्धमुक्तादिक व्यवहार सिद्धहुये पुनः अनेक अज्ञानोंकी कल्पना

निष्फलहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् हमयहपूछतेहैं । तत्त्वज्ञानअपने आश्रयसे अज्ञानको निकासदेताहै अथवातिसको नाशकरदेताहै । यदिप्रथमपक्षमानोतो अज्ञानकी निवृत्तिनहींहोगी । क्योंकिज्ञानसे भिन्नऔरकोई अज्ञानकानिवर्तकहै नहीं औरनतुमनेमानाहै । तैसामाने हुये अज्ञानको नित्यत्वप्रसंगहोगा । औरअज्ञानकोनित्यहोनेसे द्वैतकी भी प्राप्तिहोगी याते प्रथमपक्ष असंगतहै । औरयदिद्वितीयपक्षहो तोअज्ञानकोएकमानेहुयेएकपुरुषकेज्ञानसे अज्ञानतत्कार्य सर्वप्रपंचकी निवृत्तिहुयेप्रत्यक्षादिप्रमाणसिद्ध जगतकाकिसीकोभी अनुभवनहींहोगा औरयदिवादीऐसेकहेअब पर्यन्तकिसीको ज्ञानहीनहीं हुआ सोकथन असंगतहै।क्योंकिपूर्वकालमेजोव्यासवसिष्ठादिकमहान्पुरुषहुयेहैं।।औ सम्यक्अंगोंतथाउपांगों सहितसाधनोंका अनुष्ठानजिन्होंनेकियाहै ।। तिनकोभीजबज्ञाननहींउत्पन्नहुयातोइसकालमेहोनेवाले अस्मदादिक जीवोंकोज्ञानउत्पत्तिकीसंभावनाभी अशक्यहोनेसे श्रवणादिकसाधनों केअभ्यासमेप्रवृत्तिके अभावहुये अनिर्मोक्षप्रसंगहोगा अर्थात्किसीको भीमोक्षकालाभनहींहोगा ॥ यहांशमादिकज्ञानके अंगहैं औरयज्ञादिक उपांगहै औरश्रवण आदिकसाधनहै।।औरदीर्घकालतथा आदर औरअंतरायसेरहितजो श्रवणादिकोंका अनुष्ठानहैयहही अनुष्ठानमेसम्यक्पनाहै ।।इति।। शंका ।।जैसेबद्धमुक्तादिकव्यवस्थाकेअनुसारअनेक अज्ञान कल्पनाकियेहैं जैसेप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंके अनुसारसत्यहीद्वैतक्योंनहो ।। समाधान ॥

ॐ प्रत्यक्षादिकोंमेंप्रामाण्यताकानिषेध ॐ

हेवादिन् प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेअनुसारद्वैतकोसत्यमानेहुयेति-समेंतुमको यहकथनकरनेके योग्यहै ॥

प्रत्यक्षादिप्रमाणानां प्रमात्वंपरतोयदि ।
अनवस्थास्फुटातत्रस्वतस्त्वेदोषसंशयः ॥ ४ ॥

स्वैया ॥ यहलौकिकमानजितेजगमेपरतोपरमात्वयदीतिन माहीं ॥ अनवस्थविख्यातभयीतिनमेयहनीकविचारकरोमनमाहीं ॥ परमात्वसुतस्त्वकहोजबहीतबदोपसंदेहभयोतहिमाहीं ॥ इहकारण द्वैतअसत्यविचारधरोअदुतीयसदामनमाहीं ॥ ५ ॥

टी० ॥ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंमेयहप्रमात्वक्याहै ॥ अर्थयहसो प्रमात्वजातिरूपहैअथवाउपाधिरूपहै ॥ प्रथमपक्षनहींसंभवता ॥ क्योंकि 'इदंरजतं' इसभ्रमज्ञानमेसंकरहै ॥ सोऐसेंहै ॥ केवलप्रमात्व 'अयंघटः' इसज्ञानमेरहताहै ॥ औरकेवलअप्रमात्वस्वाप्नगजादिज्ञान मेवर्तताहै ॥ तिनदोनोंकाएकत्रप्रवेश 'इदंरजतं' इसभ्रमज्ञानमेअंश भेदसेविद्यमानहै ॥ सोसंकरदोपजातिकाबाधकहोताहै ॥ यातेप्रमात्व जातिरूपनहीं ॥ परस्परअत्यंताभावकेअधिकरणमेरहनेवालेदोधर्मों काजोएकत्रप्रवेशहैइसीकानामसंकरहै ॥इति॥ अबउपाधिरूपप्रमात्व पक्षकेदूपितकरनेकेलियेदोविकल्पदिखलातेहैं ॥ तहां "व्यवहारमे समर्थअर्थविपयत्वरूपप्रमात्वहै" अथवा सर्वकालमे अबाधितअर्थ विपयत्वरूपप्रमात्वहै ॥ प्रथमविकल्पमेअर्थविपयत्वरूपप्रमात्वकहेंतोभ्रम ज्ञानमेअतिव्याप्तिहोगी ॥ तिसदोपकेदूरकरनेकेअर्थ "व्यवहारमेंसमर्थ" यहअर्थकाविशेपणकहाहै ॥ भ्रमकाविपयजोअर्थसोव्यवहारमेसमर्थ नहीं ॥ यदितिसकोभीव्यवहारमेसमर्थमाने ॥ तोमरुस्थलमेजलके भ्रमसेप्रवृत्तहुयेपुरुषकीभीपिपासानिवृत्तहूयीचाहिये ॥ औरमरुस्थल केजलसेकिसीकीभीपिपासाउपशमनहींहोती ॥ यातेभ्रमकाविपयजो

अर्थवहव्यवहारमेसमर्थनहीं ॥ इसलिये "व्यवहारमेसमर्थ" यहअर्थ काविशेषणकथनकीयाहै ॥ तैसेसर्वकालमेअबाधितअर्थविषयत्वरूप प्रमात्वहै ॥ इसदूसरेविकल्पमेयदि "सर्वकाल" यहपदनकहतेतोभ्रम ज्ञानमेअतिव्याप्तिहोती ॥ क्योंकिअबाधितअर्थविषयत्वभ्रमकालमे भ्रमज्ञानमेभीहै ॥ यातेभ्रमज्ञानमेअतिव्याप्तिकेपरिहारअर्थ "सर्वकाल" यहविशेषणकथनकियाहै ॥ इसप्रकारदोनोंविकल्पोंमें विशेषणोंकी सफलतादिखलाकरअबतिनदोनोंविकल्पोंकोक्रमसेनिषेधकरतेहैं ॥ हे वादिन्भ्रमकेविषय भूतअर्थकोव्यवहारमें समर्थपनाकिया? भ्रमकालमें नहीं है ॥ अथवाबाधकालमेनहीं है ॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकिभ्रमकालमेप्रवृत्त्यादिकरूपव्यवहारकी सामर्थ्यरजतादिरूपअर्थमे देखीजातीहै॥औरद्वितीयपक्षभीअसंगतहै।क्योंकिबाधकालमेभ्रमज्ञान काअभावहोनेसेतिसकेविषयभूतअर्थकाभीअभावहै ॥ यातेभ्रमज्ञान मेप्रथमप्रमात्वकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोनेसे प्रमात्वकालक्षणदुष्टहै ॥ औरभ्रमकालमेकल्पितपदार्थकोव्यवहारकासाधकमाननेमे कोईविरोध नहीं ॥ यातेप्रथमपक्षनहींसंभवता ॥ औरद्वितीयपक्षमेभीयहविचार कर्तव्यहै ॥ वहसर्वकालमे अबाधितअर्थविषयत्वरूपप्रमात्वक्यास्वतः ग्राह्यहै॥ अथवापरतोग्राह्यहै ॥ अर्थयहप्रमात्वकाआश्रयजोप्रमाज्ञान तिसकाग्राहकजोसामग्रीतिसकरग्राह्यत्वहै।अथवा।अपनेआश्रयकाग्राहक जोसामग्रीतिससेभिन्नसामग्रीकरग्राह्यपनाहै।तिनमेप्रथमपक्षनहींसंभवता क्योंकिप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंमेदोषकीसंभावनाहै ॥ यहांयहअनुमान जानना ॥

❀ विमतं प्रत्यक्षादिज्ञानं दोषवत्करणजन्यं

जन्यज्ञानत्वाऽविशेषात् भ्रमवत् ॥

अ०—विवादकातिपय जोप्रत्यक्षादिज्ञान है सोदोषवालेकरणसे जन्यहै।जन्यज्ञानपनातुल्यहोनेसेजोजोजन्यज्ञानहोताहैसोसोदोषवाले करणसेजन्यहै जैसेभ्रमज्ञानहै ॥इति॥ इसअनुमानसेप्रत्यक्षादिज्ञानमें दोषकीसंभावनाहुए तिसदोषकी निवृत्ति अर्थप्रवृत्ति संवादिरूपदोषाभाव काग्राहकजो अन्यप्रमाण तिसकीप्रत्यक्षादि ज्ञानअपेक्षा करताहै वा नहीं। यदि अपने प्रमात्व ग्रहणमें दोषाभावकेग्राहक अन्य प्रमाणकी प्रत्यक्षादिज्ञान अपेक्षा नहींकरतायहअन्त्यपक्षकहोतोनिष्कंप प्रवृत्ति पुरुषकी नहींहोगी ॥ क्योंकिदोषका संदेहप्रवृति का प्रतिबंधकहै । और यदिअन्य प्रमाण कीअपेक्षा करताहै यह प्रथम पक्षकहोतो स्वप्रमात्वके प्रतिदोषाभावके ग्राहक अन्यप्रमाणकी अपेक्षा होनेसे स्वतः ग्राह्यत्वकाभंगहोगा । और वहदोषाभावका ग्राहकप्रमाण कोईज्ञानमात्रका ग्राहकतोहैनहीं । जिससे तिसकी अपेक्षा हुयेभी स्वतःग्राह्यताबनीरहे । औरयदिदोषाभावके ग्राहकप्रमाणको ज्ञानमात्र काग्राहकमानलें । तोभ्रमज्ञानकाही उच्छेदहोजायेगा । यातेद्वितीय पक्षभीअसंगतहै । औरज्ञानमात्रके ग्राहकसेभिन्न प्रमाणकरवहप्रमात्व ग्रहणहोताहै यहआदिमेंकथनकिया जोद्वितीयपक्ष सोभीनहींसंभवता क्योंकि ग्रहणहुआ है प्रामाण्य जिसका तिस प्रमाणको प्रमात्वका निश्चायकमानेहुए अनवस्थादोषकी प्राप्तिहोगी। यहांयहअर्थजानने योग्यहै। प्रथमज्ञानके प्रमात्वकाजो ग्रहणहै। सोअपनेविषयकेनिश्चय अर्थहै । वहप्रमात्वस्वाश्रयभूतज्ञानके ग्राहकसे किसीभिन्नपदार्थकर ही ग्रहणकरने योग्यहै । तहांवह प्रमात्वका ग्राहक क्या ज्ञेयरूपहै ॥

अथवाज्ञानरूपहै । यहविचार कियाचाहिये । इनमें प्रथमपक्षतोनहीं संभवता।क्योंकितिसज्ञेयपदार्थको जडहोनेसे प्रकाशकताकाही अभाव है । और द्वितीय पक्षमेंभी यहविचार कियाचाहिये । प्रथमज्ञान के प्रमात्वका ग्राहक जोज्ञानहै सो गृहीत प्रमात्वहुआ अपने विषयभूत प्रथमज्ञानके प्रमात्वकाग्राहकहै अथवाअगृहीतप्रमात्वहुआ निश्चायक है।जिसका प्रमात्व किसीदूसरे ज्ञानकर ग्रहणहुआहो तिसको गृहीत प्रमात्व कहतेहैं । औरजिसका प्रमात्वकिसी करग्रहण न हुआहो । तिसकोअगृहीत प्रमात्वकहतेहैं । प्रथमपक्षमेंभी यहविचारकरनेयोग्य है । ग्रहण करनेयोग्य प्रमात्वके ग्राहकभूतज्ञानका प्रमात्व किसने ग्रहणकियाहै । क्याआपही अपने प्रमात्वका ग्राहकहै । अथवा ग्रहणकरनेयोग्य प्रमात्वका आश्रयभूतजो प्रथमज्ञानवह तिसकेप्रमात्व काग्राहकहै । अथवाइनदोनोंज्ञानोंसे भिन्नकोईतृतीयज्ञानतिसप्रमात्व काग्राहकहै।। इनमेंप्रथम पक्षनहीं संभवता । क्योंकि अपनेग्रहणमें अपनीअपेक्षा होनेसे आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहै । औरस्वतः प्रमात्व काग्रहणप्रसंगभीहोगा । तिससे परतोग्राह्यत्वपक्षकी हानीहोगी । भावयह । स्वप्रमात्वकाआश्रयजोद्वितीयज्ञानवहआपको विषयकरता हुआ अपनेप्रमात्वकोभी आपही विषयकरताहै याते आपको विषय करनेसे तथा आपही प्रमात्वकाग्राहकहोनेसे आत्माश्रयदोष तथा स्वतस्त्वपक्षकीप्राप्तिस्पष्टहीहै । औरद्वितीयपक्षभी अन्योऽन्याश्रय दोषकीप्राप्तिसेनहींसंभवता। सोइसप्रकारहै। प्रथमज्ञानको अपनेप्रमा त्वकेग्रहणमें द्वितीयज्ञानकीअपेक्षाहै। औरद्वितीयज्ञानकोअपनेप्रमात्व केग्रहणमेंप्रथमज्ञानकीअपेक्षाहै । यातेअन्योऽन्याश्रयदोषहै । और

प्रथमज्ञानको स्वप्रमात्वकेग्राहकीभूतज्ञानकेप्रमात्वका ग्राहकपनाभी नहींसंभवता । क्योंकिजोज्ञानजिसपदार्थको विषयकरताहै । सोज्ञान तिसपदार्थकीआकारताकोप्राप्तहोताहै।औरयहांप्रथमज्ञानकोस्वप्रमात्वके ग्राहकद्वितीयज्ञानकाविषयहोनेसेस्वविषयकज्ञानकेप्रमात्वकीआकारता तिसकोनहींसंभवती।यातेद्वितीयपक्षभीअसंगतहै। औरद्वितीयज्ञानके प्रमात्वकाग्राहक इनदोनोंसेभिन्नकोईतृतीयज्ञानहैयहतृतीयपक्षभीअयुक्तहै । क्योंकिवहतृतीयज्ञानभीगृहीतप्रमात्वहीकहनाहोगा । तिस तृतीयज्ञानकेप्रमात्वकाग्राहकतिसीकोमानेतो आत्माश्रयदोषतथास्वतस्त्वपक्षकीप्राप्तिहोगी। औरतृतीयज्ञानकेप्रमात्वकाग्राहक यदिद्वितीय ज्ञानकोमानेतो अन्योऽन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोगी । औरप्रथमज्ञानको तृतीयज्ञानकेप्रमात्वकाग्राहकमानेतो चक्रकादोषप्राप्तहोताहै। औरयदि इसचक्रकादोषकेदूरकरनेकीइच्छासेतृतीयज्ञानके प्रमात्वकाग्राहककोई चतुर्थज्ञानमानोगेतो अनवस्थादोषप्राप्तहोगा । यातेपरतोग्राह्यत्वपक्ष भीअसमीचीनहै । अबअगृहीतप्रमात्ववालाजो द्वितीयज्ञानवहप्रथम ज्ञानकेप्रमात्वकाग्राहकहै इसपहिलेकथनकियेहूये द्वितीयपक्षकोदूषित करतेहैं । औरअगृहीतप्रमात्ववालेद्वितीयज्ञानको प्रथमज्ञानकेप्रमात्व काग्राहक माने तो प्रथमज्ञानके प्रमात्वका निश्चय व्यर्थ होगा ॥ क्योंकिअगृहीतप्रमात्वजोप्रथमज्ञानहैतिसकरहीअपनेविषयकानिश्चय होजायेगा ॥ प्रमात्वकेग्रहणकीकछुआपेक्षानहीं ॥ यातेद्वितीयपक्ष भीअसंगतहै ॥ सर्वकालअबाधितअर्थविषयत्वरूपप्रमात्वप्रत्यक्षादि ज्ञाननिष्ठग्राहककेअभावसेनहींसंभवता ॥ अथवा।जिसकिसीप्रकारसे अर्थात्स्वतस्त्ववापरतस्त्वरीतिसेप्रमात्वकाग्रहणहो ॥ परन्तुसर्वकाल अबाधितअर्थविषयत्वरूपप्रमात्वप्रत्यक्षादिज्ञानमेंनहींसंभवता ॥ क्योंकि

श्रुतिहीतिसकोनिषेधकरतीहै ॥ इसदूसरेहेतुकोकथनकरतेहैं ॥ किंवा प्रत्यक्षादिकोंकीअप्रमाणताश्रुतिनेहीदिखलाईहै ॥ यद्यपिप्रत्यक्षादिक अप्रमाणरूपहैंऐसेश्रुतिनेसाक्षात्नहींकथनकिया ॥ तथापिप्रत्यक्षादि ज्ञानकेविषयभूतजगत्कामिथ्यापनादिखलातीहुईश्रुतिप्रत्यक्षादिकोंकी अप्रमाणताअर्थसे बोधनकरतीहै ॥शंका॥ प्रत्यक्षादिकज्ञानअप्रमाण रूपहैं ॥ जगत्कोमिथ्याहोनेसे ॥ यहहेतुव्यधिकरणहै ॥ क्योंकि प्रत्यक्षादिकज्ञानमेतोअप्रमात्वसाध्यवर्तताहै ॥ औमिथ्यात्वहेतुजगत् मेवर्तताहै ॥ यातेभिन्नअधिकरणमेवृत्तिहोनेसेयहहेतुअपनेसाध्यका साधकनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन्प्रत्यक्षादिज्ञानकेविषयभूतजगत् कोश्रुतिमिथ्यापनादिखलातीहै ॥ यातेयहांयहअनुमानविवक्षितहै ॥

❋प्रत्यक्षादिरप्रमाणंमिथ्यार्थकत्वात्रजतज्ञानवत्❋

अ० ॥ प्रत्यक्षादिज्ञानअप्रमारूपहै ॥ मिथ्याअर्थविषयकहोने से ॥ जोजोज्ञानमिथ्याअर्थविषयकहोताहैसोसोअप्रमारूपहोताहै ॥ जैसेरजतज्ञानहै ॥ इति ॥शंका ॥ अर्थकोअबाधितहोनेसेमिथ्यापना अयुक्तहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्श्रुतिहीसर्वप्रपंचकानिषेधकरतीहै॥ सोश्रुतियहहै ॥

❋ नेहनानाऽस्तिकिंचन ❋ बृ०उ०अ०६ ब्रा० ४ मं० १९

अ०॥ प्रसिद्धजगत्काअधिष्ठानरूपजोब्रह्महैतिसमेभेदविशिष्ट प्रपंचकिंचत्मात्रभीनहीं ॥ इसश्रुतिमेसकलप्रपंचको निषेधकाप्रतियो गिपनाकथनकियाहै ॥ औरजोनिषेधकाप्रतियोगिहोताहैसोमिथ्याही होताहै ॥ निषेधशब्दसेयहांत्रैकालिकनिषेधग्रहणकरना ॥ शंका॥

जोबाधित होताहैसो अज्ञानजन्यदेखाहै ॥ जैसेबाधितरजतादिक शुक्त्यादिकोंकेअज्ञानसेजन्यहैं ॥ औरघटादिजगत्अज्ञानजन्यनहीं॥ क्योंकिमृत्तिकादिकतिसकेउपादानकारणहैं औरमृत्तिकादिकउपादान गोचरज्ञानवालेकुलालादिकतिसकेनिमित्तकारणहैं ॥ यातेमपंचमिथ्या नहींकिन्तुसत्यहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्श्रुतिनेजगत्काउपादान कारणअज्ञानहीकहाहै ॥ सोश्रुतियहहै ॥

❀ मायांतुप्रकृतिंविद्यात् ❀ श्वे०उ०अ०४मं०१०

अ० ॥ मायाकोजगत्काउपादानकारणजाने यद्यपिश्रुतिमे मायापदहै॥ अज्ञानपदनहींतथापिमायाऔरअज्ञानदोनोएकहीपदार्थ हैं ॥ यातेविरोधनहीं ॥ औरवहअज्ञानही मृत्तिकादिरूपपरिणामको प्राप्तहुआघटादिकोंका उपादानकारणहै ॥ यातेअज्ञानकोउपादान मानेहुयेभीकोईविरोधनहीं यहांमूलग्रंथमे (निषिद्धमानत्वमायाप्रकृति त्वाभ्याम्) यहतृतीयाविभक्तिअंतपदकथनकियाहै ॥ वहतृतीया विभक्तिकर्ताकरणादिअर्थमेनहींकिन्तुइत्थंभावअर्थमेतृतीयाजाननी॥ यातेयहांऐसाअर्थकरना ॥ निषेधप्रतियोगित्वतथामायाउपादानत्व रूपमिथ्याभूतजोजगतहै ॥ इति ॥ इसरीतिसेव्यवस्थाकेअनुसार अनेकअज्ञानमानेहुयेभीमत्यक्षादिप्रमाण केअनुसार जगत्कासत्यत्व जिसकारणसेपूर्वउक्तयुक्तिकेवलसेनहींसंभवता । तिसीकारणसेव्यव-स्थाकेअनुसारजीवआश्रितऔब्रह्मकोविषयकरनेवालेअनेकअज्ञानबन सकतेहैं ॥ शंका ॥ व्यवस्थाकीअनुपपतिरूपतर्कसेहीअनेकअज्ञान तुमनेसिद्धकियेहैं ॥ परन्तुवहतर्कआभासरूपहै । क्योंकितिसमेउप-जीव्यप्रमाणकाअभावहै ॥ जिसप्रमाणकेआश्रितहोकरतर्क अपने

अर्थकोसिद्धकरेसोप्रमाणतर्ककाउपजीव्यकहियेहै ॥ समाधान ॥ हे वादिन्यहांउपजीव्यप्रमाणरूपश्रुतिविद्यमानहै ॥ यातेतर्ककोआभास रूपतानहीं ॥ सोश्रुतियहहै ॥

* इन्द्रोमायाभिःपुरुरूपईयते * बृ०उ० अ० ४ ब्रा ५ कं० १९

अ० ॥ परमात्मामायावोंसेनानारूपप्रतीतहोताहै ॥ इसश्रुति मे (मायाभिः) इसबहुवचनकेअनुसार अनेकअज्ञानप्रतीत होतेहैं ॥ यहांमायाऔरअज्ञानदोनोंपर्यायशब्दहैं॥वहअनेकअज्ञानब्रह्मकोविषय करतेहैं ॥ इसलियेआत्माकोअज्ञानविषयत्वलुमनेकैसेकथनकिया । यहांआत्माअज्ञानकाविषयनहींयहजोनिषेधहैसोइसअर्थकाभीबोधकहै ब्रह्मकोअज्ञानकाविषयहोनेसेतिसमेश्रुतिप्रमाणकत्वका आक्षेपजोपूर्व पक्षीनेकहाथासो कैसेकथनकिया किन्तुवहभीनहींसंभवता ॥ यहां तकएकदेशीकेमतकासंक्षेपसेनिरूपणहुआ ॥ यहांइसमतकेसंग्रहका श्लोक ॥

अज्ञानंप्रतिजीवंस्याद्भिन्नंब्रह्मपदंचतत् ॥ बद्धमुक्तव्य वस्थाऽतोब्रह्मश्रौतंचसिद्ध्यति ॥ १ ॥

दो० ॥ बद्धमुक्तविवहारसेप्रतीजीवअज्ञान ॥ भिन्नब्रह्मगोचर अहैब्रह्मश्रौतपहचान ॥ १ ॥

*अथएकदेशि के मत का खंडन *

अब सिद्धांतमतको आश्रयणकरके एकदेशिकेमतकोपूर्वपक्षी निषेधकरताहै ॥ यहांसिद्धांतमतकोआश्रयणकरकेएकदेशिकेमत खंडनकरनेमेपूर्वपक्षीकायहगूढअभिप्रायहै ॥ परमसिद्धांतीनेचेतन

-मात्रकेआश्रितऔरतिसीकोविषयकरनेवालीअविद्यामानीहै ॥ और स्वयंप्रकाशचेतनमेअविद्याकीविषयतानहींसंभवती ॥ यहवार्त्ता पूर्व निरूपणकीहै ॥ औरअविद्याकीविषयताकाअभावहोनेसेवेदप्रमाणता काभीतिसआत्मामेअभावहै ॥ यातेदेहादिकोंसेभिन्नकोईआत्मानहीं यहहमारामतसुखेनहीसिद्धहोगा ॥ इसगूढतातपर्यवालापूर्वपक्षीजीव आश्रित औब्रह्मविषयकअविद्याहैइसपूर्वकथनकियेहुयेएकदेशीकेमतमे दूषणकथनकरताहै ॥

मू०॥जीवब्रह्मप्रयोगाभ्यामेकंवस्त्वथवाद्वयम् ॥
आद्येत्विष्टंममैवस्यात्द्वितीयेत्वन्मतक्षतिः ॥५॥

तोटकछंद॥यहजीवपरेशदुऊपदजो॥भनएकपदारथवादुयिको॥ पछआदिविषेममवांछितहै । पछदूसरहानहितेमतहै ॥६॥

टी० ॥ हेएकदेशिन्तुमजीवऔब्रह्मशब्दसेएकहीवस्तुप्रति पादनकरतेहो॥अथवा॥दोपदार्थकथनकरतेहो॥यद्यपिजीवऔरब्रह्मशब्द कावाच्यार्थभिन्नहीहैयातेविकल्पनहींसंभवता ॥ तथापिजीवऔरब्रह्म केउपाधिकापरित्यागकरकेएकलक्ष्यप्रतिपादनकरतेहोअथवा॥ लक्ष्यों काभेदकथनकरतेहो॥ ऐसाविकल्पसंभवताहै॥प्रथमपक्षमानोगेतोमेरा हीइष्टसिद्धहोगा ॥ यद्यपिजीवऔब्रह्मकाअभेदएकदेशीकोभीइष्टहै ॥ इसलियेमूलकारिकामे (एव) शब्दकाउच्चारणअयुक्तहै ॥ तथापि अज्ञानकेआश्रयतथाविषयकाअभेदएक देशीकोअनिष्टहै ॥ याते (एव) शब्दकाउच्चारणअयुक्तनहींकिन्तुयुक्तहै॥औरद्वितीयपक्षअंगी कारकरोगेतोतुम्हारेमतकीहानीहोगी॥क्योंकिलक्ष्यार्थकाभेदएकदेशी कोभीस्वीकारनहीं ॥ यहांमूलकारिकामे (तु) यहशब्दहेतुकासूचक

है ॥ सोआगेस्पष्टहोगा॥अथवा।वाच्यऔरलक्ष्यकेभेदकोत्यागकरके सामानतासेहीदूषणदेनेकेलियेविकल्पकरतेहैं ॥ हेएकदेशिन्जीवऔर ब्रह्मइनदोनोंशब्दोंसेएकआत्माहीतुमकथनकरतेहोअथवा।जीवशब्दतो आत्माकावाचकहै औरब्रह्मशब्दतिससे भिन्नअर्थकावाचकहै ॥ ऐसे कहतेहो॥प्रथमपक्षमेआत्माकोअज्ञानकीविषयताकैसेनहींबनेगी।यहां पर (कैसे) और (नहीं) इनदोनिषेधकशब्दोंसेआत्माकोअज्ञानविषयता कीप्रतिज्ञाकरकेअवतिसमे (तु) शब्दसेसूचनकियेहुयेहेतुकोकहतेहैं॥ क्योंकिब्रह्मशब्दसेभीजीवशब्दकीन्याईआत्माकाहीकथनहोनेसेतिसमे अज्ञानकीविषयताकासंभवहै ॥ यहांयहनिष्कृष्टअर्थहै ॥

❀ आत्माअज्ञानविषयःअज्ञानाभासकत्वेसतिब्रह्मशब्द वाच्यत्वात्।ब्रह्मवत् ❀

अ० ॥ आत्माअज्ञानकाविषयहै॥ अज्ञानकाअप्रकाशकहुया ब्रह्मशब्दकावाच्यहोनेसे जोजोअज्ञानकाअप्रकाशकहुया ब्रह्मशब्दका वाच्यहैसोसोअज्ञानकाविषयहै ॥ जैसेब्रह्महै ॥ इति ॥ इसअनुमान सेआत्मामेअज्ञानकीविषयतासिद्धहै ॥ यातेतुमआत्मामेअज्ञानकी विषयताकाअभावकैसेकहतेहो ॥ शंका ॥ हेवादिन्यहतुम्हाराअनु- मानसत्प्रतिपक्षरूपहेत्वाभासवालाहोनेसेदुष्टहै ॥ जिसहेतुकेसाध्या भावकासाधकऔरहेतुहोतिसहेतुकोसत्प्रतिपक्षकहतेहैं॥सोइसप्रकारहै॥

❀ आत्मानतमोविषयःभासमानत्वात्यन्नैवंतन्नैवं यथाअंधकारावृतोघटः ❀

अ० ॥ आत्माअज्ञानकाविषयनहीं।भासमानहोनेसे जोजो अज्ञानकाविषयहोताहैसोसोभासमाननहींहोता जैसेअंधकारसेआवृत्त

घटहै ॥ इसअनुमानसेपूर्वकथनकियावादीकाअनुमानसत्प्रतिपक्षरूप हेत्वाभासयुक्तहै ॥ औरतुम्हारेअनुमानमेंअभासमानत्वउपाधिभीहै ॥ सोइसप्रकारहै ॥ जहांजहांअज्ञानकीविषयताहै तहांतहांअभासमानता है ॥ जैसेब्रह्महै ॥ इसरीतिसेउपाधिसाध्यकेसाथव्यापकहै ॥ और जहांजहांअज्ञानकाअप्रकाशकहुयाब्रह्मशब्दकावाच्यहै ॥ तहांतहां अभासमानत्वनहीं ॥जैसेआत्माहै ॥ इसरीतिसेउपाधिसाधनकेसाथ अव्यापकहै ॥ यातेपूर्वकथनकियाजोहेतुवहसोपाधिकहेत्वाभासहोने सेदुष्टहै।स्वसाध्यकासाधकनहीं॥समाधान॥ हेएकदेशिन्‌यहजोतुमने पूर्वकथनकियासत्प्रतिपक्षऔरअभासमानत्वउपाधि इनदोनोंकोतंत्रसे निषेधकरतेहैं॥ एकवारउच्चारणकियाहुयावचनबहुअर्थकाजोज्ञापकहो तिसकोतंत्रकहतेहैं।जैसेएकदीपकप्रज्वलितकियाहुयाअनेकपदार्थोंको प्रकाशकरताहै । तैसेयहांएकहीउक्तिसेसत्प्रतिपक्षऔरउपाधिकानिरा करणकरतेहैं। तिसउक्तिरूपतंत्रकोहीदिखलातेहैं।हेएकदेशिन्‌अद्वया नंदरूपतासेतिसआत्मामेंअज्ञानकीविषयताहै। औरचेतनमात्ररूपतासे तिसआत्माकोभासमानहोनेसेअज्ञानकीविषयताकाअभावहै। अन्यथा प्रकाशकके अभावसेअज्ञानकीभीसिद्धिनहींहोगी। यहांयहअर्थजानने योग्यहै ॥ एकदेशीनेप्रतिपक्षाऽनुमानमेंआत्मशब्दसेक्या?अद्वयानंद रूपपक्षकियाहै । अथवाचेतनमात्रपक्षकियाहै।तहांप्रथमपक्षमानेहुये प्रतिपक्षाऽनुमानबाधितहोगा । क्योंकिअद्वयानंदरूपपक्षमेंअज्ञानकी विषयताविद्यमानहोनेसेअज्ञान विषयत्वाभावरूपसाध्यकाअभावहै । औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता।क्योंकिप्रथमअनुमानमें चेतनमात्रको पक्षत्वकाअभावहै । इसींसेप्रतिपक्षाऽनुमानमेंभीचेतनमात्रकोपक्षपना

युक्तनहीं ॥ शंका ॥ हेवादिन् अद्वयानंदरूपको पक्षमानने मेंबाधहै यहतुम्हाराकथनअसंगतहै॥ क्योंकितिसअद्वयानंदकोआत्मा सेअभिन्नरूपताकरभासमानहोनेसेतिसमेंअज्ञानकीविषयतानहींसंभवती समाधान॥ अद्वयानंदकोआत्मासेअभिन्नहुयेभीअविद्याकेप्रभावसेचेतन मात्रकाहीभानहोताहैअद्वयानंदकानहीं । इसकथनसेयहसूचनकिया प्रतिपक्षाऽनुमान स्वरूपासिद्धहै।क्योंकि अद्वयानंदपक्षमेंभासमानत्व हेतुस्वरूपसेहीअसिद्धहै ॥ शंका ॥ हेवादिन्अज्ञानकाविषयआत्माहै औरचेतनकोही आत्माकहतेहैं तिसचेतनस्वरूप आत्मामें अज्ञानकी विषयताहोनेसेतिसकीभासमानताकैसेकहतेहो ॥ समाधान ॥ हेएक देशिन्चैतन्यरूपतासेतिसआत्माकोअज्ञानकाअविषयहोनेसेभासमानता है ॥ औरयदिऐसेकहोकिचेतनरूपभीअज्ञानकरक्योंनहींआवृत्तहोता किन्तुहुयाचाहिये।सोयहकथनभीनहींसंभवता ॥ क्योंकिचेतनकोभी आवृत्तमानेहुयेअज्ञानकीहीसिद्धिनहींहोगी ॥ भावयह ॥ अज्ञान चेतनरूपसाक्षिमात्रकर सिद्धहोताहै किसीप्रमाणकरनहीं यहवार्ताहम दोनोंकोस्वीकारहै ॥ यातेचेतनरूपतासेआत्माआवृत्तनहींहोसकता औरप्रकाशककेअभावसेजगतमेंकिसीवस्तुकाभानभीनहींहोगा॥इतने कथनसेसत्प्रतिपक्षकेनिषेधपरग्रंथकाव्याख्यानकिया ॥ अबउपाधिके निषेधकरनेकेलियेभीइसीग्रंथकीपुनःयोजनाकरतेहैं ॥ स्थापनाअनु- मानमेंअर्थात्प्रथमाऽनुमानमेंअद्वयानंदस्वरूप आत्माकोपक्षपनाहै ॥ तिसअनुमानमेंअभासमानत्वउपाधिनहींसंभवता ॥ क्योंकिसाधनके साथवहव्यापकहै ॥ इसीअभिप्रायसेअद्वयानंदस्वरूपआत्मामेंअज्ञान कीविषयतास्वीकारतेहैं ॥ तिसअद्वयानंदरूपपक्षमेंअभासमानत्व उपाधिकेवर्तनेसे वहसाधनकेसाथ कैसेव्यापकनहीं किन्तु व्यापकहै

यहभावहै॥शंका॥आत्मासेअभिन्नअद्वयानंदकैसेनहींभानहोतेकिंतुहुये चाहिये॥समाधान॥आत्मत्वभानकाप्रयोजकनहींकिंतुभानकाप्रयोजक चैतन्यहै यातेचेतनमात्रको अज्ञानकाअविषयहोनेसे भासमानताहै। अद्वयानंदकोनहीं।इसप्रकार उपाधिकेअभावसेपूर्वउक्तअनुमाननिर्दोष है।शंका॥ अद्वयानंदरूपतासे आत्माकोअभासमानहोनेसे अज्ञानकी विषयताहै। औरचेतनरूपताकर भासमानहोनेसे तथाअविद्याकासा- धकहोनेसे आत्माको अज्ञानकीविषयतानहीं हैं। यहपूर्वकथनकिया सोअसंगतहै। क्योंकि-

❋ विज्ञानमानंदंब्रह्म ❋

अ०-विज्ञानऔरआनन्दस्वरूपब्रह्महै। इसश्रुतिवचनसे अद्व- यानंदऔरचैतन्यएकस्वरूपहैं। इनकाभेदनहीं। यद्यपिअभेदकीन्याई भेदभीहै तथापिविरुद्धस्वभावहोनेसे भेदऔरअभेददोनों एकअधिकर- णमेंनहींरहसकते। यातेअद्वयानंदको अज्ञानकीविषयताकाकथन नहींसंभवता॥ समाधान॥ अद्वयानंदऔरचेतनकावास्तवभेदनहीं इसलियेअद्वयानंदकोभी भासमानहोनेसेअज्ञानकी विषयतावास्तवसे नहीं है यहतुमकहतेहो अथवा। कल्पितभीअज्ञानकीविषयतानहीं है यहकहतेहो। प्रथमपक्षतोहमकोभीस्वीकारहै। क्योंकिवास्तवअज्ञान कीविषयताहमभीनहींमानते। द्वितीयपक्षको प्रश्नपूर्वकनिषेधकरतेहैं। प्रश्न-अद्वयानंद औरचेतनकेभेदका अभावहुये अज्ञानविषयताकी व्यवस्थाकिसप्रकारहै॥ समाधान॥ हेएकदेशिन् अद्वयानंदस्वरूप आत्माको अज्ञानकीविषयताकाकथनहै। चेतनकोनहींयातेव्यवस्था बनसकतीहै। यद्यपिभेदकाअभावहोनेसे विषयतानहींसंभवती यह

पूर्वकथनकियाहै । तथापिस्वयंप्रकाशपरिपूर्ण आनन्दस्वरूपतासे भासमानआत्मामेंभी भेदकीमिथ्याकल्पनाकरकेही अज्ञानकीविषयता काकथनहै वास्तवसेनहीं ॥इति॥ शंका ॥ जोभानहोताहै सोअज्ञान करआवृत्तनहींहोता औरअद्वयानंदरूपता आत्माकीभान नहींहोती यदिभानहोतो निर्यत्नहीसर्वपुरुषोंकोमोक्षकालाभहोगायातेभेदकल्पना व्यर्थ है। भावयहचेतनसे अद्वयानंदकी भेदकल्पनाअभानताकेलिये करतेहो सो अभानतापूर्व कथनकियेप्रकारसे बनसकतीहै पुनः भेद कल्पना से क्या प्रयोजन है ॥ समाधान ॥ हे एकदेशिन् आत्मातोप्रथमभानहोताहीहै।यदिआत्माकाभाननमानेतोतूकौनहैऐसे पूछेहुयेमैंहूंवानहींहूंऐसासंदेहपुरुषकोहोनाचाहिये ॥ औरऐसासंदेह किसीको नहींहोता ॥ यातेआत्माकाभानसर्वको प्रसिद्धहै ॥ तिस आत्मासेअभिन्नअद्वयानंदकैसेनहीं भानहोंगे।।औरवहइसअविद्याकाल मेंनहींभानहोतेइसीसेतिनअद्वयादिकोंकेअभानकाप्रयोजकभेदकल्पना संभवतीहै इसीकारणसेपूर्वग्रंथमेकहाहै ॥ चैतन्यमात्रहीभानहोताहै अद्वयानंदस्वरूपकाभाननहींहोता ॥ इति ॥ शंका ॥ मैंअद्वयानंद स्वरूपनहींहूं ॥ इसप्रकारकीअद्वयानंदऔरचेतनकेभेदकोविषयकरने वालीप्रतीतिकाबाधनदेखनेसेतिसप्रतीतिकाविषयजोभेदहै।।सोवास्तव हीक्योंनहो ॥ समाधान ॥भ्रमप्रतीतिकेअनुसारभेदकीकल्पनाहैयाते भ्रमप्रतीतिकाविषयभेदवास्तवनहींबनसक्ता।यद्यपिब्रह्म अद्वितीयहैतिस कोभ्रमकिसीरीतिसेनहींसंभवता।क्योंकि अपनेस्वरूपमेआपकोहीभ्रम होनाअयोग्यहै ॥ तथापिजेसेभूताविष्टजोमनुष्यहै ॥ तिसकोअपने हीशरीरमेभूतकाभ्रमहोताहै ॥ तैसेहीअविद्याकेप्रभावसेअद्वितीयब्रह्म कोभीभ्रमबनसक्ताहे ॥ शंका ॥ द्वैधीभावकानामभेदहैअर्थातएक

वस्तुकेंदोखंडनकानामभेदहै ॥ सोसावयवकाष्ठादिकोंकाधर्महै ॥और आत्मानिरवयवहै ॥ क्योंकि (निष्कलं) इसश्रुतिमेआत्माकोनिरवयव कहाहै ॥ यातेतिसआत्मामेभेदकल्पनाअयोग्यहोनेसेकिसीप्रकारभी नहींसंभवती ॥ समाधान ॥

❀ निर्गुणोनिरूपेप्यखंडोचितिसर्वकल्पनाशून्येघट यतिजगदीशजीवभेदान्तस्मादघटनघटनापटीयसी माया इति ❀

अ० ॥ निरूपऔरनिर्गुणतथाअखंडचेतनतथासर्वकल्पनासे शून्यआत्मामेजगत्औईशतथाजीवकेभेदकीकल्पनानहींबनतीतिसके बनानेमेजोकुशलहोतिसकोमायाकहतेहैं ॥ सोऐसामायारूपअज्ञानहै इति ॥ इसन्यायसेनिरवयवआत्मामे भीअनादि सिद्धअनिर्वचनीय अज्ञानकेसंबंधसेमिथ्याभेदकल्पनाबनसकतीहै ॥ शंका ॥ चेतनमात्र हीभानहोताहैअद्वयानंदस्वरूपनहीं इसप्रतीतिकोभ्रम रूपताकैसेहै ॥ क्योंकिभ्रमरूपताकेहुयेहीबाधितपनायुक्तहै ॥ समाधान ॥ परमप्रीति केविषयभूतआत्माकोआनंदरूपतासेहीभासमानहोनेसेपूर्वउक्तप्रतीति कोभ्रमरूपहमकहतेहैं यहांयहअनुमानजानना ॥

❀ आत्मापरमानंदरूपःपरमप्रेमास्पदत्वात्विषया नंदवत् ❀

अ०—आत्माआनन्दस्वरूपहै परमप्रीतिकाविषयहोनेसे जोपरम प्रीतिकाविषयहोताहै सोआनन्दस्वरूपहोताहै जैसेविषयानंदहै॥इति॥ मैंनहोवों ऐसेमतहोकिंतुमैसदाहीहोवों इसप्रकारकी इच्छाकानाम्रेमहै

सोयहइच्छाकिसीउपाधिके सम्बन्धसे आत्माविषयकनहीं किंतुनिरुपाधिकहै । यदिकेवल "प्रेमास्पदत्वात्" इतनाहीहेतुकहते परमयह विशेषणनकहते । तोदुःखाभावऔरसुखकेसाधनोंमेंयहहेतुव्यभिचारी होता । क्योंकिसुख तथादुःखाभावके साधनोंमेंभीपुरुषोंकाप्रेमहै परन्तु परमप्रेमनहीं।परमप्रेमतोदुःखाभावरूपतथासुखस्वरूपआत्मामेंहीहै।याते हेतुव्यभिचारीनहीं ॥इति॥ इसप्रकारसुखऔरआत्माका अभेदहोनेसे आत्माकेभासमानहुयेतिससेअभिन्नआनंदअवश्यभानहोताहीहै। याते आनंदकेअभासमानताकीजोप्रतीतितिसकोबाधितहोनेसेभ्रमरूपतायुक्त है॥शंका॥हेवादिन्विषयानंदरूपदृष्टांतमेंजोप्रेमहैसोआत्म उपाधिकहै क्योंकिसुखमात्रकीकोईप्रार्थनानहींकरता।किंतुमुझकोसुखहोइसप्रकार आत्माकेसम्बन्धसे सुखकीप्रार्थनाकरतेहैं । यदिऐसेनमाने तोवैरीके सुखविषयकभी प्रार्थनाकी प्राप्तिहोगी । औरवैरीके सुखकी कोई वांछानहींकरता ॥ याते विषयानंदरूप दृष्टांतमें निरुपाधिक प्रेम विषयत्वकाअभावहोनेसे साधनकीविकलताहै । समाधान ॥ हेएक देशिन् सुखमेंप्रेमकीविषयताआत्मउपाधिकनहीं।क्योंकिसुखतथादुःखा भावरूपजोफलहैतिसफलरूप उपाधिके संबंधसेसाधनोंमेंप्रेमहोताहै । और आत्माकोनित्य होनेसेवहसुखका फलनहींहै । जिसकारणसे सुखमेंप्रेमआत्मउपाधिकहो । औरआत्माविषयकसुखसेउत्पन्नहुयाकोई उपकारभीनहींप्रतीतहोता ।क्योंकिसुखसेभिन्न औरउपकारकाअभाव है।तिसीसेसुखमें आत्मउपाधिकप्रेमनहीं । यद्यपिसुखमात्रकीप्रार्थना मानेहुयेवैरीकासुखभी उपादेयहुयाचाहिये । तथापिस्वरूपसेसुखको उपादेयताकेहुयेभीतिसमेंहेयताबुद्धि अन्यउपाधिकहै ।

॥ आत्मातथासुखकेसंबंधाभावकानिरूपण ॥

औरसुखतथाआत्माकाकोईसंबंधभीनहीं निरूपण होसकता यातेभीसुखमेप्रेमआत्मऔपाधिकनहीं ॥ सुखतथाआत्माकासंबंधा भावहीस्पष्टकरतेहैं ॥ हेएकदेशिन्सुखतथाआत्माकाकौनसंबंधहै ॥ संयोगसंबंधहैवासमवायसंबंधहै।अथवा।तादात्म्यसंबंधहैवाऔरहीकोई संबंधहै॥ इनमेप्रथमपक्षतोनहींसंभवताक्योंकिसुखद्रव्यनहींहै।।संयोग द्रव्यों का ही होता है ॥ और द्वितीय पक्षभी असंगत है ॥ क्योंकि आत्मा को निर्गुण कहने वाली श्रुति का विरोध है ॥ और सुख को अंतःकरणमेसमवेत होनेसेभी सुख औ आत्माका समवाय नहीं संभवता । औरतृतीयपक्षमेयहविचारकियाचाहिये । तादात्म्यअभेद कानामहै।अथवा।भेदाऽभेदकानामहै । प्रथमपक्षनहींसंभवता।क्योंकि सुखतथाआत्माकाअत्यंतअभेदप्रसंगहोनेसे तिनकाउपाधिउपहितभाव नहींसिद्धहोगा । औरभेदाऽभेदकापरस्परविरोधहोनेसेद्वितीयपक्षभी नहींसंभवता।औरइनसेभिन्नचतुर्थपक्षकोई निरूपणहीनहींहोसकता । यातेविषयानंदरूपदृष्टांतमेपरमप्रेम विषयत्वरूपहेतुकीविकलतानहीं । इसलियेपूर्वउक्तअनुमाननिर्दोषहै । तिसकरअद्वयानंदऔरआत्माके भेदकोविषयकरनेवालीप्रतीतिकाबाधसंभवताहै ॥ शंका ॥ यद्यपि चेतनसेकल्पितभेदकरकेभिन्नजोअद्वयानंदस्वरूपआत्माहै । तिसमे अज्ञानकीविषयतापूर्वकथनकी ॥ तथापिवास्तवसेअविद्याकेआश्रय- औविषयकाभेदनहींनिरूपणकियाक्योंकिजैसेघटपदकी शक्तिघटपदमे रहतीहै ॥ औरकंबुग्रीवादिमानव्यक्तिकोविषयकरतीहैयातेआश्रयऔ विषयकाभेदवास्तवहै ॥ तैसेअविद्याभीएकशक्तिहै तिसकोभीवास्तव

आश्रयऔरविषयकेभेदकीअपेक्षासहितहोनेसे तिसकेविषयऔआश्रय काकल्पितभेदअयुक्तहै॥ समाधान ॥ हेएकदेशिन्अविद्याकेआश्रय तथाविषयकाभेदवास्तवसेनहींनिरूपणकियायहतुम्हाराकथनसत्यहै॥ शंका ॥ हेवादिन्यदिआश्रयऔविषयका भेदवास्तवसेनहीं निरूपण कियातो तुमकोनिरूपण कियाचाहिये ॥ क्योंकि आश्रयऔविषयके वास्तव भेदकीअविद्याकोअवश्यअपेक्षाहै ॥

❋ अथस्वाश्रयास्वविषयाअविद्याकानिरूपण ❋

समाधान ॥

मू०—अविद्यास्वाश्रयाभिन्नविषयास्यात्तमोयतः ॥
यथाबाह्यंतमोदृष्टंतथाचेयंततस्तथा ॥६॥

संकरछंद ॥ सुनलेअविद्यास्वाश्रयापुनऐक्यविषयाजान ॥ जिसहेतुतेहैतमोरूपातापनीमेगान ॥ बाह्यतमसजियुंदेखियोहै तथा विषयहआहि ॥ तिसहेतुतेहैतथाविधकीकहितबुधजनताहि ॥७॥

टी० ॥ प्रथमयहांयहअनुमानजाननेयोग्यहै ॥

अविद्यास्वाश्रयाभिन्नविषयिणीतमस्त्वात्बाह्यतमोवत्

अ० ॥ अविद्याअपनेआश्रयसे अभिन्नकोविषयकरनेवालीहै तमरूपहोनेसे।जोजोतमहैमोसोअपनेआश्रयसेअभिन्नकोविषयकरताहै जैसेबाह्यतमहै ॥ यातेअविद्याकोआश्रयतथाविषयकेभेदकीअपेक्षा नहीं ॥ शंका हेवादिन्इस अनुमानमे बाह्यतमकोदृष्टांतरखाहै ॥ वह बाह्यतमद्रव्यरूपहै।अथवा।आलोकाभावरूपहै॥ यदिप्रथमपक्षस्वीकार करोतोदृष्टांतसाध्यसेहीनहोगा।क्योंकिजसेअपनेअवयवोंकेआश्रितजो धूमहैसोअन्यदेशको आच्छादनकरताहै ॥ तैसेहीतमरूपद्रव्य अपने

अवयवोंकेआश्रितहूयागृहकेउदरवर्तीदेशकोआच्छादनकरताहै ॥याते जिमकोआश्रयणकरताहैतिसीकोविषयकरताहैयह "स्वाश्रयाभिन्न विष यत्व" रूपजोसाध्यहैतिसकोवाह्यतमरूप दृष्टांतमेनहींवर्त्तनेसेंसाध्य विकलदृष्टांतहै।।औरद्वितीयपक्षमेभीयहदृष्टांतमेसाध्यकीविकलतारूप दोषहीप्राप्तहोताहै ॥ क्योंकिआलोकाभावकाप्रतियोगीजोआलोकहै तिसकासमवायिजोआलोकाऽवयवरूप देशतिसकेआश्रितआलोका ऽभावकोघटादिकोंकाआवरकपनादेखाहै ॥ यातेवाह्यतमरूपदृष्टांतइस पक्षमेभीसाध्यसेहीनहै ॥समाधान ॥ हेएकदेशिन्जैसेअपनेअवयवों केआश्रितजोघटहैतिसका आश्रयपना भूतलकोदेखाहै ॥ तैसेअपने अवयवोंकेआश्रितजोवाह्यतमसोगृहकेभीआश्रितरहताहै ॥ औरतिसी कोविषयकरताहै ॥ यातेवाह्यतमकोद्रव्यमानेहुयेकोईविरोधनहीं ॥ अर्थात् आश्रयतथाविषयकेभेदकाअभावहै।। औरद्वितीयपक्षमेआलोकसंसर्गा ऽभावकोतमरूपताहै ।। संसर्गाभावपदसेअत्यंताभावऔरप्रागभावतथा प्रध्वंसाभावइनतीनअभावोंकाग्रहणहै ॥तिनमेप्रागभावकोतथाप्रध्वंसा भावको प्रतियोगीके समवायिदेशमे वृत्तिहूएभी अत्यन्ताभावको प्रतियोगीकेसमवायिदेशमे वरतनेकेनियमका अभावहै । इसप्रकार वाह्यतमकोसंसर्गाभावरूपताकरप्रतियोगिसंबंधिदेशमेहीवरतनेकानियम नहीं।।यातेवाह्यतमकोद्रव्यरूपमानेहुयेअथवाअभावरूपमानेहुयेदृष्टांतमें साध्यकीविकलतानहींहोसकती।।इसप्रकारअनुमानकीनिर्दोषतादिखला करअबश्लोककीव्याख्याकरतेहैं।।तिसतमशब्दकावाच्यजोवाह्यतमतथा अंतरअज्ञानरूपतमहै।।तिसकोआश्रयतथाविषयकेभेदकीअपेक्षानहींहै पूर्वकथनकीहुईयुक्तिसेयहअर्थसिद्धहै।परन्तुतिसीअर्थकोपुनःस्पष्टकरने केलियेआश्रयऔविषयकेभेदकीअनपेक्षाप्रथमदृष्टांतमेसिद्धकरतेहैं।जैसे

गृहकेभीतरवरतनेवालाजोअंधकारहैसोअपनेआश्रयरूपगृहकेअंतरवर्त्ती देशकोक्या?नहींविषयकरताजिससेभिन्नदेशकीअपेक्षाकरताहै।।सोऐसा तोदेखनेमेनहींआता।किन्तुअंतरवर्तीदेशकोवहतमविषयकरताहै।। तैसे अविद्यारूपतमभी आश्रयऔविषयके भेदकीअपेक्षानहींकरता।।इति।। पूर्वयहदोविकल्पकियेथे ।। जीवऔब्रह्मशब्दसेएकआत्माकोहीकहतेहो अथवादोनोंका भिन्नभिन्नअर्थहै ।। इनमेप्रथमविकल्पको निषेधकरके अबद्वितीयविकल्पकोनिषेधकरतेहैं ।। जिसकारणसेअविद्याआश्रयऔ विषयकेभेदकी अपेक्षानहींकरती इसीहेतुसेजीवऔर ब्रह्मकाभेदनहीं संभवता ।।शंका।। जीवऔरब्रह्मपरस्परअभिन्नहैं ।। अविद्याकोआश्रय तथाविषयकेभेदकीअपेक्षानहोनेसे ।। यहहेतुव्यधिकरणहै ।। क्योंकि परस्परअभेदरूपसाध्यतोजीवब्रह्मरूपपक्षमेवर्तेहै ।। औरआश्रयविषय भेदअनपेक्षत्वरूपहेतुअविद्यामेवर्तेहै ।। यातेपूर्वउक्तहेतुस्वरूपासिद्धहै ।। समाधान ।।

ॐ अथ जीव ब्रह्म के भेद का खंडन ॐ

हेएकदेशिन्यहांऔरहीहेतुहैसोतुमश्रवणकरो ।।

मू० ।। ब्रह्मात्मनोर्विभिन्नत्वेभेदःस्वाभाविकोयदि ।
औपाधिकोऽथवाभेदःसर्वथानुपपत्तिकः ।। ७ ।।

नाराजछंद ।। परेशआतमाविभेदभापहोसुनायके। स्वभावि कोकहोथवाउपाधिकोबनायके। सर्वप्रकारभेदकीबनौतनापछानिये ।। अभेदकोनिहारखेदनेकहूनयानिये ।। ८ ।।

टी० ।। औरहेतुकेप्रतिपादन करनेके लियेभिन्नपक्षमेविकल्प करतेहैं ।। ब्रह्मतथाआत्माका स्वाभाविकभेद कहतेहो अथवाऔपा-

धिकभेदकहतेहो ॥ द्वितीयविकल्पकाअर्थतोआगेस्पष्टहोगा॥ प्रथम विकल्पकायहअर्थहै।इतरकीअपेक्षासेरहितजोवस्तुकास्वरूपमात्रहैतिस कोस्वभावकहतेहैं । तिसवस्तुकेस्वरूपप्रयुक्तभेदको स्वाभाविकभेद कहतेहैं । तिसस्वाभाविकभेदपक्षकाअनुवादपूर्वकखंडनकरतेहैं। यहां जीवतथाब्रह्मकापरस्परभेदमाननेमेदोभेदसिद्धहोतेहैं । तिनमेआत्म प्रतियोगिकऔब्रह्मअनुयोगिकएकभेदहै । औरब्रह्मप्रतियोगिकतथा आत्मअनुयोगिक द्वितीयभेदहै । तिनमेयदिप्रथमभेदमानो तोब्रह्ममे जडताकीप्राप्तिहोगी । क्योंकिआत्मा चिद्रूपहैतिससे यदिब्रह्मभिन्न होगा तोघटकीन्याईंअवश्यजडहोगा । यहांयहअनुमानजानना ॥

❀ ब्रह्मजडंभवितुमर्हति।आत्माभिन्नत्वात्।घटवत् ❀

अ० ॥ ब्रह्मजडहोनेकेयोग्यहै आत्मासेभिन्न होनेसेजोजो आत्मासेभिन्नहोताहैसोसोजडहोताहै।जैसेघटहै ॥ इति ॥ औरयदि तुमब्रह्मकी जडता स्वीकार करोगेतो (विज्ञानमानंदंब्रह्म) इसश्रुतिका विरोधप्राप्तहोगा । क्योंकिइसश्रुतिमेविज्ञानऔरब्रह्मपदकीसमानाधि करणतासेअभेदअर्थप्रतीतहोताहै । यदिब्रह्मकोविज्ञानसेभिन्नमानोगे तोजडपनाअवश्यहोगा । सोब्रह्मकाजडपनापूर्वउक्त श्रुतिकेविरोधसे तुमकोभीइष्टनहीं॥शंका॥हेवादिन्ज्ञानऔब्रह्मपदकेसामानाधिकरण्य मात्रसेब्रह्मतथाज्ञानकाअभेदनहींसिद्धहोसकताक्योंकिजैसे(शुक्लःपटः) अ०शुक्लगुणवालापटहै।यहांगुणगुणीभावकोलेकरसमानाधिकरणताहै तैसेज्ञानऔब्रह्मपदकीसमानाधिकरणताभीगुणगुणीभावको लेकरबन जायेगी॥तिससेअभेदनहीं सिद्धहो सकता ॥ समाधान॥ हेएक देशिन् ब्रह्मकोयदि तुमजडमानोगे । तोअज्ञानकी विषयताभीनहीं

बनेगी। क्योंकिजडमेंअज्ञान कृतआवरणके प्रयोजनकाअभावहै॥ यातेअज्ञान विषयताकी सिद्धिअर्थज्ञान औब्रह्मका अभेदहीमानना उचितहै।इसप्रकारआत्माप्रतियोगिकतथा ब्रह्मअनुयोगिकभेदकोनिरा करणकरकेअबब्रह्मप्रतियोगिकतथाआत्मअनुयोगिक द्वितीयभेदको दूषितकरतेहैं। औरहेएकदेशिन् यदिब्रह्मसेभिन्नआत्माको मानोगेतो घटादिकोंकीन्याईआत्मामें अनात्मपनाप्राप्तहोगा। अर्थयह॥ अप रिच्छिन्नतथामुख्यअपरोक्षताहोनेसेब्रह्मकोप्रत्यक्पनाहै। तिसप्रत्यक् ब्रह्मसेआत्माकोभिन्नमानेहुये अवश्यहीपराक्पनाअर्थात् अनात्मपना होगा। यातेद्वितीयभेदभीनहींसंभवता। इसप्रकारजीवतथाब्रह्मका स्वाभाविकभेदनिराकरणकरके अबतिनदोनोंके औपाधिकभेदमेंअनु वादपूर्वकविकल्पकरतेहैं॥जीवब्रह्मकाऔपाधिकभेदहै यहद्वितीयपक्ष पूर्वकहाथा। तिसमेंयहविचारकरनेयोग्यहै। उपाधिजन्यका नाम औपाधिकहै। वाउपाधिभास्यअर्थात् उपाधिकरकेप्रकाशने योग्यका नामऔपाधिकहै। अथवा।उपाधितंत्रअर्थात् उपाधिकेआधीनकानाम औपाधिकहै॥ शंका॥जीवब्रह्मकायदि औपाधिकभेदसंभवैतोऔपा धिकशब्दकेअर्थका विचारकिया चाहिये। सोऔपाधिकभेदहीनहीं संभवता। क्योंकिउपाधिकेनिरूपणका अभाव है।

* अथभेदमें उपाधिकेअभावका निरूपण *

सोदिखलातेहैं। जीवब्रह्मकेभेदका उपाधिअज्ञानहैवाअंतस्करण है।अथवा।अतिरेकहै॥ यहांजीवब्रह्मके भेदाऽभेदकासंपादककोईधर्म विशेषअतिरेकशब्दकाअर्थजानना। इनमेंप्रथमपक्षतोनहींसंभवता। क्योंकितिसअज्ञानकोविकाररहितब्रह्मतथाईश्वरकेभेदका संपादकपना

हैजीवब्रह्मकेभेदकावहसंपादकनहीं । यहवार्ता ॥

* कारणोपाधिरीश्वरः । *

ग्र० ॥ कारणरूपअज्ञानउपाधिवाला ईश्वरहै ॥ इस श्रुतिमेंकथनकी है । औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता।क्योंकितिसअंतस्करणकोवास्तव मानेहुये भेदकोभी वास्तवपना प्राप्तहोगा ॥ औरयदि अंतस्करण कोकल्पितमाने। तो वहअनादि है वा। सादिहै यहविचार कर्तव्यहै ॥ सादिपक्षकानिराकरणआगेकरेंगे । प्रथमअनादिपक्षमेयहविचारकिया चाहिये।वहअंतस्करणसुषुप्ति आदिकअवस्थामेस्थितरहिताहै।वा।नहीं। पुनः प्रथमपक्षमेयहविचारकर्तव्यहै ॥ क्या?वहअंतस्करणस्थूलरूपता सेरहिताहै।वा।सूक्ष्मरूपतासेरहिताहै॥ प्रथमपक्षनहींसंभवता क्योंकि

* मनःसर्वैर्ध्यानैःसहाप्येति *

ग्र० ॥ सर्ववृत्तियोंसहित अंतस्करणसुषुप्तिअवस्थामे लीनहो जाताहै ॥ इसश्रुतिकाविरोधहोताहै।औरमनरूप अंतस्करणकोस्थूल रूपतासेविद्यमानहुयेसुषुप्तिकाभीअभावहोगा ॥ औरद्वितीयपक्षभी नहींसंभवता।क्योंकिसूक्ष्मपनेकाशक्तिवालेकारणरूपअज्ञानसेभिन्ननि रूपणनहींहोसकता। औरयदिकारणरूपतासेअंतस्करणकीस्थितिमाने तोकारणहीवहांस्थितहोगा।अंतस्करणनहीं।तिसअंतःकरणकेनिवृत्तहुये जीवब्रह्मका भेदभीनहींसिद्धहोगा ॥ इसीरीतिसे अंतस्करणसुषुप्ति अवस्थामेनहींरहिता।यहपक्षभीनिरासहुयाजानलेना।।औरअंतस्करण कोउपाधिरूपताकेनिराकरणकीजोयुक्तिहै।तिसीसेअतिरेकपक्षभीनिरास करनेयोग्यहै ॥ औरभेदाऽभेदकापरस्पर विरोधहोनेसेभी अतिरेकको उपाधिरूपतानहींसंभवती ॥ इसप्रकारउपाधिकेननिरूपण होनेसेजीव

औब्रह्मकाभेदऔपाधिकहैयहकथनअयुक्तहै ॥ समाधान ॥

❋ अज्ञान को उपाधि रूपता निरूपण ❋

जोअज्ञानशुद्धब्रह्मतथाईश्वरकेभेदका उपाधिहैसोईही अज्ञान जीवब्रह्मकेभेदकाउपाधिकहनेयोग्यहै ॥ क्योंकिअज्ञानकेकार्यअंतःकरणादिकोंकोकदाचित्कहोनेसेजीवब्रह्मके भेदका उपाधिपनानहीं संभवता ॥ यद्यपिईश्वरकाउपाधिजोअज्ञानहै सोईजीवकाउपाधिहै ॥ ऐसामाननेसेईश्वरतथाजीवके सर्वज्ञतादिकधर्मोंकासंकरहोगा तथापि आवरणशक्तिप्रधानअज्ञानजीवब्रह्मकेभेदकाउपाधिहैऔरविक्षेपशक्ति प्रधानअज्ञानईश्वरका उपाधिहै ॥ इसीकारणसेवेदांत ग्रंथोंमेमाया उपाधिवालाईश्वरकहाहै ॥ यातेदोनोंकेधर्मोंकासंकरनहीं ॥ इति ॥

❋ अथ औपाधिक भेद का खंडन ❋

इसप्रकारऔपाधिकपक्षमेतीनविकल्पकरके औरतिसमेअज्ञान कोउपाधिरूपताकीसंभावनाकरकेतिस औपाधिकपक्षकोदूपितकरनेके लियेआरंभकरतेहैं ॥ पूर्वऔपाधिकभेदपक्षमेतीनविकल्पकियेथे तिन मेअज्ञानजन्यजीवब्रह्मकाभेदहै॥यहप्रथमपक्षहैतिसमेंयहविचारकर्तव्य है ॥ वह जीव ब्रह्म का भेदसादि है अथवा अनादि है ॥ यदि अनादिकहो तो तिस को अज्ञान जन्यता नहीं बनेगी ॥ क्योंकि जो अनादि होता है सो अजन्य होताहै यदि अनादिकीभी उत्पत्ति मानोगे । तोब्रह्मकीभी उत्पत्तिहुईचाहिये । औरजोऐसेकहोकिभेद व्यक्तितोसादिहै परन्तुतिसका प्रवाहअनादिहै ।सोकथनभीनहींसंभ वता । क्योंकिभेदव्यक्तिमेभिन्नाऽभिन्नरूपताकरके प्रवाहकानिरूपण नहींहोसकता।तथाहि।भेदव्यक्तिसेयदिप्रवाहकोभिन्नमानेतो प्रवाहको

हीअनादिपनासिद्धहोगाभेदव्यक्तिकोनहीं। औरभेदव्यक्तिसेप्रवाहको अभिन्नमानेतोप्रवाहकोभी अनादिपनानहींसिद्धहोगा। यातेभेदको सादिपनाहीशेषरहताहै ॥ तिसमेंभीयहविचार कियाचाहिये ॥ क्या? अज्ञानप्रयोजनसेविनाहीभेदकोउत्पन्नकरेगाअथवा।किसीप्रयोजनके अर्थउत्पन्नकरेगा ॥ प्रथमपक्षनहींसंभवता।क्योंकि निष्फलवस्तुको कारणताकाही असंभवहै ॥ सफलवस्तुकोही कारणकहतेहैं ॥ और द्वितीयपक्षमेभीवह प्रयोजनकोईजीवकाहै वाअज्ञानका अपनाकोई प्रयोजनहै ॥ यहविचार करने योग्यहै ॥ प्रथम पक्षतो नहींसंभवता क्योंकिभेदकीउत्पत्तिसेपूर्वजीवभावहीअसिद्धहै॥और द्वितीयपक्षमेभी यहविचारकर्तव्यहै ॥ क्या?आश्रय तथा विषयकालाभयहअज्ञानका अपनाप्रयोजनहै ॥ अथवा।अन्यकोईप्रयोजनहै॥ अंत्यपक्षतोअसंगत है।क्योंकिजीव ब्रह्मकेभेदसे उत्पन्नहुया अज्ञानगतऔर कोईप्रयोजन निरूपणनहीं होसकता औरप्रथमपक्षभीनहींसंभवता क्योंकिभेदकी उत्पत्तिसे पूर्वहीजीवईशभेदसेरहितआत्मानिष्ठअज्ञानकीसिद्धिहोनेसे भेदकीतिसअज्ञानकोकिंचतभीअपेक्षानहीं ॥ शंका ॥ हेवादिन्भेद कीउत्पत्तिसेपश्चातअज्ञानआश्रयतथा विषयकोप्राप्तहोगा ॥ भेदकी उत्पत्तिसेपूर्वतिसकोआश्रयऔविषयकालाभनहीं ॥ सामाधान ॥ हे एकदेशिन "किसकोकिसविषयकअज्ञानहै"॥ इसप्रकारकाप्रश्नलोक मेंप्रसिद्धहै। तिससेआश्रयतथा विषयकीअपेक्षासहितहीअज्ञानप्रतीत होताहै। अन्यप्रकारसेनहीं। क्योंकितिसको स्वतंत्रताकाअभावहै। यातेभेदकाउत्पन्नकरनाव्यर्थहै। यहभावहै। औरअज्ञानभास्यजीव ब्रह्मकाभेदहैयह द्वितीयपक्षभीनहींसंभवता। क्योंकिअज्ञानकोज्ञानसे

भिन्नहोनेकरजडपनाहै जडहोनेसेप्रकाशकताका अभावहै। और अज्ञानकेआधीनजीवब्रह्मका भेदहैयहतृतीयपक्षभीअसंगतहै।

* त्रिविधतंत्रताका निरूपण *

क्योंकितंत्रताअर्थात् पराधीनतातीनप्रकारकी लोकमेंदेखीहै। एकतोघटादिकार्यको अपनेकारण मृत्तिकादिकोंकी आधीनताहै। औरदूसरीमनुष्यादिशरीरोंको अपने आधारभूम्यादिकोंकीआधीनता है ॥ औरतीसरीघटादिक पदार्थोंकोअपनेप्रकाशकेलिये सूर्यादिक प्रकाशकोंकी आधीनताहै। तैसेजीवब्रह्म केभेदकोअज्ञानरूपउपाधि करकेजन्यतारूपआधीनताहै।वा।उपाधिकेआश्रितपनारूपआधीनता है वा।उपाधिकरकेप्रकाश्यत्व रूपआधीनताहै। इनतीनोंकेमध्यकोई भीअज्ञानजन्यत्वादि प्रकारप्रकरणगतजीवब्रह्मकेभेदमेंनहीं संभवता क्योंकिजीवब्रह्मकेभेदको अज्ञानजन्यताऔरअज्ञानभास्यताकातोपूर्व निषेधकरहीआएहैं यातेपुनःनिषेधकरनेका कुछफलनहीं॥ औरतीसरी अज्ञानआश्रयता रूपतंत्रताभीजीवब्रह्मके भेदनिष्ठनहीं संभवती। क्योंकिवहभेदजीवऔ ब्रह्मइनदोनोंकेमध्यकिसीएकमेंरहताहै। यदि जीवप्रतियोगिकऔ ब्रह्मअनुयोगिकभेदहैतो ब्रह्ममेंवर्तताहै औरयदि ब्रह्मप्रतियोगिकऔजीव अनुयोगिकभेदहै।तो जीवमेंवर्तताहै ॥ याते वहभेदअज्ञानको कैसेआश्रयणकरेगा किंतुनहीं करसकता॥शंका॥ हेवादिन्जैसे "महाकाशसे घटाकाशभिन्नहै" इसप्रतीतिमें महाकाश प्रतियोगिकभेदका घटाकाशकोधर्मिपनाहुये विशेषणरूपघटकोभी धर्मिताहै ॥ तैसे "ब्रह्मसेअज्ञानीजीवभिन्नहै" इसप्रतीतिमेंभीब्रह्मप्रति योगिकभेदकाजीवको धर्मिपनाहुयेभीजीवके विशेषणरूपअज्ञानको

तिस भेद की अधिकरणता क्योंनहीं होती किन्तु अवश्यहूई चाहिये ॥ समाधान ॥ हेएकदेशिन् हमारेसिद्धांतमें अज्ञानकोजीव भावकीउपाधिरूपताहोनेसे तटस्थहोनेकरभेदके धर्मिजीवकाविशेषण पनास्वीकारनहींहै । जैसेपाकरूप क्रियापाचकका उपाधिहुयीभी पाचककाविशेषण नहींहोसकती ॥ औरयदिपाकक्रियाकोपाचकका विशेषणमानलेंतो पाकक्रियामेंभी पाचकपनाप्राप्तहोगा । "क्योंकि विशिष्टवृत्तिधर्मका विशेषणमें वर्तनेकानियमहै" ॥ अर्थयह ॥ पाक क्रियाविशिष्ट पुरुषमें वर्तमान जोपाचकत्वधर्महै सोपाचककीविशे-षणीभूतक्रियामेंभी प्राप्तहोगा । सोऐसादेखनेमेंनहींआता ॥ याते जीवब्रह्मकेभेदकी अज्ञानमें अधिकरणता नहींसंभवती ॥ पाकक्रिया कोपाचककी विशेषणता निराकरणकरनेसेघटभी घटाकाशकाविशेषण नहींकिन्तुउपाधिहै यातेपूर्वउक्तदृष्टांतभी असमीचीनहै ॥ शंका । जीवअनुयोगिकजो ब्रह्मकाभेदहै वहअज्ञानमें क्योंनहीं वर्तेगाकिंतु अवश्यवर्तेगा ॥ क्योंकिएकहीभेदके अनेकधर्मिस्वीकारहैं । जैसेएक हीघटभेदकेपटादिक सर्वहीधर्मिहैं।तैसे यहांभीभेदका धर्मिपनाअज्ञान को बनजायेगा ॥ समाधान ॥

❀ अथअज्ञानको जीवब्रह्मप्रतियोगिकभेदकी अधिकरणताका निषेध । ❀

अज्ञानमेंब्रह्मका भेदस्वाभाविकहै॥वाऔपाधिकहै प्रथमपक्षतो नहींसंभवता,क्योंकिएकही ब्रह्मप्रतियोगिकभेदको जीवमेंऔपाधिक मानेहुये और अज्ञानमेंस्वाभाविक मानेहुयेद्विरूपताहोनेसेविरुद्धपनाहै अर्थयहस्वाभाविकत्वतथाऔपाधिकत्वदोविरोधिधर्मएकभेदरूपधर्मिमें

नहीं संभवते ॥ औरभेदकोवास्तवहोनेसे द्वैतापत्तिभीहोगी ॥ यातेभी प्रथमपक्षअसंगतहै ॥ औरद्वितीपक्षमेंअविद्यासेभिन्नऔर कोईउपाधि निरूपण नहीं कर सकते । किन्तु अविद्या कोही उपाधि कहनाहोगा ॥ औरअविद्यानिष्ठभेदमें अविद्याकोही उपाधिमाने हुयेआत्माश्रयदोष कैसेनहींप्राप्तहोगा ॥ इसप्रकारभेद ।स्वाभाविक तथाऔपाधिकरूपता सेनानिरूपणहोनेकरब्रह्मकाभेदअविद्यामेंहै यह कथननिरर्थकहै ॥ इतनेकथनसेजीवप्रतियोगिक भेदकी आश्रयताभी अविद्यामें निषेधकी गयी ॥ क्योंकिजीवप्रतियोगिकभेदकोब्रह्ममेंऔपाधिकहोनेकरतिसको अविद्यामेंभी औपाधिक मानेहुयेकैसेआत्माश्रयदोषनहींहोगाजिसकारणसेअविद्यासेभिन्नउपाधिकाअभावहैऔर तिसजीवप्रतियोगिकभेदको अविद्यामेंस्वाभाविक मानेहुयेद्विरूपता कीप्राप्तिभेदकोहोगी । क्योंकिब्रह्ममेंवहभेदऔपाधिकहै औरअविद्या मेस्वाभाविक है ॥ एकहीभेदमें द्विरूपताकी प्राप्तिविरुद्धहै । औरपूर्व कीन्याईद्वैतापतिदोषभीइसपक्षमेंप्राप्तहोगा।किंवाजीवसेभिन्नअज्ञानको जीवभेदकाउपाधिपनाहैअथवाजीवसेअभिन्नअज्ञानकोउपाधिपनाहै॥ अंत्यपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिअपनेविषयकआपकोहीउपाधिपना अयुक्तहै ॥औरआपकोउपाधिरूपतामाननेमेंआत्माश्रयदोषभीहोगा॥ औरअन्योऽन्याश्रय दोषहोनेसे प्रथमपक्षभीअसंगतहै । क्योंकिभेद सिद्धिके आधीनउपाधिकी सिद्धिहै। और उपाधिकी सिद्धिके आधीन भेदकी सिद्धिहै । इस प्रकार स्वाभाविक तथा औपाधिक भेदको अज्ञान आश्रितत्वनहींसंभवता । यहभावहै ॥ औरजो एक देशीऐसे कहेहैंकि जैसेअज्ञान और आत्माका संबंध अज्ञानके आ·

धीनहै। तैसे ब्रह्मात्माका भेदभी अज्ञानके आधीन है। सो यह कथनभी नहींसंभवता। क्योंकि संबंधको संबंधियोंके आधीनरहने कानियमहै॥ औरभेदमेंसंबंधरूपताका अभावहै॥शंका॥ हेवादिन् पूर्वकथनकीहुयी तीनप्रकारकीतंत्रतासे भिन्नहीजैसेद्रव्यत्व औरगुणवत्ताकानियम्यनियामकभावहै।तैसेजीवब्रह्मके भेदऔरअज्ञानकानियम्यनियामकभावक्योंनहो भावयह॥ जैसेद्रव्यत्वको नियम्यहोनेसे अपनेनियामकगुणवत्ताकी आधीनताहैतैसे नियम्यजो जीवब्रह्मका भेदतिसकोभीअपने नियामकअज्ञानकीआधीनताक्योंनहींहोतीकिंतु हुयीचाहिये॥ यहांव्याप्यकानामनियम्यहैऔर व्यापककानामनियामकहै॥ समाधान॥ हेएकदेशिन् एकअधिकरणमें रहनेवाले पदार्थोंकाहीनियम्यनियामकभाव देखाहै॥ जैसेद्रव्यत्वऔरगुणवत्त इनदोनोंकोएकद्रव्य वृत्तिहोनेसेसमानाधिकरणताहै॥ यातेतिनका नियम्यनियामकभाव बनेहैऔरयहांप्रसंगमेंजीवब्रह्मकेभेदऔअज्ञानकी एकअधिकरणताका अभावहै॥ क्योंकिअज्ञानजीवनिष्ठहैऔरजीव प्रतियोगिकभेदब्रह्मनिष्ठहै। इसप्रकारएकअधिकरणताकाअभावहोने सेदृष्टांतविषमहै॥ यातेजीवब्रह्मके भेदऔअज्ञानकानियम्यनियामक भावनहींसंभवता॥ शंका॥ हेवादिन् भेदऔरअज्ञानकीएकअधिकरणताबनसकतीहै।क्योंकि"मैंअज्ञानीहूं"इसप्रतीतिसेअज्ञानजीवनिष्ठ हैऔर "मैंब्रह्मनहींहूं। इसप्रतीतिसेब्रह्मप्रतियोगिकभेदभी जीवनिष्ठहै। इसरीतिसेब्रह्मभेद औरअज्ञानकोजीवनिष्ठहोनेसे तिनकी समानाधिकरणताकाअभावकैसे कहतेहो॥ समाधान॥ हेएकदेशिन् यहांअहं शब्दसेंअंतःकरणका द्वितीय पर्याय जोअहंकारहै तिसका कथनहै

अथवाअंतःकरणके साथतदात्मभावको प्राप्तचैतन्यका अहंशब्दसे कथनहै । वाशुद्धब्रह्मकाकथनहै॥प्रथमऔद्वितीयपक्षतोनहींसंभवते। क्योंकितिनदोनोंको अज्ञान केआधीनहोनेकर अज्ञानकाआश्रयपना नहींसंभवता। औरतृतीयपक्षमेंहमकोइष्टापत्तिहै॥क्योंकिशुद्धचिन्मात्र हीअज्ञानका आश्रयतथाविषयहै ।

❋ अज्ञानको शुद्धचेतनआश्रयत्वऔ विषयत्व का स्थापन ❋

शंका ॥ चेतनमात्रनिष्ठअज्ञानहोपरंतुविषय तिसकाब्रह्महो जायेगा ॥ समाधान ॥ हेएकदेशिन्यहांयहतात्पर्यहै ॥ ब्रह्मअज्ञान काविषयहैयहजोतुमकहतेहो ॥ इसमेंब्रह्मशब्दकाअर्थकौनहै ॥ क्या बिंबप्रतिबिंबभावसेरहितशुद्धचिन्मात्रहै अथवाबिंबभावको प्राप्तचैतन्य ब्रह्मशब्दकाअर्थहै ॥ प्रथमपक्षमेंतोहमकोभीइष्टापत्तिहै ॥ क्योंकिशुद्ध चिन्मात्रकोहीअज्ञानकीविषयताहममानतेहैं ॥ औरद्वितीयपक्षमेंबिंब भावकोअविद्यासेउत्तरकालमेंहोनेकरवहअविद्यातिसकोविषयनहींकरती किंवा।अज्ञातब्रह्मकीसिद्धिक्याप्रमाणसेहै अथवाभ्रमसेहै॥ अथवा।स्व प्रकाशतासेहै ॥ प्रथमपक्षमेंतोब्रह्मकोजडपनाहोगा।क्योंकिजोप्रमाण काविषयहोताहै ॥ सोघटकीन्याईजडहीहोताहै॥औरब्रह्मकाविशेषणी भूतअविद्याकोप्रमाणसिद्धहोनेकरद्वैतापत्तिभीहोगी ॥ औरविरोधसे भीप्रथमपक्षअसंगतहै क्योंकिप्रमाणकरनिवृत्ति केयोग्यजोअज्ञानवह प्रमाणकेसंबंधकोनहींसहनकरसकता॥औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता क्योंकिजबभ्रमसे अज्ञातब्रह्मकीसिद्धिमानेतोअविद्याकीविषयताकाअ- भावप्रसंगहोगा॥ विषयकेबाधहोनेकरहीज्ञानकोभ्रमपनाहोताहै॥और

तृतीयपक्षभीअसमीचीनहै ॥ क्योंकिअज्ञातब्रह्मका स्वप्रकाश रूपता करस्फुरणनहींहोता॥ यातेसोब्रह्मकिसप्रकारअज्ञानकाविषयहोसकताहै इसीसेसर्वथाभेदकेनबननेसेजीवब्रह्मकेभेदसेरहितशुद्धआत्माकोअज्ञान आश्रयणकरकेतिसआत्माकोहीविषयकरताहै ॥ इसप्रकारअज्ञानकी विषयताआत्मानिष्ठसिद्धहुई ॥ इति ॥अविद्याजीवब्रह्मविभागसेरहित शुद्धचिदात्माको आश्रयणकरतीहै ॥ औरतिसीको विषयकरतीहै ॥ यहअर्थपूर्व निरूपणकिया ॥ तिसमे वृद्धोंकी संमतिकहतेहैं ॥ यह वार्तासर्वज्ञात्ममुनीयोंनेभीकथनकीहै ॥ उन्होंनेक्याकथनकियाहै ॥ ऐसीआकांक्षाकेहुये कहतेहैं ॥

आश्रयत्वविषयत्वभागिनीनिर्विभागचितिरेवकेवला पूर्वसिद्धतमसोहिपश्चिमोनाश्रयोभवतिनापिगोचरः॥

सं० शा० अ० १ श्लो० ३१९ ॥

चौ० ॥ आश्रयत्वविषयत्वविभागन । निर्विभागचितिकेवल आखन ॥ पूर्वसिद्धतमोहैयाते।आश्रयविषयोनकार्यताते ॥१॥

टी० ॥ अज्ञानकेआश्रय तथाविषयके भजनेवालाचेतनहै ॥ यद्यपिअज्ञानकाआश्रयजीवकोमानेहुयेतथा विषयब्रह्मकोमानेहुयेभी चेतनकोअज्ञानकीआश्रयतातथाविषयताकीअनुपपत्तिनहीं । क्योंकि जीवऔब्रह्मइनदोनोंमेचेतनअनुगतहै॥तथापिजीवऔईश्वरकोअज्ञान केआधीनहोनेकर जीवईशभेदसे रहितही चेतन अज्ञानका आ .य तथाविषयहै॥शंका॥ जैसेचेतनमात्रकोअज्ञानका आश्रयतथाविषय तुमनेमाना है ॥ तैसेअनात्माभीअज्ञानका आश्रयऔविषयक्योंनहो ॥ समाधान ॥तुम्हारीइसआशंकाकोमूलमेकथनकियाजो "एवकार"

तिसकेअर्थकोस्पष्टकरनेवालेकेवलपदनेनिवार्णकियाहै ॥ शुद्धचेतन सेभिन्नअनात्मवर्गअज्ञानकाआश्रयऔविषयनहीं इसमेहेतुकहतेहैं ॥ जिसकारणसेअज्ञानप्रथमहीसिद्धहै॥इसीसेपश्चातहोने वालाअनात्मा तिसअज्ञानकाआश्रयऔरविषयनहींबनसकता ॥ इति ॥

* शंका पूर्वक अज्ञान के एकत्व की प्रतिज्ञा *

शंका॥हेवादिन्अज्ञानकाआश्रयएकमानेहुयेतिसकीअनेकता· निरूपणकरनीकठिनहै॥ जिसकारणसेजीवजीवप्रतिजगत्केउपादान भूतअज्ञानकीअनेकताएकदेशीनेभीनहींकानी॥किंतुएकजीवकेआश्रित एकहीअज्ञानमानाहै औरअज्ञानकोएकमानेहुयेबद्धमुक्तादिव्यवस्था कीअनुपपत्तिहै॥ इसप्रकारअज्ञानके एकत्वतथा अनेकत्वपक्षमे दोष देखनेसेहमयहपूछतेहैं।आश्रयतथाविषयकाएकत्वमानेहुयेभीसोअज्ञान एकहैअथवाअनेकहै ॥ यहनिर्णयकेसेहुया ॥ इसप्रकारएकतटस्थ की आशंका को सुनकर "धर्मिकी कल्पनासे धर्ममात्र की कल्पना श्रेष्टहै" इस न्याय को आश्रयण करके सिद्धांत मुद्राको आश्रयण करने वाला पूर्व पक्षी उत्तर कथन करता है ॥ समाधान ॥ हेतटस्थ एकही अज्ञान है यह हम कहते हैं ॥ शंका ॥ हेवा दिन्तिसअज्ञानकी एकतामें साधककौनहै । भावयह ॥ यदितुम अज्ञानकेएकत्व विषयकप्रमाणकहोगे । तोअपसिद्धांतहोगा।क्योंकि प्रमाणसिद्धअज्ञानको सत्यहोनेकरदैनापत्तिरूप दोषप्राप्तहोताहै । औरविरोधभीहै । क्योंकिअज्ञानप्रमाणके संबंधकोसहनहीनहींकरता औरयदितुमकोईप्रमाणनहींकहोगे । तोअज्ञानकाएकत्व सिद्धनहीं होगा । औरयदिकेवलयुक्तिही तिसकासाधककहोगेतोमूलप्रमाणसे

रहिततिसयुक्तिको आभासरूपताहोगी । यातेकिसीप्रकारसेअज्ञान काएकत्वसिद्ध नहींहोसकता ।

अथअज्ञानमें लौकिकादिप्रमाणकेखंडनपूर्वकलाघव सहकृततर्कसेतिसके एकत्वकास्थापन । समाधान

मू० ॥ लौकिकीवैदिकीचापिनाऽज्ञानेदृश्यते प्रमा।
कार्यदृष्ट्याथकल्प्यं चेल्लाघवादेकमेवतत् ।८*

भुजंगप्रयात० ॥ प्रमालौकिकी वैदिकीमोहिप्यारे ॥
अज्ञानं विषेनाहिकोईदिखारे ॥ यदीसृष्टिको देख,
ऊहाकैरैहो । लघूतासितो एकहीजानलैहो ॥ १ ॥ *

टी० ॥ यहांकारिकाके पूर्वार्द्धसेअपसिद्धांतकी आशंकाका परिहारजानना । औरउत्तार्द्धसे लाघवसंज्ञकतर्क अज्ञानकेएकत्वको सिद्धकरताहै।शंका।मूलकारिकामें (नाज्ञाने दृश्यतेप्रमा) अ० अज्ञान मेंकोईप्रमाणनहीं देखाजाता । यहजोकथनहैसोअयुक्तहै । क्योंकि अज्ञानके स्वरूपमें प्रमाणकाजो अदर्शनहै तिसकाप्रकरणके साथ किंचित्भीसंबंधनहींहै । जिसकारणसे अज्ञानके स्वरूपमेंतोअज्ञानहैवा नहींइसप्रकारकेविवादका अभावहै । किंतुतिसके एकत्वऔअनेकत्व मेंहीविवादहै ॥ यातेपूर्वकथननहींसंभवता ॥समाधान । अज्ञानका जोसाधकहैवह तिसकेएकत्वकोभी सिद्धकरदेगा । इसअभिप्रायसेपूर्व कथनसंभवताहै । इसीअभिप्रायकोलेकर श्लोककीव्याख्याकरतेहैं । ·अज्ञान।क्या ? वेदप्रमाणकरसिद्धहैवा।प्रत्यक्षादिप्रमाणकरसिद्धहै।यहां आदिपदसेअनुमान तथालौकिकशब्दका ग्रहणकरना ॥ अथवा ॥ दृश्यमानजगत्‌रूपकार्यकी अन्यथाऽनुपपत्ति रूपतर्कसेवह अज्ञान

कल्पनाकरनेयोग्यहै ॥ अब

❀ सर्वेवेदायत् पदमामनंति ॥ ❀

इसश्रुतिकोनआश्रयण करकेप्रथमपक्षकोदूषित करतेहैं ।

❀ पूर्वकांडतथा उत्तरकांड रूपवेदकाधर्म, औब्रह्ममेंतात्पर्य्यनिरूपण । ❀

इनतीनोंपक्षोंमे पृथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिसाक्षात्तथा परम्परासेपूर्वकांडरूपवेदकाकर्ममात्रविषयहै औरउत्तरकांडरूपवेदांतोंका साक्षात् तथापरंपरासे परिपूर्ण सच्चिदानंद ब्रह्ममात्र विषयहै ॥ शंका ॥ धर्मतथाब्रह्महीवेदवाक्योंकाविषयहै यहनियमआपक्योंकरते हो किन्तुजिसवाक्यसेजो अर्थश्रवणकियाहै तिसअर्थमेसोवाक्यक्यों न प्रमाणहो॥समाधान॥धर्मतथाब्रह्मकेप्रतिपादनमेहीफलकासंबंधहै भाव यह ॥ जिसकारणसेअध्ययनविधिफल वालेअर्थकाजोज्ञान तिसका उद्देशकरकेवेदाऽध्ययनकाविधानकरताहै॥औरसाक्षात्वेदसेप्रतिपादन कियाहुआ अर्थसर्वत्र फलवाला नहींहोसकता ॥ क्योंकिनामधेयऔर देवतादिरूपअर्थभी अनेकवाक्योंमेप्रतीतहोताहै ॥ परन्तुतिनकेप्रति- पादनमे सुखतथादुःखाभावरूपफलका अदर्शनहै ॥ औरधर्मकाज्ञान अपनेविषयभूतधर्मका अनुष्ठानकराताहुआ स्वर्गादिरूपफलकोउत्पन्न करताहै ॥ औरब्रह्मज्ञानतो अनुष्ठानकी अपेक्षासेविनाही अनेकदुःख रूपअज्ञानकीनिवृत्तिपूर्वकपरमानंदकाप्रापकहै ॥ इसरीतिसेधर्मतथा ब्रह्मकेपृतिपादनमेहीफलकासंबंधहै ॥ इनसेभिन्न अज्ञानरूप अर्थतथा श्रवणादिरूप अर्थकेपृतिपादनमेफलकासंबंधनहीं ॥ यातेअज्ञानमेवेद पृमाणताअभावहै ॥ औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता ॥ क्योंकिस्पष्ट

प्रत्यक्षादिसिद्ध अज्ञानकोमानेहुये वादियों कापरस्पर विवादनहोना चाहिये ॥ यहांविवादग्रस्तईश्वरादिप्रत्यक्षसेजोभिन्नपनाहै ॥ यहही प्रत्यक्षनिष्ठस्पष्टपनाहै ॥ इसरीतिसेअज्ञानकोप्रमाणकाअविषयहोनेसे अपसिद्धांततथाविरोधकीभीप्राप्तिनहींहोतीयहभावहै ॥यहांतकश्लोक केपूर्वार्द्धकाव्याख्यानकिया॥अबअज्ञानकोलौकिकतथावैदिकप्रमाण करअसिद्धमानेहुयेप्रमाणकेअभावसे तिसकाएकत्वनहींसिद्धहोगा ॥ इसप्रकारकीआशंकाकालाथवहैसहिकारीजिसकाऐसीजोअन्यथाऽनुप पत्तिरूपयुक्तिवहअज्ञानकेएकत्वकासाधकहैइसप्रकारका परिहाररूपता करउत्तरार्द्धकाव्याख्यानकरतेहैं ॥ जिसकारणसेअज्ञानविषयकप्रमाण नहींसंभवता ॥ इसीकारणसेस्वभावसेअसंगऔरउदासीनतथास्वानंद करतृप्तआत्मानिष्ठमिथ्याऔरअनेकप्रकारकेसुखदुःखादिरूपप्रपंचरचना कीअन्यथाऽनुपपत्तिसेअज्ञानकल्पनाकियाजाताहै॥यहहीकथनकरना योग्यहै॥ क्योंकिअन्यकिसीरीतिसेप्रपंचरचनाकीउपपत्तिनहींसंभवती भावयह ॥ अज्ञानसेविनाअसंगईश्वरसेजगतरचनाकीअनुपपत्तिहै॥ यातेअज्ञानकल्पनाकियाजाताहै ॥ शंका ॥ जैसेकुलालघटकोउत्पन्न करताहुयाअज्ञानकीअपेक्षानहींकरता॥ तैसेईश्वरभीअज्ञानसेविनाही जगतरचनाकरलेगा ॥ अज्ञानकीकल्पनाकरनेकाकिंचित्भीप्रयोजन नहीं ॥ समाधान ॥ सोईश्वरशरीरतथा इन्द्रियोंके संबंधसेरहितहै ॥ यहवार्ताश्रुतिमेंप्रसिद्धहै ॥ यातेअसंगकोकर्तृत्वनहींसंभवता॥शंका॥ जैसेवस्त्रस्वभावसेजलकेसाथ संबंधवालाभीहै परन्तुमोमसे लिप्तहुया जलकाअसंसर्गीहोताहै॥ तैसेईश्वरस्वभावसेसंगिहुयाभीकिसीउपाधि केवशसेअसंगिक्योंनहो ॥ समाधान ॥ वहईश्वरस्वभावसेहीअसंग

है ॥ क्योंकि ॥

❀ असंगोह्ययं पुरुषः ❀

अ० ॥ यहपुरुषअसंगहै ॥ इसश्रुतिमेंईश्वरका असंगस्वभाव कहाहै ॥ औरकिसीउपाधिकेनिरूपणहोनेकरअसंगपनाऔपाधिक नहीं किंतुस्वाभाविकहै ॥ शंका ॥

❀तत्तेजोऽसृजत् ॥ छं० उ० अ० ६ खं २॥१❀

अ० ॥ सोपरमात्मा तेजको उत्पन्नकरताभया ॥ इस श्रुतिसे ईश्वरमेंकर्तृत्वप्रतीतहोताहै ॥ यातेअसंगपनाअसिद्धहै ॥समाधान॥ हेवादिन्वहईश्वरउदासीनहै अर्थात्अकर्ता है ॥ भावयह चेतनकर्ता किसीप्रयोजन काउद्देश करकेकार्यको रचनाकरताहै ॥ औरईश्वरको जगत्रचनाकाप्रयोजनक्या?दुःखाभावरूपहै अथवासुखरूपहै॥ प्रथम पक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकिदुःखाभावतोईश्वरमेंस्वतःसिद्धहै ॥ और द्वितीयपक्षभीअसंगतहै ॥ क्योंकिवहईश्वरअपनेस्वरूपभूतआनंदकर हीतृप्तहै ॥ तिसीसेदोनोंप्रकारकेप्रयोजनसे शून्यहोनेकर वह ईश्वर उदासीनहै ॥ यातेतिसकोतेजादिजगत्काकर्तृत्वयुक्तनहींहै ॥ और

❀ यतोवाइमानिभूतानिजायंते ॥ तै० उ० भृ० व० अ१❀

अ० ॥ जिसकारणसेयहसर्वभूतउत्पन्नहोतेहैं॥ इसश्रुतिनेजगत्रचना ईश्वरसेकथनकीहै । इसीकारणसेअसंगतथाउदासीनआत्मानिष्ठप्रपंच रचनाअज्ञानसेविनानहींसंभवती । यातेअज्ञानकल्पनाकियाजाताहै। शंका॥ रजतकोउत्पन्नकरतीहुयीशुक्तिअज्ञानकीअपेक्षाकरतीहै ।क्यों कि।वहरजतमिथ्याहै। औरप्रपंचकोतो सत्यहोनेकर तिसकेउत्पादनमे

ईश्वरको अज्ञानकी अपेक्षानहींसंभवती ॥ समाधान ॥ "नेति-नेति" इसश्रुतिसेईश्वरमेप्रपंचका निषेधश्रवणहोताहै ॥ यातेरजतकी न्याईप्रपंचभीमिथ्यारूपहै॥तिसकीउत्पत्तिमेईश्वरकोअवश्यअज्ञानकी अपेक्षासंभवतीहै ॥ औरअनेकप्रकारकेसुखदुःखादिरूपजगतकीरचना अन्यप्रधानादिकोंसेनहींसंभवती ॥ किन्तुजैसेरज्जुअज्ञातहुयीअनेक प्रकारकेसर्पमूत्रधारामालादिरूपप्रातिभासिकप्रपंचकोरचनाकरतीहुयी देखनेमेआतीहै ॥ इसीप्रकारअसंगस्वभावहुया भीईश्वरअज्ञानकेवश सेनानाप्रकारकेप्रपंचकोरचनाकरताहै।इसरीतिसेअज्ञानकीसिद्धिहैयहां अन्यरीतिकाअभावहै ॥ तात्पर्ययह॥ प्रथमब्रह्मकोअसंगस्वभावहोने सेअज्ञानसेविनातिससेप्रपंचरचनाकाअसंभवहै।औरअन्यकिसीप्रधान प्रमाणुआदिकसत्यउपाधिउपहितब्रह्मसेभी जगतरचनाका संभवनहीं क्योंकिकार्यमिथ्याहै।मिथ्याकासत्यकारणनहींहोसकता।औरअन्यकिसी मिथ्याउपाधि सेभीजगतरचनाकासंभवनहीं। क्योंकितिसउपाध्यंतरको सादिपनाहैवाअनादिपनाहै।यहप्रष्टव्यहै।प्रथमपक्षमेतोअनादिप्रपंचके उत्पन्नकरनेमेतिसकोउपाधिपनानहींसंभवता।औरद्वितीयपक्ष मानेहुये अज्ञानकाहीनामांतरकरणहै।तिससेअज्ञानकीसिद्धि बलात्कारसेहुयी । औरअज्ञानकोप्रपंचरचनाकी साधकताकाअसंभवभीनहीं।क्योंकिरज्जु निष्ठअनेकसर्पादिरूपप्रातिभासकप्रपंचकीरचनामेअज्ञानकोसाधकपना देखनेसेअसंभवकाअभावहै । इसप्रकारप्रपंचरचनामेअन्यकिसीप्रकार केनबननेसेअज्ञानकीकल्पनाकरनीयुक्तहै । इति ॥

शंका ॥ ❀ अज्ञानके एकत्वकानिर्धार । ❀

इसपूर्वउक्तरीतिसे अज्ञानकी कल्पनाकरो परंतुतिसकाएकत्व

किसकारणसेंहै । समाधान ॥ तिसपूर्वकथनसे कल्पनाका विषय भूतसोअज्ञानएकहै वाअनेकहै इसप्रकारकेविवाद हुएएकहीअज्ञानहै यहनिर्णयहुया । यद्यपिक्रमसे होनेवाले अनेककार्योंके देखनेसे अनेकअज्ञानोंकी कल्पनाप्राप्त होतीहै । तथापि वहएकही अज्ञान विचित्र शक्तियोंवालाहै ॥ यातेतिससे विचित्रकार्यकीउपपत्तिहै ॥ औरएकही विचित्रशक्तिवाले पदार्थको अनेककार्यकीजनकताकोई दृष्टिकाअगोचरभीनहीं।क्योंकिस्वप्नमें अनेकप्रकारकेकार्यकीजनकता निद्रादोषमेंदेखीहै ॥ इसीसेअज्ञानएकहै । औरयदिएकदेशीऐसेकहे। अज्ञानरूप धर्मिका ग्राहकजो प्रपंचरचनाकी अन्यथाऽनुपपत्तिरूप तर्कहैतिसकाबाधहोगा ॥ क्योंकिअज्ञाननिष्ठएकत्वमानेहुए अनेक प्रकारकेसुखदुःखादिरूपप्रपंचरचनाकीतिसमेंअघटमानताहै । सोयह कथनभीनहीं संभवता ॥ क्योंकिप्रपंचरचना अज्ञानकेएकत्वतथा अनेकत्वकल्पना करनेमेंउदासीनहै ॥ औरएककोअनेकविधकार्यका जनकपनाभीपूर्वदृष्टांतसे सिद्धकरआएहैं ॥ यातेधर्मिकेग्राहकअन्यथा ऽनुपपत्तिरूपतर्कका बाधनहीं ॥ शंका ॥ अनेकअज्ञानकल्पनाकिये जावें ॥ वाअनेकशक्तियोंकीकल्पनाहो । इसमेंक्याविलक्षणताहै ॥ समाधान ॥ धर्मिकीअनेकताकल्पना करनेसेधर्मकीअनेकताकल्पना करनीश्रेष्ठहै ॥ इसन्यायसेधर्मिका एकत्वकल्पनाकरनेमें लाघवहै ॥ तिसलाघवसहकृत अन्यथाऽनुपपत्ति रूपतर्क विचित्रशक्तिवालेएक अज्ञानकोग्रहणकरके विश्रामकोप्राप्तहोताहै॥ यहकथनहीयुक्तहै।इति।

※ अथअज्ञानके एकत्वसाधनका फलनिरूपण। ※

शंका।। प्रपंचरचनाजैसेएक अज्ञानसे बनसकतीहै । तैसेअज्ञाननाना

मानेहुएभीवनसकतीथी पुनः अज्ञानकेएकत्व साधनकाकोईफलनहीं।
समाधान ॥ यद्यपिमिथ्या प्रपंचरचनामें अज्ञानकाएकत्वसिद्धकरना
निष्फलहै तथापि वहअज्ञानकाएकत्वजीवके एकत्वकासाधकहै॥याते
तिसकाएकत्वसिद्धकरनाउचितहीहै। इसीकारणसेएकजीववादी जीव
एककहतेहैं ॥ अज्ञानकाएकत्वजीवके एकत्वकासाधककैसेहै ॥ ऐसी
आकांक्षाके हुएकहतेहैं । अज्ञानकोजीव भावकाउपाधिपनाहै यह
पूर्वकथनकरआएहैं । औरउपाधिकायहलक्षणहै ॥ उपकहियेसमीप
स्थितहोकरअन्य पदार्थमेंअपने स्वरूपकोजो धारणकरेसो उपाधि
कहियेहै । जैसेघटतथादर्पणादि प्रसिद्धआकाश तथामुखादिकोंका
उपाधिहैं । तैसेअज्ञानभी चिदात्मामेंअध्यस्त होनेकरसमीपहैऔर
चिदात्माकेसमीपस्थित होकरअपनेएकत्व धर्मकोउपहित चिदात्मामें
समर्पणकरताहै। यातेउपाधिरूपहै। ताअज्ञानउपहितचिदात्माभीजीव
भावकोप्राप्तहुया एकहीहोताहै ॥शंका॥ एकअज्ञानरूप उपाधिवाला
आत्माजीवभावकोप्राप्त हुयाअनेकरूपक्योंनहो ॥ क्योंकिजिसकारण
सेएकहीदर्पणादि रूपउपाधिमेंमुखस्तंभ पुरुषादिकअनेक रूपप्रतीत
होतेहैं ॥ समाधान ॥ हेएकदेशिन् उपाधिकेएकहुएभी बिंबोंकेभेदसे
प्रतिबिंबोंकीअनेकता दृष्टांतमेंतोयुक्तहै औरप्रकरणमेंतो बिंबकानाना
पनाहैनहीं । तिसीकारणसेउपाधिकेएकहुए औरबिंबकेएकहुएतत्उप
हितप्रतिबिंबभीएकहीहै । ऐसेएकजीववादी कहतेहैं इति ॥

ॐअथअज्ञानतथाजीवके एकत्वतथाअनेकत्वकथन करनेवाली श्रुतियोंकी व्यवस्थाकानिरूपण। ॐ

शंका ॥ हेवादिन् लाघवसेएकही अज्ञानस्वीकारकरनेयोग्यहै।

यहतुमनेपूर्वकथन कियासोअसंगतहै क्योंकि ॥

* इन्द्रोमायाभिः पुरुरूपईयते ॥ *

इसश्रुतिसेअज्ञानका नानापनाप्रतीतहोताहै । औरप्रमाणवाले गौरवकोयुक्त होनेसेअप्रामाणिक लाघवअकिंचित्करहै । अर्थात्अर्थ कासाधकनहीं । औरजोपूर्वकहाथा जीवकाएकत्वसिद्धकरनेके अर्थ अज्ञानकाएकत्वसिद्ध करतेहैं । सोयहकथनभीअयुक्तहैक्योंकि ॥

* रूपंरूपंप्रतिरूपोबभूव । * (क०उ०व० ५।।६)

अ० ॥ उपाधिउपाधिके प्रतिसोआत्मातत्सदृशताकोप्राप्तहुया। इस श्रुतिसेजीवका नानापनाही पूतीतहोताहै ॥ यातेअज्ञानएकहै औरजीवएकहै यहकथन श्रुतिसेविरुद्धहै । समाधान॥ हेएकदेशिन् असंगतथाउदासीन चिदात्मासेप्रपंचकी रचनाअज्ञानसेविनासंभवती नहीं॥यहपूर्वकथनकियाहुयालाघवसहकृतअन्यथाऽनुपपत्तिरूपतर्कतिस करसिद्धजोअज्ञानकाएकत्वऔरतिसकापूयोजनजीवकाएकत्वइनदोनों अर्थोंकेअनुवादकरनेवालीश्रुतिभीविद्यमानहै।औरअज्ञानकोएकमानेहुये (मायाभिः)इसबहुवचनरूपाश्रुतिकाविरोधभीनहींहोसकता।क्योंकिवह श्रुतिमायागतशक्तियोंके नानापनेकोपूतिपादनकरतीहैऔरशक्तियोंको मायाकाधर्महोनेमेलक्षणावृत्तिकरमायाशब्दबोध्यता तिनकोसंभवतीहै। यदिऐसी व्यवस्थानकरैंतो ।

*मायांतुप्रकृतिंविद्यात् *

इसश्रुतिमेकथनकियेहुये(मायां)इसएकवचनकाविरोधहोगा॥ तिसकारणमेबहुवचनरूपाश्रुतिअज्ञानकेनानापनेकोनहींकहती॥ और

प्रामाणिकहोनेसेगौरवभीस्वीकारकियाजाताहै।यहकथनभीनहींसंभवता क्योंकिपूर्वउक्तरीतिसे प्रामाणिकपनेकीहीअसिद्धिहै ॥ औरजोश्रुति जीवकेनानापनेमेंप्रमाणकहीवहभीअसंगतहै। क्योंकिवहमंत्रएकजीव केअज्ञानकरकल्पितअनेक प्राणियोंकेभेदपरहै ॥ कोईजीवकेनानात्व परनहीं ॥ यदिऐसेनमानोगेतो

*** अजोह्येकअनीशयाशोचातिमुह्यमानः ***

अ०॥ एकहीजन्मसेरहितआत्माहै ॥ अविद्याकरमोहकोप्राप्त हुयाशोककरताहै॥इत्यादिकजीवकाएकत्वकथनकरनेवालेश्रुतिवचनों काविरोधप्राप्तहोगा ॥ यातेजीवका नानापनानहींसंभवता ॥ इसपूर्व उक्तअर्थकेअनुवादकरनेवालीश्रुतिअबयहांपठनकरतेहैं ॥

अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णांवह्वीःप्रजाःसृजमानां सरूपाः॥अजोह्येकोजुषमाणोऽनुशेतेजहात्येनांभुक्त भोगामजोऽन्यः ॥ श्वे० उ० अ० (४) मं० (५)

मत्तद्रुमला० ॥ एकअविद्याजन्मोंरहितालालश्वेततमरूपीहै॥ अनिकप्रजाकोजनतीसोईजोअपनेसमरूपीहै ॥ एकअजातमचिदहै जोई तहिसेवतअनुसोताहै ॥ ऐसअविद्याभुक्तभोगकोअन्यअजो तजदेताहै॥१॥ इसश्रुतिरूपमंत्रकायहअर्थहै ॥यहांप्रथममंत्रकेद्वितीय पादकोअर्थसेव्याख्यानकरतेहुये (अजां) इसपदकरके निवारणकरने योग्यअंशकोकथनकरतेहैं ॥ मिथ्याभूतजगत्कोअविद्याहेतुककथन करनायोग्यहै ॥ ऐसेद्वितीयपादकेअनुसारप्राप्तहुये यहसंशयहोताहैं॥ वहअविद्याजन्यहैअथवाअजन्यहै ॥ समाधान॥ वहअविद्या(अजां)

कहियेजन्मरहितहै ॥शंका॥ इसमंत्रमेअविद्याकेवाचकपदकाअभाव होनेसेयहमंत्रअविद्याकोहीबोधननहींकरसक्ता तोतिसकाएकत्वकिस कारणसेहोगा ॥ औरअविद्या उपहितजीवकाएकत्व तोअतिदूरहै ॥ समाधान ॥ अविद्याकेवाचकपद काअभावनहीं ॥ क्योंकिस्त्रीलिंग रूपताकरनिर्देशकियाहुयाजो (अजां) यहपदहै तिसीको अविद्याकी वाचकताहै॥ औरतिसअविद्यामे अनेकतानहीं किन्तु (एकां) कहिये वहएकहै ॥ यहांयहभीजानलेना॥ अनिर्वचनीयरूपतासे जगतऔर अविद्यादोनोंसामनहैं॥ अवतिसअविद्याकोविचित्रकार्यकेउत्पन्नकरने कीसामर्थ्यत्रिगुणात्मकरूपतासेकथनकरतेहैं ॥ (लोहितशुक्लकृष्णां) कहियेरजोगुणसतोगुण तमोगुणरूपवहअविद्याहै ॥ यातेविचित्रकार्य केउत्पन्नकरनेमेवहसमर्थहै ॥ तिसत्रिगुणात्मकतथा जन्मसेरहितऔर एकअविद्याउपाधिवालाजीवभीउत्पत्तिसेरहितहै ॥ यहकहतेहैं(अजः) कहियेअविद्योऽपहितजीवजन्मरहितहै ॥ औरवहजीवनानानहींकिन्तु "एकः" कहियेएकहै ॥ शंका ॥ जीवगतनानापनालोकमेअनुभव सिद्धहै ॥ तिसकाएकत्वतुमकैसेकहतेहो ॥ समाधान ॥

❀ एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः ॥ श्वे० उ० अ० ६।११ ❀

❀ नान्योतोऽस्तिद्रष्टानान्योतोऽस्तिश्रोता ॥ बृ० उ० अ० ५ ब्रा० ७कं० २१

❀ एकएवहिभूतात्माभूतेभूतेव्यवस्थितः ॥ स्मृ० ❀

अ० ॥ एकहीस्वप्रकाशचिदात्मासर्वभूतोंमेअविद्याकरआवृत्त होरहाहै ॥ औरइसआत्मासे भिन्नऔरकोईद्रष्टानहीं । औरनइससे भिन्नऔरकोईश्रोताहै॥ औरएकही सर्वभूतोंका आत्माहरएकशरीरमे

अवस्थितहै ॥ इसस्मृतिसहित उपनिषद्मेजीवका एकत्वप्रसिद्धहै ॥ औरउपाधितथाबिंबकाजोएकत्वहैसोप्रतिबिंबकेएकत्वकानियामकहै ॥ इत्यादिकयुक्तिकरभी एकत्वप्रसिद्धहै ॥ इतनाअर्थ प्रसिद्धिअर्थकजो मंत्रमे "हि" यहपदहैतिसने बोधनकिया ॥ औरजीवके अनेकत्वका अनुभवतोजीवकेअज्ञानकरकल्पितअनेकप्राणियोंकेभेदकोविषयकरता है। कोईजीवकेभेदकोनहीं ॥शंका॥ स्वयंप्रकाशब्रह्मसेअभिन्नजोजीव है तिसकोविलक्षणविक्षेपयुक्तअवस्थाकैसेप्राप्तहुयी ॥ समाधान ॥ पूर्वकथनकियेहुयेलक्षणयुक्ततिसअविद्याकोआश्रयणकरकेनिद्रावाले पुरुषकीन्याईशयनकरताहै ॥ अर्थात् अज्ञानसेआवृत्तहुयाज्ञाननेत्रको निमीलनकरलेताहै ॥ पश्चात्कार्याकाररूपतासेस्थिततिसअविद्याको ही (जुषमाणः) कहियेसेवनकरताहुयास्वप्नद्रष्टापुरुषवत् नानाप्रकारके विक्षेपयुक्तजाग्रतादिरूपसंसारकोअनुभवकरताहै ॥ शंका ॥अविद्या कोअनादिरूपतासेअविनाशिपनाहै॥यद्यपियहांप्रागभावमेअतिव्याप्ति दोषनिवारणकेअर्थअनादिकेसाथभावरूपताभीकहीचाहिये॥ तथापि सत्कार्यवादीकेमतमेप्रागभावकेअनंगीकारसेभावरूपताकहनेकीआव- श्यकतानहीं॥इसप्रकारअविद्याकोअविनाशिताहोनेसेमोक्षकाअभाव प्रसंगहोगा ॥ समाधान ॥ तत्त्वमस्यादि महावाक्यसे उत्पन्नहुयाजो आत्मतत्त्वका साक्षात्कारतिसकर (जहात्येनां) कहियेइसअविद्याको निवृत्तकरताहै ॥ अविद्यामेअनादित्वकल्पितहोनेसेतत्त्वज्ञानसेनिवृत्ति काअसंभवनहीं ॥ शंका ॥ यदिअविद्या त्यागनेयोग्यअर्थात्निवृत्त करनेयोग्यहैतोतिसअविद्याकोआत्मा किसलिये आश्रयणकरताहै ॥ समाधान ॥ भोगके निमित्त अविद्याका आश्रयण आत्मा करता

है॥ क्योंकिभोगको तिसअविद्याकर जन्यता है। अत्र स्वस्वरूप के साक्षात्कारसे प्रयोजनसे रहित तिसको मानता हुया त्याग देता है॥ इसीअर्थको कहतेहैं॥ (भुक्तभोगां) कहियेभोग लियाहोभोग जिसकरतिसको "भुक्तभोगा" कहतेहैं॥ तिसभुक्तभोगाअविद्याको प्रयोजनरहितजानकरत्यागदेताहै॥ यहां"भुक्तोभोगोयया"इसप्रकार काविग्रहकरनेसे "यया" यहपदतृतीयाविभक्त्यंतहै॥ औरकर्तातथा करणमेतृतीयाविभक्तिहोतीहै॥ यहांयदितृतीयाविभक्तिकर्ता अर्थमे मानेतो अविद्या निष्ठचेतनता होगी। और अविद्या में चेतनता है नहीं किंतु जडता है। याते कर्ता अर्थ मे तृतीया नहीं किन्तु साधनमे तृतीया जाननेयोग्य है॥ इसीकारण से भोग कासाधन होनेकरअविद्याकोभोक्तृत्वका अभावहोनेसेचेतनताका असंभवहै॥ शंका॥ अज्ञोजंतुः॥ " इसप्रतीतिसे अज्ञान विशिष्टमे जीवपना प्रसिद्धहै॥ याते अविद्याको जीवके स्वरूपमेप्रविष्ठ होनेकर॥ तिस अविद्याकोत्यागदेताहै॥ वहकथनकैसेवनेगा॥ क्योंकिअपनेस्वरूप कात्यागनाअसंभवहै॥समाधान॥ अजोऽन्यः" कहियेवहजन्मरहित जीवअविद्यासेभिन्नहै। कोईअविद्याकोअंतर्भावकरकेजीवपनानहीं। क्योंकिअविद्याजडहै औरजीवचेतनहै। दोनोंएकरूपनहींहोसकते॥ शंका॥ अविद्याकोजीवभावका अधिकरण मानेहुयेचेतनताकीप्राप्ति अर्थसेतुमनेकथनकीसोअयुक्तहै॥ क्योंकिविशिष्टवृत्तिधर्मकोविशेषण मेवर्तनेका नियमनहीं॥ यदिऐसेनमानेतो "रक्तघटमानय" यहांपर भीरक्तरूपऔघटत्वजातिकाआनयनप्रसंग होगा।क्योंकिवहदोनोंघटके विशेषणहैं। उभयविशिष्टघटमेवरत्तनेवालीआनयनक्रियातिनदोनोंमे

प्राप्तहोगी ॥ सोऐसा देखनेमे नहींआता ॥ तैसेअज्ञानको जीवका विशेषणमानेहुयेभीचेतनताकीप्राप्तिकाकथनअयुक्तहै ॥ समाधान ॥ यदितुमकोपूर्वकथनमेतोपनहीं तोऔरहेतुश्रवणकरो ॥ अज्ञानजीव भावकाउपाधिरूपहमकोस्वीकारहै । इसीकारणसेअविद्यानिष्टचेतनता कीप्राप्तिनहींसंभवती।क्योंकिउपाधिवस्तुकेस्वरूपसेबहिरभूतहोताहै ॥ यातेतिसकात्यागभीबनसकताहै ॥ इति ॥

❀ अथएकजीववादमें बद्धमुक्तादिव्य वस्थाका प्रकारनिरूपण ॥ ❀

पूर्वयहकथनकिया प्रपंचरचनाका साधकअविद्याहै औरवह लाघवसेएकहै । तैसी अविद्यारूप उपाधिवाला आत्माजीवभावको प्राप्तहुयाएकहीहोताहै ॥ इति ॥ अबतिसएकजीववादमें बंधमोक्षा दिव्यवस्थाके उपपादनअर्थजिज्ञासाको प्रगटकरतेहैं ।

मू०॥ बंधमोक्षव्यवस्थास्याज्जीवाऽभेदेकथंतव । यथादृष्टंतथैवाऽस्तुदृष्टत्वात् स्वप्नदृष्टवत् ।६।

सारंगी० । बंधोमोक्षोयेव्यावस्थाजीवा ऽभेदकैसेजी । तोने मानीजैसेहैसोमोकोभापोतैसेजी॥ जैसेदेखी तैसेहैसोयामेकाआनीती है । स्वप्नेनाईजागेमाही देखोयाकीरीतिहै ॥ १० ॥ टी० ।

शंका ॥ हेसिद्धांतिन् तेरेमतमेंएकहीजीवमानेहुये तत्त्वज्ञानसे प्रथम "बद्धहै" इसप्रकारकाही व्यवहारहोगा । औरतत्त्वज्ञानसेअनं तरव्यवहारकर्ताकाही अभावहोनेसे मुक्तव्यवहारनहींहोगा ॥ और इदानीकालमेंबद्ध तथामुक्तयहदोनों व्यवहारदेखेजातेहैं । इसकारण सेएकजीवादमेंपूर्वउक्त दोनोव्यवहारोंकी अनुपपत्तिहै । समाधान ॥

हेवादिन् जैसेनानाजीववादमेंकोईबद्धहै कोईमुक्तहैइसप्रकारकेव्यव हारकाविषयभूतजगत् देखाहैतैसेएकजीववादमेंभीबद्धमुक्तव्यवस्था वालाजगत् विद्यमानहै ॥यद्यपिएकजीववादमें बंधमोक्षादिव्यवस्था कीअनुपपत्ति पूर्वकथनकीहै॥ तथापिवहअनुपपत्तिनहींसंभवती। क्योंकिदृष्टअर्थमें अनुपपत्तिकाअभावहै। अर्थात् एकजीववादमेंभी चिदात्माके अज्ञानकरकल्पित बद्धमुक्तादिव्यवस्थाकासंसारमेंदर्शन बनसकताहै यातेअनुपपत्तिनहीं ॥शंका॥ अविद्याकरकल्पितपदार्थ कोबाधितहोनेसे व्यवहारकी साधकतानहींसंभवती। समाधान॥ हेवादिन् अविद्यासेकल्पितपदार्थको अविद्याकालमेंव्यवहारकासाधक पनानहीं अथवाअविद्याके बाधकालमेंतिसको व्यवहारकासाधकपना नहीं॥ प्रथमपक्षमेंतोकोईअनुपपत्तिनहीं। क्योंकिजैसे स्वप्नमेंस्वप्नद्रष्टा पुरुषकीअविद्याकरकल्पित अनेकगजतुरंगादिक पदार्थोंकोअपनेव्यव हारकासाधकपना देखाहै। तैसेजाग्रत्कालमेंभी क्योंनहो। और द्वितीयपक्षमेंअविद्याको बाधितहोनेसे व्यवहारकाअभाव हमकोइष्टही है। यातेएकजीववादमें किंचत्भीदोषनहीं॥ इति॥ अबकारिकाके पूर्वार्धकाविस्तारसे व्याख्यानकरतेहैं। शंका॥ यदिएकहीजीवहैतो एकपुरुषबद्धहैऔर एकमुक्तहै। यह व्यवस्थाकैसेबनेगी॥ औरयदि सिद्धांतीऐसेकहे।एकजीववादमेंव्यवस्थाकीक्रियाअनुपपत्तिहै।क्योंकि द्वैतअनुभवसिद्धहै। औरदृष्टअर्थमेंकोई अनुपपत्तिनहींसंभवती।सोयह कथनभीअसमीचीनहै।क्योंकिस्वरूपलाभवालाअनुभवअनुपपत्तिको परिहारकरताहै यहतोसत्यहै ॥ परंतुएकजीववादमेंतो अनुभवका स्वरूपहीनहींसिद्धहोसकता वहअनुपपत्तिकोकैसे दूरकरेगा॥ अनु.

भवकेअभावमें यहकारणहै । एकवामदेवसंज्ञक पुरुषजोश्रवणादि साधनसंपन्नहै तिसकोतत्त्वमस्यादि महावाक्यसे तत्त्वसाक्षात्कारहोकर सर्वसंसारकेउपादानकारणरूप अविद्याकीनिवृत्तिरूप मुक्तिहोतीहै । तिससेद्वैतगोचर अनुभवकाकरण अंतःकरणऔ इंद्रियादिकतथाबद्ध मुक्तादिविषयरूप संसारकाअभावहोनेसे अनुभवकोस्वरूपलाभकाही अभावहैतोवह अनुपपत्तिकोकैसे परिहारकरेगा । समाधान ॥ हेवा दिन्वामदेवशब्दसे शरीराऽवच्छिन्नचैतन्यकहतेहो अथवा अनवच्छिन्न अज्ञानीचैतन्यकहतेहो । प्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिशरीरा ऽवच्छिन्नकोकल्पित होनेकरबंधमोक्षका अनधिकरणपनाहै । जिस कारणसेअविद्या वालाहीबद्धहोताहै । औरशरीराऽवच्छिन्नअविद्या वालाहैनहीं । क्योंकिवहअविद्याकाकार्य होनेकरअविद्यासेपश्चात भावीहै । यातेशरीराऽवच्छिन्नचैतन्यबद्धनहीं । इसीसेवहमुक्तभी नहींकहाजाता क्योंकिबद्धकोही मुक्तहुयाकहतेहैं । औरअज्ञानो पाधिकअज्ञानीचैतन्यवामदेव शब्दकाअर्थहै । इसद्वितीयपक्षमेंसो अज्ञाननिवृत्तनहींहुया । क्योंकि " मैंअज्ञानीहूं " इसअनुभवसेवह अज्ञानअबभीप्रतीत होरहाहै । यातेअज्ञान कीनिवृत्तिकाअभावहोने सेअज्ञानकर कल्पित नानाप्रकारकेकरण समुदायका अज्ञानपर्य्यंत सद्भावहोनेकर द्वैतकाअनुभवबनसक्ताहै । यहांयहअर्थजानना । अनुभयनहीं संभवता यहजोवादीने कहाथा इसमेंहम यहपूछतेहैं । क्या?करणकेअभावसे अनुभवकाअभावहै वा विषयकेअभावसेतिसकी अनुपपत्तिहै । प्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिअंतःकरणऔबाह्य इंद्रियतथाअनुमान औरशब्दादिक यहअनुभवकेकरण यथायोग्य

स्वीकारहैं ॥ शंका ॥ तिनकेस्वीकार करनेसे द्वैतकीप्राप्तिहोगी । समाधान ॥ वहसकलकरणअविद्याकेकार्य होनेकरमिथ्याहैं ॥ याते द्वैतकेसाधकनहीं । औरद्वितीयपक्षमेंभीयह विचारकरनेयोग्यहै ॥ जिसविषयसेविनाअनुभवकी अनुपपत्तिकथनकी । सोविषयक्या? अनुभवकेस्वरूपकाउपयोगीहै । अथवा।तिस अनुभवकेप्रमात्वकाउप योगीहै । प्रथमपक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकिविषयके अविद्यमानहुए भीअतीतादिज्ञानदेखनेमेंआताहै।औरयदिवादीद्वितीयपक्षकीआशंका करे विषयकेअभावसेअनुभवमेप्रामाण्यकीअनुपपत्तिहै।।औरयदिकोई ऐसेकहेविषयऔअनुभवकेबीच प्रामाण्यसेक्याप्रयोजनहै.अपनेकरण सेउत्पन्नहुयाअनु भवबद्धमुक्तादिकव्यवस्थाकीअनुपपत्तिकापरिहारकर देगा । सोयहकथनभी नहींसंभवता । क्योंकिप्रामाण्यके असंभवसे अनुभवकार्यमेअसमर्थहोगा । भावयहएकजीववादमे बद्धमुक्तादिक व्यवस्थाकीअनुपपत्तिदूरकरनेमे समर्थनहींहोगा।इसप्रकारप्रामाण्यकी अनुपपत्तिसेअनुभवकी अनुपपत्तिरूप द्वितीयपक्ष मेवादीने यहकहा चाहिये। किअपनेप्रामाण्यकेअर्थअनुभवकोकैसाविषयअपेक्षितहै।क्या? अर्थक्रियामेसमर्थविषयहोवापरमार्थसत्यविषयहो। प्रथमपक्षकहोतोऐसा विषयविद्यमानहीहैतिसव्यवहारकेयोग्यविषयकेसद्भावहुयेअनुभवकेवल सेएकजीववादमेव्यवस्थाकासंभवहै ॥शंका॥ मिथ्याअर्थप्रामाण्यका संपादकनहीं अन्यथाभ्रमज्ञानमेभी प्रमात्वहोगा इसलियेपरमार्थसत्य विषयहीप्रामाण्यकाप्रयोजक माननेयोग्यहै।औरअविद्याकर कल्पितबद्ध मुक्तादिकपदार्थोंकोपरमार्थपनेकाअभावहोनेसे स्वगोचरअनुभवनिष्ठ प्रामाण्यकाउपपादकपना तिनकोनहींसंभवता ॥ इसप्रकारप्रपंचकी

सत्यतामानेहुयेजीवोंके अनेकपनेकी सत्यतामेंतोक्याहीकहनेयोग्यहै यहभावहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्यदिपरमार्थसत्यविषयहैयहद्वितीय पक्षतुममानोगे।तोयहऐसेकिसप्रकारबनेगा ॥ अर्थात्बद्धमुक्तादिभेद विशिष्टप्रपंचसत्यकैसेहोगा ॥ क्योंकिप्रपंचसत्यनहींकिन्तुमिथ्याहै ॥ औरभेदविशिष्टप्रपंचसत्यहीक्योंनहोऐसेयदितुमकहोतोतिसमेंयहकथन कियाचाहिये ॥

❀ अथवेदकेतात्पर्यकाएकअद्वैतमेंनिर्धार ❀

क्या? अद्वैतकेग्राहकप्रमाणकाअभावहोनेसेभेदकोतुमसत्यकहते हो। अथवा।भेदकेमिथ्यापनेकाग्राहककोईप्रमाणनहींयातेभेदकोसत्यकहते हो॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता।क्योंकिअद्वैतहीवेदकेतात्पर्यकाविषयहै। अर्थ यहतात्पर्यअर्थकेग्राहकउपक्रमादिषट्‌लिंगोंकेसहित तत्त्वमस्यादि महावाक्यरूपवेद त्रिविधपरिच्छेदसेरहित वस्तुकोवास्तवरूपतासेबोधन करताहै।तिसकारणसेभेदपरमार्थसेसत्यनहींहोसकता॥औरमहावाक्यों कोअद्वैतमात्रबोधनमेंयहहेतुभीहै।जिसकारणसेअध्ययनविधिफलवाले अर्थकेबोधवास्तेवेदवाक्योंके अध्ययनकीकर्तव्यताबोधन करताहै।और अद्वैतसाक्षात्कारहीफलवालाहै क्योंकि ॥

❀ तरतिशोकमात्मवित् छा० छं० अ० ७ खं० १॥❀

अ० ॥ आत्मसाक्षात्कारवालापुरुष शोकउपलक्षित अज्ञान तत्कार्यकोबाधकरताहै ॥ ऐसेश्रुतिनेकहाहै ॥यातेअद्वैतकेप्रतिपादन मेंहीफलकासंबंधहै अन्यअर्थकेप्रतिपादनमेंनहीं। इसकारणसेअद्वैत हीवेदकेतात्पर्यकाविषयहैयहअर्थसिद्धहुया ॥ इति ॥ अबद्वितीयपक्ष कोदूषितकरतेहैं ॥ औरहेवादिन्सर्वभेदका मिथ्यापनाभीप्रसिद्धहै ॥

क्योंकिप्रसिद्धजगत्काअधिष्ठानजोब्रह्महैतिसमे "नेतिनेति" इसवाक्य सेभेदविशिष्टसर्वजगत्कानिषेधप्रतीतहोताहैयातेद्वितीयपक्षभीअसंगत है ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन्वेदकाअद्वैतमेहीतात्पर्यहैयहआपकाकथन नहींसंभवता।क्योंकिवेदमेहीवामदेवादिकप्राचीनपुरुषोंकोज्ञानभीसुना जाताहै ॥

तद्धैतत्पश्यन्नृषिर्वामदेवःप्रतिपेदे । बृ०उ०अ० १ ब्रा०४।१०

यहश्रुतिवामदेवज्ञानसेमुक्तहुयाइसअर्थकोप्रतिपादनकरतीहुई भेदकोभीविषयकरतीहै ॥ तिससेअद्वैतही श्रुतिकाविषयहै यहकथन कैसेबनसकताहै ॥ औरयहां (वामदेवादिक) इसआदिपदसे॥

योयोदेवानांप्रत्यबुध्यतसएवतदभवत् । बृ० उ० अ० १। ब्रा० ४।१०

अ० ॥ जोजोदेवताओंकेमध्यमेब्रह्मबोधवालाहुयावहीब्रह्म रूपहुया ॥ इत्यादिश्रुतिमेप्रसिद्धअद्वैत साक्षात्कारवाले देवतामनुष्य तथाअसुरोंकाग्रहणहै यहजानना ॥ इति ॥ औरयदिसिद्धांतीयथा श्रुतअर्थको अंगीकारकरे तोजीवोंका भेदबलात्कारसे सिद्धहुया ॥ समाधान ॥ हेवादिन्तिसमे यहकथन करनेयोग्यहै॥ क्या?यहश्रुति वाक्य साक्षात्भेदको प्रतिपादन करताहै ॥ अथवा "एतत्" कहिये आत्माको "तत" कहिये ब्रह्मरूपदेखताहुयाअर्थात् "मैंब्रह्महूं" इस प्रकारसाक्षात्कारकरताहुया मैंहीमनुहुआमैंहीसूर्यहुआ ऐसेसर्वात्मभाव कीप्राप्तिकेप्रतिपादकमंत्रोंकोदेखताभया ॥ यहश्रवणक्रियाजोअर्थतिस कीअनुपपत्तिसे जीवभेदकल्पना कियाजाताहै।इनमेप्रथमपक्षतोनहीं

संभवता। क्योंकितिसवाक्यकोजीवकेभेदकीप्रतिपादकतानहींहै ॥इस मेंयहहेतुहै। किएकतोवामदेववाक्यमेंभेद कोकिसीपदकाअर्थनहोनेसे वाक्यार्थपनानहीं। औरदूसरातिसवाक्यकोभेदाकारज्ञानकाजनकपनाभी नहीं॥शंका॥वामदेवकर्तृकज्ञानसेवामदेवसर्वात्मभावकीप्राप्तिवालाहुआ यहजोश्रवणकियाअर्थवहतवबनसक्ताहै यदिवामदेवपदकावाच्यकोई मुक्तजीवमुमुक्षबद्धमुमुक्षुसेभिन्नहो। इसप्रकारजीवोंकेभेदसेविनावामदेव कोसर्वात्मभावकीप्राप्तिके अनुपपद्यमानहोनेसेश्रुतअर्थकी, अनुपपत्ति जीवोंकेभेदका ज्ञापकहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् यहद्वितीयपक्षभी नहींसंभवता॥ जिसकारणसेकल्पनापुरुषबुद्धिमूलकहोतीहै। वहविरोधा अधिकरणन्यायसेनिश्चितअर्थवाली, श्रुतिकर बाध होजाती है ॥ पूर्व मीमांसाकेप्रथमाऽध्यायगततृतीयपादकेतृतीयसूत्रमेंश्रुतितथास्मृतिका एकविषयमेंपरस्परविरोधहुएप्रत्यक्षश्रुतिसे स्मृतिकाबाधनिर्णयकियाहै तिसकोविरोधाऽधिकरणन्यायकहतेहैंतिसमेंयहरीतिकथनकीहै ॥

ॐ औदुंवरींवेष्टनीयासर्वा ॐ

अ० ॥ यागमेंउदुंबरवृक्षकीशाखासर्वहीवेष्टनकरके सामगाय नकरेयहस्मृतिप्रमाणहैअथवा। अप्रमाणहै ॥ इसप्रकारसंशयकेहुएपूर्वपक्ष प्राप्तहुआ। किअष्टकादिस्मृतिकीन्याईयहस्मृतिभीप्रमाणरूपहै । सिद्धांत।

ॐ औदुंवरीं स्पृष्टवोद्गायेत् ॐ

अ० । उदुंबरकीशाखाकोहस्तसे स्पर्शकरताहुयागायनकरे ॥ इसप्रत्यक्ष श्रुतिकाविरोधहोनेसे तिसस्मृतिके मूलवेदकाअनुमाननहो नेकरमूलकेअभावसे तिसकोअप्रमाणताहै ॥ अथवा ॥ प्रत्यक्षश्रौ

अनुमितदोनों श्रुतियोंकापरस्परविरोधदेखनेसेदोनोंको अप्रमाणताकी शंकाप्राप्तहुई ॥ तिसीकारणसेयहांपरअनुमानका बाधनिरूपणकिया है । औरयदिवेष्टनस्मृतिका मूलपरप्रत्यक्षवेदहै ऐसेकहोतोनिःसंदेह वहमूलहो।परंतुऐसे मानेहुएभीअपनेको प्रत्यक्षवेदकेअनुसारहीअनुष्ठानकरनेयोग्यहै।यातेप्रत्यक्षश्रुतिसेअनुमितश्रुतिमूलकस्मृतिका तथा परप्रत्यक्षवेदमूलकस्मृतिका बाधअवश्यहोताहै । तिसीरीतिसे ।

❋ अजोह्येक एकोदेवः सर्वभूतांतरात्मा ❋

इत्यादिनिश्चित अर्थवालेतथा जीवकेएकत्वप्रतिपादक श्रुतिवचनोंकाविरोध होनेकरपुरुषबुद्धिमूलककल्पनाकी अनुपपत्तिहै । शंका ॥ जीवकेएकत्वप्रतिपादकवाक्योंको निश्चितार्थपना युक्त नहीं।क्योंकिएकजीववादमें एकजीवकीमुक्तिसे सर्वमुक्तहुएचाहिये इस तर्ककाविरोधहै । समाधान । हेवादिन् यहतर्कआभासरूपहै । क्योंकिएकत्ववादीके प्रतिसर्वत्वका निरूपणहीअशक्यहै । और यदिऐसेकहो।कितर्कके साथविरोधकाअभावहुएभी अनुभवकाविरोध तोअवश्यहोगा क्योंकिजीवोंकानानात्वसर्वके अनुभवसिद्धहै । सो यहकथनभीअयुक्तहै।क्योंकितिसअनुभवकोचेतनकेअज्ञानकरकल्पित देहोंकेभेदविषयक होनेकरभ्रमरूपताहोनेसेतिसकर श्रुतिकाबाधयुक्त नहींहै । यातेस्वप्नकीन्याईसर्वव्यवस्थाकासंभवहै । इति ॥

❋ अथपूर्वपक्षीकी रीतिसे अधिकारिकेअभाव से मोक्षकाअभाव निरूपण ❋

अबसिद्धांतीके अभिप्रायको नजानताहुआवादी कारिकामें

कथनकियेहुएदृष्टांतदार्ष्टांतभागको व्याख्यान करताहुआ सिद्धांती
केअनिष्टकी आशंकाकरताहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन् जैसेस्वप्नमेंएक
हीस्वप्नद्रष्टापरमार्थसत्यहै। अन्यसर्वपदार्थ तिसकेभ्रमकरकल्पितहैं ।
इसीरीतिसेजाग्रत्‌मेंभी एकहीद्रष्टापरमार्थसत्यहै।औरसर्वद्रष्टातिसकेभ्रम
करकल्पितहैं । तैसेअंगीकारकियेहुए बहुतद्रष्टावोंकेमध्यकौनवहपर
मार्थद्रष्टाहै ॥ इसप्रकारके निश्चयकाअभावहुए श्रवणादिकसाधनों
केअनुष्ठानमें कौनप्रवृत्तहोगा ॥ औरसाधनोंके अनुष्ठानकाअभाव
होनेसेमोक्षकाअभाव प्रसंगतथामोक्षप्रतिपादक शास्त्रभीनिष्फल
होगा।औरयदिसिद्धांतिऐसीआशंकाकरे।किस्वप्नद्रष्टापरमार्थ सत्यहैयह
प्रतीतिस्वप्नकालमेंहोतीहै।वा।स्वप्ननिवृत्तिकेउत्तरकालमेंहोतीहै । प्रथम
पक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिस्वप्नकीन्याईजाग्रतमेंभी परमार्थद्रष्टा
कानिश्चयहोजाएगा तबअनिश्चयके अभावसेश्रवणादिकोंमेंप्रवृत्ति
क्योंनहोगी । औरसाधनोंकेअनुष्ठानसे मुक्तितथातिसकेप्रतिपादक
शास्त्रकीसफलताभी अवश्यहोगी । औरद्वितीयपक्षभीअसंगतहै ॥
क्योंकिस्वप्ननिवृत्तिके उत्तरकालमेंजैसेयह प्रतीतितुमनेमानीहै।तैसे
जाग्रत् निवृत्तिकेउत्तर कालमेंहीइसप्रतीतिनेहोनायोग्यहै । औरवह
संभवतीनहीं । तैसेहीदिखलातेहैं।। जाग्रतनिवृत्तिकाउत्तरकालक्या?
स्वप्नकालहै ॥ अथवा।सुषुप्तिकालहै ॥ वामुक्तिकालहै। प्रथमपक्षतो
नहींसंभवता। क्योंकिस्वप्ननिवृत्तिके उत्तरकालमेंही तुमनेऐसीप्रतीति
कीउत्पत्तिमानीहै ।औरद्वितीयपक्षभी असमीचीनहै । क्योंकि
सुषुप्तिमेंविशेषज्ञानका अभावहै अन्यथासुषुप्तिकाही अभावहोगा ।
औरइसीकारणसेतृतीयपक्षभी नहींसंभवता। औरमोक्षकालमेंप्रमाता

केअभावसेभी तृतीयपक्षअसंगतहै । यातेपूर्वकथनकी हुईवादीकी शंकानहींसंभवती । सोयहसिद्धांतीकाकथनभी अयुक्तहै ॥ क्योंकि हमारेकरकथनकियेहुए अर्थकाहीतुमको ज्ञाननहींहुआ । मैंपरमार्थ सत्यहूंतथा अन्यसर्वमेरेभ्रमकरके कल्पितहैंइसप्रकारस्वप्न द्रष्टाजानता है।यदिऐसेहमकहते।तोपूर्वउक्ततुम्हारेविकल्पोंकाअवकाशहोता।सोऐसे तोहमनहींकहते किन्तुस्वप्नकेपदार्थोंको स्वप्नद्रष्टापुरुषकीअविद्याका परिणामहोनेसे तिसस्वप्नप्रपंचके उत्पन्नकरनेवाली अविद्याकीअधिष्ठा नतास्वप्नद्रष्टाकोहै ॥ इसीसे वहपरमार्थसत्यहै ॥ यहवार्तायुक्तिसे निश्चयहोतीहै ॥ तिसदृष्टांतसे इसजाग्रत्अवस्थामेंभीद्रष्टाके परमार्थ सत्यताकीसंभावनाकेहुए नानाद्रष्टावोंकेमध्यमेंकिसद्रष्टाकीअविद्याका परिणामयहजगत्है ॥ इसप्रकारकासंशयअवश्यहोताहै ॥ क्योंकि निश्चयका कारणकोई प्रतीत नहीं होता याते पूर्वउक्त शंका युक्त है ॥ इति ॥ समाधान ॥

✻ अथस्वप्नदृष्टांतमें द्रष्टाकेएकत्वकाप्रतिपादन ✻

हेवादिन्जाग्रत्अवस्थामें अनेकद्रष्टावोंकेनिरूपणकाअभावहोने सेसंशयकेअसंभवहुएश्रवणादिकसाधनोंके अनुष्ठानमें प्रवृत्तिहोजायेगी तिसकारणसेअनिर्मोक्षप्रसंगनहींहोसक्ता॥यातेनिश्चयकरदे हात्मवादको आश्रयणकरकेतूभ्रांतिको प्राप्तहूआहैकिसप्रकारमेंभ्रांतिकोप्राप्तहूआहूं यदि ऐसेकहेतोश्रवणकर।स्वप्नकालमेंस्वप्नद्रष्टासेभिन्नऔरजीवकल्पितहैंइसका क्याअर्थहैक्या?देवगंधर्वादिसंज्ञकशरीरकल्पितहैंअथवा। हमकोअभिमत जोअज्ञानउपाधिकजीवहैवहअज्ञानउपाधिकही बहुतअनुभूतहोतेहैं तिन

अज्ञानोपाधिकअनुभूतोंकेमध्यमेंएकसत्यहैऔर अन्यसर्वकल्पितहैंयह तुमकहतेहो।यद्यपितिनअनुभूतोंकेमध्यएकसत्यहै औरअन्यसर्वकल्पित हैंयहकथननहींसंभवता। क्योंकिअनुभवके विषयकोअनुभूतकहतेहैं तिसकोनियमसेदृश्यरूपताहोनेकरशुक्तिरजतकीन्याईमिथ्यापनाहै ॥ अनुभविताकोहीसत्यपनायुक्तहै ॥ यातेद्वितीयविकल्प असंगतहै ॥ तथापितिनसर्व अज्ञानउपहितोंनिष्ठअनुभवितापनाभीविद्यमानहै।इस कारणसेलाघवताकरक्या?एकही परमार्थसेअनुभविताहैअन्यअज्ञानी अनुभविताभीहैं ॥ परन्तुकल्पितहैं यहविकल्पबनसकताहै ॥ इति ॥ इसरीतिसेविकल्पकीसंभावनाकरकेअबइनदोनोंविकल्पोंमेप्रथमविकल्प कोदूषितकरतेहैं ॥ प्रथमपक्षनहींसंभवता ॥ क्योंकिदेवादिशरीरोंको कल्पितहुएभीद्रष्टापनेकाअभावहोनेकरअनेकद्रष्टावोंकीकल्पनासेसंशय केप्राप्तहुएअनिर्मोक्षकीप्राप्तिलक्षणविरोधकाअभावहै ॥ शंका ॥ देह कोअथवादेहावच्छिन्नचेतनकोद्रष्टापनाकल्पितहोनेसेअनेकद्रष्टावोंकी कल्पनाकैसेनहींसंभवती।औरसंशयकेप्राप्तहुए अनिर्मोक्षप्रसंगलक्षण विरोधकैसेनहींप्राप्तहोगाकिन्तुअवश्यहोगा ॥ समाधान ॥हेवादिन् देहकोअथवा देहाऽच्छिन्नकोहमश्रवणादिकोंमे अधिकारीनहींकहते जिसकरविनगमनाविरहरूपदोषहो।अर्थयह।जोद्रष्टाहोताहैवहीश्रवणा दिकोंमेअधिकारीहोताहैऔरअज्ञानका आश्रयहीद्रष्टाहोताहै ॥ देह अथवा देहाऽच्छिन्न अज्ञानका आश्रयनहीं ॥ क्योंकितिनदोनोंको अज्ञानकाकार्यहोनेसे अज्ञानके आश्रयपनकी अनुपपत्तिहै ॥ तिसी कारणसेदेहादिकोंकोकल्पित हुएभीकौनपरमार्थ सत्यश्रवणादिकोंमे अधिकारीहै।इसप्रकारएकअर्थकेनिश्चायकयुक्तिकाअभावहोनेसेश्रव-

णादिकोंमेप्रवृत्तिकेअभावहुएअनिर्मोक्षप्रसंगलक्षणविरोधनहींहै॥ और स्वप्नमेअज्ञानउपहितजीवोंकाभेदअनुभवहोताहैयहद्वितीयपक्षभीनहीं संभवता ॥क्योंकिअज्ञानउपहितजीवोंकाभेदस्वप्नमेअनुभवनहींहोता यद्यपि "मैंअज्ञानीहूं" इसप्रकारअज्ञानउपहितस्वप्नद्रष्टा अपनेस्वरुप कोतोअनुभवकरताहीहै ॥ तथापिजीवोंकाभेद अनुभवनहींहोता ॥ क्योंकिअज्ञानउपहितजीवकाभेद प्रत्यक्षप्रमाण ग्रहणकरताहै अथवा अनुमानग्रहणकरताहै ॥ प्रथमपक्षमेभीयहविचारकियाचाहिये जिस अज्ञानकरउपहितजीवकेभेदकोप्रत्यक्ष ग्रहणकरताहै ॥ वहअज्ञान क्या?एकहीअनेकजीवकाउपाधिहैअथवाजीवजीवप्रतिअज्ञानभिन्नहै प्रथमपक्षतोनहींसंभवता क्योंकिउपाधिकेएकहुएतथा बिंबकेएकहुए प्रतिबिंबकाभेददेखनेमेनहींआता ॥ यहपूर्वनिरूपणकरआएहैं॥ और द्वितीयपक्षभी नहींसंभवता ॥ क्योंकिजैसेअपनेसेभिन्न दूसरेपुरुषका ज्ञानप्रत्यक्षनहींहोता तैसेदूसरेपुरुषकेअज्ञानकोभीअतींद्रियहोनेसेतिस अज्ञानउपहितकोअन्यपुरुषप्रत्यक्षकरनेकोसमर्थनहींहोसक्ता॥शंका॥ यद्यपिप्रत्यक्षप्रमाणस्वप्नकालमेजीवके भेदकोनहीं ग्रहणकरसक्ता ॥ तथापितिसतिसदेहकीचेष्टाकरवहजीवकाभेदअनुमानकियाजाताहै॥ तिसकीयहरीतिहै ॥ शरीरओंतिसकेहस्तपादादिकअवयवोंमेसमवाय संबंधसेरहनेवालीऔरधर्माऽधर्महेनिमित्त जिसमेऐसीकोई विशेषक्रिया चेष्टानामसेकहीजातीहै ॥ वहचेष्टादेहकेभेदसेभिन्नहीप्रतीतहोतीहै॥ तिसचेष्टाकेउपादानभूतदेहऔंतिसकेअवयवोंमे समवायसंबंधसेरहता हुआजोप्रयत्नवालेआत्माकासंयोगवहउसचेष्टाका असमवायिकारणहै औरवहचेष्टाप्रयत्नवत्आत्म संयोगरूप असमवायिकारणका अनुमान

करातीहुईस्वअसमवायिकारणकाविशेषणरूपताकरआत्माकाभीअनुमानकरावतीहै ॥ तिसअनुमानकाआकारयहहै ॥

❋ देवदत्तदेहनिष्टचेष्टाप्रयत्नवदात्मसंयोगाऽसमवायिकारणकाचेष्टात्वात्मच्चेष्टावत्❋

अ० ॥ देवदत्तकेशरीरमेजोचेष्टाहै ॥ वहप्रयत्नवालेआत्माकेसंयोगरूपअसमवायिकारणवालीहै ॥ चेष्टारूपहोनेसे जोजोचेष्टाहोतीहैसोसोप्रयत्नवदात्मसंयोगरूपअसमवायिकारणवालीहोतीहैजैसेमेरेशरीरनिष्टचेष्टाहै ॥इति॥ इसप्रकारवहआत्माप्रतिदेहभिन्नभिन्नहै॥ यदिऐसेनमानेतोएकदेहमेचेष्टाकेहुएसर्वहीदेहचेष्टावालेहोंगे॥क्योंकिचेष्टाकाहेतु आत्मातथा शरीरकासंयोग सर्वत्रविद्यमानहै॥ तिसीकारणसेतिसतिसशरीरकाअधिष्ठाताआत्मा तिसतिस शरीरकीचेष्टासेभिन्नभिन्नअनुमानकियाजाताहै ॥ तिसअनुमानकाआकारयहहै ॥

❋ देवदत्तशरीराऽधिष्ठातात्मायज्ञदत्तात्मनः भिद्यते यज्ञदत्तशरीरानधिकरणचेष्टासमवायिकारणसंयोगाश्रयत्वात् ॥ यन्नैवंतन्नैवंयथायज्ञदत्तात्मा ❋

अ० ॥ देवदत्तकेशरीरकाअधिष्ठाताआत्मायज्ञदत्तकेआत्मासेभिन्नहै ॥यज्ञदत्तकाशरीरनहींहैअधिकरणजिसकाऐसीचेष्टाकेअसमवायिकारणरूपसंयोगकाआश्रयहोनेसे।जोजोयज्ञदत्तकेआत्मासेभिन्ननहींहै ॥ सोसोयज्ञदत्तशरीराऽनधिकरणचेष्टाकेअसमवायिकारणरूपसंयोगकाआश्रयभीनहींहै ॥ जैसेयज्ञदत्तकाआत्माहै ॥ इति ॥ इसप्रकारस्वप्नकालमेजीवकाभेदअनुभवसिद्धहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् यहद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता ॥ क्योंकियहांयहअर्थजाननेयोग्यहै॥

तिसतिसशरीरकीचेष्टासेपृथकआत्माकाअनुमानजोतुमकरतेहो इसमे कौनकारणहै॥ क्या?एकदेहमेचेष्टाकेहुएसर्वेहीदेहचेष्टाकरेंगेयहअति प्रसंगप्राप्तहोताहै अथवा एकआत्मासेअनेकदेहगतचेष्टानहींबनसकती अथवा अनेकशरीरोंमेएकहीआत्माकोअधिष्ठाता मानेहुएदूसरेशरीरोंमे कियेहुएकार्यकाअनुसंधानप्राप्तहोगा ।।इनमेप्रथमपक्षतोनहींसंभवता क्योंकि आत्मा का संयोग मात्र तो चेष्टा का कारण है नहीं किन्तु प्रयत्नवाले आत्माकासंयोगचेष्टाका कारणहै औरप्रयत्नजिसशरीरा ऽवच्छेद कर उत्पन्न हुआ है तिसी शरीर की चेष्टा का हेतु है ॥ याते अतिप्रसंगकैसे प्राप्तहोगा किन्तुनहीं होगा । और तिसतिस शरीरके आरंभकधर्मादिनिमित्तकोभी नियामकहोनेसेअतिप्रसंगनहींहोसक्ता। अबद्वितीयपक्षको दूषितकरतेहैं॥जिसकारणसे तिसतिस शरीरमेंवर्तने वालीचेष्टास्व असमवायिकारण आत्मशरीरके संयोगकी अपेक्षा करतीहै ॥ तिससंयोगकाविशेषण आत्माएकहो अथवाअनेकहो ॥ इसमेंवहउदासीनहै ॥ तिसीकारणसेइसचेष्टाकर आत्माकेभेदकाअनु माननहींकियाजाता ॥ किंवा । यहांयहअनुमानजानना ॥

❀अनेकशरीरवर्त्तिन्यश्चेष्टा एकात्मसंयोगा ऽसमवायिन्यः ॥चेष्टात्वात् ॥ एकशरीरमात्र समवेतचेष्टावत् ॥ ❀

अ० ॥ अनेकशरीरोंमें वर्तनेवालीजोचेष्टाहै ॥ एकआत्माके संयोगरूपअसमवायिकारणवालीहै ॥ चेष्टारूपहोनेसे ॥ जोजो चेष्टाहोतीहैसोसोएकआत्माकेसंयोगरूपअसमवायिकारणवालीहोती है ॥ जैसेएकशरीरमात्रमें समवायसंबंधसे रहनेवालीचेष्टाहै ॥इति ।

औरयदिवादीऐसेकहे ॥ कि ॥ शरीरमात्रनिष्ट चेष्टात्वरूपउपाधिइस अनुमानमेंविद्यमानहै ॥ क्योंकिजहां जहांएकआत्मसंयोगरूपअस मवायिकारणत्वहै। तहांतहांएकशरीरमात्रनिष्टचेष्टात्वहै जैसेएकशरीर मात्रसमवेतचेष्टामेंहै॥ इसप्रकारउपाधिसाध्यके साथव्यापकहै ॥ और जहांचेष्टात्व"हैतहांएकशरीरमात्रनिष्टचेष्टात्वकाअभावहै॥ जैसेअने-कशरीरसमवेतचेष्टावोंमें है। यातेसाधनकेसाथउपाधिकोअव्यापकताहै इसरीतिसेपूर्वउक्तहेतुसोपाधिकहोनेसेदुष्टहै। सोयहवादीकाकथनभी नहींसंभवता ॥ क्योंकियोगीके अनेकशरीरोंकीचेष्टामेंसाध्यकेसाथ यहउपाधिअव्यापकहै ॥ तहां "एकात्मसंयोगरूपअसमवायिकारण त्वरूपसाध्यके विद्यमानहुएएकशरीरमात्र निष्टचेष्टात्वकाअभावहै । यातेपूर्वउक्तहेतुदुष्टनहीं ॥ इसप्रकारएकही आत्मासे अनेकदेहगत चेष्टाकेसंभवमेंदृष्टांत कहतेहैं । जैसेनैयायिकोंके मतमेंयोगीपुरुषको योगसिद्धिके बलसेसमूहशरीरोंकी रचनादशामेंएकआत्मसंयोगसेही अनेकदेहोंमेंचेष्टास्वीकारकीहै । तैसेयहांप्रकरणमेंभीएक आत्मसंयोग सेहीअनेकदेहगतचेष्टा बनसक्तीहै ॥ शंका ॥ जैसेयोगीपुरुषको अनेकशरीरोंमेंकियेहुए कार्यका अनुसंधानहोताहै तैसेयहांभी अनु संधानहुआचाहिये क्योंकि सर्वदेहोंमेंएकहीआत्मा आपनेमानाहै । समाधान ॥ हेवादिन्इसतृतीयपक्षमेंभी यहविचारकर्तव्यहै ॥ शरीरा ऽनुपहितअविद्याऽवच्छिन्नजोसाक्षिहै।तिसकोअनुसंधानतुमआपादन करतेहो । अथवा शरीराऽवच्छिन्नकेप्रति आपादनकरतेहो। प्रथम पक्षकहोतोवहहमकोभीस्वीकारहै । क्योंकिअविद्याऽवच्छिन्नसाक्षिको अनुसंधानहोताहीहै ॥ औरद्वितीय पक्षनहींसंभवता क्योंकितिन

योगीकेदेहोंमेंभी उपाधिकेभेदसे तिसतिस देहाऽवच्छिन्नको अनु संधाननहींहोता । योगीकेदेहोंमेंकौनअनुसंधानकरनेवालाहै । ऐसी आकांक्षाकेहुएकहतेहैं।तहांभीअज्ञानमात्रउपहितकोअनुसंधातापनाहै। तैसेही दार्ष्टांतमे जानना ॥ इसकथनकियेहुएअर्थको अनुभवसेदृढ करतेहैं।इसीकारणसेएकहीशरीरमेपादाऽवच्छिन्नचेतनमस्तकाऽवच्छिन्न चेतनकेदुःखकोनहींअनुसंधानकरता।।अन्यथा "मैंपादाऽवच्छिन्न" शिरोवच्छिन्नकेदुःखवालाहूं ॥ ऐसाअनुभवहुआ चाहिये सोऐसा तोअनुभवनहींहोताकिन्तु " मेरेपादमेसुखहै " औरमेरेशिरमेदुःख है"ऐसाअनुभवसर्वकोहोताहै।यातेअज्ञानउपहितकोही अनुसंधातापनाहै शरीराऽवच्छिन्नकोनहीं।इसप्रकारपूर्वउक्तयुक्तिसेअज्ञानाऽवच्छिन्नजीव काभेदस्वप्नकालमेप्रत्यक्षप्रमाणसेवाअनुमानप्रमाणसेनअनुभवहोनेकर जीवोंकेभेदकाअनुभवशरीरोंकेभेदकोहीविषयकरताहै।यहअर्थसिद्धहुआ यातेविनगमनाविरहदोषकाअभावहोनेसे बद्धमुक्तव्यवस्थाकीअनुप- पतिनहीं ॥ इति ॥

❋ अथदार्ष्टांतमेद्रष्टाकेएकत्वकाप्रतिपादन ❋

इसप्रकारस्वप्नदृष्टांतसेद्रष्टाकाएकत्वप्रतिपादनकरकेअबदार्ष्टांतमेंभी द्रष्टाकाएकत्वऔरजीवोंकेभेदकाअनुभवशरीरोंकेभेदकोविषयकरताहै।। औरअर्थसेबद्धमुक्तादिव्यवस्थाइनसर्वअर्थोंके प्रतिपादनकरनेकेलिये जिज्ञासाकोप्रकटकरतेहैं ।। यद्यपिस्वप्नमे पूर्वउक्त रीतिसे व्यवस्थाका संभवहै।तथापिइसजाग्रत्अवस्थामेजीवोंकेभेदकाअनुभवकिसरीतिसे होताहै ॥ ऐसीजिज्ञासाकेहुएजीवोंकेभेदकाअनुभवसिद्धांतीउपपादन करताहै।। हेवादिन्तुमसावधानहोकरश्रवणकरो।। सोईजाग्रत्अवस्था

मेभ्रांतिसहितहोताहै ॥ वहकौनहै। ऐसीआकांक्षाकेहुएकहतेहैं ॥ वह सजातीयविजातीयस्वगत भेदसेरहिततथा भेदाऽभेदसेरहितआत्माहै औरवहनित्यहै।इसीसेदेहादिकोंसेभिन्नहै।औरअविद्यातत्कार्यसेरहित शुद्धहै ॥ इसीसेअविद्यातत्कार्यको अनित्यहोनेकरऔरआत्माकोतिन सेभिन्नहोनेकरआत्माको पूर्वनित्यपनाकथनकियाहै।औरवहआत्माबुद्ध कहियेचेतनस्वरूपहै ॥ इसीहेतुसेअविद्यातत्कार्यआत्मानहीं॥ और जडस्वरूपअविद्यातत्कार्यसेभिन्नपना चेतनरूपआत्माकोयुक्तहीहै ॥ शंका ॥ आत्मासंसारीहैयांतेअविद्याकावहकार्यहै तिसकोआपनित्य कैसेकहतेहो ॥ समाधान ॥ हेवादिन्वह आत्मामुक्त स्वभाव है ॥ यद्यपितिसमेसंसारीभावअविद्याकाकार्यहै ॥ तथापिविशेपस्वरूपचेतन मात्रकल्पितनहींइसीअर्थकोश्रुतिभीकहतीहै ॥

❀ विमुक्तश्चविमुच्यते ❀

अ० ॥ वहमुक्तस्वभावआत्माआविद्यकबंद्धको स्वरूपबोधसे निवृत्तकरकेपुनःमुक्तव्यवहारकेभजनेवाला होताहै।इति ॥ इसीसेवह आत्माउपनिपद्प्रमाणमात्रकरहीवास्तवसेजाननेयोग्यहै ॥ यहांमात्र पदकहनेकायहभावहै ॥ यदिप्रत्यक्षादि प्रमाणोंकेसाथ उपनिषद्की संमतिहोगी।तोअधिगतअर्थगोचरहोनेसेउपनिपदोंकोअप्रमाणताहोगी यदिइतरप्रमाणोंसे विरोधहोगा। तोभीअप्रमाणताहोगी। औरमात्रपदके कहनेसेकिसीप्रकारभीअप्रमाणतानहींहोती ॥ शंका ॥शुद्धचेतनको जाग्रतादिअवस्थाकीप्राप्तिनहींसंभवती।क्योंकि तिनकोजीवकाधर्मपना है।।समाधान।। हेवादिन्वहशुद्ध चेतनहीजीवभावकोप्राप्तहोताहैयद्यपि शुद्धआत्माकोहीजीवभावकीप्राप्तिमानेहुएमुक्तत्वऔसंसारित्वदोविरुद्ध

रूपएकमेप्राप्तहोंगे।तथाजिसेंजैसेंशुक्तिकेअज्ञानकरकेकल्पितरजतरूपसेप्रतीत हुईशुक्तिको विरुद्धद्विरूपवत्ताकीप्राप्तिनहींहोती । तैसेंपूर्वउक्तआत्माके अज्ञानकरजीवभावकोकल्पितहोनेंमें चेतनमेंविरुद्धद्विरूपवत्ताकीप्राप्ति नहींहोसकती॥इसप्रकारआत्मा अज्ञानको आश्रयणकरके जीवभावकोप्राप्त होकरदेवतिर्यक्मनुष्यादिशरीरोंकी कल्पनाकरता है ॥ औरपुनःतिन देवादिशरीरोंकामहिकारिरूपनाकरब्रह्मांडपर्यंतचतुर्दशलोकोंकोरचना करताहै ॥ औरतिनदेहोंमेंकोईदेवहै कोईमनुष्यहैकोई असुरहै कोई सर्वशरीरोंकेउत्पन्नकरनेवालाब्रह्माहै ॥ औरकोईजगत्का पालनकरने वालाविष्णुहै ॥ औरकोईअन्यप्रलयकालमेंसर्वके संहारकरनेवालारुद्र है॥इनतीनोंकीउपाधिसत्त्वादिगुणहैं॥तिनसत्त्वादिगुणोंकेवशसेतिनमें उत्पादकत्वपालकत्वसंहारकर्तृत्वादिसर्वसामर्थ्यहै ॥ इसप्रकारजीवोंके भेदकाअनुभव औरजगत्काअनुभवउपपादनकरकेअब अधिकारित्वके अनुभवकोउपपादनकरतेहैं ॥ औरमैंब्राह्मणकुमारअवस्थाकरयुक्तहूं॥ यहांशमादिसंपन्नअधिकारीहीब्राह्मणशब्दसेगृहीतहै॥तिसकाहीवेदांत श्रवणमेंअधिकारहै।यहसूचनकरनेकोब्राह्मणकाग्रहणहैकोईजातिमात्र ब्राह्मणकेवास्तेब्राह्मणपदका ग्रहणनहीं ॥ औरवानप्रस्थ आश्रमसे अनंतरहीसंन्यासकरे ॥ इसक्रमसंन्यासके नियमाभावसूचनकरनेके लिये "कुमार" पदग्रहणकियाहै ॥ भावयह संन्यास ग्रहणमें वैराग्य कारणहै ॥वहजिसकिसीआश्रमतथाअवस्थामेंहोतबीयहजीवसंन्यास ग्रहणकरे ॥ इति ॥ श्रवणादिकसाधनोंमेंजोप्रवृत्तिहै तिसमेंप्रतिबंधका भावसूचनकरनेकेअर्थकहतेहैं ॥ तिनविष्णुआदिकोंकीपूजानमस्कार पादसेवनश्रवणकीर्तनस्मरनदास्यसख्यआत्मनैवेदनरूपभक्तिकाअनुष्ठान

करकेश्रवणादिकसाधनों कोसंपादनकरमैं मोक्षकोसिद्धकरूंगा ॥ इस लियेश्रात्मज्ञानकेश्रर्थीजिज्ञासुजनोंनेईश्वरभक्तिसकलविघ्नोंकेनिवारण अर्थअवश्यकरनीचाहियेयहभावहै ॥इति॥ इसप्रकारसर्वका अधिपति हुआभीयहआत्मदेवअज्ञानकेप्रभावसे जाग्रत्अवस्थामेंभ्रांतियुक्तहोता है॥ पुनःजैसेपूर्वकथनकियाहुआजोजाग्रत्प्रपंचतिसकोउपसंहारकरके स्वप्नकालमेंनिद्रारूपदोषकरसहकृतहुआ आत्मदेवतैसेप्रपंचकोकल्पनाकर तिसतिसशरीरतथाइन्द्रियों करसिद्धहोनेयोग्यभोगोंकोभोगकरपुनःयह भ्रमहोताहै ॥ वसिष्ठादिकमुनिमुक्तहुएहैंउनसेभिन्न औरजीवबद्धहैं ॥ औरमैंभीकोईबद्धहूं। दुःखीहूं । तथासंसारीहूं। किसी प्रकार मुक्तहो जाऊं ॥ ऐसेकल्पना करकेपुनः तिसस्वप्नअवस्था को उपसंहार करके सर्वभ्रमकीनिवृत्तिरूपजाग्रत्अवस्थाअथवासुषुप्तिअवस्थाकोप्राप्तहोताहै ॥इति॥इसप्रकारआत्मानिष्ठअज्ञानकेवशसे जीवभावतथाईश्वरभावश्रौ जगत्रूपता औरअवस्थावत्ताकीकल्पनाकेहुएजो अर्थसिद्धहुआसोकहते हैं।एकहीयात्माव्यापकश्रौस्वप्रकाशतथाआनंदएकस्वरूपअपनेअज्ञान केवशसेजीवहै। संसारीहैइत्यादिशब्दोंकाविषयहोताहै। जीवकल्पितही है ऐसेजोकोईमानताहै तिसकामतनिषेधकरतेहैं। तिसशुद्धआत्मासे भिन्नकोईसंसारीहैऐसीसंभावनाभीनहींकरसक्ते।अन्यथामुक्तिश्रौरसंसा रकाएकअधिकरणनहींबनेगा।यातेआत्मासेभिन्नकल्पितजीवकोईनहीं यहअर्थसिद्धहुआ।इसप्रकारमहात्माकोअपनेअज्ञानसे संसारीपनाप्रति पादनकरके अबमुक्तपनाभीतिसीमेंप्रतिपादनकरतेहैं।तिसपूर्णानंदस्वरूप आत्मदेवकोहीजिसकालमेंअनादिसंसारमेंसंचितकियेहुए पुण्यकर्मन्के समुदायसेपापकर्मनिवृत्तहोजातेहैंऔरविवेकादिचतुष्टयसाधनसंपन्न

होताहै । औरशास्त्रतथागुरुकी कृपासेप्राप्त तथाआदरनैरंतर्यदीर्घ कालकरसेवनकियेहुए श्रवणादिसाधनोंकी पुष्कलतावालाहोताहै। तिसकोजिसकालमें तत्त्वमस्यादि महावाक्यसे उत्पन्नहुयास्वरूप साक्षात्कारउदय होताहै । तिसकालमें अज्ञानतत्कार्यसर्वकोउप संहारकरके स्वरूपानंदकर तृप्तहुयाऔरअपने स्वरूपभूत महिमामें स्थितहुयासोईआत्मा "मुक्तहै" इसव्यवहारका विषयहोताहै ॥ इस प्रकारअनेकशरीरादिजगत् भ्रमकाउपादानरूप अज्ञानकीतत्त्वसाक्षा त्कारसेनिवृत्तिकालमें तिससेभिन्न औरकोईसंसारीजीव तथातिसकर अनुभूतद्वैतकिंचित्मात्रभीशेपनहींरहता यहपरमरहस्यहै ॥ १ ॥ इसपूर्वउक्तसिद्धांतके संग्रहका श्लोक ॥

ब्रह्माज्ञानादीशजीवादिभावात् भ्रांतंजाग्रत्स्वप्न सुषुप्तीर्बिभर्त्ति । स्वात्मज्ञानादज्ञताया निवृत्तौ नान्योजीवोनास्तिचाऽज्ञातमन्यत् ॥ १ ॥

कवित्त ॥ व्यापकआनंदएक रसशुद्धब्रह्मजोई तमोजन्यभ्रांत युतविविधलसतहै ॥ जीवईशभावहोय जगतविथारकर जाग्रतसुपन सुखपतकोधरतहै॥ सोईजबईशध्याय गुरुकी शरणजायसुनमहावाक्य निजबोधकोभरतहै ॥ तबहीअज्ञानसहकारज विनाशहोतकोऊअन्य जीवनाहि द्वैतकोलखतहै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथपूर्वअर्थके अनुवादपूर्वक एकदेशिपूर्वपक्षी कीरीतिसे अज्ञातसत्ताकानिरूपण ॥

आत्माकाअज्ञान देवादिशरीररूपतासे औरतिनशरीरोंका सहिकारिब्रह्मांडरूपतासे परिणामकों प्राप्तहोताहै । वहीअज्ञानतिस

तिसपदार्थगोचर वृत्तिरूपतासेविषयोंका चैतन्यकेसाथ संबंधहोनेके अर्थपरिणामकोप्राप्तहोताहै ॥ औरसोविषयाकारअविद्याकीवृत्तिचेतन रूपबोधकरप्रकाशितहुई ज्ञानाभासऔरभ्रमइसनामसेकहीजातीहै। विषयकास्फुरणभी तिसीसेहोताहै । तिसीकारणसे देवादिशरीरऔर जगत्‌रूपविषयऔर तिनकाज्ञानरूपअविद्याकीवृत्तिइनसर्वकाअविद्या हीउपादानकारणहै । इसीकारणसे अद्वैतबोधकरअविद्याकीनिवृत्ति हुएकार्यरूपविषयऔर भ्रमज्ञानतिनसर्वकीनिवृत्तिहोतीहै। यहकथन बनसक्ताहै ॥ इति ॥ जगत्‌अज्ञातसत्तावालानहींरहता इसपूर्वकथन कोवादीनसहनकरताहुआशंकाकरताहै ।

मू०। अज्ञातसत्त्वंनेष्टं चेद्व्यवहारः कथंभवेत्।
नह्यदर्शनमात्रेण विपरीणोनाशनिश्चयात्।१०।

सो० ॥ अज्ञातसत्त्वनहि इष्टकहुविहारकत संभवै।
अदर्शनते नहिक्लिष्ट ताअभावके ज्ञानते ॥ ११ ॥

टी० ॥ अनुभूयमानद्वैतनहीं है ऐसेकहनेवालासिद्धांतीपूछने योग्यहै ॥ किअनुभवकेविषयको अनुभूयमानकहतेहैं॥ तिसअनुभव शब्दसेक्या? प्रमाणजन्यज्ञानकाग्रहणहैअथवाअविद्याकीवृत्तिकाग्रहण है । प्रथमपक्षतो नहींसंभवता । क्योंकिविषयनिष्ठ अज्ञातसत्ताका अभावहोनेसेप्रमाणजन्यज्ञानकी विषयताअंगीकारहीनहीं।यदिद्वितीय पक्षकहोतोसर्वजगत्‌कोअपरोक्षआत्माकेअज्ञानकापरिणामहोनेसेतिस जगत्‌कोऔर तत्‌गोचरअविद्याकीवृत्तिको अपरोक्षएकरूपताप्राप्तहुई। जिसकारणसे अपरोक्षशुक्तिके अज्ञानकापरिणाम जोरजतऔरतिस का ज्ञानयहदोनोंपरोक्षनहींदेखे जाते। किंतुअपरोक्षही देखेहैं । तिस

कारणसेंअपरोक्ष अविद्यावृत्तिकीविषयताकोअप्राप्तजोद्वैततिसकीसत्ता अदिस्वीकारनहींहै । तोपरोक्षपुत्रादिरूपविषयका ग्रहणत्यागरूपजो व्यवहारहैवहपरोक्षअर्थकेअभावहोनेसेनहींहोगा । यदिइसीअर्थमें इष्टापत्तिकरोतोनहींसंभवती । क्योंकिनदेखनेमात्रसे नाशकानिश्चय होनेसेकोईपुरुषविषादयुक्तनहींहोता।।यातेअविद्या उपादानकजगत्है यहकथनहीअसंगतहै ।। अबसंक्षेपसेकथनकियेहुएश्लोकके अर्थको विस्तारसेनिरूपणकरतेहैं ।। हेसिद्धांतिन्तुमक्योंइसप्रकारकहतेहो ।। जोतिसजीवकर अनुभूयमानद्वैत नहींहै ।। क्योंकिजिसकारणसे अज्ञातद्वैतकी सत्ताभीज्ञातद्वैतकीसत्तावत् नैयायिकादिक । अथवा हमारेएकदेशीवेदांती अंगीकारकतेहैं ।। अज्ञातद्वैतकीसत्तामेंविवरणा चार्योंकाअंगीकारभी प्रमाणरूपहै ।। सोदिखलातेहैं ।।इसीकारणसे पारमार्थिकतथा व्यवहारिकऔप्रातिभासिक यहतीनप्रकारकीसत्ता विवरणाचार्य मानतेहैं ।। सत्ताकीत्रिप्रकारताका अंगीकारअज्ञात सत्ताकेद्वैतकाकैसे उपपादकहै। ऐसीअकांक्षाकेहुएकहतेहैं ।। हेसिद्धां तिन्वहसत्ताकी त्रिप्रकारताका अंगीकारअज्ञातसत्ताके नमानेहुएनहीं बनसकता ।। इसमेंयहकारणहै ।। पूर्वउक्तयुक्तिसे प्रपंचकीप्राति भासिकसत्ताहै।औरसर्वप्रकारबाधसेरहितहोनेसेब्रह्मकीपारमार्थिकसत्ता है।इसरीतिसेदोनोंप्रकारकीसत्तास्वीकारकरनेसेदृष्टातथादृश्यपदार्थकेस्व रूपकानिरूपणसंभवहुएसत्ताकीत्रिप्रकारताकाअंगीकारतिनकाव्यर्थहो गा।।यातेआविद्यकरजतादिज्ञातसत्तावालेहैं।।औरप्रपंचकोअविद्योपादान क नहोनेसे तिसकीअज्ञातसत्ताहै।इसप्रकार त्रिविधसत्ताकेअंगीकारकी अनुपपत्तिअज्ञातसत्ताकद्वैतमेंप्रमाणहै।। यहनिरूपणकरके अबअज्ञात

सत्ताकेअनंगीकाररूपविपक्षमे दंडकहतेहैं ॥ यदिअज्ञातद्वैत कीसत्ता नहींमानोगेतोगृहसेबाहरदूरदेशमे गयेहुएपुत्रतथापशु आदिकसकल साधनसामग्रीकोनदेखतेहुएपुरुषकोपुत्रादिकोंका अभावनिश्चयहोकर शोकअग्निसेदग्धहुएऔररुदन करतेहुएको मरणहीप्राप्त होगा ॥ याते अज्ञातद्वैतअवश्यअंगीकारकरनेयोग्यहैयहअर्थयुक्तिऔरप्रमाणसेसिद्ध हुआ ॥इति॥ शंका ॥ हेवादिन् पश्वादिक साधनसामग्रीके दर्शनका अभावतिनकेअभावकानिश्चायकनहीं । क्योंकिसुषुप्तिमे पुत्रादिकोंके दर्शनकाअभावहुएभीतिनकेअभावकानिश्चयनहींहोता । यदिवहांभी अभावकानिश्चयमानेतोसुषुप्तिकाहीउच्छेदप्राप्तहोगा । औरजोसत्ता कीत्रैप्रकारताकाअंगीकार अज्ञातसत्त्व कासाधक रूपप्रमाण पूर्ववादीने कथनकियावहभीनहींसंभवता । क्योंकिप्रातिभासिकसत्ताकाहीअवां- तरभेदमाननेसेसत्ताकीत्रिविधताबनसकतीहै । भावयह किजिनप्राती तिकपदार्थोंकाअदर्शनकालमेअसत्त्व निश्चयनहोवह व्यवहारिकसत्ता वालेहैं। औरजिनकाअसत्त्व निश्चयहोवहप्रातीतिक सत्तावालेहैं॥फिर जुदीअज्ञातसत्ताद्वैतकीमाननीनिष्फलहै॥औरजोऐसेकहोकिज्ञात सत्ता वालेरजतादिकोंकोजैसेव्यवहारकासाधकपनानहींदेखा। तैसेहीज्ञातसत्ता वालेद्वैतप्रपंचकोभीव्यवहारका साधकपनानहींहोगा ॥ सोयहकथन भीनहीं संभवता ॥ क्योंकिजैसे स्वप्नमेदेखेहुए ज्ञातसत्ताकगजअश्वा दिकोंको आरोहणादिव्यवहारका साधकपनाहै॥ तैसेजाग्रत प्रपंचभी ज्ञातसत्तावालाहीव्यवहारकासाधककैसेनहींबनसक्ता किंतुबनसक्ता है ॥ और प्रातिभासिकरजतादिकों कोभीप्रवृत्त्यादि व्यवहारका साध कपनाविद्यमानहीहै ॥ यहांयहअनुमानजानना ॥

कारणसे अपरोक्ष अविद्यावृत्तिकीविषयताको अप्राप्तजोद्वैततिसकीसत्ता यदिस्वीकारनहींहै । तोपरोक्षपुत्रादिरूपविषयका ग्रहणत्यागरूपजो व्यवहारहैवहपरोक्षअर्थकेअभावहोनेसेनहींहोगा । यदिइसीअर्थमें इष्टापत्तिकरोतोनहींसंभवती । क्योंकिनदेखनेमात्रसे नाशकानिश्चय होनेसेकोईपुरुषविषादयुक्तनहींहोता॥यातेअविद्या उपादानकजगत्है यहकथनहीअसंगतहै ॥ अवसंक्षेपसेकथनकियेहुएश्लोकके अर्थको विस्तारसेनिरूपणाकरतेहैं ॥ हेसिद्धांतिन्तुमक्योंइसप्रकारकहतेहो ॥ जोतिसजीवकर अनुभूयमानद्वैत नहीं है ॥ क्योंकिजिसकारणसे अज्ञातद्वैतकी सत्ताभीज्ञातद्वैतकीसत्तावत् नैयायिकादिक । अथवा हमारेएकदेशीवेदांती अंगीकारकरतेहैं ॥ अज्ञातद्वैतकीसत्तामेंविवरणा चार्यकाअंगीकारभी प्रमाणरूपहै ॥ सोदिखलातेहैं ॥ इसीकारणसे पारमार्थिकतथा व्यवहारिकऔप्रातिभासिक यहतीनप्रकारकीसत्ता विवरणाचार्य मानतेहैं ॥ सत्ताकीत्रिप्रकारताका अंगीकारअज्ञात सत्ताकेद्वैतकाकैसे उपपादकहै। ऐसीअकांक्षाकेहुएकहतेहैं ॥ हेसिद्धां तिन्वहसत्ताकी त्रिप्रकारताका अंगीकारअज्ञातसत्ताके नमानेहुएनहीं बनसकता ॥ इसमेंयहकारणहै ॥ पूर्वउक्तयुक्तिसे प्रपंचकीप्राति भासिकसत्ताहै।औरसर्वप्रकारबाधसेरहितहोनेसेब्रह्मकीपारमार्थिकसत्ता है।इसरीतिसेदोनोंप्रकारकीसत्तास्वीकारकरनेसेद्रष्टातथादृश्यपदार्थकेस्व रूपकानिरूपणासंभवहुएसत्ताकीत्रिप्रकारताकाअंगीकारतिनकाव्यर्थहो गा॥यातेव्याविद्यकरजतादिज्ञातसत्तावालेहैं॥औरप्रपंचकोअविद्योपादान क नहोनेसे तिसकीअज्ञातसत्ताहै।इसप्रकार त्रिविधसत्ताकेअंगीकारकी अनुपपत्तिअज्ञातसत्ताकद्वैतमेंप्रमाणहै॥ यहनिरूपणकरके अबअज्ञात

सत्ताके अनंगीकाररूपविपक्षमे दंडकहतेहैं ॥ यदि अज्ञातद्वैत कीसत्ता नहींमानोगेतोगृहसेबाहरदूरदेशमे गयेहुएपुत्रतथापशु आदिकसकल साधनसामग्रीकोनदेखतेहुएपुरुषकोपुत्रादिकोंका अभावनिश्चयहोकर शोकअग्निसेदग्धहुए औररुदन करतेहुएको मरणहीप्राप्त होगा ॥ याते अज्ञातद्वैत अवश्य अंगीकारकरनेयोग्यहैयह अर्थयुक्ति औरप्रमाणसेसिद्ध हुआ ॥इति॥ शंका ॥ हेवादिन् पश्वादिक साधनसामग्रीके दर्शनका अभावतिनके अभावकानिश्चायकनहीं । क्योंकिसुषुप्तिमे पुत्रादिकोंके दर्शनका अभावहुएभीतिनके अभावकानिश्चयनहींहोता । यदिवहांभी अभावकानिश्चयमानेतोसुषुप्तिकाहीउच्छेदप्राप्तहोगा । औरजोसत्ता कीत्रिप्रकारताका अंगीकार अज्ञातसत्त्व कासाधक रूपप्रमाण पूर्ववादीने कथनकियावहभीनहींसंभवता । क्योंकिप्रातिभासिकसत्ताकाही अवां- तरभेदमाननेसेसत्ताकीत्रिविधतावनसकतीहै । भावयह किजिनप्राती तिकपदार्थोंका अदर्शनकालमे असत्त्व निश्चयनहोवह व्यवहारिकसत्ता वालेहैं। औरजिनका असत्त्व निश्चयहोवहप्रातीतिक सत्तावालेहैं।।फिर उदीअज्ञातसत्ताद्वैतकीमाननीनिष्फलहै॥ औरजोऐसेकहोकिज्ञात सत्ता वालेरजतादिकोंकोजैसेव्यवहारकासाधकपनानहींदेखा। तैसेहीज्ञातसत्ता वालेद्वैतप्रपंचकोभीव्यवहारका साधकपनानहींहोगा ॥ सोयहकथन भीनहीं संभवता ॥ क्योंकिजैसे स्वप्नमेदेखेहुए ज्ञातसत्ताकगज अश्वा दिकोंको आरोहणादिव्यवहारका साधकपनाहे॥ तैसेजाग्रत् प्रपंचभी ज्ञातसत्तावालाहीव्यवहारकासाधककैसेनहींवनसक्ता किंतुवनसक्ता हे ॥ और प्रातिभासिकरजतादिकों कोभीप्रवृत्यादि व्यवहारका साध कपनाविद्यमानहीहे ॥ यहांयहअनुमानजानना ॥

* जागरावस्थंद्वैतं ज्ञातमेवसद्भवितुमर्हति व्यवह्रियमाणत्वात् ॥ स्वप्नप्रपंचवत् *

अ० ॥ जाग्रत्अवस्थामेजोद्वैतप्रपंचहै ॥ सोज्ञातसत्तावाला होनेकेयोग्यहै ॥ व्यवहारकाविषयहोनेसे ॥ जोजोव्यवहारकाविषयहै सोसोज्ञातसत्तावालाहोनेकेयोग्यहै ॥ जैसेस्वप्नप्रपंचहै ॥ इति ॥वादी कासमाधान ॥ हेसिद्धांतिन् यह तुह्मारा अनुमान "बाधितत्व" रूप उपाधिकरदूषितहै ॥ सोइसप्रकारहै ॥जहांजहांज्ञातसत्तावालाद्वैतहै॥तहां तहां "बाधितत्व" कहियेबाध ज्ञानविषयत्वहै ॥ जैसेस्वप्नप्रपंचमेंहै ॥ यातेउपाधिसाध्यकेसाथव्यापकहै ॥ औरजहांजहां व्यवहारकीविषता है ॥ तहांतहां बाधज्ञान की विषयता रूप "बाधितत्व" काअभावहै॥ जैसेजाग्रत्प्रपंचमेंहै ॥ इसप्रकारपक्षमेउपाधिसाधनके साथअव्यापक है। इसीसेजाग्रत् तथास्वप्नप्रपंचकी विलक्षणताहै ॥ क्योंकि जाग्रत्बोधसे तिसस्वप्नप्रपंच का बाध होजाता है ॥ और इसजाग्रत् प्रपंचमेंआत्मसाक्षात्कारसे पूर्वबाधनहींहोता ॥ यहकथन सिद्धांतीकेअभिप्रायसे अथवाएकएकदेशीके अभिप्रायसे जानना यातेअज्ञातसत्ताकद्वैत स्वीकारकरनेयोग्यहै ॥ १० ॥ इति ॥

* अथत्रिविधसत्ताके खंडनपूर्वक ख्यातियों का स्वरूप निरूपण *

जाग्रत्द्वैतप्रपंच अबाधित होनेसे अज्ञातसत्तावालाहै यहपूर्व वादीनेकथनकिया अबतिसकोसिद्धांतीदूषित करताहै ॥ यहांएक देशीकामतनिरास करनेसेनैयायिकादिकोंकामतभी निरासहोजावेगा

इसअभिप्रायसे एकदेशीका मतखंडन करनेकेलिये सिद्धांती तिस से पूछताहै ॥

मू०। सत्त्वत्रयंवदन्वादीप्रष्टव्योऽत्राधुनामया ।
सत्यंद्वैतमसत्यंवानाऽसत्येत्रिविधंकुतः ॥ ११ ॥

भुजंगप्रयात ॥ त्रिधासत्त्ववादीभलेजोवखाने ॥ इहांपूछने योग्यमैनेवजाने ॥ कहोद्वैतसत्यं असत्यंवहोई ॥ उभेनाबनेतोत्रिधा कैससोई ॥ १२ ॥

टी०—हेएकदेशिन् क्या?वास्तवद्वैतको आश्रयणकरकेअज्ञात सत्ताकोतुमसिद्धकरतेहो । अथवाअनिर्वचनीयद्वैतको आश्रणकरके तिसकोसिद्धकरतेहो ॥ पूथमपक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकिजहां पूत्यक्षादिपूमाणोंनिष्ठप्रामाण्यकानिषेध कियाहै तहांवास्तवद्वैतका भी निषेधकरआएहैं ॥ औरद्वितीयपक्षमेंयहविचारकियाचाहिये । सत्यरूपतासेतथा असत्यरूपतासेऔउभयरूपतासे जोकथनकेयोग्य नहोवहअनिर्वचनीय पदार्थप्रथमकहींशुक्ति रजतादिस्थलमेंपूसिद्ध हैवानहीं ॥ अंतिमपक्षकहोतो वहनहींसंभवता । क्योंकिदृष्टांतका अभावहै । अर्थयहआकाशादि पंचनिष्ठ अनिर्वचनीयताकोअंगी कारकरकेतिसकी अज्ञातसत्ता सिद्धकरनेकी हेवादिन्तुइच्छाकरताहै यातेतिसप्रपंचकी अनिर्वचनीयतामें यहविचारकरनेयोग्यहै । पूपंच निष्ठअनिर्वचनीयता पूत्यक्षपूमाणसेसिद्धहै॥ अथवाअनुमानपूमाण सेसिद्धहै ॥ पूथमपक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकिअनिर्वचनीयता को स्पष्टपूत्यक्षकर सिद्धमानेहुयेवादियोंका परस्परविवाद नहीं होगा ॥ औरद्वितीयपक्षभी असंगतहै ॥ क्योंकिदृष्टांतकेअभाव

* जागरावस्थंद्वैतं ज्ञातमेवसद्भवितुमर्हति व्यव हियमाणत्वात् ॥ स्वप्नप्रपंचवत् *

अ० ॥ जाग्रत्अवस्थामेजोद्वैत प्रपंचहै ॥ सोज्ञातसत्तावाला होनेकेयोग्यहै ॥ व्यवहारकाविषयहोनेसे ॥ जोजोव्यवहारकाविषयहै सोसोज्ञातसत्तावालाहोनेकेयोग्यहै ॥ जैसेस्वप्नप्रपंचहै ॥ इति ॥वादी कासमाधान ॥ हेसिद्धांतिन् यह तुह्मारा अनुमान "बाधितत्व" रूप उपाधिकरदूषितहै॥ सोइसप्रकारहै॥जहांजहांज्ञातसत्तावालाद्वैतहै॥तहां तहां "बाधितत्व" कहियेबाध ज्ञानविषयत्वहै ॥ जैसेस्वप्नप्रपंचमेहै ॥ यातेउपाधिसाध्यकेसाथव्यापकहै ॥ औरजहांजहां व्यवहारकीविषता है ॥ तहांतहां बाधज्ञान की विषयता रूप "बाधितत्व" काअभावहै॥ जैसेजाग्रत्प्रपंचमेंहै ॥ इसप्रकारपक्षमेउपाधिसाधनके साथअव्यापक है । इसीसेजाग्रत् तथास्वप्नप्रपंचकी विलक्षणताहै ॥ क्योंकि जाग्रत्बोधसे तिसस्वप्नप्रपंच का बाध होजाता है ॥ और इसजाग्रत् प्रपंचमेंआत्मसाक्षात्कारसे पूर्वबाधनहींहोता ॥ यहकथन सिद्धांतीकेअभिप्रायसे अथवाएकएकदेशीके अभिप्रायसे जानना यातेअज्ञातसत्ताकद्वैत स्वीकारकरनेयोग्यहै ॥ १० ॥ इति ॥

* अथत्रिविधसत्ताके खंडनपूर्वक ख्यातियों का स्वरूप निरूपण *

जाग्रत्द्वैतप्रपंच अबाधित होनेसे अज्ञातसत्तावालाहै यहपूर्व वादीनेकथनकिया अबतिसकोसिद्धांतीदूषित करताहै ॥ यहांएक देशीकामतनिरास करनेसेनैयायिकादिकोंकामतभी निरासहोजावेगा

इसअभिप्रायसे एकदेशीका मतखंडन करनेकेलिये सिद्धांती तिस से पूछताहै ॥

मू०। सत्त्वत्रयंवदन्वादीप्रष्टव्योऽत्राधुनामया ।
सत्यंद्वैतमसत्यंवानाऽसत्येत्रिविधंकुतः ॥ ११॥

भुजंगप्रयात ॥ त्रिधासत्त्ववादीभलेजोवखाने ॥ इहांपूछने योग्यमैनेवजाने ॥ कहोद्वैतसत्यं असत्यंवहोई ॥ उभेनाबनेतोत्रिधा कैससोई ॥ १२ ॥

टी०—हेएकदेशिन् क्या ?वास्तवद्वैतको आश्रयणकरकेअज्ञात सत्ताकोतुमसिद्धकरतेहो । अथवाअनिर्वचनीयद्वैतको आश्रणकरके तिसकोसिद्धकरतेहो ॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकिजहां प्रत्यक्षादिप्रमाणोंनिष्ठप्रामाण्यकानिषेध कियाहै तहांवास्तवद्वैतका भी निषेधकरआएहैं ॥ औरद्वितीयपक्षमेंयहविचारकियाचाहिये । सत्यरूपतासेतथा असत्यरूपतासेऔउभयरूपतासे जोकथनकेयोग्य नहोवहअनिर्वचनीय पदार्थप्रथमकहींशुक्ति रजतादिस्थलमेंप्रसिद्ध हैवानहीं ॥ अंतिमपक्षकहोतो वहनहींसंभवता । क्योंकिदृष्टांतका अभावहै । अर्थयहआकाशादि .पंचनिष्ठ अनिर्वचनीयताकोअंगी कारकरकेतिसकी अज्ञातसत्ता सिद्धकरनेकी हेवादिन्तुइच्छाकरताहै यातेतिसप्रपंचकी अनिर्वचनीयतामें यहविचारकरनेयोग्यहै । प्रपंच निष्ठअनिर्वचनीयता प्रत्यक्षप्रमाणसेसिद्धहै॥ अथवाअनुमानप्रमाण सेसिद्धहै ॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकिअनिर्वचनीयता को स्पष्टप्रत्यक्षकर सिद्धमानेहुयेवादियोंका परस्परविवाद नहीं होगा ॥ औरद्वितीयपक्षभी असंगतहै ॥ क्योंकिदृष्टांतकेअभाव

से अनुमानकरके आकाशादिप्रपंचनिष्ठअनिर्वचनीयता किसप्रकार तुमसिद्धकरोगेकिंतुनहींकरसक्ते ॥ यातेप्रथमपक्षही स्वीकारकरने योग्यहै ॥ क्योंकिअनिर्वचनीयताको आश्रयणकरकेहीअज्ञातसत्ता एकदेशीने सिद्धकरनीहै ॥ यहीअनिर्वचनीयताके सिद्धकरनेका प्रकरणमेंउपयोगहै इसलियेवहअनिर्वचनीयपना शुक्तिरजतादिकों में प्रथमप्रसिद्धहै ॥ इसप्रथमपक्षको-एकदेशीस्वीकार करता है ॥ यहांपरयहअर्थजाननेयोग्यहै ॥ "इदंरजतम्" यहप्रतीति रजतकेसंबंधाकारतथा इदंत्वविशिष्ट पुरोवर्तिकोविषय करनेवालीहै अथवानहीं ॥ यदिअंत्यपक्षकहोतो रजतार्थी पुरुषकी-सन्मुखदे शवर्त्ति पदार्थमेंप्रवृत्ति नहींहुईचाहिये ॥ क्योंकि प्रवृत्तिकेकारण रूपविशिष्टज्ञानकाअभावहै॥औरयदिकोईअख्यातिवादीऐसेकहे। कि यहांदोज्ञानहैंइदंतागोचरतो सामान्यज्ञानप्रत्यक्षरूपहै औररजतगोचर स्मृतिरूपज्ञानहै ॥ तिनदोनोंकेविवेकज्ञानाऽभावसेपुरोवर्त्ति विषयक प्रवृत्तिहोतीहै।।सोयहकथनअख्यातिवादीकानहींसंभवता।।क्योंकिजैसे दोज्ञानोंकातथादोविषयोंका विवेकज्ञानाऽभाव प्रवृत्तिकीसामग्री तुमने मानीहै।तैसेउसीसमयमेंदोनोंज्ञानोंकेतथादोनोंविषयोंकेस्वरूपभिन्नहोने सेअविवेकज्ञानाऽभावनिवृत्तिकीसामग्रीभीविद्यमानहै॥तिससेनिवृत्तिभी अवश्यहुईचाहिये॥औरएककालमेंपरस्परविरुद्धप्रवृत्तितथानिवृत्तिनहीं देखीजाती। औरसर्वत्रअर्थात्सत्यरजतादिस्थलमेंभीविवेकज्ञानाऽभाव सेहीप्रवृत्तिहोजावेगीतोप्रयोजनसेरहित विशिष्टज्ञानका संसारमेंलोपहो जाएगा। यातेविवेकज्ञानाऽभावसेपुरोवर्त्तिमेंप्रवृत्तिनहींहोसकतीकिन्तु विशिष्टज्ञानसेहीहोतीहै इसलिये अंत्यपक्षअसंगतहै। औरवह प्रतीतिहै

यहप्रथमपक्षयदिकहोतोतिसमेभीयहविचारणीयहै।क्या?वहप्रतीतिनिर्वि षयहोतीहै।अथवा।सविषयहोतीहै। प्रथमपक्ष तोनहींसंभवता।क्योंकि निर्विषयकोइज्ञाननहींहोता। औरयदिविषयसेविनाभीज्ञान मानोगेतो विज्ञानवादीबौधकामतप्राप्त होगा । औरविषयसहितवहप्रतीतिहैयह द्वितीयपक्षयदिकहो।तोतिसमेयह विचारकर्तव्यहै। क्या?तिसप्रतीतिका विषयसत्है अथवाअसत्है। अंत्यपक्षतोनहीं संभवता। क्योंकिवह प्रतीतिअपरोक्षहै। औरअसत्कीअपरोक्षप्रतीतिनहींहोसकती। और यदिप्रथमपक्षकहो।तोतिसमेयहविचारकर्तव्यहै। क्या?वहविषयपुरोवर्ति में सत्है अथवा अन्यस्थलमें सत् है पुरोवर्तिमें यदि सत्कहो तो उत्तरकालमे तिसको भ्रमरूपता तथा बाधयह दोनोंनहुए चाहिये॥ क्योंकि सत्पदार्थके यहदोनोंनहींहोते॥ और द्वितीयपक्ष मे यह विचारकरनेयोग्यहै ॥ वहअन्यस्थलक्या?बुद्धिहै॥ अथवाकांता करादिहै॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता।क्योंकिबुद्धिमेरजतहै इसमेप्रमाण काअभावहै।और "इदंरजतम्"॥इसप्रकारकारजतविषयकप्रत्यय अथवा "नेदंरजतम्" इसप्रकारकाबाधप्रत्ययभीरजतकीविज्ञानरूपताकोबोधन नहींकरता क्योंकिप्रथमप्रत्ययकोइदंताविशिष्टपुरोवर्त्तिविषयकरजतका बोधकपनाहै॥ औरबाधप्रत्ययभीइदंताविशिष्टपुरोवर्त्तिकोरजतसेविवे- चनकरताहै॥ औरवहरजतनित्यहै अथवाकार्यहै॥ प्रथमपक्षतोनहीं संभवता क्योंकि नित्यरजतकोस्थाईरूपहोनेकरक्षणक विज्ञानरूपता कैसेहोगी॥ औरकार्यरूपरजतकोबुद्धिसेअत्यंतअभिन्नमानेहुए तिन काकार्यकारणभावनहींसिद्धहोगा॥ और यदिमायाकेबलसे तिनका कार्यकारणभावमानोगे।तोस्वसिद्धांतकीहानिहोगी॥ यातेनित्यत्वऔ

से, अनुमानकरके आकाशादिप्रपंचनिष्ठअनिर्वचनीयता किसप्रकार तुमसिद्धकरोगेकिंतुनहींकरसक्के ॥ यातेप्रथमपक्षही स्वीकारकरने योग्यहै ॥ क्योंकिअनिर्वचनीयताको आश्रयणकरकेही अज्ञातसत्ता एकदेशीने सिद्धकरनीहै ॥ यहीअनिर्वचनीयताके सिद्धकरनेका प्रकरणमेंउपयोगहै इसलियेवहअनिर्वचनीयपना शुक्तिरजतादिकों में प्रथमप्रसिद्धहै ॥ इसप्रथमपक्षको - एकदेशीस्वीकार करता है ॥ यहांपरयहअर्थजाननेयोग्यहै ॥ " इदंरजतम् " यहप्रतीति रजतकेसंबंधाकारतथा इदंत्वविशिष्ट पुरोवर्तिकोविषय करनेवालीहै अथवानहीं ॥ यदिअंत्यपक्षकहोतो रजतार्थी पुरुषकी -सन्मुखदे शवर्ति पदार्थमेंप्रवृत्ति नहींहुईचाहिये ॥ क्योंकि प्रवृत्तिकेकारण रूपविशिष्टज्ञानका अभावहै॥ औरयदिकोईअख्यातिवादीऐसेकहे। कि यहांदोज्ञानहैंइदंतागोचरतो सामान्यज्ञानप्रत्यक्षरूपहै औररजतगोचर स्मृतिरूपज्ञानहै ॥ तिनदोनोंकेविवेकज्ञानाऽभावसेपुरोवर्ति विषयक प्रवृत्तिहोतीहै॥सोयहकथन अख्यातिवादीकानहींसंभवता।क्योंकिजैसे दोज्ञानोंकातथादोविषयोंका विवेकज्ञानाऽभाव प्रवृत्तिकीसामग्री तुमने मानीहै।तिसेउसीसमयमेंदोनोंज्ञानोंकेतथादोनोंविषयोंकेस्वरूपभिन्नहोने सेअविवेकज्ञानाऽभावनिवृत्तिकीसामग्रीभीविद्यमानहै॥तिससेनिवृत्तिभी अवश्यहुईचाहिये॥औरएककालमेंपरस्परविरुद्धप्रवृत्तितथानिवृत्तिनहीं देखीजाती। औरसर्वत्र अर्थात्सत्यरजतादिस्थलमेंभीविवेकज्ञानाऽभाव सेहीप्रवृत्तिहोजावेगीतोप्रयोजनसेरहित विशिष्टज्ञानका संसारमेंलोपहो जाएगा। यातेविवेकज्ञानाऽभावसेपुरोवर्त्तिमेंप्रवृत्तिनहींहोसकतीकिन्तु विशिष्टज्ञानसेहीहोतीहै इसलिये अंत्यपक्ष असंगतहै। औरवह प्रतीतिहै

यहप्रथमपक्षयदिकहोतोतिसमेभीयहविचारणीयहै।क्या?वहप्रतीतिनिर्वि षयहोतीहै।अथवा।सविषयहोतीहै। प्रथमपक्ष तोनहींसंभवता।क्योंकि निर्विषयकोईज्ञाननहींहोता। औरयदिविषयसेविनाभीज्ञान मानोगेतो विज्ञानवादीबौधकामतप्राप्त होगा । औरविषयसहितवहप्रतीतिहैयह द्वितीयपक्षयदिकहो।तोतिसमेयह विचारकर्तव्यहै। क्या?तिसप्रतीतिका विषयसत्है अथवाअसत्है। अंत्यपक्षतोनहीं संभवता। क्योंकिवह प्रतीतिअपरोक्षहै। औरअसत्कीअपरोक्षप्रतीतिनहींहोसकती। और यदिप्रथमपक्षकहो।तोतिसमेयहविचारकर्तव्यहै। क्या?वहविषयपुरोवर्ति में सत्है अथवा अन्यस्थलमें सत् है पुरोवर्त्तिमें यदि सत्कहो तो उत्तरकालमें तिसको भ्रमरूपता तथा बाधयह दोनोंनहुए चाहिये॥ क्योंकि सत्पदार्थके यहदोनोंनहींहोते॥ और द्वितीयपक्ष मे यह विचारकरनेयोग्यहै ॥ वहअन्यस्थलक्या?बुद्धिहै॥ अथवाकांता करादिहै॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता।क्योंकिबुद्धिमेरजतहै इसमेप्रमाण काअभावहै।और "इदंरजतम्"॥इसप्रकारकारजतविषयकप्रत्यय अथवा "नेदंरजतम्" इसप्रकारकाबाधप्रत्ययभीरजतकीविज्ञानरूपताकोबोधन नहींकरता क्योंकिप्रथमप्रत्ययकोइदंताविशिष्टपुरोवर्त्तिविषयकरजतका बोधकपनाहै॥ औरबाधप्रत्ययभीइदंताविशिष्टपुरोवर्त्तिकोरजतसेविवे- चनकरताहै॥ औरवहरजतनित्यहै अथवाकार्यहै॥ प्रथमपक्षतोनहीं संभवता क्योंकि नित्यरजतकोस्थाईरूपहोनेकरक्षणिक विज्ञानरूपता कैसेहोगी॥ औरकार्यरूपरजतकोबुद्धिसेअत्यंतअभिन्नमानेहुए तिन काकार्यकारणभावनहींसिद्धहोगा॥ और यदिमायाकेबलसे तिनका कार्यकारणभावमानोगे।तोस्वसिद्धांतकीहानिहोगी॥ यातेनित्यत्वऔ

कार्यत्वरूपताकरबुद्धिरूपरजतकानिरूपणनहींहोसकता ॥ औरकांता करादिदेशमेंवहरजतसत्है ॥ यहद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता ॥ क्योंकि कांताकरादिगततिसरजतकासन्मुखशुक्तिदेशमेंग्रहणनहींहोसकता ॥ व्यवधानहोनेसेनेत्रभीतिसकाग्राहकनहीं ॥ औरयदिदोषकेवलसेतिस काग्रहणमानेतोक्या?दोषमात्रसेउसकाग्रहणहोताहै॥ अथवादोषसह-कृतनेत्रसेग्रहणहोताहै ॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवताक्योंकिअंधपुरुषको भीकांताकरादिगतरजतकाग्रहणप्राप्तहोगा॥औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभ-वता ॥ क्योंकिमध्यदेशवर्तिऔरपदार्थोंकाभीनेत्रइन्द्रियसेग्रहणहुआ चाहिये ॥ इसप्रकारअख्यातिवादादिकोंकाभ्रमस्थल मेंअसंभवहोनेसे पुरोवर्त्तिशुक्तिदेशमेंवहरजतनसत्हैनअसत्है औरपरस्परविरोधहोनेसे सत्असत्उभेरूपभीवहरजतनहीं॥किन्तुसत्असत्सेविलक्षण अनिर्वच नीयवहरजतहै॥यहअर्थसिद्धहुआ॥यातेभ्रमकाविषयअनिर्वचनीयहै। इसरीतिसेतिसदृष्टांतकोआश्रयणकरकेआकाशादिप्रपंचनिष्ठभीअनिर्व-चनीयपनाअंगीकारकरकेअज्ञातसत्ता सिद्धकरनेयोग्यहै ॥ यहस्थित हुआ ॥ इसकोअवसिद्धांतीदूषितकरताहै ॥ हेवादिन्यदितुमपूर्वउक्त अर्थकोस्वीकारकरतेहोतोदृष्टांतऔदार्ष्टांतकी विषमतादूर करनेकेअर्थ तिसशुक्तिरजतमेंअनिर्वचनीयताकेउपपादनसेंजैसीज्ञातसत्तामानीहै॥ तैसीहीसत्ताआकाशादिप्रपंचनिष्ठभीमाननेयोग्यहै ॥ ऐसेमानेहुएयह विचारकरनेयोग्यहै॥ क्या?आकाशादिकोंकीअज्ञातसत्ताहै॥वातिनकी ज्ञातहीसत्ताहै ॥ अन्त्यपक्षमेंतोविरोधकाअभावहै॥ औरयदिद्वितीय पक्षकहोगेअर्थात्आकाशादिकोंमेंतुमअज्ञातसत्ताकीकल्पनाकरोगे ॥ तोदृष्टांतदार्ष्टांतमेंसमीचीनरूपताकरकैसेउपसंहारकोप्राप्तहोगा॥क्योंकि

दोनोंका विरोधहै। अब अज्ञातसत्त्वके साधकतर्कको अनुवाद करके सिद्धांतीदूषित करताहै। औरपुत्रादिक साधन सामग्रीकेगृहसे बाहर निकसेहुएअदर्शनमात्रसेनाशनिश्चयहोनेकर रुदनादिकोंकीप्राप्तिरूप दोषजोवादीनेपूर्वकहाथावहभीनहींसंभवता। क्योंकिबाधकप्रमाणकी प्रवृत्तिकेअभावसेतहांअभावनिश्चयकाअनंगीकारहै। अर्थयह।जैसे "इदंरजतम्"यहप्रथमभ्रमज्ञानहोताहै॥पश्चात्॥नेदंरजतम्।इसबाधकप्र त्ययसेरजतकाअभावनिश्चयहोताहै।तैसेयहांबाधकप्रत्ययकेनप्रवृत्तहोनेकर तिनपुत्रादिकोंकाअभावनिश्चयनहींहोता।इसीसेरुदनादिकोंकीप्राप्ति भीनहींहोती। यातेस्वप्नकीन्याईसर्वव्यवहारकासंभवहै। और

❋जाग्राऽवस्थद्वैतं ज्ञातमेवसद्भवितुमर्हति व्यवह्रिय माणत्वात् स्वप्नप्रपंचवत्❋

इसअनुमानसेभीआकाशादिकप्रपंचकीज्ञातसत्ताहीसिद्धहोती है। यद्यपिपूर्वइसअनुमानमे "बाधितत्व" उपाधिका निरूपणकिया था। तथापिवहउपाधिसाध्यकेसाथव्यापकनहोनेकरदूषितहै।अर्थात् रजतादिभ्रमकालमेअथवास्वप्नकालमे जाग्रत्अवस्थाकीन्याईबाधका अभावहोनेसे पूर्वउक्तउपाधि साध्यकेसाथ अव्यापकहै। औरबाधक प्रमाणकीप्रवृत्तिहुएबाधकालमेतोस्वप्नरूपधर्मीकाहीअभावहै॥ इसीसे उपाधिऔसाध्यकीव्याप्तिकाग्रहणरूपव्यवहारका अभावहोनेसेउपाधि कोसाध्यकेसाथव्यापकपनेमेप्रमाणकाहीअभावहै॥ औरवृद्धोंकेत्रिविध सत्त्वकेअंगीकरणकीअनुपपत्ति अज्ञातसत्ताकाकल्पिकहै यहकथनभी नहींसंभवता॥ क्योंकितिनकाअंगीकारअन्यप्रकारसेजनमकताहैसोई दिखलातेहैं॥सर्वद्वैतनिष्ठप्रातिभासिकसत्ताका तिन्होंने न त्यागकरके

भ्रांतपुरुषोंकोसंतोषमात्र करायाहै॥ इसीसे तिनके अंगीकारकेसाथ विरोधनहीं ॥ भावयह ॥ प्रतिभासिकसत्ता प्रपंचनिष्टमानेहुएभी भ्रांतपुरुषोंकी बुद्धिकरसिद्धजोजाग्रत् स्वप्नकी अवांतरविषमतातिसको आश्रयणकरकेव्यवहारिकसत्ताकेकथनसेविरोधका अभावहै॥११॥ पूर्व अर्थकेसंग्रहकारश्लोक ॥

स्वप्नवद्दृष्टिसृष्टः सन्सर्वव्यवहृतिक्षमः ।
प्रपंचोनाऽत्रदोषो ऽस्तितस्यपरिहृतत्वतः ॥ १ ॥

दो० ज्ञातसत्त्वप्रपंचजो सुपनेसमहै जोइ ॥
सबविहार समर्थसोयामें दोषनकोइ ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथदृष्टिसमकालीनदार्ष्टिसृष्टिवादमेंप्रतिज्ञानसृष्टि काभेदऔतिसमेंप्रत्यभिज्ञाके विरोधकीशंकाका समाधाननिरूपण ॥

आत्माकाअज्ञानदेवादिदेहाकारसेतथातिनकासहकारीब्रह्मांडाकारसेऔर तिसतिसपदार्थगोचर वृत्याकाररूपताकरपरिणामकोप्राप्तहोताहै॥ इस पक्षमेंवृत्तिसमकालीनहीसोसोपदार्थहै॥ वृत्तिसेपूर्वऔवृत्तिसेपश्चात वहपदार्थनहीवर्तते ॥ वृत्तिसमकालीनज्ञातहीघटादिक पदार्थहै॥ यहअर्थपूर्वनिरूपणकिया ॥ तिसमेंयहविचारकियाजाताहै ॥ तिस तिसपदार्थगोचरजो वृत्तिहैवहबाधसेरहित अनुवृत्तिहोतीहै ॥ अथवा शीघ्रविनाशहोजातीहै॥ इनमेप्रथमपक्षनहीसंभवता ॥ क्योंकिएकतो सुषुप्तिकाअभावप्राप्तहोगा॥ औरदूसरीवृत्तिभी नहींउत्पन्नहोगी ॥ तात्पर्ययहहै । किसीविशेषज्ञानके विद्यमानहुए सकलविशेषज्ञानोंकी उपरमअवस्थारूप सुषुप्तिकाअसंभवहै । औरवृत्तिज्ञानोंकी "अयौग

पद्य" अर्थात्एककालमेंनहोनास्वीकारहै । यदिएकवृत्तिकेविद्यमान कालमेंदूसरीवृत्तिमानोगेतोज्ञानोंको"यौगपद्य"होनेसेवृद्धोंकेअंगीकारके साथविरोधहोगा। औरद्वितीयपक्षभीअसंगतहै। क्योंकिवृत्तिकेसमान हीयोगक्षेमवालेप्रपंचकाभीशीघ्रविनाशिपनाहोगा।औरज्ञानकीउत्पत्ति सेंद्वैतप्रपंचकीउत्पत्तिहोनेकरज्ञानकेभेदहुएप्रपंचकाभीभेदप्रसंगहोगा। औरयदिइसमेंअर्थात् मतिज्ञानप्रपंचकेभेदमें सिद्धांतीदोषाभावकथन करेतोवहनहींसंभवता । क्योंकिप्रत्यभिज्ञाकाविरोध प्राप्तहोताहैसोई दिखलाते हैं ।

मू०। द्वैतभेदेप्रतिज्ञानं प्रत्यभिज्ञाकथंवद ।
दशानांयुगपत्सर्पभ्रमे यद्वत्तथैवसा ॥ १२ ॥

अडिल प्र० मतिज्ञानमेंद्वैतभेदजोराखीए ।
मतिभिज्ञाहुइ तामेंकिहविध भाषीए ॥
उ० ॥ एककालमेंदशको जहविधसर्पभ्रम ।
तामेंजसप्रतिभिज्ञातस विधइहांक्रम ॥ १२ ।

टी०।सोईयहघटहैसोईयहगृहहै।इत्यादिकप्रत्यभिज्ञा ज्ञानज्ञानप्रति घटादिकविषयोंकाभेदमानेहुएनहींहुईचाहिये।जिसकारणसेप्रत्यभिज्ञाका विषयजोघटादिकोंकाअभेदतिसकाअभावहै । औरवहप्रत्यभिज्ञासर्वके अनुभवसिद्धहै तिसकालोपनहींसंभवता ।।समाधान।। हेवादिन्एकत्व रूपविषयकेअभावसे क्या?प्रत्यभिज्ञाका स्वरूपहीनहींसिद्धहोतायहतुम कहतेहो।अथवा।तिसमेंप्रामाण्यका असंभवहैयहकहतेहो।प्रथमपक्षतो नहींसंभवता।।क्योंकिजैसेदशपुरुषोंको"युगपत्"कहियेएककालमेंरज्जु विषयकसर्पभ्रमहोताहै तहांएकसर्परूपविषयके अभावहुएभीजैसेप्रत्य

भिज्ञाहोतीहै । तैसेयहांप्रकरणमेंभीजानो । कालांतरमेंहोनेवालेभिन्न भिन्नसर्पभ्रममें प्रत्यभिज्ञाकी प्राप्तिहीनहींहोसक्ती । इसलियेयहांमूल कारिकामें"युगपत्"यहपदकथनकियाहै॥ और"यहघटहै"इत्यादिक प्रमास्थलमेंवेदांतमतमेंप्रतिज्ञानद्वैतकाभेदहोनेसे विषयकाभीभेदमाना है औरअन्यवादियोंके मतमेंविषयकाभेदनहींमाना॥इसप्रकारकाविवाद होनेसे "मूलकारिकामें "भ्रमे" यहपदकथनकियाहै ॥ क्योंकिआगे कथनकरनीजोरीतिहै ॥ तिससे भ्रमस्थलमें विषयके भेदका विवाद नहीं है ॥ यहां पर यहकथन होताहै ॥ देवदत्त पुरुषके नेत्र इन्द्रियकारज्जुरूपअधिष्ठानमेसंबंधहुएदोषकेवशसेरज्जुकेविशेषरूपको नग्रहणकरनेवाली इदमाकारअंतःकरणकीवृत्ति उत्पन्नहोतीहै ॥ तिसवृत्तिके उत्पन्नहुए पूर्वदृष्टसजातीयवस्तुके संस्कारकेवशसेरज्जु अवच्छिन्नइदमाकार देवदत्तकेअंतःकरणकी जोवृत्तिहै ॥ तिसमे प्रतिबिंबितचैतन्यनिष्ठ अविद्याक्षोभकोप्राप्तहुई सर्पऔतिसकाज्ञान रूपताकरपरिणामको प्राप्तहोतीहै ॥ औरवहउत्पन्नहुआसर्प जिसके अंतःकरणकीवृत्तिमेंप्रतिबिंबितचैतन्यनिष्ठअविद्याकापरिणामहै। तिसी केसन्मुखउत्पन्नहोताहै॥ औरतिसीकरजानाजाताहै॥क्योंकिसर्पाकार वृत्तिकोभीतिसीपुरुषकेअंतःकरणकी वृत्त्युपहितचैतन्यनिष्ठअविद्याका कार्य्यपनाहै ॥ इसदेवदत्तकेदृष्टांतसे मैत्रादिनवपुरुषोंको भिन्नभिन्न सर्पभ्रमइसीरीतिसे जानलेना ॥ इसप्रकारभ्रमको प्रतिपुरुषअविद्याका परिणामहोनेसेदशपुरुषोंको रज्जुरूपअधिष्ठानमेंएककालमेंहीसर्पभ्रमके उदयहुएदशसर्पऔरदशही तिनकेज्ञानउत्पन्नहोतेहैं ॥ तिसप्रकारएक सर्पकेअभावहुएभी जैसेतिनको "एकहीसर्पहमसबने अनुभवकियाहै

यहप्रत्यभिज्ञाजैसेस्वरूपसे उत्पन्नहोतीहै तैसेदार्ष्टांतमेंभीघटादिविषय की एकतासेविनाभी "सोईयहघटादिकहै" इसप्रत्यभिज्ञाकास्वरूपबन सक्ताहै ॥ औरविषयकेअभावहुए प्रमापनाप्रत्यभिज्ञा निष्ठनहींहोगा यहद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता ॥ क्योंकिजैसेविषयके अभावहुएभी दृष्टांतमें भ्रमरूपप्रत्यभिज्ञा होतीहै ॥ तैसेदार्ष्टांतमेंभी भ्रमरूप प्रतिभिज्ञाहोतीहै ॥ इति ॥ अबविस्तारपूर्वक श्लोककीव्याख्याकरते हैं ॥ शंका ॥ पूर्वउक्तरीतिसे अज्ञातसत्ताकप्रपंचकेनअंगीकारकरेहुए सुषुप्तिसेजागेहुएपुरुषको "सोईयह प्रपंचहै" ऐसीप्रत्यभिज्ञा होतीहैसो नहींहुईचाहिये॥ क्योंकिआपकेमतमेंसुषुप्तिसेप्रथमप्रपंचकातथासुषुप्ति सेउत्तरप्रपंचकाभेदहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् यहतुह्मारीशंकानहीं संभवती । क्योंकिविशेषदर्शनकेअभावकाकारणजोमंदअंधकारतिसमे वर्तमानजोएकहीरज्जुरूपअधिष्ठानहै । तिसमेदशपुरुषोंको एककाल मेंसर्पभ्रमहोताहै । तिससेभयभीतहोकरभागतेहुएतिनपुरुषोंकापरस्पर यहसंवादहोताहै।"जोसर्पतुमनेअनुभवकियावहीहमनेभीदेखाहै"।यहप्रत्य भिज्ञजैसेभ्रमरूप तिनकोहोतीहै। तैसेयहांदार्ष्टांतमेभी जानकर संतोष करनेयोग्यहै।।शंका।।तिनदशपुरुषोंकोभीवह"त्यभिज्ञाएकहीसर्पविषय कक्योंनहो।।समाधान।।हेवादिन्तिन पुरुषोंनेभिन्नभिन्नहीसर्पकाअनु- भवकियाहैएकका नहीं।अर्थयह। देवदत्तपुरुषकीरज्जुविषयकअंतस्कर णकीइदमाकारवृत्तिमेप्रतिबिंबितचैतन्यनिष्ठअविद्याकापरिणामरूपभ्रमकर सिद्धभिन्नहीसर्पदेवदत्तने अनुभवकियाहै। सर्वपुरुषोंनेएकही सर्पनहीं अनुभवकिया।यातेवहप्रत्यभिज्ञाभ्रमरूपहै ।।शंका।। जैसेएकहीघटको सर्वजनअनुभवकरतेहैं । तैसेभ्रमसिद्धविषयकोभीसर्वही जन अनुभव

भिज्ञाहोतीहै । तैसेयहांपूकरणमेंभीजानो । कालांतरमेंहोनेवालेभिन्न भिन्नसर्पभ्रममें प्रत्यभिज्ञाकी प्राप्तिहीनहींहोसक्ती । इसलियेयहांमूल कारिकामें"युगपत्"यहपदकथनकियाहै ॥ और"यहघटहै"इत्यादिक भ्रमास्थलमेंवेदांतमतमेंमतिज्ञान द्वैतकाभेदहोनेसे विषयकाभीभेदमाना है औरअन्यवादियोंके मतमेंविषयकाभेदनहींमाना॥इसप्रकारकाविवाद होनेसे "मूलकारिकामें "भ्रमे" यहपदकथनकियाहै ॥ क्योंकिआगे कथनकरनीजोरीतिहै ॥ तिससे भ्रमस्थलमें विषयके भेदका विवाद नहीं है ॥ यहां पर यहकथन होताहै ॥ देवदत्त पुरुषके नेत्र इन्द्रियकारज्जुरूपअधिष्ठानसेसंबंधहुएदोषकेवशसेरज्जुकेविशेषरूपको नग्रहणकरनेवाली इदमाकारअंतस्करणकीवृत्ति उत्पन्नहोतीहै ॥ तिसवृत्तिके उत्पन्नहुए पूर्वदृष्टसजातीयवस्तुके संस्कारकेवशसेरज्जु अवच्छिन्नइदमाकार देवदत्तकेअंतस्करणकी जोवृत्तिहै ॥ तिसमें प्रतिबिंबितचैतन्यनिष्ठ अविद्याक्षोभकोप्राप्तहुई सर्पऔतिसकाज्ञान रूपताकरपरिणामको प्राप्तहोतीहै ॥ औरवहउत्पन्नहुआसर्प जिसके अंतस्करणकीवृत्तिमेंप्रतिबिंबितचैतन्यनिष्ठअविद्याकापरिणामहै। तिसी केसन्मुखउत्पन्नहोताहै॥ औरतिसीकरजानाजाताहै॥क्योंकिसर्पाकार वृत्तिकोभीतिसीपुरुषकेअंतस्करण की वृत्त्युपहितचैतन्यनिष्ठअविद्याका कार्य्यपनाहै ॥ इसदेवदत्तकेदृष्टांतसे मैत्रादिनवपुरुषोंको भिन्नभिन्न सर्पभ्रमइसीरीतिसे जानलेना ॥ इसप्रकारभ्रमको प्रतिपुरुषअविद्याका परिणामहोनेसेदशपुरुषोंको रज्जुरूपअधिष्ठानमेंएककालमेंहीसर्पभ्रमके उदयहुएदशसर्पऔरदशही तिनकेज्ञानउत्पन्नहोतेहैं ॥ तिसप्रकारएक सर्पकेअभावहुएभी जैसेतिनको "एकहीसर्पहमसबने अनुभवकियाहै

यहप्रत्यभिज्ञाजैसेस्वरूपसे उत्पन्नहोतीहै तैसेदार्ष्टांतमेंभीघटादिविषय की एकतासेविनाभी "सोईयहघटादिकहै" इसप्रत्यभिज्ञाकास्वरूपबन सक्ताहै ॥ औरविषयकेअभावहुए प्रमापनाप्रत्यभिज्ञा निष्ठनहींहोगा यहद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता ॥ क्योंकिजैसेविषयके अभावहुएभी दृष्टांतमें भ्रमरूपप्रत्यभिज्ञा होतीहै ॥ तैसेदार्ष्टांतमेंभी भ्रमरूप प्रतिभिज्ञाहोतीहै ॥ इति ॥ अबविस्तारपूर्वक श्लोककीव्याख्याकरते हैं ॥ शंका ॥ पूर्वउक्तरीतिसे अज्ञातसत्ताकप्रपंचकेनअंगीकारकरेहुए सुषुप्तिसेजागेहुएपुरुषको "सोईयह प्रपंचहै" ऐसीप्रत्यभिज्ञा होतीहैसो नहींहुईचाहिये॥ क्योंकिआपकेमतमेंसुषुप्तिसेप्रथमप्रपंचकातथासुषुप्ति सेउत्तरप्रपंचकाभेदहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् यहतुह्मारीशंकानहीं संभवती । क्योंकिविशेषदर्शनकेअभावकाकारणजोमंद अंधकारतिसमे वर्तमानजोएकहीरज्जुरूपअधिष्ठानहै । तिसमेदशपुरुषोंको एककाल मेसर्पभ्रमहोताहै । तिससेभयभीतहोकरभागतेहुएतिनपुरुषोंकापरस्पर यहसंवादहोताहै। "जोसर्पतुमनेअनुभवकियावहीहमनेभीदेखाहै"।यहप्रत्य भिज्ञजैसेभ्रमरूप तिनकोहोतीहै। तैसेयहांदार्ष्टांतमेभी जानकर संतोष करनेयोग्यहै॥शंका॥तिनदशपुरुषोंकोभीवह"त्यभिज्ञाएकहीसर्पविषय कस्योंनहो॥समाधान॥हेवादिन्तिन पुरुषोंनेभिन्नभिन्नहीसर्पका अनु- भवकियाहैएककानहीं।अर्थयह। देवदत्तपुरुषकीरज्जुविषयकअंतस्कर णकीइदमाकारवृत्तिमेप्रतिबिंबितचेतन्यनिष्ठअविद्याकापरिणामरूपभ्रमकर सिद्धभिन्नहीसर्पदेवदत्तने अनुभवकियाहै। सर्वपुरुषोंनेएकही सर्पनहीं अनुभवकिया।यातेवहप्रत्यभिज्ञाभ्रमरूपहै ॥शंका॥ जैसेएकहीघटको सर्वजनअनुभवकरतेहैं । तैसेभ्रमसिद्धविषयकोभीसर्वही जन अनुभव

करलेंगे। इसमेकौनबाधकहै ॥समाधान॥ हेवादिन् अन्यपुरुषकेभ्रमकर सिद्धविषयकाअन्यपुरुषकोज्ञाननहींहोसकता । क्योंकिदेवदत्तकेअंतःकरणकीवृत्तिमेप्रतिबिंबतचैतन्यनिष्ठअविद्याकापरिणामरूपजोभ्रमहै। वह देवदत्तसेभिन्नयज्ञदत्तकेअंतःकरणकी वृत्तिसेजाननाकठिनहैयाते अन्यकेभ्रमकाविषयअन्यकोप्रत्यक्षनहींहोसकता ॥ शंका ॥ पूर्वउक्त युक्तिसेसर्पादिकभ्रममे यदिविषयकाभेदहै॥ तोसर्पादिकोंकेअभेदका अनुभवकैसेहोताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्दशपुरुषोंकेभ्रमकरसिद्ध दशसर्पोंको अत्यंतसादृश्यहोनेकरपरस्परतिनकाभेद ग्रहणनहींहोता इसीसेतहांअभेदविषयकप्रत्यभिज्ञाहोतीहै ॥ एकहीसर्पहम सबनेअनुभवकियाहै॥ऐसेहीजाग्रत् अवस्थामेनानाप्रकारकेप्रपंचकोयहपुरुषअनुभवकरकेसुषुप्तिअवस्थाकोप्राप्तहोताहै।औरपुनःतिससेउठकरजोयहप्रपंचका अनुभवहोताहै।वहअनुभवदूसरेप्रपंचकोहीविषयकरताहै।और"सोईयहप्रपंचहै"ऐसीप्रत्यभिज्ञातोदोनोंप्रपंचोंकोअत्यंतसादृश्यहोनेकरतिनकाभेद नग्रहणहोनेसेभ्रमरूपहोतीहै॥यद्यपिजाग्रत् अवस्थामेही वृत्तिकोशीघ्र विनाशीहोनेकर तिसके समानयोग्यक्षेमवाले प्रपंचकाभी नाशसिद्ध करनाउचितथाअवस्थाओंमेप्रपंचकाभेदसिद्धकरनेसेक्याप्रयोजनहै ॥ तथापिभिक्षुपादप्रसारणन्यायकोआश्रयणकरके अवस्थाओंमेप्रपंचका भेदसिद्धकियाहै ॥ पूर्वउक्तन्यायका यहअर्थहै ॥ जैसेकिसीभिक्षुको जबकिसीधनिककेगृहमेप्रवेशकाअवसरमिलजावे।तोपादप्रसारणअर्थात् अनेकपदार्थउससेमांगलेताहै तैसेहीअवस्थाओंमेप्रथमजबप्रपंचकाभेद सिद्धहोजाएगा तोजाग्रतअवस्थामेप्रपंचकाभेदज्ञानज्ञानप्रतिभीसिद्ध करसकतेहैं ॥ यातेपूर्वकथनउचितहीहै ॥ इति ॥

ॐ शंकापूर्वकसुषुप्तिमेंप्रपंचाऽभावकीबोधकता श्रुतिकोदेवताधिकरणन्यायकीरीतिसेनिरूपण ॐ

शंका ॥ हेसिद्धांतिन् प्रत्यभिज्ञातो हमदोनोंकोस्वीकारहै ॥ परन्तुतिसकोभ्रमरूपतायुक्तनहीं ॥ क्योंकिबाधकप्रमाणकाअभावहै। विपयकेबाधबिनाज्ञानको भ्रमरूपतानहींसंभवती।।औरदशसर्पोकीप्रत्य भिज्ञामेंकथनकीहुईयुक्तिभीतिसकाबाधकनहीं ॥ क्योंकि मूलप्रमाण केअभावसेयुक्तिको आभासरूपताहै ॥ यातेप्रत्यभिज्ञाको प्रमाणरूप होनेसेअवस्थाओंमेंप्रपंचकाभेदनहीं सिद्धहोसक्ता। किन्तु तिनमेंभी प्रपंचकाअभेदअनुभवहोनेसे प्रपंचकाएकत्वही सिद्धहोताहै ॥ इसी अभिप्राय से सुषुप्ति मे प्रपंचलीन होजाताहै इसमेकोईप्रमाणनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन्साक्षात्श्रुतिवचनहीसुषुप्तिमेंप्रपंचकेविलयहोने मेंप्रमाणहै ॥ सोदिखलातेहैं ॥

ॐपश्यन्वैतत्ॐ

(बृ० उ० अ० ६ ब्रा० ३।२३)

अ० ॥ सुषुप्तिअवस्थामेंभी आत्माद्रष्टाहीहै॥ इसकथनसेयह आशंकाहोतीहै ॥व्यापारवालेचक्षुआदिकरणोंकासुषुप्तिमेंअभावहोने सेहमयहनिश्चयकरतेहैं ॥ जोसुषुप्तिमेंआत्माद्रष्टानहीं किन्तुजडहै ॥ इसशंकाकाआपहीश्रुतिसमाधानकरतीहै ॥

ॐ नहिद्रष्टुर्दृष्टेर्विपरिलोपोविद्यतेऽविनाशित्वात् ॐ

बृ० उ० अ० ६ ब्रा० ३।२३ ॥

अ० ॥ "द्रष्टुः" कहियेआत्माको "अविनाशित्वात्" कहिये

मू० ॥ सर्पभ्रमाद्विशेषोऽस्तिजाग्रद्बोधेऽन्यथाकथम् । इन्द्रियादेरुपादानंतदभावेयतोनधीः १३ ॥

हरगीतका० ॥ सर्पभ्रमतेहै विलक्षण बोधजाग्रतजानीए ॥ होइन्द्रियनकोग्रहणकैसेऐसजोनहिमानिए ॥ इन्द्रीनके अभावतेनहीं बोधजाग्रतहोकही॥याहेतुतेलखइन्द्रियनकोबोधप्रतिकारणसही॥१४॥

टी० ॥ हेसिद्धांतिन् सर्पादिकोंको अपनेअपने भ्रमकर सिद्ध होनेकर प्रातिभासिकपनाहो ॥ ॥ परन्तुजाग्रतादि प्रपंचकोतोभ्रांति कर सिद्धपना नहीं क्योंकि वह इन्द्रिय जन्य प्रमाका विषयहै ॥ यदि इन्द्रिय जन्य प्रमा की अविषयता प्रपंच निष्ठ मानोगे तो घटादि प्रपंच के ज्ञान अर्थ इन्द्रियादिकों का ग्रहण कोईकैसे करेगा ॥

शंका ॥ हेवादिन् भ्रमसिद्धप्रपंचहै ऐसेकहनेवाले वादीकेप्रति इन्द्रियादिकोंकोप्रपंचज्ञानकेप्रतिकारणपनाहीअसिद्धहै ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् इन्द्रियोंके अभावहुए जिस कारणसे प्रपंच ज्ञाननहींहो सक्ता इसीसे इन्द्रियकारणहैं ॥ यहांयहअनुमानजानना ।

❀जाग्रतादिप्रपंचज्ञानं भ्रमज्ञानाद्विलक्षणं ऐन्द्रियकत्वात् यन्नैवं तन्नैवं यथाभ्रमज्ञानं ❀

अ० ॥ जाग्रतादिप्रपंचकाजोज्ञानहै ।सोभ्रमज्ञानसेविलक्षणहै। इन्द्रियजन्यज्ञानहोनेसे ॥ जोजोज्ञानभ्रमज्ञानसे विलक्षणनहींहै ॥ सोसोज्ञानइन्द्रियजन्यभीनहीं है जैसेरज्जुसर्पादि भ्रमज्ञानहै ॥ इति ॥ अबपूर्वकथनकियेहुए अर्थकोविस्तारसे निरूपणकरतेहैं ॥ पूर्वउक्त युक्तिसेप्रपंचको भ्रममात्रशरीरहोनेकर प्रातीतिकसत्ताके सिद्धहुएभी रज्जुसर्पकेज्ञानसे आकाशादिप्रपंचकेज्ञानमें कोईकविलक्षणताहै ॥

शंका ॥ हेवादिन् प्रपंचज्ञानमें अविद्याजन्यत्व औअर्थगोचरत्वरज्जु सर्पज्ञानके तुल्यहोनेसेकैसे तिसमेंरज्जुसर्पज्ञानसे विलक्षणताहै ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् कारणकृत तथा विषयकृत प्रपंचज्ञान में रज्जुसर्पज्ञानसे विलक्षणता है ॥ तैसे ही दिखलाते हैं ॥ प्रपंच ज्ञान में प्रत्यक्षादि प्रमाणको कारणताहै और अविद्याको कारणताकाअभावहै ॥ यही सर्पज्ञानसे प्रपंचज्ञानमे विलक्षणता है औरसर्पज्ञानमेंअविद्याकोकारणताहै। औरप्रत्यक्षादिप्रमाणकोकारणता नहीं॥यहीप्रपंचज्ञानसे सर्पज्ञानमेंविलक्षणताहै ॥ इसप्रकारतिनदोनों ज्ञानोंमेंकारणकृतविशेषताहै॥अबतिनदोनोंज्ञानोमेंविषयकृतविलक्षणता कहतेहैं ॥ जैसेअज्ञातसत्ताकअर्थको इन्द्रियादिजन्यज्ञानविषयकरताहै तैसेहीअर्थको अविद्या जन्यभ्रमभी विषय करताहै यहनहीं संभवता असंभवमें हेतुकहतेहैं ॥ ज्ञानमात्रशरीरहोनेकर भ्रमसेपूर्वविषयकी सत्यताका अभावहै ॥ औरभ्रमकेविषयसे इन्द्रियादिजन्यज्ञानकेविषय मेंविशेषताहै॥ क्योंकिइन्द्रियादिकोंसे उत्पन्नहुएज्ञानकोसन्निकर्षादि जन्यहोनेकरज्ञानसे पूर्वविषयकीसत्ता अवश्यकहनेयोग्यहै । अर्थयह प्रत्यक्षज्ञानकोइन्द्रियऔ अर्थ केसन्निकर्षजन्यहोनेसे तिसज्ञानसेप्रथम तिसकाकारणरूपताकरसंन्निकर्षकीसिद्धिअवश्यकहनेयोग्यहै। औरतिस सन्निकर्षकाआधाररूपताकरज्ञानसे पूर्वचक्षुकी न्याईविषयकीसत्ताभी अवश्यकहनेयोग्यहै ॥ औरअनुमितिरूपज्ञानको लिंगज्ञानजन्यत्व कानियमहै॥औरलिंगको पक्षतथाव्याप्तिकरघटितपनाहै औरपक्षतथा व्याप्तिकोसाध्यकर घटितपनाहै तिसीसे अनुमितिज्ञानसेप्रथम साध्य कीसत्ताअवश्य अन्वेषणकरनेयोग्यहै ॥ औरयदिसिद्धांतीऐसेकहे ।

❋ अयमाम्रवृक्षः फलवान्भविष्यति । आमूत्वेसति वर्द्धमानत्वात् ॥ संप्रतिपन्नाम्रवत् ॥ ❋

अ० ॥ यहआम्रकावृक्ष फलवाला होगा आम्र हुआवर्द्धमान् होनेसे ॥ प्रसिद्धआम्रकीन्याई ॥ इसभविष्यत् अर्थकोविषयकरने वालीअनुमितिमे व्यभिचारहै ॥ क्योंकिअर्थसे विनाभीज्ञान होगया सोयहकथनभीनहींसंभवा॥क्योंकितिसअनुमानमेंभीभविष्यत्अर्थको अनुमितिसेप्रथमही विद्यमानताहै अर्थात् विद्यमान प्रागभावकाप्रति योगिरूपताकर अनुमितिसे पूर्वभविष्यत्अर्थकी विद्यमानताहै॥याते अनुमितिसेपूर्व भविष्यत् अर्थ नहींहै यह कथन असंगत है ॥ और भविष्यत्अर्थकाअभाव मानेहुएवर्तमान अर्थवाली अनुमितिकीही प्राप्तिहोगी तिसकर भविष्यत्अर्थकअनुमितिका लोप होजाएगा ॥ इसप्रकारअनुमितिसेपूर्व अर्थको विद्यमान होनेकर भविष्यत् अर्थक अनुमितिमेकैसे व्यभिचार होसकताहै ॥ इति ॥ औरशाब्द ज्ञानको शब्दऔअर्थकेवाच्यवाचकरूपसंबंधज्ञानकर जन्यहोनेसे शब्दकर्णक ज्ञानसेप्रथमहीअर्थकीसत्ताभीऊहाकरनेयोग्यहै ॥ यातेइन्द्रियादिजन्य ज्ञानसेप्रथमविषयकीसत्ताअवश्यकहनेयोग्यहै॥ यहीभ्रमज्ञानसेप्रपंच ज्ञानमेंविलक्षणताहै॥ औरअन्वयव्यतिरेकरूपप्रमाणकरकेइन्द्रियादि कोंकोप्रपंचज्ञानकेप्रतिकारणता सिद्धहोनेसे प्रपंचमिथ्यात्ववादीनेभी तिनकाकार्य कारणभावअवश्य अंगीकार कियाचाहिये ॥ शंका ॥ हेवादिन् प्रपंचज्ञानमे भ्रमज्ञानसे विलक्षणता यद्यपिहो तथापिइससे तुम्हाराकौनइष्टसिद्धहुआ ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् पूर्वउक्तयुक्ति सेज्ञानसेपूर्वअर्थकी सत्ता अवश्यस्वीकार करनेयोग्यहोनेसे प्रपंचकी

अज्ञातसत्ताअवश्यस्वीकारकरनेयोग्यहै ॥ अन्यथाभ्रमसेविलक्षणता नहींसंभवैगी ॥ अर्थयह प्रपंचज्ञानकी उत्पत्तिसेप्रथम प्रपंचरूपविषय कीसत्तानमानेहुएप्रपंचरूपविषयतथा इन्द्रियकेसन्निकर्षकोज्ञानके प्रति कारणतानहींहोगी किन्तुअविद्याकारणकल्पमात्रता प्रपंचमेप्राप्तहोने करभ्रमरूपताहीहोगी। भ्रमसेविलक्षणतानहींसिद्धहोगी ॥ याते प्रपंच कीअज्ञातसत्ताअवश्यमाननीचाहियेयहीहमाराइष्टसिद्धहुआ१३॥इति

❋पूर्वअर्थकेअनुवादपूर्वकइन्द्रियादिकोंकोप्रपंचज्ञान केप्रतिकारणताकाखंडन ❋

समाधान॥ हेवादिन्आकाशादि रूपप्रपंचज्ञानकेप्रति इन्द्रियादिकोंको कारणताहोनेकर भ्रमज्ञानसे तिसकीविलक्षणताहै तिसविलक्षणताके उपपादनअर्थप्रपंचकीअज्ञातसत्ता माननेयोग्यहै ॥ यहअर्थतुमनेपूर्व निरूपणकिया।सोनहींसंभवता ॥ क्योंकि

मू० ॥ इन्द्रियाणांकारणत्वेभवेच्चोद्यंतदातव ।
स्वप्नभ्रमेयथातेपामन्वयव्यतिरेकधीः ॥१४॥

वसंततिलकका० ॥ इन्द्रीनकारणयदाभवतोसुजाना।तौहोत कालपनकातुमरीप्रमाना॥ स्वप्नेभ्रमेअसतिनांकरणोदिखाना ॥ तैसे सुज्ञानव्यतिरेक अन्वेवखाना ॥ १५ ॥

टी० ॥ इन्द्रियोंको यदि प्रपंचज्ञानकीकारणताहो।तोतुम्हारा विकल्पबने औरआगे कथनकीहुईरीतिसेइन्द्रियोंको प्रपंचज्ञानकेप्रति कारणताअसिद्धहै ॥ औरजोपूर्वप्रपंचज्ञानकेप्रतिइन्द्रियोंकी कारणता काग्राहक अन्वयव्यतिरेकरूपप्रमाणकहाथा वहभीभ्रमरूपहै क्योंकि

जैसेस्वप्नभ्रममेइन्द्रियोंकाअन्वयव्यतिरेकभ्रमसेप्रतीतहोताहै।तैसेजाग्रत मेभीजानना ।।इति।। अबइसीअर्थकोविस्तारसेनिरूपणकरतेहैं ।।

हेवादिन् इन्द्रियादिकोंको वास्तवसेप्रपंचज्ञानकी कारणतानहीं संभवती । किसहेतुसे इन्द्रियादिकोको प्रपंचज्ञानकी कारणतानहीं ? ऐसीजिज्ञासाके हुएकहतेहैं । हेवादिन् तिनइन्द्रियोंकोज्ञानकेप्रतिजो कारणताहै तिसमेंयहविचार करनेयोग्यहै ।

❀ विनाकार्यंन कारणं ॥ ❀

अ० ।। कार्यसे विनाकारण नहींकहाजाता ।। इसन्यायसे इंद्रियनिष्ठकारणता ज्ञाननिष्ठकार्यताके आधीनकहनेयोग्यहै । और सोकार्यतानिरूपणकरनीकठिनहै । यातेकार्यताकरनिरूपणकरनेयोग्य इन्द्रियनिष्ठ कारणताभी अलीकहै ।

❀ अथप्रमानिष्ठकार्यताकी दुर्निरूप्यतानिरूपण ❀

अबइन्द्रियनिष्ठकारणताके निषेधअर्थप्रमानिष्ठ कार्यताकीदुर्नि रूपताउपपादनकरनेकेलिये विकल्पकरतेहैं । हेवादिन्क्या ? इन्द्रिया- दिकोंकोप्रमामात्रकी कारणताहै । अथवाभ्रमतथा प्रमारूपसाधारण ज्ञानमात्रमें तिनकोकारणताहै । अथवाभ्रममात्रमें तिनकोकारणता है ।। यहांप्रथमविकल्पमें यद्यपिप्रमामात्रमें इंद्रियोंकोकारणता नहीं संभवती।। क्योंकिईश्वरप्रमामें व्यभिचारहै ।। तहांइन्द्रियोंकोकारणता नहीं ।। यातेप्रथमविकल्पअसंगतहै ।। तथापियहां "मात्रच्" प्रत्ययका अवधारणअर्थहै ।। कात्स्र्न्यअर्थनहीं ।। अर्थयहप्रमाकीकारणताहै कोईसंपूर्णप्रमाकी कारणतानहीं । यातेप्रथमविकल्प संभवताहै ।। औरदूसरेविकल्पमेंभी "मात्रच्" प्रत्ययकाअवधारण अर्थहीजानना।

इति ॥ प्रमामात्रमें इंद्रियादिकोंको कारणताहै । यहप्रथमपक्षनहीं संभवता । क्योंकिइंद्रियादिजन्य ज्ञानमेंजोप्रमात्वहै ॥ वहभ्रमके विषयसेभिन्नअर्थ विषयत्वरूपताकर सिद्धकरनेयोग्यहै ॥ अर्थात् भ्रमकेविषयसेभिन्न अर्थकोविषयकरनेवालाज्ञान प्रमाकहाचाहिये ॥ औरभ्रमकेविषयसे भिन्नअर्थत्व प्रमाज्ञानकी विषयताकर सिद्धकरने योग्यहै । अर्थयहप्रमाज्ञानका जोविषयहैवहभ्रमके विषयसेभिन्न अर्थकहनेयोग्यहै । ऐसेमानेहुएअन्योऽन्याश्रयदोषस्पष्टहीप्राप्तहोता है।सोदिखलातेहैं।भ्रमकेविषयसेभिन्नअर्थकाज्ञानप्रमाज्ञानकेआधीनहै। औरप्रमात्वकाज्ञान भ्रमकेविषयसे भिन्नअर्थकेज्ञानके आधीनहै ॥ इसीसेप्रमाकाज्ञान दुर्घटहोनेकरतिसके प्रतिइंद्रियादिकोंकोकारणताती अतिदुर्निरूप्यहै यहभावहै । इसीमेंऔरदूषणकहतेहैं । औरहेवादिन् अर्थको भ्रमविषयसे भिन्नपनेमें प्रमाविषयत्व साधकनहीं क्योंकि "मिथ्याहीयहरजत भानहुआ" इसप्रमानेमिथ्याभुत रजतकोभीविषय कियाहै । अर्थातइसप्रमाके विषयरजतको भ्रमका असंबंधिपनानहीं देखा याते प्रमाज्ञानकी विषयताअर्थके सत्यत्वकाअर्थातभ्रमज्ञानकी अविषयताकाप्रयोजकनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन्अर्थकोभ्रमसेव्या वृत्तत्वप्रमाज्ञानकी विषयताकरहमनहींसिद्धकरते जिससे अन्योऽन्या-श्रयदोषतथा व्यभिचारदोषहो किन्तु अबाधितत्वरूपतासे हमभ्रमसे भिन्नत्वअर्थमेसिद्धकरतेहैं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् ॥

❀ अतोऽन्यदार्त्तं नेहनानास्तिकिंचत ❀

इत्यादिकश्रुतियोंकरद्वैतको मिथ्यापनाबोधन होनेसेविषयमे अबाधितत्वकी असिद्धिहै यातेपूर्वउक्तदोषदूर नहींहोसकते इसप्रकार

नेत्रादिकोंकोप्रमाज्ञानकीकरणता रूपप्रमाणता स्वीकार करकेप्रमाका ज्ञानकठिनहोनेकरतिसकरनिरूपितइन्द्रियादि निष्ठकारणता काज्ञानतो अत्यंतकठिनहै ॥ यहअर्थपूर्वनिरूपणकिया ॥

❀ अथप्रमाणके विषयविवेचनपूर्वक चक्षु आदिकोंमें प्रमाणताकाखंडन ❀

अबइंद्रियादिकोंमें प्रमाणताकाहीअभावहै इसअर्थकोनिरूपण करतेहैं ॥ किंचा ॥ हेवादिन् ।

❀ अनधिगतार्थ गंतृप्रमाणं ❀

अ० । अज्ञातअर्थका ज्ञापक प्रमाणहोताहै । यहप्रमाणके जाननेवालोंकी मर्य्यादाहै । औरअज्ञातअर्थ विषयक अनुभवकी उत्पत्तिद्वाराइंद्रियोंको अज्ञातअर्थकी विषयताकहनेयोग्यहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन्प्रमाणोंको अज्ञातअर्थविषयकमाननेमें कोईदोषनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् अज्ञातगोचरतातिनकोजबमानोगेतोअधिष्ठान मात्रविषयत्वही तिनकोप्राप्तहोगा क्योंकिअधिष्ठानमेंही अज्ञातताहै । अधिष्ठानमेंही प्रमाणोंकी विषयताकिसहेतुसेहै ऐसीआकांक्षाके हुए कहतेहैं ॥ निश्चयकरप्रमाणोंकाविषय अज्ञातहीहोताहै । वहअज्ञा तत्वअधिष्ठानमेंहीहै प्रपंचमेंनहीं क्योंकि तिसप्रपंचको जडहोनेकर स्वभावसेहीआवृत्तपनाहै॥ पुनःतिसमेंअज्ञानकी विषयतारूपअज्ञातता कल्पनमेंकोईप्रयोजननहीं ॥ भावयहकिअज्ञानकीविषयताकाप्रयोजन आवरणकरनाथा सोआवरणजडप्रपंचमें प्रथमहीस्वभावसिद्धहै। यहां यहअनुमान जानना ।

॰ विमतः प्रपंचोनाज्ञातः जडत्वात् ।
व्यतिरेकेण आत्मवत् ॥ ॐ

अ० ॥विवादकाविषयजोप्रपंचहै॥वहअज्ञातनहीं॥जडहोनेसे जोजोअज्ञातहैसोसोजडभीनहीं ॥ जैसेआत्माहै ॥ इति ॥ यद्यपि 'अज्ञातोघटः'इसप्रत्यक्षअनुभवकाविरोधहोगा॥तथापिअज्ञानकेसहित घटादिकोंका साक्षिचेतनमे अध्यासहोनेकर तिसप्रतीति काअन्यथा संभवहै ॥ भावयहसाक्षिचेतनमेअज्ञानऔरघटदोनों अध्यस्तहोनेकर तिनकासामानाधिकरण्यहै ॥ तिससंबंधसेघटनिष्ठभीअज्ञाततताप्रतीति होतीहै ॥ वास्तवसेघटअज्ञानकाविषयनहीं॥यातेप्रत्यक्षकोभ्रमरूपता होनेकरतिसकाविरोधनहीं॥शंका॥अधिष्ठानहीं अज्ञानकाविषयहो॥और तिसमेप्रमाणोंकीभीविषयताहो॥तोभीप्रपंचकाएकदेशजोशुक्तिरज्जुमरु भूम्यादिकहैं ॥ तिनकोरजतादिकोंकाअधिष्ठानहोनेकरअज्ञातताहोने सेइंद्रियोंकीविषयता तिनमेप्राप्तहुई ॥ समाधान ॥ हेवादिन्तैसेमाने हुएअधिष्ठानताएकचिदात्मामेहीविश्रांतिकोप्राप्तहोतीहै ॥ औरमिथ्या रजतादिकों को भी शुक्ति आदि अवच्छिन्न चेतन निष्ठ अविद्याका परिणाम होने से चेतन ही सर्वत्र भ्रमों का अधिष्ठान है ॥ शुक्ति आदिक नहीं । याते सर्वाऽधिष्ठान प्रत्यक् आत्मा विषयक इन्द्रियों कोप्रमाणताहै यहकहनेयोग्यहै । औरप्रत्यक्आत्मविषयत्वरूपतासे तिनकोप्रमाणता नहींसंभवती । क्योंकिप्रत्यगात्मा इन्द्रियोंकाअवि षयहै । अनिर्वचनीयप्रकाशने योग्यविषयोंसे विपरीतरूपतासेअर्थात् सत्चित्आनंदादिरूपतासेप्रकाशकरतेहुएकीन्याईजोप्रतीतहो । तिस कोप्रत्यक्कहतेहैं । वहप्रत्यक्हीआत्माहै तैसेमानेहुएअपने प्रकाशके

अर्थआत्माइन्द्रियोंकी अपेक्षानहींकरता ॥ शंका ॥ स्वआश्रित अज्ञानकीनिवृत्ति करनेवालीस्वविषयकजोवृत्तिहै । तिसकीउत्पत्ति केलियेइन्द्रियोंकीअपेक्षा आत्माकरेगा ॥ समाधान ॥ हेवादिन् अज्ञानकी निवृत्तिकेअर्थ आत्मा इन्द्रियोंकी अपेक्षा करताहै । यह तुम्हाराकथन यद्यपिसत्यहै । तथापिइन्द्रियोंकी आत्मामेंप्रवृत्तिनहीं होसक्ती ॥ क्योंकिरूपादिगुणोंको सन्मुखकरके प्रसिद्ध इन्द्रियोंकी प्रवृत्तिहोतीहै॥ अर्थयहरूपादिधर्मविशिष्टमें इंद्रियप्रवृत्तहोतेहैं । और आत्मारूपादिधर्मसे रहितनिर्धर्मकहै ॥ ऐसा श्रुतिमेंसुनाहै तिस कारणसे इंद्रियोंकी विषयताआत्मामें युक्तनहीं ॥ रूपादिधर्मरहित आत्मामें इंद्रिय प्रवृत्तनहींहोते इस अर्थमें श्रुतिभी प्रमाणहै ॥ सो श्रुतियह है ॥

* परांचिखानि व्यतृणत् स्वयंभूःतस्मात् परांङ्पश्यति नांतरात्मन् * (क० उ० व० ४।१)

अ० ॥ ("स्वयंभूः") परमात्मा (परांचि) बाह्यवस्तुओंको विषयकरनेवाले (खानि) इन्द्रियोंको (व्यतृणत्) हिंसाकरता भया ॥ भावयहबाह्यवस्तुके विषयकरनेकास्वभाव तिनकाईश्वरने रचनाकियाहै ॥ यातेअनात्मदर्शनकी साधनताही तिनकाहिंसन अर्थात् मारनाहै । (तस्मात्) जिसकारणसे इन्द्रिय बाह्य वस्तुको हीविषयकरतेहैं तिसीकारणसे सकलजनइंद्रियोंसे (पराङ्) अनात्म पदार्थोंकोही (पश्यति) देखताहै ॥ और (नांतरात्मन्) सर्वसे अंतरआत्माको निर्धर्मकहोनेसेकोई तिसकोनहींदेखसक्ता ॥ इति ॥

इसप्रकारपूर्वउक्तयुक्तिसे जैसे प्रपंचज्ञानमें इंद्रियों को साधनताका अभावहै ॥ तैसेउक्तश्रुतिसे आत्मज्ञानमेंभीतिनको साधनताका अभावहोनेसेकहींभी इंद्रियोंकोप्रमाणतानहीं यहभावहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन् "तस्मात्पराङ्पश्यति" यह श्रुतिइंद्रियोंकोप्रपंचज्ञानकी कारणताप्रतिपादनकरतीहुई तिनकोप्रपंच विषयत्वदिखलातीहै। याते किसरीतिसेतिनमें प्रमाणताकाअभाव तुमकहतेहो ॥ समाधान ॥ हेवादिन् यहश्रुतिइंद्रियोंकोप्रपंचविषयत्वके दिखलानेमें तात्पर्यवाली है यहतुमकहतेहो ॥ अथवाइंद्रियोंकोप्रपंचविषयत्वकाअनुवादकरके आत्मामेंइंद्रियोंकी अविषयता प्रतिपादनमें तात्पर्य्यवालीहै ॥ प्रथम पक्षतोनहीं संभवता क्योंकिनिष्फलतथा ज्ञातअर्थके प्रतिपादनमें श्रुतिकेतात्पर्यकी अयोग्यताहै। औरद्वितीयपक्षमेभीयहविचारकरनेयोग्य है। अनुवादक्या? प्रमाणसिद्धकाश्रुतिकरतीहै। अथवाभ्रमसिद्धकाकरती प्रथमपक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकिप्रपंचप्रमाकेप्रतिइंद्रियोंमेकारणता केग्राहकप्रमाणरूपतासे अंगीकारकिये जोअन्वयव्यतिरेकादिहैं तिन कीआगेकथनकी हुईरीतिसे अन्यथाहीउपपत्तिहै ॥ औरभ्रमसिद्धके अनुवादपक्षमे इंद्रियोंकोप्रपंचविषयकप्रमाकीकारणतारूपसेप्रमाणता नहींसंभवती ॥ जैसेस्वाप्नज्ञानके प्रति इंद्रियोंका अन्वयव्यतिरेकभ्रम रूपहै ॥ तैसेजाग्रत्मेभ्रमरूपअन्वयव्यतिरेककर सिद्धजोप्रपंचज्ञानकी इंद्रियोंकोकारणताहै तिसकाअनुवादकरकेआत्मामेइंद्रियोंकीविषयता काअभावदिखलानेमेश्रुतिकातात्पर्य्यहै ॥ यातेप्रपंचप्रमाकेप्रतिइंद्रियों कोकारणताकेनहोनेसे प्रमाणताकाअभावहै ॥ इसप्रकार प्रमामात्रमे

इंद्रियोंकोकारणताहै ।।यहप्रथमपक्षथा । सोप्रमात्वकेनिरूपणकीकठिनताहोनेकर तिसप्रमानिष्ठकार्यता निरूपितकारणता तिनइंद्रियोंमेन ग्रहणहोनेसेऔरप्रमाकीकरणताकातिनमेअभाव होनेसेनहीं संभवता यहपूर्वकथनकिया ।।औरइंद्रियोंकोप्रमाज्ञानकीकारणताकाअभावरूप जोहेतुहै तिसकरभ्रमप्रमासाधारणज्ञानमात्रमेइंद्रियोंको कारणताहै ।। यहद्वितीयपक्षभीनिरासहुआ। क्योंकिपूर्वउक्तरीतिसेप्रमाकी कारणता इंद्रियोंमेनिरूपण नहींहोसक्ती ।। शंका ।। हेसिद्धांतिन्पूर्वउक्तरीति सेभ्रमप्रमासाधारणज्ञानमात्रमेइंद्रियोंकोकारणताकेअभावहुएभ्रममात्र मेतिनकोकारणताहै ।।समाधान।। हेवादिन्यहतृतीयपक्षभीअसंगतहै क्योंकियहएकदेशीकाविकल्पहैअथवानैयायिकादिकोंकाहै।यहविचार करनेयोग्यहै।।तिनमेप्रथमपक्षनहींसंभवता।।क्योंकिभ्रमज्ञानकोअविद्या मात्रकारणकत्वतुमनेआपहीपूर्वकथनकियाहै।।यदिइंद्रियोंकोभ्रमज्ञान केप्रतिकारणमानोगे तोअपनेकथनकाविरोधप्राप्तहोगा ।। औरद्वितीय पक्षमेतिननैयायिकादिकोंसे हमयहपूछतेहैं ।। इंद्रियोंको भ्रमज्ञानकी कारणताकाग्राहकप्रमाणअन्वयव्यतिरेकहीहै । अथवा।कोईअन्यप्रमाणहै प्रथमपक्षतोनहींसंभवता ।। क्योंकिजेसेस्वप्नमेइंद्रियोंकीप्रवृत्तिकेअभाव हुएभीइंद्रियोंकाअन्वयव्यतिरेकज्ञानकेप्रतिदेखनेमेआताहै । वहअन्वय व्यतिरेकअप्रमाणरूपहोनेकरकारणताकाग्राहकनहींहोसकता ।। तैसे जाग्रत्मेभीइंद्रियोंका अन्वयव्यतिरेकज्ञानकेप्रतितिनको कारणताका ग्राहकनहीं ।। औरकारणताकाग्राहक कोईअन्यप्रमाणहै यहद्वितीय पक्षभीनहींसंभवता क्योंकितिसकीअप्रतीतिहै ।। शंका ।।

रूपोपलब्धिःकरणसाध्या क्रियात्वात् ॥

छिदिक्रियावत् ॥

अ०॥रूपकाजोज्ञानहैवहकरणसाध्यहै।क्रियारूपहोनेसे। जोजोक्रिया होतीहैवहकरणसाध्यहोतीहै जैसेछेदनरूपक्रियाहै ॥इति॥ इत्यादिक अनुमान नेत्रादिकोंको प्रपंचस्वरूप रूपादिकोंकी उपलब्धिके प्रति-कारणताकेग्राहकहैं।याते प्रमाणका अभाव कथन नहीं संभवता ॥ समाधान ॥ हेवादिन्उपलब्धिशब्दसेस्फुरणरूपशुद्धचेतनमात्रकहतेहो अथवावृत्तिरूपज्ञानकहतेहो अथवावृत्त्युपहितचेतनकोकहतेहो॥प्रथम पक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकि

❀ नित्यंविज्ञानं ❀

अ० ॥ नित्यविज्ञानस्वरूपहै ॥ इसश्रुतिसे चेतनस्वरूपज्ञान कोनित्यत्वसिद्धहुएकरणकीअपेक्षानहींहै ॥ औरयदिद्वितीयपक्षकहो तोवहवृत्तिरूपउपलब्धिकरणसेरहितहुईहीअनुमानमेपक्षहै अथवानेत्र सेभिन्नकरणवालीहुईपक्षहै ॥ अथवानेत्ररूपकरणवालीहुईपक्षहै ॥ प्रथमऔद्वितीयपक्षतोनहींसंभवते ॥ क्योंकिउपलब्धिको अकरणिक मानेहुएअथवाचक्षुभिन्नकरणिक मानेहुए करणसाध्यत्वरूपसाध्यका अभावहोनेसेअनुमानमेबाधप्रसहोगा ॥ औरतृतीयपक्षमेअन्योऽन्या श्रयदोषकीप्राप्तिहै ॥ सोऐसेहै ॥ चक्षुहैकरणजिसकाऐसीवृत्तिकेसिद्ध हुएचक्षुकरणिक उपलब्धि रूप पक्षवाले अनुमानकी प्रवृत्तिहोगी ॥ और अनुमान के प्रवृत्त हुए चक्षु करणिक वृत्ति की सिद्धि होगी ॥ इस प्रकार वृत्तिको पक्षत्वके अभावसे ही वृत्ति उपहित चेतनको भीपक्षपनानहींसंभवता क्योंकितिसमेभी अन्योऽन्याश्रय दोषहीप्राप्त होताहै ॥ औरपूर्वउक्तविकल्पोंकोत्यागकर उपलब्धिमात्रकोपक्षकहो

तोवहभीनहींसंभवता ॥ क्योंकि

*** तस्मादपिपृष्टत उपस्पृष्टोमनसाविजानाति ***

बृ० उ० अ० ३ ब्रा० ५॥३

अ० ॥ तिससेभीपृष्टसेसमीपस्पर्शहुएपदार्थकोमनसेयहपुरुष जानलेताहै ॥ इसश्रुतिसेमनकी स्वतंत्ररूपतासे बाह्यप्रवृत्तिसिद्धहै ॥ यातेरूपादिउपलब्धिनेत्रादिकरणसाध्यनहीं किन्तुमनोजन्यहै अथवा अविद्याजन्यहै ॥ औरयहांयहअनुमानभीजानना ॥

विमतंचक्षुर्नरूपस्यतदाश्रयद्रव्यस्यवाग्राहकं असाधारणेंद्रियत्वात् ॥ घ्राणादिवत् ॥

अ० ॥ विवादकाविषयजोनेत्रइंन्द्रियहै । वहरूपऔरतिसके आश्रयभूतद्रव्यकाग्राहकनहीं॥असाधारणइन्द्रियहोनेसे। जोजोअसाधारणइन्द्रियहै।सोसोरूपऔरतिसके आश्रयभूतद्रव्यकाग्राहकनहीं है॥ जैसेघ्राणादिकइंद्रियहैं ॥ इसअनुमानकरनेत्रइंद्रियकोरूपकीग्राहकता कानिषेधहोनेसेघ्राणादिक इंद्रियोंको गंधादि विषयोंकी ग्राहकताका निषेधभीजानलेना ॥ इसअनुमान मे "असाधारणेंद्रियत्वात्" यह हेतुहै। तिसकायदिबाह्यइंद्रियहोनेसे। ऐसाअर्थकरें ॥ तोजिनकेमतमे मनकोइंद्रियरूपताहै।उनकेमतकोलेकरतोअसाधारणपदसफलहोसकता हैं। परन्तुजिनके मतमेमनइंद्रियनहीं तिनकेमतमे असाधारण पदकी निष्फलताहोगी ॥ औरयदिऐसा निर्वचनकरें "यत् किंचत् कार्यता निरूपित कारणता आश्रयत्व" कानामअसाधारणत्वहैतोअनुमानमे बाधप्राप्तहोगा ॥ क्योंकियत्किंचत्कार्य रूपकीउपलब्धिहै ततनिरूपितकारणताकाआश्रयपनानेत्रइंद्रियमेमानेहुएरूपऔरतिसकेआश्रय

भूतद्रव्यका अग्राहकत्वरूपसाध्यका अभावहोनेसेबाधककीप्राप्तिस्पष्टहीहै। यातेयह निर्वचनभी समीचीननहीं। किंतु "यत्किंचित् कारणता निरूपितकार्यता आश्रयत्वरूप" ही असाधारणत्वजानना॥ अर्थयह तेजादिभूतोंके सतोगुणमेंयत्किंचित् कारणताहै तिसकरनिरूपित कार्यतानेत्रादि इन्द्रियोंमेंविद्यमानहै याते उक्तनिर्वचनही समीचीन है॥ इति॥ औरमनभी प्रपंचउपलब्धि॥

❋ मनकीकरणताके निषेधपूर्वक अविद्यामूलक प्रपंचउपलब्धिका स्थापन। ❋

काकरणनहींहै। अबइसीको निरूपणकरतेहैं॥ वहमनक्या? आत्माकीउपलब्धि अर्थात् ज्ञान का करणहैअथवासुखादिउपलब्धि केमतिकरणहै॥ प्रथमपक्षतोकर्तृकर्म रूपविरोधहोनेसेनहीं संभवता। क्योंकिशुद्धात्माकोतो स्वप्रकाशस्वरूपहोनेसे मनोजन्यज्ञानकीविषय ताकाअभावहै औरअंतःकरणविशिष्टआत्माके ज्ञानकामनकोकरण माने॥ तोविशिष्टवृत्तिधर्मकोविशेषणमें वर्तनेकानियमहोनेसेएकही मनकोउपलब्धिका आश्रयरूपसे कर्तापनाहोगा। औरउसीकोविषय रूपहोनेसेकर्मपनाहोगा॥सोदोनोंएककालमें एकअधिकरणविषयक विरुद्धहैं॥ यहीकर्तृकर्मरूपविरोधहै। यातेआत्माके ज्ञानकीकरणता मनमेंनहींसंभवती॥ औरद्वितीयपक्षभी असंगतहै। क्योंकिसुखा दिकसाक्षिभास्यहैं॥ इसप्रकारइन्द्रियतथामनको प्रपंचज्ञानकीकरणता काअभावहोनेसे अविद्यामूलकहीजगत्काज्ञानहैकिसीभीहेतुसेइन्द्रि- यादिकोंको प्रमाणतानहीं॥

❋ शंकापूर्वक प्रपंचको अविद्योपादान

तोवहभीनहींसंभवता ॥ क्योंकि

❀ तस्मादपिपृष्ट उपस्पृष्टोमनसाविजानाति ❀

बृ० उ० अ० ३ ब्रा० ५॥३

अ० ॥ तिससेभीपृष्टसेसमीपस्पर्शेहुएपदार्थकोमनसेयहपुरुष जानलेताहै ॥ इसश्रुतिसेमनकी स्वतंत्ररूपतासे ग्राह्यमवृत्तिसिद्धहै ॥ यातेरूपादिउपलब्धिनेत्रादिकरणसाध्यनहीं किन्तुमनोजन्यहै अथवा अविद्याजन्यहै ॥ औरयहांयहअनुमानभीजानना ॥

विमतंचक्षुर्नरूपस्यतदाश्रयद्रव्यस्यवाग्राहकं असाधारणेंद्रियत्वात् ॥ घ्राणादिवत् ॥

अ० ॥ विवादकाविषयजोनेत्रइंन्द्रियहै । वहरूपऔरतिसके आश्रयभूतद्रव्यकाग्राहकनहीं॥असाधारणइन्द्रियहोनेसे। जोजोअसाधारणइन्द्रियहै।सोसोरूपऔरतिसके आश्रयभूतद्रव्यकाग्राहकनहीं है॥ जैसेघ्राणादिकइंद्रियहैं ॥ इसअनुमानकरनेत्रइंद्रियकोरूपकीग्राहकता कानिषेधहोनेसेघ्राणादिक इंद्रियोंको गंधादि विषयोंकी ग्राहकताका निषेधभीजानलेना ॥ इसअनुमान मे "असाधारणेंद्रियत्वात्" यह हेतुहै। तिसकायदिवाह्यइंद्रियहोनेसे। ऐसाअर्थकरें ॥ तोजिनकेमतमे मनकोइंद्रियरूपताहै।उनकेमतकोलेकरतोअसाधारणपदसफलहोसकता है। परन्तुजिनके मतमेमनइंद्रियनहीं तिनकेमतमे असाधारण पदकी निष्फलताहोगी ॥ औरयदिऐसा निर्वचनकरें "यत् किंचित् कार्यता निरूपित कारणता आश्रयत्व" कानामअसाधारणत्वहैतोअनुमानमे बाधप्राप्तहोगा ॥ क्योंकियत्किंचितकार्य रूपकीउपलब्धिहै तन्निरूपितकारणताकाआश्रयपनानेत्रइंद्रियमेमानेहुएरूपऔरतिसकेआश्रय

भूतद्रव्यकाअग्राहकत्वरूपसाध्यकाअभावहोनेसेबाधकीप्राप्तिसपष्टहीहै। यातेयह निर्वचनभी समीचीननहीं । किंतु "यत्किंचित् कारणता निरूपितकार्यता आश्रयत्वरूप" ही असाधारणत्वजानना ॥ अर्थयह तेजादिभूतोंके सतोगुणमेंयत्किंचित् कारणताहै तिसकरनिरूपित कार्यतानेत्रादि इन्द्रियोंमेंविद्यमानहै याते उक्तनिर्वचनही समीचीन है ॥ इति ॥ औरमनभी प्रपंचउपलब्धि ॥

❀ मनकीकरणताके निषेधपूर्वक अविद्यामूलक प्रपंचउपलब्धिका स्थापन । ❀

काकरणनहींहै । अबइसीको निरूपणकरतेहैं ॥ वहमनक्या? आत्माकीउपलब्धि अर्थात् ज्ञान का करणहैअथवासुखादिउपलब्धि केमतिकरणहै ॥ प्रथमपक्षतोकर्तृकर्म रूपविरोधहोनेसेनहीं संभवता। क्योंकिशुद्धात्माकोतो स्वप्रकाशस्वरूपहोनेसे मनोजन्यज्ञानकीविषय ताकाअभावहै औरअंतःकरणविशिष्टआत्माके ज्ञानकामनकोकरण माने ॥ तोविशिष्टवृत्तिधर्मकोविशेषणमें वर्त्तनेकानियमहोनेसेएकही मनकोउपलब्धिका आश्रयरूपसे कर्तापनाहोगा। औरउसीकोविषय रूपहोनेसेकर्मपनाहोगा॥ सोदोनोंएककालमें एकअधिकरणविषयक विरुद्धहैं ॥ यहीकर्तृकर्मरूपविरोधहै । यातेआत्माके ज्ञानकीकरणता मनमेंनहींसंभवती ॥ औरद्वितीयपक्षभी असंगतहै । क्योंकिसुखा दिकसाक्षिभास्यहैं॥ इसप्रकारइन्द्रियतथामनको प्रपंचज्ञानकीकरणता काअभावहोनेसे अविद्यामूलकहीजगत्काज्ञानहैकिसीभीहेतुसेइन्द्रि- यादिकोंको प्रमाणतानहीं ॥

❀ शंकापूर्वक प्रपंचको अविद्योपादान

कत्वस्थापन ॥ ❀

॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन् अविद्याहैउपादानजिनका ऐसेजो। मिथ्यारजतादिकहैं तिनको अविद्याकी वृत्तिकर ग्राह्यपनातो संभवताहै। परंतुघटादिजगत्कातो अविद्याउपादानकारणनहीं। क्योंकिघटादिकोंकेअर्थीकुलालादिकोंकोमृत्तिकादिकारणविशेषकाग्रहण देखनेमेंआताहै। तिसकारणसेअन्वयव्यतिरेककरसिद्ध मृत्तिकादिक घटादिकोंके उपादानकारणहैं। यातेघटादि प्रपंचकोअविद्योपादान कत्वकाअभावहोनेसे अविद्यावृत्तिकी विषयता किसप्रकारसंभवैगी किंतुनहींसंभवती ॥ समाधान ॥ हेवादिन्प्रथमघटादिपदार्थ कार्य रूपहैं। यहांकार्यताके साधकअनुमानका यहआकारहै।

❀ घटादिकार्यं मध्यमपरिमाणत्वात् व्यतिरेकेण आत्मवत् ॥ ❀

अ० ॥ घटादिजगत्कार्यरूपहै॥ मध्यमपरिमाणवालाहोनेसे। जोजोकार्यनहीं है। सोसोमध्यम परिमाणवालाभीनहींहै। जैसेआत्मा है ॥ इति ॥ औरवहघटादि जगत्भावरूपहै। क्योंकिनिष्प्रतियोगिक है। इसप्रकारसर्वघटादि भावकार्यमेंउपादानकारणकी अकांक्षाकेहुए आत्माकोतोअसंगहोनेसे किसीकावहकारणनहीं संभवना। परिशेषसे अविद्याहीउपादानकारणरूपतासेकल्पनाकरनेयोग्यहै। यद्यपिघटादिकों कोअविद्याउपादानक मानेहुएघटादिकोंकेअर्थीकुलालादिकोंकोमृत्ति कादिकोंकाग्रहणदेखाजाताहै तिससेमृत्तिकादिकोंकोउपादानकल्पना काविरोधहोगा ॥ तथापिघटादिकोंके अर्थियोंको तिसतिस कारण विशेषकाग्रहणआविद्यकपनेकाविरोधिनहीं। क्योंकिमृत्तिकादिआकार

सेअविद्याहीपरिणामकोप्राप्तहुईहै ॥ अविद्याकोउपादानहोनेसेअविद्या स्वरूपमृत्तिकादिकोंकोघटादिकोंकेप्रतिकारणताकीकल्पना आविद्यक पनेकेसाथविरोधवालीनहीं ॥ जैसेस्वप्नमे वास्तवसेनकोईघटहै औरन कोईमृत्तिकाहैकिंतुअविद्याहीमृदरूपताकोप्राप्तहोकरआविद्यककुलाल करगृहीतहुईआविद्यकघटादिकोंकोरचनाकरतीहै ॥ क्योंकि

*** नतत्ररथाः ***

अ० ॥ स्वप्नअवस्थामेंन्यवहारकरथनहींहै ॥ इत्यादिकश्रुति सेतहांवास्तवसृष्टिकानिषेधकियाहै ॥ तथाजाग्रत्कालमेभी

*** नेहनानाऽस्ति ***

इत्यादिश्रुतिसेघटादिप्रपंचकानिषेधसुनाजाताहै ॥ और

*** मायांतुप्रकृतिंविद्यात् ***

इसश्रुतिसेमायारूपअविद्याकोजगतकी उपादानताश्रवणहोने सेमृदादिआकारपरिणामको प्राप्तहुईअविद्याहीघटादिकोंका उपादान कारणहै इसप्रकारमाननेमेंकिंचित्मात्रभीविरोधनहीं ॥ इति ॥

* अथअवांतरविषयकीसमाप्तिपूर्वकप्रपंचनिष्ठज्ञात सत्ताकेनिरूपणकाउपसंहार *

यहांप्रथमजगत्कीज्ञातसत्ताप्रधानरूपताकरकथनकरनेलगेथेतिसकी सिद्धिके अर्थप्रपंचनिष्ठआविद्यकपनाकथनकिया ॥ अबतिसअवांतर विषयकोसमाप्तकरतेहैं ॥ पूर्वउक्तयुक्तिसेब्रह्मसेभिन्न सर्वकार्यमात्रज्ञान औज्ञेयस्वरूपवहसर्वही आविद्यकहै अर्थात्अविद्याकाकार्यहै ॥ इस प्रकारप्रपंचऔतिसकेज्ञानकोआविद्यकहोनेसेसर्वप्रपंचकीज्ञातसत्ताहै॥ यहअर्थसिद्धहुआ॥इसरीतिसे ज्ञानतथाज्ञेयको आविद्यकहोनेकरज्ञान

कालमेहीज्ञेयकीसत्ताहै।ज्ञानसेपूर्वतथाउत्तरकालमेज्ञेयकीसत्तानहीं।औरज्ञानकीस्थितिसेप्रपंचस्थितहोताहै।औरज्ञानकीनिवृत्तिसेनिवृत्तहोजाताहै।। यातेज्ञातसत्ताकहीप्रपंचहे ॥ यहअर्थपूर्वनिरूपणकिया। अवइसीअर्थमेवसिष्टमुनिके वचनकी संमतिदिखलातेहैं ॥ यहीअर्थश्रीवसिष्ठभगवान्जीनेभीकहाहे ॥

मू० ॥ अविद्यायोनयोभावासर्वेमीवुद्बुदाइव।
क्षणमुद्भुयगच्छंतिज्ञानैकजलधौलयं॥१॥

अ० ॥ (सर्वेअमी) यहसर्व (भावाः) ज्ञानज्ञेय रूपपदार्थ (अविद्यायोनयः) अविद्याउपादानकहैं ॥ और (बुद्बुदाइव)जैसेसमुद्रमेबुद्बुदेक्षणमात्रमे उत्पन्न होकरलय होजातेहैं ॥ तैसेयहज्ञानज्ञेयरूपपदार्थभी (क्षणं) एकक्षणमात्रमे (ज्ञानैकजलधौ) एकरस चेतनरूपसमुद्रमे (उद्भूय) उत्पन्नहोकर (लयंगच्छंति)लयहोजातेहैं।। इति ॥१४

❋ अथपूर्वपक्षीकीरीतिसेअविद्याकोप्रपंचकीकारणताकाअसंभवानिरूपण ❋

अथपूर्वपक्ष ॥ घटपटादिकोंके अर्थियोंकोमृत्तिकातंतुआदिककारणविशेषकाग्रहणस्वप्नकीन्याई उपपादनकरनेयोग्यहै । ऐसेकहनेवालेसिद्धांतीसे हमयहपूछतेहैं । मृद्घटादिकोंकाकार्य कारणभावतुमअंगीकारहीनहींकरते अथवातिनकाकार्यकारणभावतुमअंगीकारकरतेहो । इनमेंप्रथमपक्षमें दूषणकहतेहैं ।

मू० ॥ मृदादीनां कारणत्वंनचेदिष्टं घटंप्रति।
अविद्यायाःकारणत्वंकथंसिद्ध्येत् प्रमांविना॥१५

चित्रपदा० ॥ जेकरइष्टनहोगा । कारणमाटिघटोंका ॥

कारणसोतमऐसे । मानबिना कहुकैसे ॥ १६ ॥

टी० ॥ हेसिद्धांतिन् यदिमृदादिकोंको घटादिकोंकी कारणता तुमअंगीकारनहींकरोगे।तोकहींभीकार्यकारणभावनअंगीकारहोनेकर अविद्याकोप्रपंचकीकारणता कैसे सिद्धहोगी ॥ क्योंकिदृष्टअर्थके अनुसारहीअदृष्टकी कल्पनाहोतीहैऔरयदि तुमकार्यकारणभावमानो तोवहकार्यकारणभाव मृद्घटादिकोंका प्रमाणसिद्धहै अथवाभ्रम सिद्धहै ॥ अंत्यपक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकिविषयके बाधहोनेसेही ज्ञानमेंभ्रमपनाहोनाहै॥ जबकार्यकारणभाव रूपविषयकाबाधहुआतो अविद्याकोकारणता कैसेसिद्धहोगी ॥ यहपूर्वउक्तदोषहीपुनः प्राप्त होताहै । औरयदिप्रथमपक्षकहोतोघटादिकोंकीकारणता अविद्याको नहींसंभवैगी ॥ क्योंकिकारणताके ग्राहकअन्वयव्यतिरेकादिरूप प्रमाणकोमृत्तिकादि कारणविषयकहोनेकर अविद्याविषयकत्वतिनको नहींहै॥ यातेप्रमाणसेविना अविद्यामेंकारणताका अभावहै । अब इसीअर्थको विस्तार पूर्वकनिरूपणकरतेहैं ॥ हेसिद्धांतिन् अविद्या सर्वभावकार्योंका उपादानकारणहै ऐसेकथनकरनेवाले तुमकोकहीं कार्यकारणभाव स्वीकारहैवानहीं ॥ यदिअंत्यपक्षकहोतो प्रपंचको अविद्याउपादानकत्व कैसेसिद्धहोगा ॥ क्योंकिकार्यकारणभावतो कहींभीस्वीकारनहीं । औरजोप्रथमपक्षकहो । तो यथायोग्यअन्वय व्यतिरेकादि प्रमाणसेही कार्यकारणभावका ग्रहणकरनाउचितहै ॥ यहां "अन्वयव्यतिरेकादि" इसआदिपदसेधर्मीके ग्राहकप्रमाणका ग्रहणहै । तिसीकारणसेप्रत्यक्ष मृद्घटादिकोंकाकार्य कारणभावतो

अन्वयव्यतिरेककरके औरशब्दतथाआकाशादिकोंकाकार्यकारणभाव धर्मिग्राहकअनुमान प्रमाणसेयथायोग्य ग्रहणहोताहै ॥ तिसकार्य कारणभावमेंऔर कोईप्रकारनहींसंभवता यहांधर्मिग्राहकअनुमानका यहआकार है ॥

❀ शब्दःपृथिव्यादि अष्टद्रव्यातिरिक्तद्रव्याश्रितः। अष्टद्रव्यानाश्रितत्वे सतिद्रव्याश्रितत्वात् ॥ यन्नैवंतन्नैवं यथारूपादि ❀

अ० ॥ शब्दजोहै सोपृथिव्यादिक अष्टद्रव्यों से भिन्नद्रव्य केआश्रितहै ॥ अष्टद्रव्यके अनाश्रितहुआ द्रव्यके आश्रित होनेसे जोजोअष्टद्रव्योंसे अतिरिक्तद्रव्यके आश्रितनहीं। सोसो अष्टद्रव्योंके अनाश्रितहुआद्रव्यके आश्रितभीनहीं। जैसे रूपादिकगुणहैं ॥ इसअनुमानमेंहेतुगत विशेषणभागकी असिद्धिदूरकरनेके लियेतीन अनुमानऔरहैं। तिनमेंप्रथमकायह आकारहै ॥

❀ शब्दोनस्पर्शवद् विशेषगुणः। अग्निसंयोगा ऽसमवायिकारणकत्वा भावेसतिअकारणगुण पूर्वकप्रत्यक्षत्वात् ॥ सुखवत् ❀

अ० ॥ शब्दजोहै सोस्पर्शवाले द्रव्योंकाविशेष गुणनहींहै ॥ अग्निसंयोगरूप असमवायिकारणकत्वके अभाववालाहुआ अकारण गुणपूर्वक प्रत्यक्षहोनेसे ॥ जोजोअग्नि संयोगरूप असमवायिकारण कत्वकेअभाव वालाहुआ अकारणगुणपूर्वक प्रत्यक्षहोताहै। सोसो स्पर्शवालेद्रव्योंका विशेषगुणनहींहोता। जैसेसुखरूपगुणहै ॥ इस अनुमानसेपृथिवीजल अग्निवायुइनचार द्रव्योंकेआश्रितशब्दनहींहै

यहसिद्धहुआ । इसअनुमानगतहेतुमें यदिविशेष भागहीकहतेतो पाकजरूपादिकोंमें व्यभिचारहोता। क्योंकिकारणगुणपूर्वकतासेविना हीतिनका प्रत्यक्षहोताहै ॥ तिसव्यभिचारके दूरकरनेके लियेहेतुमें विशेषणभाग कथनकियाहै ॥ तिनमेंअग्नि संयोगरूपअसमवायि कारणकत्वका अभावनहीं ॥ किंतुसद्भावहै । औरयदिहेतुमेंविशेष भागनकहते ॥ तोपटगतरूपादिकोंमेंव्यभिचारहोता। क्योंकिअग्नि संयोगरूप असमवायिकारणकत्वकाअभावतिनमेंभीहै ॥ तिनमें व्यभिचार दूरकरनेकेलिये अकारणगुणपूर्वकत्वयहविशेषभागकथन कियाहै ॥ तिनमेंअकारणगुणपूर्वकत्वनहीं।किंतु कारणगुणपूर्वकत्वहै औरजलपरमाणुगतरूपमें व्यभिचार दूरकरनेकेलिये "प्रत्यक्षत्व" यहपदहेतुमेंकहाहै ॥ क्योंकि "अग्निसंयोगाऽसमवायिकारणकत्वके अभाववालाहुआ अकारणगुणपूर्वकत्व" इतनाहेतुभाग तोजलपर माणुकेरूपमेंविद्यमानहै परन्तुतिसका प्रत्यक्षनहीं होतायातेव्यभिचार नहीं । औरद्वितीयअनुमानयहहै ॥

❋ शब्दोनदिक् कालमनसांगुणः विशेषगुणत्वात् रूपवत् ❋

अ० ॥ शब्दजोहैसोदिशातथाकालऔमन इनतीनोंकागुण नहींहै।विशेषगुणहोनेसे।जोजो विशेषगुणहोताहै।सोसोइनतीनद्रव्योंका गुणनहींहोता । जैसेरूपादिकहैं । इसअनुमानसेदिगादितीनद्रव्योंके आश्रितभीशब्द नहींहै यहअर्थ सिद्धहुआ ॥इति ॥औरतृतीयअनु मानयहहै ॥

❋ शब्दोनात्मविशेषगुणः बहिरिंद्रिय

योग्यत्वात् रूपवत् ❀

अ० ॥ शब्दजोहैसोआत्माकाभी विशेषगुणनहीं।बाह्यइन्द्रिय करग्रहणकेयोग्यहोनेसे ॥ जोजोगुण बाह्यइन्द्रियकरै ग्रहणकेयोग्य होताहै । सोसोआत्माका विशेषगुणनहींहोता ॥ जैसेरूपहै ॥ इस अनुमानसे शब्दआत्मा केभीआश्रितनहीं। यहसिद्धहुआ॥ औरहेतु गत विशेषभागकी असिद्धिदूरकरनेके लियेयह अनुमानहै ॥

❀ शब्दो।द्रव्यसमवेतः। गुणत्वात्। संयोगवत् । ❀

अ० शब्दजोहै। सो द्रव्यमेंसमवेतहै ॥ गुणहोने से ॥ जो जो गुणहोताहै सोसोद्रव्यमेंही समवेत होताहै। जैसेसंयोगहै ॥ इसअनुमानसेशब्दको द्रव्यसमवेतत्वसिद्धहोताहै । औरइसअनुमानमे स्वरूपासिद्धिकेदूरकरनेवाला यहअनुमानहै ॥

❀ शब्दोविशेषगुणः।चक्षुर्ग्रहणायोग्यबहिरिंद्रियग्राह्य जातिमत्वात् स्पर्शवत् ❀

अ० ॥ शब्दजोहैसो विशेषगुणहै ॥ चक्षुइन्द्रियकर ग्रहणके अयोग्यहुआबाह्यइन्द्रियकरग्राह्यजातिवालाहोनेसे॥ जोजोचक्षुइन्द्रिय करग्रहणकेअयोग्यहुआबाह्य इन्द्रियकरग्राह्यजातिवालाहै सोसोविशेष गुणहै ॥ जैसेस्पर्शगुणहै ॥इति॥ इसप्रकारनिर्दोषपूर्वउक्तपरिशेषानु- मानसेगगननामवालानवमद्रव्यही शब्दकाआधारहै। यातेयह अनुमान शब्दतथाआकाशकेकार्यकारणभावकाग्राहक होनेसे धर्मिग्राहकप्रमाण जानना ॥इति ॥शंका॥ हेवादिन्मृदघटादिकोंमेअन्वयव्यतिरेकादि प्रमाणसिद्धकार्यकारण भावहो तिससेक्यासिद्धहुआ ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन्तेसे मानेहुए अन्वयव्यतिरेकादिसिद्ध जोमृत्तिकादिकोंमे

कारणताहै ॥ तिसकोत्यागकरअविद्याकोकारणकहनाउचितनहीं ॥ यहसिद्धहुआ ॥ किंवा ॥ "कारणत्वेनाऽविद्यैवउपसंहर्तव्या" अ०॥ कारणत्वरूपतासेअविद्याहीग्रहणकरनेयोग्यहै ॥ इसवाक्यमे "अवि-द्यैव" यहजो (एव) शब्दहै सोअविद्यासेभिन्नमृदादिकोंमेकारणताकी योग्यताकोदूरकरताहै। अथवाअविद्यामे कारणताकी अयोग्यताको निवारणकरताहै ॥ दोनोंरीतिसे "एव" शब्दकाप्रयोगनहींसंभवता॥ इसीअर्थकोस्पष्टकरतेहैं ॥ अविद्याहीसर्वभावोंकाउपादानकारणहैऐसे कहनेवालेवादीसेयहपूछाचाहियेक्या?इतरकारणजोमृत्तिकादंडकुलाल अदृष्टईश्वरादिहैंतिनकीअपेक्षासेविनाकेवलअविद्याहीकारणहै।अथवा अदृष्टईश्वरतथामृदादिकारणांतरकी अपेक्षासहित अविद्याकारणहै ॥ एवशब्दकाजोप्रथमअर्थ अन्ययोगव्यवच्छेदतिसकोप्रथमनिषेधकरतेहैं॥ प्रथमपक्षनहींसंभवता ॥क्योंकियदिकेवलअविद्याकोहीकारणमानोगे तोप्रपंचरूपकार्यमे नानापना नहींहोगा ॥ कारणनिष्ठ विचित्रता के अभावहोनेसे कार्यनिष्ठविचित्रताकी अनुपपत्तिहै एकपदार्थकोअवि-चित्रहोनेसेकार्यमेअनेकरूपतानहींहोसकती ॥ क्योंकिसामग्रीकोभेद कार्यकेभेदकासाधकहै ॥ जैसेश्वेतपीतादिवर्ण युक्ततंतुओंसे विचित्र पटकीउत्पत्तिहोतीहै केवलश्वेततंतुओंसेनहीं ॥ तैसेदार्ष्टांतमेभीजान लेना ॥ किंवा ॥ कारणरूपतासेस्वीकारकीहुईजोअविद्याहै।वहचेतन तोहैनहीं ॥ क्योंकितिसकोचेतनमाननेकरअविद्यात्वकीहानिहोतीहै॥ यातेवहजडहै। औरयदितिसकोजडमानो तोइसमेयहप्रष्टव्यहैक्या?वह आपहीकार्यकरनेमेप्रवृत्तहोतीहै ॥ अथवाचेतनकरप्रेरितहुईप्रवृत्तहोती है ॥ अंत्यपक्षतोनहींसंभवता॥क्योंकिचेतनकोभीतिसकीअधिष्ठानता

रूपसेकारणताकीप्राप्तिहुए अविद्यामात्रकारणहै इसतुम्हारे कथनकी हानीहोगी ॥ यातेचेतनकीअधिष्ठानतासेविनाआपहीकार्यकरनेको अविद्याप्रवृत्तहोतीहैयहप्रथमपक्षहीकहनाहोगा।वहभीनहींसंभवता।क्यों किजडशक्तिकोचेतनरूपअधिष्ठानसेविनाकार्यकरनेकीसामर्थ्यकहींदेख नेमेनहींआती॥ अतएवशब्दकाअर्थजोअयोगव्यच्छेदहै।तिसकेनिरास करनेलियेकारणांतरसापेक्षअविद्याकार्यकोरचतीहै इसद्वितीयपक्षकोनि षेधकरतेहैं।।औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता।क्योंकि अविद्याकोकारणता कहनेवालेसिद्धांतीनेभीअदृष्टईश्वरादिकोंकोकारणतातोअवश्यकहनी होगी ॥ यातेघटादिकार्यकानिमित्तकारणरूपताकरअदृष्ट ईश्वरादिकों काकारणसामग्रीमेप्रवेशहोनेसेऔरउपादानताकीअपेक्षाकोमृदादिकों करपूर्णहोनेसेलाघवकेबलकर तिनसेही विचित्रकार्यसिद्ध होजाएगा कारणरूपतासेअभिमत जोमिथ्याअज्ञानरूपअविद्यातिसके मानने का किंचित्मात्रभीफलनहीं ॥ शंका ॥ हेवादिन् अदृष्टादिकोंकी न्याई अविद्याकोभीप्रमाण सिद्धहोनेकरतिसको कारणताकैसेनहीं सिद्धहो सकती ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् "मैंअज्ञानीहूं" यहप्रतीतिही अज्ञानमेप्रमाणरूपकहनीहोगी। सोतोज्ञानकेप्रागभावकोविषयकरतीहै तिसकरअविद्याकी सिद्धिनहीं होसकती ॥ यातेअप्रमाणिक अविद्या जगतकाकारणनहीं ॥ शंका ॥ हेवादिन्वेदांतशास्त्रकी प्रमाणताके अर्थज्ञानज्ञेयरूपपदार्थअविद्योपादानकअवश्यमानेचाहिये।।समाधान।। हेसिद्धांतिन्प्रपंचको अविद्याउपादानकताके अभावहुएप्रत्यक्षादि लौकिकप्रमाणको औरपुत्रपशुस्वर्गादिकोंकेप्रति यागादिकोंकोसाध नताकेबोधक पूर्वकांडरूपवेदकोप्रमाणता संपादित होसक्तीहै ॥

औरयदिघटादिप्रपंचको आविद्यकमानेतोमिथ्या अर्थकोविषयकरनेवाले प्रत्यक्षादि लौकिकप्रमाणनिष्ठशुक्तिरजतज्ञानकीन्याईप्रमाणता नहीं होगी ॥ औरस्वर्गादितथायागादिकोंकोआविद्यकमानेहुए तिनका परस्परसाध्य साधनरूपसंबंधभीआविद्यकहीहोगा॥ तिसकोविषयकरने वालेपूर्वकांडरूपवेदकोभीप्रमाणतानहींहोगी ॥ औरलौकिकतथा वैदिकप्रमाणकी अप्रमाणतामानेहुए लोकवेदसेविरुद्ध किसपक्षको यहवादी आश्रयणकरेगा॥ अर्थयह कियह आविद्यकजगत्वादी वैदिकभीनहीं ॥ क्योंकिपूर्वकांडकी प्रमाणतानहींमानता ॥ और यहबौधभीनहीं । क्योंकिप्रत्यक्षादिकोंकोभी अप्रमाणकहताहै । इन दोनोंपक्षोंसेभ्रष्टहुआयह आविद्यकजगत् वादीकिस पक्षकोआश्रयण करेगा। औरयहजोपूर्वकहाथाकिजगतको आविद्यकमानेहुएवेदांतों मेंअप्रमाणताप्रसंहोगी । सोकथनभीनहींसंभवता । क्योंकिवेदांतोंको जपादि अर्थहोनेकरभी प्रमाणताबनसक्तीहै। जिसकारणसे अविद्याको कारणमानेहुएविचित्रताकी अनुपपत्तिहै। औरजिसकारणसे अविद्याजड शक्तिहै। औरजिसकारणसेप्रत्यक्षादिकोंमे प्रमाणताहै ॥ तिसीकारणसे ज्ञानज्ञेयरूपपदार्थोंकोअविद्यामात्रउपादानकताका अभावहै। याते अविद्या मात्रकोजगत्कीकारणताकथनकेवल सिद्धांतीका साहसमात्र अर्थात् विचारविनाकथनहै । इतिपूर्वपक्ष ॥१५॥

*अथसिद्धांत । सत्तथाअसतकीउत्पत्तिकेनिरास पूर्वकअविद्याकोजगतकारणताकीसिद्धिकाप्रकार *

समाधान। जोवादीनेपूर्व यहकथनकियाकिमृदादिकारणको त्यागकरअविद्याकोकारणताकाकथन अनुचितहै । इसपूर्वपक्षमेअविद्या

कोकारणताकाकथनउचितहै । इस सिद्धांतकोहम निरूपणकरतेहैं । अविद्याकोकारणताकैसेसिद्धहोतीहै । ऐसीआकांक्षाकेहुएकथनकरने योग्यअर्थकोकहतेहैं ॥

मू० ॥ यथासतोजनिर्नैवमसतोपिजानिर्नच ।
जन्यत्वमेवजन्यस्यमायिकत्वसमर्पकम् ॥ १६ ॥

विद्युन्माला ॥ साचाजैसेनाहींजामे । नाहींभूठेतैसेजामे । जन्यायासंसारेमाहीं । मायाकीताबोधेताहीं ॥१७॥

टी० ॥ हेवादिन्कार्यक्या?निर्वचनकेयोग्यहै अथवानिर्वचन केयोग्यनहींहै॥ प्रथमपक्ष मेभीयह विचारकर्तव्यहै ॥ वहकार्यक्या? आत्माकीन्याईसत्रूपहै।अर्थात्पारमार्थिकस्वरूपहै।अथवाशशशृंगकी न्याई असत्रूपअर्थात् तुच्छरूपहै।प्रथमपक्षतोनहींसंभवता॥ क्योंकि

॥ स्वसत्तासंबंधोहिजनिः ॥

अ० ॥ "स्व" कहियेकार्यकेसाथसत्ताकाजोसंबंधहैतिसको "जनि" कहियेउत्पत्तिकहतेहैं ॥ वहयहांनहींसंभवती क्योंकि अपनी सत्ताकेसाथसंबंधवालेसत्पदार्थमेअन्यसत्ताकेसंबंधकीअपेक्षाव्यर्थहै॥ औरउत्पत्तिवालाहीकार्यहोताहै ॥ औरसत्वस्तुसर्वकालमेउत्पत्तिरहित है ॥ तिसीसेसत्रूपताकरप्रपंचका निर्वचनकियेहुए तिसमेकार्यत्वकी हानिहोगी॥ और ॥एकमेवाद्वितीयम्॥

यहशास्त्रसजातीयादिभेदरहितएकअद्वैतआत्मामेउपक्रमादि षट्लिंगोंसेतात्पर्यवालाहै ॥ कार्यकोपारमार्थिकमानेहुए तिसकेसाथ विरोधभीप्रसक्तहोगा ॥ शंका ॥ ॥ मृत्तिकेत्येवसत्यं ॥

अ० ॥ मृत्तिकादीसत्रूपहै । यहशास्त्रप्रपंचकीसत्रूपताभी बोधनकरताहै । आपप्रपंचकोअसत्रूपकैसेकहतेहो ॥ समाधान ॥ हे वादिन्जो आगमतुमनेकहा सोयद्यपिसत्यहै । परन्तु तिसकास्वार्थमे तात्पर्य्यनहीं ॥ क्योंकि "एकमेवाद्वितीयम्" यहपूर्वकथनकिया जो शास्त्रसोआगेकथनकियेहुए अनुपपत्तिरूपतर्कसहकृतहुआ बलवान्है तिसकेसाथविरोधहोनेसेवहआगमअन्यार्थपरहै । अर्थयह । वहआगम कोईमृदादिप्रपंचकोसत्रूपनहींकहता । किंतुतिनकेअधिष्ठानसतब्रह्म कोहीसत्यरूपप्रतिपादनकरताहै। इसीअभिप्रायसेप्रपंचकेसत्यत्वमेअनु पपत्तिकोनिरूपणकरतेहैं।कार्यप्रपंचमेसत्यपनेकीअनुपपत्तिहैजिसप्रकार सोअनुपपत्तिहैसोदिखलातेहैं।हेवादिन्क्या?उत्पत्तिसेपूर्व यहकार्यसतहै वाअसतहै । यहांप्रथमअसत्पक्षकोअनुवादपूर्वक निराकरणकरतेहुए "असतोपिजनिर्नच" यहजोकारिकाकादूसरापादहै तिसकाव्याख्यान करतेहैं ॥ हेवादिन् यदिकार्यको असतकहोतो तिसमें यहविचार कर्तव्यहै ॥ ❀ स्वसत्तासमवायोजनिः ❀

अ० ॥ कार्यमेंजोसत्ताकासमवाय संबंधहैतिसकानाम उत्पत्ति है ॥ अथवा ॥ ❀ स्वकारणसंसर्गोजनिः ❀

अ०॥ कार्यकाकारणकेसाथजोसंबंधहै तिसकानामउत्पत्तिहै । सोयहदोनोंप्रकारकी उत्पत्तिअसत्तनिष्ठनहींसंभवती। क्योंकिअसत्में संबंधकीआधारता वासंबंधकी निरूपकतानहींहै ॥ औरकहींदेखनेमें भीनहींआती । तिसीसेप्रपंचकोयदि असत्रूपताकरनिरूपणकरोतो उत्पत्तिमत्ताकेअसंभवसेतिसमेंकार्यत्वकीहानिहै॥यातेकार्यअसत्रूपता

नहींहोजाती ॥ यातेसत्असत्पक्षभीनिर्युक्तिकहै ॥

* परिशेषसेप्रपंचकीअनिर्वचनीयताकेस्थापनपूर्वक अविद्योपादानकत्वकानिर्धार *

इसप्रकारसतरूपतासेतथाअसत् रूपतासेऔरउभेरूपतासेकार्यका निर्वचनन होनेकर सत्असत्सेविलक्षण अनिर्वचनीयहीकार्यहै यह माननाहोगा। ऐसेमाननेसेपूर्वउक्तदोषोंकी प्राप्तिनहींहोती॥ औरजब कार्यरूपप्रपंचकोअनिर्वचनीयमाना।तोसत्वस्तुकोतौतिसकीउपादान तानहींसंभवती।क्योंकिलोकमेकार्यकारणकीविलक्षणतादेखनेमे नहीं आती किंतुकार्यकेसदृश्यहीउपादानकारणकल्पनाकरनेयोग्यहै।।और

* योग्यःयोग्येनसंवध्यते *

अ० ॥ योग्यहीयोग्यकेसाथसंबंधवालाहोताहै। जैसेमनुष्यों कीउत्पत्तिमनुष्योंसे औरपशुओंकीउत्पत्तिपशुओंसेहोतीहै।इसन्यायसे भीअनिर्वचनीयप्रपंचकाअनिर्वचनीयहीकारणकल्पनाकरनेयोग्यहै ॥ सोऐसाअनादिअनिर्वचनीयमायारूपअज्ञानहै। तिसअज्ञानकोउपा- दानत्वकीकल्पनाकार्यप्रपंचनिष्ठकार्यत्वही अन्यथाअनुपपन्नहुआकरा ताहै।यातेतिसअज्ञानकोउपादानकारणताकाकथनअनुचितनहींकिंतु उचितहीहै।।इति।।शंका।।विलक्षणताकेहुएभीकार्यकारणभावक्यौंनहीं होताकिंतुहोसक्ताहै ॥ जैसेसत्यशुक्तिमिथ्या रजतका कारण लोकमे प्रसिद्धदेखनेमेआतीहै॥ तैसेसतहीअसत्प्रपंचकाकारणबनजायेगा ॥ समाधान ॥ हेवादिन्तहांभीशुक्तिका अज्ञानहीरजतकाकारणहैशुक्ति नहीं ॥ अन्यथा "नेदंरजतम्" इसबाधकालमेभीरजतरूपकार्यकीप्राप्ति

हुईचाहिये ॥ क्योंकितिसरजतकाकारणशुक्तिविद्यमानहै ॥ यातेवि-
लक्षणोंकाकार्यकारणभावलोकमेनहींदेखाजाता ॥

❋ अविद्यामात्रकारणवादमेवादीउक्तदोषोंका परिहार निरूपण ❋

औरजोवादीनेयहपूर्वकथनकियाथा। किकारणकी विचित्रता
केअभावसेकार्यमेंविचित्रताकी अनुपपत्तिहै ॥ सोकथनभीनहींसंभ-
वता॥ क्योंकिविचित्रशक्तिवाला अज्ञानहीउपादानरूपताकरकल्पना
कियाहै ॥ यहपूर्वकथनकरआएहैं ॥ "विचित्रशक्तिवालेएकअज्ञान
कोग्रहणकरकेअन्यथा अनुपपत्तिरूपतर्कविश्रामको प्राप्तहोताहै
"ऐसेपूर्वकथनकियाहै" यद्यपिअविद्याहीकारणहै। इसपक्षमेंचेतनरूप
अधिष्ठानसेविनाजडशक्तिको कार्यजननकीसामर्थ्यनहीं । तथापि
अविद्याकी अधिष्ठानता चेतनमेंमानेहुएभीज्ञानज्ञेयरूपपदार्थोंको
अविद्यामात्रउपादानकताका विरोधनहीं ॥ क्योंकितिसचेतनको
निमित्तमात्रताहै ॥ औरचेतनगतजोअविद्याकी अधिष्ठानताहै॥तिस
कोअविद्यारूपअधिष्ठेयकीअपेक्षासहितहोनेसेआविद्यकपनाहैयातेअवि
द्यामात्रकारणताकीहानीनहीं॥औरअदृष्टादिसापेक्षअविद्याकार्यकोकर
तीहै॥इसपक्षमेंजोवादीनेकहाथा॥किलाघवसेअदृष्टादिकहीकारणबन
सक्तेहैं अविद्यासेक्या प्रयोजनहै॥सोयहपक्षभी निरासहुआ।क्योंकि
अदृष्टादिकोंकोभीआविद्यकहोनेकरतिनकीकारणतासेअविद्याकोहीकार
णतासिद्धहोतीहै ॥ औरइसीकारणसे मृदादिकोंकोघटादिकोंकेप्रति
उपादानकारणताहोनेसे अविद्यासेक्याप्रयोजनहै ॥ इसवादीकेकथन
काभीनिरासहुआ ॥ क्योंकितिनघटादिकोंमेंभी मृदादिआकारपरि

णामकोप्राप्तहुईअविद्याकोही उपादानकारणताहै।।तिसकारणसेप्रपंच आविद्यकहीहैयहअर्थनिर्दोषसिद्धहुआ ॥ इति ॥ औरजोवादीनेपूर्वे यहकथनकियाथा। किमिथ्याप्रपंचगोचरजोलौकिक प्रत्याक्षादिप्रमाण तिनमेंप्रमाणताकी अनुपपत्तिहै औरमिथ्यास्वर्गतथायागके साध्यसाधन रूपसंबंधकाग्राहकपूर्वकांडरूपवेदकोमानेहुए तिसमेंभीप्रमाणताकी अनुपपत्तिहै । सोकथनभीअसंगतहै । क्योंकिलौकिकप्रमाणोंकोतो पूर्वउक्तयुक्तिसे अप्रमाणता होनेसेहीतिनमें प्रमाणताकीअनुपपत्ति दोषकेअर्थनहींहै । इसलियेतिनकीतोउपेक्षाहीहै ।

❀ प्रपंचकेआविद्यकपक्षमेंपूर्वकांड निष्ठप्रमाणताकानिरूपण ❀

औरपूर्वकांडरूपवेदमेंप्रमाणताकीअनुपपत्तिनहींसोईदिखलातेहैं। हेवांदिन्पूर्वकांडरूपवेदस्वर्ग औरयागकेसाध्यसाधनरूप संबंधमात्रमें तात्पर्यवालाहै। अथवातिनकेसाध्यसाधनभावके प्रतिपादनद्वाराब्रह्ममें हीतात्पर्यवालाहै ॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवना ॥ क्योंकि—

❀ स्वाध्यायोऽध्येतव्यः ❀

इसअध्ययनविधिकाविरोधहै ॥ तिसविरोधकोहीस्पष्टकरतेहैं ॥ अध्ययनविधिप्रयोजनवाले अर्थकेज्ञानकाउद्देश्यकरके वेदाऽध्ययनका विधानकरताहै ॥ औरयागकोप्रयोजनवत्तासंभवतीनहीं ॥ क्योंकि स्वर्गादिकोंकोविनाशीहोनेसे प्रयोजनाऽभासपनाहै । तिसस्वर्गकेसा धनयागकोपारमार्थिकप्रयोजनकीसाधनताअनुपपन्नहै ॥यातेस्वर्गऔ यागकेसाध्यसाधनमात्रअर्थमे यदिपूर्वकांडात्मकवेदकातात्पर्यकथनकरें तोअध्ययनविधिकाविरोधकैसेनहींप्राप्तहोगा ॥ औरअध्ययनविधित्रै वर्णिकपुरुषोंकोकोईवहकावनेकेनिमित्तनहीं है॥ यातेसाध्यसाधनमात्र

मेपूर्वकांडकातात्पर्यहैयहकथनव्यर्थ है ॥ और द्वितीयपक्षमे प्रमाणता कीअनुपपत्ति नहीं ॥ क्योंकितिस पूर्वकांडका ब्रह्ममेहीतात्पर्यहै ॥ शंका ॥ पूर्वकांडमेब्रह्मकीअप्रतीतिहोनेसेतिसमेतात्पर्यका संभवकैसे होसकताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्पूर्वकांडप्रथमयागऔस्वर्गादिकों केसाध्यसाधनभावकोवोधनकरताहै तिसकेज्ञानसेप्रथमपुरुष कर्मोंका अनुष्ठानकरताहै ॥ अनुष्ठानकियेहुएकर्मब्रह्मज्ञानको सिद्धकरतेहैं ॥ यातेतैसेकर्मोंकाबोधकजोपूर्वकांडहै ॥ तिसकाब्रह्ममेतात्पर्य परंपरासे बनसकताहै ॥ *शंका* ॥ *उपनिषद्रूपवेदांतोंकोही ब्रह्मज्ञानकासाधन* होनेसेतिसज्ञानकेप्रतिकर्मोंकोसाधनतानहींसंभवती ॥ समाधान ॥ हे वादिन्अंतःकरणकीशुद्धिप्रथमज्ञानकाअंगहै ॥ क्योंकिस्मृतिमेअंतः करणकीशुद्धिकोज्ञानकाअंगत्वकथनकियाहै ॥

*** ज्ञानमुत्पद्यतेपुंसांक्षयात्पापस्यकर्मणः ***

अ० ॥ "पुंसां" पुरुषोंको (पापस्यकर्मणः) पापकर्मके (क्षयात्) नाशहोनेसे (ज्ञानं) ज्ञान (उत्पद्यते) उत्पन्नहोताहै ॥ औरअंतःकरण कीशुद्धिकर्मोंसेहोतीहै ॥ यहवार्ताभीस्मृतिमेकथनकीहै ॥

कषायेकर्मभिःपक्वे

अ० ॥ कर्मोंसेपापोंकीनिवृत्तिहुएशुद्धअंतःकरणमेज्ञानहोता है ॥ यातेअंतःकरणकीशुद्धिद्वाराकर्मोंकाज्ञानमेउपयोगहै ॥ इसरीति सेकर्मोंकाज्ञानमे उपयोगबोधनकरनेवाले पूर्वकांडात्मकवेदकाब्रह्ममे तात्पर्यहै ॥ शंका ॥ नित्यकर्मोंकोफलसे शून्यहोनेकर तिनकोअंतः करणकीशुद्धिकीकारणताहो परन्तुकाम्यकर्मोंकातोअन्यस्वर्गादिफल होनेसेतिनकोशुद्धिकीकारणताकैसेहोसकतीहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्

नित्यकर्मोंकोनिष्फलताकीत्र्प्रसिद्धिहै ॥ क्योंकि-

※ कर्मणापितृलोकः ※

इसश्रुतिनेसाधारणकर्ममात्रसेपितृलोककीप्राप्तिकहीहै ॥ श्रौर संयोगपृथक्त्वन्यायसेयागादिकर्मोंकोशुद्धिअर्थतामाननेमेंकोईविरोध नहीं ॥ संयोगपृथक्त्वन्यायकायहअर्थहै ॥ पूर्वमीमांसामे

एकस्यतूभयत्वेसंयोगपृथक्त्वं॥ अ० (४) पा० (३) सू० (५)

यहसूत्रहै ॥ तिसकायहअर्थहै (एकस्य)एककर्मको (उभयत्वे) उभयअर्थत्वमेंसंयोगपृथक्त्वनियामकहै अर्थात्विधिवाक्यकाजोभिन्न पठनहैसोनियामकहै जैसे "**खादिरोयूपोभवति**" श्रौर "**खादिरं वीर्य्यकामस्य**" यहांएकहीखादिरको यज्ञार्थत्वश्रौरपुरुषार्थत्वरूप उभयअर्थत्वमेंइसपूर्वउक्तविधिवाक्यकाभिन्न पठननियामकहै। तैसेस्व र्गादिफलकेअर्थजोयागादिकर्महैं तिनकोविविदिषावाक्यनेअंतःकरण कीशुद्धिकेअर्थबोधनकियाहै । यातेइसन्यायसे सर्वकर्मोंकोसंस्कार अर्थत्वमाननेमेंविरोधनहीं है॥ अथवाविविदिषामेंकर्मोंका विनियोगहै इसपक्षकोआश्रयण करकेपूर्वकांडकीअप्रमाणताका परिहारकरतेहैं॥ श्रवणादिकोंमेंप्रवृत्तिद्वारा पूर्वकांडकाब्रह्ममेंतात्पर्यहै यहांयहअर्थज्ञात व्यहै ॥ कर्मकेस्वरूपमात्रका बोधकविधिवाक्यउत्पत्तिविधिकहाजाता है । जैसे "सोमेनयजेत "यहवाक्यहै । तिसउत्पत्तिविधिवाक्यकरप्रथम विधानकियेजोकर्महैं तिनकोफलकीआकांक्षा अवस्थामेंजैसेअधि कारविधिदूसरा प्रवृत्तहोताहै ॥ फलविशेषकेसंबंधका बोधकविधि अधिकारविधिकहियेहै । जैसे "ज्योतिष्टोमेन स्वर्गकामोयजेत"यह वाक्यहै । तैसेही "यज्ञेनविविदिषंति" इत्यादिफलविधायकवाक्यकी

प्रवृत्तिहोतीहै तिसवाक्यकायहसार अर्थसिद्धहुआ॥ "ब्रह्मज्ञानकीका मनावालापुरुषयागादिकर्मोंकाअनुष्ठानकरे" इसवाक्यसेकर्मोंकोसा मान्यरूपतासेब्रह्मज्ञानकीसाधनताप्रतीतहोतीहै।।औरसाक्षात्कर्मसाध्य त्वज्ञानमेंबाधितहै। याते अंगावतरणन्यायसेज्ञानके साधनश्रवणादिकों मेंप्रवृत्तिद्वारातिनकर्मोंको ब्रह्मज्ञानकीसाधनताप्रतीतहोतीहै ॥ तिस हेतुसेतैसेकर्मोंकाबोधकजोपूर्वकांडात्मकवेदहै तिसकोब्रह्मपरताका संभवहै।कैसेतिसकी अप्रमाणतातुमकहतेहो॥ अंगावतरणन्यायका यहअर्थहै। जोसाधनअंगीमेंबाधितहोकरअंगमें "अवतरण" अर्थात प्राप्तहोतिसकोअंगावतरणन्यायकहतेहैं ॥ जैसे 'पंचदशारत्निः **वाजपेयस्य ।'** अ० ॥ वाजपेयसंज्ञकयागकायूपपंदरह अरत्निः होताहै।इसवाक्यसे वाजपेयरूपअंगीयागमें यूपअाकांक्षापूरितहोनेकर **(सप्तदशारत्निः वाजपेयस्य ।)** अ० ॥ वाजपेयसंज्ञक यागकायूपसतरह अरत्निः होताहै । इसवाक्यउक्तयूपकावाजपेयमें बाधहोताहै इसीसेतिसकेअंगरूपमित्रविन्दादियागोंमें तिसयूपकी प्राप्तिहै।यहांमुष्टिकोबांधकरकनिष्टकाअंगुलीकेविस्तारयुक्तहस्तपरिमा णकानामअरत्निः है । तैसेप्रकरणमेंकर्मोंकाज्ञानमें बाधहोनेसेति सके अंगरूपश्रवणादिकोंमेंतिनकीप्राप्तिहै ॥ इति ॥ शंका ॥ पूर्वउक्तप्रकारसेब्रह्मविषयकपूर्वकांडरूपवेदका तात्पर्यहो । तथा पितिसमेंप्रमाणताकासंभव कैसेहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् ❀ **यत्परःशब्दः सशब्दार्थः।**❀ अ० । जिसअर्थमेंशब्दकातात्पर्य हो वहीशब्दकाअर्थहोताहै।इसन्याय सेतात्पर्यकेविषयभूत अर्थमेंही शब्दकी प्रमाणताहोतीहै । यातेपूर्व कांडमेंप्रमाणता संभवतीहै ॥

जिसकारणसेजगत्को अज्ञानउपादानकमानेहुएएकदोषभीनहींप्राप्त होसकता तिसीकारणसेज्ञानज्ञेयरूप पदार्थोंको अविद्योपादानकत्व शोभनकथनकियाहै ।

*जगत् को आविद्यकत्वसाधनकाफल तथा दृष्टिसम कालीन दृष्टि सृष्टि पक्षकाउपसंहारनिरूपण *

आविद्यकजगत्केसिद्धकरनेकाक्या?फलहै । ऐसीजिज्ञासाके हुएकहतेहैं । हेत्वादिनप्रातीतिकसत्ताकीसिद्धिहीतिसकाफलहै । अर्थात् अविद्याहीप्राणियोंकेकर्मोंकीवशतासेक्षोभकोप्राप्तहुईजगताकाररूपता सेतथातिसकीप्रतीति आकाररूपतासे एककालमेंही परिणामकोप्राप्त होतीहै । क्योंकिक्रमसेपरिणामहोनेमेंकोईनियामकनहीं ॥ औरतिस काकोईप्रयोजनभीनहीं । औरज्ञप्तिनिष्ठविषयजन्यता अंगीकारनहींहै औरतिसमेंआकारकीसमर्पकताविषयकोअजनकमाननेसेभीवनसकती है ॥ जैसेमुखदर्पणकाअजनकहुआभीतिसमें प्रतिबिंबकोसमर्पणकर देताहै ॥ तैसेप्रकरणमेंभीजानना ॥ इसरीतिसेविषयऔरज्ञानकाएक कालमेंपरिणामहोनेसेप्रतीतिसमकालीनही विषयकीसत्ताउचितहै ॥ क्योंकिरज्जुसर्पऔशुक्तिरजततथा गंधर्वनगर औरस्वप्नप्रपंच इनसर्वमें प्रतीतिसमकालीनताहै ॥ तैसेजाग्रतप्रपंचमेंभीप्रतीतिसमकालीनताहै यहांपरयहअनुमानजानना ॥

* विमतः प्रपंचः प्रतीतिसमकालीनः अविद्योपा- दानत्वात् रज्जु सर्पादिवत् *

अ० ॥ विवादकाविषयजोप्रपंचहै ॥ सोप्रतीतिसमकालीनहै अविद्योपादानकहोनेसे ॥ जोजो अविद्योपादानकहै ॥ सोसोप्रतीति

समकालीनहै जैसेरज्जुसर्पादिकहैं ॥ इति ॥ १६ ॥ पूर्वउक्तअर्थकेसंग्रह काश्लोक ॥

॥ ॐप्रतीतिमात्र कालीनं घटाद्यविद्यकंयतः ॥
रज्जुसर्पादिकंयद्वत्तथाचेदंततस्तथा ॥१॥

चौ० ॥ घटादिअविद्यकहैंयाते । प्रतीतिसमसत्ताहैताते । रज्जुसर्पादिकहैंजैसे । तातेयहजगजानोतैसे ॥१॥

ॐ इतिदृष्टिसमकालीनसृष्टिरूपदृष्टिसृष्टिवाद ॐ

ॐअथदृष्टिमात्र सृष्टिरूपदृष्टिसृष्टिवादनिरूपण तथाज्ञानज्ञेयकेभेदका निराकरण निरूपण ॐ

दो० ॥ वेदवतीपतिवाकपतिश्रीगुरुनानकआदि । तिनपद पद्मनपद्मवरनमोदंडवतआदि ॥ १ ॥ ममचितमेथिरहोसदाहनियेविघ्न प्रमाद ॥ दुर्गमभीसुगमोभवततुमरेतनकप्रसाद ॥२॥

प्रतीतिमात्रकालीनंजगद्युक्त्यानिरूपितं ॥
प्रतीतिव्यतिरेकेण सत्त्वंचास्यनिवार्यते ॥१॥

सो० ॥ जगदृष्टीकालीनयुक्तीकरनिर्णयकियो ॥
दृष्टिमात्रअवचीनसत्ताजगकीगावते ॥१॥

शंका ॥ हेसिद्धांतिन्प्रतीतिसमकालीनजगत्की सत्ताकहनी उचितहै यहआपनेपूर्वकहा तिसमेएकजगत्कीसत्ताऔरदूसरीज्ञानकी सत्ताहै इसप्रकारदोसत्ताभानहोतीहैं ॥ जैसेघटमात्रकालीन जोपटहै वहघटसेभिन्नसत्तावालानहींहै यहकथनतोसंभवतानहीं । क्योंकिएक कालमेउत्पत्तितथाविनाशकोप्राप्तहुएजोघटपटहैं तिनकाभेदहोनेकरएक सत्ताकीअयोग्यताहै ॥ तैसेज्ञानतथाज्ञेयकोपरस्परभिन्नहोनेसे तिनकी

सत्ताकाएकत्वभीयुक्तनहींहै ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुएयहवक्ष्माणप्रकार जोबुद्धिमेस्थितहै वहनिरूपणाकरनेयोग्यहै ॥ कौनवहप्रकारनिरूपणीयहै ऐसीजिज्ञासाकेहुएकहतेहैं ॥

मू० ॥ प्रतीतिमात्रसत्वंचेत् सत्वं प्रातीतिकंमतम् ॥
अविरोधान्ममापीष्टंतद्भेदेवदकाप्रमा॥१७॥

चासंतीछंद ॥ ज्ञातासत्ताजानजगतकीहीमेठानो । ज्ञानाते नोभिन्नतनकताकोजोमानो । मोकोभीहैइष्टविरुधतानाकोराई । ताके भेदेमाहिप्रमितिकोभापोभाई ॥१८॥

टी० ॥ हेवादिन् प्रातीतिकसत्ताजोहै वहयदि प्रतीतिमात्रही सत्ताहै । अर्थातप्रतीतिकीसत्तासेभिन्नवहसत्तानहीं तोइसमेविरोधका अभावहोनेसेहमकोभी स्वीकारहै । औरपूर्वउक्तयुक्तिसेज्ञान तथाज्ञेय काभेदहोनेसेज्ञानकीसत्तासेज्ञेयकी सत्ताभिन्नहै । यदिऐसेकहो।तो हे वादिन्तिनदोनोंकेभेदमेकौनप्रमाणहै।यहतुमकथनकरो।औरवक्ष्माण रीतिसैतुमकोईप्रमाणनहीं निरूपणाकरसकते । तिसकारणसेज्ञानऔर ज्ञेयकेभेदमेकोईभीप्रमाणनहीं ॥ इति ॥ अत्रविस्तारसेश्लोककीव्याख्याकरनेकेलियेभूमिकारचनाकरतेहैं ॥ हेवादिन्प्रतीतिसमकालीन जगत्कीसत्ताहैइसकाक्या अर्थहै। क्या? प्रतीतिमात्रहीसत्ताहै। अर्थात् ज्ञेयपदार्थप्रतीतिरूपहीहै।यातेतिनकाअभेदहोनेसे ज्ञेयकीसत्ताज्ञानकी सत्तासेभिन्ननहीं। अथवाप्रतीतिसेभिन्नकरकेजगत्की पृथक्सत्ताहै। अर्थातज्ञानतथाज्ञेयकाभेदहोनेसे तिनदोनोंकीसत्ताकाभीभेदहै।प्रथम पक्षतोसिद्धांतरूपताकर स्वीकारहोनेसे तिसकोत्यागकर अंत्यपक्षको दूषितकरतेहैं हेवादिन्तिसज्ञानतथाज्ञेयकेभेदमेकोईप्रमाणहैवानहीं ।

ज्ञानसेभिन्नकरकेप्रपंचकीपृथक्सत्तामेंयदिकोईप्रमाणनहीं॥तोप्रमाण केअभावसेज्ञानऔज्ञेयकाभेदसिद्धनहींहोगा।औरज्ञानतथाज्ञेयकेभेदका कियाहुआ तिनकीसत्ताकाभीभेदनहींसिद्धहोगा । इसरीतिसेअंतिम पक्षकोनिषेधकरकेअबआद्यपक्षकोविस्तारपूर्वकनिषेधकरनेकेअर्थअनु वादकरतेहैं । हेवादिन्यदिप्रमाणहैयहप्रथमपक्षकहोतोवहकौनप्रमाण है।अर्थात्क्या?वहप्रत्यक्षप्रमाणहै। अथवाअनुमानहै। वाआगमहै। वा अर्थापत्तिहै॥यहांउपमानप्रमाणकोकेवलसादृश्यमात्रगोचरहोनेसेतिस काकथननहींकिया ॥ और अनुपलब्धिको अभावमात्रगोचरहोनेसे तिसकाभीकथननहींकिया ॥

❋ अथ ज्ञानज्ञेय के भेदमेंप्रत्यक्षप्रमाणका खंडन ❋

ज्ञानऔज्ञेयकेभेदमे प्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ इसप्रथमपक्षकोदूषित करनेकेलिये अनुवादपूर्वकतिसमें विचारकरतेहैं । प्रथमपक्षमें "अयं-घटः" यहजोप्रत्यक्षज्ञानहै॥वहअपनेसेघटकेभेदकोअर्थात् "अयंघटः" इसप्रकार केआकारवाले स्वस्वरूपभूतज्ञानसे घटअनुयोगिक भेदको प्रकाशकरताहैअथवा "यहघटइसका" विषयकरनेवालेज्ञानसेभिन्नहै॥ इसप्रकारकाजोअन्यप्रत्यक्षहैवहतिनदोनोंकेभेदकोविषयकरताहै।स्वप्र-तियोगिकऔविषयअनुयोगिक भेदकोआपही "अयंघटः" यहप्रत्यक्ष ज्ञानग्रहणकरताहै॥यदियहप्रथमपक्षकहोतोतिसमेंभीयहविचारकर्तव्य है।क्या?"अयंघटः"यहप्रत्यक्षस्वप्रकाशहैअर्थात्अन्यकिसीज्ञानकाविषय नहुआअपरोक्षव्यवहारकेयोग्यहै। अथवापरप्रकाशहै। अर्थात्अन्यज्ञान काविषयहुआ अपरोक्षव्यवहार केयोग्यहै। "अयंघटः" यहप्रत्यक्षस्वप्र-काशहुआस्वप्रतियोगिक औस्वविषयअनुयोगिक भेदकोआपहीग्रहण

करताहै। इसप्रथमपक्षको अनुवादकरकेदूषितकरतेहैं।

※ स्वप्रकाशप्रत्यक्षको भेदकीग्राहकता कानिषेधनिरूपण ※

स्वप्रकाशपरप्रकाश इनदोनोंमेंप्रथमपक्षमेंतोअपनेसेआपहीउत्पन्न हुआयहप्राप्तहोताहै। क्योंकिस्वविषयका विशेषणरूपकर भेदकाभान हुएऔरविशिष्टज्ञानको विशेषणज्ञानजन्यमानेहुएअपनेकरहीभेदरूप विशेषणकाग्रहणहुएअपनेसे अपनीउत्पत्तिप्राप्तहुई। इसीअर्थकोस्पष्ट करतेहैं। "अयंघटः" यहप्रत्यक्षस्वप्रतियोगिकभेदको घटअनुयोगिक रूपतासेग्रहणकरताहुआ "मत्तोभिन्नोघटः" अ० मेरेसेघटभेदवालाहै इसप्रतीतिकेअनुसारविशेष्यघटकाविशेषणरूपताकरभेदकोग्रहणकरता है। अथवा "मद्घटयोर्भेदः"॥अ०॥ मेराऔरघटकाभेदहै। इसप्रतीति केअनुसारस्वभेदको विशेष्यरूपताकर ग्रहणकरताहै। यदिस्वविषयका विशेषणरूपताकर स्वप्रतियोगिकभेदकोप्रत्यक्षग्रहणकरताहै यहआदि पक्षकहो।तोतिसमेंभीयहविचारकर्तव्यहै।क्या?विशिष्टज्ञानविशेषणज्ञान औरविशेष्यकेसाथ इन्द्रियसन्निकर्षसेजन्यहोताहै अथवाविशेषणतथा विशेष्यकेसाथ इन्द्रियसन्निकर्षसे जन्यहोता है। विशेषणज्ञानजन्य विशिष्टज्ञानहै।इसपक्षमेंभीयहविचारकरणीयहै। विशेषणरूपभेदकाग्राह कज्ञानयही प्रत्यक्षहैजोभेदकाग्राहकरूपताकर स्वीकारकियाहै।अथवा इससेभिन्नहै। यदिप्रथमपक्षकहो तोविशिष्टज्ञानजो स्वप्रतियोगिक औ स्वविषयअनुयोगिकभेदका ग्राहकरूपताकरस्वीकार है सोईहीविशिष्ट भेदज्ञानकाजनकरूपतासे अभिमतविशेषणभेदकाज्ञानहोनेकर अपने सेआपउत्पन्नहोताहै।यहपूर्वउक्तदोषकेसेनहींप्राप्तहोगा।अपनेसेअपनी

उत्पत्तिमाननेमेंकौनदोषहोताहै ऐसीजिज्ञासाकेहुएकहतेहैं. इतरकेव्य वधानसेविना अपनी उत्पत्ति में कारण रूपताकर अपनी अपेक्षा होनेसेआत्माश्रयदोष प्राप्तहोताहै ॥ इति। अत्रआत्माश्रयदोषकेदूर करनेकेलियेप्रत्यक्षस्वप्रति योगिकभेदकोविशेष्यरूपतासेग्रहणकरताहै। इसद्वितीयपक्षकोवादी उठाताहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन् "अयं घटः" यहप्रत्यक्षभेदकोविशेष्यरूपतासे ग्रहणकरताहै ॥ इसपक्षमें घटरूपधर्मीतथाप्रत्यक्ष रूपप्रतियोगीकोभेदका विशेषणपनाहै ॥ तिनमेंप्रतियोगिरूपप्रत्यक्षतो स्वप्रकाशरूपताकरभानहोताहै ॥ और घटरूपअनुयोगीस्वगोचर "अयंघटः" यहजोप्रत्यक्षज्ञान तिसकरभान होताहै। इसप्रकारविशिष्टभेदप्रत्यक्षको विशेषणविशेष्य दोनोंकेसाथ इन्द्रियसंबंधसेजन्यमानेहुएभीअपनेसेअजन्य होनेकरआत्माश्रयदोष कीप्राप्तिनहींहोसकती ॥ समाधान ॥ हेवादिन्इसरीतिसेभेदको विशेष्यरूपताकरभानपक्षमे विशेष्यकेसाथ इन्द्रियसन्निकर्षजन्यत्व कोलेकर विशेषणविशेष्यदोनोंकेसाथइन्द्रियसन्निकर्षजन्यविशिष्टज्ञान है ॥ इसपक्षमेही आत्माश्रय दोषदेनेकोभूमिका रचनाकरतेहैं ॥ हे वादिन्ज्ञानकीउत्पत्तिसेपूर्वभेदकीसत्ताकहनेयोग्यहै ॥ अर्थात्भेदके ग्राहकरूपप्रत्यक्षज्ञानको विशेषणविशेष्यदोनोंकेसाथ इन्द्रियकेसंबंध जन्यमानेहुएऔभेदकोविशेषणरूपवाविशेष्यरूपकरभानहुए भेद के साथइंद्रियकासंबंध ज्ञानकीउत्पत्तिसेपूर्वअवश्यकहनाचाहिये।क्योंकि भेदकेसाथजोइंद्रियकासंबंधवहभेदकेग्राहकविशिष्टप्रत्यक्षकाजनकहै ॥ तथाइंद्रियसन्निकर्षकाभेदको आश्रयपनाहोनेसेभीतिसकेअर्थभेदकी सत्ताअवश्यकहनेयोग्यहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन् इसरीतिसेभेदकी

सत्ताहोपरन्तुतैसामानेहुएक्या?सिद्धहोताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् तैसेमाननेमेयहविचारकर्तव्यहै ॥ इंद्रियकेसंबंधकाआश्रयजोभेदहै ॥ वहअपनेग्राहकप्रत्यक्षको ज्ञातहुआउत्पन्नकरताहै अथवाअपनीसत्ता मात्रसेउत्पन्नकरताहै ॥ यदिज्ञातहुआउत्पन्नकरताहै यहप्रथमपक्षकहो तोजिसकरभेदज्ञातहुआहै वहज्ञानयहीहै जोभेदकाग्राहकरूपताकर स्वीकारहै।अथवा वहज्ञानइससेअन्यहै॥प्रथमपक्षतोनहींसंभवता क्यों कितिसीज्ञानकावहभेदकैसेविषयहोसकताहै अर्थात्स्वप्रतियोगिकऔ स्वविषयअनुयोगिकभेदकाग्राहकरूपताकर अंगीकारकियाजोविशिष्ट प्रत्यक्षतिसकाकारणरूपभेदविषयनहींबनसकता॥कारणयहकिअपनी उत्पत्तिसेपूर्वअपनाअभावहै। औरयदिज्ञानकासद्भावप्रथममानलें तो आत्माश्रयदोषपुनः प्राप्तहोगा ॥इति॥ इसप्रकारप्रथमपक्षकोनिषेध करकेअबभेदकाग्राहकरूपताकरस्वीकारजो विशिष्टज्ञानतिसकीउत्पत्ति सेपूर्वजोभेदकाज्ञानहै। वहऔरहीज्ञानहै।यातेआत्माश्रयदोषकी प्राप्ति नहीं।इसद्वितीयपक्षकोउठाकरदूषितकरतेहैं ॥ यहांपरयहतात्पर्यजानने योग्यहै ॥ वहज्ञानांतर क्या?निर्विकल्पकहै।अथवा। सविकल्पकहै ॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता॥क्योंकिभेदकोएकसविकल्पकज्ञानहीविषय करसकताहै ॥ औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता ॥ क्योंकिज्ञानांतरका " अयंघटः " यहज्ञानस्वयंप्रकाशहोनेसे विषयनहींहै ॥ इसीकारणसे तत्प्रतियोगिकभेदकोवहअन्यज्ञानविषयनहींकरसकता ॥ शंका ॥ आगेहोनेवालाजोप्रतियोगिरूपज्ञान तिसकोवर्त्तमानकालमेनहोनेसे स्वप्रकाशरूपताकाअभावहै तिसीसेउसकोविषयकरनेवालेभेदज्ञानकी अनुपपत्तिनहीं ॥ समाधान ॥ अवर्त्तमानताकोज्ञानकीपरप्रकाशता

मेहेतुकहनेवालेवादीने वर्त्तमानकालीनज्ञानकोत्र्यर्थसे स्वप्रकाशता प्रतिपादनकी । तिसज्ञानकीस्वप्रकाशतामेवर्त्तमानत्वहेतुहै । अथवा ज्ञानत्वतिसकाप्रयोजकअर्थात्साधकहै ॥ प्रथमपक्षमेतोवर्त्तमानकाल उपाधिकस्वप्रकाशपनासिद्धहोगा ॥ तैसेमानेहुएज्ञानका स्वाभाविक स्वप्रकाशपनाअंगीकारहै इसपक्षकीहानी होगी॥ औरवर्त्तमानकाल मेज्ञानकास्वरूपहीस्वप्रकाशहै यदियहद्वितीयपक्षमानो तोयहभीनहीं संभवता क्योंकिज्ञानत्वहेतुको तुल्यहोनेसे अतीतऔभविष्यतज्ञानोंमे भीस्वप्रकाशताकीप्राप्तिहोगी ॥ जैसेकालभेदसेकदाचित्भीघटअघट रूपनहींहोता ॥ तैसेकालभेदसेज्ञानकवीभीपरप्रकाशनहींहोसकता ॥ औरअतीततथाभविष्यतज्ञानमेज्ञानत्वहेतुहीनहीं।यदिवादीऐसेकहेतो प्रत्येकवस्तुकेस्वभावकात्यागप्रसक्तहोगा॥ औरविशिष्टज्ञानविशेषणज्ञान सेजन्यहै।इसप्रथमपक्षकेअवांतरभेदकाविशेषणरूपतासेभानहोताहै।इस पक्षमेविशेषणज्ञानविशिष्टज्ञानसेभिन्नहै ॥यहपक्षपूर्वकहाथासोपक्षभी इसभेदज्ञानकेनिराकरणसेनिरसहुआजानलेना।क्योंकिवहभेदकाज्ञान सविकल्पकहै । वानिर्विकल्पकहै इत्यादिविकल्पकी प्राप्तिइसपक्षमेभी समानहीहै ॥ इसलियेइसकोजुदानिषेधकरनेकाप्रयत्ननहींकिया ॥ औरइंद्रियसन्निकर्षकाआश्रयरूपभेदस्वसत्तामात्रसेस्वविषयकज्ञानका जनकहै यहद्वितीयपक्षभीकेवलकथनमात्रहै ॥ शंका ॥ प्रत्यक्षज्ञान मेसंबंधभीभासताहै।औरवहसंबंधभेद तथाइंद्रियकायथायोग्य विशेषण विशेष्यभावहै । ज्ञानप्रत्यासत्तिरूपसंबंध नहीं। तिसकारणसेस्वरूपसे विद्यमानभेदको स्वज्ञानकेप्रतिजनकपना प्रक्रियामात्रहै । यहआपकैसे कथनकरतेहो ॥ समाधान॥ हेवादिन्भेदमेप्रमाणकेअभावसेतिसकी

सत्तानहींसिद्धहोसकती।वहअसत्भेदस्वगोचरज्ञानकोंकैसेउत्पन्नकरेगा औरजोविशेषण विशेष्यभावप्रत्यासत्ति पूर्वकथनकीहै। वहअवश्यहो परन्तुवहसत्पदार्थकीहोतीहै असत्कीनहीं।औरभेदकीसत्ताप्रमाणके आधीनहै।यातेभेदविषयकप्रत्यक्षसेप्रथमभेदकीसत्ताकाग्रहणकरनेवाला प्रमाणअवश्यअन्वेषणकरनेयोग्य है।और तिसकाअभावहोनेसेभेदकी सत्तानहीं।औरअसत्भेदज्ञानकोउत्पन्नकैसेकरेगा।औरभेदकीसत्ताकाअ भावहोनेसेविशेषणविशेष्यरूपप्रत्यासत्तिकाभीअभावभलीप्रकारसिद्ध हुआ ॥शंका॥ यद्यपि "अयंघटः" यहप्रत्यक्षहीस्वप्रकाशहुआअपने विषयकेभेदकोग्रहण करताहै ॥ यहपक्षनहींसंभवता। यहपूर्वकथन किया ॥ तथापिवहीप्रत्यक्षपरप्रकाशहुआ स्वसेस्वविषयकेभेदको ग्रहणकरताहै इसपक्ष मेंपूर्वकथनकियेहुए आत्माश्रयादिदोषकीप्राप्ति भीनहीं ॥ क्योंकिपरप्रकाशप्रत्यक्षपक्षमें"अयंघटः"इसज्ञानप्रतियोगि कऔविषयअनुयोगिक भेदकाग्राहकऔरज्ञानहै। यातेऐसामाननेमें कोईअनुपपत्तिनहीं ॥समाधान॥ हेवादिन्ऐसेमाननेमेंयहही प्रत्यक्ष भेदकोविषयकरताहै यहतुम्हारीप्रतिज्ञाभंगहोगी ॥ यातेयहपक्षभी असंगतहै ॥ औरस्वप्रकाशज्ञानपक्षमेंप्रतियोगिरूपप्रत्यक्षकोअवेद्यहोने से स्वप्रकाशज्ञानप्रतियोगिक भेदकोऔरकोईज्ञानविषयकरनेकोसमर्थ नहींहोसकता ॥ इसपक्षकोत्यागकरपर प्रकाश ज्ञानपक्षमेंप्रत्यक्षांतर करज्ञानसेज्ञेयकाभेदग्रहणहोताहै। इसपक्षकोवादीउठाताहै ॥शंका॥ हेसिद्धांतिन् "अयंघटः" इसप्रत्यक्षकोस्वप्रकाशरूपताकरभेदकाअग्रा हकहुएभीपरप्रकाशज्ञानपक्षमें प्रत्यक्षांतरकरज्ञानसेज्ञेयकाभेदग्रहणहो जायेगाइसमेंकोईदोषनहीं ॥ यहांप्रतियोगिरूपप्रत्यक्षसेभिन्नप्रत्यक्षका

नामभत्यचांतरहै । अबइसपक्षकोदूषित करनेकेलियेविकल्पकरतेहैं ॥

* ज्ञानपरप्रकाश पक्षमेंप्रत्यक्षांतरकोज्ञानज्ञेयके भेदकीग्राहकताकानिषेध *

समाधान ॥ हेवादिन्‌वहदूसरा प्रत्यक्षभीव्यावृत्तअर्थातभिन्न प्रतियोगीआदिकोंके ज्ञानपूर्वकभेदकोग्रहणकरताहै । वानहीं । यह विचारकर्तव्यहै ॥ प्रतियोगीआदिकोंके ग्रहणपूर्वकभेदकाग्रहणप्रत्यक्षनहींकरता । यदियहअंत्यपक्षमानों । तोवहभेदकोकैसेविषयकरेगा ॥ शंका ॥ प्रतियोगीआदिकोंकोविषयनकरकेवहप्रत्यक्षभेदकोक्योंनहीं विषयकरसकता ॥ समाधान ॥ हेवादिन्‌धर्मीसेविनातथाप्रतियोगी सेविनाकेवलभेदमात्रको कोईज्ञानविषयनहींकरसकता ॥ यहांपरयह तात्पर्यजाननेयोग्यहै ॥ भेदकाग्रहणकरनेवाला जोअन्यप्रत्यक्षहै । वहनिर्विकल्पकहै । वासविकल्पकहै ॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकिभेदको समवायादिकोंकीन्याई एकसविकल्पकज्ञानकरहीवेद्यपनाहै । औरद्वितीयपक्षमंभी यहविचारकर्तव्यहै । वहसविकल्पकज्ञान प्रमेयरूपतासेभेदकोविषयकरताहैअथवाभेदरूपतासेभेदकोविषयकरता है॥प्रथमपक्षतोनिष्फलहोनेसेनहींसंभवता॥क्योंकिप्रमेयरूपतासेजल काज्ञानहुएभीपिपासावान्‌ पुरुषकीपिपासाकीशांतिके निमित्तजला नयनमेंप्रवृत्तिनहींहोतीतैसेप्रमेयरूपतासेभेदज्ञानभीनिष्फलहै॥ और द्वितीयपक्षभी नहींसंभवता।।क्योंकिधर्मीऔप्रतियोगीकेज्ञानसेविना भेदरूपतासेभेदकाज्ञानदुर्निरूप्यहै॥जिसकारणसेभेदकोधर्मिप्रतियोगि सापेक्षएकरूपताहै । अर्थातधर्मीऔप्रतियोगीकेग्रहणपूर्वकहीतिसके

ग्रहणकानियमहै। इसीअभिप्रायसे यहअनुभवलोकमेंप्रसिद्धहै ॥ "अयंअस्मादभिन्नः" अ०—यहपदार्थइसपदार्थसेभिन्न है ॥ इति ॥

अब व्यावृत्तिविशिष्ट प्रतियोगीआदिकोंके ज्ञानपूर्वकभेदका ज्ञानहोता है इसआद्यपक्षको अनुवादपूर्वकदूषितकरते हैं। हेवादिन् भिन्नप्रतियोगीआदिकोंके ग्रहणपूर्वकभेदकाज्ञानमानेहुए प्रतियोगि ज्ञानभेदज्ञानमेंहेतु प्रतीतहोता है यहांप्रतियोगिज्ञान किसप्रकारका विवक्षित है। यदितिसज्ञानकोनिर्विकल्पककहोगे। तोकिंचित्आकार प्रतियोगीभेदज्ञानमेभासेगा ॥ क्योंकिज्ञानकोस्वसमानाकारविषय काप्रकाशकपना है ॥ यदिज्ञानकोस्वसमानाकारविषयकाप्रकाशनहीं मानें। तोघटज्ञानमेपटाकारताकास्फुरणरूपअतिप्रसंगप्राप्तहोगा॥और यदितिसज्ञानकोसविकल्पककहो। तोवहज्ञानक्या ? प्रतियोग्यादिकों कोभिन्नरूपतासे ग्रहणकरता है अथवातिनको अभिन्नरूपतासेग्रह णकरता है। द्वितीयपक्षतोनहींसंभवता क्योंकिधर्मीतथाप्रतियोगीके अभेदग्रहणकरनेवालेकोप्रमाणरूपहोनेकर तिससेउत्तरभेदकाग्राहक रूपताकर अंगीकारकियाजोभत्यक्षतिसकोअप्रमाणताकीप्राप्तिहोगी। कारणयहकितिन प्रतियोगीआदिकोंके ज्ञानकोआश्रयणकरके उत्तर भेदज्ञानकीप्रवृत्तिहोती है ॥ जबप्रतियोगीआदिकोंकाज्ञानतिनकेअ भेदकोग्रहणकरता है तोतिसको आश्रयण करके प्रवृत्तहुआजो उत्तरज्ञान वहतिन के भेदकोग्रहण करताहुआ कैसेअप्रमाणरूप नहींहोगा ॥ यातेभिन्नरूपतासे धर्मीआदिकोंकाग्रहणहीशेष रहता है। अबइसप्रथमपक्षकोदूषितकरते हैं ॥ औरव्यावृत्ति विशि ष्टप्रतियोगी आदिकोंके ग्रहणपूर्वकभेदका ज्ञानहोता है । यदि

यहप्रथमपक्षमानो तोभिन्नरूपतासेप्रतियोगी आदिकोंकोग्रहणकरने वालाजोदूसराप्रत्यक्षवहभीभेदज्ञान है ॥ तिसकोभीभेदरूपविशेषण करविशिष्टजोप्रतियोगीआदिक तिनकेज्ञानकरहीजन्यपना है । यदि तिनकाग्राहकऔरप्रत्यक्षस्वीकारकरो तो अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोगी औरभेदकाग्राहकरूपताकर स्वीकार किया जोप्रत्यक्षतिसकोही व्या वृत्तिविशिष्टप्रतियोगीआदिकोंकाज्ञानमानेहुए अपनेसेअपनीउत्पत्ति होनेकर आत्माश्रयदोषप्राप्तहोगा ॥

॥ शंका ॥ प्रत्यक्षकोभेदका अग्राहकमानेहुएनिर्विषयपनाहोगा ॥ औरनिर्विषयज्ञानही अलीकहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्तिसपूर्वउक्त युक्तिसमुदायसेवस्तुमात्रको ग्रहणकरनेवालाजोप्रत्यक्षप्रमाणहैसोभेद कीवार्त्तामात्रकोभीनहींग्रहणकरसकता । यह अर्थसिद्धहुआ । इति ।

❀ अथअनुमानप्रमाणको ज्ञानज्ञेयकेभेदकी ग्राहकताका निराकरण ❀

इसप्रकारप्रत्यक्षकोभेदकी ग्राहकताकानिषेध करकेअबअनु मानभेदकाग्राहकहै इसद्वितीयपक्षको शंकाद्वारा प्रकटकरतेहैं ॥ शंका हेसिद्धान्तिन्यदि प्रत्यक्षभेदका ग्राहकनहीं है ॥ तोअनुमानप्रमाणसे ज्ञानतथाज्ञेयकाभेद ग्रहणहोगा । तैसेहीदिखलातेहैं ॥

विमतोविषयः । स्वाविषयज्ञानात् भिद्यते ॥ तत्विरुद्धधर्माश्रयत्वात् । योयद्विरुद्धधर्माश्रयः सतु तस्मात् भिद्यतेयथाघटात्पटःतथाचायंतस्मात्तथा।

अ० ॥ विवादकाविषयजोज्ञेयहै ॥ वहस्वविषयकज्ञानसेभिन्न हैज्ञानसेविरुद्धजोजडताअर्थात्अप्रकाशतारूपधर्मतिसकाआश्रयहोने

से ॥ जोजोजिससेविरुद्धधर्मका आश्रयहोताहै।सोसोतिससेभिन्नहोता है। जैसेघटसेभिन्नपटहै। औरतैसेहीयह विषयविरुद्धधर्मका आश्रयहै तिसीसेस्वविषयकज्ञानसेभिन्नहै ॥ इति ॥ विषयरजतघटज्ञानसेभिन्न है यातेसिद्धसाधनतादोष अनुमानमेहोगा॥इसलिये"स्वविषय"यह विशेषणसाध्यमेकथनकियाहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्ज्ञानज्ञेयकेभेद मेयहअनुमानभीस्वरूपाऽसिद्धदोषसे नहींसंभवता । क्योंकिधर्मनिष्ठ विरुद्धपनाविरोधकी आधारतासेहै यहवार्ताविवादरहितहै। औरज्ञान तथाज्ञेयकाजोविरोधहै सोतिनदोनोंकाभेदजानेहुएहीज्ञातहोसकताहै ज्ञानतथाज्ञेयकाभेदजानेबिनाउसकोकोईनहींजानसकता । औरतिन काभेदअबीसिद्धकरनेयोग्यहै तिसकीअसिद्धिहुएतिसके आधीनजो विरोधरूपधर्मकाविशेषणतिसकीअसिद्धिहोनेकरधर्मको तिसविरोधका आश्रयपनाभीअसिद्धहै। यातेपक्षमेयहहेतुस्वरूपसेहीअसिद्धहोनेकर स्वसाध्यकासाधकनहीं 'किंवाज्ञानप्रतियोगिकभेदसिद्धकरतेहो।अथवा भेदमात्रसिद्धकरतेहो । अंत्यपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकितिसमेहमारा विवादनहीं । औरयदिप्रथमपक्षकहो तोसाध्यकीअप्रसिद्धिहै।औरपक्ष काविशेषणरूपसाध्यकीअप्रसिद्धिहोनेकरपक्षकीभीअसिद्धिहै । याते आश्रयासिद्धिभीअनुमानमेप्राप्तहै । औरयदितुमऐसाअनुमानकरो॥

ज्ञानतद्विषयौपरस्पर भिन्नौविरुद्धधर्माश्रय त्वात ॥ घटपटवत ॥

अ० ॥ ज्ञानऔतिसकाविषयपरस्परभिन्नहैं । विरुद्धधर्मोका आश्रयहोनेसे । जोजोविरुद्धधर्मका आश्रयहोतेहैं सोसो परस्परभिन्न होतेहैं ॥ जैसेघटपटहैं ॥ इति ॥ इसमेसाध्यकीअप्रसिद्धिनहीं ॥

क्योंकिपरस्परभेदघटादिकोंमेंप्रसिद्धहै याते अप्रसिद्ध विशेषणरूपतासे आश्रयकीअसिद्धिनहींहै।सोयहकथनभीनहींसंभवता।क्योंकिव्याप्तिकी असिद्धिहै। सोदिखलातेहैं। साध्यऔरसाधनका व्यभिचारसेरहितजो संबंधतिसकानामव्याप्तिहै। औरसंबंधकोदोनोंसंबंधियोंकेआधीनहोने सेतिनदोनोंसंबंधियोंकीसत्ताअवश्यहोनेयोग्यहै।तिनमेसाध्यतोदृष्टांत मेभीविद्यमाननहींहै। क्योंकिप्रमाणकाअभावहै। तिसीकारणसेसाध्य कीअप्रसिद्धिहोनेकरतिसकरनिरुपितव्याप्तिभीअसिद्धहै। इसप्रकार व्याप्यत्वासिद्धहेतुहै इसकथनसेआश्रयसिद्धिभीअर्थसेकथनकी क्यों किअप्रसिद्धविशेषणवालापक्षहै। औरघटतथापटकाभेदकिसीप्रमाण करसिद्धनहीं जिसकरसाध्यकीप्रसिद्धिहो प्रत्यक्षतोघटऔरपट केभेदमे प्रमाणनहींहै क्योंकितिसको आगेनिराकरण करनाहै॥ औरप्रकृत अनुमानसेभिन्नकिसीऔर अनुमानसेघटपट काभेदग्रहण होजायेगा यदिऐसेकहो तोतिसमेभीव्याप्तिकाग्रहण तिसीअनुमानसेमानोगे तो आत्माश्रयदोषप्राप्तहोगाऔ रयदितिससेभिन्नअन्यअनुमानव्याप्तिका ग्राहकमानोतो अनवस्थादोषप्राप्तहोगा इसप्रकारपूर्वउक्तदोष पूर्वकी न्याईहीप्राप्तहुएयातेअनुमानप्रमाणसेभीज्ञानतथाज्ञेयकाभेदनहींग्रहणहो सकता॥ अबज्ञानज्ञेयके—

* अथज्ञानज्ञेयकेभेदमेंआगमकोप्रमाणता कानिराकरण *

भेदमेआगमप्रमाणहै इसतृतीयपक्षकोदूषितकरतेहैं।हेवादिन् पूर्वकांडतथा उत्तरकांडरूप वेदहीआगमप्रमाणहै तिनमेपूर्वकांडकातो साध्यसाधनकासंबंधकथनकरके संस्कारद्वारा अथवाश्रवणादिकों मे

प्रवृत्तिद्वाराअद्वितीयब्रह्ममेतात्पर्य्यपूर्वनिरूपणकियाहै ॥ औरषट्प्रकार केलिंगयुक्तउत्तरकांडकातो साक्षात्हीअद्वैतमेतात्पर्य्यहै यातेआगम प्रमाणकोभेदके बोधकपने कीशंकाभी नहींकरसकते ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन् ॥ यतोवाइमानिभूतानिजायंते ॥

अ० ॥ जिससेयहसर्वभूतउत्पन्नहोतेहैं ॥ यहशास्त्रब्रह्मसे सृष्टिकोप्रतिपादनकरताहुआ "देवताऽधिकरणन्याय" सेसर्वकार्य्य मात्रकातिसब्रह्मसेभेदभीप्रतिपादनकरताहै ॥ देवताऽधिकरणन्यायका स्वरूपपूर्वकथनकरदीयाहै ॥ औरयदितुमऐसेकहो किपूर्वउक्तवाक्य अभिन्ननिमित्तउपादानरूपब्रह्मसेसृष्टिमात्रकोकथनकरताहै । तिससे कोई भेदनहींप्रतीतहोता । यातेदेवताऽधिकरणन्यायसेतिसवाक्यको कार्य्यकारणकेभेदमेप्रमाणयताकैसे होसकतीहै । सोयहकथनभीनहीं संभवता । क्योंकिब्रह्मतथाजगत्काअभेदमानेहुएतिसब्रह्मसे जगत्की उत्पत्तिनहींसंभवेगी । जेसेघटसेघटनहींउत्पन्नहोसकता । क्योंकि एकहीपदार्थमेपूर्वउत्तरवृतित्वनहींहै । औरयदितुमऐसेकहोकिइस रीतिसेब्रह्मऔ जगत्काभेदहुएभीज्ञानऔज्ञेयकेभेदमे क्याप्रमाण हुआ भावयहज्ञानकार्यरूपनहीं है । क्योंकिकार्यजडहै । औरज्ञानब्रह्मस्वरूप भीनहीं । क्योंकितिसब्रह्मको असंगस्वभावहोनेकर घटादिकोंकाअप्र- काशकपनाहै । इसप्रकारब्रह्मऔजगत्कोज्ञानरूपताका अभावहोनेसे ब्रह्मऔजगत्काभेदहुएभीज्ञानतथाज्ञेय काभेद् कैसेहोसकताहै ॥ सो यहतुम्हाराकथनभीअसंगतहै ॥ जिसकारणसे प्रकाशकस्वभावज्ञान है ॥ औरवृत्तिमेप्रतिबिंबितहुआ चिदरूपब्रह्महही जगत्काप्रकाशकहै वृत्तिनहीं ॥ क्योंकितिसकोजडहोनेकरअप्रकाशकपनाहै ॥ और —

(१) वधुपर्येपिबादरायण संभवात् ॥ उ० मी० १।३।२६

❀ सविशेषणोहि ❀

अ० ॥ विशेषणसहितपदार्थमेजोबुद्धिहोतीहै ॥ वहविशेषण अंशमेबाधितहुईविशेषकोभासहोतीहै ॥ इसन्यायसे वृत्तिअवच्छिन्न ब्रह्ममेप्रकाशकपनेकी प्रतीतिहुएतहांवृत्तिरूप विशेषणमेप्रकाशकपना बाधितहै ॥ यातेविशेषचेतनमात्रब्रह्ममेही काशकपनेकीप्राप्तिहोनेकर ज्ञानरूपताकासंभवहै॥इसीसेब्रह्मसेजोकार्यकाभेदहैवहज्ञानसेहीभेदहै यातेआगमप्रमाणसेज्ञानऔज्ञेयकेभेदकीसिद्धिहै॥समाधान॥हेवादिन् यहांतुमकोयहकथनकरनेयोग्यहैपूर्वकथनकियाजोआगमहै क्या?वह कार्यकारणभावकाप्रतिपादकमात्रहोनेकरज्ञानज्ञेयकेभेदकासाधकहै ॥ अथवाकार्यकारण भावविषयक प्रमाज्ञानकाउत्पादक होनेकरभेदका साधकहै ॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभयता ॥ क्योंकि "विषंभुंक्ष्व" अ० विषकोतूंभक्षणकर ॥ इत्यादिवाक्यमे अतिप्रसंगहोगा ॥ भावयह केवलप्रतिपादकतामात्रकरयदिवाक्यकिसीअर्थमेप्रमाणहोतोयहवाक्य भीविषभक्षणमेप्रमाणहुआचाहिये ॥ औरद्वितीयपक्षभीनहीं संभवता क्योंकिवहश्रुतिवाक्यवादियोंकर कल्पितप्रधानादिककारणांतरोंकेनिरा करणमेतात्पर्यवालाहै ॥ इसलियेकार्यकारणभावकावहप्रमापकनहीं। औरतात्पर्यकेविषयभूत अर्थमेहीशब्दकीप्रमाणताहोतीहै ॥ यहपूर्व कथनकरआएहैं ॥ अबइसीअर्थकोस्पष्टकरतेहैं। "यतोवाइमानिभूता निजायंते" इसश्रुतिमे "इमानि" यहप्रथमभूतोंकाविशेषणहै ॥ तिस विशेषणकरनामतथारूपसेस्पष्टऔरमनकरकेभी जिनकीरचनाचिंतन नहींकीजाती ऐसेभूतोंकेधर्मसमर्पणकियेजातेहैं ॥ तिनधर्मोकरयुक्त प्रपंचकीरचनाअचेतनप्रधानादिकोंसेतथाअल्पशक्तिवालेहिरण्यगर्भा·

दिकोंसेनहींसंभवती । यातेपूर्वउक्त समग्रश्रुतिवाक्य सांख्यादिकोंने कल्पनाकीयेहुएजोप्रधानादिककारणांतरतिनकेनिषेधपरहैं ॥ शंका॥ समग्रसृष्टिप्रतिपादकवाक्योंकोवादियोंनेकल्पनाकियेजोजगत्केकारण प्रधानादिकेनिषेधपरत्वनहींसंभवता ॥ क्योंकिसमन्वयअधिकरणका विरोधहै ॥ अर्थयह-

॥ तत्तुसमन्वयात् ॥शा० अ० १ पा० १॥सू०४॥॥

अ० ॥ तुशब्दपूर्वपक्षकोनिवारणकरताहै " तत् " वहजगत् कारणअद्वितीयब्रह्मवेदांतोंसेहीनिश्चयहोताहै ॥ क्योंकि(समन्वयात्) तिसमेहीसर्ववेदांतोंकेतात्पर्य्यकीविषयताहै ॥ इसअधिकरणमेंसमग्र वेदांतवाक्योंकाएकअद्वितीयब्रह्ममेतात्पर्य्यनिरूपणकियाहै॥ औरयदि आपयहांपरसृष्टिवाक्योंकाप्रधानादिकारणांतरके निराकरणमेतात्पर्य्य कहोगे तोइसअधिकरणसेस्पष्टहीविरोधहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् तात्पर्य्यदोप्रकारकाहोताहै एकअवांतरतात्पर्य्य हैऔरदूसरापरमतात्पर्यहै यहांअवांतरतात्पर्य्यसृष्टिवाक्यनकाप्रधानादिककारणांतरकेनिराकरण मेंहै ॥ औरपरमतात्पर्यतोअद्वितीयब्रह्मकीसंभावनामात्रमेंहै॥ अर्थात् सजातीयादिकभेदसेरहितजो ब्रह्मकास्वरूपपूर्वकथन कियावहऐसाही होनेयोग्यहै॥ इसप्रकारकेआकारवालीअद्वितीयब्रह्मकीसंभावनामात्र मेतिनकातात्पर्यहै ॥ जिसकारणसेब्रह्मसेसकलकार्यप्रपंचकाभेदनिरू- पणनहींहोसकता जैसेमृदादिकारणसेघटादिकार्य भिन्नकरकेनिरूपण नहींकियेजाते ॥ यदितिनकाभेदमानेतो हिमगिरितथाविंध्यगिरिकी न्याईकार्यकारणभावकाहीअदर्शनहोगा ॥ और "मृद्घटः" इससा- मानाधिकरण्यसेतिनकाअभेदमाननेमेहीकार्यकारणभावयुक्तहै अन्य

प्रकारसेनहीं ॥ यातेसमन्वय अधिकरणका विरोधनहींआता ॥ शंका ॥ मृत्तिकाऔघटका अभेदमानेहुए पूर्वउत्तरभावकाअसंभव होनेसेपूर्वउत्तरभावकर व्याप्तजोकार्यकारणभावहै वहभेदसेविना अनुपपन्नहै यातेमृष्टिवाक्यभेदमेंही तात्पर्य्यवालाक्योंनहो।समाधान हेवादिन्यदिभेदको सृष्टिवाक्यकेतात्पर्य्यका विषयमाने ॥ तो"नेह नानास्तिकिंचन" इत्यादि श्रुतिसेतिसभेदकाजो निषेधहैवहव्यर्थ होगा ॥ जिसकारणसे अखंडवस्तुकीसिद्धिके अर्थभेदकानिषेधहै। और श्रुतितात्पर्य्यका विषयभेदकोमानेहुए तिसभेदकानिषेधव्यर्थ है। औरभेदसेविनाएकही वस्तुमेंपूर्वउत्तरभावका असंभवहोनेकर कार्यकारणभावनहींसंभवेगा ॥ यहतुम्हाराकथनभी समीचीननहीं। क्योंकिकल्पितभेदकोआश्रयण करकेकार्यकारणभावको मानेहुए विरोधकाअभावहै ॥ किंवा ॥ मृष्टिवाक्यभेदपरहै इसकाक्याअर्थहै। क्या ? यहवाक्यपदार्थ रूपतासेभेदकोसाक्षात्बोधनकरताहै अथवा वाक्यकाअर्थरूपताकर भेदकोबोधनकरताहै ॥ वा। भेदसेविनाकार्य कारणभावजोवाक्यका अर्थवहअनुपपन्नहै इसलियेतिसवाक्यार्थका उपपादकरूपताकर भेदकोअर्थसेमृष्टिवाक्यकल्पनाकरताहै । तिन मेंप्रथमपक्षतोनहींसंभवता॥ क्योंकिमृष्टिवाक्यमेंकोईभी पदसाक्षात् भेदकोनहींप्रतिपादनकरता ॥ तिसमेंभेदकेवाचकपदकाअभावहै ॥ औरद्वितीयपक्षभीनहीसंभवता ॥ क्योंकिभेदकोकिसीपदकाअर्थन होनेसेवाक्यार्थत्वकाभीअभावहै ॥ शंका ॥ जैसेशत्रुकेगृहसेभोजन कीनिवृत्तिकिसी पदकाअर्थनहींतोभी "विषंभुंक्ष्व" इसवाक्यका तिसकोअर्थपनाहै ॥ तैसेब्रह्मऔजगत्काभेद किसीपदकाअर्थयद्यपि

नहीं हैतथापिसृष्टिवाक्यका अर्थपना तिसमेंसंभवहोजायेगा ॥ समाधान ॥ हेवादिनूपदार्थोंकोहीसंसर्गीरूपताकरसाक्षात्वाक्यका अर्थपनाहे ॥ औरयदिअखंडवाक्यार्थत्वपक्षकोआश्रयणकरेंतोपदार्थ कोहीधर्मीमात्रपरताहोनेकर साक्षात्वाक्यप्रतिपाद्यताहै ॥ इसकारण सेपरगृहमेंभोजनकीनिवृत्तिको अपदार्थहोनेसेसाक्षात् वाक्यार्थता नहीं है ॥ यातेकोईदोषनहीं। औरतृतीयपक्षभीनहींसंभवता।क्योंकि प्रथमसृष्ठिवाक्यतो कार्यकारणभावकोकल्पना नहींकरसकताजिससे वहअचेतनहै ॥ औरवाक्यार्थकोदेखकर पुरुषभेदकीकल्पनाकरताहै। यहभीअसमीचीनहै । क्योंकिपुरुषकल्पनाका भेदनिषेधकश्रुतिके साथविरोधहोनेसे तिसकोअभासरूपताहै । इसरीतिसेज्ञानस्वरूपब्रह्म औजगत्रूपज्ञेयके भेदमेंकार्यकारणभावकी अनुपपत्तिप्रमाणहै॥ यहअर्थापत्तिप्रमाण प्रसंगसेनिराकरणकिया ॥

अथज्ञानज्ञेयके भेदमेंअर्थापत्तिप्रमाणकानिराकरण

अबज्ञानकीअन्यथा ऽनुपपत्तिज्ञानऔज्ञेयकेभेदमेंप्रमाणहैइस चतुर्थपक्षकोनिषेध करनेकेलियेपूर्वपक्षीद्वारा इसपक्षकोप्रकटकरतेहैं।

※ अथपूर्वपक्ष ※

शंका ॥ ज्ञानही स्वभिन्नज्ञेय सेविनाअनुपपन्नहुआअपनेसे भिन्नज्ञेयकोविषयकरता है ॥ जैसे दाहकेयोग्यकाष्ठादिकोंसेविना अग्निस्वरूपकोनहींप्राप्तहोता ॥ तैसेज्ञेयसेविनाज्ञानभीस्वरूपकोनहीं प्राप्तहोताहै ॥ तिसकारणसेज्ञेयकीसत्ताज्ञानसेभिन्नअवश्यहोनेयोग्य है ॥ और वह ज्ञान आपही ज्ञेयस्वरूपनहींहोसकता । क्योंकिएक वस्तुकोउभ्यरूपमाननेमेंकर्तृकर्मभावविरोधप्राप्त होता है ॥ तिसीसे

ज्ञानस्वभिन्नज्ञेयसेविनाअनुपपन्नहूआज्ञेयकी कल्पना करता है ॥ इसरीतिसेज्ञानतथाज्ञेयकाभेदसिद्धहै ॥ शंका ॥ हेवादिन्दाहकेयोग्य काष्ठादिकोंसेउत्पन्नहूआ अग्निकाष्ठादिसेविना अनुपपन्न है यह कथनतोयुक्त है परंतु ज्ञानतो किसीविषयसेजन्यनही है ॥ तिससे विषयविना ज्ञान नहीं संभवता ॥ यह कथन कैसेवनसकता है ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् अर्थकेप्रकाशकानामज्ञानहै ॥ अर्थके अत्यंतअसत्हुए किसकाप्रकाशज्ञानकोकहेंगे। तिसकारणसेज्ञानको अर्थकेआधीनहोनेकर विषयकेअभावहुएतिसका स्वरूपहीनहींसिद्ध होगा ॥ शंका ॥ हेवादिन्नवनताहुआभी अर्थयदिप्रमाणसिद्धहो तोस्वीकारकीआजाताहै ॥ जैसेसूर्यमें असंभावित भीछिद्रहै परंतुउत्पातकालीन प्रमाणसिद्धमाना जाता है तैतेअर्थसेविनाभी ज्ञानबनजायेगा । समाधान ॥ हेसिद्धांतिन्निर्विषयज्ञानसंभवता नहींऔरकहींदेखनेमेंभी नहींआता । क्योंकिविषयकेसहितहीज्ञान भासमानहोताहै ॥ शंका ॥ जैसेकोईभूतलघटवालाहुआभीउस सेभिन्नभूतलघटसे रहितभीदेखाहै । तैसेकिसीज्ञानकोसविषयहुएभी उससेभिन्नज्ञान निर्विषयहीक्योंनहो। किन्तुहुआचाहिये।समाधान ॥ ज्ञानकोनिर्विषयमानेहुए प्रकारशून्यहीज्ञानभासेगा ॥ यद्यपि "अयं घटः" इसज्ञानमेंघटविषयहै औरघटत्वधर्मइसमें प्रकारहै । यहवार्त्ता हमदोनोंकोसंमतहै। तिससेविषयऔप्रकारकापरस्परभेदहोनेसेविषयके अभावहुएप्रकार शून्यज्ञान भासेगा। यहतुमकैसेकथनकरतेहो । तथापिज्ञानमेंविषयसेभिन्नऔर कोई प्रकार नहीं है । क्योंकिज्ञानमे भासमानजोसंसर्गतिसकेनिरूपकका नामप्रकार है "जैसेअयंघटः"

इसज्ञानमेघटतथाघटत्वकासमवायभासताहै ॥ तिससंसर्गकीआधारता घटमेंहैऔरतिसकीनिरूपकताघटत्वमेंहै ॥ यातेघटत्वज्ञानमेप्रकार है॥ तैसेप्रकरणमेभीविशेष्यघटकीन्याईंभासमानजोघटत्वरूपप्रकार वह भी तिसज्ञान का विषयहै ॥ तिसकेअभावहूएप्रकारशून्यहीज्ञानभासेगा॥ तिसकारणसेज्ञेयविनाज्ञानअनुपपन्नहूआ अभेदमेकर्तृकर्मविरोधहोने करअपनेसेभिन्नज्ञेयकीकल्पनाकरताहै॥इतिपूर्वपक्ष अथसिद्धांत समाधान ॥ हेवादिन् ज्ञेयसेविनाज्ञानकी अनुपपत्तिकाअभाव है ॥ तैसेहीदिखलातेहैं ॥ क्या? ज्ञेयसेविनाज्ञानकीउत्पत्तिकीअनुपपत्तितिन केभेदमेप्रमाणहै। अथवाज्ञानकीस्थितिकीअनुपपत्तितिनकेभेदमेप्रमाण है ॥ वाज्ञानज्ञप्तिकीअनुपपत्तितिनकेभेदमेप्रमाणहै ॥ यहांज्ञानके ज्ञानकानामज्ञप्तिहै ॥ प्रथमपक्षमेयहविचारकियाचाहिये॥ क्या? यह हमारेएकदेशिकामतहै अथवानैयायिककामतहै ॥ प्रथमपक्षकहोतो ज्ञानकीस्वरूपतासेउत्पत्तिकाअभावहै।यद्यपिवृत्तिउपहितत्वाकाररूपता सेज्ञानकीउत्पत्तिकासंभवहै॥ तथापिस्वरूपसेतिसकोनित्यभावहोनेकर उत्पत्तिकाअभावहै॥यातेप्रथमपक्षनहींसंभवत॥औरद्वितीयपक्षमेतोप्र माणऔरप्रमाणाभाससेहीतिसज्ञानकीउत्पत्तिकासंभवहुएविषयकीतिस कोआपेक्षाहीनहींहै॥यातेज्ञानकीउत्पत्तिअन्यथाउपपन्नहोनेसेयहअर्था पत्तिज्ञानज्ञेयकेभेदमेप्रमाणनहींहोसकती॥शंका॥ जैसेप्रमातथाअप्रमा ज्ञानयहदोनोंप्रमाणऔप्रमाणाभासकोकारणरूपताकरअपेक्षाकरतेहैं॥ तैसेकारणत्वधर्मकीतुल्यतासेविषयकोभीवहदोनोंअपेक्षाकरेंगे । याते विषयसेविनातिनकीउत्पत्तिकैसेसंभवेगी॥किंतुनहींसंभवती॥समाधान हेवादिन्ज्ञानकोसर्वत्रविषयजन्यताकानियमनहींहै॥क्योंकिअनुमिति

आदिकज्ञानोंमेविषयजन्यताकाव्यभिचारहै । यातेआद्यप्रथमपक्षअसंगतहै । औरज्ञानकीस्थितिकीअनुपपत्तिज्ञानज्ञेयकेभेदमेंप्रमाणहै । यहद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता॥क्योंकिविषयनिष्ठज्ञानकीअधिकरणताकाअभावहै ॥ यदिविषयकोभीज्ञानकाआश्रयमानलें तोतिसमेंप्रमातृत्वकीप्राप्तिहोगी ॥ औरविषयपनेकाव्याघातहोगा । यद्यपि "ज्ञातो घटः"इसप्रतीतिसेज्ञानकीअधिकरणताघटमेंप्रतीतहोतीहै । यातेविषयभीज्ञानकाआश्रयबनसकताहै । तथापि "नष्टोघटः" अ० ॥ नाशकाआश्रयघटहै । जैसे इसप्रतीतिमेंनाशकी अधिकरणताघटमेंभासतीहै परन्तुवास्तवअधिकरणतानहीं तैसेउसप्रत्ययमेंभी जानकरसंतोषकरनेयोग्यहै । अबतृतीयपक्षकोदूषित करनेकेलिये वादीद्वारातिसकोप्रकटकरतेहैं । (अथपूर्वपक्ष)हेसिद्धांतिनज्ञेयसेविनाज्ञानज्ञप्तिकीअनुपपत्तिज्ञानज्ञेयकेभेदमेंप्रमाणहै ॥शंका॥ हेवादिनज्ञानज्ञप्तिअर्थातज्ञानकाजोज्ञानहै । तिसकाविषयभूतजोप्रथमज्ञानहै । क्या?विषयसेविनातिसकास्वरूपनहींसिद्धहोसकता ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिनज्ञानविषयकज्ञानकोविषयकेज्ञानकीआधीनताहै । अर्थातविषयसेव्यावृत्तज्ञानकरजन्यपनाहै । तिसीकारणसेज्ञानकीन्याईज्ञानकेविषयकोज्ञानज्ञप्तिमेंकारणता होनेसेतिसविषयकेअभावहुएज्ञानज्ञप्तिकीअनुपपत्तिहै ॥ इति॥ (अथसिद्धांत) हेवादिनज्ञानकीज्ञप्तिकाहीअभावहोनेसेज्ञानज्ञप्तिका कारणरूपकरज्ञेयकीसिद्धिनहींहोसकती।अबइसीअर्थकोस्पष्टकरतेहैं । ज्ञानक्या?अपनेव्यवहारकेअर्थअपनेसेभिन्नज्ञानकीअपेक्षाकरताहै।अथवाविषयकेव्यवहारअर्थस्वभिन्नज्ञानकीअपेक्षाकरताहै। अंत्यपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिविषयतोअबपर्यंतभीसिद्धनहींहुआ। जिसकेव्यवहारअर्थज्ञानांतर

कीअपेक्षाहो । औरप्रथमपक्षभीनहींसंभवता । क्योंकिज्ञानकोस्वयं प्रकाशमानहोनेकरअर्थात्अवेद्यहुआ अपरोक्षव्यवहारकेयोग्यहोनेकर तिसकोअपनेव्यवहारके अर्थस्वभिन्नज्ञानकीकिंचित्भी अपेक्षा नहीं है ॥ शंका ॥ ज्ञानस्वप्रकाशनहीं है । क्योंकितिसकोघटादिकों की न्याईवस्तुरूपताहोनेसे वेद्यपनाहै ॥ समाधान ॥ ज्ञानक्या?ज्ञात हुआविषयकासाधकहै । वाअज्ञातहुआभीविषयकासाधकहै । प्रथमपक्ष तोनहींसंभवता।क्योंकिप्रथमज्ञानकीन्याईज्ञानकेप्रकाशकद्वितीयज्ञान कोभीज्ञातहुआहीस्वविषयकासाधकमाननाहोगा । औरद्वितीयज्ञान केप्रकाशअर्थतृतीयज्ञानकोअन्वेषणकियेहुएतिसतृतीयज्ञानकोभीज्ञात हीकहनाहोगा । तिसमेंचतुर्थज्ञानकी अपेक्षाहोनेसेअनवस्थादोषकी प्राप्तिहोगी ॥ शंका ॥यहअनवस्थादोषकेलियेनहीं है क्योंकिमूलभूत प्रथमज्ञानविनाशसेरहितहै औरमूलकेक्षयकरनेवालीअनवस्थाहीदोष रूपहोतीहै । यातेज्ञानांतरकीअपेक्षाहुएकोईदोषनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन्ज्ञानोंकीधारामे जोज्ञानज्ञातनहींहोगा तिसकोअसत् होनेकर तिसकाविषयभूतजोज्ञानहै वहभीप्रमाणकेअभावसेअसत्होजायेगा॥ इसप्रकार सकल ज्ञानधाराको असत्होनेसेमूलभूत प्रथमज्ञानकी भी असिद्धिहोगी । तिसप्रथमज्ञानकोअसत्हुएजडप्रपंचकीस्वतः सिद्धि काअभावहोनेसेतिसकीप्रतीतिनहींहोगी ॥ इसरीतिसे ज्ञानकापर प्रकाशकपनायुक्तनहीं ॥ औरअज्ञातहुआज्ञानस्वविषयकासाधकहै॥ यहद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता ॥ क्योंकिप्रमाणकेअभावहोनेकरनर शृंगकीन्याईअपनीस्वरूपसत्ताहीअसिद्धहै । तोऔरविषयकीसाधकता तिसको कैसे होसक्तीहै ॥ शंका ॥ जिसकिसीकालमें प्रमाणकी

प्रवृत्तिहोनेकर ज्ञानकास्वरूप सिद्ध होजायेगा ॥ समाधान ॥ हेवादिन् "तुष्यतोदुर्जन" न्यायसेज्ञानकोज्ञानांतरकीअपेक्षाहो ॥ तथापिविषयभूतज्ञानकाविषयजोघटादिकहैं ॥ तिनकीअपेक्षाज्ञान विषयकज्ञानकोकैसेहोसकतीहै ॥ किंतुकिसीप्रकारनहीं ॥ यहांयह भेदज्ञानलेना ॥ पूर्वप्रकरणमेंज्ञानकाज्ञानसंभवहीनहींहोसकता ॥ यहअसंभवदोषअर्थापत्तिमेकथनकिया ॥ औरअबतिसअर्थापत्तिकी अन्यप्रकारसेहीउपपत्तिनिरूपणकरतेहैं ॥ ज्ञानकीज्ञप्तिस्वविषयभूत ज्ञानकीहीअपेक्षाकरती है ॥ स्वविषयरूपज्ञानकेविषयकीअपेक्षानहीं करती ॥ क्योंकिस्वविषयरूपज्ञानमात्रमेवहचरितार्थहै ॥ शंका ॥ हे सिद्धांतिन् ज्ञानज्ञप्तिमे क्या ? ज्ञान सामान्यविषय है ॥ अथवा ज्ञान विशेष विषयहै । प्रथमपक्ष नहीं संभवता ॥ क्योंकि घटका ज्ञानहै । ऐसातिसज्ञप्तिका आकारहै । ज्ञानसामान्यकोविषयमानेहुए विशेषज्ञानकेस्फुरणकी अयोग्यताहै ॥ यातेज्ञानमात्रविषयताकी अयोग्यताहोनेसे सामान्यज्ञानकी तिसज्ञप्तिकोअपेक्षानहीं ॥ और यदिद्वितीयपक्षमानों तोज्ञानमेंविशेषताविषयके आधीनहै ॥ याते विषयकीअपेक्षाअवश्यहोनेसे विषयकेअभावहुए ज्ञानकीज्ञप्तिकैसे बनैगी ॥ समाधान ॥ हेवादिन्यहतुम्हारा कथनसत्यहै । किज्ञान विशेषहीज्ञप्तिमेंभासताहै । परंतुवहज्ञानमेंजोविशेषहै सोव्यावृत्तिरूप अर्थात् भेदरूपहै ॥ वहविषयकृतनहीं ॥ यातेतिसको विषयकी अपेक्षानहींहै ॥ शंका ॥ ज्ञानमेंविशेषकोविषयके आधीननमाने हुए पटादिज्ञानोंसेघटज्ञानमें व्यावृत्तिरूपविशेषकी सिद्धिकैसेहोगी ॥ समाधान ॥ हेवादिन्तुम्हारायह कथनभीतुच्छहै ॥ क्योंकिज्ञान

मेंस्वतःहीव्यावृत्तपनाहै ॥ जैसेंनैयायिकादिकोंके मतमेंजातिश्रादिक पदार्थस्वभावसेहीव्यावृत्तहैं॥इसीअर्थकोस्पष्टकरतेहैं ।क्या?एकज्ञानमें ज्ञानांतरसेव्यावृत्तिकाहेतुविषयहै । अथवाज्ञानमें व्यावृत्तिकीप्रतीति काहेतुविषयहै॥प्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिव्यावृत्तिकोअन्यो अन्याभावरूपहोनेकर अजन्यताहै । औरव्यावृत्तिकोजन्यमानेहुए तिसकीउत्पत्तिसेप्रथम सर्व से अभिन्नस्वभावहीज्ञानउत्पन्न हुआ माननाहोगा । इससेवहज्ञानविषयसे व्यावृत्तिकेउत्पन्नहुएकैसेअपने स्वभावकोनहींत्यागेगा । किंतुअवश्यत्यागदेगा॥ औरअतीततथा भविष्यत्पदार्थविषयकज्ञानकोव्यावृत्तिसेरहितअव्यावृत्तपनाप्राप्तहोगा। क्योंकिविषयकातिसकालमेंअभावहै॥औरविषयकोहीव्यावृत्तिकीहेतुता है ॥ औरयदिविषयस्वज्ञानमेंव्यावृत्तिकीप्रतीतिकाहेतुहैयहद्वितीयपक्ष कहो । तोअसत्व्यावृत्तिकोवह विषयनिश्चयकराताहै ॥ अथवासत् व्यावृत्तिकोनिश्चय कराताहै ॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकि असत्कीप्रतीतिनहींहोसकती ॥ औरद्वितीयपक्षमेंज्ञाननिष्टव्यावृत्ति कीजोसत्ताहै । वहविषयकेआधीननहीं है॥क्योंकिअन्यज्ञानोंसेस्वतः हीज्ञानव्यावृत्तस्वभावहै जैसेवैशेषिकादिवादियोंकेमतमें पटत्वादिक जातियोंसेघटत्वादिजाति स्वतःहीव्यावृत्तस्वभावहै ॥ कोईव्यक्ति तिसकाव्यावर्त्तकनहीं है ॥ अन्यथाअन्योऽन्याश्रयदोषकीप्राप्ति होगी । क्योंकिजातिसेव्यक्तिका भेदऔव्यक्तिसेजातिनिष्ठभेदकी सिद्धिहोनेसे परस्परअपेक्षारूपअन्योऽन्याश्रय दोषस्पष्टहीहै । और अंत्यविशेषभीस्वतः हीव्यावृत्तहैं। व्यावर्त्तकोंकेजोअन्तमेंवर्त्तेंअर्थात् जिनकाअन्यकोई व्यावर्त्तक नहोइसीसे अन्त्यविशेषकहेहैं ॥

तैसेज्ञानभीस्वतः हीव्यावृत्तहै।।इसप्रकारज्ञानपरप्रकाशपक्षमेंभीतिसकी प्रतीति विषयके आधीननहीं। याते ज्ञानज्ञप्तिकीअनुपपत्तिज्ञानज्ञेयके भेदमे प्रमाणनहीं यहअर्थसिद्धहुआ ।।इति।।शंका।।यद्यपिविषयज्ञान कीउत्पत्तिकाहेतुनहीं ।। औरतिसकीस्थितिकाहेतुभीनहीं ।। तथा ज्ञानकीज्ञप्तिकाभी हेतुनहीं ।। तथापिजैसेदाहकेयोग्यकाष्टादिकों करव्याप्तहुआ जोअग्निहै वहदाह्यपदार्थोंको दग्धकरताहै ।। तैसेज्ञेय करव्याप्तहुआज्ञानज्ञेयकाप्रकाशकरताहै ।। यातेयपनेसेभिन्नज्ञेयकोवह ज्ञानबोधनकरताहै ।। समाधान ।। हेवादिन्यहांदृष्टांतऔरदार्ष्टांतकी विषमताहै। क्योंकिदृष्टांतमेतोजिसदेशमेतथाजिसकालमेअग्निहै तिसी देशमेंऔतिसीकालमेदाहकेयोग्यकाष्टादिहैं । तहांतोअग्निदाह्यको दग्धकरताहै यहकथनयुक्तहै।। औरदार्ष्टांतमेतोज्ञेयकीव्याप्तिवालाज्ञान हैनहीं।क्योंकितिनदोनोंकोभिन्नदेशतथाभिन्नकालमेहोनेकरसमानाधि करणताकाअभावहै।अर्थयह।ज्ञानतोभीतरअंतस्करणादिदेशमेंहै। और ज्ञेयघटादिकवाह्यभूतलादिदेशमेंहैंयातेदेशएकनहीं। औरअतीततथाभ विष्यत्अर्थकाभीज्ञानदेखनेसेएककालत्वकीभीअसिद्धिहै।यातेदेशतथा कालसेसमानाधिकरणताकाअभावहोनेसेव्याप्तिकीअसिद्धिहै।इसप्रकार "तद्भेदेवदकाप्रमा" इसकारिकाकेचतुर्थपादमेजोसंग्रहकियाहुआअर्थ था। वहइतनेग्रंथकरविस्तारपूर्वकव्याख्यानकिया ।। १७।। अत्रपूर्व उक्तअर्थकोउपसंहारकरतेहुएएकश्लोकसेसंग्रहकरतेहैं ॥

मू० ॥ प्रत्येतव्यप्रतीत्योश्चभेदः प्रमाणिकः कुतः ।
प्रतीतिमात्रमेवैतद्भातिविश्वंचराचरम ॥१८॥

चौ०—ज्ञानज्ञेयकोभेदजुगानो। नहिप्रामाणिकसोहियजानो ॥
जगतचराचरभासतजेतो । ज्ञानमात्रयातेलखतेतो ॥ १९ ॥

टी० ॥ तिसीकारणसेज्ञानऔज्ञेयकाजो भेदतुमकहतेहो वह किसीहेतुसेप्रमाणिकनहींहोसकता ॥ शंका ॥ ज्ञानतथाज्ञेयकाअभेद मानेहुएक्या?ज्ञानहीशेषस्थितरहताहै॥अथवाज्ञेयहीशेषरहताहै इस प्रकारकासंदेहहुएएकअर्थका निश्चायकयुक्तिके अभावसेविषयकेअंत र्भावमानहीक्योंनहो॥ समाधान ॥हेवादिन्जडप्रपंचकोअपनीसिद्धि केअर्थज्ञानकीअपेक्षाअवश्यकहनेयोग्यहै औरज्ञानकोविषयकीअपेक्षा नहीं । यहवार्त्तापूर्वउपपादनकरआएहैं । और " सापेक्षतथानिपेक्ष दोपदार्थोंमेनिर्पेक्षबलवानहोताहै"। इसन्यायसेज्ञानमेहीविषयकाअंत र्भावयुक्तहै । यातेजोयहसंसारस्थावरऔजंगमरूपभानहोताहै । सो प्रतीतिमात्रहीहै । अथवाजोप्रतीतिमात्रस्वप्रकाशमहिमासेभासमानहै यहही विश्वरूपहै तिसविज्ञान धातुसे किंचितमात्रवस्तु भिन्ननहीं ॥ शंका ॥ यदिप्रतीतिमात्रहीयहजगत् है प्रतीतिसेअतिरिक्तकिंचित् मात्रभीनहीं । तोचराचररूपतासे तथानानाभेदोंसेयहज्ञानकैसेभा सताहै ॥ समाधान ॥

मू०—ज्ञानज्ञेयप्रभेदेन यथास्वाप्नंप्रतीयते ।
विज्ञानमात्रमेवैतत्तथाजाग्रच्चराचरम् ॥ १९ ॥

चौ०—ज्ञानज्ञेयप्रभेदअनेका । स्वप्नजगतभासतजिमएका ॥
तैसेजगतचराचरजोई । ज्ञानमात्रजाग्रतमेसोई ॥ २० ॥

टी०—जैसेस्वप्नकालकाजगतवास्तवसे विज्ञानमात्रस्वरूपही है । तोभीज्ञानज्ञेयादि नानाभेदयुक्तभानहोताहै । यातेस्वप्नमेविज्ञानही ज्ञेयरूपतासेतथानानारूपतासे भासताहै ॥ तैसेजाग्रत्कालीनजो जगत् है ॥ वहभीविज्ञानमात्रस्वरूपही है ॥ यातेसोविज्ञानहीचराचर

रूपतासे औरनानारूपतासे भानहोताहै। इसप्रकारजगत्काभान औरतिसकाअनेकभेदयुक्तभानसंभवताहै ॥ १९ ॥ शंका ॥ विज्ञान हीजगत्रूपतासे भानहोताहै। ऐसेआपक्योंकल्पनाकरतेहो ॥ विज्ञानसे भिन्नस्वतन्त्ररूपतासेहीजगत्काभानहोजायेगा ॥समाधान॥

मू०—तंतोर्भेदेपटोयद्वच्छून्यएवस्वरूपतः।
आत्मनोपितथैवेदंभानमात्रंचराचरम् ॥ २० ॥

चौ०—तंतूभिन्नयथापटकेरो। शून्यरूपहोवततुमहेरो ॥
आतमभिन्नतथायहमानो। भानमात्रचर अचरपछानो ॥२१॥

टी०—जैसेपटतंतुवोंसे भिन्नकियाहुआवास्तवसे असत्होजाता है। क्योंकिकारणकीसत्तासेही कार्यसत्भासता है। स्वतन्त्रतासे कार्यसत्रूपनहीं। यदिस्वतन्त्रभीपटकीसत्तामानलें तोतंतुवोंकेअभावहुएभीपटहुआचाहिये ॥ शंका ॥ पटकेप्रतितंतुकोसमवायिकारणताहोनेसेआश्रयपनाहै। इसीसे तिसकेअभावहुए पटस्थितनहीं होता। कोईतंतुकीसत्ताहीपटकीसत्तानहीं। किंतुपटकीसत्तास्वतन्त्रहै। समाधान ॥ हेवादिन्हिमाचल तथाविंध्याचलकीन्याईभेदमेकार्यकारणभावकाअदर्शनहै। यातेकार्यकारणकाअभेदमानेहुएतंतुऔपटइनदोनोंमेएकहीशेषरहाचाहिये। औरपटकोतंतुसापेक्षहोनेसेतथा तंतुकोपटनिर्पेक्षहोनेसेतंतुहीशेषरहसकताहैपटनहीं। इसप्रकारतंतुसेभिन्नकियाहुआपटस्वरूपसेशून्यहीहोजाताहै। तैसेयहप्रतीतिसिद्ध जोचराचरजगत्है। सोयदिवास्तवसेआत्मासेभिन्नहो तोशून्यअर्थात् असत्हीहोजायेगा।कारणयहकिचेतनमात्रहैऔरवहचेतनरूपतावास्तवसेआत्मामेहीपर्य्यवसानकोप्राप्तहोतीहै।यातेआत्मासेभिन्नजगत्तुच्छ

हयहकथनयुक्तहै॥२०॥शंका॥चेतनस्वरूपआत्माकोजगतरूपताकर भानमानेहुएविकारीपनाप्राप्तहोगा।क्योंकिअनेकविकारसहितजगत् भासता है। समाधान। हेवादिन् विवर्त्तवादकेआश्रयणकरनेसेयह दोषनहींप्राप्तहोसकता। इसीकोदृष्टांतसहितनिरूपणकरतेहैं।

मू०–रज्जुर्यथाभ्रांतदृष्ट्यासर्परूपाप्रकाशते।
आत्मातथामूढबुद्ध्याजगद्रूपः प्रकाशते॥२१॥

चौ०–भ्रांतदृष्टिकरगुण हैजोई। सर्परूपजिमभासततसोई॥
तिमयहआतममूढबुद्धिकर। जगद्रूपभासतनिजरिदधर॥२१॥

टी०–जैसेरज्जुभ्रांतपुरुषकीदृष्टिसे सर्परूपताकरभानहोती है। तैसेअज्ञपुरुषकोभ्रांतिकरआत्माभीजगतरूपतासे भानहोता है। और मिथ्यासर्पकरजैसे रज्जुविषसहितनहींहोती॥ तैसेमिथ्याजगत्कर आत्माभी विकारवान् नहीं होता॥ २१॥

शंका॥ अगतरज्जुकोसर्पकी अधिष्ठानताहोनेसे तिसकीतोसर्पादि रूपताकरप्रतीतिसंभवतीहै॥ परन्तुआत्माअज्ञानकेवशसे जगतरूप ताकरभानहोताहै॥ यहकल्पनायुक्तनहीं॥ क्योंकितिसकोनिमित्त कारणतामात्रहोनेसे जगतकीअधिष्ठानता नहींसंभवती॥समाधान॥

मू० आत्मन्येवजगत सर्वदृष्टि मात्रमतत्त्वकम्।
उद्भयस्थिति मादायविनश्यतिमुहुर्मुहुः॥ २२॥

चौ०॥ आत्मसेंहींसबजगपयिए॥ दृष्टिमात्रवास्तवनहिहयिए॥
क्षणउत्पतीक्षणस्थितीधार॥ पुनः पुननाशहोतसंसार॥२२॥

टी०–यहसर्वजगतप्रतीतिमात्रतथामिथ्या स्वरूपवारवारउत्पत्ति

तथास्थितिकोप्राप्तहोकर वारंवारविनाशकोप्राप्तहोताहै । यातेप्रपंचकी उत्पत्तितथास्थितिऔविनाशका कारणहोनेसे आत्माकोनिमित्तमात्रतानहीं । किन्तुविवर्त्ताधिष्ठानता रूपउपादानकारणताहै । इसप्रकार अज्ञातआत्माकोजगत्की अधिष्ठानतायुक्तहै (२२) ॥ शंका ॥ आत्माकोपरिच्छिन्नजगत् रूपताहोनेसेअनात्मताकी प्राप्तिहोगी । तथादुःखरूपजगत्रूपताहोनेसेआत्मामेंनानात्वरूपअनिष्टप्राप्तहोगा। औरअशुद्धिरूपताभीआत्मामेंप्राप्तहोगी।क्योंकिअशुद्धजगत्रूपताभी तिसीकोहै । औरतैसेही पुण्यऔपापकीअधिकरणताभी तिसीमें प्राप्तहोगी । क्योंकिधर्मादिनिरपेक्षआत्मा जगत्रचनाको नहींकर सकता । अन्यथाविषमतादिदोषकीप्राप्तिहोगी । औरयदितुमऐसे कहो।किजीवकेअदृष्टकोहीपरमात्माआश्रयणकरकेजगत्रचनाकरताहै। स्वअदृष्टकोनहींआश्रयणकरता।यातेतिसकोपुण्यपापकीअधिकरणता नहींहै।सोयहकथनभीअसंगतहै।।क्योंकिजीवऔब्रह्मकाअभेदतुमको स्वीकारहै॥किंवा।जैसेदुग्धदध्याकारपरिणामकोप्राप्तहुआदधिहीशेषरहता है।।दुग्धशेषनहींरहता।।तैसेआत्माभीजगत्रूपताकोप्राप्तहुआजगत्ही शेषरहेगा।आत्मानहीं।यातेपूर्वउक्तदोषअवश्यप्राप्तहोवेंगे।।समाधान।।

मू०॥ पूर्णानंदाद्वयेशुद्धेपापदोषादिवर्जिते ।
प्रतिबिंबमिवाभातिदृष्टिमात्रंजगत्त्रयम् ॥२३॥

चौ०॥ पूरनआनंदअद्वयशुद्ध । पापदोषादिकवर्जितशुद्ध ।
अभाससमंतिसमेंहुयिभान । दृष्टिमात्रजगत्रयंवखान ॥२४॥

टी० ॥ जैसेदर्पणमुखादिकबिंबकीसमीपताकेप्राप्तहुएप्रतिबिंब रूपताकर भासमानहुआभीतिसप्रतिबिंबाकारताकोमिथ्याहोनेसेस्वरूप

कोनहींत्यागता तैसेपूर्णतथाआनंदस्वरूपऔरद्वैतसेरहिततथाअविद्यादिमलसेरहितशुद्धऔरपापदोषादिरहितआत्मामेंमतीतिमात्रजाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिरूपजगत्त्रयअथवात्रयलोकात्मकजगताकारताकोमिथ्याहोनेसेजगत्रूपसेभासमानहुआभीआत्मास्वरूपकोनहींत्यागता । इसप्रकारअज्ञानकेवशसेही परिच्छिन्नादिरूपजगत्रूपताआत्मानिष्ठमानहोतीहैवास्तवसेनहीं । यातेपूर्वउक्तएकदोषभीनहींप्राप्तहोता । यहीअर्थभगवान्वसिष्ठमुनिजीनेभीकहाहै । तहांश्लोक—

* तस्मिंश्चिद्दर्पणेस्फारेसमस्तावस्तुदृष्टयः ॥
इमास्ताः प्रतिबिंबंतिसरसीवतटद्रुमाः ॥१॥
यस्य चित्तमयीलीलाजगदे तच्चराचरम् ॥
तस्यविश्वात्मकत्वेपिखंडतेनैकपिंडिता॥२॥*

टी० ॥ तिसविस्तृतचैतन्यरूपदर्पणमेंसोयहसमग्रपदार्थोंकीप्रतीतियांप्रतिबिंबभावकोप्राप्तहोतीहैं। जैसेस्वच्छतालावमेंकिनारेकेवृक्षप्रतिबिंबतहोतेहैं ॥ १ ॥ औरजिसआत्माकीयहचराचरजगत्चित्तरूपीलीलाहै । तिसआत्माकोअज्ञानकेवशसेनानाजगत्रूपतासेभासमानहुएभीएकअद्वितीयरूपताकीहानीनहींहोती। २। इति ॥ २२ ॥ अबपूर्वउक्तसमग्रग्रंथसेएकदेशीकेनिषेधके मिषकरनिरूपणकियाजोविषयतिसको उपसंहार करतेहैं । जिसकारणसे ज्ञानऔज्ञेयकाभेद प्रमाणसिद्धनहीं तिसीकारणसे दृष्टिमात्र स्वरूपजगत्है । अर्थात्दृष्टिऔदृश्यइनदोनोंकेमध्यएककी शेषताकेप्राप्तहुए दृश्यकोदृष्टिसापेक्षहोनेसे तथादृष्टिको दृश्यनिर्पेक्षहोनेसेदृष्टिहीशेषरहतीहै । दृश्यनहीं । यातेदृष्टिमात्ररूपताजगत्कोसंभवतीहै । सोदृष्टिमात्रस्वरूप

जगत्आत्माकेआश्रिततथातिसीको विषयकरनेवालेअज्ञानसेकल्पित है ॥ शंका ॥एकदेशीकेमतकेनिषेधद्वाराचिदात्माकोस्वाश्रयस्वविषय अज्ञान करके जगत् रूपता तथा जगत्रूपता से प्रतीति निरूपण करने वाले वादी ने अज्ञानविषयत्व आत्मामे अंगीकार किया ॥ औरतैसेअज्ञानकानिवर्त्तकजोअपरोक्षआत्मज्ञानहै तिसकाजनकरूप ताकरउपनिषदोंको आत्मामेप्रमाणता तुमनेआपहीउपपादनकी ॥ यातेअर्थसेसिद्धांतीकामतहीसिद्धहुआ। ऐसेएकतटस्थकीआशंकाहुए पूर्वपक्षीकासमाधान ॥ तिसपूर्वउक्तयुक्तिसे आत्मानिष्ठअज्ञानकी विषयताजोकल्पनाकीहैसोसाधुहै। यहांपरयहकाकुउक्तिजाननी॥अर्थ यहक्या ? वहअज्ञानविषयत्वकीकल्पनासाधु है किंतुसाधुनहीं । जिसकारणसेकेवलकल्पनामात्र है।कोईप्रमाणसिद्धनहीं है ॥ क्योंकि स्वयंप्रकाशआत्मामे अज्ञानकी विषयताकाअसंभव पूर्वकथनकर आए हैं । यातेसिद्धांतीके मतकीसिद्धिनहींहोसकती । इसीको स्पष्ट करतेहैं। आत्मामेलौकिकतथावैदिकप्रमाणकेअसंभवहुए शशशृंगकी न्याईं असत्पना है ॥ तिसअसत्पनेकेप्राप्तहुए तिसकेसाक्षात्कारके अर्थशास्त्रकीअपेक्षाकिसहेतुसे होसकती है ॥ किंतुनहींहोसकती॥ औरतैसेहीयुक्तिकीअपेक्षातोअत्यंतदूरहै ॥ क्योंकिवैदिकअर्थमेयुक्ति कीअपेक्षानहीं ॥ औरयदितिसमेभीयुक्तिकीअपेक्षामानोगे ॥ तो वेदकोनिरपेक्षप्रमाणताकीहानिहोगी ॥ अथपूर्वपक्षकेसंग्रहकाश्लोक॥

आत्माऽसन्नप्रमाणत्वात् तत्साक्षात्कृतयेपुमान् ।
उपासीतश्रुतिकस्माद्युक्तिं चापेक्षतेकथम् ॥ १ ॥

अडिल० ॥ आत्मसत्तानाहिप्रमाणाभावते।
तांदर्शनहितनरनहि श्रुतिउपासते॥
युक्तिअपेक्षातामहिकिसविधवनतहै॥
होवृथापरिश्रम विज्ञनयातेधरतहै॥ १॥

* इतिमहापूर्वपक्ष * अथसिद्धांतनिरूपण *

इसप्रकारपूर्वपक्षके माप्तहुएसिद्धांतकथनकरतेहैं।

मू०—यत्तत्त्ववेदगुप्तंपरमसुखतमंनित्यमुक्तस्वभावम्।स त्यंसूक्ष्मातसुसूक्ष्मंमहदिदममृतंमुक्तमात्रैकगम्यम्॥ य स्यांशेलेशमात्रंजगदिदमखिलंभ्रांतिमात्रैकदेहम्।प्रत्य- गज्योतिस्वरूपं शिवमिदमधुनाकथ्यतेयुक्तितोऽत्र।२४।

क०। वेदगम्यतत्त्वजोऊपरमआनन्दरूप मुकतस्वभावनित्य सदाजोऊगायिए। सूक्ष्मतेसूक्ष्ममहतयहसत्यामृत मुक्तमात्रगम्य पुन जाहिकोबतायिए ॥ जाहिअंशविपेलेशमात्रयहजगसबभ्रांति मात्ररूपकरिसदाठहरायिए। प्रत्यगस्वरूपशिवज्योतियहिआतमा जो। ताकेमाहियुक्तिअत्र किंचितदिखायिए ॥ २५ ॥

टी०॥ पूर्ववादीनेदोविकल्पकियेथे।किआत्मामेंकोईप्रमाणहैवा नहीं। तहांहमवादीसेयहपूछतेहैं। यहांआत्मशब्दसेअविद्यादिविशिष्ट जोअव्याकृततथाजीवादिशब्दनकावाच्यवहग्रहणकियाजाताहै।अथवा शुद्धचिदानंदस्वरूपआत्मशब्दसेगृहीतहै। प्रथमपक्षमेंतिसकोअस्व प्रकाशताहोनेकरदृश्यत्वकाविरोधनहीं।तिसमेंप्रमाणकीप्रवृत्तिमानने मेंकोईदोषनहींप्राप्तहोता। क्योंकिवहअविद्यादिविशिष्टयहांप्रतिपादन

करनेयोग्यनहीं । तिसमेंप्रमाणकीप्रवृत्ति तथानिवृत्तिकाजोविचारहै सोनिष्फलहै।तिसविशिष्टआत्माकोयहांप्रतिपादनकीअयोग्यताहुएयहां कौनप्रतिपादनकरनेयोग्यहै । ऐसीआकांक्षाकेहुएकहतेहैं । इसग्रंथके आरंभमेंप्रथमकारिकामेंजोचतुष्टयविशेषणवालाआत्माकथनकियाहै । वहहीयहांपरभीनिरूपणकरनेयोग्यहै।तिसीकोइसश्लोकसेनिरूपणकरते हैं । (यत्तत्त्वम्)जोअनारोपितस्वरूपअर्थात्पारमार्थिकस्वरूपआत्माहै। सोनिरूपणीयहै ॥ शंका ॥ यहआत्मानिरूपणकनेयोग्यनहीं । क्यों कितिसमेंप्रमाणकीप्रवृत्तिकाअभावहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्वह आत्मा (वेदगम्यम्) केवलवेदप्रमाणगम्यहै । यातेप्रमाणकीप्रवृत्तिका अभावनहीं ॥ शंका ॥ यहपूर्वउक्तआत्मावेदगम्यनहींहै । क्योंकिवह अपुरुषार्थस्वरूपहै ॥ समाधान ॥ (परमसुखतमम्) वहतत्त्वपरमानंद स्वरूपहै । यातेअपुरुषार्थरूपनहीं । औरअविद्यातत्कार्यसेरहितहोने करभीवहतत्त्वपुरुषार्थरूपहै। इसीकोकहतेहैं(नित्यमुक्तस्वभावम्)सदा हीअविद्यातत्कार्यसेरहितस्वरूपहै ॥ शंका॥ प्रयोजनरूपताहोनेसेवेद गम्यताकेसंभवहुएभीतिसतत्त्वकोदृश्यताहोनेसेमिथ्यात्वकीप्राप्ति है । समाधान ॥ वहतत्त्व (सत्यम्) तीनोंकालमेंबाधशून्यहै यातेतिसमे मिथ्यात्वकीप्राप्तिनहीं ॥ शंका ॥ सत्यरूपमानेहुएतिसतत्त्वकोसिद्ध होनेकरतिसमेंप्रमाणांतरकीसंमतितथाविरोधहोनेसेवेदको अप्रमाणता होगी ॥ समाधान ॥ (सूक्ष्मात् सुसूक्ष्मम्) प्रधानादिसूक्ष्मपदार्थों सेभीअत्यंतसूक्ष्महै । इसीसेवहतत्त्वप्रमाणांतरकीविषयताकेअयोग्य है । यातेतिसमेंवेदकोअप्रमाणताकीप्राप्तिनहीं ॥ शंका ॥ तिसतत्त्व कोसूक्ष्ममानेहुएपरिच्छिन्नपनाप्राप्तहोगा । तिसीकारणसेघटकीन्याई

अनात्मताकीप्राप्तिभीहोगी ॥ समाधान ॥ (महत्) वहतत्त्वनिरं व्यापकहै यातेतिसमेघटवत्अनात्मतानहींप्राप्तहोसकती ॥ शंका तिसतत्त्वकोमुक्तस्वभावमानेहुएमुक्तिऔमुक्तिवालेका भेदप्रतीतहो सेवहसर्वसेअधिकव्यापकरूपनहींसंभवता ॥ समाधान॥(इदमप्तम् यहपूर्वकथनकियाजोतत्त्वहै सोमुक्तिस्वरूपहै । तिससेभिन्नऔरको मुक्तिनहींहे । यातेपरिच्छेदनहीं संभवता । इसीअर्थ मे विद्वान्का प्रत्यक्षअनुभव प्रमाणरूपतासे दिखलातेहैं । (मुक्तमात्रैक गम्यम्) एक मुक्त पुरुष करही वह जानने योग्यहे । अर्थात् विद्वान्पुरुषही तिस तत्त्वको अपना आत्मारूप कर अनुभव करता है । अन्य नहीं । इस प्रकार तत्पदका लक्ष्यार्थ निरूपण करकेअबतत्पदके वाच्यार्थकोनिरूपण करतेहैं । (शिवम्) वहीतत्त्वमायारूपउपाधि सेईश्वरहै ॥ तिसकेईश्वरत्वकोही कथनकरतेहैं ॥ (यस्यांशलेशमात्रं जगदिदमखिलम्) अ० जिसकेमायिकप्रदेशरूपकिसीएकअंशमेंयह लेशमात्रसमग्रजगत् कार्यरूपतासेस्थितहै । शंका।तिसतत्त्वकोजगत् काउपादानमानेहुए विकारीपनाहोगा ॥ समाधान ॥ भ्रांतिमात्रैक देहम) अज्ञानमात्रही तिसईश्वरत्वकास्वरूपहै । इसीहेतुसेसाभास अव्याकृतरूपअज्ञानही जगतकाउपादानकारणहै स्वरूपसेअक्षरब्रह्म कारणनहीं । यातेअज्ञानकी प्रधान्यताकरजगतकी उपादानताहोने सेविकारित्वकी प्राप्तिनहीं ॥ अथवा " भ्रांतिमात्र " यहजगत्का हीविशेषणहै ॥ तिससेयहअर्थसिद्धहुआ।भ्रांतिस्वरूपजगत्कावास्तव सेआत्माउपादानकारणनहीं ॥ यदिआत्माकोहीउपादानमानोगेतो जगत्मेंसत्यताकीप्राप्तिहोगी।क्योंकिसत्यउपादानकवस्तुसत्यहीहोता

है ॥ यद्यपिआत्माको उपादानताकेअभावहुए श्रुतिमेंतिसकोकारणताकथनकैसेसंभवेगा।तथापिउपादानभूतअज्ञानकाअधिष्ठानहोनेसेतिसको कारणत्वकथनहै।यातेआत्मामेविकारित्वप्रसक्तिनहींहोती। तिसआत्माकातटस्थपनानिवारणकरते हैं ॥ (प्रत्यग्) जडतातथा अनात्मतादिधर्मोंकरबाह्यरूपताको प्राप्तहुआजोजगतहै । तिसकी अपेक्षाकर विपरीतचेतनतादिरूपतासे औरअंतरादिभावकरप्रकाश करतेहुएकीन्याईजोप्रतीतहोताहै वहप्रत्यक्कहाजाताहै ॥ प्रत्यक्त्वमे हेतुकहते हैं ॥ (ज्योतिः स्वरूपं) जिसकारणसेस्वयंप्रकाशचेतनरूपहै तिसतत्त्वकेकथनका प्रकरणनहीं है । ऐसीआशंकाको निषेधकरते हैं। (अधुना) अब शिष्यकी जिज्ञासाके उत्तरकालमे तिसतत्त्वका निरूपणप्राप्त है। यातेअप्रस्तुतअर्थात्प्रकरणअसंबद्ध अर्थकाकथन नहीं ॥ शंका ॥ तुम्हारे कथनसे क्या? सिद्धहोगा। क्योंकिवेद करहीतिसका कथनबनजायेगा ॥ समाधान ॥ (युक्तितः) अज्ञानतथासंशयके निराकरणद्वारावेदअर्थकी प्रगटताकेलियेऔर तिसमेंयोग्यताकीप्राप्तिअर्थयुक्तिसे अर्थात्श्रुति अनुसारीतर्कसेतिस आत्मतत्त्वकोनिरूपणकरतेहैं ॥इति॥ पूर्वपक्षकेआरंभमेंआत्मशब्द सेजीवतथाईश्वरविवक्षितनहीं किंतुशुद्धचेतनआनंदघनप्रत्यकब्रह्मका अभेदरूपअर्थहीआत्मशब्दसेविवक्षितहै । और तिसमेंपूर्ववादीकर कथन कियेदूषणोंकाअवकाशनहीं है। इसअर्थकेकथनकरनेकेलिये सिद्धांतीयत्न विकल्पकरताहै ॥

ॐ अथप्रमाणाभावसे आत्मामेंअसत पनेकीशंकाका समाधान ॐ

हेत्वादिनक्या ? निरूपणीयआत्मामेंप्रमाणकेअभावसे आत्मा केस्वरूपकीअनुपपत्तिहै ॥ अर्थयहआत्माकोप्रमाणकीअपेक्षाक्या? स्वरूपलाभकेअर्थ है। अथवाप्रमाणकेअभावसे प्रतीतिकीअनुपपत्ति है ॥ अर्थात्अपनीप्रतीतिके अर्थप्रमाणकीअपेक्षा है ॥ प्रथमपक्ष तोनहींसंभवता ॥ क्योंकितिसमेंयहविचारकरनेयोग्य है । क्या ? यहपक्षआत्मनित्यत्ववादीकाहै। अथवाआत्माकोकार्यकहनेवालेका पक्ष है ॥ इनमेंप्रथमपक्षअसंगतहै ॥ क्योंकिआत्माकोअकार्य्यहोने करइतरकीअपेक्षाकाअभावहै ॥ भावपदार्थमेंनित्यत्वअकार्यहोनेसे हीसंभवहोसकताहै ॥ यातेस्वरूपलाभकेअर्थआत्माप्रमाणकीअपेक्षा नहींकरता ॥ औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता ॥ क्योंकिप्रमाण प्रमेयकाउत्पादकनहींकिंतुज्ञापकहै ॥ शंका ॥ प्रमाणकोप्रमेयकी अनुत्पादकताअसिद्धहै ॥ क्योंकिप्रवृत्तिआदिकभीप्रमेयहैं। वहप्रमा णसेउत्पन्नहोतेहैं ॥ समाधान ॥ हेत्वादिन्प्रवृत्तिविषयकज्ञानप्रवृत्ति कोनहींउत्पन्नकरता किंतुजिसअर्थविषयकपुरुषकीप्रवृत्तिहोती है ॥ तिसअर्थविषयकइष्टसाधनताकाज्ञानप्रवृत्तिकोउत्पन्नकरताहै ॥ याते स्वविषयकाउत्पादकप्रमाणनहीं ॥ इसीसेप्रवृत्तिज्ञानमेंव्यभिचारनहीं। औरआत्मास्वप्रतीतिकेअर्थप्रमाणकीअपेक्षाकरताहै ॥ इसआद्यद्विती यपक्षमेभीयहविचारकर्तव्यहै । क्या ? प्रतीतिमात्रप्रमाणकेआधीन है। अथवाजडपदार्थकीप्रतीतिप्रमाणकेआधीनहै ॥ तहांप्रथमपक्षमे तोअतिप्रसंगहै ॥ क्योंकिप्रमाणविषयकभीअन्यप्रमाणकहनेयोग्यहै । शंका ॥ विषयकीसिद्धिअर्थप्रमाणकीअपेक्षाहै ॥ कोईप्रमाणकोअ न्यप्रमाणकीअपेक्षानहीं। क्योंकितिसमेंअन्यप्रमाणका कुछउपयोग

नहीं है ॥ समाधान॥ प्रमाणमेंप्रमाणांतरकेअभावहुएनरशृंगकीन्याई असत्होनेकरस्वप्रमेयकेसाधकपनेकाअसंभवहै ॥ अर्थात्लब्धसत्ता वालाहीप्रमाणस्वविषयकासाधकहै ॥ औरवस्तुमात्रकीसत्ताप्रमाणके आधीनहै यहतुम्हारानियमहै । यातेप्रमाणांतरसे विनाप्रथमप्रमाण कीसत्तानहींसिद्धहोसकती ॥ औरस्वरूपसत्ताके अभावहुए प्रमाण स्वविषयकासाधककैसेहोगा ॥ औरयदिप्रमाणमेंभीअन्यप्रमाणकीअ पेक्षामानोगे तो अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोगी ॥ शंका ॥अनवस्थाके भयसेयदिऔरप्रमाणनहींमानेगेतो प्रमाणकरहीवस्तुकीसिद्धिहोती है। यहवृद्धोंकाउच्चस्वरसे कथनकैसेसंभवेगा ॥ समाधान ॥ हेवादिन् अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोनेसेप्रमाणकरहीवस्तुसिद्धहोतीहै। यहतिनका "उद्घोष" अर्थातउच्चस्वरसेकथन केवलअभिमानमात्रहै अर्थात् भ्रांतिमूलकहै ॥ शंका ॥ जडवस्तुअपनीप्रतीतिकेअर्थप्रमाणकी अपेक्षाकरो।परन्तुप्रमाणतोस्वयंप्रकाशमानहोनेसेप्रमाणांतरकीअपेक्षा नहींकरता । जैसेप्रदीपस्वप्रकाशकेनिमित्तऔरप्रदीपकीअपेक्षानहीं करतायातेसर्वअर्थकासाधकजोप्रमाणहै। वहअपनीसिद्धिकेअर्थअन्य प्रमाणकीअपेक्षाकरताहैयहकथनहीअयुक्तहै।औरजोसिद्धांतीऐसेकहै किप्रमाणकोस्वविषयकप्रतीतिकाजोजनकपनाहै । यहहीस्वसाधक पनाहै। सोयहकथनसमीचीननहीं।क्योंकिइसमेंश्रुतिविरोधहै। अर्थात् एकपदार्थमेंएककालमेंकर्तृत्वतथाकर्मत्वकाविरोधहै। यातेप्रमाणमेंस्व प्रकाशतानहींसंभवती। सोयहसिद्धांतीकाकथनभीअसंगतहै। क्योंकि स्वव्यवहारमेंदूसरेकीअपेक्षासेजोरहितपनाहै । यहहीस्वसाधकशब्दका अर्थहै । इसीकोप्रमाणनिष्ठसिद्धकरतेहैं प्रमाणस्वसिद्धिकेअर्थजिसकी

अपेक्षाकरताहै । वहप्रथमप्रमेयरूपतोनहींसंभवता । क्योंकिविपयको अप्रकाशकपनाहै । औरयदितिसकोप्रमाणरूपकहोतोयहभीनहींसंभवता । क्योंकिअनवस्थादोषप्रसहोताहै । यातेसर्वकासाधकजोप्रमाण है वहअपनीसिद्धिकेअर्थअन्यकीअपेक्षाकरताहै यहकथनअयुक्तहै ॥ इसप्रकारप्रमाणस्वप्रकाशस्वभावहुआस्वपरकीसिद्धिकेअर्थकिसीअन्य प्रमाणकीअपेक्षानहींकरता । यातेपूर्वउक्तअनवस्थादोषकीप्राप्तिनहीं इसप्रकारपूर्वपक्षकेप्रसहुएसिद्धांतीउत्तरनिरूपणकरताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्‌वडाहर्ष है स्वप्रकाशप्रमाणकोअन्यकीअपेक्षासेरहितमानेहुए आत्माप्रमाणसेकैसेसिद्धहोगा ॥ शंका ॥ प्रमाणसेआत्माकीसिद्धि माननेमेंक्याअनुपपत्तिहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्‌प्रमाणकास्वरूपऔ तिसकाभानआत्माकेआधीनहै औरआत्माकीसिद्धिप्रमाणकेआधीनहै इसप्रकारअन्योऽन्याश्रयदोषहोनेसेआत्माप्रमाणसिद्धनहीं । प्रमाणकी सिद्धिआत्माकेआधीनहै । इसअर्थकोकैमुत्यकन्यायसे सिद्धकरतेहैं ॥ प्रमाणप्रमेयादिनानाभेदविशिष्टसकलजगत्‌कासाधकआत्माहै ॥ क्यों किअपनेअज्ञानसेसर्वजगत्‌को उत्पन्नकरकेप्रकाशकरताहै ॥ यातेजो आत्मासर्वजगत्‌कासाधकहै ॥ तिसकोजगत्‌केएकअंशरूपप्रमाणकी साधकतामेंतोक्याहीकहनाहै ॥ इति ॥

❀ अन्यप्रकारसेउसी शंकाका समाधान ❀

किंवा । हेवादिन्‌प्रमाणसेआत्मासिद्धहोताहै । इसकाक्या अर्थहै । क्या ? आत्माप्रमाणसे उत्पन्नहोताहै । अथवाप्रमाणसेजाना जाताहै । प्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिप्रमाणकेप्रति आत्माकोकार णताहोनेसेप्रमाणसेप्रथमहीतिसकीसिद्धिहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन्‌

प्रमाणकेप्रतिजोआत्माकोकारणताकहतेहो तिसमेयह आपकोकहना चाहिये किवहआत्मा क्या?प्रमातारूपसे कारणहै । अथवाकरण रूपतासेकारणहै वाविषयरूपतासेकारणहै ।प्रथमपक्षतोनहीं संभवता क्योंकि—

॥ ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वंमनएव ॥ बृ० उ० अ० १ ब्रा० ५ कं० १ ॥

अ० ॥ लज्जातथाज्ञानादियहसर्वहीअंतस्करणकेधर्म हैं । इसश्रुतिसेअंतस्करणमेहीप्रमातापनाहैआत्मामेनहीं । औरद्वितीयतथा तृतीययहदोनोंपक्षभीनहीसंभवते ।क्योंकिआत्माकोकरणरूपतातथा विषयरूपताअंगीकारनहीं है ॥ समाधान ॥ प्रमाणसेपूर्वआत्माकी असिद्धिमानेहुएआश्रयरूपप्रमाताकेअसिद्धहुएप्रमाणकोस्वरूपलाभही नहींहोगा । भावयहचैतन्यकेसाथतादात्म्यभावकीप्राप्तिसेविनाअंतस्क रणकोप्रमातापनानहींसंभवता । क्योंकिवहजडहै । विशेषचेतनके तादात्म्यविनाभी यदिअंतः करणमेप्रमातृत्वमानोगे। तोघटादिकोंमेभी प्रमातृत्वप्राप्तहोगा । औरआत्माकेप्रमातापनेमेंवृत्तिवालेअंतस्करणको उपाधिपनाहै । इसलियेअंतस्करणप्रमाताहै।ऐसालोकमेव्यवहारहोता है । इसप्रकारप्रमाताआत्माप्रमाणोंकाकारणहै । तिसकेअभावहुए प्रमाणकोस्वरूपलाभहीनहींहोगा । क्योंकिकारणकेअभावहुएकार्य काभीअभावहोताहै ॥ शंका॥ हेसिद्धांतिन् । प्रमाणसेआत्माउत्पन्न होताहै यहहमनहींकहते।किंतुप्रमाणसेआत्माज्ञातहोताहै॥ समाधान॥ हेवादिन्इसद्वितीयपक्षमेभीयहविचारकरनेयोग्यहै । आत्माकोप्रमाण सेज्ञातमानेहुएज्ञाताक्या?वहीआत्माहै।अथवाकोईअन्यहै । प्रथमपक्ष नहींसंभवता।क्योंकिप्रमेयमात्रकेप्रतिएकआत्माकोहीज्ञाताहोनेसेतिस

ज्ञेयपनाअयुक्तहै । भावयहहैकिप्रमाणकेप्रतिआत्माकोज्ञाताहोनेसे ज्ञेयपनातिसकोयुक्तनहीं । यातेसर्वकेज्ञाताआत्माकोप्रमाणकैसेविषय करसकेगा किंतुनहींकरसकता ॥ शंका ॥ प्रमाणादिकसर्वपदार्थों काजोज्ञाताहै वहप्रमाणकाविषयक्योंनहींहोता ॥ समाधान ॥ हे वादिन् आत्माकोभीयदिज्ञानरूपप्रमाणकाविषयमाने।तोकर्तृकर्मविरोध कीप्राप्तिहोगी । क्योंकिज्ञानभीएकक्रियाविशेषहै । सोकर्ताऔरकर्मकी अपेक्षाकरकेहीउत्पन्नहोतीहै । तिनमेकर्ताकोतोक्रियाकासाधनहोनेसे क्रियाकेप्रतिगौणताहै । औरकर्मतोस्वरूपसेअथवाधर्मसे क्रियाकर साध्यहोनेसेक्रियाकेप्रतिप्रधानहै । तिसीकारणसेआत्माकोस्वज्ञानरूप क्रियाकेप्रतिएककालमेहीउभयरूपताकीप्राप्तिहै। ज्ञानकाआश्रयरूपता करसाधनहोनेसेगौणताहै । औरज्ञानकाविषयहोनेसेप्रधानताहै । इस प्रकारविरुद्धद्विरूपताकीप्राप्तिसेआत्माकोप्रमाणविषयनहींकरसकता । औरद्वितीयपक्षमेभीयहविचारकरनेयोग्यहै । ज्ञेयरूपआत्मासेभिन्नजो प्रमाताहै । वहजडहै । अथवाचेतनहै । प्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकितिसकोअनात्माहोनेसेप्रमातृत्वकाअसंभवहै । औरद्वितीयपक्ष भीअसंगतहै । क्योंकिप्रथमआत्माकोज्ञेयहोनेकरघटवत्अनात्मताकी प्राप्तिहोनेसेतिसदूसरेचेतनरूपप्रमाताकोहीआत्मपनाहोगा । अवसर्व काविज्ञाताजोआत्माहै सोकिसीप्रमाणकाविषयनहीं।इसअर्थमेमैत्रेयी ब्राह्मणकाशेषवाक्यउदाहरणकरतेहैं ॥

❀ विज्ञातारमरेकेनविजानीयात् ।(वृ०) उ० पै० ब्रा०कं०१५ ❀

अ० ॥ अरेमैत्रेयीसर्वकेविज्ञाताआत्माकोकिसकरणकरकेकौन अन्यज्ञाताजानसकताहै । क्योंकितिसमोक्षदशामे आत्मासे व्यति

रिक्तसर्वकाअभाव है ॥ इसप्रकारप्रमाणसे विनाआत्माकीस्वतः सिद्धिहोनेसेप्रमाणके अभावसे आत्माकाअसत्पनानहीं होसकता। यहअर्थसिद्धहुआ ॥ इति ॥

※प्रमाणाभावसेआत्मामेंअसत्त्वापत्तिका अन्यप्रकारसेपरिहार※

किंवा ॥ आत्मामेंयदिप्रमाणनहींतो असत्त्वापत्तिहोगी। ऐसे कथनकरनेवालेवादीनेआत्मामेंप्रमाणकेअभावसे असत्पनाआपाद नकिया है। यहहमकोप्रतीतहोता है। सोयहकथनअयुक्त है। इस अर्थकेनिरूपण करनेकेलिये विकल्पकरते हैं। हेवादिन्प्रमाणकेअभा वसे आत्मामेंआपाद्यमानअर्थात्प्राप्तहोनेयोग्यजोअसत्त्व है। वहज्ञात है वाअज्ञातहै। अर्थयहकिअसिद्धस्वभाव है। प्रथमपक्षमेंभीयहवि चारकियाचाहिये ॥ क्या ? वहआत्माकाअसत्त्वप्रमाणसेज्ञात है ॥ अथवाभ्रमकरकेज्ञात है। वा स्वतःसिद्ध है। प्रथमपक्षमेंपुनःयहवि चारणीय है। क्या ? वहअसत्त्वकाग्राहकप्रमाण असत् अर्थात् अभाव मात्रकोग्रहणकरता है। अथवाआत्मप्रतियोगिकअसत्कोग्रहणकरता है। प्रथमपक्षनहींसंभवता। क्योंकिसत्का अभावरूपजोअसत् है तिस कोप्रतियोगीकेआधीनहोनेकरप्रतियोगीकोनविषयकरकेवहप्रमाण के वलअसत्मात्रकोनहींग्रहणकरसकता। औरयदिप्रतियोगीकोविषय करकेअसतकोप्रमाणविषयकरता है। यहद्वितीयपक्षकहोतो आत्माभी प्रमाणसिद्धहुआ। क्योंकिअसत्कोग्रहणकरनेवालाप्रमाणप्रतियोगी कोनियमसे ग्रहणकरता है। यातेआत्माकोभी प्रमाणसिद्धहोनेकर प्रमाणाभावरूपआपादककेअभावसे आत्मामेंआपाद्यमानअसत्त्वभी

नहींसंभवता ॥ जैसेअग्निवालेदेशमेअग्निके अभावरूपआपादकसे धूमाभावनहीं आपादनकरसकते ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन्असत्त्वका प्रतियोगीसत्त्व है ॥ आत्मानहीं ॥ यातेआत्माकोप्रमाणकीविषयता आपकैसेकहतेहो ॥ समाधान ॥ हेवादिन्वहसत्त्वप्रतियोगीहुआ क्या ? किसीपदार्थकास्वरूप है अथवाधर्म है ॥ प्रथमपक्षमेभीयह कहाचाहिये किआत्माकास्वरूपवहसत्त्व है अथवाअन्यपदार्थकास्व रूप है । प्रथमपक्षमेतो उत्तरपूर्वककथनकरआए हैं ॥ किआत्माको प्रमाणसिद्धहोनेसे असत्पनानहीं है । औरद्वितीयपक्षमेतुम्हारेइष्ट कीअसिद्धिहै । क्योंकिअन्यकिसीपदार्थकाहीअसत्त्वहोगा। आत्मा कानहीं ॥ अर्थयहप्रतियोगीको अपनेअभावकीसाधकताकानियम होनेकरपदार्थांतरकास्वरूपभूतजो प्रतियोगीरूपसत्त्व है वहपदार्थांतर के असत्त्वकाहीसाधक है॥ अप्रतियोगीरूपआत्माके असत्त्वकासाध कनहीं॥औरयदिवहसत्त्वधर्म है यहआवद्वितीयपक्षकहोतो तिसमेयह विचारकियाचाहिये ॥ क्या ? वहसत्त्वआत्माकाधर्म है अथवाकिसी अन्यपदार्थकाधर्म है ॥ प्रथमपक्षमेआत्माकासत्त्वप्रतियोगी है तिस आत्मसत्त्वकोप्रमाणसिद्धहुए आत्मामे असत्त्वकाआपादनतुमकैसे करसकतेहो ॥ औरवहसत्त्वअन्यकिसीपदार्थकाधर्म है यदियहद्विती यपक्षकहो तोभीपदार्थांतरकाअसत्त्वहोगा ॥ आत्माकानहीं ॥ याते आत्माकाअसत्त्वकैसेआपादनकरनेयोग्य है॥किंतुकिसीप्रकारभीनहीं॥ औरआत्माकाअसत्त्वभ्रमसेसिद्धहैयहआद्यजोद्वितीयपक्षथासोभीनहीं संभवता॥ क्योंकिअसत्त्वकोभ्रमसिद्धमाने हुएभ्रमकेविषयकोबाधितहोने कर वास्तवसेआत्मामेंसत्त्वहीप्राप्तहोगा।औरतृतीयपक्षमेंयहविचारकिया

चाहिये । असत्त्वमात्रस्वतः सिद्धहै॥ अथवाआत्मविशिष्टअसत्त्वस्व
तः सिद्धहै॥प्रथमपक्षतोनहींसंभवता।क्योंकिप्रतियोगीसेविनाकेवलअ
भावमात्रकानिरूपणनहींहोसकता।औरद्वितीयपक्षमेंतो आत्माकोस्वतः
सिद्धताप्राप्तहोगीक्योंकिआत्मविशिष्टजोआत्माकाअसत्त्वतिसकीस्वतः
सिद्धताहुए विशेषणरूप आत्मामेंस्वतः सिद्धता वलात्कारसेसिद्धहो
तीहै॥तिसकारणसेदोनोंमेंस्वतःसिद्धताप्राप्तहुएआत्माहीस्वतः सिद्ध
है॥ असत्त्वमेंस्वतः सिद्धिकाअसंभवहै । क्योंकिआत्मारूपप्रतियोगी
निर्पेक्षहै ॥ औरअसत्त्वरूपअभाव प्रतियोगिसापेक्षहै ॥ औरसा
पेक्षनिर्पेक्ष इनदोनोंके मध्यमें निर्पेक्षको ही स्वतः सिद्धत्व का
संभवहै। और प्रतियोगीके आधीन असत्त्वकास्वतःसिद्धपनानहीं
संभवता॥ अन्यथाअसत्त्वमें सापेक्षताकीहानिहोगी । यहांपरयह
अर्थज्ञातव्यहै।वहअसत्त्वजडहै ॥ वाचेतनहै ॥ प्रथमपक्षतोनहीं
संभवता॥क्योंकिजडताहोनेसेहीघटकीन्याईस्वतः सिद्धिकीअयोग्यता
है। औरयदिद्वितीयपक्षहोतो आत्माकाहीदूसरानामअसतहै। क्योंकि
स्वतःसिद्धचेतनकोही आत्मरूपताहै । तैसेमानेहुएप्रमाणाभावसे
आत्मामेंअसत्त्वकाआपादन हमकोअनिष्टनहींकिंतुइष्टहै ॥इति॥यहां
पर्य्यंतआत्माका असत्त्वज्ञातहै।इसप्रथमपक्षका निरासकिया । अब
अज्ञातरूपअसिद्धस्वभाववहअसत्त्वहै । इसद्वितीयपक्षको निराकरण
करतेहैं।हेवादिन्यहद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता।क्योंकिअसिद्धकाआपा
दनहीअनुपपन्नहै ॥ शंका ॥ असिद्धकाआपादनकिसकारणसेनहीं
वनता ॥समाधान॥ हेवादिन्प्रतिवादीके प्रतिशब्दसेजोअनिष्टकी
प्राप्तितिसकानामआपादनहै।औरअर्थकेजानेविनाशब्दरचनाकी अनु

पपत्तिहै।यातेबुद्धिमें अनारूढअसत्त्वका आपादनकरनाअयोग्यहै। इसप्रकारप्रमाणके अभावसे आत्माकाअसत्त्व कोईनिरूपणनहीं करसकता ॥

* प्रमाणकेअभावसे आत्मामेंअसत्त्वापत्तिका अन्यप्रकारसे परिहार ॥ *

प्रमाणकरआत्माकेअसत्त्वकीसिद्धिहोतीहैइसपक्षमेंअवसिंहाव लोकनन्यायसे औरदूषणकहतेहैं ॥ जैसेसिंह एकमृगकोहनन करकेआगेगमनकरताहुआ पुनःउसीस्थानकोदेखताहै यदिकोईऔर मृगवहांआयाहोतोतिसकोभीमैंहननकरूं यहसिंहावलोकनन्यायका अर्थहै ॥ तैसेहीप्रमाणसेआत्माका असत्त्वसिद्धहै इसपक्षकोनिरा करणकरकेपुनः वादीनेयदिकोईऔरयुक्तिइसपक्षमें प्राप्तकरीहो।तो तिसकोभीहमनिराकरणकरें । इति ॥ किंवा । हेवादिन्आत्माका असत्त्वक्या?आत्माहीजानताहै । अथवाअनात्माजानताहै ॥ प्रथम पक्षमेंबहुतवक्तव्यहोनेसे तिसकोत्यागकरप्रथमअंत्यपक्षकोदूषितकरते हैं।अंत्यपक्षनहींसंभवता।क्योंकि अनात्माकोज्ञेयऐक्यस्वभावहोनेसे ज्ञातृत्वकाअभावहै ॥ औरप्रथमपक्षभीनहींसंभवता । क्योंकिव्या घातादोषकीप्राप्तिहोतीहै । तैसेदिखलातेहैं । क्या?आत्माअपनीसत्ता कालमेंअपनी असत्ताकोजानताहै अथवाअपनीअसत्ताकालमेंस्व असत्ताकोजानताहै।प्रथमपक्ष तोनहींसंभवता । क्योंकि अपनीसत्ता कालमेंअपनीअसत्ताकैसेहोसक्तीहै और—

❋ परस्परविरोधनप्रकारांतरस्थितिः ❋

अ० ॥परस्परविरोधहुयेकोई अन्यप्रकानहींस्थितहोता । इस

न्यायसेसत्ताऔरअसत्ताका परस्परविरोधहुए एककेविद्यमानहुएदूसरा नहींस्थितहोसकता ॥ शंका ॥ यद्यपिस्वसत्ताकालमेस्वअसत्तानहो परन्तुतिसकोआत्माजानतोसकताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्असत्ता केनहुएआत्माकिसकोजानेगा ॥ क्योंकिविषयकाहीअभावहै। और आत्मास्वअसत्ताकालमेस्वअसत्ताकोजानताहै । यहद्वितीयपक्षभी नहींसंभवता। क्योंकिस्वअसत्ताकालमेज्ञाताआत्माकाहीअभावहोनेसे किसप्रकारवहजानसकेगा ॥ शंका ॥ स्वसत्ताकालमेहीआत्माअपनी असत्ताकोजानताहैइसप्रकारमाननेसेव्याघातदोषकीभीप्राप्तिनहींहोती क्योंकिस्वसत्ताकालमेस्वअसत्ताकाअज्ञानहै। औरयदिसिद्धांतीऐसेपूछे किस्वसत्ताकालमेस्वअसत्ताकेअज्ञातहुए किसकालमेहोनेवालीस्वअ-सत्ताकोआत्माजानेगा। तिसकायहउत्तरहै कालांतरमेहोनेवालीस्वअ-सत्ताकोआत्माजानसकताहै ॥ समाधान । हेवादिन्ऐसेमानेहुएसत् रूपआत्मासिद्धहुआ। इससेकिसीअनिष्टकीप्राप्तिनहींहोसकती ॥शंका॥ आत्माकीसत्रूपताआपकैसेकहतेहो । जिसकारणसेवहआत्माआगे होनेवालीस्वअसत्ताकाअनुभवकरताहै॥ समाधान ॥हेवादिन्प्रमाण केअभावसेक्या? अत्यंतअसत्रूपताआत्मामेआपादनकरनेयोग्यहै । अथवाअनित्यताआपादनकरनेयोग्यहै । प्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिविनाशसेप्रथमआत्मासत्है। औरद्वितीयपक्षभीअसंगतहै। क्यों किवहआत्माकीअनित्यताद्वितीयकारिकाके व्याख्यानमेकृतनाशतथा अकृताभ्यागमदोषकीप्राप्तिसेनिवारणकरआएहैं । यातेप्रमाणकेअभाव सेआत्माकाअसत्त्वनहींहै । यहसिद्धहुआ । किंवा ॥

आत्माकेअसतपनेकीशंकाकाअन्यप्रकारसेपरिहार॥

आत्माकाअसत्त्वकहनेवालावादीअपनेआत्माका निषेधकरताहै अथवादूसरेआत्माकानिषेधकरताहै । प्रथमपक्षमेंनिषेधकरनेवालेका अभावहोनेसेनिराकरणकरनेयोग्यहीआत्मावास्तवसेसतरूपहैयहसिद्ध होताहै । औरद्वितीयपक्षमेंनिषेधकर्ताजिसकारणसेशास्त्वसेस्थितहै। इसीकारणसेआत्माकाअसत्त्वकैसेहोसकताहै ॥ शंका ॥अन्यआत्मा केनिषेधकरनेवालेकाकोईअन्यतृतीय आत्मानिषेधकर्ता होजायेगा। कैसेनिषेधकरनेवालापरमार्थरूपतासेस्थितहोसकताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्तिसतृतीयनिषेधकर्ताकाकोईअन्यनिराकरणकर्ता है ॥अथवा नहीं ॥ प्रथमपक्षमेतो अनवस्थादोषहै औरद्वियीयपक्षमेजिसमेवि- श्रांतिमानोगे । तिसीकोवास्तवसेस्थितहोनेकर किसहेतुसेआत्माका असत्त्वकहतेहो । यहीअर्थश्रुतिमेकथनकियाहै ॥

❀ असन्नेवसभवतिअसद्ब्रह्मेतिवेदचेत् ।
अस्तिब्रह्मेतिचेद्वेदसंतमेनंततोविदुः ❀

तै० ब्र० ब० अनु० ६

अ० प्रथमज्ञातापनाचेतनकाधर्महै । क्योंकिअचेतनघटादिकों मेंज्ञातृत्वकाअभावहै । औरब्रह्मभीचेतनहै जिसकारणसे श्रुतिमेंविज्ञान घनसुनाजाताहै । सोविज्ञातासे भिन्ननहीं है । क्योंकि श्रुतिमेंअभेद श्रवणहोताहै।ऐसामानेहुएयहज्ञातापुरुषयदिब्रह्मात्माकोअसत्जानता है तोवहआपहीअसत्होजाताहै । क्योंकिअपनेआत्मस्वरूपब्रह्मका निषेधकर्ता है अर्थात्निषेधकर्ता यदिअपनेआत्माकानिराकरणकरता है।तोवहअसत्होजाताहैयहहेतुरूपतासेकथनकियाहुआनिराकरणक र्ताकाअसत्त्वश्रुतिसंमतहै।औरयदिवादीदूसरेआत्माकानिषेधकरे।तोइस

पक्षमेंनिराकरणकर्त्ताकासत्त्व श्रुतिसंमतहैसोईदिखलाते हैं। अज्ञात्मा है ऐसेयदियहज्ञाताजानताहै। तोसत्रूप अज्ञात्माकेज्ञाताको सूक्ष्म अर्थकेद्रष्टापुरुषसत्रूपहीजानतेहैं। अर्थात्वहपरमार्थसत्रूपहीहोता है। यातेआत्माकीअसत्रूपताकाकथनअयुक्तहै॥ इति किंवा॥

॥ प्रमाणाभावसे आत्मामेंअसत्पनेकीशंका का अन्यप्रकारसे परिहार।

आत्मामेंप्रमाणकेअभावसे असत्यताकीप्राप्तिकहनेवालेवादीने प्रमाणकीसत्ताकेहुएही वस्तुकीसत्ताहोतीहै यहकहनेयोग्यहै। तहां प्रमाणकीसत्ताहुएहीवस्तुकीसत्ताहोतीहै। इसकाक्याअर्थहै। क्या? प्रमाणके विद्यमानहुए वस्तुकीसत्ता उत्पन्नहोतीहै। अथवावस्तुकी सत्ताजानीजातीहै। प्रथमपक्षमेंभीयहविचारकर्तव्यहै। क्या?प्रमाण सत्वस्तुमें प्रवृत्तहोताहै अथवाअसत्मे प्रवृत्तहोताहै। यदिअसत्में प्रवृत्त होताहै अर्थात् असत्में प्रवृत्त हुआ प्रमाण सत्ताको उत्पन्न करताहै। यह अंत्यपक्ष कहो। तोशशशृंग की भी वह प्रमाण सिद्धि करलेगा। क्योंकि असत्पनेकी तुल्यताहै। और प्रमाणको असत्त्वके उत्पन्न करनेकी सामर्थ्यभी है। सो ऐसा देखने में नहीं आता। यातेअंत्यपक्षनहींसंभवता। औरसत्में प्रमाणप्रवृत्तहोता है अर्थात् सत्वस्तुकीसत्ताकोप्रमाणउत्पन्नकरताहै। यहप्रथमपक्षभीनहीं संभवता। क्योंकिइसपक्षमेंप्रमाणकेआधीनवस्तुकीसत्तानहींहै। शंका। प्रमाणसत्वस्तुमेंप्रवृत्तहो परंतुप्रमाणकेआधीनवस्तुकीसत्तान्योंनहो। ॥ समाधान॥ हेवादिन्जिसकीअपेक्षासेजोप्रथमहीविद्यमानहो। वह

तिसकाकार्यनहींहोसकता । क्योंकिनियमसेपश्चात् होनेवालेकोही कार्यपनाहोताहै । जैसेइसप्रकरणमें प्रमाणकीअपेक्षासे प्रथमहीवस्तु विद्यमानहै । यातेवहप्रमाणकाकार्यकैसेहोसकतीहै ॥ शंका ॥ सत्वस्तु मेंप्रमाणकीप्रवृत्ति नमानेहुएप्रमाणकीप्रवृत्तिसे पश्चात्हीवस्तुकीसत्ता उत्पन्नहोजायेगी ॥ समाधान ॥ हेवादिन्यदिऐसेमानोगे।तोसत्मेंही प्रमाणप्रवृत्तहोताहै । इसअपनी प्रतिज्ञाकीहानिहोगी । औरयदिसत् वस्तुकाभानप्रमाणकेआधीनहै । यहआद्यद्वितीय पक्षकहो । तोअभान स्वरूपअनात्माका भानप्रमाणकेआधीनहो । क्योंकिवहअचेतनहैऔर स्वयंप्रकाशमानआत्मामेंप्रमाणकेआधीनभानकैसेहोगाकिंतुनहींहोस क्ता।यहांयहभावहै।प्रमाणकेअभावसेवस्तुकीसत्ताकाअभावहै।यातेप्रमा णसत्तावस्तुसत्ताकाव्यापकहै यहकहनेयोग्यहै।।इसलियेव्यापकाऽभाव कोहीव्याप्याऽभावकेप्रति साधकपनाहै।अर्थात्जहांवस्तुकीसत्ताहोतीहै तहांप्रमाणसत्ताहै । औरजहांप्रमाणकीसत्तानहींहै तहांवस्तुकीसत्ता भीनहींहै ॥ ऐसामानेहुएसत्वस्तुकाहीभान प्रमाणकरहोताहै।।यहां यहअर्थसिद्धहोताहै इसीअर्थकासाधकयहांयहअनुमानभीजानना॥

❀ विमतःआत्माप्रमाणगम्यः सत्वात्घटवत् ❀

अ०॥विवादकाविषयजोआत्माहै॥ वहप्रमाणगम्यहै ॥ सत्रूप होनेसे ॥ जोजोसत्रूपहोताहै । सोसोप्रमाणगम्यहोताहैजैसेघट है ॥ इति ॥ सोयहद्वितीयपक्षभीअसंगतहै । क्योंकिप्रथमयहअनु मानतोजडत्वरूपउपाधिसहितहोनेसेदुष्टहै सोदिखलातेहैं । जहां प्रमाणगम्यत्वहै तहांजडत्वहै ॥ जैसेअभानस्वरूपअनात्माघटादिकों मेंप्रमाणकेआधीनतिनका भानहैयातेतिनमेंजडत्वभीहै । इसप्रकार

दृष्टांतमेंजडत्वउपाधिको साध्यकेसाथव्यापकता कहकरअबपक्षमें साधनकेसाथअव्यापकता कथनकरतेहैं । तैसेहीस्वप्रकाशस्वरूप आत्मामेंप्रमाणके आधीनकैसेभानहोसकताहै । क्योंकिप्रमाणके आधीनजोभानहै सोअपनेव्यवहारके अर्थअन्वेषणकियाजाताहै ॥ और आत्मामेंस्वरूपभूतप्रकाशसेहीस्वव्यवहार केसिद्ध हुएप्रमाणा धीनभानसेक्याफलहै किंतुतिसकाकोईफलनहीं । इसप्रकारपक्षरूप आत्मामें "सत्त्वात्" यहसाधनतोहै परंतुजडत्वरूपउपाधिकाअभाव है ॥ यातेउपाधिसाधनकेसाथ अव्यापकहै॥ शंका ॥ भानस्वरूपता चेतनपनेकाप्रयोजकहै ॥ औरआत्माभानस्वरूपनहीं किंतुभानका आश्रयहै। तैसेमानेंहुए जडत्वउपाधिसाधनकाअव्यापक किसप्रकार होगाकिंतुनहींहोसकता।यातेजडत्वकोउपाधिरूपताकाअभावहोनेसे पूर्वउक्तअनुमानदुष्टनहीं॥ समाधान ॥ हेवादिन्आत्माभानस्वरूप अर्थात्प्रकाशस्वरूपहै ॥ इसअर्थमेंश्रुतिप्रमाणहै ॥ तहांश्रुति ॥

* तमेवभांतमनुभातिसर्वं तस्यभासासर्व मिदंविभाति ॥ * (क० उ० ॥ व० ५॥ १५)

अ० ॥ तिसप्रसिद्धआत्माके भासमानहुएही पश्चात्सर्व अनात्मप्रपंचकाभानहोताहै॥शंका॥जैसेगमनकरतेहुएएकपुरुषकेपीछे दूसरागमनकरताहै । इसप्रयोगमेंजैसेगमनदोनोमें स्वगतहैअर्थात्वह दोनोस्वतंत्र गमनकरतेहैं । तैसेआत्माकेभासमानहुए सर्वअनात्मा पश्चात्भानहोताहै ॥ इसप्रयोगमेंभीदोनोंमेंभानस्वतंत्रहीक्योंनहो॥ समाधान ॥ तिसआत्माकेस्वरूपभूत प्रकाशकरकेयहसर्वअनात्म प्रपंचभानहोताहै ॥ यातेअनात्मास्वगतप्रकाशसे भाननहींहोता ।

किंतुआत्माके प्रकाशसेहीप्रकाशितहै । इसलियेआत्मास्वयंप्रकाश स्वरूपहै। इसप्रकारपूर्वउक्तउपाधिसाधनकाअव्यापकहीहै ॥ यातेपूर्व उक्तअनुमानदुष्टहै ॥ इसप्रकारइतनेग्रंथकरके प्रमाणकेअभाव हुएआत्मामेंअसत्त्वापत्तिकी शंकाकापरिहार षट्प्रकारसेनिरूपण किया। अबश्रुतिकीतिसआत्मामेंप्रमाणता निरूपणकरनेकेलिये कैमुतिकन्यायसेसर्वप्रमाणोंकीविषयताआत्मामेकथनकरतेहैं। किंवा॥

❋ अथआत्मामेसर्वप्रमाणोंकीविषयताकानिरूपण ❋

आत्मामेकौनप्रमाणहैं ऐसाअभिनिवेशकरनेवालेवादीकेप्रति सर्वहीप्रमाणआत्माविषयकहैं । यहीउत्तरकहनेयोग्यहै ॥ क्योंकिअ- ज्ञातपदार्थहीप्रमाणोंकाविषयहोताहै ॥ शंका ॥ प्रमाणकीविषयता मेअज्ञातत्वप्रयोजकनहीं अर्थात्जहां अज्ञातत्वहोताहै तहांप्रमाणकी विषयताहोतीहै । ऐसानियमनहीं । क्योंकिज्ञातपदार्थभीधारावाहिक प्रमाणकाविषयदेखनेमेआताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्ज्ञातवस्तुमे प्रमाणक्या?तिसवस्तुकेप्रकाशअर्थहै।अथवातिसकेव्यवहारअर्थात्ग्रहण त्यागकेअर्थहै । दोनोंप्रकारनहींसंभवते । क्योंकिप्रथमप्रमाणकरके हीवस्तुकाप्रकाशऔरतिसकेव्यवहारकानिर्वाहहोसकताहै पुनःद्वितीय प्रमाणकीकुछअपेक्षानहीं । यदिऐसेनमानेतोद्वितीयप्रमाणसेभीवह दोनोंकार्यकैसेसिद्धहोंगे । औरइसप्रकारधारावाहिकज्ञाननिष्ठअप्रमाण ताभीनहींहोसकती । क्योंकिउत्तरउत्तरक्षणविशिष्टतिस विषयकीतिस तिसज्ञानमेअधिकताभानहोतीहै।यद्यपिकालकोअतींद्रियअर्थात्इन्द्रिय जन्यज्ञानकाअविषयहोनेसेप्रत्यक्षज्ञानकीविषयतानहींसंभवती।तथापि

वहकालसर्वप्रत्ययोंमेभानहोताहै । यदिऐसेनमानेतो "इदानींगंधः" अ० ॥ इसकालमेंगंधहै । इसप्रकारकीप्रत्यक्षप्रतीतिकैसेहोगी । याते कालसर्वप्रत्ययवेद्यहै ॥ शंका ॥ "अज्ञातोघटः" इसप्रतीतिसेघटमेभी अज्ञातताहै । कैसेव्यापकेवलआत्माकोहीप्रमाणकाविषयकथनकरते हो॥ समाधान ॥ हेवादिन्आत्माहीअज्ञातहै । इसीअर्थकोउपपादन करतेहैं । प्रथमआत्मापरमप्रेमकाविषयहोनेसेसुखस्वरूपहै । वहसुख नित्यतथास्वप्रकाशहै । क्योंकि "सुखमहमस्वाप्सं" इसपरामर्शकेवलसे सुषुप्तिअवस्थामेसर्वइन्द्रियतथा विषयकेउपरतहुएभीवहसुखभासमान होताहै । तिसीहेतुसेजाग्रत्अवस्थामेभीतिसनित्यसुखकी "अस्ति भाति" इसप्रकारकीप्रतीतिकेप्राप्तहुएभीजोयहसुख "नास्तिनभाति" यहअन्यप्रकारकाव्यवहारहोताहै । सोअधिष्ठानकेअज्ञानसेउत्पन्नहुआ है । यहवार्त्ताशुक्तिकेअज्ञान जन्यरजतव्यवहारमे देखनेसेऐसेकल्पना कीजातीहै । औरइसमिथ्याव्यवहारकाअधिष्ठानआत्माहीहै ॥ याते विपरीतव्यवहारकीयोग्यतास्वरूपजोअज्ञानजन्य आवरणवहआत्मामे कल्पनाकियाजाताहैइसप्रकारआत्माहीअज्ञानका विषयहोनेसेअज्ञात है । और जडमे अज्ञान की अविषयता स्वीकार करने योग्य है ॥ ॥ शंका ॥ जडपदार्थमेअज्ञानकीअविषयताकैसेहै ॥समाधान॥ जो जिसमेकिसीअतिशयताकोधारणकरताहैवहतिसकाविषयहोताहैऔर अज्ञानतोघटादिकअनात्मामेअतिशयताकोनहींधारणकरता। क्योंकि तिसअनात्माकेविषयकरनेकाकोईफलनहीं॥शंका॥अज्ञानकृतआवरण निष्फलनहीं किंतुतिसआवरणका विक्षेपप्रयोजन है ॥समाधान॥ हे वादिन्विक्षेपकेअर्थआवरणको विद्यमानहोनेसे अज्ञानजन्यआवरण

कीकल्पनाव्यर्थहै ॥ शंका ॥ अज्ञानकृतआवरणकाजडमेंअभावहुए किसप्रयुक्तआवरणजडमेंहै ॥ समाधान ॥ जडपदार्थ स्वभावसेही आवृताहै । क्योंकिअज्ञानसेवह आवृतस्वभावही उत्पन्नहुएहैं । याते तिसमेंअनात्मत्वप्रयुक्त आवरणहै । अज्ञानकृतआवरणजडमेंनहीं तिस कारणसेही जडकोप्रमाणका अविषयहोनेसेआत्माही प्रमाणकाविषय है । यहअर्थसिद्धहुआ । यद्यपिघटादिजडपदार्थोंमेंअज्ञानकृतआवरण न मानेहुए "अज्ञातोघटः" यहप्रतीतिनहुईचाहिये । तथापिअज्ञान केसहितहीघटादिकोंकासाक्षिचेतनमेंअध्यासहोनेसेसमानाधिकरणता होनेकरयहप्रतीति बनसकतीहै ॥ शंका ॥

❋ अथअनात्माके भानकाप्रकारनिरूपण ❋

जडपदार्थको आवृतस्वभावहोनेसेस्वः तोतिसका भाननहीं संभवता ॥ औरप्रमाणसेभी तिसकाभाननहींसंभता ॥ क्योंकितिस प्रमाणकावहजड पदार्थविषयनहीं है ॥ इसप्रकारस्वतः तथाप्रमाण से जडकाभान नहोनेसे तिस अनात्माका भान कैसेहोगा ॥ समाधान ॥ यद्यपि जडस्वतःनहींभानहोता । क्योंकिवह आवृत स्वभाव है । औरअज्ञानका अविषयहोनेसेप्रमाणसेभीनहींभानहोता । तथापि आत्मस्वरूपचैतन्यकर जडकाभानहोता है । यद्यपिआत्मचैतन्यको स्वप्रकाशहोनेसेतिसकेसाथ संबंधवालाजडपदार्थसर्वदाकालही भान हुआचाहिये । तथापिसाक्षिरूपआत्माको अविद्याकारआवृतहोने सेप्रपंचकाअभानबनसकताहै ॥ शंका ॥ साक्षीकोअज्ञानकरआवृत मानेहुएकिसीकालमेंभी प्रपंचकाभाननहींहोगा ॥ समाधान ॥ हे वादिन्घटावच्छिन्नजोचैतन्य ।वहघटके साथइंद्रिय कासंबंधहोनेकर

उत्पन्नहुईजोघटाकारअंतस्करणकीवृत्तितिसकरअविद्याकीनिवृत्तिविशि ष्टहोताहै।औरवहीचैतन्यघटाकारवृत्तिमेंप्रतिबिंबितहुआघटकोप्रकाशकरता है। इसप्रकारघटकी तीतिसंभवतीहै । औरपटादिकोंकीप्रतीतिमेंभी यहीरीतिजानलेनी ॥ शंका ॥ ऐसेमानेहुएघटकोप्रमाणकीविषयता प्राप्तहुई ॥ समाधान ॥ हेवादिन् प्रमाणकरनिवृत्तिकेयोग्यजोअज्ञान हैतिसकेविषयकोहीप्रमाणकीविषयताहै। औरतैसेअज्ञानकीविषयता घटादिअवच्छिन्नचिदात्मानिष्ठहीहै ॥ इसलियेचेतनस्वरूपआत्माही सर्वघटादिकोंमेंप्रमाणकाविषयहै ॥ औरघटतोस्वअवच्छिन्नअनावृत्त चिदात्माके साथकल्पिततादात्म्यसंबंधकोपाकरभानहोताहै ॥ याते तिसघटकोप्रमाणकीविषयता किसप्रकारहोसकतीहै किंतुकिसीप्रकार भीनहीं॥ इसप्रकारआत्मामेंप्रमाणकेअभावसेअसत्त्वापत्तिकाजोविक ल्पवादीनेपूर्वकियाथासोपरिहारकिया ॥ अबचिदात्मामेंसर्वप्रमाणकी विषयताकेनिरूपणकाफलकहतेहैं ॥ तिसपूर्वउक्तप्रकारसेसर्वप्रमाणों करसिद्धजोआत्माहै ॥ तिसमेंप्रमाणाभावरूपआपादककेअसत्त्वसे आपादनकरनेयोग्यआत्माकेअसत्त्वकाअसंभवहै ॥ शंका ॥ आत्मा कोसर्वप्रमाणकाविषयमानेहुए "औपनिषदत्व" यहजोआत्माका विशेषणश्रुतिमेंकथनकियाहै ॥ वहकैसेसंभवहोगा। क्योंकिसर्वप्रमा णकेविषयआत्माकोउपनिषद्मात्रगम्यत्वकाअभावहोगा । यद्यपि "प्रमेयोघटः" जैसेइसप्रयोगमेंप्रमेयताघटकाविशेषणहै। तैसे "औप निषदत्व" यहभीआत्माकाविशेषणबनजायेगा। तथापि—

❀ सर्वविशेषणांसावधारणां ❀

अ० ॥ सर्वहीविशेषणइतरकेव्यावर्त्तकहोतेहैं ।इसन्यायसेइतर

काव्यावर्त्तकमात्रविशेषणकल्पनाकरनेमेफलकाअभावहै। औरतिस सेअध्ययनविधिकाविरोधहोगा । क्योंकिअध्ययनविधिनिष्फलअर्थ काअध्ययननहींविधानकरता। इसलियेआत्मामेइतरप्रमाणोंकाव्यावर्त्त कत्वहीऔपनिषदत्वविशेषणकोकहनायोग्यहै ॥औरसर्वप्रमाणोंकेविषय आत्मामेवहइतरप्रमाणोंकाव्यावर्त्तकपनातिसविशेषणकोनहींसंभवता। याते औपनिषदत्वविशेषण आत्मामे किसी प्रकारभी नहीं संभवता ॥समाधान॥ हेवादिन्यद्यपिप्रपंचावच्छेदकरकेआत्मामेसर्वप्रमाणकी विषयताहै ॥ तथापिपरिपूर्णसच्चिदानंदप्रत्यक्रूपतासेतिसआत्मामें औरप्रमाणोंकीअविषयताहोनेकरतिसरूपतासे श्रुतिमात्रगम्यताहै ॥ यातेऔपनिषदत्वविशेषणकाविरोधनहीं है ॥ अबपरिपूर्णादिपदोंका अर्थनिरूपणकरतेहैं ॥ "परिपूर्ण" कहियेसर्वओरसेव्यापकअर्थात् निर्पेक्षव्यापकहै ॥ शंका ॥ परिपूर्णादिरूपआत्माकोउपनिषद्प्रमाण काविषयमानेहुएघटादिवतदृश्यताहोनेसेमिथ्यापनाहोगा।।समाधान। वहआत्मासतकहियेत्रिकालमेअबाधितस्वरूपहै। इसीसेश्रुतिभास्यता केअनंगीकारसेवहमिथ्यानहींहै ॥ शंका ॥ श्रुतिभास्यताकेअनंगी कारसेतिसकाभानकैसेहोगा ॥समाधान॥ स्वप्रकाशचिद्रूपतासेही तिसआत्माकाभानहोताहै। इसीसेचेतनकथनकियाहै॥शंका॥परिपूर्ण रूपआत्माकोसर्वरूपताहोनेसेदुःखरूपताभीकहनेयोग्यहै । औरदुःख रूपतामानेहुएवहआत्माउपनिषद्काविषयकैसेहोगा।क्योंकिअपुरुषार्थ रूपहै॥ समाधान ॥ हेवादिन् "परिपूर्ण"विशेषणसेआत्माकाउद्देश्य करकेसर्वत्वकाविधाननहींकियाजाता ॥ जिससेदुःखरूपताआत्मामे हो ॥ किंतुसर्वत्वकाउद्देश्यकरकेआत्मत्वकाविधानहै॥तिससेआत्मा

हीसर्वकावास्तवस्वरूपहै।आत्मासेविनाअन्यकोईवास्तवस्वरूपनहीं॥ इसप्रकार दुःखत्वादिरूप को मिथ्याहोनेकर तिसकाबाध होनेसे आत्माआनंदस्वरूपहै ॥ इसीहेतुसेश्रुतिमें * आनंदोब्रह्म * अ० ॥ आनंदस्वरूपब्रह्महै ॥ ऐसाकथनकियाहै ॥ यहांआत्मातथा ब्रह्मपदकाएकहीअर्थजानना ॥ इसप्रकारआत्माकोपुरुषार्थरूपताहोने से उपनिषद्प्रमाणकी विषयतासंभवतीहै ॥ शंका ॥ यद्यपिपूर्वउक्त रीतिसेआत्माआनंदस्वरूपहै।।तथापिपूर्णरूपतातिसकोनहींसंभवती। क्योंकिपरमात्माकाजीवसेभेदहोनेकरपरिच्छिन्नपनाहै।।समाधान।।वह परमात्माप्रत्यक्स्वरूपहै।क्योंकिजोप्रत्यक्सेभिन्नहोताहैवहब्रह्महोताहै याते तिनकाभेदकल्पितहै । इसीसेपूर्णरूपताआत्मामेंसंभवतीहै। इस प्रकारप्रत्यगात्माऔ ब्रह्मकीएकताउपनिषद् मात्रगम्यहै ॥

* अथस्वयंप्रकाशचिदात्मामेंअज्ञानकीविषयताका अन्यप्रकारसे निरूपण *

शंका ॥ उपनिषद्जन्यज्ञानकरके निवृत्तिकेयोग्यअज्ञानकी जोविषयताहै ॥ यहीउपनिषद् प्रमाणकी आत्मामेंविषयताहै ॥ और वहअज्ञानकीविषयता स्वप्रकाशचिदात्मामेंनहीं संभवती ॥ क्योंकि भासमानतातथा अभासमानताकापरस्पर एककालमेंएकअधिकरण मेंविरोधहै।।समाधान।।हेवादिन्स्वयंप्रकाशआत्मामेंअज्ञानकीविषयता नहींसंभवती।।यहजोतुमनेकहासोसत्यहै।।शंका।।हेसिद्धांतिन्तोअज्ञान की विषयताआपनेकैसेकथनकी ॥ समाधान ॥ हेवादिन्आनंदादि रूपतासेआत्माअज्ञानकाविषयहैऔरचिद्रूपतासेअज्ञानकाविषयनहीं। यदिऐसेनमानोगेतो अज्ञानकीभी असिद्धिप्राप्तहोगी । इसप्रकारका

उत्तरयद्यपिपूर्वनिरूपणकियाभीहैतथापिपुनःप्रकारांतरसे इसकाउत्तर निरूपणकरतेहैं ॥ हेवादिन्एककालमें एकअधिकरणमें भासमानता औअभासमानताकाविरोधहै । इसपूर्वउक्तदोषसे स्वयंप्रकाशआत्मा में अज्ञानवास्तवसेनहीं है। यहकहतेहोअथवाभ्रमसेभीनहींहैयहकहते हो॥प्रथमपक्षतोहमकोभीस्वीकारहै । क्योंकिवास्तवअज्ञानतोआत्मा मेंहमभीनहींमानते । औरद्वितीयपक्षकहोतो वहनहींसंभवता।क्योंकि जैसेमध्यान्हकालीनजोस्वयंप्रकाशमानआदित्यहै । यहांपर आदित्य में अंधकारकाअत्यंतअसंभव दिखलानेके अर्थस्वयंप्रकाशयहतिसका विशेषणकथनकियाहै । तिसआदित्यमेंदिनको अंधतारूपदोषवाले जोपेचकादि वहऐसी कल्पनाकरतेहैं । कि "तमसावृत्तोऽयंसविता" अ० ॥ अंधकारसेयहसूर्य्यआच्छादितहै ॥ जैसेदोषकेवशसेअविद्य मानभीरजतशुक्तिमें कल्पनाकरतेहैं । तैसेयहकल्पनाभीहै । तैसेही अत्यंत अज्ञानकरके आच्छादितहैबुद्धि जिनकी वह मूढजन अज्ञानसे यह आत्मा आच्छादित है ऐसी कल्पना करते हैं ॥ औरयहजोवादीने पूर्वकहाथाकिदिवांधत्वदोपसे उल्लूकादिकोंको सूर्य्यकाअदर्शनहैकोईतमकीकल्पना वहसूर्य्यमेंनहींकरते ॥ सोयह कथनभीअसंगतहै । क्योंकि "यहसूर्य्यतमोमयहै" इसप्रकारकीजो तिनकीप्रतितिहै तिसकाविरोधहै॥ तैसेहीअभियुक्तपुरुषोंकाकथनहै ।

घनच्छन्नदृष्टिर्घनच्छन्नमर्कं यथामन्यतेनिष्प्रभंचातिमूढः । तथावद्धवद्भातियोमूढदृष्टेःसनित्योपलब्धिस्वरूपोहमात्मात्मा ॥ १ ॥

अ० ॥ जैसेमेंघोंकरकेआच्छादितहुईहै नेत्रोंकीदृष्टि जिसकी

वहअत्यंतमूढजन स्वयंप्रकाशमान सूर्य्यमें यहसूर्य्य मेघोंकर आच्छादितहुआ प्रकाशशून्यहै ऐसेकल्पनाकरताहै । तैसेअज्ञान करआच्छादितहुई हैबुद्धिजिसकी तिसअज्ञजनकोजोआत्मावद्धकी न्याईभासताहैवहनित्यज्ञानस्वरूपआत्मामैंहूं ॥ १ ॥ इति ॥ और यदिपूर्वपक्षीऐसेकहे ॥ आत्माकोअज्ञानकरआवृतत्वकी कल्पनामें अज्ञानकोहीदोपमानेहुए आत्माश्रयदोपकीप्राप्तिहोगी ॥ सोयह कथनभीसमीचीननहीं है ॥ क्योंकिआवरणकोअज्ञानका कार्यहोने करअज्ञानजन्यमानेहुएभी आत्माश्रयदोपकाअभावहै ॥ औरयदि आवरणकोअज्ञानस्वरूपभीमानलें ॥ तोभीआत्माश्रयदोपकीप्राप्ति नहींहोती । क्योंकिजैसेनैयायिकोंकेमतमें ॥ "रूपसमवायिघटः" अ० ॥ रूपकेसमवायवालाघटहै ॥ इसप्रतीतिमें जैसेरूपका समवाय संबंधघटमेंभासताहै ॥ तैसेंसमवायकासंबंधभी संबंधियोंसेभासताहै। तहांसंयोगादिसंबंधकातो असंभवहै । क्योंकिसंयोगद्रव्योंकाहीहोता है ॥ औरसमवायद्रव्यनहीं है । औरसमवायकाअन्य समवायसंबंध मानेहुएअनवस्थादोपकी प्राप्तिहोगी । इसलिये यहां समवायसंबंध आपहीस्वसंबंधकीप्रतीतिका निर्वाहिकहै ॥ और जैसेभाट्ट मतमें "भेदःपटोन" अ० ॥ पटप्रतियोगिकभेदवालाभेदहै । इसप्रतीतिमें जैसेघटपटकाभेदकभेदहै । तैसेअपनाऔरपटकाभेदकभीवहीभेदहै । यहांभीभेदांतरमानेहुए अनवस्था दोपकीप्राप्तिहोतीहै । इसलिये अपनाभेदकआपकोही माननेमेंआत्माश्रयदोपकीप्राप्तिनहींहोती । तैसेअज्ञानकीकल्पनामें अज्ञानकोहीदोपरूपमाननेमें आत्माश्रयदोप कीप्राप्तिनहींहोती । क्योंकिसर्वमतसाधारणजोदोपहै वहदोपनहीं

होसकता ॥ शंका ॥ आत्मामेंवेदांतोंकीप्रवृत्तिआत्माके प्रकाशअर्थ है । अथवा अज्ञानकीनिवृत्ति अर्थहै । प्रथमपक्षतोनहीं संभवता । क्योंकिदृश्यपनाहोनेसे घटादिकोंकीन्याई आत्मामेंभीमिथ्यात्वप्राप्त होगा ॥ औरद्वितीयपक्षभी नहींसंभवता ॥ क्योंकितिसअज्ञान को आत्माकीन्याई अनादिहोनेकरनिवृत्तिकी अयोग्यता है ॥ समाधान ॥ हेवादिन् आवरणस्वरूपजोआत्माकाअज्ञानहै तिसको कल्पितहोनेकरनिवृत्तिकीयोग्यताहै । क्योंकिप्रथमही आत्माके स्वरूप प्रकाशकेमहात्मसेवास्तवसेनिवृत्तहोनेकरवह असत्है। तिस असत्कीनिवृत्तिकेअर्थहीसर्ववेदांतोंकीप्रवृत्तिहै । जैसेशुक्तिकास्वरूपविचारनेसेतिस मेरजनवास्तवनहीं । तैसेआत्माकेस्वरूपकाविचारकरनेसेअज्ञानभी तिसमेअत्यंत असत्है। औरअनादित्वमात्रहेतुनिवृत्तिकी अयोग्यताकासाधकनहीं । क्योंकिप्रागभावमेव्यभिचारहै । तिसमेअनादित्वकेहुएभी निवृत्तिकीयोग्यताहै ॥ औरयदिऐसेकहोकि "भावरूपहुआजोअनादित्वहै सोनित्यत्वकासाधकहै" । यहकथनभीसमीचीननहीं । क्योंकिअज्ञानमेभावरूपताभीअंगीकारनहींहै । जैसेवह असत्से विलक्षण है । तैसेसत्सेभीविलक्षणतातिसमेस्वीकारहै । इसीसेअज्ञानकल्पित है । यहकथनकियाहै ॥ शंका ॥ अज्ञानकीनिवृत्तिमात्रप्रमाणसे होतीहै । यहआपक्योंकल्पनाकरतेहो । विषयकाप्रकाशहीप्रमाणका फलक्योंनहो ॥ समाधान ॥ प्रकाशस्वरूपआत्माकोप्रमाणसेविना भीस्वप्रकाशताकेप्रभावसेहीसिद्धहोनेकरतिसकेनिमित्तप्रमाणकाग्रहण व्यर्थहै । यातेअज्ञानकीनिवृत्तिअर्थहीप्रमाणकाग्रहणबनसकताहै । अन्यअर्थनहीं। शंका ॥आत्मानिष्ठअज्ञानकीनिवृत्तिकरनेवालेवेदांतों

कोआत्मविषयतानहींसंभवती॥अन्यथामृद्निष्ठजोघटादिहैं ॥तिनके निवर्त्तकपाषाणादिकोंकोभीमृत्तिकाविषयताप्राप्तहोगी । क्योंकिदोनों मेन्यायकीतुल्यताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्घटादिकोंकेनिवर्त्तकजो पाषाणादिहैं । वहकोईमृत्तिकाकारवृत्तिकोनहींउत्पन्नकरसकते । इसी सेतिनकोमृद्विषयतानहींसंभवती । औरदार्ष्टांतमेतोआत्माकारवृत्तिके उत्पादकहोनेकरवेदांतोंकोआत्मविषयतासंभवतीहै ॥ शंका ॥ स्वयं प्रकाशआत्मामेअज्ञानकीनिवृत्तिसेविनाऔरकोईफलनहीं ॥ यहपूर्व कथनकियासोअयुक्तहै॥ क्योंकिआत्माकीस्वयंप्रकाशतामेप्रमाणका अभावहोनेसेविवादहै ॥ समाधान ॥

❋ अथ आत्माकीस्वयंप्रकाशतामेअनुमानप्रमाण का निरूपण ❋

हेवादिन्आत्माकीस्वयंप्रकाशतामेप्रमाणकोविद्यमानहोनेसे कोईविवादनहीं। तैसेहोदिखलातेहैं ॥

❋ आत्माइतरानपेक्षप्रकाशः॥स्वसत्तायांप्रकाशाव्य भिचारित्वात् ॥ संवत्ववत्आलोकवद्वा ❋

। अ० ॥ आत्माइतरकीअपेक्षासेरहितप्रकाशस्वरूपहै।स्वसत्ता कालमेप्रकाशकरव्याप्तहोनेसे । जोजोस्वसत्ताकालमेप्रकाशसेअव्य भिचारीहै सोसोइतरअनपेक्षप्रकाशस्वरूपहै। जैसेज्ञानहै। अथवा आलोकहै॥इति॥यहांज्ञानस्वप्रकाशवादीकेप्रतिसंवत्‌रूपदृष्टांतजानना औनैयायिकादिकनकेप्रतिआलोकरूपदृष्टांतजानना॥अथपूर्वपक्ष॥

❋आत्माकीस्वप्रकाशताकेसाधकअनुमानकाखंडन❋

हैसिद्धांतिनृइसअनुमानमेकौनआत्मापक्षहै । क्या?क्षुधापि पासादिधर्मोंसेरहितआत्मापक्षहै । अथवाकर्त्ताभोक्ताआत्मपक्षहै ॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिनैयायिककेप्रतिआश्रयासिद्धिहै । जिसकारणसेवहनैयायिकक्षुधापिपासादिधर्मरहितआत्माकोनहींमानता औरद्वितीयपक्षनहींसंभवता। क्योंकिवेदांतीकेप्रतिआश्रयकीअसिद्धि है । जिसकारणसेवेदांतीआत्माकोकर्त्ताऔभोक्तानहींमानता ॥किंवा पक्षरूपआत्माक्या?प्रमाणसिद्धहै।अथवाभ्रमसिद्धहैवास्वप्रकाशरूपता सेसिद्धहै। अथवाअसिद्धस्वभावहै। अंत्यपक्षतोनहींसंभवता । क्यों किअसिद्धपदार्थकोकहींभीपक्षपनादेखनेमेनहींआता। औरप्रथमपक्ष भीअसंगतहै। क्योंकिप्रमाणसिद्धकीस्वप्रकाशतासिद्धकरनेसेअनुमान मेबाधप्राप्तहोताहै ॥ अर्थात्प्रमाणकाविषयपदार्थस्वप्रकाशनहींहोता औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता । क्योंकिभ्रमसिद्धआत्माकोआभास रूपताहोनेकरतिसअंगवालेअनुमानरूपअंगीकोभीआभासरूपताप्राप्त होगी । औरतृतीयपक्षभीनहींसंभवता। क्योंकिआत्माकीस्वप्रकाशता तोअबसिद्धकरनेलगेहैं ॥ इसअनुमानसेप्रथमभीयदिस्वप्रकाशताकी सिद्धिमानेतोसिद्धसाधनदोषकीप्राप्तिहोगी॥ किंवा । यह "इतरानपेक्ष प्रकाशत्व" रूपसाध्यक्याहै । अर्थात्इतरकीअपेक्षासेरहितजोप्रकाश है तत्रूपत्वसाध्यहै । अथवातैसेप्रकाशकीअधिकरणतासाध्यहै । दोनोंपक्षोंमेप्रकाशको इतरानपेक्षत्व"क्या?उत्पत्तिमेहै अर्थात्वहप्रका शअपनीउत्पत्तिमेदूसरे कीअपेक्षानहींकरता । अथवाअपनेप्रकाशमे इतरकीअपेक्षानहींकरता।प्रथमपक्षमेस्वउत्पत्तिमेइतरानपेक्षप्रकाशात्मक साध्यमानेहुएआत्माकोस्वप्रकाशताकीसिद्धिनहींहोसकती । क्योंकि

उत्पत्तिमेंइतरकीअपेक्षाअवश्यहोतीहै। यातेंप्रथमपक्षनहींसंभवता ॥ औरअपनेप्रकाशमेंइतरानपेक्षप्रकाशरूपसाध्यहै। इस द्वितीयपक्षसें आलोकरूपदृष्टांतमेंसाध्यकीविकलताहै । क्योंकिबाह्यआलोकमेंअपने प्रकाशमेंइतरानपेक्षप्रकाशभास्वररूपहै। औरदृष्टांतरूपआलोकमेंभास्वर रूपात्मकतानहीं है ॥ जिसकारणसे रूपऔरूपीकी एकताअयोग्य है। यातेंद्वितीयपक्षभीनहींसंभवना॥ औरआद्यद्वितीयपक्षमें "इतरान पेक्षप्रकाशवत्ता" रूपसाध्यमानेहुए आत्माको स्वप्रकाशताकीसिद्धिनहीं होगी । किंतुस्वप्रकाशप्रकाशकीअधिकरणताहीहोगी ॥ तैसेमाने हुएसंवितरूपदृष्टांतमेंसाध्यकीविकलताभीहोगी॥ क्योंकिस्वप्रकाशरूप ज्ञान स्वप्रकाशज्ञानकाअधिकरणनहीं है॥ यातेंद्वितीयपक्षभीअसंगतहै। और "प्रकाशाऽव्यभिचारित्व" हेतुभीआत्मामेंकैसेवर्तताहै। यहभीकथन करनेयोग्यहै। तहांप्रकाशकरजोव्याप्तपनाहैयहीप्रकाशाऽव्यभिचारित्व कहनाहोगा। औरव्याप्तिकाभीऐसाआकारकहनाहोगा। किजिसदेशमें आत्माहै। तहांप्रकाशहै। अथवाजिसकालमेंआत्माहैतिसकालमेंप्रकाशहै। सोदोनोंप्रकारकीव्याप्तिनहींसंभवती ॥ क्योंकिआत्माकोव्यापकहोने सेकिसीदेशमेंवृत्तितानहीं है ॥ औरनित्यहोनेसेकिसीकालमेंभीवृत्तिता नहीं है। और "स्वसत्तायां" यहजोहेतुकाविशेषणकथनकियाहै ॥ वह भीव्यर्थ है ॥ क्योंकिपरप्रकाशघटादिकोंमेंप्रकाशाऽव्यभिचारीपनानहीं किंतुप्रकाशसेव्यभिचारित्वहै ॥ यातेंप्रकाशाऽव्यभिचारित्वमात्रहेतु कहनेसेभीतिनमेंअतिव्याप्तिनहींहोती। औरयदिऐसेकहो। प्रकाशसे रहितजोध्वस्तदीपकहै तिसमेंसाधनकीविकलतादूरकरनेकेलिये "स्व सत्तायां" यहहेतुकाविशेषणकथनकियाहै। सोयहकथनभीसमीचीन

नहीं । क्योंकितिसमेहेतुकीअप्रवृत्तिहुएभीविरोधका अभावहोनेसे साधनकोदृष्टांतकेकिसीएकदेशमेवृत्तिहुएभीसतहेतुपनादेखाहै । जैसे "पर्वतोवन्हिमान्धूमात्"इसअनुमानमेमहानसमात्रकेअनाश्रितधूमको महानसविशेषमेवृत्तिहोनेसेसतहेतुतास्वीकारहै ।तैसेइसअनुमानमेभी प्रकाशाव्यभिचारित्वहेतुकोध्वस्तप्रदीपमेअप्रवृत्तिहुएभीतिससेभिन्न आलोकमेविद्यमानहोनेसेसाधनकीविकलतारूपदोषनहींप्राप्तहोना। याते "स्वसत्तायां" यहहेतुकाविशेषणव्यर्थ है । औरसुखादिकोंमे यहहेतु व्यभिचारीभी है । क्योंकिसुखादिकोंको स्वसत्ताकालमेप्रकाशसे अव्यभिचारीपनाहुएभीइतरानपेक्षप्रकाशरूप साध्यकाअभाव है । और इसअनुमानमे "तमोविरुद्धत्व" उपाधिभी है ॥ क्योंकिजहांजहां "इतरानपेक्षप्रकाशत्व" है तहांतहां "तमोविरुद्धत्व" अर्थात्तमका विरोधीपना है ॥ जैसेप्रदीपादिकोंमे है ॥ औरजहांजहां "स्वसत्ता कालमेंप्रकाशसे अव्यभिचारीपना" है ॥ तहांतहां "तमोविरुद्धत्व नहीं" है । जैसेआत्मामे है । यद्यपिआत्मामे साधनकेसाथउपाधि व्यापक है ॥ तथापिआत्माकोतमकासाधकहोनेकरतमकाविरोधीपना नहीं है ॥ यातेपूर्वउक्तहेतुसोपाधिकहै॥ औरसंवित्रूप तथाआलोक रूपदोनोंदृष्टांतभीसाधनसे रहितहैं ॥ क्योंकिदेशसे अथवाकालसे प्रकाशकीसमानाधिकरणता संवित्औआलोकमेनहींसंभवती ॥ अर्थ. यह ॥ संवित्कोस्वप्रकाशताकेहुएसंवित्सेअतिरिक्तप्रकाशकाअभाव होनेकरसंवित् कीप्रकाशकेसाथसमानाधिकरणताअयोग्यहै,॥और आलोककीभीभास्वररूपसंज्ञकप्रकाशकेसाथसमानाधिकरणताकाअभावहै। क्योंकिभास्वररूपतिसआलोककाधर्म है ॥ शंका ॥ यद्यपिआलोक

श्रौभास्वररूपकागुणगुणीभावहोनेसे देशकृतसमानाधिकरणतानहीं संभवती । तथापिजिसकालमेंश्रालोकहैतिसकालमेंप्रकाशहैयहकाल कृतसमानाधिकरणता श्रालोकश्रौ प्रकाशकीवनसकतीहै ॥ समाधान।हेसिद्धांतिन्कालकृतसमानाधिकरणताभीनहींसभवती। क्योंकि

❀ क्षणमगुणंद्रव्यंतिष्ठति ❀

अ०—एकक्षणमात्रगुणसेरहितद्रव्यस्थितहोताहै।।इसन्यायकाविरोधहै।। यातेयहस्वप्रकाशताकासाधकअनुमानअसमीचीनहै ॥ इतिपूर्वपक्ष

❀ अथ सिद्धांत रीतिसेतिसअनुमानकामंडन ❀

समाधान।।हेवादिन्यहतुम्हाराकथनहीअसमीचीनहै ।।तैसेहीस्पष्टकरके दिखलातेहैं।जोवादीनेयहकथनकिया।किकौनश्रात्मापक्षहै।सोश्रसंगतहै। क्योंकिश्रात्मशब्दकेजोयोग्यहैतिसीकोपक्षपनाहै ॥ श्रौरप्रमाणसिद्ध श्रात्माहैइत्यादिजोविकल्पपूर्वकहेथेवहभीश्रसमीचीन हैं।क्योंकिसिद्ध पदार्थकोहीपक्षपनायुक्तहै ।तिसमेंप्रमाणादिविशेषणोंकोश्रसमर्थहोने सेतिनकाकथननिष्फलहै ॥ श्रौरजोसाध्यकीविकलतापूर्वउक्त विकल्पसेकथनकीथीसोभीनहींसंभवती।।क्योंकि"प्रकाशमेंइतरकी अपेक्षा सेरहितजोप्रकाश है ततरूपता"मानेहूएको हीसाध्यपना है ।। श्रौर ऐसासाध्यदृष्टांतरूपश्रालोकमेंसाध्यकीजोविकलतापूर्ववादीनेकहीथी वहभीनहींसंभवती । क्योंकि तहांभी श्रालोकसे अतिरिक्त प्रकाश श्रंगीकारनहींहै । किन्तु श्रालोकरूपहीप्रकाश है । जैसे

❀ प्रकृष्टप्रकाशश्चंद्रः ❀

अ०—उत्कृष्टप्रकाशस्वरूपचंद्रहै । इसकथनमेंचंद्रव्यक्तिजोप्राति पदिकश्रर्थहैतिससेश्रर्थांतरप्रकाशपदार्थनहीं है।अर्थात्धातुतथाप्रत्य-

यादिकोंसेभिन्नअर्थवालाजोचंद्रशब्दतिसकोप्रातिपदिककहतेहैंतिसका प्रकाशहीअर्थहै।कोईप्रकाशचंद्रव्यक्तिसे भिन्न नहीं। भिन्नअर्थमाने हुएप्रश्नऔउत्तरकी समानाधिकरणतानहींहोगी ॥ क्योंकिप्रष्टानेतो चंद्रकेस्वरूपमात्रविषयकप्रश्नकिया है ॥ वक्ताभीयदिचंद्रकेस्वरूपविष यकहीउत्तरनिरूपणकरेतो समानाधिकरणतासंभवती है ॥ अन्यथा प्रश्नतथाउत्तरकीव्यधिकरणताहोगी। औरभास्वरूपहीप्रकाशहै । आलोकप्रकाशस्वरूपनहीं यहवादीकाकथनभीअसंगतहै;॥ क्योंकि तहांपरभीरूपतथारूपवालेकातादात्म्यस्वीकारहोनेकरआलोकरूपदृष्टांत मेसाध्यकीविकलताकाअभावहै ॥ औररूपतथा रूपवान्का समवाय संबंधकथनकरनाअशक्यहै ॥ तिसीसेनैयायिकोंनेभीरूपरूपीकाता दात्म्यहीस्वीकारकरनायोग्यहै॥औरजोपूर्ववादीनेहेतुगतदूषण कहेथे वहभीनहींसंभवते॥क्योंकियावत्प्रकाशकालहैतावत्कालविद्यमानता कोहीहेतुकाअर्थपनाहै। औरजोआत्मामेंकालकृतपरिच्छेदकाअभाव कहाथा॥वहभीनहींसंभवता। क्योंकिअज्ञानकेवशसेकल्पितकालकृत परिच्छेदबनसकताहै।औरसुखादिकोंमेंयहहेतुव्यभिचारीभीनहीं।क्योंकि जितनाकालप्रकाशहै उतनाकालसुखादिकोंकीविद्यमानतानहीं ॥ मुक्तिकालमेंआत्मरूपप्रकाशकेविद्यमानहुएभीदुःखनहीं है यद्यपिसुख तिसकालमेंभीहै ॥ तथापिसुखकोआत्मरूपता होनेसेपक्षपनाहै ॥ तिसमेहेतुकोवृत्तिहुएभी व्यभिचारनहींहोसकता । औरयहआगे कथनकरनाजोहेतुहै ॥ उसीसेज्ञातसत्तावालेघटादिकोंमेंहेतुकीअनैकां तिकताअर्थात् व्यभिचाररितापरिहारकी । क्योंकिसाक्षिभास्यघटा दिकोंकीयावत्कालसाक्षीहै तावत्कालस्थितिका अनंगीकारहै ॥

और "तमोविरुद्धत्व" जोउपाधिपूर्ववादीनेकहाथावहभीनहींसंभवता॥ क्योंकिसाधनके साथ उपाधिव्यापकहै।यद्यपिआत्मातमका साधकहै विरोधी नहीं। याते उपाधिसाधनके साथ अव्यापक है । तथापि स्वरूपसे आत्मातमका विरोधीहुआभी कल्पनाकरके तिसकासाधक है । औरवास्तवतथाकाल्पनिकदोरूपएकपदार्थकेनहींसंभवते यह वादीकाकथनभीनहींसंभवता ॥ क्योंकितैसेमानेहुएभ्रममात्रकालोप होगा ॥ और "इदंरजतम्" इत्यादिभ्रममेंएकपदार्थके दोनोरूपभान होनेसेभीवहकथनअयुक्तहै ॥ औरदृष्टांतभीसाधनसेविकलनहीं ॥ क्योंकियावत्प्रकाशकालहै ॥ तावत्विद्यमानस्वरूपहेतुकासंवित् औ आलोकइनदोनोंमेंसद्भावहै ॥ संवित्अपरोक्षप्रतीतहोतीहैऔरपुनः नहींहैयहनहींसंभवता ॥ औरआलोकभासताहै औरपुनःनहीं है ॥ यहकथनभीअयुक्तहै।औरपूर्वयहजोकथनकियाथा कि आलोकमे जोभास्वररूपहै वहप्रकाशहै ॥ औरतिसप्रकाशकीयावत्कालस्थिति होतीहै । तावत्कालआलोककीस्थितिनहीं है ॥ क्योंकिनिराश्रय हुआगुणएकक्षणस्थितहोताहै ॥ यहस्वीकारहै।जिसकारणसेगुणीके नाशकोगुणनाशके प्रतिकारणताहै । तिसकारणसे आश्रयसेविनाएक क्षणगुणकीस्थिति बनसकतीहै ॥ सोयहकथनभीसमीचीननहीं ॥ क्योंकिउपादानकेनाशकोही कार्यकेनाशप्रतिकारणताहै ॥ औरयहां परआलोकमेंभास्वररूपकी उपादानकारणतानहीं क्योंकिवहदोनों एककालमेंउत्पन्नहुएहैं ॥ इसीकारणसेएककालमेंउत्पन्नहुएतिनदोनों कागौकेवामतथादक्षिणशृंगकी न्याईउपादानऔउपादेयभावअंगी कारनहीं है ॥ शंका ॥ भास्वररूपकेप्रतिआलोकको उपादानकारण

नमानेंतो कौनतिसका उपादानकारणहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् आलोकके अवयवही तिसरूपकाभीउपादानकारणहैं ॥ यद्यपि ऐसे मानेहुए "आलोकरूपवान्हैं" यहप्रतीतिकैसेहोगी। तथापिउपादानके रूपकरकेहीकार्यमेरूपवत्ताकी प्रतीतिसंभवतीहै ॥ क्योंकिउपादानऔ कार्यकातादात्म्यहै ॥ इसप्रकारस्वप्रकाशताकासाधकअनुमाननिर्दोष है ॥ इति ॥ शंका ॥ इसअनुमानकीविषयताआत्मामे है। वानहीं। यदिअंत्यपक्षकहो तोकैसे आत्माकीस्वप्रकाशतासिद्धहोगी ॥ क्योंकि तिसमेप्रमाणकाअभावहै ॥ औरयदिप्रथमपक्षकहोतोभीस्वप्रकाशता सिद्धनहींहोसकती।क्योंकिअनुमितिज्ञानकीविषयता होनेसेघटादिकों केतुल्यदृश्यपनाहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् यदिइसअनुमिति ज्ञानकर भास्यताआत्मामेंमानेतो स्वप्रकाशताकीहानिहो। परन्तुहमअनुमिति ज्ञानकरभास्यताआत्मामेंनहींमानते।किंतुइसअनुमितिकरनिवृत्तिकेयोग्य अज्ञानविषयताही इसअनुमितिकी विषयताआत्मामेंमानते हैं। याते पूर्वउक्तदोषनहींप्राप्तहोता। इसप्रकारनिर्दोषअनुमानसे सिद्धहुईजो आत्माकीस्वप्रकाशता अबतिसकोउपसंहारकरतेहैं। तिसपूर्वउक्तप्रकार सेआत्मास्वयंप्रकाशहै। यहअर्थसिद्धहुआ।इसीउक्तअर्थमें "अदृष्टद्वयम्" इत्यादिप्रथमकारिकाके पूर्वार्द्धमेंस्थित "ज्योतिः" विशेषणकाप्रवेशकरते हैं।इसीपूर्वउक्तसमग्रअभिप्रायकोलेकर मूलप्रथमकारिकामें "ज्योतिः" यहआत्माकाविशेषण कथनकियाहै ॥ शंका ॥ यहांज्योतिपदसे परे "मतुप्" प्रत्ययकालोपहोनेसेअथवा "शुक्लःपटः" इसप्रयोगकीन्याई उपचारकअभेदहोनेसे "ज्योतिरात्मानम्" इससमानाधिकरणताकाप्रयोग है।कोईवास्तवअभेदसे यहप्रयोगनहीं॥समाधान॥जैसेलवणपिंडलवण

एकरसहोताहै। तैसेविज्ञानएकरसस्वभावहोनेकरयहआत्मास्वयंज्योति स्वरूपहै । अर्थयहप्रथमप्रकाशस्वरूपहोनेसेऔरतमकाविरोधीहोने से विज्ञानहीज्योतिपदकावाच्यहैऔरविज्ञानस्वरूपहीआत्माहैक्योंकिश्रुति मेंविज्ञानघनहीआत्माकास्वरूपश्रवणहोताहैइसलियेपूर्वोक्तमतुप्कल्प नाऔऔपचारिक अभेदव्यवहारयहदोनोनहींसंभवतेक्योंकियहदोनो भेद निश्चयपूर्वकहोतेहैंऔरप्रकरणमेंभेद निश्चयकाअभावहै । और

॥ घटज्ञानयोसंबंधः आत्मनिष्ठः ज्ञान
निष्ठत्वात् सत्तावत् ॥

अ० । घटऔरज्ञानकाजोसंबंधहै वहआत्मनिष्ठहै । ज्ञाननिष्ठ होनेसे।जोजोज्ञाननिष्ठहै वहआत्मनिष्ठहै । जैसेसत्ताजातिहै ॥इति॥ यहमहाविद्याअनुमानहै । दृष्टांतमेंनिर्णीतव्याप्तिकेबलसेपक्षमेंवादीको अनभिमतसाध्यके सिद्धकरनेवालाअनुमान महाविद्याअनुमानकहा जाताहै ॥ इति ॥

इसअनुमानसेभी विज्ञानस्वरूपहीआत्माहै। तैसेमानेहुएविज्ञा- नैकरस स्वभावहोनेकर स्वयंज्योतिस्वरूपही आत्माहै । तिसआत्मा कास्वरूपश्रुतिसे निश्चयकरके अन्ततिसमेंयुक्तिनिरूपणकरतेहैं यहपूर्व श्लोकसेअन्वयजानलेना॥शंका॥ यदिस्वयंज्योतिस्वरूपआत्माहै । तोतिसस्वप्रकाशआत्मामें अनुमानकाकथनअनुचितहै । क्योंकिवह आत्माउपनिषद्मात्रकाविषयहै।अन्यप्रमाणकाविषयनहीं॥समाधान॥ हेवादिन्अनुमानसे ब्रह्मात्माकी संभावनामात्रकेहुए आगे कथनकी हुईश्रुतिहीतिसमें प्रमाणहै ॥ सोश्रुतियहहै ॥

॥ अत्रायंपुरुषः स्वयंज्योतिर्भवति ॥

(बृ० उ० अ० ६ ब्रा० ३॥६)

अ०—इसस्वप्नअवस्थामें आत्माभानहोता है यहसर्वकोस्वीकार है। वहभानअर्थात्प्रकाश प्रथमबाह्यइन्द्रियों करके नहींसंभवता। क्योंकिबाह्यइन्द्रियोंकीतिसआत्माविषयक प्रवृत्तिनहींहोती। तथास्वप्न कालमेंनेत्रादिकइन्द्रिय स्वस्वव्यापारसे उपराम है। औरमनसेभीतिस आत्माकाप्रकाशनहींहोताक्योंकितिसकारथादिरूपविषयाकारपरिणाम हुआहै। औरबाह्यसूर्यादि ज्योतियोंकाभीस्वप्नकालमें अभावहै। याते परिशेषसे स्वयंज्योतिस्वरूपतासेही आत्माकाभानहोता है। यहअर्थ सिद्धहुआ ॥ इति ॥

अथपुनः शंकासमाधानपूर्वकआत्माकीस्वयंज्योति रूपताकाप्रकारांतरसेनिरूपण। अथपूर्वपक्ष।

हेसिद्धांतिन्पूर्वउक्तश्रुति तथाअनुमानदोनोंही आत्माकीस्वप्रकाशतासिद्धकरनेकोसमर्थनहीं हैं। क्योंकिपूर्वउक्तअनुमानकोसत्प्रतिपक्षताहै। तथाअनुमानका विरोधहोनेसेश्रुतिका पूर्वोक्तअर्थयोग्यनहीं है। तैसेहीदिखलाते हैं।

आत्मानस्वप्रकाशः ज्ञातत्वात्अनात्मवत् ॥१॥

तथाआत्मानस्वप्रकाशः अज्ञातत्वात घटवत् ॥२॥

अ०। आत्मास्वप्रकाशरूपनहींहै। ज्ञानकाविषयहोनेसे जोजो ज्ञानकाविषयहोताहै सोसोस्वप्रकाशनहींहोता। जैसेअनात्माहै। (१) औरआत्मास्वप्रकाशस्वरूपनहीं है अज्ञानकाविषयहोनेसेजोजोअज्ञान काविषयहोताहै। सोसोस्वप्रकाशनहींहोता। जैसेघटहै ॥ २ ॥ इन

दोनोंअनुमानोंसे पूर्वउक्तअनुमानदुष्टहै । तथाइनकेसाथ विरोधहोने करश्रुतिअयोग्यअर्थको कैसेकथनकरेगी यातेवहस्वार्थमें प्रमाणनहीं। ॥ शंका ॥ हेवादिन्‌दोनोप्रतिपक्षाऽनुमानों में पक्षरूपजोआत्माहैवह क्या?विशिष्टहै अथवाशुद्धहै ॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता॥ क्योंकि स्थापनाअनुमानमें शुद्धआत्माको हमनेपक्षकियाहै ॥ विशिष्टको नहीं ॥ तिसविशिष्टकीस्वप्रकाशता हमभीनहींमानते ॥ और द्वितीयपक्षकहोतोदोनों हेतुस्वरूपसेहीतिसआत्मामें नहींवर्तते ॥ क्योंकितिसआत्माकोज्ञात तथाअज्ञातपदार्थोंसे विलक्षणताश्रुतिने कहीहै ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन्‌ यहदोनोंहेतु अनुभवप्रमाण करके आत्मामेसिद्धहैं सोदिखलातेहैं ॥ कबीतो (आत्मानमहं जानामि) अ० ॥ आत्माकोमैजानताहूं ॥ ऐसाअनुभवहोता है औरकबी (आत्मानमहं नजानामि) अ० ॥ आत्माकोमैं नहींजानताहूं ॥ ऐसाअनुभवहोताहै ॥ इसप्रकार इनदोनों अनुभवोंकरकेसिद्धजोआत्मामेज्ञाततातथाअज्ञाततारूपहेतुहैंतिनकर केआत्मामेस्वयंज्योतिपनानहींसंभवता ॥शंका॥ हेवादिन्‌ "आत्मा नमहंजानामि" इसअनुभवकरके आत्मामे ज्ञाततासिद्धभीहै परंतुवह स्वप्रकाशताकेनिवारणकरनेमेसमर्थनहीं ॥ क्योंकिज्ञानकरकेनिवृत्ति केयोग्यजोअज्ञानकीविषयतारूपज्ञाततहै तिसकास्वप्रकाशताकेसाथ विरोधनहीं ॥ समाधान ॥ तिसज्ञातताकाजैसेविरोधहै। सोदिखलाते हैं । यदि "आत्मानमहंजानामि"इसपूर्वउक्त अनुभवकेबलसे ज्ञातत्व आत्मामेंस्वीकारहै तोज्ञानकीविषयता अर्थातज्ञानका कर्मआत्माहै । यहस्वीकार कियाचाहिये । तोअनात्मा घटादिकोंकीन्याईं आत्मामें

स्वप्रकाशताकाअसंभवहै। यहांयहतात्पर्यहै। "आत्मानमहंजानामि" और "घटमहंजानामि" इसप्रकारकेअनुभवसे दोनोंमेंज्ञाततातुल्यही सर्वकोप्रतीतहोतीहै। औरवेदांतीकेमतमेंघटविषयकज्ञान करकेनिवृत्तिके योग्यअज्ञानकीविषयतारूप ज्ञाततानहींसंभवती। क्योंकिजडघटादि पदार्थोंमेंअज्ञानकी विषयतातुमको स्वीकारनहीं। और तिसकोज्ञान भास्यत्वमाननेमें विरोधकाभीअभाव है। औरघटादिकोंमेंज्ञानकी विषयताअन्यप्रकारकी है। औरआत्मामेंज्ञानकीविषयता अन्यप्रकारकी है। यहकथनभीअयुक्तहै। क्योंकिज्ञातशब्दकोअनेक अर्थत्वप्राप्तहोगा औरअनेकअर्थत्वन्यायनहीं किंतुअन्यायहै। तिसीसेज्ञानभास्यत्वरूप ज्ञातताहीदोनोमें युक्तहै ॥शंका॥ ज्ञानभास्यत्वरूपज्ञातता आत्मामेंहो तिससे स्वप्रकाशताकी क्या?हानीहै ॥समाधान॥ हेसिद्धांतिन्‌तैंसे मानेहुएपूर्वकथनकिया जोस्वप्रकाशत्वकी निवृत्तिकासाधकअनुमान वहभलीप्रकारसेस्थितहुआ ॥ तिससेस्वप्रकाशत्वकीहानीहुई ॥ शंका ॥ज्ञानभास्यत्वरूपज्ञानकीकर्मताभीआत्मामेंहोऔरस्वप्रकाशता भीहो ऐसामाननेमेंक्यादोषहै ॥ समाधान ॥ स्वप्रकाशताऔरज्ञान भास्यताएकअधिकरणमेंनहींदेखेजाते ॥ इसीसेस्वप्रकाशताकेहुए ज्ञानकर्मताकाअसंभवहै ॥ क्योंकिउसीकोस्वप्रकाशकहतेहैं ॥ जो किसीरूपकरकेकिसीभीज्ञानकीकिसीकालमेंकर्मताकोनहीं प्राप्तहोता॥ यदिऐसानमानें किंतुज्ञानके विषयकोहीस्वयंप्रकाशमाने ॥ तोसां केतिकहीस्वप्रकाशतासिद्धहोगी ॥ कोईयुक्तिसिद्धनहीं ॥ याते आत्मास्वप्रकाशनहीं यहअर्थसिद्धहुआ ॥ शंका ॥ हेवादिन्‌ "अप्र मेयं" अ० ॥ यहआत्माज्ञानकाविषयनहीं ॥ इसश्रुतिसेतिसकोज्ञान

विषयत्वकाअभावहै ॥ तुमअज्ञानकाकर्मतिसकोकैसेकहतेहो ॥समाधान ॥ यद्यपिश्रुतिकाविरोधहोनेसे "आत्मानमहंजानामि" इसअनुभवकोतोअनात्मविषयकत्वरूपतासेभी संभवहोनेकर आत्मविषयकत्वइसकोनहीं है ॥ तथापि॥

❋ अनीशयाशोचति मुह्यमानः ❋ अ०॥(४) मं० ७॥श्वे०उ०

इस श्रुतिसेऔर "मामहंनजानामि" इसअनुभवसेयदिअज्ञाततांही आत्मामेंस्वीकारहो॥ तोभीस्वयंज्योतिपनेकीहानीहै ॥ शंका। अज्ञातताभीआत्मामें स्वीकारहो। परन्तुवहस्वयंज्योतिपनेकाविरोधि नहीं ॥ क्योंकिअस्वप्रकाशघटादिकोंमें जडताहोनेसेस्वतःहीआवृत्तस्वभावताहै ॥ इसलियेअज्ञानकीविषयतारूपअज्ञातताकातिनमें अभावहै ॥ औरआत्माकोस्वप्रकाशहोनेसे अज्ञानविषयतारूपअज्ञाततातिसमेंबनसकतीहै ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् जैसे "मामहंनजानामि" यहअनुभवहै तैसेही "घटमहंनजानामि"यहअनुभवहै। अनुभवकीतुल्यतासेघटादिकोंमेंअज्ञातता अवश्यस्वीकार करनेयोग्य है ॥ औरघटादिकोंमें अस्वप्रकाशता हमदोनोंकोस्वीकारहै ॥ तैसे मानेहुए जहांअज्ञातताहै तहांअस्वप्रकाशताहै ॥ इसप्रकारअज्ञातता अस्वप्रकाशताकर व्याप्तहै ॥ वहआत्मामेंदेखीहुई तिसमेंस्वप्रकाशताकीहानीकोसिद्धकरतीहै ॥ शंका ॥ हेवादिन्इतरकीअपेक्षासे रहितजोअपनीभासमानताहैइसीकानामस्वप्रकाशताहै। औरअभासमानताकानामअज्ञातताहै ॥सोअभासमानताभासमानताकाविरोधी नहीं ॥ क्योंकिघटादिकों में किसीकालमेंभासमानताभीदेखीजाती

है ॥ समाधान ॥ यद्यपिघटादिकोंमेंअभासमानता औभासमानता दोनोंहैं । तथापिवहएककालमेंनहीं हैं। क्योंकिभासमानताकोकार्य होनेकरकदाचित्कपनाहै । औरआत्मामेंतोदोनोंएककालमेंप्राप्तहैं । क्योंकिस्वप्रकाशता आत्माका तुमस्वरूपमानतेहो॥ तिसकोअनादि भावहोनेकरनित्यताहै। औरअज्ञानकोभी अनादिहोनेकर कार्यताका अभावहै ॥ इसप्रकारदोनोंकोअनादिरूपतासेनित्यहोनेकरएककाल मेंदोनोंविरुद्धधर्मआत्मामेंनहींसंभवते । औरअज्ञाततातोहमदोनोंको स्वीकारहै।तिसीकारणसे आत्मामेंअज्ञानकालमें"भाति"अ०॥ भान होताहै इसप्रकारकेस्वरूपवालीभासमानताका विरोधहोनेसे कोईभी तिसकेअनुभवकरनेको समर्थनहींहोसकता । तिसविरोधकोहीस्पष्ट करतेहैं । जिसकालमेंआत्माभानहोताहै । तिसीकालमें (नभाति) अ०। नहींभानहोता । यहअनुभवनहींहोसकता । औरजिसकाल में आत्माभाननहींहोता।तिसीकालमे(भाति)यहअनुभवभीनहींहोसकता इसप्रकारपूर्वउक्तज्ञाततातथा अज्ञाततारूपहेतुकोआत्मामें वृत्तिहोने करकिसप्रकारतिसकास्वयंज्योतिपनासिद्धहोसकताहै । किंतुकिसी प्रकारभीनहीं॥इतिपूर्वपक्ष। अथसिद्धांत समाधान॥ हेवादिन्पूर्व कथनकियेहुए अनुमानकेसाथविरोधहोनेसे स्वप्रकाशताकेसाधक अनुमानमेंसत्प्रतिपक्षपना औरश्रुतिकेअर्थमें अयोग्यताकीप्राप्तिरूप दोषजोतुमनेपूर्वकहासोनहींसंभवता । क्योंकिअनुमान आभासरूप है। यहीस्पष्टकरतेहैं। ज्ञाततथाअज्ञातपदार्थसे विलक्षणकोहीआत्मता है ॥ इसलियेपक्षभूतआत्मामें ज्ञातत्वतथाअज्ञातत्व यहदोनोंहेतु नहींवर्तते ॥ यद्यपि ॥

❋ परस्परविरोधेनप्रकारांतरस्थितिः ❋

इसन्यायसेज्ञातऔरअज्ञातपदार्थोंसेआत्माकीविलक्षणताकैसेहोसकतीहै। तथापितैसाआत्माकास्वरूपश्रुतिमेंकथनकियाहै ॥

❋अन्यदेवतद्विदिता दथोअविदितादधि॥ ❋उ०के०खं.१)३

अ० ॥ वहआत्मा (विदितात्) ज्ञातपदार्थोंसेऔर (अविदितात्) अज्ञातपदार्थोंसे (अधि) विलक्षणहै । इसश्रुतिकेसाथविरोध होनेकरपूर्वउक्तन्यायकोआभासपनाहै ॥ शंका ॥प्रमाणसेविनाकिया हुआजोन्यायहै वहआभासरूपताकोप्राप्तहोपरन्तुयहन्यायतो"मामहं जानामि"इत्यादिप्रमाणकी सहकारितावालाहै। यातेयहन्याय किस प्रकारआभासरूपहोसकताहै ॥ अन्यथाइसपूर्वउक्तअनुभवकीक्या गतिहोगी ॥समाधान॥ हेवादिन्इसअनुभवकोविशिष्टविषयकहोनेसे अनात्मगोचरताहीहै कोईनिरूपणकरनेयोग्य आत्माकीज्ञातताकोयह अनुभवनहींसिद्धकरसकता ॥ शंका ॥ यहअनुभवकिसविशिष्ट आत्माकोविषयकरताहै।क्या?ज्ञानविशिष्टकोविषयकरताहै । अथवा अहंकारविशिष्टकोविषयकरताहै । प्रथमपक्षतोनहींसंभवता। क्योंकि "आत्मानमहंजानामि"इसअनुभवमेज्ञानकास्फुरणनहींहोता ॥ और द्वितीयपक्षभीअसंगतहै ॥ क्योंकि "आत्मानमहंजानामि" इसअनुभवमेंअहंशब्दकाअर्थजोअहंकारहै वहकर्तारूपकरपृथक्ही भानहोता है । यातेआत्मानमहंजानामि" यहअनुभवविशिष्टविषयक नहींकिंतु निरूपणीयआत्माविषयकहीहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्इसअनुभव मेंजातिगुणक्रियासेरहिततथाअज्ञान औदुःखसेभिन्नवस्तुकास्वरूपमात्र भानहोताहै। ऐसाअनुभवतोहोतानहीं जिसकरआत्माकोज्ञानकाकर्म

पनाहो ॥ किन्तुउपाधिविशिष्टकोही ज्ञानकाकर्मपनाहै। औरतिसको ज्ञानकाकर्ममानेहुएभी कोईविरोधनहीं॥ यहांयहअर्थजाननेयोग्यहै "आत्मानमहंजानामि" यहअनुभवनिर्विकल्पकतोहैनहीं ॥ क्योंकि "किंचिद् इदं" ऐसाहीनिर्विकल्पककाआकारशब्दसेकथनकियाजाता है ॥ औरयहांकिंचिदाकारसे कथनतोहैनहींकिंतु "आत्मानं" इस प्रकारआत्मशब्दसेज्ञानकेआकारकाकथनहै ॥ यातेयहज्ञानसविकल्पक है ॥ औरयहज्ञाननैयायिकोंनेमानसहीस्वीकारकियाहै ॥ औरमनभी इंद्रियहै ॥ तिसकीद्रव्यमेंप्रवृत्तिगुणकेसंबंधसेहीकहनेयोग्यहै ॥ और गुणभीआत्मामेदुःखादिकही कहनेयोग्यहैं। औरदुःखादिकोंकासंबंध आत्मामेंनैयायिकजैसेस्वतःमानतेहैं ॥ तैसेहमारेमतमेनहीं है ॥ किंतु दुःखादिकोंकेउपादानकारण अंतस्करणकेसाथतादात्म्यसंबंधसेहै ॥ औरतिसअंतःकरणकातादात्म्यअज्ञानसेविनानहींसंभवता॥तैसेमानेहुए "आत्मानमहंजानामि" इसअनुभवकेवलसेहीअज्ञानतथादुःखादिवि शिष्टआत्मकाहीभानहोताहै।शुद्धस्वरूपकाभाननहीं।अन्यथायहज्ञाननि र्विकल्पकहोगा॥तिसकारणसेयहअर्थसिद्धहुआ॥किविशिष्ट आत्माही ज्ञानकाकर्महैशुद्धआत्मानहीं॥शंका॥यद्यपितैसेअनुभवकाविपयविशिष्ट हैतथापितिसविशिष्टस्वरूपकोभीज्ञानकाकर्मपनानहींसंभवता॥क्योंकि वहभीआत्माहै॥जैसेकुंडलवालादेवदत्तदेवदत्तनहींहै ॥ ऐसानहींहो सकता॥किंतुकुंडलविशिष्टहुआभीदेवदत्तदेवदत्तहीरहताहै। तैसेविशिष्ट आत्माभीआत्माही है अन्यनहीं॥समाधान॥हेवादिन्तिसविशिष्टको स्वप्रकाशमानेहुएअज्ञानादिविशेषणकोभीस्वप्रकाशताकी प्राप्तिहोगी क्योंकिविशिष्टवृत्तिधर्मकोविशेपणमेंवर्तनेकानियमहै । तिसकारणसे

विशिष्टज्ञानकाकर्म है। इसअर्थमेविरोधकाअभावहोनेसेवहस्वप्रकाश नहीं ॥ शंका ॥ अज्ञानादिविशेषण कोभीदेहादिकों की अपेक्षासे अंतरताहै तिसीसेतिसकोआत्मपनाहोनेसे स्वप्रकाशताकाभीसंभवहै। ॥ समाधान ॥ हेवादिन् अंतरताआत्मतामेंप्रयोजकनहीं।किंतुजडता सेविरुद्धचेतनताआत्मतामें प्रयोजकहै । औरआज्ञानादिविशेषणको चेतनरूपताहैनहीं क्योंकिवहचेतनसे विरुद्धजडरूपहै । इसलिये अज्ञानादिविशेषणको आत्मरूपतानहींसंभवती । औरअनात्मता होनेसेतिसकोस्वप्रकाशताभीनहीं है।यातेशुद्धआत्माकोहीस्वप्रकाशता काअंगीकारहै । अज्ञानादिविशिष्टकोनहीं ॥ शंका ॥ ज्ञानकाविषय होनेसेविशिष्टकोअस्वप्रकाशतामानेहुए विशेष्यभागकोभीज्ञानकाकर्म पनाहोगा ॥ तिससेआत्मअंशमेंभीपरप्रकाशताकी प्राप्तिहोगी ॥ समाधान ॥ (सविशेषणेहि) अ० ॥ विशेषणसहितमेंजोबुद्धि होती है वहविशेषणअंशमेनसंभवतीहुई विशेष्यभागमेंपर्य्यवसानको प्राप्तहोती है । इसन्यायसे विशेषणीभूतअज्ञानादिका तिरस्कारकर केशुद्धजोविशेष्यमात्र है तिसकोआत्माहोनेसेस्वप्रकाशता है । विशि ष्टकोनहीं।क्योंकितिसकोकल्पितहोनेकरअनात्मता है ॥शंका॥यद्यपि ज्ञातताकाजोअनुभव है ॥ वहविशिष्टकोविषयकरता है। शुद्धकोज्ञान कीकर्मताकावहसंपादकनहीं ॥ यातेपूर्वअनुमानमेंस्वरूपाऽसिद्धिरूप दोषस्थित है॥ तथापि अज्ञातताकाजोअनुभव है वहविशिष्टविषयक नहींसंभवता ॥ क्योंकिविशेषणरूपअज्ञानको अज्ञानविशिष्टकाप्रयो जकहोनेकर अज्ञानविशिष्टकोअज्ञानविषयत्वकाअभाव है ॥ यदि अज्ञानविशिष्टकोभीअज्ञातमानेंतोआत्माश्रयदोषकी-प्राप्तिहोगी ॥

क्योंकिअज्ञानकेविषयकोही अज्ञातकहते हैं ॥ स्वविशिष्टकोविषय करताहुआअज्ञानस्वकोभीविषय अवश्यकरेगा॥ औरअपनीविषयतामें आपकोहीकारणमाननेमेआत्माश्रयदोषकीप्राप्तिस्पष्टही है॥ इसयुक्ति सेशुद्धात्मामेही अज्ञातता है ॥ और–

अनीशयाशोचतिमुह्यमानः । नीहारेणप्रावृत्तः ॥

अ०–अविद्याकरमोहितहुआ अर्थात्आच्छादितहुआ शोककर ता है ॥ और (नीहारेण) अज्ञानकरके (प्रावृत्तः) आच्छादित है ॥ इत्यादिश्रुतिसेभीशुद्धात्माही अज्ञानकाविषयहै । तिसकारणसेसोपूर्व कथनकिया अज्ञातत्वहेतु कैसेस्वरूपाऽसिद्धहोसकताहै । किंतुनहीं होसकता ॥ समाधान॥ हेवादिन् "मामहंनजानामि" यहअनुभवभी आत्माकीस्वप्रकाशतकाही साधकहै । कोईस्वप्रकाशताकाविरोधी नहीं । यद्यपियह अनुभव अज्ञातताको शुद्धात्मामेंस्थापनकरताहै । तथापिस्वप्रकाशतासेविना आत्मामे अज्ञातताबोधनकरनेकोसमर्थनहीं। इसलिए अज्ञाततास्वप्रकाशताका विरोधीनहीं ॥ किंतुतिसकासाधक है । यातेअज्ञातत्वहेतु आत्मामेअस्वप्रकाशताकासाधकनहीं ॥ शंका॥ स्वप्रकाशताका अभावजो अभासमानता है तिसकोअज्ञातता कहते हैं ॥ तिसकाग्राहकजो "आत्मानमहंनजानामि" यह अनुभवहै वहस्वप्रकाशताकासाधककैसे है । क्योंकिजोजिसकाग्राहकहोता है । वहतिसकाहीसाधकहोता है। यदिऐसेनमानेंतो "अयंघटः" यहज्ञान जोघटकाग्राहक है तिसकोपटकीसाधकताप्राप्तहोनेसे अतिप्रसंगप्राप्त होगा ॥ समाधान ॥ जिसप्रकारयह अनुभवस्वप्रकाशताकासाधक है सोदिखलाते हैं। यह अनुभव आत्माविषयक अज्ञानकोविषयकरताहै।

औरयहविशिष्टज्ञानहै ॥ तिसमेंविशेष्यअज्ञातत्वहै ॥ सोविषयके आधीननिरूपणकरनेयोग्यहै॥ औरविषयआत्माहीहै। सोअज्ञातत्व काव्यावर्त्तक होनेकर विशेषण है ॥ इस कारण से आत्मा भी विशिष्ट ज्ञानमें भान होता है। क्योंकि विशिष्ट ज्ञान को विशेषण विषयत्वकानियमहै ॥ अर्थातविशिष्टज्ञानविशेषणको अवश्यविषय करताहै ॥ यातेइसअनुभवमें अज्ञानकीन्याईआत्माका भानअवश्य कहनेयोग्यहै ॥ शंका ॥ यहअनुभवआत्माविषयक अज्ञातताको बोधनकरताहुआभीआत्माको विषयनहींकरता ॥ क्योंकिआत्मा तिसअनुभवमेंउपलक्षणहै विशेषणनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् जैसे "काकवालादेवदत्तकागृहहै ॥ इसकथनमेंकिंचित्मात्रअति शयताजोतृणोंका ऊर्द्धमुखत्वरूपहोनासोदेवदत्तकेग्रहकानिश्चायकहै तिसकोद्वारकरकेहीकाकदेवदत्तकेग्रहकाव्यावर्त्तकहुआ तहांउपलक्षण अंगीकारकियाहै । औरयहांअज्ञानविषयकआत्मासे उत्पन्नहुआ कोईअतिशयतारूपघटादि विषयसेव्यावर्त्तकधर्मनहींहै । क्योंकि प्रतीतनहींहोता। इसप्रकारऔरकिसीधर्मको द्वारपनेकाअसंभवहोने सेआत्माहीअज्ञानका व्यावर्त्तकहुआअज्ञानमें विशेषणकहनेयोग्य है ॥ यदिआत्माकोविशेषणनहींमानोगे। तोअज्ञानकोआत्मविषयत्व नहींसिद्धहोगा।अन्यथा "नजानामि" इतनाहीतिसअनुभवकाआकार होगा ॥ शंका ॥ आत्मरूपविशेषणयुक्त अज्ञाततकोप्रमाणप्रका शकरो। तथापि उससेआत्माकी स्वप्रकाशता नहींसिद्धहोसक्ती ॥ क्योंकिविशेषणतथाविशेष्यकेसाथइन्द्रियकेसन्निकर्षकोही विशिष्टज्ञान कीकारणताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्विशेषणकेसाथइन्द्रियके

संबंधकोविशिष्टज्ञानकेप्रति कारणतानहीं है क्योंकिभूततथाभावी विशेषणोंमें इंद्रियकेसंबंधकाअभावहै । तिसीकारणसेविशेषणकाज्ञान हीनियमसेविशिष्टज्ञानमें कारणहै ॥ इन्द्रियसंबंधनहीं । इसीसे "आत्मा नमहंनजानामि" यहअनुभव स्वप्रकाशरूपतासे भासमानआत्मा कोविषयकरकेतिसमें अज्ञानस्वरूपआवरणकोविषयकरताहै । तात्पर्य यहहै ॥ विशेषणरूपआत्माकीइसप्रत्ययमेंजो भासमानताहै । वह प्रमाणसेहै। अथवाभ्रमसेहै। अथवास्वप्रकाशरूपतासेहै? यहविचारणीयहै तिनमेंप्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिप्रमाणकी प्रवृत्तिहुएतिसमें अज्ञतताकाअसंभवहोनेसे विरोधहै । औरद्वितीयपक्षभीअसंगतहै । क्योंकिआत्माकोकल्पितपनाहोगा ॥ भ्रमसिद्धपदार्थकोकल्पितपना नियमसेहोताहै ॥ यातेपरिशेषसेस्वप्रकाशरूपतासेही आत्माकीभास मानता कहने योग्यहै ॥ शंका भासमानता का अभाव अज्ञातता है । सो भासमानता के हुए कैसे आत्मा में संभवैगी । किंतु नहीं संभवती ॥ समाधान ॥ हेवादिन् अज्ञानका आवरक स्वभाव श्रुतिमेंप्रसिद्ध है । क्योंकि (नीहारेणप्रावृत्तः) इसश्रुतिमेंअज्ञानकोआ वरकपनाकहा है ॥ औरआवरकस्वभावभावरूपवस्त्रादिकोंकाहीदेखा है ॥ अभावकोआवरकपनाकहींदिखानहीं ॥ तिससेभासमानआत्मा मेंभीअज्ञाततानसकती है॥क्योंकिभावऔअभावकाहीएकअधिकरण मेंविरोधहोता है ॥ औरभावपदार्थोंकातो रूपरसकीन्याइएकअधिक रणमेंस्थितिहुएभीविरोधनहींहोता ॥ शंका ॥ इसप्रकारमानेहुएघटा दिकोंमेंभीअज्ञाततायौभासमानतादोनोंहुएचाहिये ॥ तिनमेंभीआ त्माकीन्याईविरोधनहींहोगा ॥ समाधान ॥ हेवादिन्अनात्माघटादि

कोंमेंभासमानता प्रमाणसे कहनेयोग्य है क्योंकितिनकोस्वप्रकाश स्वरूपताकाअभाव है ॥ औरप्रमाणकीप्रवृत्तिहुएतिसकाविरोधिनी अज्ञाततातहांनहींरहसकती ॥ तिससेभासमानताऔरअभासमानता यहदोनोंपरप्रकाशघटादिकोंमेंहीविरोधकोप्राप्तहोते हैं ॥ स्वप्रकाशआत्माविषयकएककालमें भासमानतायौ अभासमानताविरोधकोनहीं प्राप्तहोते ॥ इसप्रकार "आत्मानमहंनजानामि" यहजोआत्मामेंअज्ञाततताकासाधकप्रमाण है ॥ तिसकेवलसेहीआत्माकी स्वप्रकाशतासिद्धहुई ॥ शंका ॥ अज्ञाततत्वकासाधकजोप्रमाण है ॥ वहअज्ञानकेविषयमेंस्वप्रकाशताकासाधकनहीं ॥ क्योंकि "घटमहंनजानामि" इस प्रकारकाअनुभव अनात्माघटादिकों में भी अज्ञाततत्वका साधक है ॥ तिनमेंभीस्वप्रकाशताकीप्राप्ति हुईचाहिये ॥ औरतिनमेंस्वप्रकाशता देखनेमेंनहींआती ॥ यातेपूर्वउक्तअनुभवआत्माकी स्वप्रकाशताका साधकनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् "घटमहंनजानामि" यहअनुभव प्रथमआत्माकीन्याईघटादिकोंमें समानहीतुमनेमानाहै ॥ यातेघटादि अज्ञानमेंविशेषणहैंयहभीकहाचाहिये।औरविशेषणज्ञानसाध्यहीविशिष्ट प्रतीतिकहनीहोगी ॥ सोविशेषणरूपघटकाज्ञान प्रमाणसेतोसंभवता नहीं । क्योंकिप्रमाणकेविद्यमानहुए अज्ञतताकाअभावहै ॥ प्रमाण केहुएभी यदिअज्ञततताघटमें मानेंगेतोकवीभीतिसका नाशनहींहोगा औरस्वतःभीतिसविशेषणकाभाननहींसंभवता।क्योंकिघटजडहै।। और भ्रमसेतिसविशेषणकीसिद्धिमानोंतो तिसकोकल्पितपनाहोनेसे अज्ञाततानहींसंभवैगी ॥ अबइसीअर्थकेकथनकरनेकेलिये आत्मासे भिन्न घटकेस्वरूपकोनिराकरणकरते हैं ॥

* अथआत्मासेभिन्नघटकेस्वरूपकाखंडन *

हेवादिन्यहघटकिसकोकहते हैं। जिसकीस्वप्रकाशतातुमप्रतिपादनकरतेहो ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन्जिसमेंघटत्वादिधर्मप्रतीतहोते हैं यहीघट है ॥ अथवाव्यक्तिपदार्थपक्षमेंकंबुग्रीवाकारवालीव्यक्तिविशेषहीघट है ॥ समाधान ॥ हेवादिन्इसघटकास्वरूपतुमकथनकरो। क्योंकिसर्वादिजोसर्वनामशब्द हैं। वहतोप्रसिद्धमात्रकेवाचक हैंकिसी एकविशेषपदार्थकीउपस्थितितिनसेहोती है इसमेंकोईनियामकनहीं। यातेतुमहीघटकाविशेषस्वरूपकहो ॥ औरशब्दसे तिसकाप्रतिपादन शुककीन्याईनहोकिंतुअर्थबुद्धिपूर्वककहनायोग्य है ॥ औरवहअर्थ काअनुभवभीभ्रमरूपनहो। क्योंकिभ्रमकेविषयकोकल्पितपनाहोता है। इसलियेयथार्थअनुभवकरकेकहनेयोग्य है ॥ औरवहयथार्थअनुभव भीप्रमेयत्वादिरूपतासे घटकाबोधकनहो। किंतुइतरपदार्थोंसेभिन्नअसाधारणरूपकरबोधनकरनेवालाहो ॥ अर्थात्तिसघटकोसम्यक्अनुभव करकेइतरपदार्थोंसेभिन्नरूपताकरतुमदिखलाओ ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन् "कपालादिकोंकरकेआरब्धजोअवयविविशेष" तिसीकोघटकहते हैं ॥ अर्थयह ॥ कपालोंनेअपनेविषयकसमवेतरूपताकरजोउत्पन्न कियासोकपालारब्धकहियेहै ॥ यदिइतनाहीघटकालक्षणकरेंतोकपालादिकोंमेसमवायसंबंधसेरहनेवाले रूपादिकभीघटहोनेचाहिये। तिनकीव्यावृत्तिकेअर्थ "अवयवि" यहपदलक्षणमे कहाहै॥ औरं "कपालादि आरब्धअवयवि" जोइतनाही घटकालक्षणकहते" तोशरावादिकों में अतिव्याप्तिहोती॥तिसकेनिवारणअर्थ "विशेष" यहपदलक्षणमेंकहाहै यातेकपालादिकोंने अपनेविषयकसमवेतरूपताकर जोउत्पन्नकिया

अवयविशेष तिसीको घटकहते हैं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् क्या?यहवाक्यकपालऔ घटकेअवयवअवयवित्वसंबंधादिधर्मप्रतिपादनपरहै । अथवाघटके स्वरूपकोबोधनकरताहै ॥ प्रथमपक्षकहोगेतो प्रश्नका अनुत्तरहै ॥ क्योंकिघटकेस्वरूपविषयकहमाराप्रश्नहै । कोई तिसकेसंबंधिधर्मोंविषयक प्रश्ननहीं । औरअवयवऔ अवयवित्वादितो घटकेसाथसंबंधवालेघटसे भिन्नहैं ॥ यातेप्रथमपक्षअसंगतहै ॥ और द्वितीयपक्षभीनहींसंभवता॥ क्योंकिअवयवतथाअवयवित्वकोईघटका स्वरूपनहीं हैं । अवयवित्वरूपतासेजोप्रतीतिहैतिसको अवयवसापेक्ष होनेकरस्वस्वरूपअर्थात् तिसकोघटकास्वरूपहोनेकीयोग्यतानहीं । औरअवयवोंको यदिअवयविस्वरूपहीमानलें तोअवयवीकोअवयवों कीअपेक्षाहीनहींहोगी॥ शंका ॥ स्वरूपनिर्णयकरनेसेआपका क्या प्रयोजनहै जैसातैसाघटकास्वरूपप्रसिद्धहीहै॥ समाधान ॥ हेवादिन् अवयवित्वादिसेभिन्नघटकास्वरूपकहनेयोग्यहै।यदिघटकास्वरूपहीतुम निर्णयनहींकरोगे । तोअतिप्रसंगदेनेको तुमकैसेसमर्थहोगे। अर्थात् किसकीस्वप्रकाशता आपादनकरोगे ॥ शंका ॥ घटकास्वरूपतो कहनेयोग्यहीहै ॥ परन्तुमैंइससेभिन्नघटकास्वरूप विशेषकरकेकहने कोसमर्थनहींहूं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् तुमकोकहनेकीअसामर्थ्य कैसेहुईहै ॥ क्या? घटकास्वरूपअनुभवनहींहोता ॥ इससेतुमको अशक्तिहै । अथवाघटनिर्विशेषहै इससेअशक्तिहै ॥ प्रथमपक्षमेंतोसर्व लोकोंकाविरोधप्राप्तहोगा ॥ क्योंकिघटकास्वरूपसर्वजनोंके अनुभव सिद्धहै ॥ औरघटकोनिर्विशेषस्वरूपहोनेसेतिसकेकथनकीहमको अशक्तिहै ॥ क्योंकिशब्दकीप्रवृत्तिकिसीशेषधर्मको सन्मुखकरकेही

होतीहै ॥ यदियहद्वितीयपक्षकहो तोतिसमेंभीयहकथन करनेयोग्यहै जोनिर्विशेषघटकास्वरूप तुमनेस्वीकारकियाहै वहसर्वजनोंकेअनुभव सिद्धहै ॥ ऐसेसिद्धहुएवहअनुभूयमानघटकास्वरूपक्या ? स्वतःही अनुभवेंहोताहै।अर्थात्स्वप्रकाशस्वरूपतासेभानहोताहै ।अथवाअपने सेंभिन्नऔरकिसीप्रमाणसे भानहोताहै ॥ अंत्यपक्षकहो तोनिर्विशे षताकीहानीहोगी ॥ क्योंकिनिर्विशेषवस्तुप्रमाणांतरका विषयनहीं होसकता औरनेत्रादिक सर्वलौकिक प्रमाणतो सविशेषवस्तुको हीविषयकरतेहैं ॥ यहांपरयह अर्थज्ञातव्यहै ॥ नेत्रादिकइन्द्रियों की तोरूपादिगुणवाले पदार्थमे हीप्रवृत्तिहोती है ॥ क्योंकिरूपा दिकोंको सन्मुखकरकेही तिनकीप्रवृत्तिकानियमहै ॥ औरअनु मानभीजातिआदिकधर्मनकोसन्मुखकरकेहीप्रवृत्तहोताहै ॥ क्योंकि अनुमितिकोव्यापकताऽवच्छेदकप्रकारकत्वकानियमहै ॥ अर्थयह"पर्व तोवन्हिमान्" इसअनुमितिमेवन्हिनिष्ठव्यापकताका अवच्छेदकजो वन्हित्वधर्मवहप्रकाररूपतासेभानहोताहै॥ औरशब्दप्रमाणभीगुणतथा जातिआदिकवालेपदार्थमेहीप्रवृत्तहोताहै । क्योंकिआनंत्यतथाव्य भिचारदोषके दूरकरनेके लियेसामान्यादि विशेषधर्मकीअपेक्षाहै ॥ तात्पर्य्य यहकियदिघटपदकी एकघटव्यक्तिमात्रमें शक्तिमानेंतो एक ही घट व्यक्तिकीतिससे उपस्थिति होगी । दूसरी व्यक्तिके बोधन अर्थऔरशक्तिकी कल्पनाहोगी ॥ यातेघटपदमे आनंत्य शक्तियों कीकल्पना प्राप्तहोगी ॥ औरयदि शक्तिसे विनाही दूसरीव्यक्ति उपस्थितहो।तोव्यभिचारदोषकीप्राप्तिहोतीहै॥ यातेघटत्वादिधर्मवाले घटमेहीघटपदकीशक्तिहोनेसे सविशेषपदार्थमेही शब्दप्रवृत्तहोताहै ॥

औरउपमानप्रमाणभीसादृश्यादिधर्मविशेषकीअपेक्षाकरकेहीप्रवृत्तहोता है ॥ इसप्रकारसर्वप्रमाण सविशेषपदार्थकोही नियमसेविषयकरतेहैं॥ निर्विशेषकोनहीं ॥ शंका ॥ प्रमाणमात्रकोसविशेषपदार्थविषयकत्व मानेहुएआत्माकोउपनिषद्मात्रगम्यत्वका अभावहोगा । क्योंकि निर्विशेषआत्मामें शब्दप्रमाणरूपवेदांतोंकी प्रवृत्तिकीअयोग्यताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्लौकिकप्रमाणोंमेवहपूर्वउक्तनियमहै । और अलौकिकप्रमाणरूपवेदांततोलक्षणासेनिर्विशेषाकारवृत्तिकेउपस्थापकं हैं।यातेतिनकोआत्मामेप्रमाणतासंभवतीहै॥जिसकारणसेसर्वलौकिक प्रमाणसविशेषवस्तुकोहीनियमसेविषयकरतेहैं ॥ औरनिर्विशेषरूपघट सर्वकोअनुभवभीहोताहै ॥ तिसीकारणसेनिर्विशेषतथासकलइन्द्रियों काअविषयस्वप्रकाशस्वरूपघटपरिशेषसेसिद्धहुआ ॥ यहपूर्वकथन कियापूर्वपक्षहीअंगीकारकरनेयोग्यहै ॥ शंका ॥ तैसेमाननेसेभी स्वप्रकाशतथानिर्विशेषवस्तुघटकास्वरूपहोनेकेयोग्यनहीं । अनात्म होनेसेजो अनात्माहोताहै वहस्वप्रकाशनिर्विशेषस्वरूप नहींहोता ॥ जैसेपटादिहै । यातेघटस्वप्रकाशस्वरूपनहीं ॥ समाधान ॥ यह तुम्हाराहेतुस्वरूपसेहीपक्षमेनहींवर्तता । क्योंकिघटकास्वरूपआत्मा सेभिन्नकोईनिरूपणनहींहोसकता॥इसीअर्थकोस्पष्टकरतेहैं॥ हेवादिन् वहनिर्विशेषस्वरूपघटआत्मासेभिन्नहै। वानहीं। यहविचारकरनेयोग्य है ॥ इनमेपृथमपक्षनहींसंभवता । क्योंकिभेदकधर्मकाअभावहै ॥ शंका ॥ घटत्वादि धर्मही घटको आत्मा से भिन्न करने वालेहैं । तिनकाअभावआपकैसे कहतेहो ॥ समाधान ॥ हेवादिन्घटत्वादि धर्म घटमें भेदकहैं इसका क्या ? अर्थहै भावयह क्या ? यह

धर्मव्यक्तिमात्रमेंवर्त्तमानहैं अथवाघटव्यक्तियों मेंहीवर्ततेहैं ॥ प्रथम पक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिसर्वव्यक्तियोंकोघटरूपताकीप्राप्तिहोगी। औरघटव्यक्तियोंमेंही घटत्वादिधर्मवर्त्ततेहैंयहद्वितीयपक्षकहोतोतिसमें यहविचारकरनेयोग्यहै । वहघटव्यक्तियेंकौनहैं । यदिऐसेकहोकि घटत्वादिधर्मवालियांही घटव्यक्तियांहैं ॥ यहकथननहींसंभवता । क्योंकिइसमेंआत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहै। घटत्वादिधर्मनकोघटव्यक्तियों में अपनीस्थितिअर्थ अपनीअपेक्षाहै।यातेआत्माश्रयदोषहै।।औरयदि आत्माश्रयदोपकेभयसेवहघटव्यक्तियांधर्मांतरवालियांहैंऐसेकथनकरो। तोयहकथनभीनहींसंभवता।। क्योंकितिसमेंभीपूर्वकीन्याईप्रश्नकरनेसे आत्माश्रयादिदोषदूरनहींहोसकते॥अर्थातवहधर्मांतरघटव्यक्तियोंमेंअप नीस्थितिकेअर्थयदिअपनीहीअपेक्षाकरेंगेतोआत्माश्रयदोषप्राप्तहोगा। यातेघटत्वादिधर्मोंको भेदकपनेका अभावहोनेसेनिर्विशेषरूपहीघटहै। कोईआत्मासेभिन्नकरनेवालाधर्मतिसमेंनहीं है।। औरनिर्विशेषरूपतासे जोभासमान है तिसकीस्वप्रकाशताभीअबाधितहै ॥ इसीअभिप्रायसे औरदूषणकथनकरतेहैं ॥ हेवादिन्भेदकाबोधकजो प्रमाणहै।वहभेद मात्रकेबोधनकरनेकोसमर्थनहीं।।क्योंकितिसप्रमाणकोधर्मीऔप्रतियो गीकेग्रहणपूर्वकभेदका ग्राहकपनाहै। औरभेदमात्रविषयकतिसप्रमाण कोमानेहुएआत्मप्रतियोगिकऔघटअनुयोगिकभेद प्रमाण सिद्धनहीं होग।।इसप्रकारआत्मासेभिन्नघटप्रमाणकरसिद्धनहींहोता।औरयदिभेद काग्राहकप्रमाणप्रतियोगिरूपआत्माकोऔधर्मीरूपघटकोभी प्रकाशक रताहै। ऐसेकहोतोयहकथनभी कैसेसंभवेगा।क्योंकिधर्मीऔप्रतियोगी दोनोंहीस्वप्रकाशस्वरूपहैं।तिनकाभेदप्रमाणकरकेग्रहणकरनेकोकोईभी

समर्थनहीं । अन्यथास्वप्रकाशताकीहानिहोगी ॥ शंका ॥ इसप्रकार घटतथाआत्माकाअभेदमानेहुए दोनोमेंएकशेषरहाचाहिये ॥ नियाम कके अभावसेघटहीशेष क्योंनहो ॥ समाधान ॥ हेवादिन्

❀ इदंसर्वंयदयमात्मा ❀ बृ० उ० अ० (६) ब्रा० (५) (७)

अ० ॥ यहसर्वदृश्यमानजगत्आत्मास्वरूपहीहै । इसश्रुति मेंप्रत्यक्षादिप्रमाणसिद्धसर्वजगत्जोप्रथमउद्देशकियागियाहै। तिसका अनुवादकरके आत्मस्वरूपताकाविधान प्रतीतहोताहै । यातेआत्मा हीशेषरहताहै । घटशेषनहींरहता ॥ तिसकारणसेहीस्वप्रकाशआत्म स्वरूपहीघटहै। तिससेभिन्नकिंचितमात्रभी घटकास्वरूपनहींयहअर्थ सिद्धहुआ।इति।।औरयहजोवादीनेपूर्वकहाथा किआत्मामेंअज्ञातत्वका अनुभवयदिआत्मामेंस्वप्रकाशताकासाधकहै । तोघटमेंभीस्वप्रकाश ताहुईचाहिये।क्योंकिआत्माकीन्याईघटविषयकभीअज्ञातताका अनुभव समानहीहै। सोयहकथनभीसमीचीननहीं । जिसकारणसेपूर्वउक्त युक्तिकरआत्मासेभिन्नघटकानिरूपणनहींहोसकता । इसीरीतिको अन्यअनात्मपदार्थों मेंभीनिरूपणकरतेहैं ।

❀ अथआत्मासेभिन्नकरकेसर्वअनात्माकाखंडन ❀

इसप्रकारघटसेभिन्नऔरपदार्थभीआत्मस्वरूपहीहैं। यातेअनात्म पदार्थआत्मासेभिन्नकिंचितमात्रभीनहीं है।तोतुमकिसकीस्वप्रकाशता आपादनकरतेहो । अर्थात्जिसअनात्मामेंस्वप्रकाशतातुमकहतेहो । वहआत्मासेभिन्नहीनहीं है । औरआत्मामेंस्वप्रकाशताकाकथनहमको भीइष्टहै ॥ शंका ॥ स्तंभादिपदार्थअनात्मरूपताकरसर्वशास्त्रों में प्रसिद्धहैं । तिनकोआत्मरूपताआपकैसेकथनकरतेहो॥ समाधान ॥

हेवादिन्‌जोन्यायघटकेस्वरूपनिरूपणमेंकथनकिया। वहन्यायस्तंभादिकोंमेंभीतुल्यही है। अर्थयहसतंभत्वादिधर्मनकाआश्रयस्तंभादिहैं। अथवास्तंभादिकोंकेअवयवोंकरआरब्धजो अवयविविशेषवहस्तंभादिहैं। इसन्यायकीप्राप्तिसर्व अनात्मपदार्थों में तुल्यहोनेसेकोईअनात्मपदार्थआत्मासेभिन्नसिद्धनहींहोसकता॥ शंका ॥यदिघटादिसर्वजगत्‌ आत्मास्वरूपहीहै। तिससेभिन्नकिंचितमात्रभीनहीं। तोआत्मारूपकरकेहीसर्वकाभानहुआचाहिये। अन्यथाकारतासे अर्थात्‌घटादिआकारतासेभानहुआचाहिये। क्योंकिआकारांतरका आपअभावकथन करतेहो॥

शंकाकेनिराकरणपूर्वकज्योतिपदकीव्याख्याका उपसंहार ॥

समाधान। हेवादिन्‌अनादितथाअनिर्वचनीयअविद्याकेसंबंधसेस्वप्रकाशस्वरूपआत्माअन्याकारसेभानहोताहै॥ शंका॥ एकशुक्तिमेंएकहीशुक्तिकाआकाररजतअज्ञानकेवशसेप्रतीतहोताहै। अनेकआकारनहींप्रतीतहोते। तैसेअविद्यासेआत्मामेंभीएकहीमिथ्याआकारप्रतीतहुआचाहिये। अनेकरूपतासेतिसआत्माकाभानकैसेहोताहै। समाधान॥ हेवादिन्‌जैसेएकहीरज्जुअज्ञानकेवशसेसर्पदंडमालादिअनेकमिथ्याआकाररूपतासेभानहोती है॥ तैसेएकहीआत्माअज्ञानकेवशसेनानाप्रपंचरूपतासेभानहोताहै। इसप्रकारपूर्वउक्तयुक्तिसेस्वयंज्योतिस्वरूपआत्माहै॥ औरवहीपरमपुरुषार्थस्वरूपहै॥ इसीसेआनंदएकरसस्वभावहै क्योंकि —

आनंदोब्रह्मेतिव्यजानात्‌॥ तै० उ० भृ० व० अनु० ६॥

अ० ॥ आनंदस्वरूपब्रह्महै ऐसेजानताभया ॥ इसश्रुतिमें आनंदस्वरूपआत्माकहाहै ॥ शंका ॥ जैसे "चंदनंस्वर्गः" अ० ॥ चंदनसुखरूपहैइसप्रतीतिसेसुखकासाधनहोनेसेचंदनको सुखरूपकहा है ॥ तैसेकिसीविषयरूपउपाधिकेसंबंधसेआत्माको आनंदरूपताश्रुति नेकहीहै ॥ कोईस्वरूपसेआत्माआनंदरूपनहीं ॥ समाधान ॥ हे वादिन् ॥ **असंगोह्ययंपुरुषः** बृ० उ० अ० ६ ब्रा० ३॥१५ ॥

अ० ॥ यहआत्माअसंगस्वभावहै ॥ इसश्रुतिमेंआत्माकोअसंग स्वभावकहाहै ॥ यातेतिसकाउपाधिकेसाथसंसर्गनहींहै ॥ इसीसे आनंदएकमूर्तिहै ॥ शंका ॥ आत्माकर्ता है । यातेतिसकोदुःखकी संभावनाभीकीजातीहै । तिसकोसुखस्वरूपआपकैसेकथनकरतेहो ॥ समाधान ॥ हेवादिन्अविकारिस्वभावहोनेसे आत्मामेंकर्तृत्वनहीं संभवता । किंतुवहउदासीनस्वभावहै । औरअज्ञानसेकर्त्तापनातथा नानाप्रपंचरूपतासेतिसकाभानहै । औरवास्तवसेवहद्वैतरूपनहीं ॥ शंका ॥ "परस्परविरोधहुएप्रकारांतरनहींस्थितहोता" । इसन्यायसे यदिद्वैतरूपआत्मानहीं है । तोअद्वैतहीआत्माकावास्तवस्वरूपकहने योग्यहै । औरवहभीनहींसंभवता । क्योंकिद्वैतकेअभावकानामअद्वैतहै तिससेआत्माकोअभावरूपताकीप्राप्तिहोगी। औरतिसअभावरूपअद्वैत कानिरूपणप्रतियोगिरूपद्वैतकेआधीनहै । यातेतिसअद्वैतकोआत्म स्वरूपतानहींसंभवती ॥ अन्यकीअपेक्षाकरकेनिरूपणकरनेयोग्यको स्वभावपनेकाअभावहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्अद्वैतभीआत्माका वास्तवस्वरूपनहीं । किंतुद्वैताऽद्वैतसेरहितविज्ञानएकस्वभावआत्माहै यहअर्थसिद्धहुआ । औरघटादिकोंमेंअज्ञातताकाअनुभवतोअन्य

प्रकारसेहीसंभवहोसकताहै । सोदिखलातेहैं । एकहीआत्मामेंघटादि जगत्तथाअज्ञानकल्पितहै । एकअधिकरणरूपसंबंधसेअज्ञातरूपता सेघटकाअनुभवहोताहै । वास्तवसेघटादिकोंमेंअज्ञानकीविषयतानहीं संभवती । यातेघटादिकोंमेंस्वप्रकाशतानहीं । किंतुआत्माहीस्वयं प्रकाशचेतनस्वरूपहै ॥ २४ ॥

इतिज्योनिपदव्याख्या ॥

इति श्री १०८ मन्निर्मलसृताऽवतन्स ब्रह्म विदुत्तमहरिहरि
पूज्यपाद शिष्येण गुरुदत्तसिंह साधुना विरचतायां
वेदान्त सिद्धान्त मुक्तावलीभाषायांपूर्वार्द्धम्
॥ ओ३म् ॥



❀ ओं ❀

अथ

श्रीवेदांतसिद्धांत मुक्तावली

भाषाउत्तरार्द्ध प्रारंभः ।

दोहा—अजरअमर बिभुसुखमो ज्योतीजोचिदरूप ।
सोहंलखछिनमेंनसत जगसबभ्रमतमकूप ॥ १ ॥

त्रिभंगीछंद॥ भवदोषनभर्जनसूखनअर्जन अन्तकतर्जनजिहिनामं ।
अमरारिनिहरणं जनसुखकरणं शरणनभरणं जिहकामं॥
मदनामदहारी सुंदरप्यारी सूरतधारी निहकामं ॥
शिवेदनगम्यं योगीरम्यं पदमननम्यं तिहरामं ॥ २ ॥

क० ॥ निर्दुसनिरीहनिराकारपरब्रह्मजोऊ सोऊभएनानक निवारेंकलिपापको । अंगद अमरदास रामदास अरजुनश्रीहरगोविंदभए अरिदलतापको ॥ गुरुहरिरायहरिकृपणकृपणबपु तेगकेबहादरजुहि दुधर्मथापको ॥ गुरुगुविंदसिंहलौपदाविन्दसबनके बंदोंकरजोरहतें दुःखमूलपापको ॥ ३ ॥

दो०॥ श्रीगुरुहरिहरिकेसदा चरणकमलरिदधार ।
शेषग्रंथभाषाकरोंजोजनकोहितकार ॥ ४ ॥
बीणाकरधरकरसदा भक्तनवांछितदेत ।
वाणीममवाणीवसो पुरवोयहसंकेत ॥ ५ ॥
वेदशिरनसिद्धांतजो तांकीश्रेणीमाहि ।
उत्तरार्द्धभाषाकरों यथामतीममआहि ॥ ६ ॥

अथआनंदपदव्याख्या।अथमूलटीकाकारकृतमंगल

यस्यभासाजगतसर्वं भातिस्थावरजंगमम ।
तदहंब्रह्मपूर्णंस्यां पुरुषार्थसुखात्मकम् ॥१॥

दो० ॥ जाप्रकाशभासततजगत स्थावरजंगमरूप ।
सोमैंपूर्णब्रह्महूंपुरुषारथ सुखरूप ॥ १ ॥

अथपूर्वपक्ष । आत्माकीपुरुपार्थरूपताकाखंडन ॥

आत्मामेंप्रमाणके विद्यमानहुए दृश्यरूपतासे अनात्मपनेकी प्राप्तिनहींहोती। तथाप्रमाणकेअभावहुए नरशृंगकीन्याईअसत्पनाभी नहींहोता ॥ क्योंकिवहआत्मास्वप्रकाशस्वरूपहै ॥ इतनाअर्थज्योति पदसेस्थापनकिया । अबआनंदइसविशेषणसे आत्मामें सूचनकी हुईजोपुरुपार्थरूपताहै ॥ तिसकेनिरूपणकरनेकेलिये सिद्धांतीकेमत सेसिद्धजोआत्माकास्वरूपहै ॥ तिसकाअनुवादकरकेपूर्वपक्षीतिसकी पुरुषार्थरूपताका निषधकरताहै ॥

मू०। आत्माऽयंसर्वसंबद्धो भानुभासकउच्यते ।
नित्योऽयमविनाशित्वा दुपादेयःकथंभवेत् २५॥

कुंडलियाछंद ॥ सबजगमेंसंबद्धयहनिजआतमपहचान ।
भानूवतभासकसदायोंश्रुतिकीनबखान ।
योंश्रुतिकीनबखाननित्यपुन ताकोगाययो ॥
अविनाशिताहेतु ताहिमेंनीक बतायो ॥
ग्रहनकरनकेयोग्यनहींआत्महैसोकब ।
सुखदुःखहानहभिन्नजानचाहेनहजनसब ॥२६॥

टी० ॥ साधनचतुष्टयसंपन्नअधिकारीकोयहआत्मा “उपादेय”

कहियेपुरुषार्थरूपकैसेहोसकताहै । किंतुकिसीप्रकारभीनहीं । क्यों किउपादेयतामेंसाध्यत्वप्रयोजकहोताहै ।अर्थात्जोप्रयत्नसाध्यपदार्थ है । वहउपादेयरूपहोताहै । औरयहआत्मातोसाध्यहैनहीं। क्योंकि सत्यरूपहुआनित्यस्वरूपहै । नित्यत्वकीअसिद्धिहैऐसीआशंकाकेहुए कहतेहैं । "अविनाशित्वात्" कहियेविनाशरहितहोनेसेयहआत्मा नित्यहै । यातेनित्यताअसिद्धनहींकिंतुसिद्धहै ।इसअर्थकोआगेउप पादनकरेंगे । आत्माअनित्यहोनेकेयोग्यहै परिच्छिन्नहोनेसे । घट कीन्याई । इसआशंकाकेहुएइसकोस्वरूपासिद्धिसेदूषितकरतेहैं । (आप्लृव्याप्तौ) अ० "आप्लृ" धातुव्याप्तिअर्थमेंहोताहै । इसपाणिनि मुनिकेस्मर्णसेइसधातुसे आत्मशब्दको सिद्धहोनेकर सर्वकोपूर्णकरने वालाआत्माहै । अर्थात्व्यापकहै । यहअर्थलाभहोताहै ॥ यातेपरि च्छिन्नत्वहेतुस्वरूपसेहीतिसआत्मामेंवृत्तिनहीं ॥ इसीसेआत्मानित्यहै ॥ शंका ॥ इतनेकथनसेभीअनित्यत्वकापरिहारकैसेहोसकताहै॥क्यों किआपकेमतमेंव्यापकआकाशमेंभीअनित्यत्वदेखाहै ॥ समाधान ॥ आत्मासर्वपदार्थोंमेंसर्वरूपतासेसंबंधवालाहै ॥ अर्थात्सर्वजगत्का अधिष्ठानहै ॥ यद्यपिअन्यसर्वपदार्थोंकाअधिष्ठानआकाशहै ।तथापि स्वयंप्रतिअधिष्ठानताकाअभावहोनेसेसर्वजगत्कीअधिष्ठानताआकाश मेंनहींसंभवती ॥ तिसीसेसर्वकाउपादानहोनेसेआत्माअनित्यनहीं औरनकिसीकाकार्यहै ॥ शंका ॥ आत्माकोघटकीन्याईजडताहोने सेसर्वजगत्कीउपादानतानहींसंभवती ॥ समाधान ॥ सूर्यकी न्याईयहआत्माप्रकाशकहै ॥ तैसेमानेहुएजोआत्माअन्यसर्वअनात्म पदार्थोंकोभीप्रकाशकरताहै ॥ तिसकोअपनेप्रकाशमेंइतरकीअपेक्षा

नहींसंभवती ॥ जैसेसर्वजगतकेप्रकाशकआदित्यभगवान्कोअपने प्रकाशमेंइतरकीअपेक्षानहीं । किंतुवहस्वयंप्रकाशहै । तैसेआत्माभी स्वयंप्रकाशमानहै । तिसमेंजडताकाअभावहै । यहीअर्थश्रुतिमेंभी कथनकियाहै ॥ इति ॥अबअपेक्षितअर्थकीपूर्णताद्वाराविस्तारपूर्वक श्लोककीव्याख्याकरतेहुएआत्माकीपुरुपार्थरूपताका निषेधकरतेहैं ॥ इसलोकतथापरलोककेसर्वविषयानंदतथातिनकीसाधनसामग्रीसेविरक्त जोपुरुपहै ॥ तथाअनादिसंसारमेंसंपादनकियेहुएपुण्यकर्मनकेसमूहसेजिसकेपापकर्मनाशहुएहैं ॥ तथासकलविषयोंमेंदोषदृष्टिसेवैराग्य जिसकोउत्पन्नहुआहै ॥ औरपरमपुरुपार्थकीकामनावालाजोमुमुक्षुहै तिसकोयहआत्माकिसप्रकारउपादेयहै ॥ क्योंकिआगेकथनकीहुई युक्तिसे आत्मामें पुरुपार्थरूपता नहींसंभवती ॥ शंका ॥ अनित्य जो सांसारिक सुखहै ॥ वह विनाशी होनेसे त्याग करने योग्य हो परंतुआत्मातोनित्यहै । यातेक्षीणतादिदोषसेरहितहै वहकैसेमुमुक्षुको उपादेयनहीं हैकिन्तुउपादेयहै ॥ समाधान ॥ यद्यपिआत्मानित्यहै । तथापितिसकोउपादेयतानहींसंभवती ॥ इसीकोस्पष्टकरतेहैं ॥

❀ आत्मनित्यःअविनाशित्वात् ॥ आकाशवत् ❀

अ०॥आत्मानित्यहै। अविनाशीहोनेसे। जोजोअविनाशीहोता हैसोसोनित्यहोताहै ॥ जैसेआकाशहै । इसअनुमानमेंअविनाशित्व हेतुस्वरूपासिद्धनहीं ॥क्योंकिआत्माकेविनाशकी सामग्रीकाअभाव होनेसेतिसकाविनाश दुर्निरूप्यहै "तथाहि" समवायिकारणका नाशअथवा असमवायिकारणकानाशद्रव्यकेनाशकी सामग्रीनैयायिकोंनेमानीहै ॥ औरअकार्यआत्माके वहदोनोंकारणनहींसंभवते ।

औरअनादिअदृष्टोंके प्रवाहकाआधारहोनेसेआत्माको अकार्यपना सिद्धहैयहअर्थपूर्वहीं कथनकरआएहैं ॥ शंका ॥ कार्यकायदिदर्शन होतोसामग्रीकीभीकल्पना होसकतीहै॥ अर्थात्जबआत्माकानाश देखाजायतोनाशकी सामग्रीभीकोईअवश्य कल्पनाकरनेयोग्यहै ॥ समाधान ॥ आत्माकाविनाशग्रहणकरनेकोकोईभीसमर्थनहीं है ॥ इसीअर्थकोउपपादनकरतेहैं॥ क्या?अपनेविनाशकोआपहीआत्माग्रह णकरताहै।अथवाअन्य आत्माग्रहणकरताहै ॥ इनमेंप्रथमपक्षतोनहीं संभवता। क्योंकि आत्माकीविद्यमानताकालमें ग्रहणकरनेयोग्यजो आत्माकाअभावतिसका अभावहै ॥ औरआत्माकेविनाशकालमें ग्रहणकरनेवालेआत्माकाहीअभावहै ॥ औरअन्यआत्माप्रथमआत्मा केअभावको ग्रहणकरलेगायहपक्षभी समीचीननहीं । क्योंकिप्रति योगीकेग्रहणपूर्वकही अभावकाग्रहणहोताहै ।प्रतियोगीअग्राह्यहै यदितिसकोभी ग्राह्यमाने तोआत्मपनेकाहीअभावहोगा ॥ याते आत्मीयअभावग्रहणकरनेके अयोग्यहै । किंवा ॥ आत्माकेविनाश काग्रहणप्रत्यक्षसेहै । अथवाअनुमानसेहै ॥ प्रथमपक्षनहींसंभवता । क्योंकिएकआत्माको दूसरेआत्माके प्रतिअतींद्रियहोनेकरआत्मप्रति योगिकसंसर्गाभावप्रत्यक्षसेग्रहणनहींहोसकता । अर्थात् संसर्गा भावकेप्रत्यक्षमेंप्रतियोगिप्रत्यक्षकोकारणताहै । औरयहां आत्मरूप प्रतियोगीप्रत्यक्षसे ग्रहणनहींहोसकता । यातेतिसकाअभावभीप्रत्यक्ष सेग्रहणकैसेहो ॥ और परिच्छिन्नत्वहेतुसेअनित्यत्व अर्थात् विनाश अनुमेयहैयहद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता। क्योंकिवहपरिच्छिन्नत्व हेतु पक्षमेंअवृत्तिहोनेसे स्वरूपाऽसिद्धहै ॥ कारणयहकिदेशकालवस्तुके

परिच्छेदसेरहितको आत्माकहतेहैं॥ इसीउक्तअर्थकोश्रीवेदव्यासजी कीउक्तिद्वारादृढकरतेहैं।

यच्चाप्नोतियदादत्तेयच्चात्तिविषयान्निह।
यच्चास्यसंततोभावस्तस्मादात्मेतिकथ्यते॥१॥

अ०॥ यहां "आप्लृ" औआङ्पूर्व "डुदाञ्" औ "अद" तथा "अत" इनचारधातुओंसेआत्मशब्दकोसिद्धकरतेहैं॥(यत्)जिस कारणसेसकलअनात्मपदार्थोंको सकलरूपतासे (आप्नोति) व्याप्त करताहै॥ (तस्मात्) तिसीसेआत्माकहतेहैं॥ और (यत्) जिस कारणसेसुषुप्तिआदिकअवस्थाओं में अज्ञानकेकार्यअनात्माकोअज्ञान केवशसेस्वस्वरूपमे (आदत्ते) उपसंहारकरलेताहै॥ तिसीसेआत्मा कहते हैं॥ और (यत्) जिसकारणसे विषयाकारवृत्तियों को (अत्ति) प्रकाशकरताहै॥ तिसीसे आत्माकहतेहैं॥ और (यत्) जिस कारणसे निरूपणीयरूपतासे प्रकरणप्राप्त जोआत्माहै तिसकी (संततः) अंतरायसेरहितरूपताकर (भावः) स्थिति है॥ वहस्थितिभी अपनेआपमेंही हैकिसीअन्यपदार्थमेंनहीं॥ क्योंकिअन्यअनात्मपदार्थ काअभावहै॥ तिसीसे (सातत्येन) नैरन्तर्यरूपतासे (अतति) जो गमनकरताहै॥ तिसकोआत्माकहतेहैं॥ अर्थात्गमनकाफलतिस तिसदेशमेंजाकरस्थितहोनाहै।औरआत्मासर्वत्रही अवस्थितहै।क्योंकि आत्मासेभिन्नवस्तुकाहीअभावहै।यातेस्वस्वरूपआत्मामेंहीजोपूर्णरूपता सेस्थिति है॥ इसीकोसंततभावकहतेहैं॥ तैसेमानेहुएपरिच्छिन्नत्व हेतुस्वरूपाऽसिद्धहै। तिसीसेयहांपरयहअनुमानजानना॥

❀ आत्मानित्यः अपरिच्छिन्नत्वात् व्यतिरेकेणघटादिवत् ❀

अ० ॥ आत्मानित्यहोनेकेयोग्यहै। अपरिच्छिन्नहोनेसेंजोजो नित्यनहीं है ॥ सोसोअपरिच्छिन्नभीनहीं है। जैसेघटादिहैं॥ इति ॥ शंका ॥ इसअनुमानमेंअपरिच्छिन्नत्वहेतुव्यभिचारीहै। क्योंकिव्यापकआकाशादिकोंमेंभीअनित्यत्वदेखाहै॥ समाधान ॥ नित्यत्वके अभाववालेआकाशादिकोंमेंअपरिच्छिन्नत्वहेतुकाअभावहोनेसेंव्यभिचारदोषकीप्राप्तिअनुमानमेंनहीं है। क्योंकितुमकोव्यापकताकाज्ञान हीनहीं। जिसकारणसे "सर्वसंबद्धत्व" अर्थात्सर्वकेसाथसंबंधवाला व्यापककहाजाताहै॥ शंका ॥ सर्वकेसाथजोसंयोगिपनाहैइसीकोसर्वसंबद्धत्वकहतेहैं। वहगगनादिकोंमेंविद्यमानहै। यातेहेतुव्यभिचारीहै समाधान ॥ "सर्वसंयोगित्व" सर्वसंबद्धत्वशब्दकाअर्थनहीं। किंतुसर्वमेंसर्वरूपतासेजोसंबंधवालाहोतिसकोव्यापककहतेहैं। आकाशादिकोंमेंइसलक्षणकाअभावहै ॥ यातेव्यभिचारकीशंकानहींसंभवती ॥ शंका ॥ आकाशादिकभीसर्वमेंसर्वरूपतासेसंबंधवालेहीहैं। क्योंकि तिनकोनिरवयवहोनेकरएकदेशसेसंबद्धत्वकाअभावहै॥ समाधान ॥ परस्परव्यभिचारीपदार्थोंकाअधिष्ठानअर्थात्सत्तास्फूर्तिदेनेवालाहीसर्वमेंसर्वरूपताकरसंबंधवालाहोसकताहै ॥ शंका ॥ व्यभिचारिपदार्थही अन्यव्यभिचारिकाअधिष्ठानक्योंनहो ॥ समाधान ॥ एकव्यभिचारि पदार्थअन्यव्यभिचारिपदार्थकाअधिष्ठाननहींसंभवता ॥जिसकारणसे अन्यजोघटादिकहैं॥वहअपनेसेभिन्नपटादिकोंकरसकलरूपतासेव्याप्त नहींकियेजाते। अर्थात्संचारस्फूर्तिप्रयुक्तनहींकियेजाते। यदिसकल

रूपसेतिनकीव्याप्तिमानलेंतोव्याप्यघटादिकोंकेस्वरूपकाहीअभावहोगा क्योंकिएकअधिकरणमेंदोसत्ताकीअयोग्यताहै। भावयहकिव्यापकका स्वरूपसत्रूपहै। तिससेभिन्नव्यभिचारीजोव्याप्यघटादिकहैं तिनके स्वरूपकाहीअभावहै। तैसेमानेहुएजिसकीसत्तासेव्याप्यघटादिकसत् हैं। वहव्यापकसतहै व्याप्यसतरूपनहीं ॥ शंका ॥ व्याप्यमेंव्यापक प्रयुक्तसत्तामानेहुएभीस्वरूपभूतसत्ताकाविरोधनहीं। क्योंकिव्याप्य केएकदेशमेंव्यापककीसत्ताहै। औरदूसरेदेशमेंअपनीसत्ताहै। ऐसीव्यवस्था सेदोनोंसत्तावनसकतीहैं ॥समाधान॥ व्याप्यकेजिसदेशमेंव्याप्य की स्वरूपसत्ताहै तिसदेशमेंव्यापककीव्याप्तिहैवानहीं। प्रथमपक्षमेंव्याप्य कीसत्तामाननेकाकोईभीफलनहीं। क्योंकिव्यापककीसत्ताकरकेही सत्व्यवहारबनजायेगा। औरयदिद्वितीयपक्षकहो। तोसर्वरूपतासे व्यापककीव्याप्तिनहींसिद्धहोगी।इसकारणसेएकव्यभिचारिपदार्थदूसरे व्याभिचारिपदार्थकाअधिष्ठाननहींसंभवता। यातेआत्माहीसर्वजगत् काअधिष्ठानहै।आकाशादिकनहीं।इतनेग्रंथसे(आत्मायंसर्वसंबद्धः)इस प्रथमपादकाव्याख्यानकिया। अबदूसरेपादकाव्याख्यानकरतेहैं।।शंका।। आत्माकासर्वकेसाथ संबंधमानेहुएभी तिसको सर्वका अधिष्ठानपना नहींसंभवता। क्योंकितिसकोजडहोनेकरअज्ञानविषयतारूपअज्ञातता कीअयोग्यताहै। औरसर्वज्ञानोंकाविषयहोनेसेतिसकोजडपनाहै ॥ समाधान॥ देशकालादिपरिच्छेदसेरहितआत्मामेंप्रमाणांतरकीअपेक्षा नहीं है। जिससेवहसूर्य्यकीन्याईस्वयंप्रकाशमानहै। और

तमेवभान्तमनुभातिसर्वं। तस्यभासासर्वमिदंविभाति।

अ० ॥ तिसआत्माकेप्रकाशहुएहीसंर्वजगत्पश्चात्भानहोताहै

तिसकेप्रकाशकरकेयहसर्वजगत्भानहोताहै । इसश्रुतिमेंसर्वजगत्का प्रकाशकरूपतासेआत्माप्रसिद्धहै । सर्वहीजगत्आत्माकरकेप्रकाशके योग्यहै । तिसजगत्सेआत्माकाप्रकाशनहींसंभवता । जैसेघटदीपक कोप्रकाशनहींकरसकता ।तिसकारणसेस्वयंप्रकाशमानहीआत्माहैजड नहीं । तिसकोसर्वकीअधिष्ठानतासंभवतीहै । यद्यपिआत्मानित्यहै । तिसकोक्षीणतादिदोषसेरहितहोनेकरउपादेयतासंभवतीहै । तथापि सुखतथादुःखाभावसेइतरहोनेकरतिसकोउपादेयतानहींसंभवती । यहां परयहअनुमानजानना ॥

आत्माअनुपादेयः सुखदुःखाभावेतरत्वात्घटादिवत्

अ० । आत्माउपादेयनहींहै । सुखतथादुःखाभावसेभिन्नहोनेसे।।जो सुखतथादुःखाभावसेभिन्नहैवहउपादेयनहींहै । जैसेघटादिकहैं॥इति॥

अथसिद्धांतीद्वारा अनुपादेयत्वसाध्यकाखंडन

अबइसपूर्वपक्षीके अनुमानमें अनुपादेयत्वरूपसाध्यकोसिद्धां तीनिषेधकरताहै ॥ हेवादिन्यहजो आत्मानिष्ठतुमने अनुपादेयत्व कथनकियाहैवहक्याहै । क्या? आदानक्रियाअर्थातहस्तादिकोंसेग्रहण क्रियाकीअविषयताका नामअनुपादेयताहै ॥ अथवाइच्छाकीविषय ताकेअभावकाअधिकरणत्वरूपअनुपादेयत्वहै?॥ अथवाअपनेप्रयत्न करसाध्यत्वके अभावकाअधिकरणत्वरूप अनुपादेयत्वहै ? । अथवा स्वप्रयत्नकरसाध्यत्वकेअभावविशिष्ट सुखदुःखाभाव सेजोइतरपनाहै यहीअनुपादेयत्वहै? ॥ अथवासुखतथादुःखाऽभावसेजो इतरपनाहै यहीअनुपादेयत्वहै? । अथवाअन्यहीकोईअनुपादेयत्वहै?इनमेंप्रथम पक्षतोअसंगतहै । क्योंकिआदानक्रियाकीअविषयता आत्मामेंवादी

प्रतिवादीसर्वहीस्वीकारकरतेहैं॥जिसकारणसेस्पर्शवालेतथाक्रियावाले पदार्थकाहीहस्तादिकोंसेग्रहणहोताहै।क्रियातथास्पर्शसेरहितआत्माका ग्रहणनहींहोसकता॥यातेप्रथमपक्षमेंहमकोभीइष्टापत्तिहै।औरइसमेंइष्टा परिमानेहुएअनुमानमेंसिद्धसाधनदोषभीप्राप्तहोगा। भावयहआदान क्रियाकी अविषयतारूपअनुपादेयताआत्मामेंप्रथमहीसिद्धहै॥तिसको पुनःसिद्धकरनेसेसिद्धसाधनदोषप्राप्तहोताहै ॥ अर्थात्आश्रयाऽ सिद्धिहेतुगतदोषहोताहै ॥ क्योंकिसंदिग्धसाध्यवान्पक्षहोताहै॥ साध्यकातिसमेंनिश्चय होनेसेपक्षत्वकाअभावहै ॥ किंवायहअनु पादेयत्वकालक्षण अलक्ष्यसुखादिकों में वृत्तिहोनेसे अतिव्याप्तिदोष वालाहै ॥ क्योंकिसुखतथादुःखाऽभावभी आदानक्रियाकेविषयनहीं होते ॥ इसप्रकारप्रथमपक्षको निरासकरकेअबद्वितीयपक्षकोदूषित करतेहैं ॥ औरइच्छाकीविषयताका अभावजिसमेंहोवहअनुपादेयहै। यहद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता ॥ क्योंकि "परस्परविरोधहुएतिनदोनों सेअन्यकोईप्रकारनहीं स्थितहोसकता"॥इसन्यायसेइच्छाकीविषयता काजोअनधिकरणहै तिसकोअनुपादेयमानेहुए इच्छाकीविषयताके अधिकरणनिष्ठ उपादेयताप्राप्तहोतीहै ॥तिसमेंभीयहविचारकर्तव्यहै। इच्छाऔइच्छाकीविषयताकर विशिष्टजोविषयहै ॥ वहउपादेयहै ॥ अथवा तिनदोनों कर उपलक्षित विषयका स्वरूप मात्रउपादेयहै ॥ प्रथमपक्ष तोनहींसंभवता क्योंकि "विशिष्टवृत्तिधर्मको विशेषण मेंवर्त्तनेकानियमहै" ॥ इसन्यायसेइच्छाऔरतिसकी विषयताको भीउपादेयता प्राप्तहोगी ॥ सोतुमकोइष्टनहीं ॥ और इच्छा औ तिसकी विषयताकर उपलक्षित जो विषयका स्वरूपमात्रवह

उपादेयहै । यदियहद्वितीयपक्षकहो । तोतिसमेंभी यहविचारकर्तव्य है । जितना इच्छाकाविषयहै । वहसर्वेही उपादेयहै अथवाइच्छा के विषयका एक देश उपादेयहै ॥ अथवा इच्छा के विषय में विशेष्यमात्रउपादेयहै । प्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिदुःखको भीउपादेयताहुईचाहिये। यद्यपिदुःखकोकोईभीनहींचाहता । तथापि जोज्ञानकाविषयहोताहै वहीइच्छाकाभीविषयहोताहै । अर्थयहदुःखा भावकोपुरुषार्थरूपतासर्वहीवादीकहतेहैं । तिसदुःखाभावकेज्ञानका जितनाअर्थविषयहोताहै । उतनेहीअर्थकोइच्छाभीविषयकरतीहै । क्योंकिज्ञानइच्छाऔप्रयत्नइनतीनोंको समानविषयत्वकानियमहै । अर्थात्इनतीनोंकाएकहीविषयहोताहै ॥ शंका ॥ दुःखाभावकेज्ञान मेंप्रतियोगिरूपदुःखविशेषणरूपतासेनहींभानहोता । क्योंकितिसज्ञान कोनिर्विकल्पकरूपहोनेकर विशेषणदुःखऔविशेष्यदुःखाभावकेसंबंध काग्राहकपनानहींहै॥ समाधान ॥ "किंचित्इदं" यहनिर्विकल्पज्ञान इच्छाकेउत्पन्नकरनेकोसमर्थनहीं । क्योंकिविषयकीसौंदर्यताकायह ज्ञानप्रकाशकनहींहै । औरविषयकीसौंदर्यताकेज्ञानसेहीइच्छाउत्पन्न होतीहै।यहन्यायकेजाननेवालोंकीमर्यादाहै ।औरविषयकीसौंदर्यता काग्राहकजोज्ञानहै । वहनिर्विकल्पकहै । यहकथनभीसमीचीननहीं जिसकारणसेवहज्ञानविशेषणतथाविशेष्यकेसंबंधकाग्राहकहै । याते इच्छाकाजनकजोज्ञानहै । तिसकोसविकल्पकपनाहीयुक्तहै ॥शंका॥ दुःखाभावका ज्ञान सविकल्पकहो तथापि तिसको दुःख विषयताकैसे है ॥ समाधान ॥ दुःखाभावमें प्रतियोगी रूप दुःख विशेषणहै । और अभाव ज्ञानको विशिष्ट विषयक होनेकर दुःख रूप विशेषण

विषयता भी संभवती है ॥ तिस कारण से जितना इच्छा का विषयहैवहसर्वही उपादेयहै। ऐसे यदिमानेतोदुःखको उपादेयताकैसे नहोगी। किंतुअवश्यहोगी। यातेप्रथमपक्षअसंगतहै। औरइच्छा केविषयकाएकदेशउपादेयहै। यहद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता।क्योंकि यहलक्षणअव्याप्तिदोषवालाहोनेसेदुष्टहै। तिसीकोस्पष्टकरतेहैं। सुखविषयणीइच्छाकासुखएकदेशनहीं है ॥ क्योंकिसुखसेभिन्नऔर कोईविषयहैनहीं ॥ शंका ॥सुखमात्रपुरुषार्थनहीं है किंतुआत्मसंबंधि सुखउपादेयहै॥तिसकारणसेइच्छाभी आत्मीयसुखविषयणीहै।इसलिये सुखमेंइच्छाकेविषयकाएकदेशत्वरूपउपादेयत्वसंभवताहै॥समाधान॥ हेवादिन्यदिआत्मीयसुखकोउपादेयमानोगेतोआत्मउपाधिकही सुखमें पुरुषार्थरूपताहोगी।स्वभावसेसुखउपादेयनहींहोगा। यातेद्वितीयपक्ष भीनहींसंभवता ॥ औरइच्छाकाविषयजोविशेष्यमात्रवहउपादेयहै ॥ इसतृतीयपक्षकेमानेहुए दुःखमेंउपादेयत्वकीप्राप्तिनहींहोती। क्योंकि दुःखकोइच्छाकाविषयहुएभीविशेष्यरूपताकाअभावहै ॥सोयहआद्य द्वितीयपक्षमेंतृतीयपक्षहै यहभीनहींसंभवता ॥ क्योंकि (अहंस्वर्गी स्याम्) "मैंसुखी होजाऊं" यहइच्छा सुख विशेषणविशिष्टआत्म विषयणीहै ॥ तिसइच्छाकाविषयजो विशेष्यमात्रआत्माहै ॥ तिस मेंपूर्वपक्षीकोअनिष्टजोउपादेयतासोप्राप्तहोगी ॥ औरअनुमानमें बाधकीप्राप्तिभीहोगी। क्योंकिअनुपादेयत्वसाध्यकाअभावनिश्चय हुआहै। इसप्रकारद्वितीयपक्षको निषेधकरकेअवस्वकृतिसाध्यत्वका अभावहैजिसमेंवहअनुपादेयहै इसतृतीयपक्षकोनिराकरणकरतेहैं ॥ औरयहतृतीयपक्षभी नहींसंभवता ॥ क्योंकिस्वप्रयत्नकरकेसाध्यजो

दुःखऔतिसकेसाधनहैं तिनमेंभीअनुपादेयताहै। औरपूर्वउक्तलक्षण तिनमेंअनुगतहैनहीं।यातेतृतीयलक्षणअन्याप्तिदोषयुक्तहोनेसेदुष्टहै। औरस्वकृतिसाध्यत्वके अभावविशिष्टसुखदुःखाभावसेजोइतरत्वहैयही अनुपादेयत्वहै।यहचतुर्थपक्षहै ॥इसमें "सुखदुःखाभावेतरत्व" इतना विशेष्यमात्रहीअनुपादेयत्वकालक्षणकहें । तोसुखकेसाधनयागादि कोंमेंअतिव्याप्तिहोती।तिसकीनिवृत्तिअर्थविशेषणभागलक्षणमेंकहाहै वहयागादिकोंमेंनहीं यातेतिनमेंअतिव्याप्तिभीनहीं ॥ सोयहचतुर्थ पक्षभीअसंगतहै।क्योंकिविशेषणभागकीव्यर्थताहै ।औरसुखकेसाधन यागादिकोंमेंस्वप्रधानतासे उपादेयतानहीं।किंतुसुखकेसाधनहोनेकर सुखउपाधिकी उपादेयताहै । यातेविशेष्यमात्रलक्षणमानेहुएभी तिनमेंअतिव्याप्तिनहींहोती ॥ क्योंकिपरमपुरुषार्थत्वका अभावसुख केसाधनोंमेंभीस्वीकारहै । यातेविशेषणका ग्रहणव्यर्थ है । औरसुख दुःखाऽभावसेइतरत्वहीअनुपादेयत्वहै यहपंचमपक्षभीनहीं संभवता। क्योंकिसाध्यतथाहेतुकाएकत्वप्राप्तहोताहै ॥ तैसे मानलेंतोसंदिग्धा ऽसिद्धहेतुअनुमानमेंदोषहोगा ॥ अर्थयहजोसंदिग्धरूपताकरअसिद्ध होवहहेतुसंदिग्धाऽसिद्धकहाजाताहै । सोसंदिग्धाऽसिद्धहेतुवाला अनुमानदुष्टहोताहै ॥ औरइनसेभिन्नऔरकोईअनुपादेयत्वकालक्षण कथनकरनेकेयोग्यनहीं ॥ शंका ॥ कथनकरनेकीअसामर्थ्यआप क्योंकहतेहो । जिसकारणसेदुःखादि स्वरूपहीअनुपादेयत्वशब्दका अर्थहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्‌आत्मामेंदुःखऔतिसकेसाधनोंका तादात्म्यस्वीकारनहींहै ॥ यातेआत्मामेंअनुपादेयत्वरूपताकाअसं भवहै ॥ शंका ॥ यदिआपआत्माकोदुःखादिरूपतानहींमानोगे ॥

तोसर्वात्मताकाव्याघातहोगा ॥ समाधान ॥ हेवादिन्आत्माकी सर्वात्मताकाव्याघातनहींहै। क्योंकिसर्वकीअधिष्ठानताही सर्वात्मता शब्दकाअर्थहै। औरआत्मामेंसर्वाऽअधिष्ठानता सर्वअध्यस्तपदार्थों कोसत्तास्फूर्त्तिप्रदत्वरूपहै॥ कोईमिथ्याकार्यरूपता तिसको नहीं है॥ क्योंकिसत् पदार्थकामिथ्याकेसाथतादात्म्यनहींसंभवता। यदिमिथ्या दुःखादिकातादात्म्यमानोगे तोसत्यत्वकीहानीहोगी। अब सिद्धांती अपनेपूर्वपक्षकोसमाप्तकरताहै ॥ इसप्रकारपूर्वउक्तअनुमानमें अनुपा देयत्वसाध्यकेकथनकीही अशक्यताहोनेसे किसप्रकारतुमयह अनुपा देयत्वरूप अनिष्ट आत्मामेंसिद्धकरतेहो। (इतिसिद्धांतीकापूर्वपक्ष)

❀ अथपूर्वपक्षीकासमाधान।

अथउपादेयत्वकानिरूपण ❀

हेसिद्धांतिन्पूर्वउक्तआपकी आशंकानहींसंभवती ॥ क्योंकि अनुपादेयत्वजोहै ॥ वहस्वप्रतियोगिरूपउपादेयत्वकरनिरूपणकिया जाताहै ॥ तिसउपादेयत्वरूपप्रतियोगीसेबिनातिसकानिरूपणनहीं करसकते ॥ यातेअनुपादेयत्वकेजाननेअर्थप्रथमउपादेयत्वकानिरू पणकियाचाहिये। सोउपादेयत्व अन्यानुपसर्जनत्वरूपहीजाननेयोग्य है ॥ अर्थयहजोअन्यसर्वपदार्थोंमेंप्रधानहोवहउपादेयहै ॥ औरयदि सिद्धांतीऐसेकहेकि अन्यसर्वसेप्रधानताआत्मामेंहीवर्त्तमानहै॥यातेआ त्माकोहीउपादेयताहै।सोयहकथनभीनहीसंभवता॥क्योंकिवहअन्यानु पसर्जनत्वरूपउपादेयत्वसुखतथादुःखाऽभावमेंहीहै॥अन्यसर्वआत्मादि पदार्थोंकोतिनदोनोंकाउपसर्जनपनाअर्थात्शेषपनाहै॥ तिनमेंआत्मा तोसुखतथादुःखाभावकाअधिकरणरूपतामेंशेषहै ॥ औरसुखादिकोंके

जोसाधनवहकरणरूपतासेशेषहैं ॥ ऐसेऔरभीजानलेने॥ शंका ॥हे वादिन्सुखतथादुःखाभावरूपभीआत्माहीहै ॥ तोकैसेतिसकोतुमउप सर्जनअर्थात्शेषकहतेहो ॥ समाधान ॥ आत्माप्रथमसुखतथादुःखा भावसेभिन्नहै । प्रथमतिसमें

❋ अथआत्मामेंदुःखाभावरूपताकानिषेध ❋

दुःखाभावरूपताकानिषेधकरते हैं । आत्माकोभावरूपहोनेकर दुःखाभावरूपताका असंभवहै । औरयदिऐसेकहोकिआत्माकोदुःखा भावरूपतामाननेवालेवादीकेप्रतिभावरूपत्वहेतुस्वरूपाऽसिद्धहै ।सोयह कथनभीनहींसंभवता । क्योंकि "अहमस्मि" इसप्रकारकीप्रतीतिमें किसीकाविवादनहीं । औरयहप्रतीतिदुःखरूपप्रतियोगीकरनिरूपण करनेकेयोग्यभीनहीं । क्योंकिदुःखकेनप्रतीतिहुएभी(अहमस्मि)यह प्रतीतिसर्वकोउत्पन्नहोती है । तिसीसेदुःखरूपप्रतियोगीकरननिरूपण करनेयोग्यहोनेसेभावस्वरूपहीआत्माहै । दुःखाभावरूपनहीं ॥

❋ अथशून्यवादीकोअभिमतआत्मा केखंडनकाप्रकार ❋

शंका ॥ अव्यभिचारिस्वभावहीआत्माहोताहै । औरशून्यभी अव्यभिचारिस्वभावहै । इसकारणसेसर्वपदार्थोंकाजोवास्तवस्वरूप शून्यवहीआत्माहै । भावरूपआत्मानहीं । औरशून्यरूपताआत्माको होनेसेदुःखाभावरूपताकाभीसंभवहै ॥ समाधान ॥ वहतुम्हाराशून्य क्या?ज्ञेयरूपहैअथवाज्ञातारूपहै। प्रथमपक्षतोनहींसंभवता।क्योंकिज्ञेय पदार्थकोआत्मपनेकाअसंभवहै । विज्ञाताकोहीआत्मपनाहोताहै । यदिऐसेनमानें । तोघटादिकों मेंभीआत्मताहुईचाहिये । औरद्वितीय

पक्षभीनहींसंभवता। क्योंकिज्ञानकंयाश्रयकोज्ञाताकहतेहैं। शून्यको ज्ञानकाअनाश्रयहोनेसेज्ञातृत्वकाअसंभवहै। औरशून्यकोज्ञानकायना श्रयपनायग्युक्तनहीं है। क्योंकिशून्यसर्वाऽभावकानामहै। औरग्रभाव कोभावस्वरूपज्ञानकीग्रधिकरणताकाग्रसंभवहै। ऐसेकहींदेखानहीं जोग्रभावभीभावपदार्थकायाश्रयहो॥ शंका॥ यद्यपिग्रभावभावका याश्रयप्रमाणसेनहींसंभवता। तथापिभ्रमसेतिनकाधर्मधर्मिभावसंभ वताहै क्योंकिभ्रमकोकोईकार्यग्रशक्यनहीं॥ समाधान॥ हेशून्य वादिन्धर्मधर्मिभावकोआरोपितमानेहुए जिसकेसाथअन्वितरूपताकर यारोपितप्रतीतहोताहै। वहयारोपकाविषयग्रधिष्ठानप्रकृतग्रारोपमें अर्थातज्ञानतथाशून्यकेधर्मधर्मिभावमेंहै वानहीं। यंतिमपक्षकहोतो वहनहींसंभवता। क्योंकियधिष्ठानसेविनाकहींभीभ्रमनहींहोसकता। जिसकारणसेसर्वभ्रमोंमेंग्रधिष्ठानतथाग्रध्यस्तकायाकारभानहोताहै। औरग्रधिष्ठानहै। इसप्रथमपक्षमेंयहविचारकर्तव्यहै। क्या? शून्यसे भिन्नकोईग्रधिष्ठानहै। ग्रथवाशून्यहीग्रधिष्ठानहै। प्रथमपक्षतोनहीं संभवता। क्योंकियधिष्ठानसेभिन्नकोकल्पितहोनेकर शून्यमेंकल्पित त्वप्रसंगहोगा। औरशून्यहीग्रधिष्ठानहैयदियहद्वितीयपक्षकहो। तोशून्य करयन्वितहीसर्वघटादिपदार्थसर्वकोप्रतीतहुएचाहिये। जिसकारणसे जोयध्यस्तपदार्थहोताहै। तिसमेंग्रधिष्ठानकोयनुगतहोनेकरवह ग्रध्य स्ततिसकेसाथतादात्म्यरूपताकरप्रतीतहोताहै। औरआरोपितमेंशून्य कीयनुगतिहैनहीं। क्योंकियारोपितसतरूपसेहीप्रतीतहोताहै। अन्यथाशून्यंघटः "शून्यंपटः" ऐसीप्रतीतिहोनीचाहिये। किंवावहशून्य सर्वभ्रमोंकाग्रधिष्ठानहै। ग्रथवाकिसीएकभ्रमकाग्रधिष्ठानहै। प्रथम

पक्षमेंतिसशून्यकीप्रतीतिकहनेयोग्यहै । क्योंकिसामान्यरूपतासेज्ञात कोहीअधिष्ठानपनायुक्तहै । औरवहअधिष्ठानकाज्ञानस्वतःहीहोताहै। अथवापरसेहोताहै । यहविचारकर्तव्यहै । इनमेंअंत्यपक्षतोनहींसंभ वता। क्योंकिअधिष्ठानसेभिन्नअन्यसर्वपदार्थोंकीकल्पनासेप्रथमअसि द्धिहै । कल्पनासेप्रथमतिनकोसिद्धमानेहुएकल्पितपनेकीहानिहोगी औरयदिप्रथमपक्षकहो।तोशून्यताकीहानिहोगी। क्योंकिशून्यकोज्ञान स्वरूपताकाअभावहोनेसेस्वतःसिद्धिकाअभावहै ॥ शंका ॥ शून्यकी स्वप्रकाशताकेअर्थतिसकोहमज्ञानस्वरूपहीमानलेंगे । जिसकारणसे अन्यथाऽनुपपत्तिसर्वसेबलवालीहोतीहै । अर्थयहशून्यकोज्ञानस्वरूप तासेबिनास्वप्रकाशताकीअनुपपत्तिहै । यातेशून्यज्ञानस्वरूपहै ॥ समाधान ॥ यदिशून्यकोतुमज्ञानस्वरूपमानोगे । तोस्वप्रकाशज्ञान जोसर्वजगत्काअधिष्ठानहै तिसकाशून्ययहनामएकसंकेतमात्रहै । वहज्ञान वास्तवसे कोईशून्यरूपनहींहोगा। क्योंकिवहभावस्वरूप है । औरकिसीविशेषभ्रमकाशून्यअधिष्ठानहै । यहपूर्वजोद्वितीयपक्षकहा था । वहभीनहींसंभवता । क्योंकिसर्वभ्रमकीअधिष्ठानताका अभाव होनेसेतिसशून्यकोव्यभिचारिपनाहै ॥ इसीसेवहआत्मानहीं । किंतु भावस्वरूपहीआत्माहै ।इसप्रकार आत्माकोभावरूपहोनेसे दुःखाभाव रूपतानहींयहअर्थसिद्धहुआ ।इति ॥

ॐ अथआत्माकी सुखरूपताकानिषेध ॐ

इसप्रकारआत्मामें दुःखाभावरूपताकानिषेधकरके अबतिसमें सुखरूपताकाअभावनिरूपणकरतेहैं। यहांपरयहअनुमानजानना।

आत्मानसुखरूपः अकार्य्यत्वात् । अकाशवत् ॥

दोनोंकोसमानहींहै॥समाधान॥ हेसिद्धांतिन्आत्माऔरसुखकेभेदका ग्राहक"अहंसुखी"यहजोप्रत्यक्षहै॥ तिसकाविरोधहोनेकरश्रुतिअर्थकी अयोग्यताहोनेसेतिसकोऔपचारिकअभेदपरताहै।अन्यथा'अहंसुखम्' इसप्रकारकिसीकोप्रतीतहुआचाहिये।औऐसीप्रतीतिकिसीकोनहींहोती इसलियेआत्माऔसुखकाभेदहै।इति॥ अबआत्माकीअनुपादेयताके साधकअनुमानकोप्रगटकरतेहैं ॥ जिसकारणसेपूर्वउक्तयुक्तियोंकर आत्माकोसुखतथादुःखाभावसेभिन्नपनाहैतिसीकारणसेउपसर्जनरूप अनुपादेयहीआत्माहै । यातेयहअनुमाननिर्दोषसिद्धहुआ ॥(आत्मा अनुपादेयःसुखदुःखाभावेतरत्वात्घटादिवत्।व्यतिरेकेणसुखादिवत्) यहदृष्टांतजानना ॥ इति ॥ शंका ॥ आत्मामें"सुखदुखाभावेतरत्व" रूपहेतुकेहोतेभीअनुपादेयत्व रूपसाध्यतिसमेंनहो ॥ इसप्रकारविप क्षमानेहुएअर्थात्आत्मकोउपादेयमानेहुएकौनबाधकहै ॥ समा धान ॥ हेतुजिसपक्षमेंविद्यमानहोतिसमें साध्यकेसनहींहोगा किंतु अवश्यहोगा। यातेहेतुसाध्यकीसमव्याप्तिजहांहोतहांहेतुकेअभावहुए हीसाध्यकाअभावहोसकताहै।इसकारणसेहेतुकाअभावहीविपक्षमेंबाध कहै । इसीअर्थकोस्पष्टकरतेहैं ॥ सुखतथादुःखाभावसेभिन्नऔरकोई पदार्थपुरुषार्थरूपनहींजिसकारणसेआत्माभीमुमुक्षुपुरुषोंकोउपादेयहो तात्पर्ययह । किसुखतथादुःखाभावसेभिन्नकोईपदार्थ पुरुषार्थरूपहोता तोतिसमेंहेतुकाव्यभिचारहोनेकरउक्तहेतुसाध्यकानिश्चायकनहोता। तिसीकारणसे पूर्वउक्तहेतुवालेआत्मामें पूर्वकथनकियाहुआअनुपा देयत्वरूपसाध्यभीसिद्धनहींहोगा ।यातेआत्मामुमुक्षुपुरुषोंकोउपादेय होजायेगा सोयहप्रकारनहींसंभवता । क्योंकिसुखदुःखाभावसे अन्य

पदार्थकोपुरुषार्थरूपताका अभावहोनेसे "सुखदुःखाभावेतरत्व"हेतु व्यभिचारीनहींकिंतुस्वसाध्यकानिश्चायकहै॥ यातेसाध्यकेअभावहुए हेतुकाअभावहीविपक्षमाननेमेंबाधकहैअर्थात् आत्मामें "सुखदुःखा भावेतरत्व"हेतुकोमानकरजोवादीतिसमेंअनुपादेयत्वसाध्यनहींमानता तिसकोहेतुकाभीअभाव अवश्य माननाहोगा ॥ इति ॥ शंका ॥ इसप्रकारविपक्षमेंबाधकतर्कके विद्यमानहुएभी पुनःपूर्वउक्तअनुमानमें "आत्मेतरत्व"उपाधितोहै।औरवहउपाधिअनुपादेयत्वरूपसाध्यकेसाथ अव्यापकनहीं।क्योंकि उपाधिकाअभावजो "आत्मत्व"है। तिसको साध्याभावरूपउपादेयत्वकेसाथव्याप्तपनाहै।।यातेजहांअनुपादेयत्वहै। तहांआत्मेतरत्वहै" जैसेघटमेंहै।औरजहांसुखदुःखाभावेतरत्वहै। तहां आत्मेतरत्वनहीं।जैसेआत्मामेंहै।इसप्रकारसोपाधिकहोनेसे तुम्हाराहेतु दुष्टहैसत्हेतुनहीं ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् आत्मत्वहीपरमपुरु षार्थत्वकाबोधकनहींहै। क्योंकिलोकमेंआत्मापुरुषार्थरूपतासेउपादेय हैऐसेव्यवहारकाअभावहै । औरपक्षेतरत्वको उपाधिपनाभीनहीं संभवता ॥ यदितिसकोभीउपाधिरूपमानलें तोयनुमानमात्रकाही संसारसेउच्छेदहोजायेगा ॥ क्योंकिपक्षेतरत्वउपाधितोसर्वअनुमानमें भीवर्त्तमानहै ॥ यातेवहउपाधिनहीं ॥ शंका ॥ पक्षेतरत्वकोउपाधि रूपतानमानेहुए ।

* तेजोऽनुष्णः द्रव्यत्वात् रज्जुवत् ॥ *

इसअनुमानमेंतेजोभिन्नत्वकोउपाधिरूपताकैसेहोगी॥ क्योंकि यहभीपक्षेतरत्वरूपउपाधिहै ॥ समाधान ॥ इसअनुमानमेंतेजकी अनुष्णताप्रत्यक्षप्रमाणकरबाधितहै ॥ याते "तेजोभिन्नत्व" उपाधि

बाधोन्नीतहै अर्थयह बाधकर (उद्भावित) कहिये प्रगटहुआहै । औरप्रकरणमेंतो "आत्मेतरत्व" उपाधिबाधकरउद्भावितहैनहीं।क्योंकि लोकमेंयदि आत्मापुरुषार्थरूपतासे उपादेयहोतातो "पत्नेतरत्व" उपाधिबाधकरउन्नीतहोता। सोलोकमेंतिस प्रकारके व्यवहारकाअभाव है ॥ याते "आत्मेतरत्व" कोउपाधिरूपतानहींसंभवती ॥

शंका ॥ हेवादिन्अन्यरीतिकेअभावसेलोकमेंआत्माहीउपादेयकहने योग्यहै । क्योंकिआत्मासेभिन्नसर्वपदार्थअपुरुषार्थरूपहैं । और सुखादिकभीपुरुषार्थरूपनहीं। यदितिनकोभीपुरुषार्थरूपमानोगे । तो शत्रुकेसुखादिकोंमेंभीपुरुषार्थरूपताहुईचाहिये । औरयदिऐसेकहोकि आत्मसंबंधिसुखादिकहीउपादेयहैं अन्यउपादेयनहीं सोयहकथन भी समीचीननहीं । क्योंकिआत्मीयत्व अर्थात्आत्मसंबंधित्वविशेषण विशिष्टसुखादिकोंकोपुरुषार्थरूपमानेहुए आत्माहीपुरुषार्थरूपताकरव्य वहारकरनेयोग्यहै सुखादिकनहीं ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् "सुखं मेस्यात् दुःखंमाभूत्"इसप्रतीतिसे आत्मसंबंधिसुखतथादुःखाभावकोही कामनाकाविषयहोनेसेयहदोनोंहीपुरुषार्थरूपहैं । आत्मापुरुषार्थरूप नहीं ।तात्पर्ययहहै। निरुपाधिकइच्छाकाविषयही पुरुषार्थरूपतासेउपा देयहोताहै।औरवहीपुरुषार्थरूपकहनेयोग्यहै।औरसुखतथादुःखाभावही कामनाकाविषयहोनेसेपुरुषार्थव्यवहारकेयोग्यहैं।औरयदियहकहो।कि आत्मसंबंधिसुखतथादुःखाभावहीपुरुषार्थरूपहैं केवलवहदोनोंपुरुषार्थ रूपनहीं । सोयहकथनभीअसंगतहै । क्योंकिआत्माकोसुखतथा दुःखाभावकाअधिकरणहोनेसेकारकपनाहै । औरकारककोगौणहोने करवास्तवसेअनुपादेयताहै । यातेआत्मापुरुषार्थरूपनहीं ॥ शंका ॥

"सुखंमेस्यात्" इसप्रतीतिसेआत्मीयसुखविषयणीकामनाप्रतीतहोती है। तहांसुखकीन्याईआत्माभीतिसकामनाकाविषयहै । यातेतिस आत्मामेंसुखउपाधिकीइच्छातुमकैसेकहतेहो ॥ समाधान ॥"आत्मा मेस्यात्" इसप्रकारकीकामनाकिसीकोनहींहोती ॥ औरकामनाका अविषयपुरुषार्थरूपनहींहोता ॥ इसलियेसुखअनुपहितकेवलआत्मा मेंकामनाकाअदर्शनहै ॥ औरसुखउपहितआत्मामेंकामनाकादर्शनहै यातेसुखादिकहीकामनाकेविषयहैं।आत्माकामनाकाविषयनहीं।तिसीसे आत्मापुरुषार्थरूपताकरउपादेयनहीं ॥ शंका ॥

❀आत्मलाभान्नपरंविद्यते❀

अ० ॥ आत्माकेलाभसेउत्कृष्टऔरकोईलाभनहींहै ॥ और **आत्मकामः** छा० उ०अ०८ब्रा० ४॥६ ॥अ०॥आत्माकीकामनावाला पुरुषआप्तकामादिहोताहै॥इत्यादिश्रुतिकेबलसेआत्माकोकाम्यमानता निश्चयहोनेसेपुरुषार्थरूपताहै।।समाधान।।यद्यपिपूर्वउक्तश्रुतिहमकोभी स्वीकारहै ॥ तथापिवहश्रुतिस्वनिष्ठअविरोधकीसिद्धिकेअर्थक्या?लोक व्यवहारकीअपेक्षाकरतीहैवानहीं॥ यदिप्रथमपक्षकहोतोलोकमेंआत्म विषयणीकामनाकाअभावहै ॥ किसप्रकारवहश्रुतिआत्माकोकाम्य मानतासे पुरुषार्थरूपताको बोधन करेगी ॥ क्योंकियहआत्माकोई अलौकिक पुरुषार्थरूप तोहैनहीं ॥ यातेश्रुतिभी लौकिकव्यवहार को न उल्लंघन करके ही पुरुषार्थ रूपता को प्रतिपादन करेगी ॥ तैसेमानेहुए । "मंचाःक्रोशंति" अ० । मंचपुकारतेहैं । जैसेयह वाक्यलोकविरोधसेलक्षणावृत्तिकर अन्यअर्थकाप्रतिपादकहै । तैसे

लोकव्यवहारकेविरोधहुए पूर्वउक्तश्रुतिवाक्यभी औपचारिकहै। अर्थात्सुखउपहितआत्मामेंही कामनाकीविषयताकाप्रतिपादकहै॥ केवलआत्मामेंनहीं॥ शंका॥ अपनेअर्थकेबोधनकरनेमेंश्रुतिलोकव्यवहारकीक्यों अपेक्षाकरतीहै। यदिकहोकि विरोधपरिहारकेअर्थ अपेक्षाकरतीहै। तोयहकथननहींसंभवता। क्योंकिलोकव्यवहारका बाधकरकेभी विरोधकापरिहारसंभवहोसकताहै। औरश्रुतिलोकव्यवहारकरबाधकेयोग्यनहीं। क्योंकिवहस्वार्थमेंतात्पर्यवालीहै। याते श्रुतिकोलोकव्यवहारकीकिंचितमात्रभीअपेक्षानहीं॥ समाधान॥यदि लोकव्यवहारकीश्रुतिअपेक्षानहींकरती यहद्वितीयपक्षस्वीकारकरोतो अलौकिकहोनेसे स्वर्गकोभी सुखरूपतानहीं सिद्धहोगी। क्योंकि लोकव्यवहारकीअपेक्षानकरेहुए (ज्योतिष्टोमेनस्वर्गकामोयजेत) इसवाक्यमेंकामनाका विषयभूतस्वर्गप्रथम पुरुषार्थरूपप्रतीतहोताहै। यहवास्तवमर्य्यादाहै। तहांकेवलवेदकरप्रतिपादितहोनेकरस्वर्गकोपुरुपार्थरूपमानेहुए तिसको सुखरूपतानहींसिद्धहोगी। क्योंकिसुखमें स्वर्गपदकावेदने संकेतनहींकिया। औरयदिलौकिकपुरुषार्थव्यवहार कोवेदअनुसरणकरताहै॥ तोलोकमेंसुखतथादुःखाभावकोहीपुरुषार्थपनाहै। तिनमेंभीस्वर्गकोदुःखाभावरूपतामाननेमेंगौरवहै। क्योंकि प्रतियोगिआदिकोंकी कल्पनाकरनीलगतीहै। इसलियेभावरूपसुखरूपताहीस्वर्गमेंयुक्तहै॥ औरस्वार्थमेंतात्पर्य्यवालीहोनेसे श्रुतिलोकव्यवहारकाबाधकहै॥ यहकथनभीनहींसंभवता॥ क्योंकिस मुच्चयकरलोकव्यवहार तथाश्रुतिकोप्रमाणताके सिद्धहुएदोनोंमें

एककेबाधकीकल्पनाअयुक्तहै ॥ शंका ॥ (ज्योतिष्टोमेनस्वर्गकामो यजेत)इसस्वर्गकामश्रुतिमेंश्रवणकियेहुएस्वर्गकोलोकव्यवहारकीअनु सारतासेसुखरूपताहै ॥ यहतुम्हाराकथनअयुक्तहै ॥ क्योंकि ॥

यन्नदुःखेनसंभिन्नं नचग्रस्तमनंतरम् ।
अभिलाषोपनीतंच तत्सुखंस्वःपदास्पदम् ॥ १ ॥

अ० ॥ जोदुःखकरमिश्रतनहींहै ।औरअभावरूपनहींतथाअंत रायसेरहितजोहै । औरअभिलाषाकाजोविषयहैसोसुख स्वर्गशब्दका अर्थहै ॥ इत्यादिअर्थवाद स्वर्गकीसुखरूपताकाग्राहक विद्यमानहै। तिसीकारणसेआत्मकामादिक श्रुतिकेवलसेकामनाका विषयजोआ त्माहै वहपुरुषार्थरूपताकर उपादेयहींहै ॥ समाधान ॥ यहआत्मा कीपुरुषार्थरूपतालोकसे विलक्षणभूतक्याहै । जिससेइसलोकके सुखतथातिनकेसाधन वनितादिक औरपरलोकमें होनेवालेस्वर्गादि सुखतथातिनकेसाधनयागादिक इनसर्वकोत्यागकर जन्मसेलेकरब्रह्म चर्य्यादिरूपसकलदुःखोंके समूहसेअपनेआपको यहपुरुषक्लेशयुक्त करताहै।यद्यपिपरमपुरुषार्थकीकामनासेइनसर्वक्लेशोंकासहनसंभवताहै तथापियहअलौकिकपुरुषार्थरूपआत्माहै इसप्रकारकेकथनमात्रसेही यहपुरुषअपनेआपकोकृतार्थमानताहै। कोईलोकसेअथवास्वअनुभव सेआत्माकोपुरुषार्थरूपताकीसिद्धिनहीं । किंतुकेवलवेदमात्रसेही सिद्धिहै । तैसेमानेहुएप्रसिद्धविषयसुखकोत्यागकर अप्रसिद्धपुरुषार्थ काउद्देश्यकरकेब्रह्मचर्य्यादिक्लेशकासहनकरनाबुद्धिमानोंको युक्तनहीं यहभावहै ॥ इसीसेरागीपुरुषोंने यहकहाहै ॥

❀वरंवृंदावनेशून्येशृंगालत्वंसइच्छति ।
नतुनिर्विषयंमोक्षंमंतुमर्हतिगौतम॥१॥❀

अ० ॥ हेगौतमवहरागीपुरुषयहइच्छाकरताहै ॥ किशून्यवृंदावनमेंशृंगालअर्थात्गीदड़होनाश्रेष्टहै ॥ परन्तुवनितादिविषयोंसेहीन मोक्षमाननेयोग्यनहीं ॥१॥किंवा॥ यदियहआत्माहीपुरुषार्थरूपहोतो

❀ अर्केचेन्मधुविंदेताकिमर्थंपर्वतंव्रजेत् ।
इष्टस्यार्थस्यसंप्राप्तौकोविद्वान्यत्नमाचरेत्१॥❀

अ० ॥ यदिअपनेगृहकेकोनेमेंहीमधुप्राप्तहोतोयहपुरुषपर्वतपर किसलियेगमनकरे किंतुनहींकरता ॥ तैसेयत्नसेविनाहीवांछितअर्थ केप्राप्तहुएकौनविद्वान्यत्नकरे किंतुनहींकरता ॥१॥ इसन्यायसेप्रयत्न विनाहीप्राप्तजोअपनाआत्माहै तिसकोत्यागकरविषयजन्यसुखकेलोभ सेमनुष्य किसलिये प्रयागादितीर्थों में प्राणों का त्याग करते हैं याते प्रयागादितीर्थोंमें मरनेके अर्थजोतिनकी प्रवृत्तिहै ॥ वहआत्माकीअपुरुषार्थरूपताकोबोधनकरतीहै ॥ इसकारणसेआत्मा उपादेयनहीं ॥ शंका ॥ तिनकीमरणमेंप्रवृत्तिमात्रप्रमाणरूपनहींहो सकती ॥ क्योंकिप्रमाणमूलकप्रवृत्तिकोहीप्रमाणरूपताहै अन्यथा अतिप्रसंगहोगा ॥ अर्थात्प्रवृत्तिमात्रकोप्रमाणतामानेहुए जलार्थी पुरुषकीमरुस्थलमेंजोभ्रमसेप्रवृत्तिहोतीहै।तिसकोभीप्रमाणताहुईचाहिये औरप्रयागादितीर्थोंमेंजाकरप्राणत्यागनेमेंकोईप्रमाणभीनहींहै । क्योंकिआत्महननकानिषेधकरनेवालेशास्त्रकाविरोधहै ॥ समाधान ॥ प्रयागादिकोंमेंप्राणत्यागकरनेवालेपुरुषभ्रांतनहीं हैं । क्योंकिशास्त्र नेहीप्रयागादिकों मेंमरणकाअनुमोदनकियाहै ॥

नलोकवचनात् तातनवेद वचनादपि ।
मतिरुत्क्रमणीयाते प्रयागमरणंप्रति ॥ १ ॥

अ० ।।हेप्यारेलोकोंकेकथनसेतथावेदकेवचनसेभीतुसकोप्रयाग मेंमरणेकीबुद्धित्यागकरनेयोग्यनहीं । किंतुअवश्यप्रयागमेंप्राणोंका त्यागकरना ॥ इति ॥ केवलशास्त्रहीप्रयागमेंमरणकाअनुमोदननहीं करता किंतुलोकभीइसकाअनुमोदनकरतेहैं । औरआत्माकेहननका निषेधकरनेवालेशास्त्रकाभीविरोधनहीं।क्योंकितिसआत्महननकेनिषे धकशास्त्रकोउत्सर्गताअर्थातगौणताहै । औरप्रयागादिकों मेंमरणको कथनकरनेवालाशास्त्रअपवादरूपहै । औरविशेषशास्त्रसेसामान्य शास्त्रकाबाधहोजाताहै । यातेकिंचित्भीविरोधनहीं। तिसीसेआत्मा पुरुषार्थरूपनहीं । किंतुविषयजन्यसुखहीपुरुषार्थरूपहै । यहसिद्ध हुआ ॥ इति ॥

❋ अथदुःखाभावकीपुरुषार्थ रूपताकानिरूपण। ❋

औरदुःखाभावभीलोकप्रवृत्तिसेआत्माकीअपेक्षाकरपुरुषार्थरूप है । अबइसीकोस्पष्टकरतेहैं । कुष्टादिरोगयुक्तमनुष्यदुःखाभावका उद्देश्यकरकेप्राणत्यागकरतेहैं । यहवार्त्तासर्वलोकमेंप्रसिद्धहै । याते दुःखाभावभीसुखकीन्याईपुरुषार्थरूपहै । आत्मापुरुषार्थरूपनहीं ॥ शंका ॥ हेवादिन्आत्माको अपुरुषार्थरूपहोनेसेतोक्या? अनात्माही पुरुषार्थरूपहै॥ समाधान ॥ अनात्माहीपुरुषार्थरूपहोइसमेंक्यासंशय है ॥ शंका ॥ यदिअनात्माकोहीपुरुषार्थरूपमानोगे। तोअनात्मपनें कीतुल्यतासेदुःखादिकभीपुरुषार्थरूपहुएचाहिये ॥ समाधान ॥ हे सिद्धांतिन् । सुखतथादुःखाभावऔरइनकेसाधनपुत्रस्त्रीगृहक्षेत्रपशु

सुवर्णादिकजोहैं । तिनकोउपादेयत्वअनिंदितहै । औरदुःखादिक निंदितहोनेसेउपादेयनहीं हैं ॥ शंका ॥ इसलोकतथापरलोककेसर्व सुखऔतिनकेसाधनोंकीउपादेयताकोजोअनिंदितपनाहै । वहअनिं दितपनाक्या?पामरोंकीदृष्टिसेहै। अथवापरीक्षकोंकीदृष्टिसेहै । प्रथम पक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिपामरोंकीदृष्टिसेअनिंदितपनाकिसीअर्थ कासाधकनहीं । औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता । क्योंकिइसलोक तथापरलोककेसुखऔतिनकेसाधनोंकोत्यागकरपरीक्षकपुरुषआत्ममात्र काउद्देश्यकरकेश्रवणादिकों में प्रवृत्तहोतेहैं । इसकारणसेतिनकीदृष्टि करअनिंदितपनेकीअयोग्यताहै ॥ समाधान ॥श्रवणादिकोंमेंप्रवृत्ति वालेपुरुषपरीक्षककनहींकिंतुवहभ्रांतहैं। औरयदितुमऐसेकहो।कितिन कीप्रवृत्तिभीश्रुतिमूलकहै भ्रममूलकनहीं । यातेवहपरीक्षकहैं। तिन कोभ्रांतियुक्ततुमकैसेकहतेहो तोहमभीयहकथनकरसकतेहैं । किपर लोककेसुखअर्थप्रवृत्तिभीश्रुतिमूलकहीहै । भ्रममूलकनहींयातेनिंदित नहीं । यद्यपिऐसेमानेहुएआत्मातथासुखादिइनदोनोंकोहीपुरुषार्थ रूपताकहनेयोग्यहै । तथापि ॥

* बहुनामनुग्रहोन्यायः ॥ *

अ० ॥ बहुतोंकाअनुग्रहयुक्तहोताहै । इसन्यायसेपारलौकिक सुखादिकोंकेअर्थसाधनअनुष्ठानकरनेवालेबहुतहैं । तिनसेविरोधहुए दोवातीनपुरुषजो श्रवणादिसाधनोंकेअनुष्ठाताहैं। तिनकोभ्रांतपना युक्तहै।औरतिनकीप्रवृत्तिकामूलभूतजोश्रुतिहैतिसकोअन्यअर्थकीबोध कताहै । अर्थात्दुःखाभावका उद्देश्यकरकेश्रवणादिकों मेंप्रवृत्तिको

वहश्रुतिबोधनकरतीहै । यातेतिसकास्वार्थमेंतात्पर्यनहीं ।इसप्रकार।

आत्माअनुपादेयःसुखदुःखाभावेतरत्वातदुःखादिवत।

इसअनुमानमें "पक्षेतरत्व" कोउपाधिपनेकाअभावऔरतिसको बाधकरउद्भावितत्वकाअभावइननेग्रंथसमुदायसेस्थापनकिया।।शंका।

आत्मापुरुषार्थःसुखरूपत्वात्। विषयानंदवत्॥

अ० ॥ आत्मापुरुषार्थरूपहै ॥ सुखस्वरूप होनेसे जो जो सुखरूपहै सोसोपुरुषार्थरूप है । जैसे विषयानंदहै । इस प्रतिपक्षाऽनुमान के विद्यमानहुए पूर्वपक्षीका अनुमान सत्प्रति पक्षहोनेसेदुष्टहै । औरआत्माकीसुखरूपता श्रुतिमेंभीप्रसिद्ध है । क्योंकि (विज्ञानमानंदंब्रह्म) इसश्रुतिमेंब्रह्मस्वरूप आत्माको आनंदस्वरूपकहाहै । यातेआत्माहीपुरुषार्थरूपहै ॥ समाधान ॥ हे सिद्धांतिन्‌आत्माकीआनंदरूपताकोश्रुतिकथनकरो। परन्तुकथनमात्र सेआत्माकीपुरुषार्थरूपता सिद्धनहींहोसकती क्योंकिपूर्वउक्तयुक्तिसें सुखरूपतानहींसंभवती ॥ शंका ॥ सुखरूपताकेहुए फिरआत्माको पुरुषार्थरूपताक्यों नहींसंभवती ॥ समाधान ॥ आत्माकोसुखरूप मानेहुएक्या?वहआत्माहीस्वतंत्रपुरुषार्थरूपहै।अथवासुखरूपआत्मामें समवायसंबंधसेरहनेवालाकोईअन्यसुखवहपुरुषार्थरूपहै । इनमेंप्रथम पक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिसुखमात्रहीपुरुषार्थनहीं किंतुस्वसंबंधि रूपतासे तिससुखकोपुरुषार्थपनाहै । अन्यथाशत्रुकेसुखकोभीपुरु षार्थरूपताप्राप्तहुईचाहिये। औरअभेदमेंस्वसंबंधिपनाभीनहींसंभवता। तिसकारणसेसुखरूपआत्मास्वतंत्रपुरुषार्थरूपनहीं । यातेप्रतिपक्षाऽनु मानसाधुनहीं । औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता । जिसकारणसेसुख

हीसुखका पुरुषार्थनहीं होसकता । क्योंकि सुखरूपआत्माकोस्व रूपसुखकरहीतृप्ति है । तिसकोऔरसुखविषयककामनाकी अयोग्यता है । यातेसुखरूपआत्माकाऔरकोईसुखपुरुषार्थनहींसंभवता ॥शंका॥ आत्माअनुपादेयहै यहअर्थतुमनेबहुतयुक्तियोंसेसिद्धकिया । और विषयानंदभीबहुतदुःखोंकरमिश्रतहोनेसेअनुपादेयही है। तैसेमानेहुए सुखकाउद्देश्यकरके यागादिसाधनोंमेंकोईभी पुरुषप्रवृत्तनहींहोगा ॥ समाधान ॥ यहआपकाकथनसत्यहै जोसांसारिकसुखदुःखसेमिला हुआहै । तथापिपुर्वउक्तयुक्तिसेआत्मातोप्रथमअनुपादेयहीहै। याते अन्यगतिकेअभावसेसुखमेंजिसप्रकारदुःखकासंबंधनहोतिसप्रकारपुरुषों कोयत्नकरनायोग्यहै। औरदुःखकेसंबंधकाभयहोनेकरसुखकात्यागकर नायोग्यनहीं । जैसेकोईकहेकि "भिक्षुकोंकिभयसेहमस्थालीनहीं अधिश्रयणकरते"अर्थात्अन्नहीनहींपकाते।सोयहकथनयुक्तनहीं।क्यों किअन्नकापाकनहोनेसेमरणप्रसंगहोगा । तैसेहीजबदुःखआजायतो वहपरिहार करनेयोग्यहै तिसकेभयसेसुखकात्यागकरनाउचितनहीं । किंतुसुख उपादेयहीहै ॥ शंका ॥

❀ आत्मावाऽरेद्रष्टव्यःश्रोतव्योमंतव्यःनिदि ध्यासितव्यः ।बृ० उ० अ० (६)ब्रा० ५ कं०॥६ ❀

इसवाक्यमेंप्रथमग्रहणकियाजोआत्मदर्शनहै। तिसकाअनुवाद करकेश्रवणादिसाधनविधानकियेहैं। तिसवाक्यमेंआत्मज्ञानकोस्वतः फल रूपता तो प्रतीत नहीं होती ॥ क्योंकि वह पुरुषार्थरूप नहीं औरमुमुक्षुकोतिसमेंअधिकारीहोनेसेमोक्षहीतिसकाफलहै।यहकथनभी नहींसंभवता॥क्योंकिआत्माकेस्वरूपसेभिन्नमोक्षकाअभावहै।औरआ

त्मासेभिन्नमोक्षकोजन्यमानेहुएअनित्यपनेकीभीप्राप्तिहोगी।इसप्रकार श्रवणविधिकीअन्यथाऽनुपपत्तिसे आत्माहीपुरुषार्थरूपहै दुःखाभावादिकपुरुषार्थरूपनहीं॥ समाधान॥ आत्मासेभिन्नहीपुरुषार्थश्रवणादिसाधनोंकेअनुष्ठानकाफलहै।आत्मातिनसाधनोंकाफलनहीं।क्योंकितिसकोअजन्यहोनेसेअनित्यपनानहींहै।औरतिसकीअभावरूपताभीस्वीकारनहीं है।यातेआत्मासेभिन्न आत्यंतिकदुःखकीनिवृत्तिहीमोक्षहै।तिसकेअर्थहीश्रवणादिविधिहै। इससेश्रवणादिविधिआत्माकोपुरुषार्थरूपमाननेसेबिनाअन्यथाही उपपन्नहै।इसप्रकारविषयानंदऔदुःखाभावयहदोनोहीपरमपुरुषार्थरूपतासेउपादेयहैं ॥ आत्माउपादेयनहीं। यहअर्थसिद्धहुआ ॥ इति ॥ २५ ॥ पूर्वपक्षकेसंग्रहकाश्लोक ❋

दुःखाभावोनायमात्मा सुखंनापिसइष्यते।
मुमुक्षुभिरयंतस्मादुपादेयः कथंभवेत्॥ १॥

दो० ॥ दुखाभावनहिआतमासुखपुन यहनहिहोय।
तातेमुमुक्षुजननकरिउपादेय किमहोय॥ १॥

❋ इतिपूर्वपक्ष ॥ ❋ अथसिद्धांत ❋

❋ पूर्वपक्षकेअनुवादपूर्वक आत्माकीपुरुषार्थरूपताका मंडन ❋

यहजोपूर्वपक्षीनेकहाथा। किआत्माअनुपादेयहै॥ सुखतथा दुःखाभावसेअन्यहोनेसे। दुःखादिकोंकीन्याई। तिसमेंअन्यपदार्थोंमें जोअनुपसर्जनअर्थात्प्रधानहै। सोउपादेयहै। औरतिससेभिन्नको अनुपादेयताहै। औरआत्माभीसुखादिकोंका शेषहोनेसेउपसर्जनहै। यातेअनुपादेयहै । इसकथनको दूषितकरनेकेलियेसिद्धांतीइसमें

अनेकहेतुयोंको संग्रहकरताहै ॥

मू०। यत्रात्मासर्ववस्तूनांयदर्थंसकलंजगत्।
आनंदाब्धिःस्वतंत्रोसावनादेयःकथंवद ॥२६॥

दो० ॥ सकलवस्तुकोआतमा जाहिलियेजगहोय ।
आनदसिन्धुसुतंत्रसो ताहि त्यागकतहोय ॥ २७ ॥

टी०॥ हेवादिन्वहआत्माअनुपादेयहै यहतुमनेकैसेकथनकिया सोतुमकहो ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन्इसअर्थमें कौनसीअनुपपत्ति है जिसकारणसेपूर्वउक्तअनुमानसे यहअर्थसिद्धहैअर्थात् आत्माअनुपादेयहै ॥समाधान॥ हेवादिन्आत्माकोअनुपादेयत्वनहींसंभवता। क्योंकियहआत्मा "स्वतंत्रहै" अर्थात् अन्यसर्वपदार्थोंमेंप्रधानहै ॥ तैसेमानेहुएपूर्वउक्तअनुमानमेंबाधप्राप्तहुआ । यहभावहै ॥ शंका ॥ आत्माकोसर्वसेप्रधानआपकैसेकहतेहो ॥ जिसकारणसेसर्वआत्मादि पदार्थसुखतथा दुःखाभावकेशेषहैं ॥ समाधान ॥ हेवादिन्जिसके अर्थसकलजगतहै सोआत्माहीप्रधानहै ॥ तात्पर्ययह । किजबसर्व हीजगत्आत्माकेअर्थहुआ आत्माकाशेषहैतोजगत्काएकअंशरूपजो सुखतथादुःखाभावहै । तिनकोआत्माका शेषहोनेमेंक्याहीकथन करनाहै । यहअर्थअभियुक्तपुरुषोंनेभीकहाहै ॥

(सुखंचपुरुषार्थत्वात्)अ०। सुखतथादुःखाभावआत्माकेअर्थ होनेसेआत्माकाशेषहैं ॥ इति ॥ औरआत्मासेभिन्नसकलपदार्थोंको 'परार्थ्यत्व" अर्थात्आत्माकाशेषपनाहै । इसप्रकारवैशेषकादिकभी कहतेहैं ॥ तिसकारणसेसर्वजगत्आत्माकेअर्थहै ॥ किंवा"सुखदुःखा भावेतरत्व" हेतुभीस्वरूपाऽसिद्धहै॥क्योंकियहआत्मा (आनंदाब्धिः)

निरतिशयसुखकासमुद्रहै ॥ अर्थातनिरतिशयसुखस्वरूपहै ॥ अबतिस आत्माकीदुःखाभावरूपताकोकथनकरतेहैं ॥ औरजो घटादिकसर्व पदार्थोंका (आत्मा) स्वरूपहै ॥ तिससेभिन्नकरकेघटादिकोंकोकोईभी निरूपणनहींकरसकता ॥ इसीसेवहअसतहैं ॥ तिससेभिन्नअसत्का जोअभाववहसत्रूपहीहै ॥ जैसेकल्पितसर्पकाअभावसत्रज्जुरूपहै ॥ औरअभावकेअभावको भावरूपताहीस्वीकारहै ॥ औरभावरूपसव पदार्थहीआत्माहै । इसप्रकारकल्पितदुःखकाअभावआत्मारूपहोनेसे आत्माहीदुःखाभावरूपहै ॥ यातेकिसप्रकारतुम्हाराअनुमानस्वरूपा सिद्धनहीं किंतुस्वरूपाऽसिद्धहै ॥ २६ ॥ अबकारिकाकेप्रथमपादका अर्थउपपादनकरतेहैं ॥

मू—यदन्यत्वस्तुतत्सर्वंयद्वेदेनरशृंगवत् ।
सत्तासर्वपदार्थानामनादेयःकथंवद ॥२७॥

सवैयाछंद—तंतु भिन्न कीये जिम पटको रूपनकिंचित होवत भान ।
मृदजन मृदसे होत किनारे तुच्छ रूपहोवत हियजान ।
तिम यहविश्व आत्मते न्यारो वंध्यासूनुतुल्य पहचान ।
सकलपदारथकी जो सत्ताअनादेयसोकहविधगान॥२८॥

टी० ॥जिसआत्मासेभिन्नरूपताकरवादियोंनेजोघटादिपदार्थस्वी कारकियेहैं।वहसर्वहीजिसआत्मासेभिन्नकियेहुएनरशृंगकेसमानअसत् होजातेहैं ॥ इसीसेसर्वघटादिपदार्थोंकाआत्माहीवास्तवस्वरूपहै । औरआत्माकोहीसर्वपदार्थोंकास्वस्वरूपमानेहुए अपनेस्वरूपविपयक सर्वकोही प्रेमहोताहै।यातेवहआत्माहीपुरुषार्थरूपतासेउपादेयहै। वह अनुपादेयतुमकिसप्रकारकहतेहो ॥२७॥ अबकारिकामेंकथनकीयेहुए

"स्वतंत्र" पदकाव्याख्यानकरतेहैं ॥

मू०—यद्वशेप्राणिनःसर्वेब्रह्मादयःकृमयश्चये ।
ईशानःसर्वभूतानामनादेयःकथंभवेत् ॥२८॥
यच्चक्षुःसर्वभूतानांमनसोयन्मनोविदुः ।
यज्ज्योतिर्ज्योतिषांदेवोनोपादेयःकथंविभुः॥२९

स्वै—ब्रह्मातेकृमिलों जग जेतो जांके वशमें वरतेनीत ।
सर्वविश्वकोईशयहैजोताकोत्यागनकौनेरीत ॥
सर्वभूतकोचक्षुजोहैमनकोमनश्रुतिभाषेगीत ॥
ज्योतिनकाज्योतीहैजोऊअनादेयसोकिसविधकीत ॥२६॥

टी० ॥ शंका ॥ जोसत्तास्फूर्ति देनेवालाहो वह अधिष्ठान होता है ॥ अन्यनहीं । और ईश्वरही सर्वकोसत्तास्फूर्त्ति देताहै । याते वही अधिष्ठानहै आत्मा अधिष्ठान नहीं । इस से आत्मा घटादिपदार्थोंकोकैसेसत्तास्फूर्ति देनेवालाहोगा ॥ समाधान ॥ हेवादिन्आत्माहीअज्ञानके वशसेईश्वररूपताकोप्राप्तहोताहै । इसी अभिप्रायसेयहकहाहै । ब्रह्मासेलेकरकृमिपर्य्यन्तसर्वप्राणीजिसके आधीनवर्त्ततेहैं । औरसर्वभूतोंकाजोनियंताहै वहआत्माकैसेअनुपादे यहोसकताहै किंतुनहींहोसकता ॥ २८ ॥ अबसत्तास्फूर्तिप्रदत्वरूप अधिष्ठानताकेस्फुटकरनेकेलिये तिसआत्माकी प्रकाशकरूपताको कहतेहैं । औरजोआत्मासकलभूतोंका नेत्रअर्थात्प्रकाशकहै । और मनकाभीजोमनअर्थात्साक्षिरूपहै ऐसेजिसकोब्रह्मवेत्ताजानतेहैं । औरसूर्य्यादिकज्योतियोंकाभी ज्योतिअर्थात्प्रकाशकहै । वहस्वप्रका शव्यापकआत्माकैसे उपादेयनहींकिंतुवही उपादेयहै (२९) अब

कारिकामेंजोआनंदाब्धिपदहै तिसकीव्याख्याकरतेहैं ।

मू०॥ मोदप्रमोदपक्षाभ्या मानंदात्मातमोगतः।
जीवयत्यखिलाँल्लोकान्नोपादेयःस्वयंकुतः३०
यस्यानंदसमुद्रस्य लेशमात्रंजगत्गतम्।
प्रसृतंब्रह्मलोकादौ सुखाब्धिकःपरित्यजेत्॥३१।

स्वै०॥ तमउपाधियुतहोकर आत्मप्रियुनमोदप्रमोदहहोय ।
अखिललोकजीवावनकर्त्ता ताकोत्यागकहोकिमहोय ॥
जासुखसागरकीइकबिंदू पसरीतीनलोकमेंजोय ।
ब्रह्मलोकादिमेंपुनपसरी असमुखसागरतजेनकोय ॥२०॥

टी० ॥ आनंदस्वरूपआत्माही अज्ञानउपहितहुआप्रियऔरमोदतथाप्रमोदादि रूपशिरतथा पक्षादिकल्पनाकोप्राप्तहोताहै । यहांइष्टवस्तुकेदर्शनसेजोआनंद होताहैतिसकोप्रियकहतेहैं । औरइष्टवस्तुकेलाभसेजोआनंदहोताहै । तिसकोमोदकहतेहैं । औरइष्टवस्तुकेभोगसेजोआनंदहोताहै । तिसकोप्रमोदकहतेहैं । सामान्यसुखकोआनंदकहतेहैं । औरजोआत्मासर्वप्राणिमात्रको स्वस्वरूपसुखकीमात्राकोदेकरजीवावताहै ॥ अर्थात्सुखयुक्तकरताहै वहआपअनुपादेयकैसेहोसकताहै ॥ ३० ॥ इसकारिकाकेउत्तरार्द्धका अर्थहीउत्तरकारिकामेंस्पष्टकरतेहैं । जिसआत्मानंदरूपसमुद्रका लेशमात्रआनन्दसकलजगत्मेंअनुस्यूतहै । औरब्रह्मलोकादिकोंमेंजो आनंदलेशव्याप्तहोरहाहै । ऐसेआनंदकेसमुद्रआत्माकोकौन बुद्धिमान्त्यागकरसकताहैकिंतुनहींकरसकता॥३१॥अबआत्माकीसुखरूपतामेंऔरहेतुकहतेहैं।

मू०॥ हैरण्यगर्भमैश्वर्यंयस्मिन्दृष्टेतृणायते।

सीमासर्वपुमर्थानामपुमर्थःकथंभवेत् ॥ ३२ ॥
यत्कामाब्रह्मचर्य्येत इंद्रादयःप्राप्तसंपदः ।
स्वस्वभोगंत्यजंत्येवमपुमर्थःकथंनृणाम्॥ ३३॥

स्वै–जिसकेदेखेब्रह्मलोकगतजोऐश्वर्य्यसुतृणवत्होय ।
सबपुरुषारथकीजोअवधी कहोदुःखतामेंकिमुहोय ।
धारपुरंदरजांकीवाञ्छास्वर्गभोगदीनेसबखोय ।
ब्रह्मचर्य्यतनधारनकीनो कहोदुःखमैकैसे होय ॥२१॥

टी० ॥ जिसआनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारहुएहिरण्यगर्भ कीविभूतिशुष्कतृणकेसमानभासतीहै। औरजोसर्वपुरुषार्थोंकीअवधि है ॥ वहआत्माअपुरुषार्थरूपकैसेहोसकताहै किंतुनहींहोसकता३२॥ शंका ॥ आत्मासकलपदार्थोंकीअवधिहै ॥ यहआपनेकैसेकहा ॥ क्योंकि (इदिपरमैश्वर्य्ये) अ० इदिधातुपरमैश्वर्यअर्थमेंहै ॥ इसपाणिनिमुनिकीस्मृतिसेइन्द्रादिकोंकीसंपदाहीपरमपुरुषार्थरूपहै आत्मापरम पुरुषार्थरूपनहीं ॥ तात्पर्ययह इदिधातुसेइन्द्रशब्दसिद्धहोताहै।इसलिये परमऐश्वर्यवान्इन्द्रशब्दकाअर्थहै। यातेतिनकीसंपदाको परमपुरुषार्थ रूपताकाकथनसंभवताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्जिसआत्माकी कामनाकरकेइन्द्रादिकमहान्संपदाकीप्राप्तिवालेहुएभीब्रह्मचर्य्यकोधारण करतेहुएअपनेअपनेभोगोंको त्यागतेभये यहवार्त्ता

मघवान्प्रजापतौब्रह्मचर्य्यमुवास। छां०अ०(८)खं०(१०)कं०(३)

अ०॥इन्द्रब्रह्माजीकेसमीपब्रह्मचर्य्यव्रतकोधारणकरनिवासकरता भया । इसश्रुतिमेंप्रसिद्धहै । जबइन्द्रादिकभीतिसआत्माकोपरमपुरु पार्थरूपमानतेहैं॥तोमनुष्योंकोयहआत्माअपुरुषार्थरूपकैसेहोसकताहै

किंतुनहींहोसकता ॥३३॥ शंका ॥ यदिआत्माहीपरमपुरुषार्थरूप है। तोस्वतःप्राप्ततिसआत्माको त्यागकरस्वर्गादिसुखकेअर्थसाधनों काविधानवेदनेक्योंकियाहै। इससेप्रतीतहोताहै किआत्मापुरुषार्थरूप नहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन्यहशंकाभीनहींसंभवतीक्योंकि–

मू०। यद्दिदृक्षाफलाःसर्वावैदिक्योविविधाक्रियाः।
यागाद्याविहितास्तस्मिन्नुपेक्षावदतेकथम्॥३४॥
यद्दृष्टिमात्रतःसर्वाःकामाद्याःदुःखभूमयः।
विनश्यंतिक्षणेनासावुपादेयःकथंनते ॥३५॥

स्वै० ॥ वेदविहितशुभकर्मनकोफल जांहिदरशकीप्यासाचीन ।
ताकेविषेत्यागकीइच्छा कहोकौनकरसकेप्रवीन ॥
कामादिकसबदुखकेकारन जांकेदर्शनहोवतछीन ।
सोआनंदस्वरूपीआतम उपादेयतुमकथंनकीन ॥ ३२ ॥

टी० ॥ जिसआत्माकेदर्शनकीइच्छाही नानाप्रकारकीवेदोक्त सर्वयागादिविहितक्रियाओंकाफलहै । तोतिसआत्मामेंतुमकोउपेक्षा बुद्धिकैसेहुईहै । यहतुमकहो । तात्पर्ययहकि–

* तमेतंवेदानुवचनेन * (बृ० उ० अ०६ब्रा०४ कं० २२)

इत्यादिश्रुतिकेबलसेविहित यागादिक्रियाका अंतःकरणकी शुद्धिद्वाराआत्मजिज्ञासाहीफलहै । स्वर्गादितिसक्रियाकाफलनहीं॥ और स्वर्गादिकोंका जोफलरूपतासे श्रवणहै वह अज्ञानीपुरुषोंको प्ररोचनकरनेके लियेहै। अर्थाततिनसेनिषिद्धकर्मोंका त्यागकराकर शुभकर्मों में प्रवृत्तिकेअर्थवेदतिनकोस्वर्गादिकोंकालोभदिखलाताहै ॥ यदिऐसेनमाने ॥ तोसर्वप्रकारसेसत्यवादी औरसकलअर्थकाप्रकाशक

जोवेदवहत्तीणता तथाअनित्यत्वादिदोपयुक्तहोनेसेअपुरुषार्थरूपजो स्वर्गादितिनकाउद्देश्यकरकेयागादिकोंकोकैसेविधानकरेगा ॥ किंतु नहींकरेगा ॥ तिसकारणसेअज्ञजनोंके अरोचनअर्थहीस्वर्गादिकोंका श्रवणहैफलकेअर्थनहीं। यातेकोईविरोधनहीं॥२४॥ शंका ॥स्वर्गादि कोंकाश्रवणअज्ञजनोंकीकर्मोंमें रुचिकरानेकेलियेहै यहकथनअयुक्त है। क्योंकिआत्मजिज्ञासाकोतोफलपनाअंगीकारनहीं।औरआत्माभी यागादिक्रियाकाफलनहीं।क्योंकिवहअजन्यहै।औरआत्माकाअनुभव भीफलरूपनहीं। क्योंकितिसकोमोत्तकासाधनहोनेसेस्वतःफलपनेका अभावहै । और आत्मजिज्ञासाकाभीज्ञानमात्रही फलहै वहस्वतः आपफलरूपनहीं। इसप्रकारआत्मादिसर्व पदार्थोंकोफलपनेकाअभाव होनेसे परिशेपसेस्वर्गादिकही यागादिक्रियाकाफलहैं । अन्यनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् ॥

❀ यतोज्ञानमज्ञानस्यैवानिवर्तकम् ❀

अ० ॥ जिसकारणसेज्ञानअज्ञानमात्रकाहीनिवर्त्तकहै । इस वचनसेब्रह्मज्ञानसेअज्ञानकेनिवृत्तहुए अज्ञानमूलकजोकामादिकदुःख केकारणवहभीसकलनिवृत्तहोजातेहैं । तिनकीनिवृत्तिकोआत्मरूपहो नेसेआत्माहीपरमपुरुपार्थरूपहै वहतुमकोंकैसे उपादेयनहीं ॥ याते स्वर्गादिकोंकाश्रवणअज्ञजनोंकेअरोचनअर्थहीहै । फलार्थनहीं ॥२५ पूर्व (मोदप्रमोदपत्ताभ्यां) इसकारिकामेंआत्माकीसुखरूपतामें--

❀ तस्यप्रियमेवशिरः तै० उ० व० ब्र० अनु० ५❀

अ० ॥ तिसआनंदमयपत्तिरूपआत्माका प्रियवृत्तिरूपहीशिरहै इत्यादिश्रुतिवाक्यप्रमाणरूपतासेकथनकियेहैं । अबसुपुप्तिसेउठेहुए

पुरुषका (सुखमहमस्वाप्सम्) इसपरामर्शकरसिद्ध जोसुषुप्तिका लीन अनुभववहभीआत्माकीसुखरूपतामेंप्रमाणहै यहकहतेहैं ॥

मू० ॥ अह्लादरूपतायस्यसुषुप्तेसर्वसाक्षिकी ।
तत्रोपेक्षाभवेद्यस्यतदन्यःस्यात्पशुःकथम्।२६।

स्वै० ॥ सुखसरूपताजांकीसबको सुषपतिमाहिहोतहैभान ।
तांकोत्यागकरनजोचाहत तांतेअधिकपशूकोआन ।
याते परमानंद रूपमें परंप्रेम को नीके ठान।
ह्वैसाक्षात स्दिमोतवही नाशहोतसंसृतदुखखान ॥२३॥

टी० ॥ हेवादिन् जिसआत्माकीआनंदरूपतासुषुप्तिमेंसर्वप्राणियोंकेअनुभवसिद्धहै । तिसआनंदसमुद्रमेंजिसकोउपेक्षाबुद्धिहुई है ॥ तिससे अधिक और कौनपशुहै ॥ अब आत्माकी पुरुषार्थरूपताको विस्तारसेनिरूपणकरतेहैं ॥

※ अथआत्माकोसर्वशेषित्वनिरूपण ※

पूर्वपक्षमेंआत्माविषयक अनुपादेयताकी सिद्धिकेलिये तिसका प्रतियोगिरूपताकरजोवादीनेइतरानुपसर्जनत्वरूपउपादेयत्व निरूपण कियाथा । वहहमकोभीस्वीकारहै । यद्यपिऐसामानेहुएपूर्वउक्तअनुमानमेंअनुपादेयत्वसिद्धहुआ । तथापिवहइतरानुपसर्जनत्वरूपउपादेत्व आत्मामें ही विश्रांतिको प्राप्त होताहै ॥ अन्यमेंनहीं इसीअर्थ कोस्पष्टकरतेहैं । स्रग्वनितादिक विषयजो सुखके साधनहैं ॥ प्रथमवहविषयसुखकेशेषहैं । औरसर्पकंटकादिकोंकाजोपरिहारहै वह दुःखाभावकासाधनहोनेसेदुःखाभावकाशेषहै ॥ औरसुखतथादुःखाभावआत्माकेअर्थहोनेसेआत्माकेशेषहैं । यातेपरिशेषसेआत्माहीसर्वमें

प्रधानहैसुखादिकनहीं ॥ शंका ॥ यदिआत्माहीपुरुषार्थरूपहै । तो सुखादिकोंमेंपुरुषार्थत्वकाकथनक्योंहोताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् आत्माकाशेषहोनेसेहीसुखादिकोंमेंपुरुषार्थत्वकाकथनहै । स्वतःतिन मेंपुरुषार्थत्वरूपताकाकथननहीं । तिसकारणसेआत्माहीपरमपुरुषार्थ रूपहै यहसिद्धहुआ । औरआत्माकोपुरुषार्थत्वकेकथनसेअनुपादेय त्वकासाधक अनुमान बाधितहै यहभाव सूचनकिया ॥ शंका ॥ आत्माकोसुखादिकोंका अधिकरणहोनेसे सुखतथादुःखाभावके प्रति तिसकोकारकपनाहै।इससेसुखादिकोंकाशेषत्वहीआत्मामेंयुक्तहै।विपरीत पनायुक्तनहींअर्थात्आत्माशेषिनहींहोसकता ॥ समाधान ॥

ॐअथआत्मामेंसुखतथादुखाभावरूपताकानिरूपणॐ

हेवादिन्भेदमेंहीअधारऔराधेयभावहोताहै।औरसुखादिकोंका आत्मासे भेदनहींहै। क्योंकिसुख तथादुःखाभावस्वरूपहीआत्माहै । आत्मातथासुखादिकोंकेभेदकाअभावहोनेसे आत्मातिनकाशेषकैसेहो सकताहै। और"सुखतथादुःखाभावेतरत्व" रूपहेतुभी आत्मारूपपक्षमें नहींवर्तता । यातेपूर्वउक्तअनुमानस्वरूपाऽसिद्धहै ॥ शंका ॥ आत्मा सर्वपदार्थोंकोसत्ताफूर्तिदेनेवालाहै । वहआपअसत्रूपअर्थात्दुःखा भावरूपकैसेहोसकताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्भावरूपआत्माको दुःखाभावस्वरूपताकीअनुपपत्तिनहीं । क्योंकिदुःखआत्मामेंकल्पित है । इसीसेतिसकाअभावआत्मासेअतिरिक्तनहीं। यहपूर्वउक्तदोषतव होसकताहै।यदिदुःखआत्मामेंपारमार्थिकहो।सोऐसेतोहैनहीं।किंतुदुःख आत्मामेंआरोपितहै ॥शंका॥ दुःखएकगुणहै । औरवहअबाधितहोने सेकल्पितनहीं ।किंवा।आरोपमेंआरोप्यतथाअधिष्ठानकासादृश्यकारण

देखाहै। औरआत्मामेंतिसदुःखकासादृश्यनहीं। क्योंकिवहदोनोंही निरवयवहैं।किंवा। भ्रमकालमेंअधिष्ठानविशेषरूपसेअज्ञातकहनेयोग्य है। औरयहांप्रकरणमेंदुःखकी प्रतीतिकालमेंआत्माविशेषरूपसेअज्ञात नहीं॥ किंतु "अहमस्मि" इसप्रकारकीतिसकीविशेषरूपसेप्रतीति होतीहै। यातेदुःखकाआत्मामेंआरोपकैसेहोसकताहैकिंतुनहींहोसकता समाधान ॥ हेवादिन्यहपुरुषअपनेआत्मामेंदुःखोंकेसमूहकाकेवल आरोपहीकरताहै ॥ यद्यपिआरोपकाहेतुआत्मातथादुःखकासादृश्य यहांनहीं।तथापिआरोपसेव्यभिचारीजोसादृश्यतिससेक्याप्रयोजनहै॥ शंका ॥ यदिसादृश्यआरोपमेंकारणनहीं। तोआरोपकाकौनकारण है। औरयदिअज्ञानमात्रकोदुःखकेआरोपमेंअसाधारणकारणकहोगे। तोसुषुप्तिमेंभीदुःखका आरोपहुआचाहिये। क्योंकिअज्ञानतहांभी विद्यमानहै॥ समाधान ॥ हेवादिन्शरीरादिद्वाराही अज्ञानकोदुःख कीकारणताहै सोदिखलातेहैं॥ अज्ञानरूपीएकसर्पहै। औररज गुणतथातमगुणकी प्रधानताहीतिसकाफणअर्थात् मुखहै। तिसमें देहादिअभिमानलक्षण विषधरदाढ़ेंहैं॥ औरतिनकेअग्रवर्त्तिरागद्वेष रूपीहलाहलविषकीज्वालाहै। तिसविषके प्रवेशसेजिसकीस्वरूप दृष्टिप्रतिबद्धहोगईहै॥ वहपुरुषस्वस्वरूपआत्मामेंरौरवादिअनेकभेदों करभिन्नजोनरकोंकासमूह तिससे उत्पन्नहुए दुःखोंकेसमुदायको केवलआरोपहीकरताहै जैसेतमरहितआदित्यभगवान्में प्रतिबद्धदृष्टि वाले उल्लूकादिकतमकाकेवलआरोपकरतेहैं॥ शंका ॥ जोवस्तु जिसमेंवास्तवसे नहोवह तिसमेंआरोप करनेयोग्यहै औरदुःखकोतो गुणरूपताहोनेसेएक आत्मामेंहीसमवेतपनाहै। यातेतिसआत्मामेंही

तिसदुःखका आरोपकैसेहो सकताहै ॥ समाधान ॥ हे वादिन् गुणरूपहुआभी दुःखआत्मामें समवेत नहीं । क्योंकि " मेरेपाद मेंदुःखहै" ॥ इसप्रतीतिसेपादआश्रित दुःखप्रतीतहोताहै ॥ अथवा दुःखकोअंतस्करणका परिणामहोनेसे वहअंतस्करणमेंसमवेतहै ॥ यातेआत्मामेंदुःखका अत्यंताभावहै । औरआत्मामेंदुखकासमवाय मानेहुए (केवलोनिर्गुणश्च) इसश्रुतिकाविरोधभीप्रासहोगा। तिसी कारणसे दुःखाऽत्यंता भावके अधिकरण आत्मा में अज्ञानके वशसे हीदुःखकाआरोपहोताहै यहकथनसमीचीनहै ॥ शंका ॥ यद्यपिपूर्व उक्तप्रकारसेदुखआरोपितहो ॥ तथापिआत्मातिसदुःखकाअभावरूप किसकारणसेहै। क्योंकिवहभावरूपहै॥ समाधान ॥हेवादिन्कल्पित वस्तुप्रतियोगिकजोअभावहोताहै वहअधिष्ठानसे भिन्ननहींहोता ॥ क्योंकि अधिष्ठानसे अभिन्नरूपताकरही आरोपित प्रतीतहोताहै ॥ औरअधिष्ठानरूपताकल्पितनहीं है। तिसकोसत्यहोनेसे अकल्पितपना है ॥ शंका ॥ यदिदुःखादिजगत् अधिष्ठानरूपतासेकल्पितनहीं तो किसरूपतासेवहकल्पितहै ॥ समाधन ॥ आत्मासेभिन्नअनात्माजो दुखादिहैततरूपतासेहीजगत्कल्पितहै ॥शंका॥ सत्रूपआत्मासेभिन्न होनेकरदुःखादिआरोपितहों।परन्तुतिससेक्यासिद्धहुआ।।समाधान ॥ हेवादिनसत्रूपआत्मासेभिन्नकीयेहुए दुःखादिकोंको असत्रूपता सिद्धहोतीहै ॥ शंका ॥ दुःखादिअसत्रूपहों तिससेआपकोक्या लाभहुआ ॥ समाधान ॥ हेवादिन्अभावकाअभावभावरूपहोताहै । इससेअसतदुःखकाअभावसत्आत्मरूपहोताहै । यहअर्थहमकोलाभ हुआ ॥ शंका ॥ दुःखाभावरूपताकरआत्माकोपरमपुरुपार्थरूपता

सिद्धकियेहुएआपकोअपसिद्धांतप्राप्तहोगा ॥ अर्थात्आपकेसिद्धांत कीहानिहोगी । क्योंकिसुखरूपतासेहीतिसआत्माकोपुरुपार्थरूपता आपमानतेहो ॥ समाधान ॥ (तुष्यतुदुर्जनः)इसन्यायसेसिद्धांत केसाथविरोधनहींआता। क्योंकिजोवादीदुःखाभावकोहीपरमपुरुपार्थ रूपमानतेहैं। तिनकोभीआत्माहीपरमपुरुपार्थरूपमाननाचाहिये।जिस कारणसेवहआत्माहीदुःखाभावरूपहै ॥ शंका ॥ सकलसंसारकी निवृत्तिकानामपरमपुरुपार्थहै । केवलदुःखमात्रकीनिवृत्तिकानामपरम पुरुपार्थनहींकहसकते । क्योंकिवहसंसारकाएकदेशहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्तिसदुःखकीनिवृत्तिकोही सकलसंसारकी निवृत्तिरूपताहै । क्योंकिएकविंशतिप्रकारकेदुःखनकीनिवृत्तिपरमपुरुपार्थरूपमानीहै ॥ औरसंसारभीएकविंशतिदुखनसे भिन्ननहीं । किंतुएतत्रूपहीसंसार है । यातेकोईविरोधनहीं ॥ शंका ॥ यदिआत्माहीदुःखाभावरूपहै । तोतिसकोअकार्य्यताहोनेसेअसाध्यताहै । यातेतिसकोपुरुपार्थरूपता कासंभवकैसेहै । क्योंकिपुरुपतिसीअर्थकीवांञ्छाकरताहैजोअसिद्धहो सिद्धपदार्थकीकोईभीवांञ्छानहींकरता॥ समाधान ॥ हेवादिन्साध्य त्वपुरुपार्थताकाप्रयोजकनहीं।क्योंकिसाध्यपदार्थकोक्षीणतादिदोषयुक्त होनेसेहेयताहै । औरभाष्यकारश्रीशंकराचार्य्योंनेसाध्यरूपतासेपुरुपार्थ पनेकानिपेधभीकियाहै।यातेआत्माहीपुरुपार्थरूपहै॥शंका ॥ आत्मस्व रूपदुःखाभावकोअनादिहोनेसेस्वतःसिद्धताहै । तिसकीसिद्धिकेलिये मुमुक्षुपुरुपोंकीसाधनोंमेंप्रवृत्तिनहींहोगी । क्योंकिसिद्धपदार्थकेसाधन कीअयोग्यताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्मोक्षकाउद्देशकरकेमुमुक्षु पुरुपसाधनोंमेंप्रवृत्तहोताहैयहतुमकहतेहो।अथवाब्रह्मात्माकेसाक्षात्कार

काउद्देशकरकेप्रवृत्तहोताहै । प्रथमपक्षतोनहींसंभवता। क्योंकि श्रवणा दिसाक्षात्मोक्षकेसाधनहैं । इसअर्थमेंकोईप्रमाणनहीं । औरद्वितीय पक्षमेंभीयह विचारकर्तव्यहै।क्या?वहसाक्षात्कारसिद्धहैवानहीं । प्रथम पक्षकहोतोहमकोभीस्वीकारहै।क्योंकिब्रह्मसाक्षात्कारसे अनंतरसाधनों मेंप्रवृत्तिनहींसंभवती।जिसकारणसेसाधनोंकाफल ब्रह्मसाक्षात्कारतिस कोप्राप्तहै । औरयदिद्वितीयपक्षकहोतोसाधनों मेंप्रवृत्तिसफलहै। क्यों किप्रथमब्रह्म साक्षात्कार असिद्धहै। जबपुरुषसाधनोंमेंप्रवृत्त होताहै । तब सकल दुःखोंकाअभावरूप जोब्रह्मात्मा तिसका साक्षात्कारसिद्ध होताहै । तिस कारणसे साधनोंमें प्रवृत्ति फलवाली है ॥ शंका ॥ आत्मसाक्षात्कार के होने से मुमुक्षु की प्रवृत्ति फल वाली है ॥ यह जो सिद्धांतीने कहा सोअसंगतहै । क्योंकिवहसाक्षात्कारवृत्ति रूपहै। अथवा चैतन्यरूपहै।यह कहनेयोग्यहै। यदिप्रथमपक्षकहो तोतिसकोफलपनेकी अनुपपत्तिहै । क्योंकि वृत्तिकोआरोपितहोने करमिथ्यापनाहै।।औरतिसकोसत्यमानेहुए द्वैतापत्तिभीहोगी । और द्वितीयपक्षभीनहींसंभवता । क्योंकिस्वरूपचैतन्यकोअजन्यहोनेकर फलपनेकाअसंभवहै। इसप्रकारआत्माकी न्याईज्ञानभीसाध्यनहीं । यातेसाधनोंमेंमुमुक्षुकी प्रवृत्तिनहींसंभवती ॥ समाधान ॥ हेवादिन् वृत्तिमिथ्याहे इसप्रकारकाज्ञानक्या?बाधकेउत्तरकालमें होताहै। अथवा बाधसेपूर्वकालमेंहोताहै । अंत्यपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकियह परामर्शज्ञानसेउत्तरकालमेंहोताहै । अप्रमात्वकोपरतोग्राह्यताहोनेसे बाधसेविनातिसका मिथ्यात्वग्रहणकरनेकोकोईभीसमर्थनहींहोसकता। और प्रथमपक्षमेंतो हमारे इष्टकीसिद्धि है ॥ क्योंकि बाधसे उत्तर

"वृत्तिज्ञानमिथ्याहै"ऐसापरामर्शहमभीमानतेहैं। औरवृत्तिज्ञानकोस्वतः फलपनानहीं किंतुअज्ञानकानिवर्त्तकहोनेसेतिसकोफलपनाहै। सो अज्ञानकानिवर्त्तकपना मिथ्यात्वग्रहणसेप्रथमहीतिसमेंसिद्धहै।पश्चात् तिसमेंमिथ्यात्वकाग्रहण अनुपयोगीहै ॥ शंका॥ दुःखाभावभीकेवल पुरुषार्थरूपनहींहै।क्योंकिदुःखाभावकेनहुएअर्थात्दुःखकेहुएभीपाका दिक्रियामें भोजनजन्यसुखकेलोभसेपुरुषकीप्रवृत्तिदेखीजातीहै। और दुःखाभावत्वपुरुषार्थत्वकाप्रयोजकअर्थात्अवच्छेदकभीनहीं। क्योंकि सुखमेंव्यभिचारहै ॥ अर्थातसुखमेंदुःखाभावत्वकेअभावहुएभीपुरुषार्थ पनाविद्यमानहै॥ औरजोन्यूनअधिकदेशमेंवृत्तिनहोतिसीकोप्रयोजक कहतेहैं॥ समाधान ॥ हेवादिन् दुःखाभावक्या? पुरुषार्थहीनहींहैयह तुमकहतेहो। अथवादुःखाभावसेभिन्नसुखभीपुरुषार्थहैयहतुमकहतेहो। प्रथमपक्षतोनहींसंभवता। क्योंकिदुःखाभावकाउद्देशकरकेशिष्टपुरुषों कीप्रवृत्तिदेखीजातीहै।इसकारणसेदुःखाभावभीपुरुषार्थरूपहै।औरदुःखा भावसेभिन्नसुखभीपुरुषार्थहै।यदियहद्वितीयपक्षकहो।तोसुखस्वरूपता आत्मामेंसुखेनही संपादनहोसकतीहै।क्योंकिआत्माकोहीपरमप्रेमका विषयहोनेकरसुखरूपताभीतिसमेंविद्यमानहै।यातेसर्वप्रकारसेआत्माही परमपुरुषार्थरूपहै॥शंका॥सुखएकगुणहै। इसप्रकारवैशेषकादिकमानते हैं। वहगुणद्रव्यरूपआत्माका स्वरूपकैसेहोसकताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्आत्माकीसुखस्वरूपतामेंविवादनहीं।क्योंकिपरमप्रेमकीविषय तारूपहेतुसे तिसआत्मामें सुखरूपताकीसिद्धिहै। औरजोसुखस्वरूप नहीं तिसमेंपरमप्रेमकी विषयताभी देखनेमें नहींआती ॥ शंका ॥

❀ आत्मानसुखरूपः अजन्यत्वातयन्नैवंतन्नैवं यथाविषयसुखम् ❀

इस अनुमानसे आत्मा सुखस्वरूपनहीं। औरसुखकोजन्यहोनेसे अजन्य आत्माकेसाथतिसका अभेदभीनहींसंभवता ॥ समाधान ॥ हेवादिन्‌इसतुम्हारे अनुमानमेंव्यतिरेकव्याप्तिनहींसंभवती । क्योंकि यहांसाध्याभावकेविद्यमानहुएभी हेतुका अभावनहींहै । अर्थयहकि विषयसुखमें असुखत्वाभावतोवर्तताहै परन्तु अजन्यत्वाभावनहीं वर्तता याते अजन्यत्व हेतुव्याप्यत्वाऽसिद्ध होनेसेदुष्टहै । इसप्रकारसुखको अजन्यहोनेसे अजन्य आत्माकेसाथतिसका अभेदसंभवताहै । औरपूर्व पक्षमेंसुखविषयकजन्यपनेकीसिद्धिकेलियेवादीनेजो "सुखंमेजातम्" यहप्रतीतिकथनकीथी । वहभी अन्यप्रकारसेहीसंभवहोसकतीहै । तिसीकोदिखलातेहैं । पुण्यकर्मोकेवशसे आत्मस्वरूपसुखका अभिव्यं जकजो अंतस्करणकीवृत्तिहै । तिसकीउत्पत्तिकों वहप्रतीतिविषय करतीहै।कोई आत्मस्वरूपसुखकीउत्पत्तिकोवहप्रतीतिविषयनहींकरती। यातेप्रतीतिको अन्यप्रकारसेउपपन्न होनेकर सुखकीउत्पत्तितिससेनहीं सिद्धहोसकती । औरयहजोवादीनेपूर्वकहाथा।कि आत्मा औरसुखका अभेदमानेहुए "अहंसुखम्" ऐसीप्रतीतिहुईचाहिये।सोऐसीप्रतीतितो होतीनही। किंतुतिसकीविरोधिनी "अहंसुखी" इसप्रकारकीभेदप्रतीति होतीहै । सोयहकथनभी असंगतहै। क्योंकिसुखतथाआत्माका अभेद हूएप्रतीतिभी अभेदकोविषयकरनेवालीहोगी । यहजो आपादनहै । सोक्या?विद्वान्‌केप्रतिहै। अथवा अज्ञानीकेप्रतिहै । प्रथमपक्षमेंतोहम कोभीइष्टापत्तिहै । क्योंकिविद्वान्‌को "अहंसुखम्" यहप्रतीतिहमभी

स्वीकारकरतेहैं ॥ औरद्वितीयपक्षमेंतोअज्ञानअवस्थामेंआत्मस्वरूप कोअविद्याकरआवृत्तहोनेकरअस्फुरणहोनेसे कल्पितदेहादिकोंमेंआत्म अभिमानहैइसकारणसेदेहादिकोंकोसुखकीअधिकरणताहोनेकरभिन्न रूपतासेप्रतीतिहोनेसेतिनकाअभेदप्रतिपादनअयोग्यहै । तहांआत्मा सुखकाशेषरूपकरहीस्फुरणहोताहै । अज्ञानीजनोंकी भ्रांतप्रतीतिके कथनसेसुखतथा आत्माकीभेदप्रतीतिका विरोधभीनिरासकरदिया । किंवा । जोवादीसुखकोगुणकहतेहैं । औरआत्माकोगुणीकहतेहैं । वहभीअज्ञानकेवशहुएहीकहतेहैं।तिनकाकथनभीयथार्थनहींहै।क्योंकि आत्माकोनिर्गुणकहनेवालीश्रुतिकाविरोध तिनकोप्राप्तहोताहै । इसी सेज्ञानसुखादिगुणवालाआत्माहैइसप्रकारताकिंकपुरुषभ्रांतिकोप्राप्तहुए हैं॥शंका॥पूर्वउक्तयुक्तिसेसुखमेंजोजन्यपनेकीप्रतीतिहैवहअन्यथाउप पन्नहै।अर्थात्सुखकाअभिव्यंजकजोवृत्तितिसकीउत्पत्तिकोविषयकरतीहै यातेआत्मासुखस्वरूपहैऐसामाननेसेदुःखरूपताभीआत्मामेंसिद्धहोगी। क्योंकिदुःखमेंजोजन्यताकीप्रतीतिहै।तिसकीभीअन्यप्रकारसेसिद्धि है सोदिखलातेहैं । पापकर्मोंकेअनुसारआत्मस्वरूपदुःखकाअभिव्यंजक जोवृत्तिहै।तिसकीउत्पत्तिकोविषयकरनेसे "दुःखमेंजातं" यहप्रतीतिअन्य थासिद्धहै । इत्यादियुक्तिकोतुल्यहोनेसे दुःखरूपताभीआत्माकोहुई चाहिये॥समाधान॥हैवादिन्सुषुप्तिआदिकअवस्थाओंमेंदुःखकाव्यभि चारहोनेसेअव्यभिचारिआत्मस्वरूपतादुःखमें नहींसंभवती॥ किंवा॥ केवलयुक्तिवस्तुकासाधकनहीं किंतुप्रमाणमूलकयुक्तिवस्तुकासाधक है । औरआत्माकीदुःखरूपतामेंकोईप्रमाणनहींहै । यातेयुक्तिआ भासरूपहै ॥ औरकेवलमूलप्रमाणके अभावसेही युक्तिको अभास

पनानहीं ॥ किंतु **प्रियोवित्तात्** अ०॥ आत्माधनादिसर्वपदार्थों सेप्रियहै ।इत्यादिश्रुतिजोआत्माकीसुखरूपताकोकथनकरतीहैतिसका विरोधभीप्राप्तहोताहै।।यातेआत्मादुःखरूपनहींकिंतुसुखस्वरूपहै।शंका सुखत्वधर्मभी पुरुषार्थत्वकाप्रयोजकनहीं। क्योंकि दुःखाभावमेंतिसका व्यभिचारअर्थात्अभावहै ॥ औरऐसेहीदुखाभावत्वधर्मभी पुरुषार्थत्व काप्रयोजकनहीं। क्योंकिसुखमेंतिसकाव्यभिचारहै औरदोनोंधर्मभी पुरुषार्थत्वकेप्रयोजकनहींसंभवते ॥ क्योंकिदोनोंकोप्रयोजकमाननेमें गौरवदोषहोताहै ॥ औरदोनोंकोप्रयोजकमाननेसे पुरुषार्थशब्दको अनेकअर्थत्वप्रसंगभीहोगा। तिससेदोनोंकोपुरुषार्थत्वका असंभवहै॥ समाधान ॥ हेवादिन्आत्मत्वही पुरुषार्थत्वकाप्रयोजकहै । औरवह सुखतथादुःखाभावइनदोनोंमें अनुगतहै । इसप्रकारआत्माकोसुख तथादुःखाभावरूपमानेहुए आत्मत्वहीपरमपुरुषार्थत्वकाप्रयोजकहै॥ ऐसामानेहुएआत्माकीअनुपादेयताकेसाधकअनुमानमें "पद्मेतरत्व" उपाधिजोहमनेपूर्वकहाथावह "बाधोन्नीत" अर्थात्बाधकरउद्भावितहै यहसूचनाकियाहुआअर्थभी जानलेना ॥ औरइसप्रकारआत्माको पुरुषार्थरूपमानेहुएसांसारिकसुखकोत्यागकरकेवलआत्मलाभकाउद्देश करकेप्रवृत्तहुएजोमुमुक्षुहैंतिनको "लोकोत्तरत्व" अर्थात्लोकोंसेविलक्षण पनेकाउपालंभभीनिषेधकरदिया।क्योंकिलौकिकहीजोमहानुभावव्यास वसिष्ठादिब्रह्मऋषिहुएहैं।औरऋषभादिजोराजऋषिहुएहैं॥तिन्होंनेइस लोकतथापरलोककेसुखऔतिनकेसाधनोंकात्यागआत्मप्राप्तिकीकामना सेहीकियाहै।क्यावहसर्वहीमहानुभावभ्रांतहोसक्तेहैंयहकबीनहीं।किंतु उनकोउपालंभकरनेवाला पुरुषहीभ्रांतहै । औरयहजोपूर्ववादीने

कहाथा।किश्रवणादिसाधनोंकेअनुष्ठानकरनेवालेमुमुक्षुजनोंको अल्प होनेसेतिनकोभ्रांतपनाहै ॥ औरज्योतिष्टोमादिश्रुतिमूलकपारलौकिकसुखकेसाधनयागादिकोंकेअनुष्ठाताबहुतहैं । इससेतिनकाअनुग्रहयुक्तहै ॥ तिनकेविरोधसे श्रवणादिसाधनोंके विधानकरनेवाले श्रुतिवचनस्वार्थमें तात्पर्य्यवालेनहीं । किंतु अन्यअर्थके बोधक हैं । सोयह कथनभी समीचीन नहीं। क्योंकि तिनपुरुषोंको ज्योतिष्टोमादिश्रुतिकेतात्पर्य्यका अनभिज्ञहोनेकर यथार्थ ज्ञानका अभाव है । इसीसेवहभ्रांतहैं । औरश्रवणादिविधायकवाक्योंके तात्पर्य्यको जाननेवाले मुमुक्षुयद्यपि अल्पभी हैं। तथापि प्रामाणिक होनेसेवहभ्रांतनहींहैं । औरयदिबहुतोंकेअनुग्रहकोहीन्यायमाने।तोदेहको आत्मामाननेवालेबहुतजनहैं।तिनकेविरोधसेज्योतिष्टोमादिश्रुतिमूलकसाधनोंकेअनुष्ठातापुरुषभीतुम्हारीरीतिसेभ्रांतहुएचाहिये।औरवहतुमने भ्रांतमानेनहीं याते "बहुअनुग्रहन्याय" यहांपरनहींप्राप्त होसकता ॥ औरजोवादीनेपूर्वयहकहाथा । किआत्माकोसुखस्वरूपमानेहुएभीस्वसंबंधिसुखकाअभावहोनेसेतिसकोपुरुषार्थपनानहींसंभवता । यद्यपि स्वसंबंधिसुखही उपादेयहैयहवार्त्तासत्यहै। तथापिस्वतंत्र सुखमात्रको उपादेयताकैसेहोगी । सोयहकथनभीअसंगतहै । क्योंकिआत्मामें सुखकेसंबंधकाउद्देशकरनेवालापुरुषसुखकेदातात्म्यकोहीकामनाकरता है।इसीअर्थकोस्पष्टकरतेहैं।सुखहीअत्यंतउपादेयपदार्थहैवहकिसीप्रकार अत्यंतप्रियमेरेस्वरूपमेंअभेदरूपतासेप्रवेशकरे । ऐसीकामनायहपुरुषकरताहै।यहांऔरसंबंधोकीअपेक्षासेतादात्म्यसंबंधकोअंतरंगताजानलेनी शंका॥ तादात्म्यसंबंधकोअंतरंगमानेहुएयहपुरुषसंबंधमात्रसेकैसेतोप

करलेताहै।क्योंकिअन्यपदार्थकीकामनाकरताहुआकिसीअन्यपदार्थकी प्राप्तिसेतोपकोकोईभीप्राप्तनहींहोता।अन्यथाअतिप्रसंगहोगा।अर्थातजल कीकामनावालापुरुषपाषाणकीप्राप्तिसेभीप्रसन्नहुआचाहिये॥समाधान॥ हेवादिन्अज्ञानकेप्रभावसेसुखतथाआत्माकाभेदभ्रमइसपुरुषकोहोताहै तिसभेदभ्रमकीप्राबल्यतासे अभेदकरनेको असमर्थहुआसंबंधमात्रसे तोपकोप्राप्तहोताहै । क्योंकिकहींमुख्यपदार्थकेअलाभहुएगौणकी प्राप्तिकोभीपुरुषार्थपनादेखाहै । जैसेकोईपुरुषचक्रवर्तीराजकीप्राप्तिमें असमर्थहुआकिसीएकदेशकेराजप्राप्तहोनेकरहीअपनेकोकृतार्थमानता है ॥ शंका ॥ इतनीगुरुकल्पनाकरनेसेक्याप्रयोजनहै। सुखकासंबंध हीसाक्षात्प्रयोजनक्योंनहो ॥ समाधान ॥ हेवादिन्संबंधकोस्वतः पुरुषार्थरूपतानहींसंभवती । क्योंकिवहसुखतथादुःखाभावसेभिन्नहै । यातेसुखतथादुःखाभावस्वरूपआत्माहीपरमपुरुषार्थरूपमाननेयोग्यहै। अन्यकोईपदार्थपुरुषार्थरूपनहीं। औरजोपूर्ववादीनेयहकहाथाकियदि आत्माहीएकसुखस्वरूपहैतोविषयसुखकोपुरुषार्थपनानहींहोगा।क्योंकि सुखकासुखहीपुरुषार्थनहींहोसकता।जिससेसुखकोसुखविषयणीकामना काअभावहै।औरकामनाकाविषयहीपुरुषार्थरूपहोताहै । यद्यपिसांसा रिकसुखकोतोहमभी पुरुषार्थरूपनहींमानते। तथापिआत्मसुखकोभी पुरुषार्थरूपतासिद्धनहींहोगी क्योंकिसुखपनादोनोंमेंतुल्यहै । सो यहकथनभीनहींसंभवता । क्योंकिजोवादीयहकहताहै । किसुखका सुखपुरुषार्थनहीं। तिसवादीकेमतमें सांसारिकसुखमें अभिव्यंजकवृत्ति कासंबंधहोनेसेवृत्तिविशिष्टमेंअनुपादेयताहै। तिसमेंसुखत्वपुरुषार्थत्व काप्रयोजकनहीं । जिससेआत्मसुखभीअपुरुषार्थरूपहो।किंतुविशिष्ट

रूपतासेभ्रमहोनेकरअनात्मत्वहीतिसमेंअपुरुषार्थत्वकाप्रयोजकहै। और आत्मत्वहीपरमपुरुषार्थत्वकाप्रयोजकपूर्वस्थापनकरआएहैं। अथवा विषयसुखमेंतिसअपुरुषार्थत्वकीसिद्धिअनात्मत्वके आरोपकेआधीनहै औरपुरुषार्थत्वमेंआत्मत्वहीप्रयोजकहै। यहपूर्वकथनकियाहै। और यहजोवादीनेपूर्वकहाथा। कियदिआत्मत्वकोपुरुषार्थताका प्रयोजक मानोगेतोकुष्ठ्यादिरोगयुक्तपुरुषोंकोदुःखाभावकाउद्देशकरकेजोआत्मा केत्यागमेंप्रवृत्तिहोतीहै। सोनहुईचाहिये। औरतिनकीप्रवृत्तिदेखने मेंआतीहै। तिसकारणसेआत्मत्वपुरुषार्थत्वकाप्रयोजकनहीं। सोयह कथनभीनहींसंभवता। क्योंकिकुष्ठ्यादिरोगयुक्तपुरुषयद्यपिमरणमेंप्रवृत्त होतेहैं। तथापिवहआत्माकेत्यागमेंप्रवृत्तनहींहोते। जिसकारणसेस्थूल शरीरकेत्यागकानाममरणहै। कोईआत्माकेत्यागकानाममरणनहीं। औरसुखस्वरूपआत्मामेंकुष्ठ्यादिरोगयुक्त स्थूलशरीरदुःखकाहेतुहै इसी सेतिसकेत्यागमेंप्रवृत्तिहोनीउचितहीहै। "केवलसुखरूपहीपरलोकमें मेंहोजाऊं" ऐसाउद्देशकरकेदेहत्यागकरनेमेंवहपुरुषप्रवृत्तहोतेहैं। कोई आत्मत्यागकाउद्देशकरकेप्रवृत्तनहींहोते। यदिऐसेनमानोंतोआत्मा कात्यागकरकेदुःखाभावभीकिसकोहोगा। तिसहेतुसेजानाजाताहै। किवहांपरआत्माकात्यागनहीं। किंतुरोगग्रस्तदेहकाहीत्यागहै। याते मरणमेंजोतिनकीप्रवृत्तिहै। तिससेभीआत्माकीसुखरूपताहीसिद्ध होतीहै। इसप्रकारकुष्ठ्यादिरोगयुक्तपुरुषोंकोदुःखकेसंसर्गसेरहितसुख स्वरूपआत्माकीकामनासेदेहकेत्यागरूपमरणमें प्रवृत्तिकथन करनेसे प्रयागादितीर्थोंमेंमरणकेनिमित्तप्रवृत्तिका उत्तरभीकथनकियागया। क्योंकितहांपरभीदुःखसंसर्गसेरहित सुखस्वरूपआत्माकी कामनासेही

देहत्यागरूपमरणमेंप्रवृत्तिहोतीहैआत्माकेत्यागमेंप्रवृत्तिनहीं । तिनकी प्रवृत्तिसेभीआत्माकोहीपरमपुरुषार्थरूपतासिद्धहोतीहै । यातेआत्मा हीपरमपुरुषार्थरूपहै यहसिद्धहुआ ॥ इति ॥ शंका ॥

❀ अथज्ञानीतथाअज्ञानीकीविलक्षणताकानिरूपण ❀

पूर्वउक्तरीतिसेभी आत्मापुरुषार्थरूपनहींसिद्धहोसकता । क्योंकिमुक्त तथासंसारीमें आत्माकोतुल्यहोनेसेसमाननहींतिसकीदोनोंकोप्राप्तिहै।इस लियेब्रह्मचर्य्यादिसकलजोमुक्तिकेसाधनहैंतिनमेंमुमुक्षुपुरुषोंकीप्रवृत्ति नहींहोगी भावयहकिजबसाधनहीन औरसाधनयुक्तपुरुषकोसमानहीं मुक्तिरूपफलहोताहै।तोफिरसाधनोंकेअनुष्ठानकाक्याफलहै।समाधान हेवादिन्यद्यपिआत्मा मुक्ततथासंसारीमें समानहीहै। तथापिस्वरूप सेविद्यमानहुआवहपुरुषार्थरूपनहीं । किंतुस्वस्वरूपकरसाक्षात्का रकियाहुआपुरुषार्थरूपहै । जैसेलोकमेंभी ज्ञातनिधिआदिकोंकोही पुरुषार्थपनादेखाहै । अज्ञातकोनहीं । तैसेसंसारीआत्मस्वरूपको नहींजानता । औविद्वान्आत्माकोजानताहै । यातेविद्वान्प्रतिही तिसकोपुरुषार्थरूपताहै । अज्ञानीप्रतिनहीं । इसकारणसेमुक्ततथा संसारीकोसमानप्राप्तिनहीं ॥ शंका ॥ आत्माकोसर्वहीजनजानतेहैं। यातेज्ञानतथाअज्ञानकृतविलक्षणताआपकैसेकहतेहो ॥ समाधान॥ हेवादिन्जिसकारणसेअज्ञजन मैंकर्त्ताभोक्ताजरामरणधर्मवालाहूं ॥ इसप्रकारआत्माको जानताहै । तिसीहेतुसेमुक्तसे वहविलक्षणहै ॥ यद्यपिसुखस्वरूपआत्मास्वप्रकाशहै वहसंसारीकोकैसे स्फुरणनहीं होता । तथापिअज्ञानकेप्रभावसेसुखादिअंशआवृत्तहै । यातेतिसका स्फुरणनहींहोता । औरअज्ञानके आश्रयतथाविषयकाएकत्वपूर्वउप

पादनकरआएहैं।इसहेतुसेअज्ञानीही अज्ञानकाविषयहै।।शंका।। अज्ञान करसुखादिअंशको आवृतमानेहुए सुखरूपताही आत्माकीनप्रतीतहो तिससेविपरीतकर्तृत्वादिरूपतासे तिसकाभान किसहेतुसेहोताहै । समाधान।।अज्ञानकेवशसेभ्रांतियुक्तहुआ अकर्तृत्वादिस्वरूपआत्मा कोभीकर्तृत्वादिरूपतासेदेखताहै । अज्ञानकोकौन अर्थकठिनहै।किंतु कुछभीकठिनता अज्ञानको नहीं । इसलिये अज्ञानअवस्थामेंयथार्थ रूपतासेआत्माकोनस्फुरणहोनेसेतिस अवस्थामेंमुक्तपनानहींहोसकता। इसप्रकारअज्ञानकृतविलक्षणतानिरूपणकरके अवअज्ञानकृतविलक्षणता कोनिरूपणकरतेहैं।औरविद्वानपुरुषअज्ञानीसेविलक्षणपुरुपार्थस्वरूपहै। तिसपुरुपार्थकास्वरूपहीकहतेहैं।देशकालवस्तुपरिच्छेदसेरहितपरिपूर्ण आनन्दस्वरूपतासे स्थितहोताहै । जिसकारणसे तिसविद्वान्को अपुरुषार्थत्वका प्रयोजक जोअभान तिसकाहेतु जोअज्ञान तिसका बाधहुआहै ॥ यद्यपिअज्ञानस्वरूपसे विद्यमानहुआअनर्थकाहेतुनहीं होता । क्योंकिसुपुप्तिमेंतैसेदेखाहै । तथापिसकलदुःखोंकाबीजजो अज्ञानहैवहीकार्याकार परिणामकोप्राप्तहोकर अनर्थकाहेतुहै । याते कार्यसहिततिसकाबाधकरकेअर्थात्अज्ञानतत्कार्यतीनोंकालमेंभीमुझ ब्रह्मात्मामेंनहीं है ऐसानिश्चयकरकेविद्वान पुरुपार्थस्वरूपहोताहै ॥ शंका ॥ सुखस्वरूपकाभानकैसेहोगा ॥ क्योंकिप्रकाशकका अभाव है ॥ समाधान ॥ हेवादिन्स्वप्रकाशस्वरूपतासेही सुखकाभानहोता है । अन्यप्रकाशककीतिसको अपेक्षानहीं । औरसकलदुःखोंका बीजहोनेसेकार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्ति विद्वान्करताहै । अवसकार्य अज्ञानकीनिवृत्तिकासाधनकहतेहैं । आत्मसाक्षात्कारसेहीयहअज्ञान

निवृत्तहोताहै । औरतिसमाक्षात्कारकाहेतु महावाक्यरूप आगम प्रमाणहै । इतनेकथनसेश्रवणादिसाधनोंमें मुमुक्षुकीप्रवृत्तिकीव्यर्थतापरिहारकी। क्योंकिश्रवणादिसाधनोंके अनुष्ठानसे अप्रतिबद्धहुआ महावाक्यरूपशब्दप्रमाण आत्मसाक्षात्कारको उत्पन्नकरताहै । याते तिनमेंप्रवृत्तिसफलहै । औरतिसमहावाक्यको आपहीग्रहणनकरे किंतु आप्तवक्ताजोश्रोत्रिय तथाब्रह्मनिष्ठआचार्य है उनकेमुखद्वाराही महावाक्यकोग्रहणकरे। और विद्वानका अनुभवभीऐसाहीहै । यातेमहावाक्यसेउत्पन्नहुआ "अहंब्रह्मास्मि" याप्रकारकाप्रमाज्ञानसकार्य अज्ञानकोबाधकरताहै । परन्तुवहवाक्यार्थज्ञानपदार्थज्ञानपूर्वकहोताहै । इसलिये "तत्त्वमसि" इसमहावाक्यगत "तत्" औ "त्वं" यह दोपदहै । तिनमेंप्रथमतत्पदका वाच्यार्थनिरूपणकरतेहै । अज्ञानकेवशसेसर्वजगत्की अधिष्ठानताको प्राप्तहुआ आत्मा तत्पदका वाच्यार्थहै । औरकर्तृत्वादिसांसारिकधर्मोंका आश्रयहुआ त्वंपदका वाच्यार्थहै। अबवास्तवजोआत्माकालक्ष्यस्वरूपहै । तिसकोनिरूपण करतेहै । पूर्वकथनकियाजो अज्ञानकेवशसे कर्तृत्वादिमिथ्यास्वरूप उससेविरुद्ध अकर्ता आत्माहै ॥ इसकथनसे नैयायिकमतकानिषेध जानलेना । औरवह आत्मा अभोक्ताहै ॥ इसकथनसेसांख्यमतका निषेधकिया । औरवह आत्माजरामरणजन्मादि सर्वविकारोंसेरहितहै। इसकथनसेदेहात्मवादकानिषेधकिया ॥ औरवह आत्मास्वप्रकाशस्वरूपहै इसकथनसे मीमांसकमतकानिषेधकिया। औरवह आत्मासत्रूप है।इसकथनसेशून्यवादीमाध्यमिककामतनिषेधकिया॥ इसप्रकारइन विशेषणोंसेइतरमतोंक निरासकियेहुए अबस्वमतसंमत आत्माकास्वरूप

कहतेहैं। आत्माचिद्एकरसंपरिपूर्णस्वभावहै। औरवहअपुरुपार्थस्वरूप नहीं ॥ किंतुआनंदस्वरूपहै । पूर्वसर्वमतोंकेनिरासमेंहेतुसूचनकरने केलियेपुनःऔरविशेषणआत्माकेकहतेहैं । क्षुधापिपासादिधर्मोंसे रहितहोनेसे आत्मा अकर्त्ताऔअभोक्तातथा असंसारीहै ॥ और स्थूलतासेहीनहोनेकर तथाअणुतासेहीनहोनेकर तथासर्वदृश्यधर्मों सेअतीतहोनेकर आत्मादेहरूपनहीं । औरसत्यस्वरूपहोनेसेआत्मा शून्यरूपनहीं औरज्ञानस्वरूपहोनेसे स्वप्रकाशस्वरूपहै ॥ औनित्य स्वरूपतथाविज्ञानस्वरूप तथआनंदस्वरूप तथाब्रह्मस्वरूपहोनेसेयह आत्मासुखस्वरूप तथापरिपूर्णस्वरूपहै । इसप्रकारतिसआत्मसेअधिक औरकोईकामनाकाविषयनहींहै॥क्योंकिसर्वकामोंकीअवधिआत्माकी प्राप्तिहै ॥ इसीसेश्रुतिमेंकहाहै ॥

(आत्मलाभान्नपरंविद्यते। आत्मकामआप्तकामः)

इत्यादिश्रुतिसेआत्मप्राप्तिकोहीसर्वकामप्राप्तिकी सीमाहोनेसेआत्माही परमपुरुपार्थस्वरूपहै यहअर्थसिद्धहुआ ॥ इति ॥२६॥

❀ अथआत्मसाक्षात्कारकेकरणकाविचार ❀

"आगमप्रमाणसेसाक्षात्कारहोताहै" यहसिद्धांतीकाकथनसुन करतिसकोनसहनकरताहुआपूर्वपक्षी शंकाकरताहै । हेसिद्धांतिन् आत्मसाक्षात्कारशब्दजन्यनहीं यहांयहअनुमानजानना ॥

❀ आत्मसाक्षात्कारःनशब्दजन्यःसाक्षात्कारत्वात्। घटादिसाक्षात्कारवत् ❀

अ० ॥ आत्मसाक्षात्कारशब्दजन्यनहींहै । साक्षात्काररूपहोने से । जोजोसाक्षात्कारहोताहै । वहशब्दजन्यनहींहोता । जैसेघटादि

साक्षात्कारहै ॥ इति ॥ औरआत्मसाक्षात्कारकोशब्दजन्यमानेहुए इन्द्रियकोसाक्षात्कारकीकरणताकाअभावप्रसंगहोगा । क्योंकिइंद्रिय जन्यज्ञानकोहीसाक्षात्कारत्वकानियमहै ॥ शंका ॥ हेवादिन् जन्य साक्षात्कारमेंइंद्रियकारणत्व प्रयोजकनहींअर्थात् जहांजहांजन्यसाक्षा त्कारहोताहै । तहांतहांइंद्रियकोकारणताहै ऐसानियमनहीं । क्योंकि "दशमस्त्वमसि" इसवाक्यसे उत्पन्नहुआ ज्ञानभी प्रत्यक्षहीदेखाहै ॥ समाधान॥ हेसिद्धांतिन् "दशमस्त्वमसि" इसवाक्यमेंभीयहशब्ददशम केसाक्षात्कारको नहींउत्पन्नकरता ॥ किंतुदशमपुरुषके शरीरसेइन्द्रिय कासंबंधहोनेसेही साक्षात्कारहोताहै यातेइन्द्रियजन्यत्वहीसाक्षात्कार मेंप्रयोजकहै । अर्थातइंद्रियजन्यज्ञानहीसाक्षात्कारहोनाहै॥ शंका ॥ हेवादिन् अन्वयव्यतिरेकइंद्रियजन्यत्वमें औरशब्दजन्यत्वमेंतुल्यहै । अर्थात "दशमस्त्वमसि" इसशब्दकेहुएदशमसाक्षात्कारहोताहै।इसशब्द केअभावहुएनहींहोता । औरतैसेहीइंद्रियकासंबंधहुए दशमकासाक्षा त्कारहोताहै । औरइंद्रियकासंबंधनहुएनहींहोता । इसप्रकारअन्वय व्यतिरेकदोनोंमेंतुल्यहोनेसेइंद्रियहीदशमसाक्षात्कारकाहेतुहैशब्दनहीं यहनियमतुमकैसेकरतेहो॥समाधान॥ शब्दकापरोक्षज्ञानकेउत्पन्नकरने काहीस्वभावहै।अपरोक्षज्ञानकेउत्पन्नकरनेकास्वभावशब्दकाकहींभीदेखा नहीं ॥ औरइंद्रियकातोअपरोक्षज्ञानकेउत्पन्नकरनेकास्वभावप्रसिद्धहै। यातेशब्दकेस्वभावसेहीअपरोक्षज्ञानमें शब्दकोकरणतानहींकिंतुइंद्रिय कोहीकरणताहै ॥शंका॥ अपरोक्षआत्माविषयकशब्दकोअपरोक्षज्ञान काहीजनकपनायुक्तहै ॥ क्योंकिवेदवाक्यतबहीप्रमाणहोसकताहै ॥ जबजैसाआत्माकास्वरूपहोतिसीकेआकारज्ञानकोउत्पन्नकरे॥ अन्यथा

ज्ञानकोभ्रमरूपताहोगी ॥ औरआत्मानित्यअपरोक्षस्वभावहै ॥ तिससेअपरोक्षआत्माकासाक्षात्कारश्रुतिजन्यहीहै॥ समाधान ॥करण कास्वभावअन्यथाकरनेकोकोईभीसमर्थनहीं ॥ क्योंकिप्रमेयकेस्वभाव कीअपेक्षासेअपनास्वभावअभ्यर्हितहैअर्थात्उत्कृष्टहै ॥ यातेपूर्वकथन अयुक्तहै ॥ किंवा ॥ ब्रह्मकीअपरोक्षतामात्रसेतिसविषयकज्ञानको अपरोक्षतायुक्तनहीं है ॥ क्योंकिअपरोक्षताकेयोग्यवन्हिआदिकों में शब्दसेपरोक्षज्ञानहीउत्पन्नहोताहै ॥ यहवार्त्ताहमतुमदोनोंकोस्वीकारहै तिसीकारणसेआत्मसाक्षात्कारश्रुतिरूपशब्दसेजन्यनहीं ॥ शंका ॥ आत्मसाक्षात्कारसेहीप्रयोजनहै ॥ सोजिसकिसीकारणसेउत्पन्नहोऔर अभ्यासकियाहुआ परोक्षज्ञानही अपरोक्षरूपताकोप्राप्त होजायेगा ॥ यातेपरोक्षज्ञानकाअभ्यासहीअपरोक्षज्ञानकाहेतुहै ॥ समाधान ॥ यहकिसीकामतभीसमीचीननहीं ॥ क्योंकिअनुमितिआदिकपरोक्ष ज्ञानों मेंतैसादेखनेमेंनहींआता ॥ अर्थयह "पर्वतोवन्हिमान्" इस परोक्षज्ञानकावारंवारअभ्यासकियेहुएभी यहज्ञानअपरोक्षरूपताकोनहीं प्राप्तहोता ॥ किंवा ॥ जैसेप्रथमज्ञानअपरोक्षरूपताकोनहींधारण करता ॥ तैसेउत्तरज्ञानकाप्रवाहभीअपरोक्षरूपताकोनहींधारणकरेगा। क्योंकिशब्दजन्यतादोनों मेंतुल्यहै ॥ औरशाब्दज्ञाननियमसेपरोक्षही होताहै ॥ शंका ॥ साक्षात्कारकेकरणकाविचारकरनेसेक्यासिद्धहोता है ॥ क्योंकिसाक्षात्कारको निष्फलहोनेकरहमारेकरत्यागनेयोग्यहै भावयह किआप्तपुरुषनेउच्चारणकियाजो "नायंसर्पः" यहवाक्यतिस सेउत्पन्नहुआजोपरोक्षज्ञान तिसकरकेहीभयकंपादिकनिवृत्तहोजातेहैं॥ फिरअपरोक्षज्ञानकेसाथक्याप्रयोजनहै ॥ यातेतिसकेकरणकाविचार

निष्फलहै ॥ समाधान ॥ जैसेजिसपुरुषकोपूर्वदिशामेंपश्चमदिशाका भ्रमहोजाताहै ॥ तिसकोपरोक्षज्ञानदिशाकाहुएभी तिससेदिशाका अपरोक्षभ्रमनिवृत्तनहींहोता॥ क्योंकिअपरोक्षभ्रमकाअपरोक्षप्रमाज्ञान हीनिवर्त्तकहोताहै ॥ तैसे "अहंकर्त्ता" अहंभोक्ता । इत्यादिजोसमूल अपरोक्षभ्रम है तिसकीनिवृत्तिभी आत्मसाक्षात्कारसेविनानहींहोगी॥ यातेतुम्हारेमतमें आत्मासाक्षात्कारत्यागकरनेयोग्यनहीं॥और "नायं सर्पः" इसवाक्यसेतुम्हारे मतकीरीतिसे अपरोक्षहीज्ञानउत्पन्नहोताहै॥ यातेयहदृष्टांतभी समीचीननहीं ॥ औरपूर्वउक्तप्रकारसेकोईभीकरण निरूपणनहींहोसकता॥ याते

❀ सामग्र्यभावेनफलाभावः ❀

अ० ॥ सामग्रीकेअभावसेफलकाभीअभावहोताहै ॥ इसन्याय सेआत्मसाक्षात्कारकाअभाव अर्थसेसिद्धहोताहै॥ यातेआत्माकाअप रोक्षज्ञानकिसीकोभीनहींहोता ॥ इतिपूर्वपक्ष ॥

❀ अथएकदेशीकेमतकीरीतिसेपूर्वपक्षकाखंडन । औरमनकोआत्मसाक्षात्कारकीकरणताकानिरूपण ❀

हे वादिन् पूर्वजोकरणके अभावसे आत्मसाक्षात्कारकातुमने अभावकहा सोनहींसंभवता।क्योंकिअंतस्करणही आत्मसाक्षात्कारका करणहै ॥ शंका ॥ हेएकदेशिन् आत्मसाक्षात्कारकी करणता अंतस्करणमें नहींसंभवती॥ क्योंकिसर्वअविवेकीजनोंका अंतस्करण तोविद्यमानहै ॥ परन्तुआत्मसाक्षात्कारतिनमें नहींदेखाजाता ॥ समाधान ॥ हेवादिन्जैसेकेवलचक्षुकोप्रत्यभिज्ञाज्ञानकीकरणतानहीं भीहै । परन्तुवस्तुकेपूर्वअनुभवजन्यसंस्कारसहकृतहुआचक्षुतिस

वस्तुविषयक ऐक्यप्रतिभिज्ञाकाहेतुहोताहै । तैसेकेवलमनशुद्धात्मा केसाक्षात्कारका अजनकहुआभी सजातीयप्रत्ययोंके प्रवाहसहित हूआतिसकाजनकहोजायेगा ॥ शंका ॥ जैसेकिसीपुरुषको भावना करनेसेमृतपुत्रका अप्रमारूपसाक्षात्कार उत्पन्नहोताहै । तैसेमूल प्रमाणसेहीनकेवलभावनासे उत्पन्नहुआ आत्मसाक्षात्कारभीअप्रमा रूपहोगा ॥ समाधान ॥ हेवादिन्श्रवणादिकोंके अभ्याससेजन्य जोशाब्दपरोक्षज्ञानहै । वहीभावनाकामूलहै । यातेभावनाकेप्रवाह सहकृतथसंकरणरूपकरणसे उत्पन्नहुआआत्म साक्षात्कारअप्रमारूप नहीं किंतुप्रमारूपहीहै ॥शंका॥

यतोवाचोनिवर्ततेअप्राप्यमनसासह । (तै०उ ब्र०व०अनु ९)

अ० ॥ जिसब्रह्मसेमनसहितवाणियेंतिसकोनप्राप्तहोकरनिवृत्त होजाती हैं॥इति॥मनकोकरणमानेहुएइसश्रुतिकेसाथविरोधहोगाक्योंकि यहश्रुतिआत्मामेंमनकीविषयताकाअभावकहतीहै॥समाधान॥हेवादिन् यहविकल्पकिसीवेदांतीकाहै।अथवानैयायिककाहै ॥ प्रथमपक्षतोनहीं संभवता॥क्योंकिआगमप्रमाणकीआत्मामें विषयतामाननेवालेकोश्रुति काविरोधतुल्यहीहैजिसकारणसेश्रुतिनेमनकीविषयताकेअभाववतवाणी कीविषयताकाभीअभावकथनकियाहै॥औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता। क्योंकिवहश्रुतिवचनलौकिकशब्दतथावैदिकसंस्काररहित मनकीविष यताकोनिषेधकरताहै ॥ कोईवैदिकशब्दतथाशुद्धमनकीविषयताका निषेधनहींकरता । इसप्रकारशुद्धमनकोआत्मसाक्षात्कारमेंकरणताहै। तिसकेविद्यमानहुएकरणकाअभावकहनाअयुक्तहै(इतिएकदेशिमतम्) (अथसिद्धांत)

❀ शब्दकोसाक्षात्कारकीकरणताकाप्रतिपादन ❀

इसप्रकारएकदेशीद्वारामहापूर्वपक्षको निरासकरके अबपरम सिद्धांती एकदेशीकेमतको निरासकरताहै ॥ समाधान॥ पूर्वजोएक देशीने मनकोकरणताकथनकी सोनहींसंभवती।क्योंकिआगमकोही आत्माविषयकअपरोक्षज्ञानकाजनकपनाहै ॥ शंका ॥

❀ दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्या। मनसैवेदमाप्तव्यम् ❀

अ०—एकाग्रबुद्धिसेआत्मादेखाजाता है ॥ औरमनकरकेहीयह आत्माप्राप्तहोनेयोग्य है । अर्थात्दर्शनकरनेयोग्य है। इत्यादिकश्रुति सेऔरपूर्वकथनकीहूईयुक्तिसे मनकोही तिसआत्मसाक्षात्कारमें कर णता संभवती है। तिसकाआपनिषेधकैसेकरतेहो ॥ समाधान ॥ हे वादिन्मनकोजोआत्मसाक्षात्कारमें तुमकरणताकल्पनाकरतेहो॥ सो क्या?शुद्धात्मासेजुदाकहींअन्यवस्तुकेअपरोक्षज्ञानमें तिसकोकरणता निर्णीत है इसलियेशुद्धआत्माके साक्षात्कारमेंभीलाघवसेमनहीकरण हो यहकहतेहो।अथवाकेवलश्रुतिप्रमाणकेबलसेतिसकोकरताकहतेहो प्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिनिरूपणहीनहींहोसकता॥ तथाहि प्रथमबाह्यअर्थकेप्रत्यक्षमेंमनकोकरणतानहींसंभवती ॥ क्योंकिबाह्य अर्थकोमनस्वतंत्रनहींग्रहणकरसकता ॥ यदिस्वतंत्रग्रहणमानेतोअंध तथाबधिरपुरुषोंकोभी रूपतथाशब्दकाप्रत्यक्षहोनाचाहिये।।औरअंतर दुःखादिपदार्थोंकेसाक्षात्कारमेंभी तिसकोकरणतानहींसंभवती । क्यों किदुःखादिककेवलसाक्षीकेविषयहैं । औरशुद्धआत्माकेसाक्षात्कारमें भी तिसकोकरणतानहीं। क्योंकितिसकाविचारतोअबप्राप्तहीहै । और यदिसोपाधिकआत्माके साक्षात्कारमें मनकोकरणकहोतोयहकथनभी

नहींसंभवता । क्योंकितहांउपाधिअज्ञानहै अथवाअंतस्करणहैयह विचारकर्तव्यहै ॥ प्रथमपक्षकहो तोसुषुप्तिमेंअज्ञानउपाधिकआत्मा कासाक्षात्कारनहींहुआचाहिये । क्योंकिमनकातिससुषुप्तिअवस्थामें विलयहै । औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता । क्योंकितिसमेंआत्मा श्रयदोषप्राप्तहोताहै । अर्थात्आत्मामें साक्षात्कारकेअर्थमनकी प्रवृत्तिहोनेमेंमनकोही उपाधिरूपताहोनेकर अपनेकोअपनीअपेक्षा रूपआत्माश्रयदोपस्पष्टहीहै ॥ औरयदिऐसेकहो किअंतस्करणकाकार्य जोवृत्तिहैवहीउपाधिहै।यातेआत्माश्रयदोपकीप्राप्तिनहींहोतीसो कथन भीनहींसंभवता ॥ क्योंकितहांभीकार्यकारणका अभेदहोनेसेअंश रूपताकरआत्माश्रयदोपकीप्राप्ति अवश्यहोतीहै । औरयदिआत्मामें मनकीप्रवृत्तिकेअर्थ अंतस्करणकोउपलक्षणमानकर तिसमेंअंतस्करण उपलक्षितत्वधर्मकोस्वीकारकरें तोवहधर्मभीविशेषणरूपताकरतथाउप लक्षणरूपताकर निरूपण नहीं कियाजाता ॥ क्योंकिऐसेमाननेसेभी पूर्वउक्तदोपदूरनहीं होसकते । अर्थात्अंतस्करणउपलक्षितत्वधर्मको विशेषणमानेतोआत्माश्रयदोपप्राप्तहोताहै। औरयदितिसकोउपलक्षण मानें तोअनवस्थादोषप्राप्तहोताहै ॥ तथाहि । अन्तःकरणउप लक्षितआत्मामेंअन्तःकरणकीविषयतामानेहुएतिसआत्माकाविशेषण उपलक्षितत्वऔरतिस उपलक्षितत्वकाविशेषण अन्तःकरण इनदोनों मेंभी तिसकीविषयताअवश्यहोगी । तिससेआत्माश्रयदोपस्पष्टहीहै क्योंकिविशिष्टवृत्तिधर्मको विशेषणमेंवर्तनेकानियमहै ॥ किंवाजैसे उपलक्षणरूपकाककेधर्मोंका देवदत्तकेगृहमें अध्यासनहींसंभवता । तैसेअन्तःकरणको उपलक्षणमानेहुए तिसके कर्तृत्वादिधर्मोंकाभी

आत्मामेंअध्यासनहींसंभवेगा। यातेभीयहपक्षअसंगतहै। औरश्रुतिमात्रकेवलसेभीतिसमनकोकरणता नहींसिद्धहोसकती । क्योंकि "मनसा"यहतृतीयाविभक्तिरूपाश्रुति तोसहिकारतामात्रकोबोधनकरतीहै।तिसकेकरणपनेकोनहींबोधनकरती।यातेमनकोकिसीरीतिसेभी आत्मसाक्षात्कारकेप्रति करणतानहीं।किंतुआगमही तिसकाकरणहै। औरश्रुतिरूपशब्दको आत्मसाक्षात्कारकीकरणतामें श्रुतिउक्तलिंग भीप्रतीतहोताहै । क्योंकि ॥

❀ तंत्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि बृ०उ०।अ०(५)ब्रा०६।२६)

अ० ॥ हेशाकल्यतिसउपनिषद्गम्य पुरुषकास्वरूपमैं तुझकोपूछताहूं । इसश्रुतिनेआत्माकाही "औपनिषदत्व" विशेषणकथन कियाहै । सोविशेषणतबहीसमीचीनहोसकताहै । जबइतरप्रमाणोंके अविषयभूतआत्मामात्रकोहीविषयकरे । यदिऐसेनमानें । तोप्रमाणांतरकाअव्यावर्तकहोनेसे तिसविशेषणकीव्यर्थताहोगी ॥ शंका ॥मनकीन्याईशब्दभीकहीं साक्षात्कारकाकरणरूपताकरनिर्णीतनहीं तो वह आत्मसाक्षात्कारकाकरण कैसे होसकताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् । लौकिकशब्दजो "दशमस्त्वमसि" इत्यादिवाक्यहै। तिसकोभीदशमरूपअपनेआत्माविषयकसाक्षात्कारकाजनकपनादेखाहै ॥ औरतहांइंद्रियकोकरणतानहींसंभवती । क्योंकिइंद्रियकेविद्यमानहुए भीदशमकाज्ञाननहींहोता । औरअत्यंतअन्धकारमेंइंद्रियकीशक्तिके निरुद्धहुएभीवाक्यसे "दशमोऽहमस्मि" इसप्रकारकासाक्षात्कार देखाहै। औरइसज्ञानकोपरोक्षनहींकहसकते । क्योंकि "अस्मि" इत्याकारकप्रतीतिअपरोक्षरूपहीहोतीहै । इसप्रकारव्यभिचारहोनेसे

इंद्रियकोतिससाक्षात्कारमेंकरणपनानहींहै ॥ शंका ॥ पूर्वउक्तप्रकार सेशब्दको अपरोक्षज्ञानकी जनकतामानेहुए तिसकेस्वभावकीहानि होगी । क्योंकिशब्दकापरोक्षज्ञानकेहीउत्पन्नकरनेकास्वभावहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्प्रमाणकोप्रमेयकेआश्रितहोनेकरप्रमेयकेअनु सारीहीतिसकास्वभावहोताहै । स्वतंत्रतिसकाकोईस्वभावनहींहोता। यातेपरोक्षज्ञानकेउत्पन्नकरनेकास्वभावअसिद्धहै ॥ शंका ॥ जिस प्रमेयकेअनुसारीप्रमाणकास्वभावआपनेकहा।तिसप्रमेयकाक्यास्वभाव है ॥ समाधान ॥ हेवादिन् । यहामहावाक्यरूपशब्दप्रमाणकाप्रमेय आत्मवस्तुहै । सोअपरोक्षस्वभावहै । यद्यपिअपरोक्षताकिसीकाल मेंघटादिकों मेंभीहोतीहै । तथापितिनमेंनित्यअपरोक्षतानहीं । और आत्मातोअपरोक्षएकरसहै । यातेघटादिकोंसेविलक्षणहै ॥ शंका ॥ प्रमेयपरोक्षएकस्वभावभीनहीं।तथाअपरोक्षएकस्वभावभीनहीं । क्यों किएककालमेंहीवन्हिआदिकविषयमें पुरुषोंकेभेदकीअपेक्षाकरसाक्षा त्कारतथाअनुमितिकीविषयताहोनेसेअपरोक्षतातथापरोक्षतायहदोनों रूपप्रतीतहोतेहैं। औरविरुद्धदोरूपएककालमेंएकपदार्थमेंनहींसंभवते। यातेवहदोनोंरूप प्रमेयकेस्वाभाविकधर्मनहींहैं । किंतुज्ञानविशेषरूप उपाधिकृतहोनेसे वहऔपाधिकधर्महैं ॥समाधान॥ हेवादिन्ज्ञानगत अपरोक्षत्वनहींकिंतु

❋ यत्साक्षादपरोक्षात्ब्रह्म यआत्मासर्वांतरः ❋

(बृ०) उ० अ० (५) ब्रा० (४) १ ❋

अ०॥ जोब्रह्म "साक्षात" कहियेअव्यवहितस्वरूपहै।यद्यपिगौण अव्यवहितत्वश्रोत्रब्रह्मादिकों मेंभीहै । तथापिब्रह्ममें "अपरोक्षात" ,

कहिये मुख्यअव्यवहितत्वहै । औरजोआत्मासर्वकेअंतरहै । यद्यपि अंतरत्वइंद्रियतथाप्राणादिकोंमेंभीहै।तथापिवहसर्वसेअंतरनहीं। किंतु आत्माहीसर्वकेअंतरहै। इत्यादिश्रुतिमें आत्माकाहीअपरोक्षपनासुना जाताहै । यातेब्रह्मात्माकीअपरोक्षताश्रुतिसिद्धहै औपाधिकनहीं। औरजोवादीनेयहशंकाकीथी किप्रमेयमेंस्वाभाविकअपरोक्षतामानेहुए वन्हिआदिकोंमें दोनोंविरुद्धधर्मएककालमेंप्राप्तहोंगे। इसशंकाकेदूर करनेकेलिये अबअपरोक्षताकास्वरूपजिज्ञासापूर्वकनिरूपणकरतेहैं ॥

❋अथअपरोक्षत्वकास्वरूपनिरूपण❋

वहअपरोक्षताक्याहै अर्थात्तिसअपरोक्षताकास्वरूपआपनिरू पणकरो ऐसीजिज्ञासाकेहुएकहतेहैं। वास्तवसेजोप्रमातासेअव्यवहित त्वहै यहीअपरोक्षत्वहै । अपरोक्षज्ञानकीविषयताकानामअपरोक्षत्व नहीं । सोअव्यवहितत्वप्रमातामेंही विश्रांतिकोप्राप्तहोताहै । क्योंकि जितनाजितनाकोईपदार्थप्रमातासेदूरहोताहै।उतनाउतनाहीवहअधिक परोक्षताकोप्राप्तहुआदेखाहै । तैसेमानेहुए वन्हिआदिकोंमेंपरोक्षता हीमुख्यहै । औरअपरोक्षता तिनमेंगौणहै ॥ क्योंकिअपरोक्षतातिन मेंप्रमाताकीसमीपतासेप्राप्तहुईहै स्वतःनहीं । यातेएककालमेंदोनों काविरोधनहीं । क्योंकिस्वाभाविकतथाऔपाधिकदोनोंरूपएककाल मेंएकपदार्थमें रहसक्तेहैं॥ शंका ॥जैसेघटादिकअनात्माहोनेसेपरोक्ष एकरसहैं तिनमेंगौणअपरोक्षतावर्ततीहै । तिसगौणअपरोक्षताको लेकर इंद्रियकोप्रमाणताहै । तैसेप्रमातामेंभी गौणपरोक्षताको लेकर शब्दतिसमेंप्रवृत्तहोजायेगा ॥ समाधान ॥ हेवादिन् गौणपरोक्षता भीआत्मामेंनहीं संभवती। क्योंकिआत्मासे आत्माकाव्यवधानकोईभी

कल्पनाकरनेकोसमर्थनहींहोसकता । यातेप्रमाणरूपहुआवेद अपरोक्ष स्वरूपआत्मामेंपरोक्षज्ञानकोकैसेउत्पन्नकरेगा । औरयदिपरोक्षज्ञानको वेदउत्पन्नकरेगा ॥ तोभ्रमज्ञानकोउत्पन्नकरताहुआवेद प्रमाणरूपकैसे होगाक्योंकिअन्यप्रकारसेस्थितपदार्थको अन्यप्रकारसे बोधनकरनेकर प्रमाणरूपतानहींसंभवेगी।यातेअपरोक्षआत्माविषयकवेद अपरोक्षज्ञान कोहीउत्पन्नकरताहै।औरवहीकरणहै । इसप्रकारसिद्धांतीने अपनेमत कोसिद्धकरके पूर्वउक्तरीतिसे एकदेशीकामतनिरासकिया । अबतिसी केनिषेधमें औरहेतुकहतेहैं। हेएकदेशिन् प्रमाकरण्व्याप्तप्रमाणहोताहै ॥ अर्थात्जहांजहां "प्रमाणताहै" तहांतहांप्रमाकरणत्वहै । ऐसेंनैया यिककहतेहैं । औरमनप्रमाकरण्व्याप्तहैनहीं । क्योंकितिसकोभ्रमतथा प्रमासाधारणउपलब्धिमात्रकीकारणताहै । यातेमोक्षकेसाधनआत्म साक्षात्कारकोमनोजन्यमानेहुए व्यभिचारिकरणसे जन्यहोनेकरआत्म ज्ञानमेंअप्रमात्वप्राप्तहोगा। इसलियेमनआत्मसाक्षात्कारकाकरणनहीं। यदिकरणमानोगे तोआत्मसाक्षात्कारभीभ्रमरूपहोगा । औरतिसको भ्रमरूपतानहींसंभवती । क्योंकिवहसकार्यअज्ञानकानिवर्त्तकहै । औरभ्रमज्ञानअज्ञानकोनहींनिवृत्तकरसकता। अन्यथाअतिप्रसंगहोगा अर्थात्रजतभ्रमसे शुक्तिकेअज्ञानकीभीनिवृत्तिहुईचाहिये ॥शंका॥ हे सिद्धांतिन्यदिकेवलमनआत्मसाक्षात्कारकोउत्पन्नकरे तोतिसमेंभ्रमत्व कीआशंकाहोसकतीहै । परन्तुकेवलमनकोतोहमकरणनहींमानते । किंतुतत्वमस्यादिवाक्यजन्यज्ञानकेप्रवाहसहितमनही तिसआत्मसाक्षा त्कारकाकरणहै । तैसेमानेहुएमूलप्रमाणशब्दकेसाथसंमतिहोनेसे अप्रामाण्यशंकाकीप्राप्तिनहींहोसकती ॥ समाधान ॥ हेवादिन्शब्द

प्रमाणकोमूलहोनेकरमनकोप्रमाणतानहींसंभवती । क्योंकिअपरोक्ष रूपतासेवेदतिसकोबोधननहींकरता । ऐसातुममानतेहो । औरपरस्पर संमतिकेअर्थ जैसाज्ञानमनउत्पन्नकरताहै तैसाहीयदिशब्दनेभीउत्पन्न किया । तोदोनोंमेंएकको अप्रमाणताअवश्यहोगी । क्योंकिअनधि गतअर्थत्वकाअभावहै । औरइसअप्रमाणतादोषकेदूरकरनेकेलियेयदि शब्दकोपरोक्षज्ञानकाजनकमानोगे । तोतिसकेसाथविरोधहोनेसेपुनः मनकोअप्रमाणताहोगी ॥ शंका ॥ तत्त्वमस्यादिवाक्यपरोक्षज्ञानके जननस्वभाववालाहुआभी आत्माविषयक अपरोक्षाकारज्ञानकोही उत्पन्नकरेगा । क्योंकिब्रह्मात्मामेंअपरोक्षरूपताविद्यमानहै । औरतिस शब्दकेसाथसंवादहोनेसे मनकोअप्रमाणताभीनहींहोसकती । क्यों किधारावाहिकज्ञानोंकीन्याईं तिसमेंप्रमाणताहोजायेगी॥ समाधान॥ हेवादिन्यहकथनभीतुम्हारानहींसंभवता । क्योंकिवेदशब्दस्वरूपहै। वहअपरोक्षज्ञानकेउत्पन्नकरनेकोसमर्थनहीं । तिसकोपरोक्षज्ञानके उत्पन्नकरनेकाहीस्वभावहै । यदिऐसेनमानेतो [पर्वतोवन्हिमान्] इसप्रतिज्ञावाक्यसेपरोक्षवन्हिविषयक "अयंवन्हिः" यहअपरोक्षाकार प्राप्तहोगा । तिसकारणसेपरोक्षाकारज्ञानकेउत्पन्नकरनेकाहीशब्दका स्वभावहै । यहवार्त्तासुरेश्वराचार्योंनेभीकहीहै ॥

❀स्वभावतोऽखिलंवाक्यंसंसर्गात्मकमेवहि ।
परोक्षवृत्त्याचतथावस्तुबोधयतिस्वतः ॥१॥❀

अ० ॥ सर्ववाक्यस्वभावसेसंसर्गरूपताकोहीबोधनकरताहै । औरतैसेहीपरोक्षरूपताकरपदार्थकोस्वभावसेशब्दबोधनकरताहै ॥१॥ इति ॥ औरआत्मसाक्षात्कारकेप्रतिमनकोकरणमानेहुएआत्माको

मनवाणीकी अविषयताकहनेवालीश्रुतिका विरोधभी निवारणकरना कठिनहोगा। यद्यपियहश्रुतिअशुद्धमनकीविषयताकोनिषेधकरतीहै। यहपूर्वकथनकियाहै । तथापिऐसीव्यवस्थामाननेमेंलक्षणाकीप्राप्ति होगी । औरवहलक्षणामुख्यार्थमेंकिसीबाधककेविद्यमानहुएहीयुक्त होतीहै । अन्यथानहीं । यातेश्रुतिकाविरोधदुर्वारहै । यद्यपिआत्मा मेंश्रुतिरूपशब्दकीविषयतामाननेमेंभीश्रुतिका विरोधतुल्यही प्राप्तहोता है ॥ तथापि

※वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः । उ० मुं० ३ खं० २ मं० ६※

अ० ॥ वेदांतजन्यज्ञानकरब्रह्मात्मारूपअर्थजिनअधिकारिपुरुषों कोभलीप्रकारनिश्चितहै । इत्यादिकश्रुतिप्रमाणसेब्रह्मसाक्षात्कारकी करणतावेदांतवाक्योंकोप्रतीतहोतीहै।और (यतोवाचोनिवर्तंते) इत्यादि वाक्यसेशब्दको आत्मसाक्षात्कारकीकरणताका निषेधप्रतीत होताहै । इसप्रकारदोनोंवचनोंकापरस्परविरोधहुएक्या ? दोनों मेंएक वचनकोअप्रमाणताहोगी। अथवादोनोंवचनोंकासमुच्चयस्वीकारहै। अथवायहांकोईव्यवस्थाहै । औरब्रह्मसाक्षात्कारमें वेदांतविकल्पसे करणहैं इसपक्षकायहांउपन्यासनहींकिया। क्योंकिविकल्पकायागादि क्रियामेंहीसंभवहै। वस्तुमेंविकल्पनहींहोता । तहांप्रथमपक्षतोनहीं संभवता। क्योंकिदोनों मेंवेदवाक्यतातुल्यहै । यातेएककोअप्रमाण नहींकहसकते। औरसमुच्चयपक्षभीनहींसंभवता। क्योंकिविरुद्धों कासमुच्चयतेजतिमरवत्अयोग्यहै । इसप्रकारदोनोंपक्षोंकेअसंभव हुएतृतीयपक्षहीशेषरहताहै। यातेव्यवस्थासेहीविरोधकापरिहारकर्तव्य है । सोईदिखलातेहैं । तहांनिषेधश्रुतितोशब्दकीशक्तिवृत्तिसेजो

आत्मामेंप्रवृत्तिहै । तिसकानिषेधकरतीहै । औरवेदांतोंकोकरणता कहनेवालीश्रुति लक्षणावृत्तिसे तिसआत्मामेंशब्दकी प्रवृत्तिकोबोधन करतीहै । यातेंकिंचितमात्रभीश्रुतिकाविरोधहमारेपक्षमेंनहीं । यह अर्थसिद्धहुआ ॥

अथपुनःपूर्वपक्ष महावाक्योंमेंलक्षणाकानिषेध

ब्रह्मात्माकेअभेद साक्षात्कारमें तत्त्वमस्यादिआगमकोलक्षणा वृत्तिसेकरणताहै यहपूर्वसिद्धांतीनेकथनकिया । तिसमेंलक्षणावृत्ति सेआत्मामेंशब्दकीप्रवृत्तिको वादीनिषेधकरताहै । हेसिद्धांतिन्तत्त्व मस्यादिमहावाक्योंमें जोतुमनेलक्षणाकथनकी सोअयुक्तहै।क्योंकि भागत्यागलक्षणासे वाच्यार्थकेएकदेशकाग्रहणकरेहुए श्रुतअर्थका परित्यागप्राप्तहोगा । तात्पर्ययहहै किप्रथममहावाक्योंमेंजहत्लक्षणा तोनहींसंभवती । क्योंकिवाच्यार्थकेएकदेशरूप आत्माकाग्रहणहै । औरजहत्लक्षणामें समग्रवाच्यअर्थकात्यागहोताहै । औरअजहत् लक्षणाभीनहींसंभवती । क्योंकिपरोक्षत्वादिवाच्यार्थके एकदेशका परित्यागहै ॥ औरतिसमेंवाच्यार्थसे अधिकअर्थकाग्रहणहोताहै । औरजहत्अजहत्लक्षणाकाभीसंभवनहीं। क्योंकिवाच्यार्थकेएकदेश मेंलक्षणामें शब्दकीप्रवृत्ति होनेकर वाच्यके एकदेशरूपशुद्धसच्चि दानन्दस्वरूपआत्माकाग्रहणस्वीकारकरें तो"तत्"तथा"त्वं"इनदोनों पदोंकेसामानाधिकरण्यके बलमेंश्रवणकिया जोपरोक्षतथाअपरोक्ष औरसंसारीतथाअसंसारीका अभेदरूपअर्थ तिसका परित्यागहोगा । यातेंभागत्यागलक्षणाभी महावाक्योंमेंनहींसंभवती ॥ शंका ॥ एक विभक्तिअंतकथनकियेजोपदहैं । तथाप्रवृत्तिकानिमित्तजिनमेंभिन्न

है। तिनपदोंकीजोएकअर्थमेंनिष्ठाहै। इसीकोसामानाधिकरण्यकहते हैं। पर्य्यायपदजो एकविभक्तिअंतहैं तिनमेंसामानाधिकरण्यकीप्राप्ति केनिवारणअर्थ "प्रवृत्तिकानिमित्तजिनमेंभिन्नहै "यहपदलक्षणमेंकहा है। यहसामानाधिकरण्य "तत्त्वमसि" इनदोनोंपदोंमेंभीहै। क्योंकि एकविभक्तिअंतभीहैं। औरतिनकी प्रवृत्तिकानिमित्तभीभिन्नभिन्नहै। औरएकअर्थमेंनिष्ठाभीहै॥ यातेदोनोंपदोंकेसामानाधिकरण्यकेपरा मर्शसेअनंतरपदार्थोंका अभेदरूपवाक्यार्थप्रतीतहोताहै। औरवहअभेद संसारीऔअसंसारीरूपतासेविरुद्धस्वभाववालेजीवतथापरमात्माकानहीं संभवता। इसप्रकारमुख्यार्थकेअसंभवसे (अर्द्धंत्यजतिपंडितः) अ०॥ विरोधकेप्राप्तहुएपंडितजनआधाभागत्यागदेताहै। इसन्यायसे विरुद्धअंशकोत्यागकरअविरुद्धअंशके अभेदको महावाक्यलक्षणासे शोधनकरताहै। ऐसामाननेमेंकोईदोषनहीं॥समाधान॥ हेसिद्धांतिन्यह आपकाकथनभीसमीचीननहीं। क्योंकिश्रुतिसिद्धअर्थमें अनुपपत्ति

काअभावहै॥अर्थयह किवेदनेजोअर्थकथनकियाहै वहग्रहणकरनेको हमसमर्थहैं। तिसअर्थमेंकिसीप्रकारकी प्रेरणाअर्थात्यहवेदऐसेक्यों कहताहै ऐसेनहींकरसकते। औरवहवेदसंसारीतथाअसंसारीकेअभेद कोग्रहणकराताहै। यातेवहअभेदअनुपपन्ननहीं। औरअनुपपत्तिके अभावसे लक्षणाकाभीअभावहै॥ शंका॥ हेवादिन्जैसेलौकिक वाक्य प्रत्यक्षादिप्रमाणांतरकेसाथ विरोधकाअभावकरकेही स्वार्थको प्रतिपादनकरताहै। तैसेवेदवाक्यभीप्रतिपादनकरताहै। इसकानामलोक वेदअधिकरणन्यायहै॥ इसन्यायसेवेदभीलौकिक वाक्यकीरीतिसेही स्वार्थकोग्रहणकराताहै॥ औरलौकिकवाक्य प्रमाणांतरके विरोधका

अभावहुए स्वार्थकाबोधकहोताहै। औरप्रकरणमें प्रत्यक्षादिकोंकाविरोध प्राप्तहै। क्योंकि सर्वज्ञतादि धर्मविशिष्ट ईश्वरका तथा अल्पज्ञतादि धर्मविशिष्टजीवका परस्परभेद "नाहमीश्वरः" इत्यादिप्रमाणोंसे सिद्धहै। तिनके साथविरोध दूरकरनेकेलिये तिनकेभेदको त्याग कर शुद्धचिन्मात्रका अभेद लक्षणासे वेदबोधनकरेगाइसमें कोईदोष नहीं ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् यहकथनभी आपकासमीचीननहीं क्योंकिश्रुतिकेविरोधसे भेदग्राहिप्रमाणकोही अप्रमाणताहोजायेगी। यहांयहतात्पर्य है। लौकिकवाक्य अपनेअर्थकेबोधनकरनेमें प्रमाणां तरके अविरोधकीअपेक्षाकरताहै। यहकथनतोसंभवताहै। क्योंकि लौकिकवाक्य तथाअन्यप्रमाण इनदोनोंमें लौकिकपनातुल्यहै।और वेदतोअपौरुषेयहोनेसे प्रबलहै।अपनेअर्थकाविरोधीजोप्रमाणांतर तिस कोबाधकरदेगा। तिसकारणसे स्वार्थकीअनुपपत्तिनहीं। यातेमहा वाक्योंमें भागत्यागलक्षणाभी नहींसंभवती ॥ शंका ॥ हेवादिन् जिसकिसीप्रकारसे प्रमाणांतरकोबाध नकरके यदिअपनी प्रमाणता अर्थात्स्वार्थकीबोधकता वेदमें संभवहोजाय तोप्रयोजनसे विनाइतर प्रमाणकाबाध किसलियेकरनाहै।किंतुतिसकाबाधकरनायोग्यनहीं ॥ समाधान॥ हेसिद्धांतिन्यदिइतरप्रमाणका बाधनहींमानोंगे तोअखंड तथासंसर्गसेरहिततथासजातीय आदिकभेदसेरहित जोअद्वयब्रह्मवही सर्वकाअंतरात्माहै। इसप्रकारजोलक्षणासेबोधनकरनाहै। वहभी नहींसंभवेगा। क्योंकिसजातीयआदिसर्वभेदकेबोधकजोप्रत्यक्षादिक प्रमाणहैं। तिनकेसाथविरोधविद्यमानहै। तिससेप्रमाणांतरकाबाध श्रुतिकाअवश्यहोनाचाहिये। यातेप्रथमहीश्रुतिमुख्यार्थकेविरोधि

प्रमाणांतरकोबाधकरेगी । लक्षणासेतिसको अन्यअर्थपरत्वयुक्त नहीं । किंवा ॥

❋ मानांतरविरोधेतुमुख्यार्थस्यपरिग्रहे ।
मुख्यार्थेनाविनाभूतेप्रवृत्तिर्लक्षणोच्यते ❋

अ० ॥ मुख्यार्थकेपरिग्रहणकरनेमें जहांप्रमाणांतरकाविरोधहो तहांमुख्यार्थकेसाथसंबंधवालाजोअर्थहै तिसमेंशब्दकीवृत्तिकोलक्षणा कहतेहैं । यहलक्षणाकास्वरूपजाननेवालेवृद्धपुरुषोंकीमर्य्यादाहै । इसलियेशक्यसंबंधिअर्थमेंहीलक्षणाहोतीहै । औरयहांतत्त्वमस्यादि वाक्योंमें वाच्यार्थकेसाथ संबंधवालाकोईपदार्थ हैनहीं ।क्योंकिशुद्धा त्मातोसंसर्गसेरहितहै । औरतिसशुद्धात्माकोही तुमलक्ष्यअर्थ मानतेहो । तिसमेंलक्षणानहींसंभवती ॥ शंका ॥ यद्यपिलक्ष्यार्थ असंसर्गी है तथापि वाच्यार्थ जोविशिष्टहै वहतोसंसर्गी है । वही लक्ष्यार्थकेसाथबलात्कारसे संबंधवालाहोजायेगा ॥ समाधान ॥ संबंधदोनोंपदार्थोंकेआश्रितरहताहै । एकपदार्थकोअसंसर्गीहुएइतर पदार्थकरनिरूपणाकरनेयोग्यसंबंधकीअयोग्यताहै।औरअसंसर्गिपदार्थ लक्ष्यनहींहोसकता । क्योंकितैसाकहींदृष्टनहीं जोअसंसर्गिपदार्थ भीलक्ष्यहो । किंतुवाच्यार्थकेसंबंधीमेंहीलक्षणालोकमेंदेखीजाती है ॥ किंवा ॥ लक्ष्यजोचेतनमात्रतुममानतेहो वहकिसीपदकावाच्यहै वानहीं । प्रथमपक्षकहो तोजैसेवहशब्दशक्तिवृत्तिसेशुद्धचिदात्मा मेंप्रवृत्तहोगया । तैसे "तत्त्वं" पदभीशक्तिवृत्तिसेप्रवृत्तहोजायेंगे फिर लक्षणामाननेकाक्याप्रयोजनहै । औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता ॥ क्योंकिसर्वप्रकारसे जोअवाच्यअर्थहै। वहलक्षणासेबोधनकियाजाना

है यहकहींभीनहीं देखा । यातेलक्ष्यपदार्थमेंमूकताप्रसंगहोगा । क्योंकिकोईपदतिसकावाचकनहीं ॥ शंका ॥ हेवादिन् लक्ष्यार्थमें मूकताकीप्राप्तितुमक्योंकहतेहो।जिसकारणसेलाक्षणिकपदसेही तिस काकथनहोजायेगा ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन्लक्ष्यकाबोधकजो पदहै । वहलक्षणावृत्तिसेप्रवृत्तहोताहै। ऐसामानेहुए तिसकेलक्ष्यका बोधक कोईअन्यपदकहनेयोग्यहै । औरवहपदभी लक्षणासेहीप्रवृत्त होगा । इसप्रकारतिसतिसलक्ष्यकेबोधक औरऔरपदमाननेमें अनव स्थादोषकीप्राप्तिहोगी ॥ किंवा ॥ "तत्" औ "त्वं" इनदोनोंपदों कालक्ष्यक्या? एकहै।अथवाभिन्नहै। प्रथमपक्षकहो तोदूसरापदव्यर्थ होगा । क्योंकिएकपदसेही लक्षणावृत्तिकरकेप्रत्यक्तथाब्रह्मकेअभेद रूपलक्ष्यअर्थकाजोसाक्षात्कारतिसकीसिद्धिहै ॥ शंका ॥ हेवादिन् दूसरेपदकीव्यर्थताकिसलिये तुमकहतेहोकिंतुनहींकहमकते। क्योंकि साक्षात्कारको प्रमापनातबसिद्धहोगा।जबकोईवाक्यरूपप्रमाणहोऔर वहवाक्यदोनोंपदोंसेहीसंभवताहै । इसप्रकारप्रमाणताकीसिद्धिअर्थ अपेक्षितवाक्यत्वका निर्वाहकहोनेकर द्वितीयपदभीसफलहै निष्फल नहीं॥ समाधान ॥दोनोंपदोंकाएकअर्थमानेहुए पदार्थांतरकाअभाव होनेकर संसर्गरूपवाक्यार्थ पदार्थसेभिन्नसिद्धनहींहोगा। क्योंकिपदों कोसमानार्थकहोनेकर पर्यायताकीप्राप्तिहै । यातेद्वितीयपदकाप्रयोग होनेसेभी वाक्यत्वकानिर्वाहनहींहोसकता॥ शंका ॥ यद्यपिसामान्य रूपतासेलक्ष्यएकहीहै। तथापितिसलक्ष्यमें किसी विशेषअंशकोलेकर दूसरापदप्रवृत्तहोजायेगा । इसप्रकारअपर्यायताहोनेसे वाक्यत्वकैसे नहींहोसकता ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् लक्ष्यकोसामान्यविशेष

भावकासंसर्गीमानेहुए अखंडवाक्यार्थत्वकीहानिहोगी। औरअखंड वाक्यार्थत्वकीहानिसेही द्वितीयपक्षभीअसंगतहै। औरलक्षणाकी व्यर्थता द्वितीयपक्षमें औरअधिकदोषप्राप्तहोताहै॥ शंका॥ लक्षणा काअभावतुमक्यों कथनकरतेहो। क्योंकिभिन्नपदार्थोंकेअभेदकोभीवेद लक्षणासेबोधनकरदेगा॥ समाधान॥ विरुद्धधर्मवालेपदार्थोंका अभेदनहींसंभवता। इसकारणसे लक्षणाकरकेभी भिन्नोंकेअभेदको तात्पर्यवृत्तिसे वेदनहींबोधनकरसकता। क्योंकिप्रमाणवस्तुकाउत्पादक नहींहोता। किंतुविद्यमानवस्तुकाज्ञापकहोताहै। औरभिन्नपदार्थों काअभेदवास्तवसेहोतानहीं। लक्षणासेभीवेदकिसकोबोधनकरेगा। अबमहावाक्योंमेंलक्षणाकाअभाव औरहेतुसेपूर्वपक्षीउपपादनकरताहै॥ किंवा॥ जैसेमीमांसकमतमेंभव्यपदार्थजोअदृष्ट तिसकेअर्थभूत पदार्थव्रीहिआदिकोंका उपदेशकियाजाताहै। तैसेवेदांतमतमेंनहीं॥ किंतु भूत पदार्थ जो आत्मा तिसकी प्राप्तिके अर्थ भव्यपदार्थ जो श्रवणादि तिनकाउपदेश कियाजाताहै। यहांसिद्धपदार्थकानामभूत है। औरसाध्यपदार्थकानामभव्यहै॥ तिसकारणसेवेदांतशास्त्रमें "तत्त्व मस्यादिमहावाक्य सच्चिदानंदस्वरूप सर्वकाशेषी जोचिदात्मा तिसके प्रतिपादकहोनेकर प्रधानवाक्यकहेजाते हैं॥ तिनसेभिन्नजोश्रव णादिकोंकेबोधकवाक्यहैं वहमहावाक्योंको अपेक्षितअर्थका समर्पक होनेकर उपकरणहोनेसे तिनकाअंशभूतगौणवाक्यहैं॥ शंका॥ महावाक्योंकोप्रधानताहो परंतुतिससेक्यासिद्धहोताहै॥ समाधान॥ इसप्रकारमहावाक्योंको प्रधानवाक्यताकेहुए तिनमें लक्षणाकासंभव किसरीतिसेहोसकताहै। किंतुकिसीरीतिसेभीनहीं॥ यहसिद्धहोताहै।

शंका ॥ हेयादिन्इसमेंक्या विलक्षणताहै ॥ जिसवाक्यमें अनुपपत्ति हो तिसीमेंलक्षणा संभवहोसकतीहै ॥ समाधान ॥ प्रधानवाक्यों में जिनगौणवाक्योंका अर्थ असमवेतहै । तिनको प्रधानवाक्योंके अनुसारिरूपताकर व्याख्यानकरनेकेलिये गौणवाक्योंमेंहीलक्षणाका संभवहै ॥ प्रधानवाक्योंमेंनहीं । यद्यपिदोनोंवाक्योंमें वेदपनातुल्य है । यातेप्रधानवाक्योंमेंभीलक्षणासंभवतीहै। तथापिन्यायकाविरोध होनेसेतिनमेंलक्षणाकाअसंभवहै।सोन्यायपूर्वमीमांसाकेनवमअध्याय में महर्षिजैमुनीजीनेकहाहै ॥

❀ विप्रतिपत्तौविकल्पः स्यात् समत्वात् । गुणेत्वन्याय कल्पनेकदेशत्वात् । पू०मी०(६)(३)१५)

अ० ॥ अग्निषोमीयएकपाशवालेपशुसंबंधियागके प्रकरण में (पाशान्) और (पाशं) यहदोमंत्रश्रवणकियेहैं । तहांबहु वचनांतमंत्रक्या?प्रकरणसे उत्कर्षणकरनेयोग्यहै वानहीं॥ इसप्रकार संशयकेप्राप्तहुए तहांयहपूर्वपक्षप्राप्तहुआ॥ (पाशं) औ (पाशान्) इनदोनोंमंत्रोकायहांपरविकल्पहै । क्योंकिपाशजोप्रातिपदिकहै ॥ वहदोनोंमंत्रोंमेंसमानहै॥ यातेमंत्रकाप्रकरणसेउत्कर्ष है। (सिद्धांत) यहां अग्नीषोमीयमेंसमवेत अर्थहोनेकर पाशवाचिप्रातिपदिकप्रधानहै। तिसकेअनुसारीहोनेसे बहुवचनवाचिप्रत्ययगौणहै । यातेतिसगौण प्रत्ययमेंलक्षणाकरके वहपाशकेअवयवोंकोकहताहै । इसलियेगौण शब्दमेंहीलक्षणाकीकल्पनाहोतीहै । तिसकेबलसेमंत्रकाप्रकरणसे उत्कर्षनहींहोसकता । क्योंकिप्रत्ययकोपदकाएकदेशहोनेसेप्रातिपदि ककेआधीनहोनेकर उत्कर्षताकीअयोग्यताहै। इसन्यायसेगौणवाक्य

मेंहीलक्षणायुक्तहै ॥ प्रधानमेंनहीं ॥ इति ॥ अबपूर्वपक्षीसिद्धांत मुद्राकोआश्रयणकरकेएकदेशीकामत निराकरणकरनेके लियेतिसको दिखलाता है।

* अथएकदेशीकी रीतिसेमहावाक्योंमें लक्षणाका निषेध ॥ *

यहांकोईएकदेशीवेदांतीयहकहतेहैंकितत्त्वमस्यादिमहावाक्योंमें हमलक्षणाहीनहींमानते।यातेलक्षणाकानिषेधहमारेमतमेंअनिष्टनहीं। औरयहजोसिद्धांतीकहताहै।किलक्षणाकाअभावमानेहुएमहावाक्योंमें सामानाधिकरण्य कैसेसंभवेगा । क्योंकि जिनपदोंकी प्रवृत्तिका निमित्तभिन्नभिन्नहै।तिनकीएकअर्थमेंवृत्तिकाअभावहै। औरलक्षणासे विनाजीवतथा परमात्माकासामानाधिकरण्यकोईभीसंभावनाकरनेको समर्थनहीं । यहांसामानाधिकरण्यएकताकानामहै अथवाजीवतथा परमात्माइनदोनोंशब्दोंकरकेतिनकेवाचकपदोंकाग्रहणकरना लक्षणा केअनंगीकारसेतिनकासामानाधिकरण्यनहींसंभवेगा॥यातेमहावाक्यें मेंलक्षणाअवश्यमानीचाहिये। सोयहकथनभीसमीचीननहीं। क्योंकि रज्जुसर्पकीन्याईएककाबाधकरकेभीवहसामानाधिकरण्यबनसकताहै। अबइसीअर्थकोस्पष्टकरतेहैं। "सर्पोरज्जुः" प्रथमइसवाक्यमेंदोपदहैं। सोदोनोंएकविभक्तिअंतहुएएकहीअर्थकोकथनकरतेहैं । क्योंकिसर्प का अनुवादकरकेरज्जुकाविधानहै । सोरज्जुकाविधानसर्पकास्वरूप विद्यमानहुएनहींकरसकते । किंतुसर्पकास्वरूपसर्पपदसेअनुवादके बहानेसेबाधकरकेरज्जुकास्वरूपमात्रशेषरहताहै। इसप्रकारएकहीअर्थ मेंदोनोंपदोंकीवृत्तिहोनेसे जैसेसामानाधिकरण्यसंभवताहै । तैसेही

"त्वं" इसपदसेजीवकोबाधकर "तत्" पदसेशेषरहेब्रह्ममात्रकाप्रतिपादनहै । इससेदोनोंपदोंकोएकअर्थमेंवृत्तिहोनेकरसामानाधिकरण्य संभवताहै ॥ शंका ॥ हेएकदेशिन्इसप्रकारबाधसामानाधिकरण्य मानेहुएभी दोनोंपदोंकीएकअर्थमेंवृत्तिनहींसंभवती । क्योंकितिनमें यद्यपिपरमात्मपद चिदात्माकाउपस्थापकहै।तथापित्वंपदजीवाभावका बोधकहै । तैसेमानेहुए भिन्नअर्थवालेपदोंकी एकअर्थमेंवृत्तिकैसेकहते हो ॥ समाधान ॥ कल्पितपदार्थकाअभावअधिष्ठानसेभिन्ननहींहोता यातेजीवाभावअधिष्ठानब्रह्मस्वरूपहै । इसकारणसेदोनोंपदोंकीएक अर्थमेंवृत्तिसंभवतीहै ॥ शंका ॥ यद्यपिदोनोंपदों मेंलक्षणानहींभीहै तथापिब्रह्मपदमेंयहलक्षणापरिहारकरनाकठिनहै । क्योंकिविशिष्ट पदार्थमेंशक्तिवालाजोपदतिसकोशुद्धपदार्थकीउपस्थितिमेंलक्षणाकी अवश्यअपेक्षाहै ॥ समाधान ॥ जैसे सत्यादिपदशक्तिवृत्तिसेशुद्धके उपस्थापकमानेहैं । तैसेतत्पदसेभीशुद्ध कीउपस्थितिबनजायेगी । लक्षणाकाअंगीकारनिष्फलहै ॥ शंका ॥ पूर्वउक्तरीतिसेतत्पदसे शुद्धकीउपस्थितिमानेहुए "तत्त्वमसि" महावाक्यमेंजीवकेस्वरूपका बाधकरनाअयुक्तहै। क्योंकिइसवाक्यमेंतत्पदार्थ काप्रथमनिर्देशहोने करतिसको अनुवादके योग्यहोनेसे तत्पद काबाधकरके जीवत्वका विधानहै । यद्यपि प्रथमकथन किये पदार्थको अनुवादके योग्यमानेहुए "अयमात्माब्रह्म" इसमहावाक्यमें क्यागति होगी । क्योंकितिसमेंजीवकाहीबाधप्रतीतहोताहै ॥ तथापिएकअर्थकेनि स्चायकयुक्तिमेंकोईहेतु नहींप्रतीतहोता । इसलियेयदिजीवपक्ष पातीब्रह्मकेहीबाधकहो अशंकाकेसोनेनकपुरुषकेआगकीन्याई अयुक्त

पार्थस्वरूपजीवमें तात्पर्य्यवालाहुआशास्त्रभी अप्रमाणरूपहोगा । समाधान ॥ यहतुम्हारीआशंकानहींसंभवती । क्योंकिब्रह्मपदार्थके स्वरूपमेंप्रमाणरूपसत्यादिवाक्यकाविरोधहोनेसेत्रिनिगमनाविरहदोष नहींप्राप्तहोसकता ॥ औरजीवभीशेष नहींरहता । तात्पर्ययह (सत्यंज्ञानमनंतं ब्रह्म ।) इसमंत्रसेब्रह्मकी सत्यरूपताके निश्चयहुएपरिशेषसेसंसारीजीवकाहीबाधहोताहै ब्रह्मकानहीं । यातें शास्त्रकोअप्रमाणतानहीं होती ।

❋ अथएकदेशीकेमतसेजीवके स्वरूपकाविचार ❋

शंका॥हेएकदेशिन्‌जिसजीवकाआपबाधकहतेहो । वहक्या? चिदात्माहीजीवहै । अथवावहजडपदार्थ है । प्रथमपक्षमें तोब्रह्मका हीनामजीवहै । यातेबाधकाअसंभवहै । और द्वितीय पक्षमें जडघटादिकोंके तुल्य तिसजीवमें भोक्तापनेका अभावहोगा । क्योंकिभोक्तापनाचेतनमेंही होताहै ॥ समाधान ॥ यहपूर्वउक्त दोषहमारेपक्षमेंनहींप्राप्त होसकते ॥ क्योंकितिसजीवकोचेतनका आभासहोनेकर प्रसिद्धजडचेतनसे विलक्षणअनिर्वचनीयपनाहै । अस्वप्रकाशहोनेसेचैतन्यसेभीविलक्षणताहै । औरभोक्ताहोनेसेतथा चैतन्यकीन्याईभासमानहोनेसे इसकोचैतन्याभासकहतेहैं यातेजडसे भीविलक्षणहै । यहांपरयहअनुमानभीजानना ।

जीवोनब्रह्मअस्वप्रकाशत्वात घटवत् ॥ १ ॥

जीवोनजडःभोक्तृत्वात् । व्यतिरेकेणघटवत् ।२॥

अ०॥जीवब्रह्मनहीं है अस्वप्रकाशहोनेसे जोजोस्वप्रकाशनहीं है।सोसो ब्रह्मअर्थात्‌चेतनभीनहींहै ॥ जैसेघटहै ॥१॥ औरजीवजडनहीं है

भोक्ताहोनेसे जोजडहै । सो भोक्तानहीं है।जैसे घटहै ॥२॥ इति ॥ शंका ॥ चैतन्यकोरूपरहितहोनेसे तिसकाआभासजीवहै यहकथन हीनहींसंभवता । क्योंकिरूपरहितवायुका आभासकहींभीदेखनेमें नहींआता ॥ समाधान ॥ रूपरहितचैतन्यकाभीप्रतिबिंबसंभवताहै। क्योंकिरूपरहितआकाशका स्वच्छजलमें आभासदेखनेमें आताहै । औरदृष्टअर्थमेंकोईभी अनुपपत्तिनहींहोसकती ॥ शंका ॥ जलमेंआ काशकाप्रतिबिंबनहींसंभवता । क्योंकिवहनीरूपहै । औरजलमेंजो तिसकेअभासकीप्रतीतिहै । वहतोआकाशवर्त्तीजोसूर्य्यकीकिरणोंतिन केआरोपसेहोतीहै । ऐसेतुमनिश्चयकरो। यातेजीवचैतन्यकाआभास नहीं ॥ समाधान ॥ स्वल्पजलमेंऔरअगाधजलमें महाकाशकी प्रतीतिहोतीहै । इसहेतुसेकामनासेविनाभी पुरुषनेऊर्ध्वदेशवर्त्तीआका शकाप्रतिबिंबस्वीकारकियाचाहिये ॥ऊर्ध्वदेशवर्त्तीमहाकाशकेआभास सेविनाअल्पगंभीरतावालेस्वच्छजलमेंमहत्परिमाणगंभीरताकाभ्रमनहीं संभवेगा तिसकारणसे जलमेंआकाशकाआभासविद्यमानहीहै। याते चेतनकाआभासरूपजीवकैसेनहींसंभवता । किंतुसंभवताहै ॥ पूर्व उक्तयुक्तिसेसिद्धचिदाभासरूपजीवकोश्रुतिप्रमाणसेभी सिद्धकरतेहैं। (रूपंरूपंप्रतिरूपोबभूव ।) श्र० ॥ *हरएकउपाधिमेंचिदा त्माप्रतिबिंबभावकोप्राप्तहुआ* । इसश्रुतिसेभीचिदाभासरूपजीवकी सिद्धिहै ॥ शंका ॥ हेएकदेशिन्संसारिजीवकोबाधकियेहुएभी आत्मा कीमुक्तिनहींसिद्धहोसकती । क्योंकिमूलसहित अनर्थरूपजोबाह्य संसारहै तिसकातो उच्छेदहुआनहीं । समाधान॥ (इदंसर्वंयद यमात्मा ।) श्र०॥ जोयहसर्वदृश्यहैसोयहआत्मारूपहीहै । इस

वाक्यकरिअज्ञानततकार्यरूप सकलअनर्थरूप संसारकेबाधहुएकेवल आनंदस्वरूपपरमात्माही मुक्तिकालमेंशेषरहताहै। यातेंचैतन्याभास पक्षहीश्रेष्ठहै ॥ इतिएकदेशिमतम् ॥

❋ अथमहापूर्वपक्षीकीरीतिसे सिद्धांतमुद्राको आश्रयणकरएकदेशीके मतकाखंडन। ❋

अविद्योत्थंचिदाभासं जडाजडविलक्षणम्।
जीवंयेबाध्यमित्याहुस्तानाचार्य्यो निषेधति॥ १॥

चौ०—जडचिदभिन्नजीवहै जोई। अविद्यक चिदाभासहै सोई॥
ताकोबाधजोउ नररहैं। तिनेनिषेध आचार्य करहैं॥ १॥

समाधान॥ यहएकदेशीकामत समीचीननहीं। क्योंकि बंधतथामोक्षको व्यधिकरणताकी प्राप्तिहोतीहै॥ तथाहि प्रथम भोक्तातोजीवहीहै। क्योंकि "मैं सुखीहूं" यहप्रतीतिजीवमेंहोतीहै॥ औरअपनेमेंसमवेतसुखके साक्षात्कारवालेकोही भोक्तापना होताहै। औरवहभोक्तृत्वकर्तृत्वसेविनानहींसंभवता। क्योंकिकर्त्ताहीभोक्ता होताहै। औरवहकर्तृत्वप्रमातृत्वसेविनानहींसंभवता। क्योंकिप्रथम यहपुरुषकिसीवस्तुकोजानताहै। पुनःतिसकीइच्छाकरताहै। तिससे अनंतरतिसकीप्राप्तिकेनिमित्तकोईक्रियाकरताहै। यहवार्त्तासर्वलोकों मेंप्रसिद्धहै। तिसकारणसे भोक्ताभोगभोग्य औकर्त्ताक्रियाकर्मतथा प्रमाताप्रमाणप्रमेय यहनवप्रकारकाबंधजीवनिष्ठहीहै। तिसजीवऔ अज्ञानकाबाधहोनेकरमोक्षदशामें निरावरणसुखस्वरूपतासेअवस्थिति रूपमुक्तिपरमात्माकीहोगी। इसप्रकारबंधतथामोक्षकीव्यधिकरणता है। सोनहींसंभवती। क्योंकिबद्धहीमुक्तहोताहै। बद्धअन्यहोऔर

मुक्तअन्यहो यहनहींहोसकता । किंवायदिजीवकाबाधमानोंगे । तो श्रवणादिसाधनों मेंकौनप्रवृत्तहोगा ॥ औरयदिऐसेकहो । किमोक्ष कीइच्छावालामुमुक्षु तिनसाधनों मेंप्रवृत्तहोगा । तोहमयह पूछतेहैं । वहकिसकामोक्षचाहताहै । क्या ? किसीअन्यपुरुषका मोक्षचाहताहै। अथवाअपनामोक्षचाहताहै। प्रथमपक्षतोनहींसंभवता क्योंकिदूसरेकीमुक्तिकेअर्थकोईअन्ययत्नकरताहै । यहकहींदृष्टनहीं। औरयदिद्वितीयपक्षकहो तोतिसमेंयहविचारकर्तव्यहै । क्या ? अपना नाशपुरुषार्थ है । अथवास्वदुःखकीनिवृत्तिपुरुषार्थ है । इनमेंभीप्रथम पक्षमेंयहविचारणीयहै। अपनानाशक्या?स्वतः पुरुषार्थरूपहै।अथवा पुरुषार्थकासाधनहै । प्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिस्वनाशसुख तथादुःखाभावसेभिन्नहै । यातेतिसकोपुरुषार्थरूपतानहींसंभवती । औरयदियहद्वितीयपक्षकहो। किदुःखकाउपादानकारणजीवहै। और उपादानकानाशकार्यकेनाशमेंहेतुहोताहै । यातेजीवकेनाशसेदुःख निवृत्तहोताहै । इसप्रकारदुःखाभावपुरुषार्थरूपहै तिसकासाधनहोने सेस्वनाशभीपुरुषार्थरूपहै । सोयहपक्षभीसमीचीननहीं । क्योंकि केवलदुःखाभावकोहीतुमपुरुषार्थरूपकहतेहो । अथवाआत्मीयदुःखा भावकोकहतेहो । इनमेंप्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिशत्रुके दुःखाभावकोभी पुरुषार्थरूपताहुईचाहिये ॥ औरद्वितीयपक्षभीनहीं संभवता ॥ क्योंकि आत्माकानाशहोनेसे यहदुःखाभावरूपपुरुषार्थ किसकोप्राप्तहोगा॥ औरअपनेआत्माकेनाशकायत्नकोईभीकरतानहीं औरआत्मीयदुःखाभावपुरुषार्थहै ॥ इसपक्षकेनिराकरणसेस्वदुःखकी निवृत्तिपुरुषार्थहै ॥ यहप्रथमकथनकियाद्वितीयपक्षभी निरासहुआ

जानलेना ॥ यातेजीवकाबाधनहींसंभवता ॥ पूर्वआत्माकाबाधमान कर अभासपक्षमेंबंधमोक्षादिव्यवस्थाकी अनुपपत्तिप्रतिपादनकी। अब जीवात्मा के असत्यत्वका अभावहोनेसेतिसकाबाधहीनहींसंभवता॥ इस अर्थकोप्रतिपादनकरतेहैं ॥ औरजीवात्माकल्पितभीनहीं ॥ यौंकि जोवादीजीवात्माकोकल्पितमानताहै ॥ तिसकोहमयहपूछतेहैं ॥ किजीवकेसत्यत्वकाग्राहककोईप्रमाणनहीं।इसकारणसेतुमजीवकोअस त्यकहतेहो ॥ अथवायुक्तिसेतिसकाबाधहोजाताहै । यातेअसत्य कहतेहो । अथवाअसत्यत्वकाबोधकप्रमाणविद्यमानहै यातेअसतहै॥ इनमेंप्रथमपक्षनहींसंभवता ॥ क्योंकि (अनेनजीवेनात्मना) यहश्रुतिजीवकीसतरूपतामेंप्रमाणहै । यद्यपिजीवतथापरमात्माका अभेदमात्रइसश्रुतिमेंप्रतीतहोताहै । कोईजीवकासत्यत्वनहींप्रतीत होता।। यातेजीवकल्पितकैसेनहीं। किंतुकल्पितहै ॥ तथापिसत्यज्ञाना दिपदार्थोंके निर्वचनसे सिद्धजो सतरूपपरमात्मा तिसकेसाथअभेद श्रवणहोनेसे जीवकाअसत्यत्वबाधितहै ॥ शंका ॥ "नाहमीश्वरः" इसभेदग्राहिप्रत्यक्षकेविद्यमानहुए अभेदश्रुतिउपचारिकिहै ॥ अर्थात् अन्यार्थकोबोधनकरतीहै ॥ समाधान ॥(नान्योतोऽस्तिद्रष्टा) अ० ॥ इसआत्मासेभिन्नऔरकोईद्रष्टानहीं ॥ इसश्रुतिमेंभेदकानिषेध श्रवणहोताहै ॥ यदिभेदकोपारमार्थिकमानोगे तोयहनिषेधव्यर्थहोगा यातेजीवकाबाधनहींहोता ॥ औरस्वतःअसंसारिस्वभावजोपरमात्मा है तिसकोसंसारिस्वभावजीवरूपतानहींसंभवती ॥ यातेजीवकोसत्य मानेहुएयुक्तिकाविरोधप्राप्तहोगा । यदियहद्वितीयपक्षकहो तोयहभी नहींसंभवता । क्योंकिजैसेआकाशमें अविद्याकेवलसेकल्पितनीलता

प्रतीतहोतीहै । तैसेस्वतःअसंसारिस्वभावआत्मामेंअविद्यादिउपाधि केसंबंधसे कल्पितसंसारिजीवरूपतासंभवतीहै ॥और॥

रूपंरूपंप्रतिरूपोवभूव

इसश्रुतिप्रमाणसेजीवकीअसतरूपतासिद्धहै। यहतृतीयपक्षभी असंगतहै । क्योंकितिसवाक्यमें मनुष्यत्वादिधर्मयुक्त मनुष्यपशु पक्ष्यादिशरीरदोवारकथनकियेहुए रूपशब्दकाअर्थ हैं । औरतिन शरीरोंका सादृश्य प्रतिरूपशब्दकाअर्थहै जैसे (मुद्राप्रतिमुद्रा) इसवाक्यमेंमुद्राकेसादृश्यकोही प्रतिमुद्राशब्दबोधनकरताहै। किसी औरअर्थकोनहीं । तैसेयहांभी प्रतिरूपशब्दसे रूपसादृश्यहीकथन कियाहै । आभासरूपतानहींकथनकी । तैसेही अन्यवाक्यमेंभीकहाहै

देहंदेहंप्रविष्टःसंस्तद्देहाकारतामगात्

अ०॥ देहदेहमेंप्रविष्टहुआआत्मा तिसतिसदेहकीसमानाकारता कोप्राप्तहुआ।इसप्रकारजीवकोआभासरूपताकाअभावहोनेसेसतरूपता संभवतीहै॥ शंका ॥ प्रतिरूपशब्दको दर्पणस्थमुखादिकोंमें रूढहोने सेतिसकासादृश्यअर्थ आपकैसे कथनकरतेहो। औरयदितिसकाअर्थ प्रतिबिंबमानोगेतोजैसेदर्पणस्थमुखमिथ्याहीहोताहै।तिसकीन्याईजीव कैसेसतरूपहोसकताहै किंतुवहभीमिथ्याहीमाननेयोग्यहै ॥समाधान ॥ यद्यपिपूर्वउक्तरीतिसेजीवप्रतिबिंबरूपहो तथापिवहअसतनहींहै । क्योंकिजैसे "ग्रीवामेंस्थितजोमुखहै सोईदर्पणमेंस्थितहै" इसप्रत्य भिज्ञासेबिंबप्रतिबिंबकाअभेदप्रतीतहोताहै । यातेप्रतिबिंबमिथ्यानहीं किंतुसतबिंबरूपहीहै तैसेजीवभीबिंबचेतनस्वरूपहोनेसे मिथ्यानहीं किंतुसतरूपहीहै । औरआभासतोउपाधिगतत्वरूपएकधर्महै। सोजीव

रूपनहीं किंतुजीवकाधर्महै । औरजीवतोआभाससेभिन्नचेतनरूपही है । तिसीसेअसत्यनहीं । यहउक्तअर्थसर्वज्ञात्ममहामुनियोंनेभी कथनकियाहै ॥

उपाधिरंतःकरणांत्वमर्थे जीवत्वमाभासनमत्रतद्वत् । तदन्विताचित्प्रतिबिंबमेवमनान्वितांतामिहबिंबमाहुः १

(सं० शा० अ० २ श्लो० २७८)

अ० ॥ इससेपूर्वकारिकामें कथन कियाजैसेतत्पदकेवाच्यमें प्रविष्टआभासरूपईश्वरत्वमिथ्याहै तैसेत्वंपदार्थमेंअंतःकरणउपाधिहै। औरयहांजीवत्वहीआभासरूपहै ॥ अर्थातमिथ्याहै ॥ औरसाभास अंतःकरणरूपउपाधिके संबंधवालाचेतनप्रतिबिंबकहाजाताहै । और साभासअंतःकरणके संबंधसेरहितचेतनकोयहां बिंबकहतेहैं ॥ १ ॥ इति ॥ यातेजीवकास्वरूपमिथ्यानहीं किंतुसत्यहै ॥ शंका ॥ प्रति बिंबरूपजीव यदिबिंबस्वरूपहीहै ॥ तोबिंबऔप्रतिबिंबतथास्वरूपयह भेदकाकथनरूपव्यवहार कैसेहोताहै ॥ समाधान ॥ एकवस्तुमेंभी भेदव्यवहारउपाधिके आधीनसंभवताहै । क्योंकिजैसेसर्वकल्पनासे रहितएकहीस्वरूप मुखतथा चंद्रादिकों में बिंबऔप्रतिबिंबतथास्वरूप यहतीनप्रकारकाव्यवहारउपाधिमेंतिनकेप्रवेशकेआरोपसेअनंतर देखने मेंआताहै।तैसेसर्वकल्पनासेरहितएकस्वरूपआत्मामेंभीत्रिविधभेदव्यव हारसंभवताहै।।यद्यपिआत्माकोअनेकप्रपंचरूपताहोनेसेएकरूपताका कथनयुक्तनहीं।।तथापिअज्ञानकेवशसेतिसकोअनेकरूपताहै।। परन्तु वास्तवसेस्वरूपसर्वकल्पनासे रहितएकरूपहीहै ॥शंका॥ यद्यपिपूर्व उक्तरीतिसेजीवसत्यस्वरूपहो । तथापि तिसकाबाधमानकरसामाना

धिकरणयक्योंनहो ॥ समाधान ॥ हेएकदेशिन्बाधक्यविरोधीही सत्यत्वहै ॥ यातेतिसकाबाधकैसेहोसकताहै ॥ किंतुनहींहोसकता । इसप्रकारजीवको आभासरूपताकाअभावहोनेसें तत्त्वमस्यादिकमहावाक्योंमेंबाधसामानाधिकरणयकी कल्पनावेदबाह्यहै।यद्यपिइसकल्पनाकोवेदबाह्यकहनानहींसंभवता । क्योंकिवेदिकएकदेशीनेहीस्वीकार कीहै । तथापियुक्तिओप्रमाणका विरोधहोनेसेंअयुक्तहै ॥ सोयुक्ति तथाप्रमाणपूर्वकथनकरआएहैं । इसप्रकारसिद्धांतमुद्राकोआश्रयण करकेमहापूर्वपक्षीनेएकदेशीका मतनिरासकिया ॥ अबलक्षणानिरासप्रकरणकोपूर्वपक्षी समाप्तकरताहै । पूर्वकथनकियेहुएलक्षणाकी अनुपपत्तिरूपहेतुसेलक्षणाकरके परिपूर्णसच्चिदानंदअपगात्माका बोधननहींसंभवता ॥ इतिपूर्वपक्ष ।

❀ अथसिद्धांत) महावाक्योंमें लक्षणाके संभवकाप्रकार निरूपण । ❀

अखंडार्थपरत्वं हिपदयोर्लक्षणांविना ।
निर्णीयेत्थंतमाचार्यः पूर्वपक्षंनिषेधति ॥ १ ॥

चौ० ॥ अखंडार्थपरताहै जोई । लक्षण विनापदोंको सोई ॥
याविधतां निर्णयकर गुरुवर । पूरवपक्षनिषेधहिचलधर ॥१

समाधान ॥ यहांपरपूर्वपक्षीसेहमयहपूछतेहैं । महावाक्यनिष्ठ पदोंमेंलक्षणाकाअभावजोतुमकहतेहो।वहक्या?मुख्यार्थकीअनुपपत्ति के अभावसेकहतेहो । अथवामहावाक्योंका अखंडअर्थमे तात्पर्य नहींइसलियेकहतेहोप्रथमपक्षतोनहींसंभवता क्योंकि—

मू० ॥ विरुद्धयोरभेदोहिनवेदेनप्रमीयते ।
अनन्यगतिकत्वेनमानांतरस्यबाधनम्॥२७॥

नीलछंद ॥ वैरिनिकेरअभेद नवेदहुबोधसके ।
लोकविषेयहरीति कहुंजनखोजथके ।
औरगतीनहिकोय कहूंविधिजाहिवने ।
बाधतहांहुइमान नरंचकदोपगने ॥ ३४ ॥

टी० ॥ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंका विरोधहोनेसेजीवब्रह्मकेअभेद कीअयोग्यताहै ॥ यातेविरुद्धधर्मवालोंका अभेद वेदबोधनकरनेको समर्थनहीं। इसप्रकारमुख्यार्थकेअसंभवसे तन्मूलकलक्षणामहावाक्यों मेंसंभवतीहै । औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता । क्योंकिअखंडएकरस चिदात्मामें तात्पर्यकेग्राहकषट्विधलिंगकी विद्यमानताहै । यातेतिस तात्पर्यकोअतिप्रसिद्धहोनेसे तात्पर्यकेअभावसे लक्षणाकाअभावभी नहींकहसकते ॥ शंका ॥

❀ पौर्वापर्येपूर्वदौर्बल्यंप्रकृतिवत्॥पू०मी०अ०६पा०५॥सू०५४॥

अ० ॥ ज्योतिष्टोमसंज्ञकयागमेंसामगायनकरनेवालेउद्गाताऔ प्रतिहर्त्तादोऋत्विक्प्रसिद्धहैं । तिसयागमेंअध्वर्य्वादिऋत्विक्परस्पर पृष्ठभागमेंशाटकाकोहस्तसेग्रहणकरकेपवमानस्तोत्रकेअर्थयज्ञशालासे बाहिनिकसतेहैं । तिनमेंयदिदैवगतिसे उद्गातावाप्रतिहर्त्ताका क्रमसे वियोगहोजाय तोतहांवियोगनिमित्तक विरुद्धप्रायश्चित्तसुनाजाताहै । एकतोप्रतिहर्तृविच्छेदनिमित्तक सर्वस्वदक्षिणादेकप्रारंभकर्मकासमाप्त करना।औरदूसराउद्गातृविच्छेदनिमित्तक दक्षिणासेविनाप्रारंभकियेहुए कर्मकासमाप्तकरना । यहांपरयहसंशयहै ।क्या?प्रतिहर्तृवियोगनिमित्त

कसर्वस्वदक्षणादेकरआरंभकर्मकासमाप्तकरनायोग्यहै। अथवाउद्गातृवियोगनिमित्तकदक्षणासेविनायागकासमाप्तकरनायोग्यहै।तहांयहपूर्वपक्षप्राप्तहुआ।कोईविरोधीनउत्पन्नहोनेसेपूर्वनिमित्तबलवान्है। यातेपूर्वविच्छेदनिमित्तकप्रायश्चितही अनुष्ठानकरनेयोग्यहै।अथसिद्धांत।निमित्तोंकेपूर्वअपरभावकेहुएपूर्वनैमित्तिककोदुर्बलताहै। औरपूर्वनिर्पेक्षउत्तरनैमित्तिकको तिसकाबाधकरूपनाकरउदयहोनेसेपरबलताहै। औरपूर्वनैमित्तिककेउदयकालमेंउत्तरकी अप्राप्तिहोनेकर पूर्वनैमित्तिककरउत्तरनिमित्तकाबाधनहींहोसकता। औरउत्तरनैमित्तिकतोपूर्वनैमित्तिककोबाधकरकेहीउत्पन्नहोताहै।जैसेदर्शपूर्णमासरूपप्रकृतियागमेंनिर्णीतउपकारवालीकुशमयजोवर्हि हैंवहश्येनरूपविकृतियागजोउपकारकीआकांक्षावालातिसमेंप्रथम अतिदेशसेप्राप्तहोतीहैं।वहवर्हि उपदिष्टजोशरमयवर्हिनिर्पेक्षपश्चात्भावी अर्थातअबी जिनकाउपकारकल्पनानहींकिया तिनकरप्रथमबाधकीजातीहैं॥ इति।।इसन्यायसेपूर्वहोनेवालेजोभेदकेग्राहकप्रत्यक्षादिप्रमाणतिनकापश्चात्भावीश्रुतिप्रमाणसेबाधहोजायेगा।

औरब्रह्मात्माकेएकत्वकीसिद्धिअर्थ सर्वभेदग्राहिप्रत्यक्षादिप्रमाणोंकाबाधअवश्यकरनेयोग्यहै। इसकारणसेसंमारीतथाअसंमारीकेभेदकोग्रहणकरनेवालाजो प्रमाणहै तिसकाबाधकरकेहीवेदतिनके अभेदकोबोधनकरेगा।तिससेमुख्यार्थकीअनुपपत्तिआपकैसेकहतेहो॥समाधानहेवादिन्परिपूर्णतथा ब्रह्मात्मएकरसजो अखंडअर्थहै। तिसकीसिद्धिकेअर्थजोसकलप्रमाणांतरका बाधकरनाहै । वहअन्यगतिकेअभावसेहोताहै। जहांकिसीप्रकारसेभी प्रमाणांतरकेबाधविनाही स्वार्थकीसिद्धिहो तहांतिसका बाधकरनायुक्तनहीं।तैसेमानेहुए प्रमाणांतरको

बाधनकरकेतिसकी अनुसारतासेतोमुख्यार्थकी अनुपपत्तिसंभवतीहै। तिसकोदेखकर लक्षणावृत्तिसे वेदब्रह्मात्माकीएकताको बोधनकरता है । इसप्रकारमहावाक्यों में लक्षणाकीसिद्धिहोतीहै ॥ अबइसीअर्थ कोदिखलातेहुएपूर्वपक्षके अनुवादपूर्वक तिसको दूषितकरनेलियेवि स्तारपूर्वकश्लोककी व्याख्याकरतेहैं । यहजोपूर्वपक्षीनेकहाथाकि महावाक्योंमें मुख्यार्थकीअनुपपत्तिके अभावसे लक्षणाकाअभावहै। सोकथननहींसंभवता । क्योंकिजीवतथापरमात्माकाअभेद प्रत्यक्षा दिप्रमाणकरबाधितहै। यद्यपिविरुद्धोंकाभीअभेद शुक्तिरजतादिकों में देखाहै । तथापिविरुद्धोंकाअभेद प्रमाणसेकहींनहींदेखा। औरशुक्ति रजतादिकोंकाअभेदतोभ्रमसिद्धहै । यातेतिसकोदृष्टांतरूपतानहीं संभवती । औरप्रमाणांतरकोवेदकर बाधितहोनेसे मुख्यार्थकीअनुप त्तिनहीं । यहकथनभीअसंगतहै ॥ क्योंकियहबाधकेयोग्यहै इतने कथनसेही बाधकीसिद्धिनहींहोसकती॥ किंतुस्वविषयसिद्धिकीअन्य थाअनुपपत्तिसे बाधकीसिद्धिहोतीहै । अर्थयह जहांश्रुतिकेविषयकी सिद्धिप्रमाणकेबाधसेविनानसिद्धहोतहांप्रमाणांतरका बाधसिद्धहोता है। अन्यगतिकेहुएनहींसिद्धहोता। औरयहांतत्त्वमस्यादिमहावाक्योंमें तोलक्षणावृत्तिसेभीतिनको ब्रह्मात्माकेअभेदकीप्रतिपादकता संभवती है ॥ यातेतत्त्वमस्यादिमहावाक्योंसे प्रमाणांतरकाबाधनहींहोता ॥ औरजबप्रमाणांतरकाबाधनहुआ । तबमुख्यार्थकीअनुपपत्तिसिद्ध हुई । तिससेलक्षणाकीसिद्धि महावाक्योंमेंहुई ॥ यहभावहै । और प्रमाणांतरकेविरोधकर मुख्यार्थकी अनुपपत्तिनमाने तोसर्वत्रहीलक्ष णाकाअभावहोजायेगा ॥ क्योंकिलोकमेंभीनिश्चितप्रामाण्यवाले

वाक्यमेंही लक्षणामानीहै। तैसेवाक्यकाविरोधहोनेसे विरोधिप्रमाणां तरकाबाधहोजायेगा। तिससेमुख्यार्थकीअनुपपत्तिका अभावहोनेसे लक्षणाकीप्राप्तिभीनहींहोगी। यातेअन्यगतिकेहुए प्रमाणांतरकाबाध करनायुक्तनहीं । औरयहजोवादीनेपूर्वकहाथा किसर्वसंसर्गसेरहित शुद्धब्रह्मात्माका अभेदरूपजोअर्थ तिसमें लक्ष्यताके प्रयोजकरूप वाच्यार्थकेसाथसंबंधकाअभावहोनेसे तिसमेंलक्षणाकाअसंभवहै ॥ ऐसेकथनकरनेवालेवादीसे हमयहपूछतेहैं। वाक्यमेंलक्षणाकीकल्पना अधिकारीमुमुक्षुकरताहै । सोकल्पनातिसकोक्या? तत्त्वसाक्षात्कारसे उत्तरकालमेंहोतीहै।अथवापूर्वकालमेंहोतीहै।इनमेंप्रथमपक्षतोनहींसंभव ता।क्योंकितत्त्वज्ञानमेंउत्तरलक्षणाकीकल्पनाप्रयोजनशून्यहोनेसेव्यर्थ है औरअन्योऽन्याश्रयदोषकी भीप्राप्तिहै । क्योंकिसाक्षात्कारसे उत्तर लक्षणाकीकल्पनाहोगी। औरलक्षणाकीकल्पनासेअनंतर साक्षात्कार होगा । औरवाक्यमेंयोग्यताकासंपादकहोनेकर लक्षणाकोवाक्यार्थ ज्ञानमेंकारणताहै। यातेतत्त्वज्ञानसेपूर्वलक्षणाकी कल्पनासंभवतीहै । यहद्वितीयपक्षयदिमानोतोवाच्यार्थकेसाथसंबंध सुखेनहीबनसकताहै क्योंकिशुद्धलक्ष्यार्थ यद्यपिस्वभावसेअसंगभीहै। तथापिअविद्याऔर अंतःकरणरूपउपाधिकाजोअविद्याकरकल्पितसंबंधहैवहसंभवहोसकता है । जैसेदिवांधत्वरूपदोषयुक्त जोउल्लूकादि तिनकीकल्पनाकर सिद्धतमकाआदित्यमेंकल्पितसंसर्गहोताहै।तैसेअविद्याकेबलसेवाच्यार्थ केसाथशुद्धलक्ष्यार्थका कल्पितसंबंधसंभवताहै। तात्पर्य्ययहहै। अवि द्योपाधिकचैतन्य तत्पदकावाच्यार्थहै । औरअंतःकरणउपहितचैतन्य त्वंपदकावाच्यार्थहै।तिनदोनोंकेसाथ लक्ष्यार्थरूपब्रह्मात्माकेअभेदका

अविद्याकरकल्पितसंबंधभीविद्यमानहै । क्योंकितत्त्वज्ञानसेपूर्वकालमें ब्रह्मात्माकाअविद्याकेसाथविरोधनहोनेसे अविद्याविद्यमानहै।यातेतिस अविद्योपाधिकमेंलक्षणाकैसेनहींसंभवती। किंतुसंभवतीहै।शंका।कल्पित संबंधमूलकलक्षणाकोभी कल्पितहोनेसेलक्षणापारमार्थिकीनहींहोगी औरतिसलक्षणामूलक वाक्यार्थकासाक्षात्कारभी कल्पितहोगा ॥ उपहासपूर्वक।समाधान।हेवादिन्‌लक्षणाकोकल्पितकथन हमकोअनिष्ट नहीं।यातेयहवार्त्ताउच्चस्वरसे तुमनेनकहनीचाहिये।क्योंकिकोईसुनन ले।अर्थयह अद्वैतकाविरोधहोनेसेहीसकलद्वैतकोअसतमानेहुएभी हम अद्वैतवादीयोंकेसिद्धांतका अविरोधअतिस्पष्टहै । तोतिसद्वैतकाएक अंशरूपलक्षणाऔतत्‌मूलकवृत्तिरूपसाक्षात्कारकोकल्पितहोनेसेहमारे सिद्धांतकीक्याहानिहोसकतीहै।औरयहजोपूर्वकहाथा।किकिसीपदसे लक्ष्यकीउपस्थितिहोतीहै वानहीं । यदिनहींहोती तोलक्ष्यार्थ मेंमूकताप्रसंगहोगा। अर्थात् लक्ष्यार्थका बोधनहींहोगा । सोयह कथनभी समीचीन नहीं । क्योंकि पदार्थके प्रतिपादन करने वालेजोसत्यज्ञानादिपदहैं । तिनसेहीतत्पदकेलक्ष्यार्थकी उपस्थिति होनेसे तत्पदकेलक्ष्यार्थमें मूकताकीप्राप्तिनहींहोती । और सत्यादि पदशक्तिवृत्तिसे ब्रह्ममें प्रवृत्तहोतेहैं । वालक्षणासे प्रवृत्तहोते हैं । इनदोनोंपक्षों मेंवादीनेदोषकहाथा । सोतिनमेंलक्षणासेतोसत्यादि शब्दकीप्रवृत्ति ब्रह्ममेंहममानतेनहीं।यातेअनवस्थादोषकेपरिहारकीहम कोकिंचित्‌भीअपेक्षानहीं।क्योंकिलक्षणाकेअभावसेअनवस्थादोषप्राप्त हीनहींहोता।। शंका ।।सत्यादिपदशक्तिवृत्तिसे ब्रह्मकोबोधनकरतेहैंयह पक्षभीनहींसंभवता। क्योंकितत्त्वमस्यादिमहावाक्यगतपदोंमेंभीतिसेही

माननाहोगा। अर्थात्वहभीलक्षणासेविना शक्तिवृत्तिसेहीब्रह्मकोबोधन करेंगे॥समाधान॥हेवादिन्कर्तृत्वभोक्तृत्वअपरोक्षत्वादिधर्मविशिष्टचेतन में त्वंपदकीशक्तिग्रहणहोनेसे त्वंपदकेश्रवणसेकर्तृत्वादिधर्मविशिष्टकी हीउपस्थितिहोगी ॥ औरसर्वज्ञत्वअभोक्तृत्वपरोक्षत्वादि धर्मविशिष्ट चेतनमें तत्पदकीशक्तिग्रहणहोनेसे ततपदकेश्रवणहुए सर्वज्ञत्वादि धर्मविशिष्टचेतनकीही उपस्थितिहोगी ॥ शुद्धकीउपस्थितिनहीं होगी।यातेतिनमेंविरोधकेपरिहारअर्थ लक्षणास्वीकारकीहै॥ शंका॥ इसप्रकारमानेहुए सत्यत्व ज्ञानत्वादिधर्मविशिष्टचेतनमें सत्यादिशब्द कीप्रवृत्तिहोनेसे तिसशब्दकर शुद्धलक्ष्यार्थब्रह्मात्माका जोअभेद वह नहींप्रतीतहोगा । क्योंकितिससेभीविशिष्टकीही उपस्थितिहोगी। समाधान॥ हेवादिन्नानाउपाधियोंकेसाथ संबंधवालीजोएकव्यक्ति है उससेभिन्नसामान्यका अनंगीकारहै। यहांपर यहअर्थज्ञातव्यहै । ज्ञानपदकीशक्तिका ज्ञानव्यक्तिमेंग्रहणनहीं ॥ क्योंकिव्यक्तिमात्रमें शक्तिमानेहुएआनंत्यतथा व्यभिचारदोषकीप्राप्तिहै ॥ औरयदिऐसे कहो किज्ञानत्वसामान्य वालियांजोअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानव्यक्ति यांहैं । तिनमेंज्ञानपदकीशक्तिहै । सोयहकथनक्या? त्रितयपदार्थमें शक्तिवादीनैयायिककाहै ॥ अथवाजातिमात्रपदार्थमेंशक्तिवादीमीमां सककाहै ॥ दोनोंमतोंकीरीतिसेब्रह्मनिष्ठवाच्यताकी हानिनहींहोती। तैसेहीदिखलातेहैं । नानाव्यक्तियोंमेंअनुगतधर्म जोसामान्यवह तिनमेंअनुगतव्यवहारकाहेतुरूपताकर स्वीकारकियाजाताहै। औरवह ज्ञानत्वसामान्य ब्रह्मसेभिन्ननहींहै ॥ नानाभिन्नभिन्नजोअंतःकरणकी वृत्तियेंवहज्ञानत्वका व्यक्तिरूपताकर स्वीकारकीहैं । तिनमेंकल्पितसं

बंधवालीजोअनुगतव्यक्तिहै अर्थात् ॥

❀ व्यज्यतेअनयाइति व्यक्तिःस्वरूपचैतन्यम् ❀

अ० ॥ प्रकटहोइसकरकेवहव्यक्तिकहियेहै।यातेस्वरूपचैतन्यही व्यक्तिशब्दकाअर्थहै । उससेहीसर्ववृत्तियोंकी प्रकटताहै । तिसअनु गतचैतन्यव्यक्तिसेभिन्न सामान्यकाअनंगीकारहै। औरतिसकेमानने काकोईप्रयोजनभीनहीं। क्योंकिअनुगतव्यवहारकीसिद्धि अनुगत व्यक्तिसेहीहोजायेगी । इसप्रकारदोनोंमतोंमें ज्ञानत्वसामान्यकेस्था नांपन्नशुद्धब्रह्महीवाच्यसिद्धहोताहै।इसप्रकारसत्यादिपदोंमेंभीसत्यत्वादि सामान्यस्थानापन्नशुद्धब्रह्मही तिनकावाच्यजानलेना । अबअनेक उपाधियोंमेंसंबंधवालीएकअनुगतव्यक्तिसेही अनुगव्यवहारकीसिद्धि मेंदृष्टांतकहतेहैं । जैसेजलकरपूरितजोदशपात्रहैं तिनमेंदशहीचंद्रके प्रतिबिंबप्रतीतहोतेहैं । तिनमें "यहचन्द्रहै" यहचंद्रहै । ऐसाअनुगत व्यवहारहोताहै।वहव्यवहारचंद्रत्वजातिकृतनहीं।क्योंकितहांनानाव्यक्ति रूपजातिकेव्यंजकका अभावहोनेसे औरचंद्रकीएकव्यक्तिकोजाति काबाधकहोनेसे चंद्रत्वधर्ममें जातिरूपता अनंगीकारहै । और जल पात्ररूपउपाधियोंकोभीअननुगतहोनेसेतिनकोभीअनुगतव्यवहारकी हेतुतानहींसंभवती । यातेतहांसर्वउपाधियोंमें अनुगतजोचंद्रव्यक्ति है तिससेहीअनुगतव्यवहारकी सिद्धिहोतीहै । तैसे अंतःकरणकी वृत्तियोंमेंअभिव्यक्तहुईजो चैतन्यरूप ब्रह्मव्यक्तिहै । तिसकरही " यहज्ञानहै " यहज्ञानहै । ऐसा अनुगतव्यवहार संपादन कियाजाताहै । यातेज्ञानत्वजातिकास्वीकारव्यर्थहै ।इसप्रकारज्ञानत्व कोजातिरूपताकानिषेधकरनेसे सत्यत्वादिधर्मोंकोभी जातिरूपताका

निषेधजानलेना ॥ शंका ॥ सत्यादिपदोंसेतत्पदकेलक्ष्यार्थकीउप स्थितिहुएभी त्वंपदकेलक्ष्यार्थकीउपस्थितिकिसपदसेहोगी औरयदि सत्यादिपदोंसेही तिसकीउपस्थितिकहो तोवहनहींसंभवती। क्योंकि सत्यादिपदोंकीब्रह्मपदकेसाथ समानाधिकरणताहै। त्वंपदकेसाथतिन कीसमानाधिकरणतानहीं । यातेत्वंपदार्थमेंमूकताप्रसंगउसीप्रकार अवस्थितहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् यद्यपिसत्यादिपदोंसेत्वंपदके लक्ष्यार्थकी उपस्थिति नहींहोती । तथापिपूर्वउक्तरीतिसे साक्षीऔ प्रत्यगादिपदोंसे तिसकीउपस्थितिभीकथनकरनेयोग्यहै । इसीअर्थ कोस्पष्टकरतेहैं । अनेकअज्ञानजो चेतनकेप्रतिबिंबसहितहैं । वह चैतन्यकी प्रधानतासेसाक्षिपदकेवाच्यहैं औरव्यक्तिस्थानापन्नतिन साभासअज्ञानों मेंकल्पितसंबंधवाली जोअनुगतचैतन्यरूपएकव्यक्तिहै वहतिनअज्ञानोंकाअवच्छेदकहोनेकरघटत्वादिजातिकीन्याईसाक्षिपद कावाच्यहै। इसप्रकारसाक्षिपदसे चैतन्यकीउपस्थितिकासंभवहोनेसे त्वंपदकेलक्ष्यार्थमेंभीमूकताकीप्राप्तिनहींहोती ॥ शंका ॥ इसप्रकार सत्यज्ञानतथासाक्षिआदिकपदोंसे अनेकव्यक्तिस्थानापन्नजोसाभास अज्ञानतथा वृत्तिरूपउपाधियेंतिनकरयुक्तसामान्यस्थानापन्नब्रह्मचैतन्य कीउपस्थितिमानेहुएतत्त्वंपदकेलक्ष्योंकोअखंडत्वकीसिद्धिकैसेहोगी॥ क्योंकिअखंडअर्थत्वउपाधियुक्तनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् यह विकल्पनैयायिककातोनहींसंभवता ॥ क्योंकि— (पशुनायजेत) अ०॥ पशुकरणकयागकाअनुष्ठानकरे ॥ इसवाक्यमेंपशुपदसेजाति औव्यक्तितथाआकृति इनतीनपदार्थोंकी समानउपस्थिति हुएभी योग्यताकेवलसे यागकीसाधनताजैसेपशुव्यक्तिमेंहीमानीहै जात्यादि

मेंनहीं । तैसेप्रकरणमेंभी सत्यादिपदोंसेउपाधिउपहितकी उपस्थिति हुएभी योग्यतासेकेवलशुद्धकाही ग्रहणहोताहै । औरमीमांसककातो यहविकल्पसंभवताहीनहीं। क्योंकिवहजातिमात्रकोही पदार्थमानताहै तिसकीरीतिसे व्यक्तिस्थानापन्न जोसाभासउपाधि तिसकेसाथसंबंध वालाजो सामान्यस्थानापन्नब्रह्मचैतन्यहै । तिसकोहीसत्यादिपदोंसे उपस्थितिहोनेकर तत्त्वमस्यादिमहावाक्य शुद्धचैतन्यकोग्रहणकरके कैसेअखंडअर्थमेंतात्पर्य्यवालेनहीं किंतुतात्पर्य्यवालेहैं।। शंका ।।तत्त्व मस्यादिवाक्योंका पूर्वउक्तरीतिसे अखंडअर्थमें पर्य्यवसानमानेहुएभी सत्यादि तथा साक्ष्यादि पदोंकी "तत्त्वम्" आदिपदोंके लक्ष्यशुद्ध चेतनमेंशक्तिवृत्तिसे प्रवृत्तियुक्तनहीं । क्योंकि (यतोवाचोनिव र्तंते) इत्यादिश्रुतिवचनोंका विरोधहै । औरसंप्रदायवेत्तापुरुषोंका विरोधभीप्राप्तहोताहै ।। क्योंकिउन्होंनेयहकहाहै ।।

तत्त्वंपदार्थविषयोनयएवयोज्यः । सत्यादिव स्तुनिनतत्रविशेषकल्प्यः ।। सत्यादिशब्दविषयाः शबलास्तदर्थ भागेषुलाक्षणिकीवृत्तिरपीहतुल्या।१।।

(सं० शा० अ०(१) श्लो० १७७)

अ० ।। तत्त्वं" पदार्थविषयकजोलक्षणारूप न्यायमानाहै वहीन्यायसत्यादिपदार्थोंमेंभी स्वीकारकरनेयोग्यहै । तिनमेंऔरकोई विशेषरीतिकल्पनाकरने योग्यनहीं । क्योंकिसत्यादिशब्दोंकाविषय भीउपाधियुक्तपदार्थहैं । यातेसत्यादिवाक्यमेंजो वाच्यअर्थकेभागहैं तिनमेंलक्षणावृत्तिभीसमानहीहै ।। १ ।। इति ।। समाधान ।। हेवा

दिन्यहतुम्हाराकथनभी अयुक्तहै । क्योंकिप्रथमजोश्रुतिकाविरोध कहाथासोनहींसंभवता । तथाहि । वहश्रुतिअविद्यातत्कार्यकेसंबंध सेरहितशुद्धचेतनमें शक्तिवृत्तिकानिषेधकरतीहै । अथवाअविद्यातत् कार्यकेसाथ संबंधवालेचेतनमें तिसकानिषेधकरतीहै । यहप्रष्टव्यहै। इनमेंयदिप्रथमपक्षकहो।तो।अनिष्टकीप्राप्तिनहींहोती।क्योंकिमोक्षकाल मेंशुद्धब्रह्मविषयक किसीपदकीवृत्तिकास्वीकारनहीं । औरद्वितीयपक्ष तोनहींसंभवता ॥ क्योंकितिसमेंदोषकाअभावहै। यद्यपिउपाधियुक्तकी सत्यादिपदोंसे उपस्थितिहुए शुद्धचिन्मात्रलक्ष्यस्वरूपकी उपस्थिति कैसेहोगी । तथापिउपाधिकोतटस्थरूपतासे वाच्यकोटिमें अप्रवेश होनेकर शुद्धसच्चिदानंदएकरस "तत्त्वं" इनदोनोंपदोंकालक्ष्यहै ॥ तिसकीसत्यादिपदोंसे उपस्थितिसंभवतीहै । जैसेधेनुपदगोत्वउप हितव्यक्तिमें शक्तिवालाहुआ भीतिससेगोव्यक्तिविशेषकीहीउपस्थिति होतीहै । गोत्वजातिकीनहीं।क्योंकिगोत्वको तटस्थरूपताहोनेसेवाच्य कोटिमें तिसकाप्रवेशनहीं ॥ तैसेहीसत्यादिपदसे शुद्धब्रह्मकीहीउप स्थितिहोतीहै। अज्ञानादिकउपाधिकोतटस्थ रूपताहोनेसे वाच्यकोटि मेंतिनकाप्रवेशनहींहै । यातेतिनकीउपस्थितिनहींहोती । इसप्रकार श्रुतिकेविरोधकाअभावहै ॥ औरजोपूर्वसंप्रदायका विरोधकहाथा सोसत्यहै । परन्तुउनसंप्रदायवेत्ताओंनेभी श्रुतिकाविरोधपरिहारकरने केलियेही वेदांतपदोंमें लक्षणामानीहै । वहविरोधयदिहमारीकथन कीहुईरीतिसे परिहारहोसकताहै। तोपुनःसत्यादिपदोंमेंलक्षणामानने काक्याफलहै। क्योंकिमुख्यार्थकेसंभवहुए लक्षणामाननीअयुक्तहै। औरइसप्रकारतिनकोअज्ञपनेकी प्राप्तिभीनहींहोसकती । क्योंकिएक

उपाय दूसरेउपायका दूषकनहींहोता । तिनवृद्धोंकाप्रयोजनभीविरो धकेपरिहारकरनेकाहै।उसविरोधकापरिहार जिसजिसप्रकारसेसंभवे ति-सतिसप्रकारसेही युक्तिकल्पनाकरनेयोग्यहै । यहहीउनकाअभि प्रायहै ॥ यातेपूर्वउक्तसर्वहीअर्थनिर्दोषहै ॥ औरयदिअज्ञानएक है। औरततउपहितचैतन्यकानामसाक्षीहै ॥ तोअज्ञानरूप उपाधिको त्यागकरकेशुद्धचैतन्यही त्वंपदकालक्ष्यार्थ साक्षिपदसेपूर्वउक्तरीतिसे उपस्थितहोताहै ॥ यहजाननेयोग्यहै । इससमग्रअभिप्रायके प्रकट करनेकेलिये मूलग्रंथकर्त्ता आचार्योंने

नानाउपाधिसंबद्धव्यक्तिअतिरिक्तसामान्या नभ्युपगमात्

इसमूलग्रंथमें सामान्यको व्यक्तिकी अपेक्षा होनेसे उपाधि पदकेस्थानमें व्यक्तिपददेना योग्यथा तोभी जिसकारणसे व्यक्ति पदकोत्यागकर उपाधिपदकाप्रयोगकियाहै । तिसकारणसेहमनिश्चय करतेहैं । किजैसेअन्यस्थलमें उपाधिकावाच्यकोटिमेंप्रवेशनहींहोता तैसेसत्यादिवाक्यमें शुद्धचेतनही सत्यादिपदके वाच्यकोटिमेंप्रवेश होताहै । अज्ञानादिउपाधिकावाच्यमेंप्रवेशनहीं । इसलिये ग्रंथकर्त्ता आचार्य्यउपालंभकेयोग्यनहीं हैं ॥ इति ॥

अथसाक्षीकीसिद्धिकाप्रकारनिरूपण

शंका ॥पूर्वप्रकरणमेंजोसाक्षीआपनेकहा वहकौनहै।यहविचार णीयहै । तहांपरब्रह्मकानामसाक्षीहै। अथवाजीवकानामसाक्षीहै । प्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकितिसपरब्रह्मको असंगहोनेकरसाक्षि पनेकाअसंभवहै । जिसकारणसे साक्ष्यकेसंबंधबिना लोकमेंकोईभी

प्राप्तिहोगी । क्योंकिविषयनिष्ठप्रमाणकीकीहुई अतिशयताका अभावहै । अर्थयह ॥ अज्ञानकीनिवृत्तिहीप्रमाणकृतअतिशयताहै॥ वहजबप्रमाणसेसिद्धनहुई तोतिसप्रमाणसेक्याप्रयोजनहै । औरयदि विषयकाप्रकाशहीप्रमाणकाफलकहो।तोयहभीनहींसंभवता। क्योंकि अज्ञानरूपआवरणकेविद्यमानहुए विषयकेप्रकाशकीभी अयोग्यताहै। इसप्रकारअज्ञातता प्रमाणकाविषयनहीं। औरद्वितीयपक्षभीअसंगतहै क्योंकिभ्रमसिद्धपदार्थको प्रमाणकीविषयताकाविरोधहै । अर्थयह अज्ञाततारूपविषयकेबाधसेही अज्ञातताकीसिद्धिकोभ्रमपनाकहनेयोग्य है। इसप्रकारबाधितअर्थमेंप्रमाणकैसेप्रवृत्तहोगा । क्योंकिविषयको हीअसत्पनाहै । औरअज्ञातताकीस्वतःसिद्धिहै यहतृतीयपक्षभीनहीं संभवता । क्योंकिअज्ञातताको अनात्मताहोनेसेजडताहै । औरजड काभानस्वतःनहींहोता । औरवहअज्ञातताकिसी अन्यसेसिद्धहोतीहै । यहचतुर्थपक्षकहो तोवहअन्यपदार्थहीपरिशेषसेसाक्षीहै। तैसेमानेहुए प्रमाणकीप्रवृत्तिसेप्रथमहीअज्ञातरूपतासेसाक्षीकरबोधनकियाहुआजो विषयहै तिसकोहीप्रमाणविषयकरताहै । यहकथनयुक्तहै । इतने कथनसे साक्षीकामाननानिष्फलहै इसकापरिहारकिया । क्योंकि अज्ञातताकीसिद्धिसाक्षीकेआधीनहै । यातेसाक्षीकास्वीकारसफलहै। औरपूर्वउक्तरीतिसेंसाक्षीसेबिनाप्रमाणकीअनुपपत्तिहोनेकर साक्षीकी सिद्धिहै।इसीकारणसेसाक्षीमें विवादकरनायुक्तनहीं ।इसी अर्थमें आप्त पुरुषोंकावाक्यभीप्रमाणहै । तैसेहीसुरेश्वराचार्य्योंनेकहाहै ॥

॥ प्रमाणमप्रमाणंवाप्रमाभासस्तथैवच ।
कुर्वत्येवप्रमांयत्रतदसंभावनाकुतः ॥१॥ ॥

(श्लो० ८७४ । दृ० वा० अ० १)

अ०॥जैसेप्रमाणकीसिद्धिसाक्षीकेआधीनहै। तैसेमिथ्याज्ञानऔसंशय ज्ञानइनदोनोंका साधकभीसाक्षीहै । क्योंकिमिथ्याज्ञानऔसंशयज्ञान कीप्रमाणसेतोसिद्धि कहनहींसकते । प्रमाणकेसाथतिनकाविरोधहै । औरमिथ्याज्ञानऔसंशयज्ञानरूपवृत्तिको जडताहोनेसेस्वतःभीतिनका भाननहींसंभवता । औरभ्रमसेभीतिनका भाननहींहोता । क्योंकि भ्रमवृत्तिकेभानकाविचार तोप्रकरणमेंयत्रप्राप्तहीहै। तिसकारणसेतिन दोनोंज्ञानोंकीसिद्धिभी साक्षीकरहीहोतीहै । यातेप्रमाण औरभ्रमज्ञान तथासंशयज्ञान यहतीनों जिससाक्षिविषयकप्रमाको उत्पन्नकरतेहैं । अर्थात्साक्षीसेबिनाइनकी सिद्धिनहींहोती । तोतिससाक्षीकीअसं भावनाकैसेहोसकतीहै ॥ १ ॥ इसप्रकारसर्वप्रमाणादिकोंकासाधक त्वंपदकालक्ष्यार्थसाक्षीसिद्धहुआ ॥ इति ॥

॥ अथउभयपदमेंलक्षणाकाप्रकारनिरूपण ॥

और "तत्त्वं" इनदोनोंपदोंकाएकअर्थहै।अथवाअनेकअर्थहैं । यहविकल्पजोवादीने पूर्वकियाथा । सोभीअसंगतहै । क्योंकियद्यपि दोनोंपदोंकाएकहीअर्थहै । तथापिदोनोंपद स्वीकारकरने योग्यहैं ॥ शंका ॥ भेदकाजनकजोअज्ञानहै । तिसकीनिवृत्तिकेअर्थ अभेदज्ञान हीअपेक्षितहै । वहअभेदज्ञान यदिएकपदसेहीउत्पन्नहोजाय तोदूसरे पदसेक्याप्रयोजनहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् प्रमाणजन्यज्ञानहीभेद भ्रमकानिवर्तक होताहै । मिथ्याज्ञानभेदभ्रमका निवर्तकनहींहोता ।

और वह प्रमाण जन्य ज्ञान एक पद से नहीं उत्पन्न हो सकता ॥ क्योंकिपदमात्रको प्रमाज्ञानकी हेतुताकाअभावहै । तिसकारणसेभेद भ्रमकेनिवर्त्तकज्ञानकी उत्पत्तिकेअर्थ वाक्यरूपप्रमाणकी अपेक्षाहै । औरएकपदमें वाक्यरूपतानहींसंभवती ॥ यातेवाच्यताकीसिद्धिके अर्थदूसरापदअवश्य अपेक्षणीयहै । औरपदोंकीएकअर्थतामाने हुए पर्य्यायशब्दोंकीन्यांईवाक्यपनेकी अनुपपत्तिरूपदोषपूर्ववादीने कहाथा वहभीनहींसंभवता।क्योंकिपदोंकीप्रवृत्तिके निमित्तकाभेदहै। जिसकारणसे भोक्तृत्वादिकधर्मत्वं पदकीप्रवृत्तिके निमित्तहैं औरसर्व ज्ञत्वादिकधर्म तत्पदकी प्रवृत्तिकेनिमित्तहैं। इसप्रकारपर्य्यायताप्राप्ति काअभावहोनेसे वाक्यत्वकीहानिनहीं ॥शंका ॥ दोनोंपदोंकाप्रयोग वाच्यार्थकीउपस्थितिकेलियेनहींहै।क्योंकि तिसवाच्यार्थकीउपस्थिति काकोईप्रयोजननहीं॥ किंतुलक्ष्यार्थकी उपस्थितिकेलिये दोनोंपदों काप्रयोगहै ॥ वहलक्ष्यकीउपस्थिति यदिएकपदसेसिद्धहो तोदूसरे पदकाप्रयोगकरनानिष्फलहै ॥ औरपदकोभीअनुभवकाजनकहोनेसे औतिसकेविषयकाअबाधहोनेसे प्रमाणतासंभवतीहै। यातेद्वितीयपद निष्फलहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्जैसेघोषनिवासकावाचक जो "घोष" पदतिसकेप्रयोगसेबिना गंगापदतीरको लक्षणावृत्तिसेबोधन नहींकरसकता। क्योंकिमुख्यअर्थमें किसीप्रकारकी अनुपपत्तिनहीं। तैसेतत्पदकाअथवात्वंपदकाप्रयोगकरेहुए विशिष्टचैतन्यहीतिसपद सेउपस्थितहोगा । अखंडएकरसशुद्धचिदात्माकी उपस्थितिनहीं होगी।तिससेजिज्ञासुकोवांछितअर्थकाबोधनहोनेसेतिस "त्वंवातत" पदकाप्रयोगव्यर्थहीहोगा॥ औरवैदिकपदोंकाप्रयोग निष्फलनहींहो

सकता॥तिसकारणसेलक्षणावृत्तिकरअखंडअर्थकेलाभनिमित्तद्वितीय पदकाप्रयोगहै । तिसद्वितीयपदसेविना विरोधकाअस्फुरणहोनेसे मुख्यार्थकाहीसंभवहोजायेगा ॥ पुनःलक्षणासेअखंडअर्थकाप्रति पादननहींसंभवेगा॥ यातेअखंडअर्थकीसिद्धिकेलिये दूसरापदसफल है । औरपदमात्रको जोवादीने अनुभावक कहाथा वहभीनहीं संभवता॥ क्योंकि–

*** पदमप्यधिकाभावात् स्मारकान्नविशिष्यते। ***

अ० ॥ पदकोस्मारकहोनेसे अधिकअर्थजोवाक्यार्थतिसकी बोधकतापदमेंनहीं। इसीसेतिमकोविशेषतानहीं अर्थात्प्रमाणतानहीं। इसन्यायसे पदमात्रको अप्रमाणताहोनेसे तिसकोअनुभावकतानहीं संभवती । औरप्रधानवाक्योंमें लक्षणाकीअनुपपत्तिहैयहजोवादीने पूर्वकहाथा सोकथनभी अयुक्तहै । क्योंकिइतरपदार्थोंमेंजो "अनुप सर्जन" अर्थात्प्रधानपदार्थहै । तिसकाप्रतिपादकहोनेसेही वाक्यको प्रधानपनाहै। सोप्रधानकीप्रतिपादकतालक्षणासेहो। अथवाशक्तिवृत्ति सेहो।इसमेंकोईआग्रहनहीं॥ यातेलक्षणाकेमानेहुएभी वाक्यमेंप्रधान ताकीहानिनहीं ॥ और (गुणेत्वन्यायकल्पना) अ० गौणवा क्यमेंलक्षणाकीकल्पनाहोतीहै।इसन्यायकाविरोधजोपूर्ववादीनेकहाथा वहभीनहींसंभवता। क्योंकिजहांप्रतिपादनकरनेयोग्यअर्थमें शब्दकी शक्तिवृत्तिकीविषयताहै । तहांहीयहन्यायप्राप्तहोताहै औरयहांतोप्रति पादनकरनेयोग्यअर्थमें तत्त्वंआदिकपदोंकीशक्तिवृत्तिकी विषयताका अभावहै । यातेन्यायकाविरोधनहीं । तिसीहेतुसे तत्त्वमस्यादिमहा वाक्यलक्षणासेप्रत्यक्ब्रह्मकाजोअभेदअखंडएकरसशुद्धचिदात्मातिस

कोबोधनकरतेहैं। इसकारणसे (यतोवाचोनिवर्तंते) इसश्रुति सेविरोधनहीं ॥ इति ॥

❀ अथब्रह्मात्माकेअभेदरूपप्रमेयमेंप्रत्यक्षादिप्रमाणों केविरोधकापरिहारशंकासमाधानपूर्वकनिरूपण ❀

इसप्रकारअखंडएकरस जोब्रह्मात्माका अभेद तिसमेंवेदान्तोंका समन्वयजोशारीरकमीमांसाकेप्रथमअध्यायकाअर्थतिसकोसंक्षेपसेनिरूपणकरके अबतिसअभेदरूपअखंडार्थमें प्रत्यक्षादिप्रमाणोंके विरोधका परिहार जोद्वितीयअध्यायकाअर्थतिसकोसंक्षेपसेनिरूपणकरनेकेलिये पूर्वपक्षकोनिरूपणकरतेहैं।(अथपूर्वपक्ष)शंकाकोस्पष्टरूपतासेप्रकट करनेकेलियेपूर्वपक्षी प्रथमतत्त्वमस्यादिमहावाक्योंमें हेयतथाउपादेय अंशकोनिरूपणकरताहै । कर्तृत्वादिधर्मविशिष्टतथासुषुप्तिआदिक अवस्थावालाचैतन्यत्वंपदकावाच्यार्थहै । औरजगत्कर्तृत्वादिधर्म विशिष्टतथाआकाशादिकोंका उपादानचैतन्य तत्पदकावाच्यार्थहै । तिनदोनोंकाअभेदगुरुमुखद्वाराश्रवणकियेहुएमहावाक्यसेप्रतीतहोताहै परंतुसंसारीतथाअसंसारीकाअभेदरूपजोमुख्यार्थहै तिसकीप्रत्यक्षादि प्रमाणकेविरोधसेअनुपपत्तिहै । तिसकारणसेत्वंपदार्थमेंविरुद्धधर्मजो कर्तृत्वभोक्तृत्वसुखित्वदुःखित्वादि तिनकोत्यागकरतिनसेपृथक्किया हुआ अवस्थात्रयमें अनुस्यूतशुद्धचेतनअंश जोप्रत्यगात्मातिसकातत् पदार्थमेंविरुद्धजगत्कर्तृत्वादिधर्मोंकोत्यागकरतिनसेपृथक्कियाहुआ आकाशादिकोंमें अनुस्यूत तथा शुद्धपरिपूर्णसच्चिदानंदस्वरूप जो परमात्मातिसकेसाथअभेदलक्षणावृत्तिसेमहावाक्यबोधनकरताहै। यह अर्थसिद्धांतीनेपूर्वनिरूपणकिया॥ शंका ॥हेवादिन्यद्यपिइसप्रकारका

अर्थहमने पूर्वप्रतिपादनकियाहै। तथापिइसमेंविरोधकी आशंकाकैसे प्राप्तहोतीहै ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् प्रत्यक्षादिप्रमाणसिद्धजोसर्व भेद तिसकानिराकरण आपनेपूर्वनहींकिया।यातेअभेदका प्रतिपादन नहींसंभवता । यद्यपिपूर्वकथनकीहुईयुक्तिसे जीवब्रह्मकेभेदकानिरा करणकियाहै यातेकैसेतुमयहकहतेहो जोभेदकानिराकरणनहींकिया। तथापियहांभेदपद अनात्मभेदपरहै । यातेअनात्मभेदतो तिसीप्रकार अवस्थितहै । यद्यपिअवस्थात्रयमेंअनुगततथाआकाशादिकोंमेंअनु स्यूतयहजोब्रह्मात्माकाविशेषणपूर्वकहाहैतिसकेप्रभावसेविजातीयभेदका निराकरणभीकियागया। क्योंकिजैसेअधिष्ठानरज्जुमेंपरस्परव्यभिचारी जोमूत्रधारादंडमालादिसोकल्पितहैं।तैसेअधिष्ठानब्रह्मात्मामेंसर्वजगत कल्पितहै ॥ और (मृत्तिकेत्येवसत्यं) इसश्रुतिनेकारणसेभिन्न कार्यकीसत्ताकाअभावकथनकियाहै। यातेआकाशादिकार्यकोमिथ्या होनेसे तत्प्रतियोगिकभेदकोभी मिथ्यापनाहै । इसकारणसे पूर्व उक्तशंकानहींसंभवती । तथापिइसविशेषणकेतात्पर्य्यकोनजानकर वादीकीशंकासंभवतीहै ॥शंका॥ हेवादिन्जैसेआत्मातथापरमात्माके भेदकोग्रहणकरनेवालाप्रमाणअप्रमाणरूपहै तैसेअनात्माके भेदकाग्रा हकजो प्रत्यक्षादितिसकोभीअप्रमाणताहै॥यहांयहअनुमानजानना ।

॥ विमतंअनात्मभेदग्राहकं अप्रमाणं भेदग्राहक त्वात् । आत्मपरमात्म भेदग्राहकवत्॥ अ०। विवाद काविषयजोअनात्मभेदग्राहक प्रत्यक्षादिसोअप्रमाणरूपहै । भेदका ग्राहकहोनेसे जोजोभेदका ग्राहकहोताहै। सोसोअप्रमाणरूपहोताहै। जैसेआत्मातथापरमात्मका भेदग्राहिप्रत्यक्षादिहैं ॥इति॥ समाधान।

हेसिद्धांतिन्द्दष्टांतकी असिद्धिहोनेसेयहतुम्हारा हेतुअसाधारणअनै कांतिकहै। इसीकोस्पष्टकरतेहैं। अनुमानमेंजोअप्रमाणरूपसाध्यहैतिस कावयाअर्थहै। अर्थात्प्रमाणत्वकाजो अत्यंताऽभावतिसकाजोअधि करणहो वहअप्रमाणहै। अथवाप्रमाणसेभिन्नकोअप्रमाणकहतेहो।यह दोनोंप्रकारका अप्रमाणशब्दका अर्थमानेहुएभीनिश्चितसाध्यवालेहोने सेघटादिकसपक्षहीकहेजातेहैं। क्योंकिप्रमाणत्वके अत्यंताभावका अधिकरणभीघटादिकहैं।औरप्रमाणसेभिन्नभीहैं। औरअभेदकेग्राहक प्रमाणजोतत्त्वमस्यादिमहावाक्यहैं वहविपक्षहैं। क्योंकि अप्रमाणता रूपसाध्यकेअभाववालेहैं । तिनदोनोंसपक्षविपक्षोंसेव्यावृत्तहोनेसे हेतुमेंअसाधारणअनैकांतकिता संभवतीहै ॥ और दृष्टांताभासोंकी हेत्वाभासोंमेंहीअंतरभावताहै। यातेपूर्वउक्तअनुमानदुष्टहै॥ शंका ॥ दृष्टांतकाअभावतुमकैसे कहतेहो।क्योंकिजीवतथा परमात्माकेभेदका ग्राहक(नाहमीश्वरः) " मैंईश्वरनहींहूं" यहप्रत्यक्षहीदृष्टांत रूपतासे विद्यमानहै ॥ समाधान ॥ आत्मातथापरमात्माकेभेदकाग्राहककोई प्रमाणनहींहै। इसीकोस्पष्टकरतेहैं ॥ क्या?यहपूर्वकथनकियाप्रत्यक्ष भेदमात्रकोविषयकरताहै ॥ अथवा ॥ आत्मप्रतियोगिकभेदकोवि षयकरताहै॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता। क्योंकिआत्माकेभेदकाग्राहक पनातिसकोअसिद्धहै। यातेदृष्टांतकाअभाव उसीप्रकार अवस्थितहै। औरयदिद्वितीयपक्षकहो तोतिसमेंभी यहविचारकर्तव्यहै। किंतिस पक्षमेंआत्मशब्दसे स्वप्रकाशचेतनसुखस्वरूपका ग्रहणहै। अथवा कर्तृत्वादिधर्मविशिष्टचेतनकाग्रहणहै।प्रथमपक्षतोनहींसंभवता।क्योंकि आत्मा तथा परमात्मा इनदोनोंको स्वयंप्रकाशमान होनेसे किसी

प्रमाणकी विषयतातिनमेंनहीं होसकती ॥ औरद्वितीय पक्षभी नहींसंभवता ॥ क्योंकि (**सविशेषणेहि**) अ० ॥ विशेषण सहितवस्तुमेंजो प्रमाणप्रवृत्त होताहै ॥ यदिवह विशेष्यभागमें बाधितहोजाय तोवहविशेषणकोहीभासहोताहै। इसन्यायसेकर्तृत्वादि धर्मविशिष्टआत्माकेभेदकोविषयकरनेवालाजोप्रमाणहै तिसकोविशेष्य चेतनमात्रकेभेदकीविषयताकेबाधितहुए विशेषणजोकर्तृत्वादितिनके भेदकीगोचरताहोनेसे तिसकीअन्यप्रकारसेसिद्धिहै । यातेवहप्रमाण आत्मातथापरमात्माके भेदकासाधकनहीं । इसप्रकारपूर्वउक्तदृष्टांत असिद्धहै यहभावहै ।किंवा॥विशेष्यभागजोचेतनमात्र तिसकेअभेद काग्राहकजोतत्त्वमस्यादिवाक्यरूपप्रमाण तिसकरपूर्वउक्तअनुमानको बाधितहोनेसेभीतिसअनुमानकोआत्मातथापरमात्माकेभेदकीसाधकत नहींसंभवती । इसप्रकारपूर्वउक्तसिद्धांतीके अनुमानकोदुष्टहोनेसे अनात्मभेदकेग्राहक जोप्रत्यक्षादि वहप्रमाणरूपहैं । औरयहांयहअनु- मानभीजानलेना ॥

❀अहंनाविश्वंइत्यनात्मप्रतियोगिकभेदग्राहकंप्रत्यक्षं। तच्चनाप्रमाणं। विपरीतार्थगोचरप्रमाणाभावात् । महावाक्यप्रमाणवत्॥❀

अ० ॥ मैंप्रपंचरूपनहींहूं यहअनात्मप्रतियोगिकभेदकाग्राहक जोप्रत्यक्षहै । सोअप्रमाणनहींहै । विपरीतअर्थकोविषयकरनेवाले प्रमाणकाअभावहोनेसे । जहांजहांविपरीतअर्थविषयकप्रमाणतानहीं है तहांतहांअप्रमाणताभीनहींहै । जैसेमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणहै ॥ इति॥ इसरीतिसेअनात्मप्रतियोगिकभेदकेग्राहक जोप्रत्यक्षादिहैं।तिन

काकोईबाधकनहीं। यातेपूर्वउक्तअप्रमाणत्वकासाधकअनुमानबाधित है। यहांपूर्वग्रंथमें (प्रत्यक्षादि) इसआदिपदसे

❀ आत्मानात्मानौ। मिथोभिन्नौ विरुद्धधर्माक्रांतत्वात्। द्रवकाठिनवत❀

इत्यादिअनुमानकाग्रहणकरना॥ अ० ॥ आत्मातथाअनात्मा परस्परभेदवालेहैं। विरुद्धधर्मयुक्तहोनेसे। जोजोविरुद्धधर्मवालेहोते हैं सोसोपरस्परभेदवालेभीहोतेहैं। जैसेद्रवताऔरकठिनताहैं ॥इति॥

❀ अथधर्मभेदकेनिराकरणकाप्रकारनिरूपण ॥ सिद्धांतीकीआशंका ॥❀

हेवादिन्प्रत्यक्षादिप्रमाणोंको अनात्माकेस्वरूपविषयकत्वमाने हुएभीभेदगोचरता तिनकोनहींसंभवती।क्योंकिधर्मीतथाप्रतियोगीऔ भेद इनतीनोंकेग्रहणमेंक्रमतथायौगपद्यादिविकल्पोंकीप्राप्तिहुएअन्योऽन्याश्रयआत्माश्रयचक्रिकाअनवस्थाप्रागलोप विनिगमनाविरहादि अनेकदोषोंकीप्राप्तिहोगी॥ इसीकोस्पष्टकरकेनिरूपणकरतेहैं ॥ क्या? प्रत्यक्षप्रमाण भेदमात्रकोग्रहणकरताहै॥अथवाधर्मीतथाप्रतियोगीऔ भेद इनतीनोंकोग्रहणकरताहै ॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता॥ क्योंकि धर्मीतथाप्रतियोगीकेज्ञानसेविना भेदकाज्ञाननहींहोसकता॥धर्मिप्रति योगिज्ञानपूर्वकही भेदकाज्ञानहोताहैयहनियमहै ॥ औरद्वितीयपक्षमें भी यहविचारकरनेयोग्यहै । धर्मिआदिकोंकाग्रहणक्या?क्रमसेहोताहै अथवाएककालमें तिनकाग्रहणहोताहै । यदिक्रमसेकहोतोतिसमेंभी यहविचारणीयहै। क्या?प्रत्यक्षभेदकोप्रथमग्रहणकरके पश्चात्धर्मीऔ प्रतियोगीकोग्रहणकरताहै॥अथवाधर्मीप्रतियोगीकोग्रहणकरकेपश्चात्

भेदकोग्रहणकरताहै। औरयुगपदग्रहणपक्षमेंभीयहवक्तव्यहै। क्या? जैसे "दंडीदेवदत्तः" यहप्रतीतिदंडतथादेवदत्तकोविशेषणविशेष्यभावसेग्रहण करतीहै। तैसेयहांधर्मीऔप्रतियोगीतथाभेदइनतीनोंकोविशेषणविशेष्य रूपतासेप्रत्यक्षग्रहणकरताहै॥ अथवाअंगुलित्रयकीन्याईपरस्परतीनोंको संबंधसेरहितरूपताकरग्रहणकरताहै। तहांसर्वसेप्रथमविकल्पमें धर्मीऔ प्रतियोगीतथाभेदइनतीनोंकोप्रत्यक्षग्रहणकरताहै।यहद्वितीयपक्षनहीं संभवता ॥ तथाहि ॥ तिसद्वितीयपक्षके अंतर्गत जोक्रमसेग्रहणयह प्रथमपक्षतथा तिसमेंभेदके ग्रहणपूर्वकधर्मीऔ प्रतियोगीकाग्रहणहोता है यहक्रमतोनहींसंभवता। क्योंकिभेदज्ञानकेप्रतिधर्मीऔ प्रतियोगीके ज्ञानकोकारणहोनेसे पूर्वकथनकियाहुआक्रमअयुक्तहै॥ औरधर्मिआ दिकोंको प्रथमग्रहण करके पश्चात् भेदकाग्रहण होताहै यहद्वितीय क्रमपक्षहै। तिसमेंभीयहविचारकर्त्तव्यहै। क्या?स्वरूपसेधर्मिआदिकों का ग्रहणभेदकानिरूपकहै। अथवा घटत्वादि रूपतासे तिनकाग्रहण भेदकानिरूपकहै ॥ अथवाधर्मित्व रूपतासेधर्मीकाग्रहणऔ प्रति योगित्वरूपतासे प्रतियोगीकाग्रहण भेदकानिरूपकहै।इनमें प्रथमपक्ष तोनहींसंभवता। क्योंकिजलतथादुग्धका तादात्म्यहोनेसे स्वरूपसे वहदोनोंभासमानभीहैं। परन्तुतिनकाभेदग्रहणनहींहोता। यातेस्वरूप सेधर्मिआदिकोंकाग्रहण भेदकानिरूपकनहीं ॥ औरद्वितीयपक्षभी नहींसंभवता। क्योंकिघटत्वादिरूपतासेजो प्रतियोगिआदिकोंका ग्रहणहै तिसकोभेदकी अपेक्षाहोनेसेअन्योऽन्याश्रयदोषकीप्राप्तिस्पष्ट हीहै। इसअन्योऽन्याश्रय दोषकीप्राप्तिहोनेसेही तृतीयपक्षभीनहीं संभवता।क्योंकिभेदज्ञानकेआधीनप्रतियोगिआदिकोंकाज्ञानहै। जिस

कारणसेधर्मीसेभिन्न भेदके निरूपककोप्रतियोगीकहतेहैं । औरइसी प्रकारधर्मीकाज्ञानभीभेदज्ञानपूर्वकही कल्पनाकरनेयोग्यहै । क्योंकि प्रतियोगीसेभिन्नभेदके आश्रयकोधर्मीकहतेहैं । औरधर्मीतथाप्रति योगीकेज्ञानपूर्वकभेदज्ञान प्रसिद्धहीहै । यातेइसपक्षमेंकैसेअन्योऽन्याश्रयदोषकीप्राप्तिनहोगी किंतुअवश्यहोगी ॥ किंवा ॥ भेदभिन्न धर्मीमेंवर्त्तताहै । अथवाअभिन्नधर्मीमेंवर्त्तताहै । अन्त्यपक्षतोनहीं संभवता । क्योंकितिसअभिन्नधर्मीविषयकभेदके ग्राहकप्रत्यक्षकोभ्रम पनाहोगा । भावयह भेदकेअनधिकरणकानाम अभिन्नहै । तिसमें यदिप्रत्यक्षभेदकोग्रहणकरेगा । तोवहकैसेभ्रमरूपनहींहोगा । और यदिप्रथमपक्षकहो तोतिसमें यहविचारणीयहै। क्या?अपनेकरभिन्न कियेहुएधर्मीमेंआपभेदवर्त्तताहै । अथवाकिसीदूसरेभेदकरभिन्नकिये हुएधर्मी मेंभेदवर्त्तताहै ।प्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिअपनेकर भिन्नकियेहुएधर्मी मेंअपनीवृत्तिहोनेसेआत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहै। और यदिद्वितीयपक्षकहो तोतिसमेंभी यहविचारकर्त्तव्यहै। वहद्वितीय भेद भीक्या?अभिन्नधर्मी में वर्त्तताहै।अथवाभिन्नधर्मीमें वर्त्तताहै। प्रथम पक्षमें तोभेदग्राहकप्रत्यक्षकोभ्रमपनाहोगा।यहपूर्वकथनकियाहै।और द्वितीयपक्षमेंभीयदिअपनेकरभिन्नकियेहुएधर्मीमेंवहदूसराभेदआपवर्तताहै तोआत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहै।क्योंकिअपनीस्थितिकेअर्थइतरकेव्यवधान रहितअपनीहीअपेक्षाहै। औरप्रथमभेदकरभिन्नकियेहुएधर्मीमेंद्वितीय भेदरहताहै ऐसेयदिमानो तोअन्योन्याश्रयदोषस्पष्टहीप्राप्तहोताहै । औरइनपूर्वउक्तदोषोंकेपरिहारकरनेकेलिये द्वितीयभेदको भिन्नधर्मी में स्थितिकेअर्थयदितृतीयभेदस्वीकारकरो तोचक्रकादोषकीप्राप्तिहोगी ।

क्योंकिदोकेव्यवधानसेजहांपुनः अपनीअपेक्षाहोतहांचक्रकादोपप्राप्त होताहै । औरतिसचक्रकादोपकेदूरकरनेकेलियेयदिचतुर्थभेदस्वीकार करोतोअनवस्थादोषकीप्राप्तिहोगी । औरयदिऐसेकहोकिअन्यगतिके अभावसेअनवस्थादोपकोहमस्वीकारकरलेंगे।तोतिसमेंभीयहतुमनेकहा चाहियेक्या?वहअनंतभेदक्रमसे धर्मी मेंवर्त्ततेहैं।अथवाक्रमसेबिनाएक कालमेंवर्त्ततेहैं।यदिक्रमसेकहोतोधर्मीको अनादिपनाप्राप्तहोगा।क्योंकि अनंतधर्मोंकाआश्रय सादिनहींहोसकता । औरउत्तरउत्तरभेदसेहीपूर्व पूर्वभेदकाकार्यजोधर्मी मेंभिन्नव्यवहार तिसकीअन्यप्रकारसेसिद्धिहोने से पूर्वपूर्वभेदकोव्यर्थहोनेकर प्राग्लोपदोपकीप्राप्तिहोगी। पूर्वपूर्वभेदों कालोपअर्थातनिष्फलताहोनी इसीकोप्राग्लोपकहतेहैं । औरयदिवह अनंतभेद धर्मी मेंएककालमेंरहतेहैं।यहद्वितीयपक्षकहो तोभिन्नधर्मी में भेदवर्त्तताहै।इसपक्षकी हानिहोगी। औरयदिइसदोपके दूरकरनेकेलिये एकभेदविशिष्टधर्मी में अपरभेदोंकीस्थितिमानोगे । तोविनिगमना विरहदोपकीप्राप्तिहोगी। क्योंकिप्रथमभेदविशिष्टधर्मी में द्वितीयभेदकी स्थितिहै । इसअर्थकानिश्चायककोईयुक्तिनहीं । इसीकानामविनि गमनाविरहहै ॥ किंवा ॥ विनिगमनाविरहदोपकेविद्यमानहुएभी अनंतभेदोंकोस्वीकारकरलें यदिभेदोंकीपरंपराकोग्रहणकरनेवालाकोई ज्ञानप्रकटहो।औरऐसाज्ञानकोईउदयनहींहोता । यातेप्रमाणकेअभाव सेअनंतभेदोंकास्वीकारनहींसंभवता । औरयदिइनसर्वदोपोंकोपरिहार करनेकेलियेधर्मीतथाप्रतियोगीऔरभेदइनतीनोंकोएककालमेंहीप्रत्यक्ष ग्रहणकरताहै।यहपक्षकहो तोपरस्परअसंबंधिरूपतासे भेदकाग्रहणनहीं संभवेगा क्योंकिभेदप्रतीतिकोविशेपण तथाविशेष्यकेसंबंधकीग्राहकता

कानियमहै ॥ शंका ॥ भेदप्रतीतिकोविशिष्टग्राहकताकानियममाने, हुए विशेषणविशेष्यरूपताकरही प्रत्यक्षभेदकोग्रहणकरेगा ॥ समाधान. हेवादिन्ऐसेमानेहुएक्या? भेदकोविषयकरनेवालीही प्रतीतिविशेषण कीप्रतीतिहै । अथवाइससेवहप्रतीतिभिन्नहै।प्रथमपक्षतोनहींसंभवता। क्योंकिकार्यतथाकारणबुद्धिकी एकताकाअसंभवहै। अर्थयहविशेषण ज्ञानकारणहै। औरभेदज्ञानकार्यहै । तिनकीएकरूपताविरुद्धहै। और द्वितीयपक्षभीअसंगतहै । क्योंकिविशेषणरूपतासेजोज्ञानहै । वह भेदज्ञानकेआधीनहै । ऐसामाननेसे अन्योऽन्याश्रयदोष प्राप्तहोताहै। औरस्वरूपमात्रसेभासमानधर्मी तथाप्रतियोगीको भेदज्ञानकाअजनक. पनाहै । यहअर्थपूर्वकथनकरआएहैं । यातेप्रत्यक्षवस्तुकेस्वरूपमात्र कोविषयकरताहै भेदकोविषयनहींकरता ॥ इति॥

❀अथस्वरूपभेदकानिरूपण। पूर्वपक्षीकासमाधान❀

हेसिद्धांतिन्यद्यपिपूर्वउक्तयुक्तिबाधसे धर्मभेदमेंप्रत्यक्षकीअविषय. ताहुएभी स्वरूपभेदनिष्ठतिसकी विषयताका लोपनहींहोसकता। अर्थ यह स्वरूपभेदकोप्रत्यक्षविषयकरताहै ॥ शंका ॥ हेवादिन्वस्तुका- स्वरूपहीभेदहै यहकथनयुक्तिकरबाधितहै । क्योंकिभेदकेअधिकरण कोभिन्नकहतेहैं । औरएकहीवस्तुमेंआधाराधेयभाव अंगीकारनहीं और "स्वरूपंभिन्नं" यहप्रतीतिसर्वमेंप्रसिद्धहै।तिसकेनबननेसेस्वरूप हीभेदहैयहतुमकैसेकहतेहो ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् "स्वरूपं भिन्नं" इसप्रतीतिकीअनुपपत्तिनहींहै। क्योंकिजेसे (राहोःशिरः), अ० ॥ राहुकाशिरहै ॥ और (आत्मनश्चैतन्यं) अ० ॥ आत्माका चैतन्यहै । यहांएक पदार्थमेंभी भेदप्रतीति होतीहै:

भावयह । राहुतथाशिरकाभेदनहीं तोभी भेदप्रतीतिहोतीहै। औरआ
त्मातथाचैतन्यकाभेदनहीं। क्योंकिचैतन्यस्वरूपहीआत्माहैतोभीभेद
प्रतीतिहोतीहै। तैसेस्वरूपकोऔरभेदको एकहुएभी भेदप्रतीतिसंभव
तीहै ॥ शंका ॥ हेवादिन्स्वरूपतथाभेदशब्दकी प्रवृत्तिकानिमित्त
भिन्नहैवानहीं । यदिप्रवृत्तिकानिमित्तभिन्ननहीं यहअंगीकारकहोतो
"स्वरूपंभेदः" ऐसेदोनोंशब्दोंकाएकठा प्रयोगनहींहोगा । क्योंकि
पर्य्यायशब्दोंकाएकठाप्रयोग देखनेमेंनहींआता ॥ औरयदिप्रवृत्तिका
निमित्तभिन्नहै तोवहकौननिमित्तहै । समाधान॥ स्वरूपशब्दप्रयुक्त
जोव्यवहारहै तथाभेदशब्दप्रयुक्तजोव्यवहारहै तिसमेंइतरनिरपेक्षता
तथाइतरसापेक्षतारूप निमित्तसेदोनोंशब्दोंकीप्रवृत्तिहै। अर्थयहइतरनि
रपेक्षत्वरूपनिमित्तकोलेकरस्वरूपशब्दकीस्वरूपमेंप्रवृत्तिहै । औरप्रति
योग्यादिसापेक्षत्वरूपनिमित्तकोलेकर भेदशब्दकीस्वरूपमेंप्रवृत्तिहै ।
यातेपर्य्यायताकीप्राप्तिनहीं॥ शंका ॥ अभेदमेंसापेक्षत्वतथानिरपेक्षत्व
प्रयुक्तविलक्षणताकी अनुपपत्तिहै । अर्थातस्वरूपशब्दतथाभेद
शब्द कीप्रवृत्तिकेनिमित्तका भेदनहींसंभवता । क्योंकिस्वरूपत
थाभेदएकहीपदार्थहै । तिसएकपदार्थके वाचकपदोंकीप्रवृत्तिके
निमित्तकाभेदअयुक्तहै ॥ समाधान ॥ हे सिद्धांतिन् एक
पदार्थकेवाचक शब्दोंकीप्रवृत्तिके निमित्तकाभेदभीसंभवताहै ।
तथाहि । जैसेएकहीदेवदत्तशरीरमें पितातथापुत्रशब्द प्रयुक्तव्यव
हारकेअर्थ तिसमेंप्रवृत्तहुएजो पितापुत्रादिशब्दहैं। तिनकोपुत्रादिसा
पेक्षत्वरूपजोप्रवृत्तिकानिमित्त तिसकीअपेक्षादेखनेमेंआतीहै। अर्थात्
पुत्रकीअपेक्षासेतिसमें पिताशब्दकीप्रवृत्तिहोतीहै ॥ औरपिताकी

अपेक्षासेतिसमेंपुत्रशब्दकीप्रवृत्तिहोतीहै। तैसेएकहीस्वरूपमेंप्रवृत्तिका निमित्तजुदाहोनेसे स्वरूपशब्दतथाभेदशब्दकीप्रवृत्तिहोजायेगी।और वहनिमित्तपूर्वककथनकरदियाहै॥शंका॥हेवादिन्स्वरूपशब्दकोइतरनिर्पेक्षहुएभीभेदशब्दकोस्वरूपमेंप्रवृत्तिकेअर्थप्रतियोग्यादिकोंकीअपेक्षाअवश्यकहनेयोग्यहै।तैसेमानेहुए इतरसापेक्षताकेप्राप्तहोनेसेभेदशब्दकी स्वरूपमेंप्रवृत्तिऔरइतरसापेक्षताकेनप्राप्तहुएभेदशब्दकीस्वरूपमेंअप्रवृत्ति होतीहै। इसप्रकारकेप्राप्ताप्राप्तविवेकसेसापेक्षपदार्थहीभेदशब्दकावाच्य सिद्धहोताहै । स्वरूपवाच्यनहींसिद्धहोता । क्योंकिवहस्वरूपइतर निर्पेक्षहै॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् तिससापेक्षपदार्थकाभीस्वरूपसे भेदनहीं।किंतुजैसेकोईवस्त्रादिद्रव्यस्वरूपसे निर्पेक्षहुआभीहस्त तथा वितस्तिआदिशब्दसेव्यवहारकाविषयहुआइतरसापेक्षवहीद्रव्यहोताहै। कोईहस्तादिशब्दकावाच्य तिसद्रव्यसेभिन्नपदार्थनहींहोता।तैसेप्रकरण मेंभीइतरप्रतियोग्यादिसापेक्षहुआस्वरूपहीभेदशब्दकावाच्यहै।भेदशब्द सेव्यवहारकाविषयहुआकोईस्वरूपसेभिन्नपदार्थनहींहोजाता।यातेस्व रूपहीभेदशब्दकावाच्यहै॥ शंका ॥ हेवादिन्स्वरूपसेभिन्नकोईपदार्थ है अथवानहीं । प्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिस्वरूपसेजिसका भेदहोगा तिसकोनिःस्वरूपताकीप्राप्तिसे अवस्तुपनाहोगा। औरयदि स्वरूपसेभिन्न कोईपदार्थनहीं। यहद्वितीयपक्षकहो तोस्वरूपहीअखंड सिद्धहुआभेदकोईपदार्थनहीं॥औरहेवादिन्यदितुमऐसेकहोकियद्यपि स्वरूपप्रतियोगिकभेदनहीं। तथापिस्वरूपहीइतरसे भिन्नक्योंनहो।तैसे मानेहुए स्वरूपहीएकरसहै यहकैसेकहतेहो॥ सोयहकथनभीतुम्हारा समीचीननहीं । क्योंकिस्वरूपभेदके प्रतियोगीको निःस्वरूपताहोनेसे

तत्प्रतियोगिक भेदकोभी निःस्वरूपताकीप्राप्तिहोगी ।औरस्वरूपभेद
काप्रतियोगीयदिस्वरूपकोहीमानो तोअपनेसेअपनाभेदप्राप्तहोगा ॥
सोअप्रसिद्धहै॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् स्वरूपसेभिन्नभीपदार्थहै।
तिसकोनिःस्वरूपताकीप्राप्तिनहींहोती । क्योंकिजैसेएकघटसेभिन्न
दूसरेघटको अघटपनादेखनेमेंनहींआता। तैसेस्वरूपसेभिन्नकोभीनिः
स्वरूपतानहींहोती ॥ शंका ॥ एकघटसेदूसरेघटकाभेदमानेहुएभी
तिसके अघटपनेके अदर्शनमें कौनकारणहै । क्या? घटसेभिन्नजो
भेदांतरहै वहअघटपनेकेअदर्शनमेंप्रयोजकहै।अथवाघटस्वरूपभेदमेंभी
प्रतियोगिताअवच्छेदककाभेदप्रयोजकहै।यहकहाचाहिये॥समाधान॥
यद्यपिएकघटसेभिन्नदूसरेघटमेंकिंचित्वैधर्म्यरूपभेदांतरविद्यमानभी है
परंतुपूर्वधर्मभेदकेनिराकरणमेंकथनकियेहुएदोषोंकीप्राप्तिसेतिसकोभेद
पनास्वीकारनहीं । यातेप्रथमपक्षअसंगतहै ॥ औरवैधर्म्यकेहुएही
स्वरूपभेदहोताहै यदियहद्वितीयपक्षकहो तोइसमेंहमकोभी इष्टापत्ति
है।क्योंकिसर्वअनात्मस्वरूप वैधर्म्यअर्थात्तत्तव्यक्तित्वरूपअसाधारण
धर्मकरव्याप्तहैं ॥ यातेअनात्मास्वरूपभेदमें तत्व्यक्तित्वरूपवैधर्म्यही
प्रतियोगिताकाअवच्छेदकहै॥ तिसकेभेदसेही एकघटसेभिन्नद्वितीय
घटस्वरूपको निःस्वरूपताकीप्राप्तिनहीं। तात्पर्य्ययहहै । किघटस्वरूप
भेदमेंघटनिष्ठवैधर्म्यही प्रतियोगिताकाअवच्छेदकहै ॥इसकारणसेघटस्व
रूपजोभेदतिसकोनिःस्वरूपताकीप्राप्तिनहीं।क्योंकियदिस्वरूपत्वप्रतियो
गिताकाअवच्छेदकहोतातोस्वरूपसेभिन्नकोनिःस्वरूपताकीप्राप्तिहोती
परंतुस्वरूपत्वप्रतियोगिताकाअवच्छेदकनहीं।यातेपूर्वउक्तप्रकारसेअन्य
घटकाघटसेभेदहुएभीअघटत्वकेअदर्शनमेंप्रतियोगिताअवच्छेदकभेदको

प्रयोजकत्वसंभवहोनेसे द्वितीयपक्षमेंइष्टापत्तिहै ॥ इति ॥

❋अथकिसीवादीकीरीतिसेभेदत्रयकानिरूपण❋

शंका ॥ क्या?स्वरूपहीभेदहैअथवाइतरभीभेदहैं ॥ प्रथमपक्ष तोनहींसंभवता ॥ क्योंकिइतरकोभी भेदपनेमें दोपकाअभावहै ॥ तथाहि ॥ भिन्नधर्मिविषयकभेदवर्त्तताहै ॥ यहपूर्वस्वीकारकियाहै ॥ इसपक्षमेंअन्योऽन्याश्रयादिदोषोंकीप्राप्तिनहींहोती ॥ क्योंकिस्वरूप भेदकरभिन्नधर्मीमें अन्यभेदकी स्थितिसंभवतीहै । औरस्वरूपभेदको इतरकीअपेक्षानहीं।यातेकेवलस्वरूपहीभेदहै यहकथनअयुक्तहै॥और यदिद्वितीयपक्षकहो तोसर्वही अन्योऽन्याभाव तथावैधर्म्यादिरूपभेद यथायोग्यस्वीकारकरनेयोग्यहैं । तिसयथायोग्यताकोहीस्पष्टकरतेहैं। अर्थातघटादिकों में भेदत्रयको विवेककरदिखलातेहैं॥ घटादिद्रव्यतथा गुणऔकर्मइनतीनपदार्थोंमेंतोस्वरूप तथाअन्योऽन्याभावऔ वैधर्म्य यहतीनों भेदवर्तमानहैं । क्योंकिद्रव्यगुणतथाकर्मस्वरूपसेभिन्नभीहैं औरतिनकापरस्परअन्योऽन्याभावरूपभेदभी तिनमेंवर्तमानहै । और द्रव्यत्वगुणत्वऔकर्मत्वयह असाधारणधर्मरूप वैधर्म्यभेदभीतिनमें है । औरसामान्यतथासमवाय इनदोपदार्थोंमेंस्वरूपभेदतथाअन्योऽन्याभावरूपभेद यहदोभेदरहतेहैं । औरसामान्यादिकोंमें वैधर्म्यका अभावहोनेसेतृतीयभेदतिनमेंनहींहै । क्योंकिप्रथमकार्यद्रव्यतथागुण औकर्मयहतीन तोसामान्य तथासमवायमें वृत्तिनहीं। किंतुकेवलद्रव्य मात्रवृत्तिहैं॥ औरसामान्यभी सामान्यमेंतथासमवायमेंवृत्तिनहीं।क्यों किवहदोनों निःसामान्यहैं ॥ औरसमवाययद्यपिसामान्यमेंवृत्तिभीहै तथापितिसकोउभयवृत्तिहोनेसे वैधर्म्यताकाअभावहै । इसकारणसे

सामान्यादिकों मेंदोहीभेदहैं । तीसराभेदतिनमें नहीं रहता । और अभावकोभावकीआश्रयतानहीं।यातेतिसमेंवैधर्म्यताकाअभावहै। और तिसमेंअन्योऽन्याभावरूपभेदभी नहींवर्तता।क्योंकिअभावमेंअभावस्वीकारनहींहै । तिसकारणसेअभावमें केवलस्वरूपहीभेदहै । इतरदोभेद तिसमेंनहीं । इसप्रकारयथायोग्यतीनोंभेद स्वीकाकरनेयोग्यहैं॥इति॥

अथदोनोंभेदोंकेनिराकरणपूर्वकस्वरूपभेदकास्थापन।

समाधान ॥ पूर्वतीनभेदोंका जोनिरूपणकिया सोनहींसंभवता । क्योंकिसर्वपदार्थोंमें अनुगतहोनेसेस्वरूपभेदतोअवश्यहीस्वीकारकरने योग्यहै ॥ यद्यपिभेदव्यवहारकीसाधकता वैधर्म्यादिकों मेंतुल्यहीहै । तिससेकेवलस्वरूपभेदकी आवश्कताकहनीनहींसंभवती ॥ तथापि अन्योऽन्याभावऔ वैधर्म्यको व्यभिचारीहोनेसे भेदव्यवहारकी अप्रयोजक रूपताहोनेकर तिनकाअंगीकारव्यर्थहै ॥ शंका ॥ वहदोनों व्यभिचारी हुए भी भेद व्यवहार के साधक क्यों नहीं होते ॥ समाधान ॥ एकाकारजोव्यवहारहोताहै । तिसकोएकरूपविषयकर साध्यत्वकानियमहै। जैसै "अयंघटः" "अयंघटः" इसएकाकारव्यवहारमें सर्वघटोंमेंअनुगतघटत्वजातिही प्रयोजकहै । घटव्यक्तिइसव्यवहारका प्रयोजकनहीं।क्योंकिव्यक्तिअननुगतहै।औरयदिअननुगतव्यक्तिकोही एकाकारव्यवहारमें प्रयोजकमाने तोजातिकी असिद्धिप्राप्तहोगी । यातेअनुगतव्यवहारमें अनुगतविषयहीप्रयोजकहै यहनियमहै । इस प्रकारप्रकरणमेंभीभेदव्यवहारकाविषय जोअनुगतस्वरूपभेदहै। तिसकोअनुगतभेदव्यवहारमें प्रयोजकताकेसंभवहुए व्यभिचारीजोवैधर्म्यादितिनकोभेदव्यवहारका प्रयोजकपनानहींसंभवता ॥ शंका ॥

स्वरूपभेदकोभीभेदव्यवहारकी हेतुतानहींसंभवती । क्योंकिभेदस्वरूपअपनेस्वरूपमें भेदव्यवहार देखनेमेंनहींआता । यदिस्वरूपमेंभी भेदमानोगे तोअपनेसे अपनाभेदभीहुआचाहिये ॥ समाधान ॥ स्वरूपहीइतरसापेक्षहुआ भेदव्यवहारकाहेतुहै । यहपूर्वबहुतवारकह आएहैं । क्योंकिस्वरूपकाप्रतियोगिकोटिमें प्रवेशमानेहुए अन्यधर्मी काअभावहै । औरधर्मिकोटिमेंप्रवेशमानेहुए अन्यप्रतियोगीकाअभाव है । औरभेदकोधर्मीतथाप्रतियोगीकरही घटितपनेकानियमहै ॥ यातेअपनेसेअपनाभेदप्रसंगभीनहींप्राप्तहोता॥शंका ॥हेवादिन्स्वरूप तथाभेदकाअभेदमानेहुएतिनकापरस्परअंतरभावहोनेकरएकशेषरहना चाहिये । सोक्या?स्वरूप भेदमेंप्रवेशकरताहै।अथवास्वरूपमेंभेदप्रवेश करताहै । इनमेंप्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिभेदहै । इतनाही व्यवहारहुआचाहिये स्वरूपव्यवहारनहोनाचाहिये । औरद्वितीयपक्ष भीअसंगतहै । क्योंकिस्वरूपमात्रकेशेषरहेहुए भेदाकारव्यवहारकालोपहोगा ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन्दोनोंकाअभेदमानेहुएएकशेष रहेगा ॥ यहआपकाकथनसत्यहै । परंतुभेदकोस्वरूपसेअभिन्नहोने सेस्वरूपहीशेषरहताहै । औरस्वरूपकोशेषमानेहुए भेदव्यवहारनहीं होगा । यहकथनभीनहींसंभवता । क्योंकिधर्मिआदिकसापेक्षस्वरूपहीभेदव्यवहारकाहेतुहै । यहअर्थपूर्वअनेकवारकथनकियाहै ॥ इसीअर्थकोप्रकटकरनेकेलिये प्रतिवादीकेविकल्पको अनुवादपूर्वक निराकरणकरतेहैं । औरस्वरूपभेदक्या?भिन्नधर्मीमेंभेदव्यवहारकाहेतु है ।अथवाअभिन्नधर्मी में भेदव्यवहारकाहेतुहै॥ इसविकल्पकाभीयास्थानमेंअवकाशनहीं । क्योंकिइन्द्रियोंसेउपस्थितहुए वस्तुमात्रमें

जबधर्मीतथाप्रतियोगिज्ञानकी अपेक्षाहोतीहै । तबभेदव्यवहारउत्पन्नहोताहै ॥ औरजबतिनकेज्ञानकी अपेक्षानहींहोती तबअभेदव्यवहारउत्पन्नहोताहै । यातेपूर्वकथनकियाअर्थनिर्दोषहै ॥ इति ॥ शंका ॥ हेवादिन् ॥

*** जन्यत्वमेवजन्यस्य मायिकत्वसमर्पकम् ***

इसकारिकामेंप्रपंचको मायाकाकार्यहोनेसे पूर्वमिथ्यापनानिरूपणकिया । तिसआविद्यकप्रपंचमेंप्रत्यक्षादिप्रमाणप्रवृत्तनहींहोसकते। क्योंकिमिथ्यापदार्थसाक्षिमात्रकरसिद्धहोताहै। तिसमेंप्रत्यक्षादिकोंकी अपेक्षानहीं।औरकल्पितवस्तुप्रतियोगिकभेदकोकल्पितहोनेकरतिसको भीप्रत्यक्षादिकविषयनहींकरसकते ॥ तिसकारणसेप्रत्यक्षादिकोंकेबल करब्रह्मात्माकेअभेदमेंभेदकीशंकातुमकैसेकरतेहो ॥समाधान॥ हेसिद्धांतिन्यदिअज्ञानकार्यत्वप्रपंचमेंहोता तोरजतकीन्याईतिसकोमिथ्यापनेकीसिद्धिहोती। परंतुअज्ञानकार्यत्वही प्रपंचनिष्ठनहींसिद्धहोसकता॥ क्योंकिबहुतश्रुतियों मेंतिसको ब्रह्मकार्यत्वहीश्रवणकियाहै।। शंका ॥ हेवादिन्प्रपंचमेंब्रह्मकार्यत्वको कथन करतीहुईश्रुतियों का भी कार्यकारणभावकेप्रतिपादनमेंतात्पर्यनहीं॥क्योंकिब्रह्मकोकारणमानेहुए ॥

नतस्यकार्यंकरणंचविद्यते । तदेतद्ब्रह्मापूर्वमनपरं

अ० ॥ तिसब्रह्मकाकोईकार्यनहीं है तथाकोईकरणनहीं है॥सो यहब्रह्मकारणसेरहितहै। तथाकार्यसेरहितहै॥ इत्यादिश्रुतियोंकाविरोध प्राप्तहोताहै ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन्प्रपंचकोब्रह्मकाकार्यपना कहनेवालीश्रुतियोंकास्वार्थमेंतात्पर्य है ॥ क्योंकि ॥

***गतिसामान्यात् ॥ अ० अ० १ पा० १॥ सू० १० ***

अ०॥ जैसेसर्वनेत्रोंकी एकरूपविषयकसामान्यगतिहै । अर्थात् सर्वकेनेत्ररूपविषयक एकज्ञानकोहीउत्पन्नकरतेहैं । तैसेसकलवेदांत वाक्यब्रह्मविषयकएकप्रकारके ज्ञानकोहीउत्पन्नकरतेहैं।इसन्यायसेऔर अभ्यासकोतात्पर्य्यकाग्राहकलिंगहोनेसेस्वार्थमेंतिनश्रुतियोंकातात्पर्य्य संभवताहै । औरवह अभ्यास यहांप्रकरणमेंविद्यमानहै।औरपूर्वकथन किये जोश्रुतिरूप विरोधिवाक्यहैं। वहतोईश्वरकेस्थूलतथासूक्ष्मइनदो शरीरोंकेअभावकोप्रतिपादनकरतेहैं।कार्यकारणकेअभावकोनहींकहते यातेतिनकाविरोधनहीं । अब अभ्यासरूपलिंगकोहीस्पष्टकरतेहैं ॥

* सदेवसोम्येदमग्रआसीत् । यतोवाइमानिभूतानि जायंते । तस्माद्वाएतस्मादात्मनःआकाशःसंभूतः। यथाग्नेः क्षुद्राविस्फुलिंगाः एवमेतस्मादात्मनः सर्वे देवाः सर्वेलोकाः सर्वेएतेआत्मानोव्युच्चरंति *

अ०॥हेप्रियदर्शनश्वेतकेतोयहदृश्यमानजगत् अपनीउत्पत्तिसेपूर्वस्थूल रूपकोत्यागकरसत्ब्रह्मरूपहीथा।औरजिससेयहसर्वभूतउत्पन्नहोतेहैंसो ब्रह्महै। औरतिसमंत्रतथाब्राह्मणप्रतिपादितमायोपाधिकब्रह्मसेआकाश उत्पन्नहुआ । औरजैसेएकअग्निसेछोटेछोटे अग्निके अवयवरूपविस्फु लिंगनानाप्रकारकेप्रकटहोतेहैं। तैसेइसविज्ञानमय आत्माकाजाग्रततथा स्वप्नअवस्थासेपूर्व जो अज्ञानउपाधिकस्वरूपहै । तिससेप्राणादिकोंके अधिष्ठाता अग्निआदिकसर्वदेवता औरकर्मोंकेफलउत्पन्नहुए । तथा अंतःकरणादिउपाधियुक्तचिदाभासउत्पन्नहुए। इत्यादिकश्रुतिवचनों से ब्रह्मका कार्यपना प्रपंचमें प्रतीत होताहै ॥ और ब्रह्मको प्रपंच कीकारणताकेवलश्रुति प्रमाणकरही सिद्धनहीं किंतु युक्तिसेभी

सिद्धहै ॥ तथाहि ॥

(जन्माद्यस्ययतः । आ० अ० १। पा० १ । २ ॥)

अ० ॥ प्रत्यक्षादिकोंकर उपस्थितइसजगतका उत्पत्तिस्थिति भंगजिससर्वज्ञसर्वशक्तिवालेकारणसेहोताहैसोब्रह्महै इसन्यायसेभीब्रह्म कोजगत्कीकारणतासिद्धहै।यहअधिकरणसूत्रहै।जिससूत्रमेंविषयतथा संशयऔपूर्वपक्षतथासिद्धांतऔरप्रयोजनयहपांचअवयवहोंतिसकोअधि करणकहतेहैं।यहांयहअधिकरणकीरचनाहै।'यतोवाइमानि'इत्यादिश्रुति इसकाविषयवाक्यहै।सोक्या?ब्रह्मकेलक्षणको बोधननहींकरता अथवा करताहै। एकपदार्थकोउपादानतथा निमित्तरूपउभयविधकारणताके असंभवतथासंभवसेसंशयहोताहै।इसप्रकारकासंशयहुएपूर्वपक्षप्राप्तहुआ श्रुतिकोअनुमानके अनुसारीहोनेसे वहस्वतंत्रउभय विधकारणताको बोधननहींकरसकती ॥ औरएकपदार्थकोदोनोंप्रकारकी कारणतामें दृष्टांतकाअभावहोनेसे अनुमानभीउभयविधकारणताके बोधनमें असमर्थहै ॥ औरउपादानत्वानिमित्तत्वरूप एकप्रकारकीहेतुताको ब्रह्मकालक्षणमानेहुए वस्तुपरिच्छेदहोनेसे लक्ष्यपदार्थमें अब्रह्मत्व प्राप्तहोगा । यातेयहवाक्यब्रह्मके लक्षणको नहीं बोधनकरता । इसप्रकारपूर्वपक्षकेप्राप्तहुए अबसिद्धांतनिरूपणकरतेहैं । अनुमानको पुरुषकीबुद्धिसेउत्पन्नहोनेकर तिसमेंदोषकीसंभावना होसकतीहै।याते तिसकोअपौरुषेयरूपतासे सर्वदोषोंसेरहितआगमप्रमाणकाअनुग्राहक तर्करूपतासंभवतीहै । इन्द्रियोंकेअविषयभूतअर्थमें स्वतःतिसको प्रमाणतानहीं । आगमसिद्धजोउभयविधकीकारणता तिसमेंसुखादि दृष्टांतकोलेकरअनुमानसंभावनामात्रकाहेतुहै । अर्थयहजैसेसुखादिक

अभिन्ननिमित्तउपादानकहैं तैसेजगतभीअभिन्ननिमित्तउपादानक संभवहोसकताहै । यातेवस्तुपरिच्छेदका अभावहोनेसे लक्ष्यपदार्थमें ब्रह्मत्वकीसिद्धिहै । इसप्रकारसृष्टिवाक्य जगतका अभिन्ननिमित्त उपादानसच्चिदानंदस्वभावब्रह्महै । ऐसेलक्षणकोबोधनकरताहै । यहसिद्धांतहै । जिसअधिकरणमें लक्षणकानिरूपणहो तिसकाप्रयो जनभिन्ननहींहोता। किंतुपूर्वअधिकरणकाप्रयोजनहीतिसकाप्रयोजन जानना ॥इति॥ इसप्रकारश्रुतिऔयुक्तिसेब्रह्मकार्यत्वप्रपंचमेंसिद्धहै । औरब्रह्मकोसत्यस्वरूपहोनेकर तिसकेकार्य्य प्रपंचमेंभीसत्यत्वअबाधित है तैसेमानेहुएसत्यप्रतियोगिकभेदकोसत्यपनाहोनेसे प्रत्यक्षादिकोंकी विषयतातिसमेंसंभवतीहै । यातेप्रपंचकाभेदआत्मामें अवश्यप्राप्त होताहै ॥ इति ॥ शंका ॥ हेवादिन् जैसेप्रपंचकोब्रह्मकार्यत्वकथन करनेवालेश्रुतिवचनहैं। तैसेअज्ञानकाकार्यप्रपंचहै।ऐसेकथनकरनेवाले श्रुति वचनभीबहुतहैं ॥ तथाहि ॥

* मृत्युनैवेदमावृत्तमासीत् * बृ० उ० अ० (१) ब्रा२ (१)

तद्धेदंतर्ह्यव्याकृतमासीत् * बृ० अ० (१) ब्रा० (७)

इंद्रोमायाभिःपुरुरूपईयते ॥ *

*मायांतुप्रकृतिंविद्यात् । नासदासीन्नोसदासी त्तमआसीत् *

अ० ॥ यहदृश्यमानजगतउत्पत्तिसेपूर्वसाभासअज्ञानकर आच्छादितथा ॥ अर्थातअज्ञानमेंविलीनथा ॥ और "तत्" इस शब्दसेबीजावस्थापन्नजगतकहाजाताहै ॥ औरऐतिह्यप्रयोगमें "ह" श होताहै ॥ और "इदं" यहशब्दव्याकृतअर्थातस्पष्टनामरूपवाले

प्रपंचकावाचकहै। इनदोनोंपदोंकीसमानाधिकरणतासेपरोक्षअपरोक्ष इनदोनोंअवस्थावालेजगत्काअभेदप्रतीतहोताहै ॥ इससेयहअर्थ सिद्धहुआ।सोयहजगतउत्पत्तिसेपूर्व"अव्याकृतमासीत्"कहियेसाभास अज्ञानरूपहीथा। औरपरमेश्वरमिथ्याअभिमानोंसेवहुतरूपप्रतीतहोता है।परमार्थसेवहवहुतरूपनहीं।शंका।मृत्युअव्याकृतादिशब्दअज्ञानमात्र केवाचकनहीं किंतुअज्ञानउपाधिकआत्माकेवाचकहैं। यातेअज्ञान कार्यप्रपंचहै यहअर्थनहींसिद्धहोता॥ ऐसीआशंकाकेहुएअवमाया दिपदोंकरयुक्तश्रुतिवाक्योंकोकथनकरतेहैं। मायारूपअज्ञानकोजगत् काउपादानकारणजाने। क्योंकिकार्यतथाकारणकीसमानताहोतीहै। औरजगतकीउत्पत्तिसेपूर्वस्थूलतथासूक्ष्मयह दोनोंप्रकारकेपदार्थनहीं थे किंतुतमहीथा ॥यहांतमशब्दआवरणशक्तिप्रधानअज्ञानकावाचक है॥इत्यादिकश्रुतिवाक्यजगतकोअज्ञानकार्यत्वकथनकरतेहैं ॥ और इसपूर्वकथनकियेहुएअर्थमें श्रुतिअनुसारीयुक्तिभीहै ॥ तथाहि ॥

❋ मायामात्रंतुकार्त्स्न्येनानभिव्यक्तस्वरूपत्वात् ❋

अ० ॥ उत्तरमीमांसाके तृतीयअध्याय गतद्वितीयपादकायह तृतीय सूत्रहै ॥ इसमें—

❋ सयत्रप्रस्वपिति ॥ ३० उ० अ० ६ ब्रा० ३ । ९ ॥ ❋

अ० ॥ सोआत्माजिसकालमेंशयनकरताहै। इसवाक्यसेलेकर

❋ नतत्ररथानरथयोगाः ॥ ३० उ० अ० ६ ब्रा० ३ १० ॥ ❋

अ० ॥ तिसस्वप्नकालमेंजाग्रत्केरथनहींहैं । तथातिनकेयोग्य अश्वनेहींहैं। इत्यादिविषयवाक्यहै ॥ तिसमेंयहसंशयहै॥क्याजाग्रत् अवस्थाकीन्याईस्वप्नअवस्थामेंभीव्यावहारिकअर्थक्रियामेंसामर्थ्यवाली

सृष्टिहै अथवाप्रातिभासिकसृष्टिहै॥इसप्रकारसंशयकेहुएपूर्वपक्षप्राप्तहुआ स्वप्नमेंजाग्रत्कीन्याईव्यावहारिकसत्तावालीसृष्टिहै ॥ क्योंकि—

अथरथान्रथयोगान्पथःसृजते ॥ बृ० उ० अ०६।ब्रा०३। १० ।

अ० ॥ स्वप्नकालमेंरथोंकोतथातिनकेयोग्यअश्वोंकोऔरमार्गों कोयहआत्माउत्पन्नकरताहै । इसश्रुतिप्रमाणसेरथादिकोंकीउत्पत्ति स्वप्नकालमेंप्रतीतहोतीहै॥ यातेतिसश्रुतिप्रमाणसेस्वप्नकालमेंव्यावहारिकसत्तायुक्तहीसृष्टिहै ॥ *इसप्रकारपूर्वपक्षकेप्राप्तहुएसिद्धांतनिरूपण* करतेहैं॥ सूत्रमेंजो "तु" शब्दहै वहपूर्वपक्षकोनिषेधकरताहै॥अर्थात् स्वप्नकालमेंव्यावहारिकसृष्टिहै । यहकथनपूर्वपक्षीकानहींसंभवता॥ यदिस्वप्नमें व्यावहारिकसत्तावालीसृष्टिनहींतोस्वप्नमेंकैसी सृष्टिहै। ऐसीआकांक्षाकेहुएकहतेहैं । (**मायामात्रं**) मायाकहियेमिथ्या रूपहीस्वप्नमेंसृष्टिहै व्यावहारिकसत्तायुक्तसृष्टिकावहांगंधभीनहींहै। इसमेंहेतुकहतेहैं ।

❋ कार्त्स्न्येनानभिव्यक्तस्वरूपत्वात् ❋

अ० ॥ व्यावहारिकवस्तुकेधर्मकरस्वप्नकोअप्रकटस्वरूपहोनेसे अर्थात्व्यावहारिक पदार्थोंकेउचितदेशकालादि सामग्रीपूर्वकस्वाप्न पदार्थोंकीअभिव्यक्तिनहींहोती । इसीकारणसे स्वप्नमेंसृष्टिकथन करनेवालीश्रुति व्याहारिकसृष्टिको नहींकथनकरती । और (**नतत्ररथानरथयोगाः**) इत्यादिश्रुतिनेसृष्टिप्रतिपादकश्रुति केविषयभूतरथादिकोंका निषेधकियाहै।इसलियेस्वाप्नसृष्टिव्यावहारिकसत्तावालीनहींकिंतु अविद्योपादानक होनेसे प्रातिभासिकसत्ता वालीहै । इसन्यायसेभीअज्ञानकार्यत्वप्रपंचमेंसिद्धहोताहै। इस प्रकार

पूर्वपक्षीतथासिद्धांतीकरके ब्रह्मकोकारणतातथाअज्ञानकोकारणताके निरूपणहुएएकतटस्थवादी आशंकाकरताहै।

❀ अथतटस्थकी शंकाकेसमाधानपूर्वक पूर्वपक्षका उपसंहार ❀

शंका ॥ इसपूर्वउक्तप्रकारसेश्रुतियोंकापरस्परविरोधहोनेकरजब दोनोंहीकारणनहीं हैं तोजगत्का अन्य कोईकारणकहाचाहिये ॥ क्योंकिकारणसेविनाकार्यकीअनुपपत्तिहै ॥ समाधान ॥ कारणांतर केविद्यमानहोनेसेजगत्रूपकार्यकारणसेशून्यनहींक्योंकिअपनेअपने सिद्धांतमेंजैसाकारणहोनेकेयोग्यहै। तैसापरमाणुआदिकारणविद्यमान ही है॥ तिनकारणों मेंप्रथमपरमाणुकीसिद्धिकरते हैं।

त्रिसरेणुस्तावदारब्धः महत्वे सतिद्रव्योपादान त्वात् "कपालादिवत्"।

अ०—प्रथमत्रिसरेणुआरब्धअर्थात्कार्यहै। महत्परिमाणवाला हुआद्रव्योपादानकहोनेसे । जोजो महत् परिमाणवालाहूआद्रव्यो पादानकहोताहै ॥ सोसोकिसीकरआरब्धहोता है ॥ जैसेकपालादि कार्य है ॥ इति ॥ इसअनुमानसेत्रिसरेणुकोकार्यतासिद्ध है ॥ इस प्रकारत्रिसरेणुकेअवयवरूपद्व्यणुकोंमेंभीकार्यताअनुमानसेसिद्धकरनी सो अनुमान यह है ॥

❀ विवादाध्यासितंकार्यद्रव्यं त्रिसरेणवयवाख्यं स्वपरिमाणादणुतरपरिमाणारब्धं कार्यद्रव्य त्वात्। संमतवत् ॥ ❀

अ० ॥ विवादकाविषयजोकार्यद्रव्यत्रिसरेणुका अवयवरूपद्व्य

णुकसंज्ञकहैवहअपने परिमाणसेअणुतरपरिमाणवाले द्रव्यकरआरब्ध है ॥ कार्यद्रव्यहोनेसे।जोजोकार्यद्रव्यहोताहै । सोसो अपनेपरिमाणसे अल्पपरिमाणवाले द्रव्यकरहीआरब्धहोताहै ॥ जैसेत्रिसरेणुकार्यद्रव्य होनेसेअपनेपरिमाणसे न्यूनपरिमाणवालेद्व्यणुकोंसेआरब्धहै॥इति। इसप्रकार जोद्व्यणुक परिमाणकी अपेक्षासे न्यूनपरिमाणवाला द्रव्यद्व्यणुकका आरम्भकहै वहीपरिमाणुजगतका मूलकारणहै ॥ इसप्रकारवैशेषिकादिकमानतेहैं ॥ औरऐसेहीसांख्यादिमतवालेप्रधा नादिकोंकोजगत्‌कामूलकारणकहतेहैं ॥ इसप्रकारजगतकोपरमाणु आदिजन्यमानेहुए प्रकरणमेंतिसकथनकाउपयोगकहतेहैं ॥ जिस कारणसेसत्यउपादानककार्यकोसत्यताकानियमहै ॥ जैसेपृथिवीउपा दानकपदार्थकोपृथिवीरूपताहै ॥ औरपरमाणुआदिकभीसत्यहैं।तिस कारणसे ततउपादानकजगतभीसत्यरूपहै ॥ तिसीकारणसेप्रत्यक्षादि प्रमाणसिद्धअनात्मप्रतियोगिकभेदकेविद्यमानहुए सर्वहीअद्वैतहै ॥ यहअर्थकिसप्रकारसिद्धहोसकताहै किंतुनहींसिद्धहोसकता ॥ इस पूर्वपक्षकेसंग्रहकाश्लोक ॥

❀ आत्माऽभेदप्रमित्यापिनाद्वैतंतत्प्रसिद्ध्यति ।
अनात्मभेदसंसिद्धेःप्रत्यक्षादेः प्रमाणतः॥१॥❀

दो०—अभेदात्मविज्ञानते नहितवअद्वयसिद्ध ।
यतोअक्षादिमानते नात्मभेद प्रसिद्ध ॥ १ ॥

❀ अथसिद्धांत।तत्त्वंपदार्थकेशोधनपूर्वक
वाक्यार्थनिरूपण ❀

हेवादिन्‌जोतुमने पूर्वकथनकियासोनहींसंभवता ॥ क्योंकि

श्रुतिकेतात्पर्य्यकातुमकोज्ञाननहीं है ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन्श्रुतिके तात्पर्य्यकाज्ञानमुझेकैसेनहीं ॥ क्योंकिसंसारधर्मोसेनिष्कृष्टका अर्थात् भिन्नकियेहुएसाक्षिचेतनका संसारकर्तृत्वादिधर्मोंसे निष्कृष्टकेसाथ अर्थातभिन्नकियेहुए परमात्माकेसाथअभेदहै ॥ इसपूर्वकथनमेंश्रुति कातात्पर्य्यजाननेवालेतुमनेही संसारधर्मादिकोंकीभिन्नस्थितिकथन की है ॥ समाधान ॥ हेवादिन्तत्त्वमस्यादिश्रुतिने अनात्माकोपृथक् स्थापनकरकेशोधिततत्त्वंपदार्थोंका अभेदबोधनकियाहै यहतिसका अभिप्रायनहीं ॥ यदिअनात्माकापृथकस्थापननहींतोतिनकाअभेद कैसेश्रुतिबोधनकरती है ॥ ऐसीजिज्ञासाकेहुए प्रथमजिज्ञासाकेविषय भूतस्वरूपकोकथनकरते हैं ॥ प्रत्यगात्माकाब्रह्मकेसाथअभेदहै। इस अर्थकीसिद्धिकेलिये अधिकारीऐसा निश्चयकरताहै ॥ सोईदिख लाते हैं ॥ तहां प्रथमवाक्य में योग्यताकी प्राप्तिके अर्थ "वाक्यार्थज्ञानपदार्थज्ञानपूर्वकहोताहै" इसन्यायकोआश्रयणकरता हुआसिद्धांती त्वंपदार्थकीशुद्धिकाप्रकारप्रथमनिरूपणकरताहै।प्रत्यक् तथाकूटस्थचेतनरूपअधिष्ठानमें जाग्रतादितीनोंअवस्थाऔरकर्तृत्वादि अनर्थसमुदायजोसर्वव्यभिचारीप्रतीतहोताहै। वहसर्वहीतिसअनुगत साक्षिरूपअधिष्ठानचेतनमेंकल्पितहै ॥ जिसकारणसेवहसर्वअध्यस्त है इसकारणसेतिसअधिष्ठानचेतनसेभिन्नस्वतंत्ररूपताकरतिसअध्यस्त पदार्थकास्वरूपनहीं ॥ यहवार्त्ताअन्वयव्यतिरेकसे जानकरअधिकारि पुरुषनिर्णयकरताहै ॥ यहां "प्रत्यक्" इसविशेषणसेसाक्षीतथासाक्ष्य काअन्वयव्यतिरेकसूचनकिया ॥ सर्वअवस्थामें साक्षीकोअनुगत होनेसे तिसकाअन्वयहै औरदेहादिरूपसाक्ष्यकोपरस्परव्यभिचारीहोने

से तिसकाव्यतिरेक है ॥ औरअवस्थादिकोंको अध्यस्तपनासूचन करनेकेलिये अधिकरणका "कूटस्थ" यहविशेषणकथनकियाहै । तिस विशेषणसेवास्तवविकारकाअभावहोनेसेअज्ञानकेवशसेही अधिष्ठान मेंअन्याकारताकी प्रतीतिहै । यहलाभहै । औरइसीविशेषणसे कार्यकारणकाअन्वयव्यतिरेकभीसूचनकिया । सोइसप्रकारजानना। देहादिविवर्त्तरूपकार्योंका परस्परव्यभिचारहोनेसेतिनकाव्यतिरेकहै । औरविवर्त्ताधिष्ठानरूपकारणकोसर्वत्रअनुगतहोनेसेतिसकाअन्वयहै। और "अनर्थसमुदाय" यहजोपूर्वदेहादिअनात्मवर्गका विशेषणकहा है।सोदुःखित्वतथापरमप्रेमाऽस्पदत्वके अन्वयव्यतिरेककोसूचनकरता है । सोऐसेहै। दुःखकोव्यभिचारीहोनेसे तिसकाव्यतिरेकहै।औरपरम प्रेमाऽस्पदत्वको सर्वत्रअनुगतहोनेसेतिसकाअन्वयहै। औरव्यभिचारी तथाअनुगतकाअन्वयव्यतिरेकसूचनकरनेकेलिये अनात्मपदार्थोंका "व्यभिचारी" यहविशेषणपूर्वकहाहै। औरतिसकूटस्थमें अधिष्ठात्वकी योग्यताकेलिये "अनुगत" विशेणहै । औरस्वसत्ताप्रदमेंस्फूर्त्तिप्रदत्व कथनकरनेकेलिये "साक्षि" विशेषणहैऔरअनुगततथासाक्षीयहदोनों अधिष्ठानकेविशेषणअन्वयव्यतिरेककेकथनमेंभीउपयोगीहैंऔरपरमप्रेमा ऽस्पदत्वकेभीयहउपलक्षकहैं ॥इसप्रकारचारप्रकारकेअन्वयव्यतिरेकसे अधिष्ठानसेभिन्न अध्यस्तकीसत्तानहीं यहवार्त्ता अधिकारीनिश्चय करताहै । तिसनिर्णयकाफलकहतेहैं । इसरीतिसेनिर्णयकरकेशोधन कियेहुएशुद्धप्रत्यगात्माकेसाथ ब्रह्मकाअभेदसिद्धकरनेकेलियेतत्पदार्थ कोभीअधिकारीशोधनकरताहै ॥ तथाहि ॥ तत्पदार्थमेंभीजगत् कर्तृत्वऔपरोक्षत्वादिधर्म तथाआकाशादिरूपसर्वजगतजोव्यभिचारी

प्रतीतहोताहै। वहसर्वतिस अनुगतसत्‌चित्‌आनंदस्वरूपब्रह्ममें अध्यस्त है। औरतिसब्रह्मसेभिन्नकियाहुआअसत्‌है । औरकिसीप्रमाणकर सिद्धनहीं किंतुकेवलभ्रांतिरूपहीसिद्धहै। यातेवास्तवसे असत्‌है। यह अर्थचारप्रकारकेअन्वयव्यतिरेकसेअधिकारीमुमुक्षुनिश्चयकरताहै यहांपर "व्यभिचारी" यहजोजगत्‌काविशेषणपूर्वकहाहै और "अनुगत" यहजोअधिष्ठानकाविशेषणकहाहै । सोपूर्वउक्तचारप्रकारके अन्वयव्यतिरेककासूचकजानना। औरशून्यहीअधिष्ठानहै। इसबौध मतकेनिषेधकरनेकेलिये अधिष्ठानका "सत" यहविशेषणकहाहै।और सर्वत्रस्फूर्त्ति स्वरूपताअधिष्ठानकीदिखलानेकेअर्थ "चित" यह विशेषणकहाहै ॥ शंका ॥ अन्वयव्यतिरेककोतर्करूपताहोनेकरसंभावनामात्रकी हेतुताहुएभीप्रमाणतानहीं इसीसेतिनको अवधारणकी हेतुतानहींसंभवती॥ क्योंकिनिश्चयकाहेतुप्रमाणहीहोताहै।तर्कनहीं ॥ समाधान ॥ (नेतिनेति) इसनिषेधकश्रुतिरूपप्रमाणसेकर्तृत्वादि रूपप्रपंचकाअभावअधिष्ठानमें यहअधिकारीनिश्चयकरताहै ॥ याते अधिकारीकानिश्चयप्रमाणजन्यहैकेवलतर्कजन्यनहीं।यद्यपिनिषेधप्राप्तिपूर्वकहोताहै।प्राप्तिकेअभावहुएवहनिषेधकैसेहोगा। तथापिसृष्टिवाक्यसे तिसप्रपंचकीअधिष्ठानमेंप्राप्तिसेअनंतरनिषेधवाक्यप्रवृत्तहोताहै।यातेनिषेधप्राप्तिपूर्वकहीहै। औरयदिऐसेकहोकिप्रपंचकोसृष्टिवाक्यरूपश्रुतिप्रमाण सेसिद्धहोनेकरतिसकानिषेधनहींसंभवेगा।सोयहकथनभी असमीचीनहै क्योंकिअविद्यासेउपस्थितहुएजगत्‌का श्रुतिअनुवादकरतीहै॥ शंका॥ श्रुतिकोअनुवादकमानेहुएकिसलियेवहअनुवादकरतीहै ॥ समाधान हेवादिन्‌बोधकाहेतुजोअध्यारोपअपवादन्यायतिसकोआश्रयणकरकेबोध

कैश्रर्थश्रुतिअनुवादकरतीहै । यातेंश्रुतिप्रमाणकरयहजगतभासनहीं किंतुभ्रांतिसेभासहै । तिसकानिषेधसंभवताहै । इसप्रकारजाग्रतादिक

[illegible]

अधिकारीमुमुक्षुगुरुकोशरणकोप्राप्तहोताहै ॥ शंका ॥ गुरुकोशरण कोप्राप्तहोनानिश्चयकेअर्थहै । यदिवहनिश्चयपूर्वउक्तरीतिसेअधिकारी

[illegible]

दार्थकेभेदमेंहीप्रमाण थापिप्रत्यक्षादिकोंका वह समर्थनहीहै ॥

॥ शंका ॥ पूर्वउक्तअन्वयव्यतिरेकरूपयुक्तिसेंहीभेदकरनेवालेअनात्मा केसंबंधकोकल्पितनिश्चयहोनेकरिआत्मामेंतिसकाअभावहै । यातें ब्रह्मात्माकाअभेदअधिकारीकोनिश्चितहोजायेगा ॥ समाधान ॥ हे वादिन् युक्तिकोतर्करूपताहोनेकर स्वतंत्रकिसीअर्थमेंतिसको प्रमाणतानहीं है। इसीकारणसेअभेदका निश्चायकयुक्तिनहीं ॥ शंका ॥ अधिकारीको अभेदमें प्रमाण का अभाव कहना नहीं संभवता । क्योंकिअधीतवेदहीं अधिकारी होताहै । यातें श्रुतिप्रमाणसें तिसको अभेद निश्चय उत्पन्नहोजायेगा ॥ समाधान यद्यपि

जिसने पदपदार्थकी संगतिग्रहणकीहै।तिसको सुनाहुआशब्द अर्थ कावोधकहोजाताहै । तथापि असंभावनाकरविषयकोग्रस्त होनेसे तिसमेंशब्दजन्यज्ञान प्रतिष्ठाको नहींप्राप्तहोता । इसकारणसे ही असंभावनाग्रस्तविषयमें वहशब्दप्रमाणरूपतासे व्यवहारनहींकिया जाता। यातेअधिकारी अभेदमेंसंशययुक्तहोताहै "संशययुक्त" इस विशेषणसे "नित्यानित्यवस्तुकाविवेक"यहजोअधिकारीकाविशेषण सो अर्थसे निरूपणकिया।अबअधिकारीकाऔरविशेषणजो वैराग्यहै तिसकोनिरूपणकरतेहैं। संसाररूपएकरोगराजहै तिसकेअनुचरगर्भ वासादिअनेकरोगहैं। तिनसेउत्पन्नहुआजोदुःखोंका समूह तिसके अनुभवसेजिसपुरुषको वैराग्यउत्पन्नहुआहै।तिसीसेब्रह्मलोकमेंउत्पन्न हुएसुखकोभीविषकीन्याईमानताहै ॥ शंका ॥ अधिकारीमेंवैराग्यादि साधनसंपत्तिकेहुएभी गुरुके समीपगमननहींसंभवता ॥ क्योंकिगुरु केसमीपगमन कोईसंसारकी निवृत्तिकाकारणनहीं। औरयदिऐसेकहो (आचार्य्याद्धैवविद्या ।) अ० ॥ श्रोत्रियतथाब्रह्मनिष्ठगुरु सेहीआत्मज्ञानप्राप्तहोताहै । इत्यादिश्रुतिसेसंसार दुःखकेनिवर्त्तक आत्मज्ञानकीहेतुतागुरुकेसमीपगमनकोप्रतीतहोतीहै।यातेआत्मज्ञानके अर्थगुरुकेसमीपगमनसंभवताहै।सोयहकथनभीसमीचीननहीं।क्योंकि यदिआत्मज्ञानसंसारका निवर्त्तकहो तोगुरुकेसमीपगमनसंभवे परन्तु आत्मज्ञानकोसंसारके निवर्त्तकपनेमें कोईप्रमाणनहीं । यातेतिसके अर्थगुरुकेसमीपगमन नहींसंभवता ॥ समाधान ॥ हेवादिन्आत्म ज्ञानकोसकलसंसारकी निवर्त्तकता (तरतिशोकमात्मवित्) अ०॥आत्माकेजाननेवाला शोकउपलक्षितसमूलसंसारकोनाशकरता

है । इसश्रुतिप्रमाणकरसिद्धहै । यातेसंसाररूपदावानलसे प्रकटहुआ जोसंताप तिसकेशांतकरनेकासाधन अमृतकासमुद्रआत्मविद्याहै।ऐसे जानताहुआयहअधिकारी तिसविद्याकीप्राप्तिकेअर्थ गुरुकेसमीप गमनकरताहै ॥ शंका ॥ स्वर्गकासाधनयागहै ऐसेजानतेहुएसर्वही वैदिकजनयागमेंप्रवृत्तहोतेहींहैंयहकहींनहींसंभवता।समाधान।।जिसको फलकीइच्छाहोतीहैवहीतिसकेसाधनानुष्ठानमेंप्रवृत्तहोनाहै अन्यनहीं प्रवृत्तहोता।यातेपरिपूर्णब्रह्मात्माके अभेदविषयकअपरोक्षज्ञानकीइच्छा वालापुरुषश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठतथापरमकृपालुसद्गुरुकीशरणकोशास्त्रउक्त विधिसेअर्थात्समिदादिकिंचित्उपहारकोहस्तमेंग्रहणकरकेप्राप्तहोताहै तबपरमकृपालुश्रीगुरुने शरणागतअधिकारीको नित्यतथानिर्दोष तत्त्वमस्यादिरूपशब्दप्रमाणसे शोधनकियेहुए तत्त्वंपदार्थोंकाअभेद बोधनकिया । तिससेअनंतरअधिकारी अपनीनिर्मलबुद्धिकीसहा यतासेअद्वैतवस्तुके साक्षात्कारकोप्राप्तहोकर आनंदअंशकेआवरक अज्ञानतत्कार्यकोबाधकरके स्वरूपानंदसेतृप्तहुआ आत्मारामअर्थात् स्वस्वरूपमेंही रमणकरनेवालाहोताहै। यद्यपिआपकेमतमें वेदकोभी कल्पितहोनेसे तिसकोनित्यकहना नहींसंभवता। तथापिवेदरचनाको बुद्धिपूर्वकनहोनेसे तथाप्रयत्नसे अजन्यहोनेसे नित्यत्वका तिसमेंउप चारहै। इसप्रकारतत्त्वज्ञानसे सकलभेदकाविनाशहोनेकरसर्वअद्वैतही है यहतत्त्वमस्यादिमहावाक्यसे जाननेयोग्यहै । यहअभिप्रायसिद्ध हुआ । इसीहेतुसेश्रुतिकेतात्पर्य्यकोनजानकरहीवादीनेपूर्वयहकहाहै जोअनात्मभेदसेअद्वैतकीहानिहोतीहै ॥ इति ॥

※ अर्थस्वरूपभेदकाखंडन ※

औरजोपूर्ववादीनेयहकहाथा। किस्वरूपभेदप्रत्यक्षादिप्रमाण काविषयहै तिसकोविरोधहुएअर्थसेवेदांतअद्वैतमेंप्रमाणनहीं । सो कथनभीअत्यंतअयुक्तहै ॥ क्योंकि ॥ (परांचिखानि) इसश्रुति सेप्रत्यक्षादिअनात्माकोविषयकरतेहैं । यातेतिनकोस्वरूपविषयकत्व कहनानहींसंभवता। भावयह स्वरूपकोसतरूपहोनेकरआत्मताहै।इसी सेआत्मस्वरूपभेदमें प्रत्यक्षादिकोंकीप्रवृत्तियुक्तनहीं ॥ शंका॥ सर्व प्रत्ययोंकाविषयस्वरूपहै यहआपकामतहै। तिसकारणसेप्रत्यक्षादिको कोअविषयस्वरूपकोआपकैसेकहतेहो॥ समाधान ॥ हेवादिन् स्वरूप कोभेदपनेकीअनुपपत्तिहै।जिसहेतुसेस्वरूपमें भेदपनानहींसंभवतासो तुमश्रवणकरो । क्योंउपाधिकेसंबंधसेरहितशुद्धात्मासर्वधर्मोंसेरहित वहस्वरूपभेदहै । अथवाउपाधिकेसंबंधवालाविशिष्टआत्मा वहस्वरूप भेदहै।तहांशुद्धहीस्वरूपभेदहै इसप्रथमपक्षमेतिसस्वरूपभेदकोकिसी व्यवहारकीहेतुताभीनहींहोगी । यहकथनकरनेयोग्यहै । अर्थयह ॥ प्रथमब्रह्ममेंस्वाभाविकधर्मतोहैनहीं क्योंकिवह अविकारिस्वभावहै ॥ औरऔपाधिकधर्मभीउपाधिकेसंबंधसेरहितब्रह्ममे नहींसंभवता। याते शुद्धपदकेमहात्मसे तिसकोनिर्धर्मककहनाहीउचितहै । यहप्राप्तहुआ औरतैसेहीव्यवहारकीविषयताभीनिसमेंनहींहै । यहकहनाउचितहै॥ तथाहि॥ यहांकथनकानामव्यवहारहै। अथवाज्ञानकानामव्यवहारहै यहविचारणीयहै ॥ इनमेंप्रथमपक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकिकिसी धर्मकोग्रहणकरकेही शब्दकीप्रवृत्तिहोतीहै ॥ तिसधर्मकेअभावहुए शब्दकीप्रवृत्तिकैसेहोगी । औरब्रह्मकोस्वप्रकाशहोनेसे तिसमेंज्ञानकी

विषयताभीनहींसंभवती। यातेद्वितीयपक्षभीअसंगतहै ॥ शंका ॥ निर्धर्मकतथास्वप्रकाशहोनेसेब्रह्ममेंसर्वव्यवहारकीअविषयताहो,तिससे क्यासिद्धहुआ ॥ समाधान ॥ तैसेमानेहुए सर्वव्यवहारकाअविषय औरसर्वधर्मोंसेरहित "अस्थूलमनणु" इत्यादिश्रुतिकरसिद्धसत्रूप ब्रह्महीनामांतरसे प्रत्यक्षादिकोंकाविषय तुम्हारेकथनसेसिद्धहोताहै ॥ शंका ॥ "अस्थूलं" इसश्रुतिमें "नञ"कोनिषेधार्थकहोनेसेस्थूलता काअभावब्रह्महै यहअर्थसिद्धहोगा॥ समाधान॥ हेवादिन्कल्पितजो स्थूलतादिकहैं तिनकोअधिष्ठानसेभिन्नकियेहुएअसत्पनाहोताहै।और असत्काअभावभावरूपहीहोताहै।यातेसत्रूपहीब्रह्महै अभावरूपनहीं। इसप्रकारभेदप्रत्यक्षादिप्रमाणकाविषयहैऐसेकथनकरनेवालेवादीनेभेद कोपूर्वउक्तब्रह्मसेअभिन्नहोनेकर ब्रह्महीभेदहैइसनामांतरसे ब्रह्मकोही प्रत्यक्षादिकोंकीविषयताकथनकीहै। तैसेमानेहुएहमारेमतमेंअनिष्टकी प्राप्तिनहींहोती॥शंका॥ब्रह्मस्वरूपमानकरभी यदिप्रपंचभेदप्रमाणसिद्ध होजाय तोभीहमारे इष्टकीसिद्धिहोजायेगी॥ समाधान ॥ हेवादिन् प्रथमअतिरिक्तभेदअर्थात् धर्मीसेभिन्नभेदतोतुमनेही स्वीकारनहीं किया। औरस्वरूपभेदको ब्रह्मस्वरूपताकेहुए स्वप्रकाशहोनेसेऔर प्रत्यक्षादिप्रमाणकी विषयताकानिषेधहोनेसे भेदकोब्रह्मरूपहोनेकरभी प्रमाणगम्यतानहींसंभवती। औरभेदकोब्रह्मस्वरूपमानकर प्रत्यक्षादि कोंकीविषयतामानेंतो।

* नचक्षुषागृह्यतेनेववाचानान्यैर्देवैस्तपसा कर्मणावा। (मु० ३० ३। (खं० २। ८) *

अ०॥ सोब्रह्मनेत्रइन्द्रियकरग्रहणनहींहोता॥ औरवाक्इन्द्रिय

करकहानहींजाता। औरअन्यइन्द्रियोंकरभी ग्रहणनहींहोता। और कृच्छ्रादितपसे तथायागादिरूपकर्मसेभीनहीं जानाजाता। इत्यादि श्रुतिकाविरोधप्राप्तहोगा।यातेब्रह्मस्वरूपमानकरभी भेदकोप्रामाणिकता नहींहोसकती॥ औरसर्वप्रत्ययवेद्यत्व उपहितस्वरूपमेंहै शुद्धमेंनहीं। शंका॥ यदिपूर्वउक्तदोषसेशुद्धस्वरूपको भेदपनानहींसंभवता। तो विशिष्टस्वरूपहीभेदहो। तिसविशिष्टस्वरूपभेदमें पूर्वकथनकिये दोषोंकीप्राप्तिनहींहोती॥ समाधान॥ हेवादिन्विशिष्टस्वरूपभेदहै इसपक्षमेंभीयहविचार करनेयोग्यहै। विशेषणतथाविशेष्यकाभेदमाने हुए विशेषणादिभेदसेभिन्नही कोईविशिष्टस्वरूपभेदहै। यहकथनकर नेयोग्यहैअथवाविशेषणादिकोंके भेदकाअभावहीविशिष्टस्वरूपभेदहै यहकथनकरनेयोग्यहै।विशेषणतथाविशेष्यकाभेदमानकरविशिष्टस्वरूप भेदतिससेभिन्नहै।यदियहप्रथमपक्षमानो तोदुःखपूर्वकहै परिहारजिस का ऐसेअनवस्थादोषकीप्राप्तिहोगी। सोदिखलातेहैं॥ विशिष्टस्वरूप भेदकाउपपादकजोविशेषणविशेष्यकाभेदहै।वहक्याविशिष्टस्वरूपभेद हीहै।अथवाकोईअन्यभेदहै।प्रथमपक्षमानेहुएआपकोहीअपनाउपपा दकहोनेसेआत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोगी।औरद्वितीयपक्षमानेहुएअन्योन्या ऽश्रयदोषहोगा।क्योंकिविशिष्टस्वरूपभेदको अपनेउपपादकभेदांतरकी अपेक्षाहै।औरभेदांतरकोअपनीसिद्धिकेअर्थविशिष्टस्वरूपभेदकीअपेक्षा है।औरयदिअन्योऽन्याश्रयदोषकेपरिहारकरनेकेलियेविशेषणविशेष्यके भेदकाउपपादकतृतीयविशिष्टस्वरूपभेदमाने तोचक्रकादोषकीप्राप्ति होगी॥औरचक्रकादोषकेपरिहारकरनेकेलिये यदिचतुर्थस्वरूपभेदमाने तोअनवस्थादोषप्राप्तहोगा।औरविशेषणतथाविशेष्यकेभेदकाअभावही

विशिष्टस्वरूप भेदहै।इसद्वितीयपक्षमेंविशिष्टस्वरूपकीग्रसिद्धिहै। क्योंकिविशेषणतथाविशेष्यका अभेदमानेहुए दोनोंमेंएकशेषरहेगा। यातेविशिष्टस्वरूपकीही असिद्धिहोगी।क्योंकिएकविशेषणवाविशेष्यमेंविशिष्टव्यवहारनहींहोता।औरविशिष्टस्वरूपताभेदकोमानेहुएप्रमाणकीविषयता भीनहींहोसकती। क्योंकिविशिष्टकोभीशुद्धवस्तुकेस्वरूपकीन्याईनिर्धर्मकताहै।जिसकारणसेरूपादिविशिष्टपदार्थमेंअन्यरूपादिकनहींस्थितहोसकते । यातेविशिष्टस्वरूपभेदको निर्धर्मकहोनेसेतिसमेंप्रत्यक्षादिप्रमाणकीविषयता नहींसंभवती ॥ किंवा ॥ विशिष्टस्वरूपकोनिश्चयकरतुमभेदकहतेहो,तहांसोविशिष्टस्वरूपक्या?विशेषणतथाविशेष्य औरसंबंधइनतीनोंसेभिन्नहै । अथवाअभिन्नहै । प्रथमपक्षतोनहींसंभवता।क्योंकिविशिष्टनामवालास्वतंत्रकोईपदार्थनहीं ।विशेषणऔरविशेष्यतथातिनकेसंबंधसे भिन्नतिसविशिष्टपदार्थका अनुभवनहींहोता।औरद्वितीयपक्षमेंभीयहविचारकरनेयोग्यहै। विशेषणतथाविशेष्यऔतिनकेसंबंधसेविशिष्टको अभिन्नमानेहुएक्या?एकएकमेंविशिष्टव्यवहारहोताहै।अथवातीनोंकेसमुदायमेंविशिष्टव्यवहारहोताहै।इनमेंप्रथमपक्षतोनहींसंभवता।क्योंकिप्रत्येकमेंविशिष्टव्यवहारमानेहुएकेवलदंडमेंभी"दंडीपुरुषः"ऐसाविशिष्टव्यवहारहुआचाहिये।औरऐसाव्यवहारहोतानहीं। क्योंकिकेवलदंडको तिसविशिष्टव्यवहारकीजनकतानहीं है ॥ ऐसेहीकेवलविशेष्यऔरकेवलसंबंधमेंभीविशिष्टव्यवहारनहींहोता।औरसमुदायमेंविशिष्टव्यवहारहोताहै ।इसद्वितीयपक्षमेंभीयहविचारकर्तव्यहै । क्या?वहसमुदायइनविशेषणादितीनोंसेभिन्नहै।अथवा अभिन्नहै । प्रथमपक्षमेंतोदूषण पूर्वकथनकरही दियाहै। अर्थात् विशेषणादिकोंसे

भिन्नसमुदायपदार्थकाअनुभवनहींहोता।औरद्वितीयपक्षमेंभीविशेषणादि प्रत्येकमेंसमुदायव्यवहारहुआचाहिये।औरवहदेखनेमेंनहींआता। याते द्वितीयपक्षभी असंगतहै । औरयदिपूर्वउक्तदोषोंके दूरकरनेकेलिये विशेषणतथाविशेष्यकेसंबंधकानामहीविशिष्टपदार्थहै। ऐसेवादीकहेतो, यहभीनहींसंभवता । क्योंकिविशेषणादिकोंसे भिन्नहुआसंबंधविशिष्ट स्वरूपहै।अथवाविशेषणादिकोंकरउपलक्षितहुआसंबंधविशिष्टस्वरूपहै इनमेंप्रथमपक्षनहींसंभवता।क्योंकि "विशेषणतथाविशेष्यऔतिनका संबंधहै"इससमूहालंबनज्ञानमेंसंबंधमेंभीविशेषणादिकोंकीन्याईविशिष्ट व्यवहारदेखनेमेंनहींआता।औरद्वितीयपक्षभीअसंगतहै।क्योंकिदेवदत्त केगृहप्रयुक्तजो व्यवहारहै । सोगृहकेउपलक्षणरूपकाकमेंनहींदेखा तैसेसंबंधकेउपलक्षणभूतविशेषणतथाविशेष्यमेंविशिष्टप्रयुक्त व्यवहार काअभावप्रसंगहोगा। यातेविशिष्टस्वरूपताभी भेदको नहीं संभवती ॥किंवा॥वस्तुकास्वरूपहीभेदहै।।ऐसेकथनकरनेवालेवादीसेयहप्रष्टव्यहै क्या?निःस्वरूपप्रतियोगिकवहभेदहै।अथवास्वरूपप्रतियोगिकभेदहै । प्रथमपक्षतोनहींसंभवता। क्योंकिनिःस्वरूपको तुच्छहोनेकर तत्प्रति योगिकभेदकोभी तुच्छताकीप्राप्तिहोगी।।औरस्वरूपप्रतियोगिकभेदहै इसद्वितीयपक्षमेंभी यहविचारकरनेयोग्यहै।। क्या?स्वरूपप्रतियोगिक भेद प्रतियोगीकास्वरूपहै । अथवा धर्मीका स्वरूपहै ।। इनमेंप्रथम पक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिनाशऔरतिसकेप्रतियोगीकाअभेदनहीं संभवता ॥ और (भिदिरविदारणे) अ० ॥ भिदिर्धातुविदा रणअर्थात्नाशअर्थमेंहै। इसपाणिनिमुनिकेवचनसे विदारणरूपतिस भेदकोवस्तुकेस्वरूपकी नाशरूपतासिद्धहोतीहै । इसीअर्थकोदृष्टांत

द्वारास्पष्टकरतेहैं ॥ जैसेपटकाविदारण अर्थात्नाशवहपटकास्वरूप नहींहोता तैसेवस्तुके स्वरूपकाविदारणरूपभेदभी प्रतियोगीस्वरूप नहींहोता । औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता ॥ क्योंकिस्वरूपत्वको प्रतियोगिताका अवच्छेदक मानेहुए स्वरूपत्वकाजो अनधिकरणहै तिसकोधर्मिपनाकहनाहोगा ॥ औरतिसकोनिःस्वरूपहोनेकरभेदकी आधारताहीनहींसंभवेगी । औरयदिऐसेकहोकिस्वरूपभेदमेंस्वरूपत्व प्रतियोगिताकाअवच्छेदकनहीं किंतुकोईएकवैधर्म्य प्रतियोगिताका अवच्छेदकहै । औरस्वरूपभेदसर्वत्रही वैधर्म्यकरव्याप्तहै ॥ यातेपूर्व उक्तदोषका अवकाशनहीं । सोयहकथनभी असंगतहै । क्योंकिएक पदार्थमेंवृत्तिहुआ तिससे इतरमेंजोनवृत्तिहो तिसको वैधर्म्यकहतेहैं ॥ जैसेघटत्वघटमात्रमेंवृत्तिहुआ घटसेइतरपटादिकोंमेंवृत्तिनहीं।यातेघटत्व वैधर्म्यहै।सोवैधर्म्यइतरशब्दकाअर्थजोभेदतिसकेज्ञानकेआधीनज्ञानका विषयहै।। औरप्रतियोगिताऽवच्छेदक वैधर्म्यज्ञानकेआधीनभेदकाज्ञान है । तैसेमानेहुए अन्योऽन्याश्रय दोषकीप्राप्तिस्पष्टहीहै । औरयदि इसदोषकेदूरकरनेकेलिये वैधर्म्यकाउपपादक कोईकधर्मभेदस्वरूप भेदसेअन्यही स्वीकारकरो तोतिसमेंभी यहकथनकरनेयोग्यहै । वह धर्मभेदक्या?भिन्नआश्रयमें वर्त्तताहै।अथवाअभिन्नआश्रयमेंवर्त्तताहै। प्रथमपक्षतोनहींसंभवता।क्योंकिस्वरूपभेदसेअन्य यदिधर्मभेदमानेतो वहनिःस्वरूपहोगा । औरभिन्नकहिये द्विविभागकोप्राप्तहुएपदार्थको आश्रयपनाभीनहींसंभवता।।यातेनिराश्रयहुआसोभेद निरूपणपथके योग्यनहीं।औरयदिभेदनहुएपदार्थकोभी आश्रयमानेंतो।तोअसत्हुआ घटभीजलकाआधारहुआचाहिये ॥ औरवहधर्मभेद अभिन्नआश्रयमें

वर्त्तताहै।यहद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता॥क्योंकिअभिन्नआश्रयमेंविरोध होनेसेही भेदउसमेंनहींवर्त्तता । किंवा॥ पटप्रतियोगिकभेदघटस्वरूप है। अथवाघटका धर्महै। प्रथमपक्षमेंतोपटरूप प्रतियोगीकेसहितभेद कोघटरूपमानेहुए घटकोअद्वैतप्रसंगहोगा।औरघटकाधर्मवहभेदहैइस द्वितीयपक्षमेंपटभीघटकाधर्महुआचाहिये।क्योंकिपटस्वरूपहीभेदतुमने मानाहै ॥ किंवा ॥ वस्तुकास्वरूपहीभेदहै । ऐसेमानेहुएसंशयतथा भ्रमज्ञानकाभी संसारसेउच्छेदप्राप्तहोगा॥ क्योंकिस्थाणु तथाशुक्त्या दिकवस्तुकेग्रहणसे भेदकाग्रहणभीअवश्यहोजायेगा ।।पुनःपुरुषतथा रजतादिकोंकासंशयऔरभ्रम कैसेपुरुषकोसंभवेगा। किंतुनहींसंभवेगा। इसप्रकारभेदमेंअनेकदूषणहैं।यातेइसबहुतअनात्मविचारसेक्याप्रयोजन है इसविचारकासमासकरनाही उचितहै॥सर्वप्रकारसेअर्थात्स्वरूपभेद पक्षमेंअथवाधर्म भेदपक्षमेंप्रत्यक्षादिकप्रमाणआत्मातथाअनात्माकेभेद कोविषयनहींकरते यहअर्थसिद्धहुआ। इसप्रकारसाक्षिमात्रकरसिद्धजो आविद्यकप्रपंचहै तिसकोप्रमाणकीविषयताकेअयोग्यहोनेसे तत्प्रति योगिकभेदकोकल्पितहोनेकरपारमार्थिकअद्वैतकीकिंचित्भीक्षतिनहीं। इति ।।३७।।

❀अथअज्ञानकारणत्ववादनी तथाब्रह्मकारणत्व वादनीश्रुतियोंकेविरोधकापरिहारनिरूपण❀

औरमिथ्याप्रपंचब्रह्मउपादानकनहीं। किंतुअविद्योपादानकहै यदिअविद्याकोउपादानतानहींमाने। तोअविद्याकोउपादानता कहने वालेश्रुतिवचनोंकाविरोधप्राप्तहोगा । यद्यपिब्रह्मकोकारणता कथन करने वाले श्रुति वचनोंका विरोधहोनेसे अज्ञानतथाब्रह्मइन दोनों

कोहीकारणतानहीं संभवैगी । यहपूर्वकथनकियाहै तथापिसोनहीं संभवता । क्योंकि ॥

❀ मू० ब्रह्माज्ञानाज्जगज्जन्मब्रह्मणोऽकारणत्वतः ॥
अधिष्ठानत्वमात्रेणकारणंब्रह्मगीयते ॥३८॥❀

शिखरणी० ॥ जनीताभापोजीपरमतमसातेजगतकी ।
यतोभापीनाहीजनकपनताताम्रहतकी ।
श्रुतीगावेजोईजनकपनतातापरमको ।
अधिष्ठातामात्रेणत्वमनमेंतामरमको ॥३४॥

टी० ॥ ब्रह्मकेअज्ञानसेहीजगतकीउत्पतिहोतीहै । यातेअज्ञानहीजगत्काकारणहै ॥ शंका ॥ ब्रह्मतथाअज्ञानइनदोनोंकोकारणताकेप्रतिपादकवाक्योंकोविद्यमानहोनेकर अज्ञानहीजगतकाकारणहै यह नियमआपकैसेकरतेहो ॥ समाधान ॥ ब्रह्मकोअसंगतथाविकारशून्य होनेकरजगतकीकारणतानहींसंभवती । और—

❀ सदेवसोम्येदमग्रआसीत् ❀

इत्यादिब्रह्मकी कारणताकेप्रतिपादक श्रुतिवाक्यतोजगतकेउपादानअज्ञानकीअधिष्ठानतामात्रसे तिसकोकारणताकाप्रतिपादनकरतेहैं यातेश्रुतियोंकापरस्परविरोधनहीं । अबइसीअर्थकोविस्तारसेनिरूपण करतेहैं ॥ जगतकाअविद्याहीकारणहै ॥ यद्यपिअविद्यानामविद्याके अभावकाहै।सो अभावजगत्काकारण नहींसंभवता ॥ क्योंकि तिस कार्यरूपजगतकोभावरूपताहै । तथापिवहअविद्यासततथाअसत्से विलक्षणअनिर्वचनीयभावरूपतथा अनादिहै।यातेजगतकीउपादानता तिसमेंसंभवेहै॥शंका॥अविद्याकोअनादिमानेहुएभीयहजगतसतरूपता

सेप्रतीतहोताहै। यातेसत्सेविलक्षणअविद्याकोकैसे तिसजगत्कीउपादानताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्दृश्यत्वादिअनुमानसेजगत्की अनिर्वचनीयतासिद्धहै तहांअनुमान ॥

विमतंसतविविक्तंदृश्यत्वात्परिच्छिन्नत्वात् शुक्तिरजतवत्

अ० ॥ विवादकाविषययहजगत्सत्सेविलक्षणहै । दृश्यतथा परिच्छिन्नहोनेसेजोजोदृश्यतथापरिच्छिन्नहोताहै।सोसोसत्सेविलक्षण होताहै । जैसेशुक्तिरजतहै ॥ इति ॥ औरअपरोक्षप्रतीतहोनेसे यह जगत्असत्भीनहीं। तिसीकारणसे यहजगत् सत्असत्से विलक्षण अनिर्वचनीयहै । तैसेमानेहुएअनिर्वचनीयजगत्काअनिर्वचनीय अविद्याही उपादानकारण कथनकरनेयोग्यहै ॥ क्योंकिकार्यतथा कारणकासमानहीरूपहोताहै। विलक्षणनहीं ॥ औरब्रह्मतिसजगत काकारणनहींसंभवता।। क्योंकिविकारसेरहितसोब्रह्मकार्य्यतथाकारण भावसेविलक्षणहै।। शंका ।।यदिश्रुतिहीतिसकोकारणताबोधनकरती है तोआपतिसकोकारणतासेविलक्षणकैसेकथनकरतेहो ।। समाधान हेवादिन् श्रुतिहीतिसब्रह्मकोकार्य तथाकारणभावसे विलक्षणबोधन करतीहै । तहांश्रुति ॥

*तदेतद्ब्रह्मापूर्वमनपरमनंतरमबाह्यमयमात्माब्रह्म सर्वानुभूरिति । वृ० उ० अ० ५ अ०४ कं १९ *

अ० ॥ "तदेतद्" कहियेअज्ञानादिविषयरूपजगत्ब्रह्मरूपही है । इसजगत्काऔरकोईरूपनहीं।क्योंकिअध्यस्तपदार्थ अधिष्ठानस्व रूपहीहोताहै । सोब्रह्म (अपूर्वं) अकार्यहै ॥ तथा (अनपरं) अका

रणहै॥ और (अनन्तरं) सामान्यसेरहितहै। और (अबाह्यं) व्यक्ति सेरहितहै। अर्थातजातितथाव्यक्तिसेविलक्षणहै। औरवहपरोक्षनहीं किंतु (अयमात्मा) नित्यअपरोक्षआत्मस्वरूपहै॥ औरवहीब्रह्महै॥ और (सर्वानुभूः)चिदात्माहोनेसेवहीसर्वकाप्रकाशकहै। (इति) तिस पूर्वउक्तब्रह्मात्माकाज्ञान मुमुक्षुकोसंपादनकरनेयोग्यहै। यहवेदकी आज्ञाहै॥ तिसआज्ञाकेउल्लंघनकरनेसेसंसाररूपमहान् अनर्थकी प्राप्तिहोतीहै॥ औरतिसआज्ञाके पालनकरनेसेअपनीकृतार्थताहोतीहै॥ इति॥ इसश्रुतिवचनसेब्रह्मनिष्ठकारणताकानिषेधहोनेसे तथाब्रह्म कोनिर्विकारहोनेसे कारणताकातिसमेंसंभवनहीं। यद्यपिब्रह्मकोजगत् कीकारणताश्रुतिमेंप्रसिद्धहै॥ तिसकाविरोधप्राप्तहोगा। तथापि जगत्केउपादानभूतअज्ञानका ब्रह्मको अधिष्ठानहोनेकर औपचारिक कारणताकेकथनसेभीश्रुतिकीसफलताहोसकतीहै।तिसश्रुतिकाविरोध नहींप्राप्तहोता॥ यातेब्रह्मकारणनहीं किन्तुअज्ञानहीकारणहै॥शंका औपचारिककारणताकोश्रुतिक्योंनिरूपणकरतीहैक्योंकितिसकेकथन का कोई फलनहीं॥और निष्फलअर्थकेकथनसे श्रुतिकोअप्रमाणता होगी॥ समाधान॥ हेवादिन् ब्रह्मकोकारणताकहनेवालीश्रुति स्वार्थमें तात्पर्य्यवालीनहीं॥ किंतु अन्यार्थपरहै तथाहि॥ "एक मेवाद्वितीयम्" इसश्रुतिसे प्रथमब्रह्मका अद्वितीयपनासिद्धहै। वहकिसप्रकारसंभावनाकरनेयोग्यहो। ऐसीआकांक्षाकेहुएकहतेहैं। प्रथमकार्यतथाकारणकाअभेद लोकमेंप्रसिद्धहै। क्योंकिमृत्तिकातंतु आदिककारणोंसे घटपटादिकार्यभिन्ननहीं प्रतीतहोते॥ यातेमृदा दिकारणहीअद्वितीयहै। तैसेब्रह्मभीजगत्काकारणहै तिससेभिन्न

जगत्‌रूपकार्यनहीं । यातेब्रह्महीअद्वितीयहै । तिसमेंअसंभावनाकैसे हो ॥ इसप्रकारकारणताकहनेवालीश्रुतिअद्वैतमें संभावना बुद्धिमात्र कीउत्पादकतासे सफलहोनेकर अप्रमाणनहीं ॥ शंका ॥सर्ववेदांतों काब्रह्ममेंतात्पर्य्यहै । यहउत्तरमीमांसाके समन्वयअध्यायकाअर्थहै ॥ तिनमेंवेदांतकाएकदेशरूप कितनेश्रुतिवचनोंका अज्ञानकीकारणतामें तात्पर्यमानेहुएकैसे अपसिद्धांतनहींहोगाकिंतुसिद्धान्तकीहानिअवश्य होगी॥समाधान॥ हेवादिन् अज्ञानमेंभीजगत्कीकारणताश्रुतिविवक्षा नहींकरती। किंतुअखंडतथाआनन्दस्वरूपचिदात्माकानानाप्रकारसे दुःखित्वतथादृश्यत्वादिरूपतासेजोप्रतिभासअर्थात्प्रतीतिहैइसीकोभ्रम कहतेहैं। तिसभ्रमकानिमित्तमात्रहोनेकरअज्ञानकोकारणताश्रुतिकथन करतीहै । तिसमेंतात्पर्यकाअभावहोनेसेसिद्धांतकीहानिनहीं।अज्ञान कोभ्रमकीनिमित्तमात्रताश्रीसर्वज्ञात्म महामुनिजीनेभीकथनकीहै।

❀ विषयकरणदोषान्नभ्रमः संविदिस्यादपतु भवतिमोहात् केवलादेवमेव । भगवतिपर मात्मन्यद्वितीये विचित्राद्वयमति रियमस्ति भ्रांतिरज्ञानहेतुः ॥ सं० शा०अ०१। श्लो० ३०॥ ❀

अ०—जैसेस्वप्रकाशस्वरूपज्ञानमें वेद्यत्वकाभ्रमवादियोंकोविषय तथाकरणदोषसेनहींहोता ॥ किंतुकेवलअज्ञानरूपनिमित्तसेहीहोता है ॥ तैसेहीअद्वितीयस्वरूपभगवान्परमात्मदेवमें यहविचित्रनाना प्रकारकाद्वैतबुद्धिरूपभ्रमकेवलअज्ञाननिमित्तकहै ॥ इति ॥ शंका ॥ श्रुतिकोमुख्यउपादानताकेकथनसे उठाकरकिसलिये अज्ञानकीनिमि त्तमात्रपरता कल्पनाकरतेहो॥ समाधान ॥ हेवादिन्सत्कोतथाअस

त्रकोकार्यपनानहींसंभवता ॥ यहअर्थपूर्वनिरूपणकरआएहैं ॥ याते कार्यकेअसंभवसे कार्यतानिरूपितकारणताभी नहींसंभवती॥ किंवा॥ व्यापारवालाहीकारणहोताहै । तिसमेंयहविचारणीयहै । वहव्यापार क्या? अकार्य है । अथवाकार्यहै। प्रथमपक्षमाने तोसदाहीकार्यहुआ चाहिये । क्योंकिकारणमें सदाव्यापारकेहुएकार्यसेवहकबीभीउपरत नहींहोगा । औरद्वितीपक्षमें अनवस्थादोषप्राप्तहोताहै। क्योंकितिस व्यापारके उत्पन्नकरनेकेअर्थ अन्यव्यापारमाननाहोगा । ऐसेअन्य अन्यव्यापारकेमाननेसे अनवस्थादोषस्पष्टहीहै। इसप्रकारव्यापारको निरूपणनहोनेकरभी कारणनहींसंभवता ॥ औरकार्यकारणभावको कल्पितहोनेकरप्रमाणकी अयोग्यताहै। अर्थातवहप्रमाणसिद्धनहीं। और यदिकार्यकारणभावकोप्रमाणसिद्धमानोगेतोद्वैतापत्तिहोगी।इसकारण से कार्यकारणवादवेदांतवादसे बहिर्भूतहै । अथवा कार्यकारणभाव कथनसे आरंभवादतथापरिणामवादकीप्राप्तिहोतीहै । सोअनिष्टहै ॥ क्योंकिब्रह्मकोएकहोनेसे आरंभवादभीनहींसंभवता । औरब्रह्मकोनिर वयवहोनेसे परिणामवादभीनहींसंभवता । यातेयहदोनोंवादवेदांतसे बहिर्भूतहैं अर्थात्वेदांतसिद्धांतमेंस्वीकारनहीं ॥ शंका ॥ यदिदोनों प्रकारकावाद वेदांतसिद्धांतमेंस्वीकारनहीं तोवेदांतमतमेंकौनवादहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्वेदांतमतमेंविवर्त्तवादहीस्वीकारहै । तहांएकही सत्वस्तुकी अपनेवास्तवस्वरूपकोनत्यागकर पूर्वरूपसेविपरीतअसत् तथाअनेकरूपतासेजोप्रतीतिहै । तिसकोविवर्त्तकहतेहैं । यातेइस विवर्त्तकानिमित्तमात्रअज्ञानहै ॥ शंका ॥ अज्ञानकोप्रपंचरूपकार्यका निमित्तमात्रकल्पनाकरनेसे (मायांतुप्रकृतिंविद्यात्) इसश्रुति

मेंकथनकियेहुए प्रकृतिशब्दकाविरोधहोगा। क्योंकिइसशब्दसेअज्ञान कोउपादानताप्रतीतहोतीहै।।समाधान।। हेवादिन्यहांमायारूपअज्ञान कोउपादानकहनेवालेश्रुतिवाक्यका अन्यहीअभिप्रायहै । तथाहि ।। किसीनेप्रश्नकिया जगत्काकौनकारणहै । तबश्रुतिद्वाराआचार्य्यने उत्तरदिया किअज्ञानहीजगतकाकारणहै।यदिप्रश्नकेहुएउत्तरस्फुरणन हो तिसकोअप्रतिभारूपनिग्रहस्थान नैयायिकोंनेकहाहै। तिसअप्रति भाकीनिवृत्तिमात्रही श्रुतिमेंकारणकथनका प्रयोजनहै अन्यप्रयोजन नहीं ।। इति ।। ३८ ।।

❋अथअज्ञानकीअसिद्धिकानिरूपण। पूर्वपक्ष।❋

हेसिद्धांतिन् यदिअज्ञाननिरूपणहोसके तोउसको उपादान कारणता।अथवा निमित्तकारणतासिद्धहो।परंतुवक्ष्माणयुक्तिसे तिस अज्ञानकानिरूपणहीनहींसंभवता। तथाहि ।।यहअज्ञानकार्यहै।अथवा अकार्यहै । प्रथमपक्षकहो तोइसकाकौनकारणहै।अर्थयहक्या?अज्ञान कारणहै अथवाब्रह्मकारणहै । यहविचारणीयहै । प्रथमपक्षमेंतो आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोगी । क्योंकिअज्ञानकोअपनीउत्पत्तिमेंइतर केव्यवधानरहितअपनीअपेक्षाहै । औरयदिआत्माश्रयदोषकेदूरकरने केअर्थ कार्यरूपअज्ञानसेभिन्न द्वितीयअज्ञानको कारणमानोंगे तोवह अज्ञानभीकार्यहीकहनाहोगा ।। तिसको यदिअपनीउत्पत्तिकेअर्थ प्रथमअज्ञानकीअपेक्षामाने तोअन्योऽन्याश्रयदोषप्राप्तहोगा । और तिसदोषकेपरिहारकरनेकेलियेतृतीयअज्ञानऔरमानेंतोतिसकोभीकार्य हीकहनाहोगा।औरकारणरूपतासेप्रथमअज्ञानकीपुनःतिसकोअपेक्षा मानेहुए चक्रकादोषहोगा । औरतिसतृतीयकोचतुर्थकीअपेक्षामाने

हुए अनवस्थादोषप्राप्तहोगा॥ किंवा अनंतअज्ञानोंकीधारामानभीलें यदिकोईज्ञान तिसअनंतअज्ञानधाराको विषयकरनेवालाउदयहो। सो ऐसाज्ञानतोउदयहोतानहीं । क्योंकिप्रमाणकाअभावहै । याते अज्ञानकाकारणअज्ञानहै । यहप्रथमपक्षअसंगतहै । औरब्रह्मअज्ञान काकारणहै । यहद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता ॥ क्योंकिअन्योपाधि उपहितहुआब्रह्म अज्ञानकाकारणहै।अथवाउपाधिरहितशुद्धहीकारण है ॥ यहविचारकर्तव्यहै । इनमेंप्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकि अज्ञानसेप्रथमअज्ञानअथवा उसकाकार्यरूपउपाधिकातोअभावहै । औरअन्यकोईसत्यउपाधिभी निरूपणनहींहोसकता। क्योंकितिससत्य उपाधिकेमाननेसे द्वैतापत्तिहोगी । औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता । क्योंकिशुद्धब्रह्मकोनिर्विकारहोनेसे कारणताकाअभावहै । औरयदि शुद्धब्रह्मकोकारणमानलें तोमुक्तपुरुषकोभी पुनःसंसारकीप्राप्तिहोगी। क्योंकिसंसारकेहेतुभूतअज्ञानकीकारणसामग्रीरूपशुद्धब्रह्मकोविद्यमान होनेकर तिसअज्ञानकी अवश्यउत्पत्तिहोगी ॥ यातेअज्ञानकोकार्य रूपताकासंभवनहीं ॥ औरवहअज्ञानअनादिहै ॥ यदियहद्वितीय पक्षमानोतोजैसेअनादिभावरूपब्रह्मकीनिवृत्तिनहींहोती। तैसेअनादि भावरूपअज्ञानकीभीनिवृत्तिनहींहोगी॥ यहांयहअनुमानभीजानना॥

❀ विमतमज्ञानं ननिवर्त्तते अनादित्वे सतिभाव त्वात् ॥ ब्रह्मवत् ॥ ❀

अ० ॥ विवादकाविषयजो अज्ञानहै वहनिवृत्तनहींहोता ॥ अनादिहुआभावरूपहोनेसे।जोजोअनादिभावहोताहै । सोसोनिवृत्त नहींहोता ॥ जैसेब्रह्महै ॥ इति ॥ यहांघटादिकोंमेंहेतुकाव्यभिचार

दूरकरनेकेलिये "अनादि" यहहेतुकाविशेषणकहाहै । औरप्रागभाव मेंव्यभिचारदूरकरनेकेलिये "भावत्व" यहविशेष्यदलकहाहै ॥शंका॥ हेवादिन् कल्पिततथाअकल्पितरूपताकर ब्रह्मऔअज्ञानकीविलक्षण ताहै ॥ यातेइसपूर्वउक्तअनुमानमें "अमिथ्यात्व" उपाधिहै । सो इसप्रकारहै ॥ जहांजहांअनिवृत्तित्वहै ॥ तहांतहांअमिथ्यात्वहै । जैसे ब्रह्ममेंहै ॥ यातेउपाधिसाध्यकेसाथव्यापकहै । औरजहांजहांअनादि भावत्वहै । तहांतहां अमिथ्यात्वनहीं जैसे अज्ञानमें है । यातेउपाधि साधनकेसाथअव्यापकहै । इसप्रकार सोपाधिक हेत्वाभासहोनेसे पूर्वउक्तअनुमानदुष्टहै ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन्अज्ञानकोकल्पि तपनानहींसंभवता । क्योंकिकल्पितपनेकी सामग्रीकाअभावहै । तथाहि ॥ सादृश्यऔरपूर्वसंस्कारतथादोषयहतीनोंकल्पनाकीसामग्री है । सोअज्ञानकीकल्पनामेंतीनोंका अभावहै । क्योंकिअज्ञानकोयदि कल्पितकहेंगेतोआत्मामेंही कल्पितकहनाहोगा। यातेआत्मातिसका अधिष्ठानहै। औरआत्मातथाअज्ञानकासादृश्यभीसंभवतानहीं।क्योंकि आत्मानिरवयवहै॥ औरपूर्वसंस्कारऔदोष यहदोनोंभीनहींसंभवते। क्योंकितिनदोनोंको अज्ञानपूर्वकहोनेकरअज्ञानसेपूर्वतिनकीअसिद्धि है।इसप्रकारअज्ञानकोकल्पितपनेके असंभवसेअमिथ्यात्वकोसाधनके साथव्यापकहोनेकर उपाधिरूपताकाअसंभवहै॥शंका॥हेवादिन्सादि अध्यासप्रथमनहोकरपुनःहोताहै । इसहेतुसेवहकार्यहै।तिसमेंसामग्री कीअपेक्षाअवश्यहोतीहै।परन्तुअज्ञानाऽध्यासतोअनादिहैतिसमेंसाम ग्रीकीकिंचितभीअपेक्षानहीं॥ समाधान ॥हेसिद्धांतिन्अज्ञानाऽध्यास अनादिहै।यहकथननहींसंभवता।क्योंकिएकबाधकरहीअध्यस्तपनाऊहा

करनेयोग्यहै। औरअज्ञानकाबाधककोईप्रतीतहोतानहीं यातेअज्ञानमें अध्यस्तपनेकीअसिद्धिहै ॥ शंका ॥ हेवादिन् विद्यातिसअज्ञानका बाधकहै । यातेअध्यस्तपना तिसमेंसिद्धहै ॥ समाधान ॥ हेसिद्धां तिन् क्या?विद्यासेनिवृत्तिकेयोग्यकोबाध्यत्वहै। अथवाकल्पितहुआजो विद्याकरनिवृत्तिकेयोग्यहो तिसकोबाध्यपनाहै।प्रथमपक्षकहो तोउत्तर ज्ञानसेनिवृत्तिकेयोग्यजोपूर्वज्ञानहै तिसमेंभीबाध्यव्यवहारहुआचाहिये औरउसमेंबाध्यव्यवहारनहींहोता ॥ यातेप्रथमपक्षअसंगतहै ॥ और द्वितीयपक्षमें अन्योऽन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहै । क्योंकिअज्ञानमेंप्रथम कल्पतत्वकीसिद्धिहो तोज्ञानबाध्यत्वतिसमेंसिद्धहो ॥ औरज्ञानबाध्य त्वप्रथमअज्ञानमेंसिद्धहोतोकल्पितत्वकीतिसमेंसिद्धिहोइसप्रकारअपनी सिद्धिमेंपरस्परअपेक्षाहोनेसेअन्योऽन्याश्रयदोषहै॥शंका॥हेवादिन्यह पूर्वउक्तदोषक्या?अज्ञानकेस्वरूपकालोपकरतेहैं। अथवाअज्ञानमेंवस्तुत्व कालोपकरतेहैं । प्रथमपक्षतोनहींसंभवता। क्योंकि "अज्ञोहम्" इस प्रतीतिसेसिद्ध जोअज्ञानकास्वरूपतिसका "अपलाप" अर्थात्लोप युक्तनहीं॥ औरद्वितीयपक्षमें तोहमारेहीइष्टकीसिद्धिहै ॥ क्योंकियह दोषवस्तुकेवास्तवपनेको दूरकरतेहै।औरअज्ञानमेंतोस्वभावसेही वस्तु पनानहीं । यातेकल्पितकोदोषऔरक्याकरेंगे। इसीकारणसेयहकथन है॥कियुक्तितथाप्रमाणसे जोअज्ञानकीदुर्घटताहै यहहमकोभूषणरूप है॥ क्योंकियुक्तितथाप्रमाणसे जिसकानिरूपणासुघटहोतिसमेंकल्पित पनाहीदुर्घटहै । यातेपूर्वउक्तदोषभी तिसअज्ञानमेंकल्पितपनेकोही संपादनकरतेहैं ॥ वहहमकोइष्टहै ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् अज्ञानमेंकल्पितपनाअसिद्धहै । यातेतिसमेंइष्टापत्ति कैसेकहतेहो ॥

यद्यपिपूर्वउक्तदोपही अविद्यामेंकल्पितपनासिद्धकरदेंगे ॥ तथापि प्रथमअज्ञानरूपधर्मीसिद्धहो तोदोपतिसमें कल्पितत्वधर्मकोसिद्धकरें परन्तुवहअज्ञानरूपधर्मी तोअवपर्य्यंतभी सिद्धनहींहुआ ॥ औरयदि "अज्ञोहम्" इसप्रतीतिसेअज्ञानकीसिद्धिमानो तोयहभीनहींसंभवती। क्योंकियहप्रतीति ज्ञानाऽभावकोविपयकरतीहै । यातेअज्ञानरूपधर्मी कोअसिद्धहोनेकर तिसमेंकल्पितत्वकोदोपकैसेसंपादनकरेंगेकिंतुनहीं करसकते ॥ शंका ॥ हेवादिन् अज्ञानकी जोअसिद्धितुमनेकथनकी तिसअसिद्धिशब्दकेअर्थकाज्ञानअपनेप्रतियोगिरूपसिद्धिकेज्ञानकेआ धीनहै।क्योंकिअभावज्ञानप्रतियोगिज्ञानपूर्वकहीहोताहै॥ इसकारणसे सिद्धिशब्दकाअर्थविचारणीयहै॥तथाहि। क्या?उत्पत्तिकानामसिद्धिहै प्रथमअथवाज्ञप्तिअर्थात्ज्ञानकानामसिद्धिहै।इनमेंप्रथमपक्षतोनहींसंभ वता।क्योंकिअनादिकीउत्पत्तिकाअभावअंगीकारहै॥औरद्वितीयपक्षभी नहींसंभवता।क्योंकिसाक्षीकरअज्ञानकीसिद्धिहोनेसेतिसकीअसिद्धिका हीअभावहै॥ यहांपरयहअर्थज्ञातव्यहै। "अहमज्ञः" यहप्रतीतिवादीतथा प्रतिवादीकोस्वीकारहै।वहप्रतीतिक्या?अज्ञानकीस्वप्रकाशतासेहै।अथवा अनुमानादिकोंसेहैवाप्रत्यक्षसेहै॥प्रथमपक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकि अज्ञानकोजडस्वभावहोनेसे स्वप्रकाशताकाअभावहै । औरद्वितीय पक्षभीनहींसंभवता। क्योंकिलिंगादिकोंकेस्मरनसेविनाही इसप्रतीति कोउत्पन्नहोनेकर अनुमानादिकोंका अभावहै ॥ औरतृतीयपक्षमें यहविचारकर्तव्यहै । क्या?वाह्यनेत्रादिकइन्द्रियतिसप्रतीतिकेउत्पादक हैं । अथवामनतिसका उत्पादकहै । इनमेंप्रथमपक्षतोनहींसंभवता। क्योंकिवाह्यइन्द्रियोंकी अन्तरप्रवृत्तिनहींहोसकती । औरद्वितीय

पक्षभीअसंगतहै ॥ क्योंकिकेवलअज्ञानमात्रही तिसप्रतीतिमेंस्फुरण नहींहोता किंतुअहमाऽच्छिन्नअज्ञानकास्फुरणहोताहै।तहां"अहं"यह जोअज्ञानकाविशेषणहै॥ सोक्या?शुद्धात्माहै। अथवाअहंकारविशिष्ट आत्माहै।अथवाअहंकारउपहितआत्माहै।इनमेंप्रथमपक्षनहींसंभवता। क्योंकितिसशुद्धात्माको स्वप्रकाशहोनेकरमनकी विषयताकाअभाव है। औरद्वितीयपक्षभीअसंगतहै । क्योंकि "विशिष्टवृत्तिधर्मको विशेषणमेंवर्त्तनेकानियमहै"इसन्यायसे अहंकाररूपमनविशिष्टआत्मा मेंमनकीविषयतामानेहुए आत्माश्रयदोष प्राप्तहोगा । क्योंकिस्व विषयतामेंस्वकीअपेक्षाहै॥ औरमनकोमनकाविषयमानेहुएअतीन्द्रिय त्वकीभीतिसमें क्षतिहोगी। औरतृतीयपक्षमें अहंकारका स्फुरणतिस प्रतीतिमेंनहींसंभवेगा। क्योंकिउपाधिको तटस्थहोनेकर विषयकोटिमें तिसकाप्रवेशनहीं। औरविषयकोटिमें अप्रविष्टहुएकोभी यदिज्ञानकी विषयतामाने तोविज्ञानवादीकेमतकीप्राप्तिहोगी। क्योंकिवहनिर्विषय ज्ञानमानताहै। औरसुषुप्तिअवस्थामें मनकेविलयहुएभीअज्ञानकी प्रतीतिहोतीहै । इसकारणसेभीअज्ञानकी प्रतीतिमेंमनकोकरणता नहींसंभवती । तिसकारणसे परिशेषसे साक्षिभास्यहीअज्ञानहै। इस प्रकारअज्ञानरूपधर्मीकी सिद्धिहोनेसे तिसकी असिद्धिहीअसिद्धहै ।

समाधान ॥ हेसिद्धांतिन्अज्ञानकीसिद्धि साक्षीसेनहींसंभवती ॥ तथाहि ॥ साक्षीस्वसंबद्धकोप्रकाशकरताहै। अथवास्वअसंबद्धकोभी प्रकाशकरताहै॥यहविचारकर्तव्यहै॥तहांप्रथमपक्षमेंतोसिद्धांतकीहानि होगी । क्योंकिअज्ञानकीसिद्धिसाक्षीके आधीनमाननेसे साक्षीके साथतिसकासंबंधकहनाहोगा । तिससेअसंगताकी हानिहोनेसे

अपसिद्धांतप्राप्तहोगा ॥ और–

❋ **असंगोनहिसज्जते ।** (बृ० उ० अ० (६ ब्रा०(२) कं ४)

अ० ॥ जिसकारणसे आत्माअसंगहै । इसीसेकिसीपदार्थके साथसंबंधवालानहींहोता । इसश्रुतिकाविरोधभी प्राप्तहोगा। और द्वितीयपक्षभी नहींसंभवता ॥ क्योंकिसंबंधसेविना प्रकाशकता काअसंभव है । औरप्रदीपादि स्वसंबद्धकेही प्रकाशकदेखे हैं ॥ इससेभी असंगकोप्रकाशकतानहींसंभवती ॥शंका॥ हेवादिन्अज्ञान केसाथजोसाक्षीकासंबंध अन्वेषणकियाजाताहै।सोक्या?वास्तवसंबंध है। अथवाकल्पितसंबंधहै॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता। क्योंकिवास्तव यहजोसंबंधकाविशेषण सोअसमर्थहै अर्थात्व्यर्थहै ॥ जैसेकल्पित सर्पकोदीपकनहींप्रकाशकरता औरदीपकका तिससर्पकेसाथ वास्तव संबंधभीनहींसंभवता। तैसेदार्ष्टांतमेंभीजानना ॥ औरयदिसंबंधमात्र हीअपेक्षितहो।तोवास्तवसंबंधकेअभावहुएभीकल्पितसंबंधसाक्षी और अज्ञानकाविद्यमानहीहै ॥ यातेद्वितीयपक्षमें हमकोभीइष्टापत्तिहै ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् साक्षीऔरअज्ञानका कल्पितसंबंधभीनहीं संभवता ॥ क्योंकिसंबंधकल्पनासादिहै। अथवाअनादिहै। यहविचार कर्तव्यहै॥प्रथमपक्षमेंसंबंधकाकल्पककौनहै। यहविचारपुनःकर्तव्यहै । क्या?संबंधऔरसंबंधियोंसेभिन्नकोईकल्पकहै। अथवासंबंधादि कहीकल्पक हैंप्रथमपक्षतोनहींसंभवता॥क्योंकिसंयोगसंबंधमेंसंबंधियोंसेभिन्नपदार्थ मेंसंबंधकीउपादानतादेखनेमेंनहीं आती॥ औरद्वितीयपक्षमें यहविचार णीयहै।क्या?संबंधआपहीअपनाकल्पकहै। अथवादोनोंसंबंधी तिसके कल्पकहैं।प्रथमपक्षमेंतोआत्माश्रयदोपस्पष्टहीहैऔरद्वितीयपक्षमेंदोनों

संबंधियोंकेमध्यक्या? अज्ञानकल्पकहै। अथवासाचीकल्पकहै॥प्रथमपक्ष तोनहींसंभवताक्योंकिअन्योऽन्याश्रयदोषप्राप्तहोताहै॥तथाहि॥अज्ञान स्वरूपलाभकोप्राप्तहोकरही संबंधकोउत्पन्नकरेगा॥ औरसंबंधकेउत्पन्न हुए अज्ञानलब्धसत्ताकअर्थात्स्वरूपकेलाभवालाहोगा॥इसप्रकारदोनों कोपरस्परअपेक्षाहोनेसे अन्योऽन्याश्रयदोषहै ॥ औरद्वितीयपक्षभी नहींसंभवता ॥ क्योंकि ॥

उपयन्नपयन्धर्मोविकरोतिहिधर्मिणम्

अ०—उत्पत्तितथाविनाशकोप्राप्तहोताहुआधर्मअपनेधर्मीकोविकारी करदेताहै॥ इसन्यायसेउत्पत्तितथाविनाशकोप्राप्तहोताहुआसोसंबंधस्व धर्मीसाक्षीकेकूटस्थपनेकीहानिकरेगा ॥ यातेसाक्षीसंबंधकाकल्पक नहीं॥ औरयदिइसदोषकेदूरकरनेकेलियेउपाधियुक्तहुआसाक्षीअज्ञान केसंबंधकाकल्पकहै तोअसंगताकीहानिहोगी॥ क्योंकिअज्ञानसाक्षी केसाथसंबंधसेबिनास्वरूपकोनहींप्राप्तहोता औरस्वरूपलाभसेबिनावह अज्ञानउपाधिको कैसेउत्पन्नकरेगा । किंतुनहींउत्पन्नकरसकता॥ इसकारणसेजिसउपाधिउपहितहुआसाक्षीअज्ञानके संबंधकाकल्पकहै वहउपाधिपारमार्थिकहीकहनाहोगा॥ तिसकेसाथसाक्षीकासंबंधहुए असंगताकीहानिअवश्यहोगी औरअनिर्मोक्षप्रसंग अर्थात्किसीको भीमोक्षनहींप्राप्तहोगा॥ क्योंकितत्त्वसाक्षात्कारसे अज्ञानतत्कार्यका ही विरोधहोनेसे नाश होताहै। अन्य पदार्थका नाशनहींहोता॥ तैसेमानेहुए जिसउपाधिकरउपहितसाक्षीहै वहसत्यहै।तिसउपाधिको पूर्वउक्तरीतिसेपारमार्थिकहोनेकर तिसकी निवृत्तिनहींहोगी। यातेज्ञान कालमेंभीतादृश अज्ञानकेसंबंधकाहेतु उपाधिकेसद्भावसे संसारका

उच्छेदकभी नहींहोगा ॥ इसप्रकार अनिर्मोक्षप्रसंगहोनेसें मोक्ष शास्त्रभीनिष्फलहोगा ॥ औरयदिआत्माश्रयादिदोष दूरकरनेकेलिये अज्ञानकेसंबंधका अध्यासअनादिहै यहआद्यद्वितीयपक्ष स्वीकारकरो तोआत्माकीन्याई अनादिभावरूप होनेकर तिससंबंधकी निवृत्तिनहीं होगी । यहांयहअनुमानजानना ॥

❋ विमतोऽज्ञान संबंधो न निवर्त्तते ।
अनादिभावत्वात् । आत्मवत् ॥ ❋

अ० ॥ विवादकाविषयजो अज्ञानकासंबंधहै । वहनिवृत्तनहीं होता । अनादिभावरूपहोनेसे ॥ जोजोअनादिभावहोताहै। सोसो निवृत्तनहींहोता । जैसेआत्माहै। इति ॥ शंका ॥ हेवादिन्निवृत्त्या भावमेंअनादिभावत्व प्रयोजकनहीं । किंतुअविद्याकीतंत्रताकाजो अनधिकरणत्व सोनिवृत्त्याभावमें प्रयोजकहै ॥ औरसंबंधकोतो अविद्याकेआधीनहोनेसे अविद्याकी निवृत्तिहुए तिसकी निवृत्तिहो जाएगी । यातेपूर्वउक्तअनुमानमें "अविद्यातंत्रत्वाऽनधिकरणत्व" उपाधिहै । सोइसप्रकारहै ॥ जहांजहांनिवृत्त्याभावहै । तहांतहां "अविद्यातंत्रत्वानधिकरणत्व" है । जैसेआत्मामें है। औरजहांजहां अनादिभावत्वहै।तहांतहां अविद्यातंत्रत्वान धिकरणत्वका अभावहै ॥ जैसेसंबंध में है। यातेसोपाधिकहेतुहोनेसे अनुमानदुष्टहै । इसप्रकार संबन्धाऽध्यासको अविद्याऽध्यासकीन्याई अनादिभावत्वके मानहुए भीअविद्याकेआधीनहोनेकर अविद्याकीनिवृत्तिसें तिसकीनिवृत्ति संभवतीहै ॥ समाधान ॥ उपाधिकोसाधनकेसाथ व्यापकहोनेसे पूर्वउक्तअनुमानदुष्टनहीं ॥ तथाहिं यह "अविद्यातंत्रत्व" अर्थात

अविद्याऽधीनत्वक्याहै । अर्थयह । क्या?अज्ञानजन्यत्वकानाम "अज्ञान तंत्रत्व" है । अथवाअज्ञानभास्यत्वरूप तंत्रतासंबंधमेंहै अथवा अज्ञानके आधीनस्थितिवत्तारूप तंत्रता है । इन मेंं प्रथमपक्षनहींसंभवता। क्योंकिसंबंधकोअनादिहोनेसे स्वउत्पत्तिअर्थ अज्ञानकीअपेक्षानहीं ॥ औरद्वितीयपक्षभी नहींसंभवता॥ क्योंकि सम्बन्धकाज्ञानसाक्षीकेआधीनहै । औरअज्ञानकोजड़होनेसे संबंधकी प्रकाशकताकाअसम्भवहै । यदियहकहो किसंबंधीके ज्ञानकेआधीन संबंधकाज्ञान लोकमेंदेखाहै । यातेसम्बन्धकाविशेषणरूप जोसंबंधी तिसकोभीसंबंधज्ञानकी हेतुताहोनेसे संबंधमेंअज्ञानतंत्रताकासंभवहै। सोयहकथनभीसमीचीननहीं । क्योंकिप्रत्यक्षादिप्रमाणसिद्धलौकिक संबंधका संबंधीकेआधीनज्ञानहुएभी अज्ञानतथासाक्षीके संबंधमें उससे विलक्षणताहै । जिसकारणसे साक्षीके संबंधके आधीन अज्ञानरूप संबंधीकीस्फूर्ति है ॥ यातेपूर्वउक्ततंत्रतानहींसंभवती ॥ औरसंबंध अपनीस्थितिकेअर्थ संबंधीकी अपेक्षा करता है ॥ यहतृतीयपक्षभीनहीं संभवता ॥तथाहि॥क्या?वहसंबंधस्वरूपलाभसे विनाहीस्थितिमात्रकेअर्थसंबंधीकीअपेक्षाकरताहै।अथवास्वरूपलाभ युक्तहुआसंबंधीकीअपेक्षाकरताहै॥प्रथमपक्षतोनहींसंभवता।क्योंकि लब्धसत्ताकपदार्थही स्थितिकीअपेक्षावालाहोताहै । निःस्वरूपको स्थितिकीअपेक्षाहीनहीं ॥ औरद्वितीयपक्षमेंभीयहविचारकर्तव्यहै संबंधकोस्वरूपकालाभकिसीकारणसेहै।अथवाकारण विनाहीस्वरूप कालाभहै?॥ प्रथमपक्षमानो तोअनादित्वकीहानिहोगी ।औरयदि द्वितीयपक्षकहो।तोकारणकीअपेक्षाकाअभावहुएस्थितिकेअर्थभीतिस

कोइतरपदार्थकीअपेक्षानहींहोगी ॥ जैसेस्वतःलब्धसत्ताकआत्माको स्वस्थितिकेअर्थ इतरकीअपेक्षानहींहोती॥ इसप्रकारसंबंधकोअज्ञान कीआधीनतानहोनेसे पूर्वउक्तउपाधिसाधनकेसाथ अव्यापकनहीं॥ किंतुव्यापकहै । यातेपूर्वकथनकियाअनुमाननिर्दोषहै ॥ शंका ॥ हेवादिन् अज्ञाननामज्ञानकेप्रागभावकाहै।औरवहज्ञानकीअनुपलब्धि सेग्रहणहोताहै।तिसकीअसिद्धितुमकैसेकहतेहो ॥ समाधान ॥ यह तुम्हाराकथनभीअसमीचीनहै।क्योंकिग्रहणशब्दसेवृत्तिज्ञानका ग्रहण है।अथवास्वरूपचेतनकाग्रहणहै। प्रथमपक्षतोनहींसंभवता॥ क्योंकि वृत्तिकोजडहोनेकरमुख्यज्ञानरूपताकीअनुपपत्तिहै ॥औरद्वितीयपक्ष भीनहींसंभवता॥ क्योंकिनित्यउपलंभ अर्थातज्ञानस्वरूपआत्माकी अनुपलब्धिनहींसंभवती॥ औरभावरूपजगतका उपादानजोअज्ञान तुममानतेहो तिसकोअभावरूपताकीभी अनुपपत्तिहै ॥ यातेपूर्वउक्त प्रकारसेअज्ञानहीनहीं है तोतिसकोजगतकीकारणता तुमकैसे कथन करतेहो ॥ इतिपूर्वपक्ष ॥



ॐअथसिद्धांत।अज्ञानकीसिद्धिकाप्रकारनिरूपणॐ

मू० प्रश्नस्यज्ञानपूर्वत्वादाक्षेपेप्रतियोगिधीः।
अवश्यंभाविनीपूर्वाविरोधःस्यादितोन्यथा।२९।

चौबोलाछंद ॥ ज्ञानपूर्वकंप्रश्नपक्षानोआक्षेपप्रतियोगिधी ॥
अवश्यंहोतीइससेअन्यथाहोतविरोधलखोसोजी।२४॥

टी०।।हेवादिन् जोप्रश्नहोताहैवहज्ञानपूर्वकहीहोताहै। औरनिषे धमेंभीप्रतियोगीकाज्ञानअवश्यपूर्वहोताहै।यातेअज्ञानकेस्वरूपविषयक

प्रश्नतथातिसकेनिषेधसे "अन्यथा" कहियेस्वरूपविषयकप्रमाण
काप्रश्नकियेहुएविरोधप्राप्तहोगा।अर्थयहअज्ञानकोप्रमाणकरनिवृत्तिके
योग्यहोनेसेतिसमें प्रमाणकाप्रश्नविरुद्धहै ॥ अबइसीअर्थकोविस्तार
पूर्वकनिरूपणकरतेहैं।। अज्ञानअंगीकारकरनेवालोंकेप्रति जोपूर्वपक्षी
नेयहकथनकियाहै। किअज्ञानकीसिद्धिकैसेहोसकतीहै । ऐसेकथन
करनेवालेवादीसे हमयहपूछतेहैं। क्या?यहतुम्हाराप्रश्नअज्ञानकेस्वरूप
विषयकहै । अथवातिसकेस्वरूपकानिषेधहै ॥ अथवातिसकेस्वरूप
बोधकप्रमाणविषयक प्रश्नहै ॥ प्रथमपक्षकहो तोनहींसंभवता ॥
क्योंकिअज्ञातस्वरूपविषयक प्रश्नकीअनुपपत्तिहै।। अर्थयहप्रश्नवाणी
काएकविशेषव्यवहारहै।औरवहव्यवहारव्यवहर्तव्यवस्तुकेज्ञानकेआधीन
है औरयहांप्रकरणमें कथनात्मकव्यवहारकेयोग्य अज्ञानकास्वरूपहै॥
तिसकाज्ञानप्रश्नकर्ताकोप्रथम अवश्यहोनाचाहियेइसलियेअज्ञानका
स्वरूपतुझको प्रथमहीसिद्धहै ॥ यातेअज्ञानकेस्वरूपकी सिद्धिअर्थ
प्रश्नकरनाव्यर्थहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन् यदियहप्रश्नअज्ञानके
सामान्यस्वरूपकीजिज्ञासासेहोता।तोयहउपालंभआपकाहोता।परन्तु
ऐसेतोनहीं।किंतुअज्ञानकेविशेषस्वरूपकीजिज्ञासासे प्रश्नसंभवताहै।।
समाधान।।हेवादिन् इसकथनसेभी पूर्वउक्तदोषहीप्राप्तहोताहै। अर्थयह
किप्रश्नव्यर्थ है।क्योंकिअज्ञानकेस्वरूपकीसिद्धिही अन्वेषणकीजाती
है वहयदिसामान्यरूपतासेसिद्धहै।तोपुनःविशेषज्ञानकाक्याप्रयोजन
है. किंतुकोईप्रयोजननहीं।अथवासामान्यप्रतीतिविशेषप्रतीतिसेविना
पर्य्यवसानताकोनप्राप्तहुईविशेषकोभी वहबोधनकरदेतीहै ॥ याते
विशेषस्वरूपकीजिज्ञासासेभी प्रश्नकरनानिष्फलहै।। औरद्वितीयपक्ष

भीनहींसंभवता ॥ क्योंकिअज्ञानकाअभाव बोधनकरनेका नामही आक्षेपहै।औरवहअभावशब्दसेही बोधनकरनेयोग्यहै। औरशब्दका उच्चारणभी ज्ञानपूर्वकहीहोताहै।औरअभावकाज्ञानभीप्रतियोगिज्ञान केआधीनहीहोताहै॥ इसप्रकारअज्ञानकास्वरूपनिषेधकरनेवालेवादी केप्रति प्रतियोगिरूपअज्ञानकीसिद्धिप्राप्तहुई तिसकालोपकरनावादी कोउचितनहीं ॥ शंका ॥ जोवस्तुप्रमाणसिद्धहो तिसकानिषेधकरना योग्यनहीं परन्तुअज्ञान तोभ्रमसिद्धहै। यातेवहकैसेनिषेधकरनेयोग्य नहीं किंतुनिषेधकेयोग्यहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् जोभ्रमज्ञानहोता है वहकरणतथाविषयकेआधीनहोताहै॥ यातेअज्ञानकेभ्रममेंवहदोनों तुमनेकहेचाहिये ॥ अबसिद्धांतीआपहीवादीकोसंमतिदेताहै ॥ जिसकारणसेजबकोईऐसेपूछेकिससाधनकरभ्रमहुआऔरकिसविषयक भ्रमहुआ तबयहीउत्तरकहनेयोग्यहै। परोक्तशब्दाभासकरभ्रमहुआ औरअज्ञानविषयकहुआ।यातेशब्दाभासही भ्रममेंकरणहै। औरअज्ञान तिसभ्रमकाविषयहै। यहांशब्दमें आभासत्वद्योतनकरनेकेलियेपरोक्त यहशब्दकाविशेषणकहाहै ॥ इसप्रकारसिद्धांती आपहीवादीकेप्रति ऐसीसंमतिदेकर अबतिसकोदूषितकरताहै ॥ हेवादिन् जबऐसेमाना तोभ्रमकोस्वसमानविषयकअज्ञानका उपपादकहोनेसे अज्ञानविषयक और अज्ञानस्वीकारकरनेकर अनवस्थादोषका परिहारकरना कठिन होगा॥अर्थयहहै।किअज्ञानकेभ्रममेंकोईउपादानकहाचाहिये सोक्या? अज्ञानउपादानहै ॥ अथवा कोईअन्य पदार्थहै ॥ अन्य पक्ष तो नहींसंभवता ॥ क्योंकि अज्ञानकोही उपादानता स्वीकार है ॥ औरप्रथमपक्षमें वहअज्ञानकौनहै। क्या?निरूपणीयरूपताकर प्रकरण

मेंजोप्राप्तहै वहीअज्ञानहै। अथवाउससेभिन्नहै ॥ प्रथमपक्षमेंतो आत्माश्रयदोषस्पष्टहीहै।क्योंकिअज्ञानको अपनेभ्रममेंअपनीअपेक्षा है। औरद्वितीयपक्षमें अन्योन्याश्रयचक्रका अनवस्थादिदोषोंका समूहप्राप्तहोताहै । औरयदि अनेकअज्ञानोंकीधारा स्वीकारकरो तोयहअत्यंत आश्चर्यहै जोतुमएकअज्ञानको नसहनकर तिसके निषेधकाप्रयोगकरतेथे अबअनेकअज्ञानधाराको स्वीकारकरनेसे मदसेउन्मत्तहुए तुमको स्वपक्षकीहानि और गौरवदोषतथाव्यर्थ नादि अनेकदोष प्रतीतनहींहोते । यातेस्वपक्षका निर्वाहभीदूर हुआ । अर्थयहजबअज्ञान तुमनेमानलिया तोस्वमतकीहानिहुई क्योंकितुमअज्ञानका निषेधकरतेहो । औरएकअज्ञानसेहीस्वाकार तथाअन्याकार भ्रमकेसिद्धहुएअनेकअज्ञानमाननेमेंगौरवहै।किंवा । अज्ञानकोजडस्वरूप होनेकर स्वभावसेहीवहआवृत्तस्वरूपहै। तिसमें आवरणकेप्रयोजनकाभावहोनेसे अज्ञानविषयक औरअज्ञानस्वीकार करनाव्यर्थहै। औरऐसेभीअज्ञानधारा मानलें यदिअज्ञानपरंपराको ग्रहणकरनेवाला कोईज्ञानउदयहोसोऐसाज्ञानतोकोईउदयनहींहोता यातेप्रमाणाभावसे अज्ञानपरम्पराकीसिद्धिभीनहींहोसकती ॥शंका॥ किसीविषयमेंआपकोभी प्रश्नतथाआक्षेपके विद्यमानहोनेसे पूर्व उक्तप्रश्नआपकेप्रतिभीतुल्यहीहै। क्योंकि—

यत्रोभयोःसमोदोषः परिहारोपितत्समः ।
नैकस्तत्रनियोक्तव्य स्तादृगर्थविचारणे ॥ १ ॥

अ० ॥ जहांदोनोंपक्षोमें समानदोषहो तहांतिसकापरिहारभी दोनोंपक्षोंमें समानहीहोताहै। तैसेयअर्थकेविचारकरनेमें एकहीवादीवा

प्रतिवादीतहांपर्य्यनुयोगकाविषयनहींहोता।किंतुदोनोसमानहीतिसका विषयहोतेहैं(१)इसन्यायसे किसीविषयमेंआपभीइसीप्रश्नकाविषयहो॥ समाधान॥ हेवादिन्हमारेपक्षमेंपरिहारकीतुल्यतानहीं।क्योंकिअज्ञात रूपताकरसाक्षिसिद्धअज्ञानकीनिवृत्ति अर्थप्रमाणका प्रश्नसुखेनहींसंभ वताहै।औरअज्ञानमेंप्रमाणकेनदेखनेसेस्वरूपकातिरस्काररूपनिषेधभी करनेकोसुखेनहीहै ॥ अबपरिहारकी समानताग्रहणकरकेवादीतृतीय पक्षकोउठाताहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन् तोसाक्षिसिद्धअज्ञानके वरूपविषयकमेराभी प्रमाणकाप्रश्नसमीचीनहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् पूर्वउक्तरीतिसे अज्ञानकोसाक्षिसिद्धमानेहुए अज्ञानतथा साक्षीकासंबंधभीकहनायोग्यहै। क्योंकिसंबंधसेविनासाक्षीकोअज्ञान कीसाधकतानहींसंभवेगी।तैसेअज्ञानतथासाक्षीके संबंधकोअनादि त्वभीकहनाचाहिये । नहींतोपूर्वमुक्तहुएपुरुषोंको पुनःसंसारकीप्रती तिहोगी । तात्पर्ययहहै ॥ साक्षीतथा अज्ञानके संबंधकोसादि मानेहुए तिसकाआदिकारण क्या?आत्माहै।अथवाअज्ञानहै । प्रथम पक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिमुक्तपुरुषोंकोपुनः संसारप्राप्तहोगा ॥ जिसकारणसे मुक्तिकालमेंभी संबंधकाकारणआत्मा विद्यमानहै ॥ सामग्रीकेहुए कार्यअवश्यहोताहै॥ औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता ॥ क्योंकिवहसंबंधकाकारणरूपअज्ञानक्या?संबंधिरूपहै।अथवाअसंबंधि रूपहै यहविचारकर्त्तव्यहै ॥ इनमेंअंत्यपक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकि स्वतंत्रअज्ञानस्वीकारनहींहै ॥ औरसाक्षीकेसाथसंबंधवालाअज्ञान कारणहै यहप्रथमपक्षभीनहींसंभवता ॥ क्योंकिसंबंधतोअबपर्य्यंतभी सिद्धनहींहुआ ॥ औरयदितुऐसेकहो किप्रथमअज्ञानसेयहअज्ञान

भिन्नहै ॥ तोइसमैंभी यहविचारकरनेयोग्यहै॥ क्या?वह अज्ञानांतरभी साक्षीकेसाथसंबंधवालाहैवानहीं।अन्त्यपक्षमेंतोअज्ञानकोस्वतंत्रताप्राप्त होगी। सोस्वीकारनहीं।औरप्रथमपक्षमें अनवस्थादोपकीप्राप्तिहोगी तथाहि ॥ द्वितीयअज्ञानका साक्षीकेसाथजोसंबंधहै । तिसकाउसी अज्ञानकोयदिकारणमाने तोआत्माश्रयदोपहोताहै।औरप्रथमअज्ञान कोद्वितीयअज्ञानके संबंधकाकारणमाननेमें अन्योऽन्याश्रयदोपहै॥ औरतृतीयअज्ञानकोद्वितीयअज्ञानकेसंबंधकाकारणमाननेसे चक्रका दोपहोताहै॥ औरचतुर्थअज्ञानकोसंबंधकाकारणमाननेसेअनवस्था दोपकीप्राप्तिस्पष्टहीहै ॥ शंका ॥ यहअनवस्थादोपकेअर्थनहीं ॥ क्योंकिअज्ञानपरम्पराअनादिहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् अज्ञानों कीपरम्परातुमकिसलिये मानतेहो । यदिआवरणकेअर्थकहो तोवह एकअज्ञानसेही संभवहोसकताहै ॥ अनंतअज्ञानोंकीधारामाननी निष्फलहै । औरयदिआत्माकेसाथअज्ञानकासंबंधसिद्धकरनेकेअर्थ अज्ञानोंकीधारामानो तोअपनेकरहीअपनासंबंध सिद्धहोजायेगा ॥ जैसे "रूपीघटः" इसप्रतीतिमेंगुणगुणीका समवायभासताहै॥ और समवायकाभीअपनेसंबंधियोंमेंसंबंधभासताहै ॥ वहांअपनेसंबंधियों केसाथस्वसंबंधकाउपपादकआपहीवहसमवायहै॥ अपनेसेभिन्नस्वतथा घटकेसंबंधकाउपपादक कोईअन्यसमवायनहींमाना॥ क्योंकिअनेक समवायमाननेमेंगौरवहै । तैसेअज्ञानतथासाक्षीकेसंबंधकाउपपादक लाघवतासेएकहीअज्ञानस्वीकारकरनायुक्तहै।अनेकअज्ञानोंकीपरम्परा माननेमेंगौरवदोपहै । यातेजिसधर्मसेबिना जोनहींसंभवतातिससर्व काआपहीअज्ञानकल्पकहै । तथाहि ॥साक्षीकेसाथस्वसंबंधकातथा

अनादित्वकाकल्पकहै । औरअज्ञानकोसत्मानेहुए द्वैतकीप्राप्ति होगी । औरअसतमानेहुए "अज्ञोहम्" यहतिसकीअपरोक्षप्रतीति नहींहोगी । यातेसत्असतसेविलक्षणअनिर्वचनीयत्वकाभीअपने विषयककल्पकहै । औरअज्ञानकोअभावरूपमानेहुए प्रपंचकीउपादा नतानहींसंभवेगी। क्योंकियदिअभावकोभी उपादानतामानें तोकार्य मेंसत्बुद्धिनहींहोगी ॥ और"सन्घटःसन्पटः" ऐसेकार्यमेंभावरूपता प्रतीतहोतीहै।यातेउपादानताकीसिद्धिअर्थअपनेमेंभावत्वकाभीकल्पक है॥औरएकपदार्थमें विचित्रकार्यकेउत्पन्नकरनेकीसामर्थ्यकेअसंभवसे अपनेमें विचित्रशक्तित्वकाभीकल्पकहै ॥ "औरधर्मीकेभेदकल्पनासे धर्मकल्पनाश्रेष्ठहै । इसन्यायसेस्वविषयक एकत्वकाभी कल्पकहै ॥ औरअनादिहोनेपरभीतिसकीनिवृत्तिअर्थ ज्ञानकर निवृत्तियोग्यत्वका भीस्वमेंकल्पकहै । इसप्रकारपूर्वपक्षीद्वारा अज्ञानऔतिसकास्वरूप कथनकरके अबसिद्धांती अज्ञानकेसाधकप्रमाणविषयक जोवादीका प्रश्नपक्षतथा तिसकोनिरासकरताहै । हेवादिन् यदिपूर्वउक्तअज्ञानका स्वरूपसाक्षीकरसिद्धहुआ तोपुनःप्रमाणतिसमेंक्याकरेगा । क्योंकि सिद्धपदार्थमेंसाधनकी व्यर्थताहोतीहै । यातेअज्ञानकेस्वरूपविषयक प्रमाणप्रश्नव्यर्थहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन् अज्ञानकास्वरूपसिद्ध करनेकेलियेहमप्रमाणकाप्रश्ननहींकरते।किंतुअज्ञानविषयकअज्ञानकी निवृत्तिअर्थप्रमाणकाप्रश्नहै ॥ औरअज्ञानविषयक अज्ञानकीनिवृत्ति साक्षीसेकहो तोनहींसंभवती ॥ क्योंकिसाक्षीको तिसअज्ञानका साधकमानाहै । यातेप्रमाणप्रश्नसंभवताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् यदिअज्ञानविषयकअज्ञानहो तोतिसकीनिवृत्तिकेलिये प्रमाणकाप्रश्न

भीसंभवै परंतुअज्ञानविषयक अपरअज्ञानकाअभावहै। अज्ञानकोजड होनेसेस्वभावसेही आवृत्तएकरूपहै ॥ तिसमेंद्वितीयअज्ञानका स्वीकारव्यर्थहै ॥ शंका ॥ जैसेलोकदृष्टिसे जडघटमेंभीप्रमाणकी प्रवृत्तिहोतीहै॥ तैसेअज्ञानमेंभी प्रमाणप्रवृत्तहोजायेगा॥ समाधान॥ हेवादिन्‌घटकीप्रमाणसे निवृत्तिनहींहोती ॥ इसकारणसेप्रमाणकर तिसकाज्ञानलोकदृष्टिसेहो। क्योंकितिनकाविरोधनहीं ॥ औरअज्ञान कातोप्रमाणकेसाथनिवृत्त्यनिवर्तकलक्षणविरोधहै। इसलियेप्रमाणकी विषयता अज्ञानमेंयुक्तनहीं ॥ पूर्वउक्तप्रमाणतथाअज्ञानकेविरोधको तमोदीपन्यायसे स्पष्टकरतेहैं।

॥अज्ञानं ज्ञातुमिच्छेद्यो मानेनात्यंतमूढधीः।
सतुनूनं तमःपश्येद्दीपेनोत्तमतेजसा॥ १ ॥॥

अ० ॥ जोअतिमूढबुद्धिपुरुष प्रमाणसे अज्ञानकोजाननेकी इच्छाकरताहै। वहमूढनिश्चयकरदीपकसे अन्धकारकोदेखनेकीइच्छा करताहै। यद्यपिदीपकतथातमकाभी निवृत्त्यनिवर्तकभावविरोधनहीं संभवता। क्योंकिमंदप्रकाशवालेदीपकयुक्तमंदरमें प्रकाशतथातम इनदोनोंकीएकठीप्रतीतिहोतीहै। तथापिउत्तमप्रकाशवाले दीपकयुक्त मंदरमें अन्धकारनहींस्थितहोसकता॥ इसीकोतमोदीपन्यायकहतेहैं। यातेअज्ञानके स्वरूपविषयक प्रमाणप्रश्न व्यर्थहै ॥ औरअज्ञानकेप्रश्न कीअन्यथाऽनुपपत्तिसे सिद्धजोअज्ञान तिसमें "कथंता" अर्थयहवह अज्ञानकैसेसिद्धहै यहकथननहींसंभवता ॥ क्योंकिस्वअनुभवसिद्ध पदार्थमेंकथंतानहीं संभवती ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन्‌ वहीपदार्थ स्वीकारकरनेयोग्यहोताहै जोअपनेप्रयोजनकाविरोधीनहो। और

अज्ञानकोतोकर्तृत्वादि सर्वअनर्थकाहेतुहोनेसे मुक्तिरूपप्रयोजनका विरोधिपनाहै । यातेवहकैसेस्वीकारकरनेयोग्यहै ॥ औरयदिऐसे कहो किवेदांतवाक्यजन्यज्ञानसे तिसकीनिवृत्तिहोजायेगी । सोयह कथनभीनहींसंभवता। क्योंकिजिनपुरुषोंने वेदांतवाक्यश्रवणकियेहैं तिनकोभीपूर्वकीन्याईंही संसारकीप्रतीतिदेखनेमेंआतीहै । यातेस्व प्रयोजनकाविरोधीअज्ञान स्वीकारकरनेयोग्यनहीं ॥ समाधान ।' हे वादिन् कर्तृत्वादिसमूहअनर्थकी उत्पत्तिकाहेतु जोआत्माकाअज्ञानहै तिसकोस्वअनुभवसेसिद्धहोनेकरतिसकास्वीकारतोअवश्यकरनेयोग्य है।परन्तुतिसकेस्वीकारकरनेसे मुक्तिकीअनुपपत्तिनहींहोती। क्योंकि तत्त्वमस्यादिवाक्यजन्यअपरोक्षब्रह्मात्माकेसाक्षात्कारसेअज्ञानकेबाध हुएमुक्तिकीउपपत्तिहै । यहतुमनिश्चयकरो ॥इति॥३१॥

❀ अथपूर्वपक्षजिज्ञासापूर्वकबाधशब्दकाअर्थनिरूपण करनेकेलियेअन्यमतोंकीरीतिसेबाधकास्वरूप तथातिसकेनिराकरणकाप्रकार ❀

बाधकाक्या?स्वरूपहै।ऐसीजिज्ञासाकेहुएनैयायिकमतकेअनुसार बाधकास्वरूप प्रथमपूर्वपक्षीकथनकरके तिसकोदूषितकरताहै । तहां पूर्वप्रत्ययमेंव्यधिकरणप्रकारकत्वकाजोनिश्चयहैतिसकोनैयायिकबाध कहतेहैं।यहां"इदंरजतम्"यहपूर्वप्रत्ययपुरोवर्तिशुक्तिविषयकहै । तथा रजतत्वप्रकारकहै।तिसप्रत्ययकेप्रकारकाइदंताकेसाथव्यधिकरणहै।अर्थ यहकिइदंताकेअधिकरणसेभिन्नअधिकरणवालाप्रकारइसप्रत्ययनिष्ठहै। तिसविषयकजोनिश्चयकियहइसीप्रकारहैतिसको बाधकहतेहैं।।तात्पर्य यह"इदंरजतम्"इसप्रथमज्ञाननिष्ठभ्रमत्वनिश्चयकोबाधकहतेहैं। ऐसा

बाधकास्वरूपयदिसिद्धांतीमाने ।तोअपसिद्धांतहोगा।क्योंकिभ्रमस्थलमेंसिद्धांती नेअन्यथाख्यातिनहींमानी।जिसकारणसेअन्यथाख्यातिवादीकेमतमेंपुरोवर्त्तिशुक्तिमेंरजतहैनहीं। किंतुसादृश्यादिदोषसेउद्बुद्धसंस्कारसेउपस्थितहुएरजतरूपकरपुरोवर्तिशुक्तिकाहीभानहोताहै।यातै"इदंरजतम्"यहजोपूर्वज्ञानहै।तिसकोभ्रमपनायुक्तहै।क्योंकिविषयरूपरजतकाशुक्तिदेशमेंअभावहै।तिसकारणसेतिसज्ञानविषयक भ्रमत्वकाजोनिश्चयसोबाधहै। परन्तुयहबाधकास्वरूप नैयायिककोंके मतमेंहीसंभवताहै । वेदांतमतमेंनहीं ।क्योंकिआपकेमतमें तोपुरोवर्तिशुक्तिमेंमिथ्यारजतकीउत्पत्तिहोनेकर इदंताकेसाथ प्रकारकीव्यधिकरणतानहीं है।अर्थातइदंताकाअधिकरणही रजतत्वकाअधिकरणहै । यातेपूर्वउक्तबाधकास्वरूपमानेहुएअपसिद्धांतहोगा ॥ किंवा ॥पूर्वज्ञानमेंभ्रमत्वकाजोनिश्चयहै।वहअधिष्ठानकेअज्ञानकोबाधकरताहै। वानहीं।प्रथमपक्षतोनहींसंभवता। क्योंकिदोनोंकाविषय भिन्नभिन्नहै।अर्थातअज्ञानतोशुक्तिविषयकहै।औरबाधपूर्वज्ञाननिष्ठ भ्रमपनेकोविषयकरताहै।औरभिन्नभिन्नविषयविषयक ज्ञानतथाअज्ञानकानिवृत्यनिवर्तकभावनहींसंभवता ॥ अन्यथाअतिप्रसंगहोगा । अर्थातघटके ज्ञानसेपटकाअज्ञानभीनिवृत्त हुआचाहिये ॥ औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता ।क्योंकिसंसारकेमूलभूतअज्ञानका बाधनहोनेसेतिसकीव्यर्थताहै।अत्रविवरणाकारकीरीतिसेबाधकास्वरूपआगेकहकरतिसकोवादीदूषितकरताहै।औरकोईएकवेदांती कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिकानामबाधकहतेहैंसोभीसमीचीननहीं । क्योंकिकार्यकीनिवृत्तिका नामबाधहै। अथवाकारणरूपअज्ञानकी निवृत्तिकानामबाधहै ॥ अथवादोनोंकीनिवृत्ति

कानामबांधहै । यहविचारकर्तव्यहै । इनमेंप्रथमऔरद्वितीययहदोनों पक्षतोअव्याप्तिदोषकी प्राप्तिहोनेसे नहींसंभवते । क्योंकिकार्यनिवृत्ति मेंसविलासअज्ञानकीनिवृत्तिरूप बाधकालक्षणनहींप्राप्तहोता । तैसे अज्ञानकीनिवृत्तिमात्रमेंभी पूर्वउक्तबाधकेलक्षणकीप्राप्तिनहीं । और अव्याप्तिदोषकीप्राप्तिसेही तृतीयपक्षभीअसंगतहै॥ क्योंकिएकएक कीनिवृत्तिमें उभयनिवृत्तिरूपताका अभावहै॥ प्रतियोगीकेभेदसेही अभावकाभेदहोताहै । यातेंउभयनिवृत्तिकोभी बाधरूपतानहीं संभवती ॥ शंका ॥ कार्याकारपरिणामकोप्राप्तहुए अज्ञानकी निवृत्तिकानामहीबाधहै। ऐसेमानेहुए अव्याप्तिदोषनहीं प्राप्तहोता । क्योंकियहलक्षणसर्वत्र अनुगतहै ॥ समाधान ॥ तैसेमानेहुएभी यहविचारकरनेयोग्यहै। निवृत्तिमेंप्रतियोगिरूप कार्याकारपरिणामको प्राप्तहुआजोअज्ञानहै सोनिवृत्तिकाविशेषणहै। अथवाउपलक्षणहै । प्रथमपक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकिविशिष्टवृत्तिधर्मकोविशेषणमें वर्तनेकानियमहै। इसन्यासेविशेषणरूप अज्ञानमेंभी बाधपनेकीप्राप्ति होगी।औरयदिद्वितीयपक्षकहो तोअभावमेंउपलक्षणरूप अज्ञानका. कियाहुआकोईनिश्चयाकधर्म नहींप्रतीतहोता । यातेंनिवृत्तिमात्र कानामबाधहोगा । तिसमेंभीयहविचारणीयहै । क्या?यहनिवृत्तिरूप बाधध्वंसमात्रकानामहै।अथवाज्ञानसाध्यध्वंसकानामबाधहै । अथवा पदार्थांतरकानामहै । अर्थयह वहनिवृत्तिरूपबाधसत्‌रूपनहीं तथा असत्‌रूपभीनहीं।औरसत असत्‌उभयरूपभीनहीं। औरअनिर्वचनीय रूपभीनहीं । किंतुपंचमप्रकाररूप पदार्थांतरहै । अथवाआत्मस्वरूप हीनिवृत्तिहै । इनमेंप्रथमपक्षनहींसंभवता ॥ क्योंकिमुद्गरादिकोंके

परिहारसे उत्पन्नहुआ जोघटादिध्वंस तिसमेंबाधव्यवहार नहींहोता॥ औरद्वितीयपक्षभी असंगतहै। क्योंकिउत्तरज्ञानसे सिद्धहोनेयोग्यजो पूर्वज्ञानकाध्वंसहैं तिसमेंभीबाधव्यवहार हुआचाहिये। जिसकारणसे वहध्वंसज्ञानसाध्यहै ॥शंका॥ पूर्वज्ञानकेध्वंसप्रति उत्तरज्ञानकोज्ञान स्वरूपतासे कारणतानहीं। किंतुक्षणिकविशेषगुणत्वरूपतासे कारण ताहै।यातेतिसमेंबाधकेलक्षणकी अतिव्याप्तिनहींहोती॥ समाधान॥ यद्यपिपूर्वउक्तरीतिसेउत्तरज्ञानसाध्य पूर्वज्ञानकेध्वंसमेंबाधकेलक्षणकी अतिव्याप्तिनहींहै।तथापिज्ञानमात्रकेध्वंसमेंतोअतिव्याप्तिनिवारणकरनी कठिनहै।क्योंकिज्ञानकाध्वंसज्ञानमात्रकरसाध्यहै।औरतृतीयमक्षभीनहीं संभवता।क्योंकिवहपदार्थांतरनिवृत्तहोताहै।वानहीं। यहविचारणीयहै प्रथमपक्षतोनहींसंभवता।क्योंकिवहपदार्थांतरध्वंसकरव्यासनहीं। और द्वितीयपक्षभीअसंगतहै। क्योंकिपदार्थांतरके अनिवृत्तहुए अद्वैतकी हानिहोगी॥ शंका॥ अद्वैतकीहानितबहो जबपदार्थांतरसतहो यातेद्वितीयसत्काअभावहोनेसेअद्वैतकीहानिनहींहोती॥समाधान॥ तिसपदार्थांतरकोअनिर्वचनीयसे विलक्षणहोनेकरतथाअसतसे विल क्षणहोनेकरआत्माकीन्याईसतरूपताकासंभवहै। तिससेपदार्थांतर केस्थितहुए कैसेअद्वैतकीहानिनहींहोगी किंतुअवश्यहोगी। याते तृतीयपक्षभीअसंगतहै। औरचतुर्थपक्षभी नहींसंभवता। क्योंकि तिसआत्मस्वरूपनिवृत्तिकोनित्यसिद्धहोनेकर ज्ञानकोव्यर्थताकीप्राप्ति होगी॥ शंका॥ आत्माकास्वरूपमात्रही निवृत्तिनहीं किंतुवृत्तिउप लक्षितआत्मानिवृत्तिरूपहै। यातेज्ञानकोव्यर्थतानहीं॥समाधान॥ जैसेगृहमेंकाकरूपउपलक्षणजन्यउतृणत्वादिरूपधर्मगृहकानिश्चायक

है।तैसेवृत्तिरूपउपलक्षणजन्यआत्माकेनिश्चायकधर्मकाआत्मामेंअभाव है इसीसेवृत्तिकोउपलक्षणपनानहींसंभवता॥पूर्वकथनकाप्रकरणमेंउप योगकथन करताहुआवादी बाधकेनिराकरणकोसमाप्तकरताहै।पूर्व उक्तप्रकारसेबाधकास्वरूपकथन करनेकोअयोग्यहै ॥ यातेअज्ञान तत्कार्यके बाधसेमोक्षसिद्धहोताहै। यहकथननहींसंभवता ॥इति॥

❀ अथसिद्धांतरीतिसे बाधकास्वरूपनिरूपण।❀

भ्रमसेप्रसिद्धपदार्थके अधिष्ठानमें अध्यस्तपदार्थतीनकाल मेंनहींइसप्रकारकाबोधजो अधिष्ठानकेसाक्षात्कारसेअनन्तरहोताहै। तिसकोबाधकहते हैं ॥ इसप्रकारकाउत्तर सिद्धांती निरूपण करताहै ॥ समाधान ॥

✻ मू०॥ साक्षात्कृतेत्वधिष्ठानेसमनन्तर निश्चितिः। अध्यस्यमानं नास्तीतिबाधइत्युच्यते बुधैः ॥४०॥✻

मोटनकाछंद–साक्षातआधारभएजबही। पाछेहुईजोनिश्चोसबही॥ मिथ्यानहि तीनहुकाल अहं। धीमानसबीतहिबाध कहे॥ ३५ ॥

टी० ॥ अधिष्ठानकेसाक्षात्कारहुए तदनंतरजो यहनिश्चय उत्पन्नहोताहैकि अध्यस्तपदार्थ तीनोंकालमें अधिष्ठानमेंनहीं। इसत्रैकालिकअत्यंताऽभावकेनिश्चयकोही बुद्धिमानोंनेबाधकहाहै। अबइसीअर्थको विस्तारपूर्वकनिरूपणकरतेहै ॥ जैसेशुद्धशुक्तितथा रज्जुरूपअधिष्ठानमें रजततथासर्परूप विपरीतअर्थको कल्पनाकरके प्रवृत्तहुएपुरुषको तथानिवृत्तहुए पुरुषकोजोअधिष्ठानको विषयकरने वालाज्ञानबाधका जनकपरोक्षरूपअथवा अपरोक्षरूपउत्पन्नहोताहै। यहांयहअर्थजानलेना। जहांपरोक्षभ्रमहोतहांपरोक्ष अधिष्ठानकाज्ञान

उत्पन्नहोताहै। औरजहांअपरोक्षभ्रमहोतहांअपरोक्षअधिष्ठानकाज्ञान उत्पन्नहोताहै।तिसअधिष्ठानकेसाक्षात्कारसेअनन्तरयहअध्यस्तरजतादि इसशुक्त्यादिरूप अधिष्ठानमें कालत्रयमेंभी नहींहैं इसप्रकारका जो निश्चय वहीबाधकहाजाताहै। यहसर्वलोकोंमें प्रसिद्धहै । तैसे अधिकारिपुरुषको "मैंब्रह्महूं"इसप्रकारकाअधिष्ठानकासाक्षात्कारहोने सेअनन्तर अज्ञानतत्कार्यरूप अध्यस्तपदार्थ मुझब्रह्मात्मामेंतीनकाल मेंभीनहीं हैं । इसीनिश्चयको बुद्धिमानबाधकहतेहैं। यहविद्वानोंके अनुभवसिद्धहै । यातेअज्ञानतत्कार्यका बाधसंभवताहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन् बाधकाविषयजोबाध्य वहअनिर्वचनीयहै यहआपका मतहै ॥ सोयहबाधकीविषयतापूर्वउक्त अन्यथाख्यातिवादीके मतमेंकांताकरादिगत सत्यरजतमेंभीप्राप्तहै । जिसकारणसेवहरजत भीकालत्रयमें पुरोवर्त्तिशुक्तिके खंडमेंनहीं । इसप्रकारके निश्चयका विषयहै ॥ यातेपूर्वउक्तबाधकालक्षणदुष्टहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् अन्यथाख्यातिवादीकेमतमें भ्रमकाविषयजोरजतादिहैं वहकांता करादिस्थलमेंसत्यहैं। औरहमारेमतमें तोजिसअधिष्ठानमें वहरजता दिअध्यस्तहैंतहांही वहअधिष्ठानरूपताकरसतहैं स्वतंत्ररूपताकर कहींभीसत्नहीं यातेअधिष्ठानसेभिन्नरूपताकर त्रैकालिक तिनका अभावहै । यहविलक्षणताउनकेमतसे हमारेमतमें है। यातेपूर्वउक्त बाधकालक्षणनिर्दोषहै ॥ औरअध्यस्तपदार्थका त्रैकालिकअभावहै इसनिश्चयकोबाधरूपता मानेहुए ॥

❀ प्रतिपन्नोपाधौ त्रैकालिक निषेधप्रतियोगित्वं अनिर्वचनीयत्वम् ।❀

अ०॥भ्रमसिद्धपदार्थकेअधिष्ठानमेंअध्यस्तकोत्रैकालिकनिषेध कीजोप्रतियोगिताहै। यहीअनिर्वचनीयताहै॥ ऐसाअनिर्वचनीय कालक्षणजोसंप्रदायके जाननेवालोंनेकहाहै॥ वहभीसमीचीनता कोंप्राप्तहोताहै॥ शंका॥ अध्यस्तपदार्थको अधिष्ठानकेसाक्षात्कार सेअनंतर निषेधका प्रतियोगीहुएभी वर्तमानकालमें औभूतकालमें विद्यमानहोनेसे त्रैकालिकनिषेधप्रतियोगित्वको अनिर्वचनीयत्वहै यहअनिर्वचनीयकालक्षण असंभवदोषवालाहै क्योंकिलक्ष्यमात्रमें वृत्तिनहीं॥ समाधान॥ हेवादिन् अध्यस्तपदार्थ जैसे बाधसे उत्तर कालमें असत्है। तैसे बाधसेपूर्वभी वह असत्है॥ याते लक्षण असंभवदोषवाला नहीं इसवास्ते तुमको अनिर्वचनीय काज्ञाननहींहै। क्योंकिकदाचित्कहोनेवाले पदार्थको अनिर्वचनीय नहींकहते जिसकारणसे यहलक्षणअतिव्याप्तिदोषवालाहै। यद्यपि वेदांतसिद्धांतमें घटादिपदार्थभी अनिर्वचनीयहीहैं। यातेतिनमें अतिव्याप्तिनहीं। तथापिअन्यवादियोंका इसअर्थमें विवादहोनेकर प्रतिवादियोंको अभिमतमतघटादिकोंमें पूर्वउक्तलक्षणकीअतिव्याप्ति है॥ औरयदिघटादिकोंकी व्यावृत्तिअर्थ ऐसालक्षणकरो कि

आविद्यकत्वेसतिकादाचित्कत्वं अनिर्वचनीयत्वं।

अ०॥ आविद्यक हुआजो कादाचित्क सत्तावाला हो वहअनिर्वचनीयहै। सोयहलक्षणभी नहींसंभवता॥ तथाहि॥ शुक्तिरजतमेंआविद्यकत्वक्या?है। यहविचारकर्तव्यहै। तहांकारणमात्रसे जोउत्पन्नहो तिसकोआविद्यककहतेहो। अथवाज्ञानकरबाधकेयोग्यको आविद्यककहतेहो। प्रथमपक्षतोनहींसंभवता। क्योंकिअविद्याशब्द

सेकारणकाग्रहणकियाहै।तिसेमानेहुएजोकारणसेजन्यहुआकादाचित्क हो वहअनिर्वचनीयहै। यहलक्षणकाअर्थसिद्धहोगा। तिसकारणसे पुनःघटादिकोंमें।अतिव्याप्तिपूर्वकीन्याईहीस्थितहै।क्योंकिघटादिभी कारणजन्यहुए कादाचित्कहैं। परन्तुवहअनिर्वचनीयनहीं। और द्वितीयपक्षभीनहींसंभवता।क्योंकिसत्पदार्थमेंनास्तित्वकाज्ञान असं भवहै।तात्पर्ययहज्ञानकरनिवृत्तिकेयोग्यकोहीज्ञानकरबाध्यताहै।सोसत् पदार्थमेंनहींसंभवती।अन्यथासत्यआत्माकीभी ज्ञानकरनिवृत्तिहुईचा हिये। तिसीकारणसे ज्ञानबाध्यत्वकीअन्यथाऽनुपपत्तिसे वर्तमानतथा अतीतकालमेंभी अध्यस्तपदार्थस्वरूपसेहीअसत्है। इसप्रकारअधि ष्ठानमेंत्रैकालिकनिषेधकाजोप्रतियोगिपनाहै यहीअनिर्वचनीयपनाहै यहलक्षणनिर्दोषहै ॥ इति ॥ शंका ॥ बाधरूपनिश्चयक्या?आत्म स्वरूपहै अथवाआत्मासेभिन्नहै। प्रथमपक्षमानो तोकिसीकोभीसंसार कादर्शननहींहोगा।क्योंकिआत्मस्वरूपबाधकोस्वतःसिद्धहोनेकरभ्रम सिद्धपदार्थकाकिसीकोभी भाननहींसंभवेगा। औरद्वितीयपक्षमेंभी यहविचारकर्तव्यहै।क्या?वहबाध आत्मासेभिन्न बाधकेयोग्यहै अथवा आत्माकीन्याईसत्यरूपहै ॥ यदि प्रथमपक्षकहो तोतिसमेंभी यह विचारकर्तव्य है अपनाबाधआपही है अथवाबाधांतरहै। प्रथम पक्षमें तोआत्माश्रयदोषस्पष्टहै। औरद्वितीयपक्षमेंअन्योऽन्याश्रयादि दोषोंकीप्राप्तिहोगी। यातेआत्मासेभिन्नवहबाध बाधकेयोग्यहै। यह प्रथमपक्षनहींसंभवता। औरआत्मासेभिन्न वहबाधसत्है। यदियह द्वितीयपक्षकहो तोअद्वैतसिद्धांतकी हानिहोगी। इसलिये "सकल कार्यकारणरूपजगत्ब्रह्मात्मामेंनहींहै" इत्याकारकबाधरूपनिश्चयका

कोईअन्यबाधअवश्य अन्वेपणाकरनेयोग्यहै।।तैसेमानेहुए अनवस्था दि दोषप्राप्तहोंगे।यातेपूर्वउक्तबाधकास्वरूप नहींसंभवता।। समाधान।। हेवादिन्ब्रह्मसे भिन्नसकलअनात्माका जोबाधरूपनिश्चयहै।तिसको अपनेअन्तर्भावरूपताकरहीबाधपनाहै अर्थयहब्रह्ममेंकल्पितसर्वअज्ञान तत्कार्य तीनोंकालमेंनहींहै इसनिश्चयकेदोरूपहैं ।। एकबाधरूपहै औरदूसराकल्पितरूपहै।।इसप्रकारअध्यस्तरूपतासे तिसकोस्वविषयत्व है। औरबाधरूपतासेतिसकोविपयिपनाहै ।। यातेआत्माश्रयदोपकी प्राप्तिनहींहोती।।औरतैसेमानेहुए अद्वैतकीभीहानिनहींहोती।।क्योंकि आत्मासेभिन्नकोईवस्तुनहीं ।। यातेपूर्वउक्तबाधकास्वरूपसंभवताहै ।। इति ।। शंका ।। बाधकेयोग्यजोप्रपंचहै वहब्रह्मसेभिन्नसत्है। अथवा असत्है ।। प्रथमपक्षकहो तोआत्माकीन्याईतिसकीनिवृत्तिनहींहोगी क्योंकिसत्पदार्थकाअभावसकलप्रमाणसेविरुद्धहै ।। औरद्वितीयपक्ष कहो तोतिसअसत्जगत्केअभावका उद्देशकरके ज्ञानादिकसाधनों में कोईभीपुरुपप्रवृत्तनहींहोगा।।क्योंकिअसत्काअभावस्वतःसिद्धहै और

❀ परस्परविरोधेनप्रकारांतरास्थितिः ❀

इसन्यायसेसत्असत्सेविलक्षणकोईअन्यप्रकारभीनहींसंभवता ।। समाधान ।। हेवादिन्इनविकल्पोंकायहांअवकाशनहीं ।। क्योंकि (सतोपिजनिर्नच) इत्यादिकारिकाकेव्याख्यानमें इनविकल्पोंका परिहारअनेकवारकरआएहैं । भावयह कियहदृश्यमानजगत्प्रथमसत् रूपतोहैनहीं।क्योंकि "नेतिनेति" इत्यादिश्रुतियोंने तिसकाबाधकहा है । औरयहजगत्असत्भीनहीं क्योंकिअपरोक्षभानहोताहै।। तिसी कारणसेप्रतीतिऔरबाधकीअन्यप्रकारसेअनुपपत्तिहोनेकरब्रह्मसेभिन्न

सकलअनात्मप्रपंचसत्असतसेविलक्षणअनिर्वचनीयस्वरूपहै॥ और श्रुतिकाविरोधहोनेकरपूर्वउक्तन्यायकोआभासरूपताहै॥ यातेपूर्वउक्त तुम्हारेविकल्पयहांनहींप्राप्तहोसकते ॥ इति ॥

॥ अथपूर्वपक्ष ॥ संक्षेपसेअन्यख्यातियोंकेस्वरूपप्रदर्शनपूर्वकअनिर्वचनीयख्यातिकाखंडन ॥

हेसिद्धांतिन्‌अभेदव्यवहारकासंपादकतथास्मृतिज्ञानसेजिसका भेदग्रहणनहींहुआ ऐसाजो "इदंरजतम्" यहसामान्यप्रत्यक्षज्ञानहै। वहीभ्रमरूपतासे कथनकियाजाताहै॥ तिसभ्रमकाविषयरजतअनिर्वचनीयनहीं।क्योंकिसामान्यप्रत्यक्षज्ञानकाविषय पुरोवर्तिशुक्तिका जो इदमंशहै वहसतहै। तथास्मृतिज्ञानकाविषय जोदेशांतरमेंस्थितरजत वहभीसतहै॥औरतैसेही "नेदंरजतम्"यहबाधज्ञानभी अभेदव्यवहार मात्रकाही बाधकरताहै ॥ कोईभ्रमकेविषयका त्रैकालिकअभावनहीं बोधनकरता ॥ इसप्रकारअख्यातिवादीमानतेहैं॥ यातेअनिर्वचनीय काबाधहोताहै यहआपकैसेकथनकरतेहो ॥ औरआत्मख्यातिवादी भीरजतकोअनिर्वचनीयनहींकहते। किंतुइंद्रियकेसंबंधसेविनारजतका प्रत्यक्षहोताहै । यातेबुद्धिरूपताकरअंतरस्थितजोरजतहै तिसकीबाह्य रूपतासे जोप्रतीतिहै इसीकोभ्रमकहतेहैं । और "नेदंरजतम्" यह बाधज्ञानभीरजतके असत्वकोनहींबोधनकरता ॥ किंतुतिसबुद्धिरूप रजतमेंइदंताकादूसरानाम जोबाह्यपनाहै तिसकानिषेधकरताहै । क्योंकिरजतरूपधर्मीके निषेधकीअपेक्षासेबाह्यतारूपधर्ममात्रकेनिषेध मेंलाघवहै । इसप्रकारआत्मख्यातिवादीबोधकहतेहैं ॥ औरअनादि वासनासेभ्रमकालमेंअसत्‌हीरजतभासताहै।ऐसेकथनकरनेवालेअसत

ख्यातिवादी भी अनिर्वचनीयरजत नहीं मानते। किंतु निःस्वरूप असत्ही रजत असत्प्रकाशकी सामर्थ्यवाले ज्ञानसे भासता है। और इसी कारण से "नेदंरजतम्" यह बाध भी रजतके असत्वको ही बोधन करता है। इस प्रकारपूर्व उक्तरीतिसे ब्रह्मसे भिन्न सर्व जगत् अनिर्वचनीय है। यह सिद्धांती का कथन ही अनिर्वचनीय है अर्थात् नहीं संभवता ॥इति॥

❀ अख्यातिवादादिकोंके खंडनपूर्वक अनिर्वचनीय ख्यातिका स्थापन तथा बाधका उपसंहार। ❀

समाधान ॥ हे वादिन् अख्यातिवादादिक तीन मतोंमें भ्रम तथा बाधकी व्यवस्था नहीं संभवती यह अन्यथाख्यातिवादीने पूर्वनिरूपण कियाहै। इसी अर्थको स्पष्ट करते हैं ॥ अख्यातिवादमें प्रथम सामान्यप्रत्यक्ष ज्ञानही स्मृतिसे अगृहीत भेदवाला हुआ बाधके योग्य अभेदव्यवहारका संपादक होनेकर भ्रम कहा जाताहै॥ सो नहीं संभवता क्योंकि सामान्यप्रत्यक्षज्ञान तथा स्मृतिज्ञान यह दोनों भान होते हैं वा नहीं। यदि अन्त्यपक्ष कहो तो दोनों नहीं होंगे। क्योंकि तुम्हारे मतमें ज्ञानको स्वप्रकाश होनेकर अभानकालमें स्वरूपाभावका नियम है। अर्थात् जब वह भान नहीं होते तो वह स्वरूपसे भी नहीं होंगे ॥ और यदि प्रथमपक्ष कहो तो तिनके भेदका अग्रहण कैसे होगा। क्योंकि भेद तो तिनका स्वरूपही है। स्वरूपभानकालमें तिनका भेद अवश्यही ग्रहण होजायेगा। इसी कारणसे तिस ज्ञानको अभेदव्यवहारका आपादकपना नहीं संभवता तिसीसे तिस ज्ञानमें भ्रमरूपताका स्थापन भी नहीं संभवता। और तैसेही जो पूर्व बाधकी व्यवस्था कीथी वह भी नहीं संभवती। क्योंकि जहां वीतरागपुरुषको व्यवहारही नहीं उदय होता तहां "नेदंरजतम्"

-इसज्ञानकोबाधकपनाही नहींहोगा। यातेअख्यातिवादमें भ्रमतथा बाधकीव्यवस्थाकाअसंभवहै। औरआत्मख्यातिवादमेंभी यहविचार कर्तव्यहै॥क्या?ज्ञानाकारताबाह्यपदार्थमेंअध्यस्तहै।अथवाज्ञानस्वरूप रजतमें बाह्यताअध्यस्तहै॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता क्योंकिक्षणिक विज्ञानवादी बौधकेमतमें बाह्यपदार्थअलीकहै। तिसकोअसत् होनेकर अधिष्ठानताकाअसंभवहै। औरयदिअसत्कोहीअधिष्ठान मानलेंतो "इदंरजतमसत्" यहभ्रमकाआकारहुआचाहिये क्योंकि अध्यस्तपदार्थअधिष्ठानसे अन्वितहीप्रतीतहोताहै॥ शंका॥ सत् रजतहै ऐसीप्रतीतिका अभावहोनेसे असतहीरजत क्योंनहो॥ समाधान॥ हेवादिन्जबतुमरजतको असत्मानोगे तोरजतार्थीपुरुष कीप्रवृत्तिनहींहोगी। क्योंकिवहरजतनिःस्वरूपहै॥ औरयदिरजत में बाह्यताकाआरोपहै। यहद्वितीयपक्षकहो तोयहभीनहींसंभवता॥ क्योंकितिसबाह्यताकोभी असत्होनेकर तिसकोविषय करनेवालेज्ञान निष्ठअपरोक्षता नहींहोगी॥ औरअसत्ख्यातिवादभी तुम्हारेमत मेंप्राप्तहोगा। औररजतअन्तरविज्ञानस्वरूपहै इसमें प्रमाणकाभी अभावहै। औरयदिऐसेकहोकि "नेदंरजतम्" यहबाधरूपप्रत्ययही लाघवसहकृतहुआ रजतकीबाह्यताका निषेधकरके अर्थसेतिसकी अन्तररूपताअर्थात् विज्ञानरूपताकोबोधनकरताहै॥ यातेरजतकी बुद्धिरूपतामें यहबाधप्रत्ययही प्रमाणहै। सोयहकथन भीसमी चीननहीं। क्योंकि "इदंता" नामसमीपताकाहै॥ वहजबरजत मेंनिषेधकीगई तोरजतमें असमीपताही प्राप्तहोगी। तिस असन्निहित रजतको अतिसन्निहित विज्ञानरूपतातो कबहो

सक्तीहै ॥ औरइन्द्रिय संबंधसेविनाही तिसरजतकोप्रत्यक्ष होनेकर तिसकोविज्ञानरूपताहै । यहकथनभीनहींसंभवता । क्योंकिदोषके वशसेदेशांतरवर्तिरजतकाहीइंद्रियकेसाथसंबंधसंभवताहै।याते "इंद्रिय संबंधसेविना" यहप्रत्यक्षकाविशेषण असिद्धहै । औरयहजोआत्म ख्यातिवादीनेकहाथा कि "नेदंरजतम्" यहबाधप्रत्ययरजतमेंबाह्य तारूपइदंताकोनिषेधकरताहै रजतकोनिषेधनहींकरता ॥ सोयहतिस काकथनभीसमीचीननहीं। क्योंकिबाधप्रत्ययइदंतातथारजतइनदोनों कोनहींनिषेधकरता किंतुइदंताऔररजतकेतादात्म्यको निषेधकरताहै तिसतादात्म्यकेनिषेधकियेहुएइदंताको तोपुरोवर्तिमेंवहबाधप्रत्ययस्था पनकरताहै । औररजतको अथवारजतत्वको देशांतरमें अथवारजत मेंस्थापनकरताहै यातेआत्मख्यातिवादीके मतमें भ्रमतथाबाधकीव्य वस्थानहींसंभवती । औरअसतख्यातिवादमेंजोयहकहाथा किअसत् केप्रकाशनमेंसमर्थज्ञान असत्रजतकोहीप्रकाशकरताहैसोयहकथनभी नहींसंभवता । क्योंकिअसत्कीअपरोक्षप्रतीतिनहींसंभवती । और ज्ञानकिसअर्थकेप्रकाशनमेंसमर्थहै ऐसाप्रश्नकरनेसेसामर्थ्यको विषय कीअपेक्षाहै ॥ औरवहअसत्विषयकार्य है अथवाज्ञाप्यहैऐसेविकल्पों कोनहींसहनकरता। तात्पर्य्ययहअसत्विषयकोयदिज्ञानकाकार्यमानें तोअसत्वंध्यापुत्रकीभीज्ञानसे उत्पत्तिहुईचाहिये क्योंकिज्ञानमेंअसत् वस्तुकेउत्पादनकासामर्थ्य है । औरयदिअसत्विषयकोज्ञाप्यमाने तो असतवंध्यापुत्रकाभीज्ञानसेप्रकाशहुआचाहिये । इत्यादिविकल्पोंके नसहनकरनेसेअसतख्यातिवादभीअसंगतहै । यद्यपि "नेदंरजतम्" यहबाधप्रत्ययरजतकेअसत्पनेकोहीबोधनकरताहै तथापिपूर्वआत्म

ख्यातिवादकेनिराकरणमें अन्यथाख्यातिवादीकेमतानुसारतिसबाधप्रत्यक्षका परिहारकरआएहैं। अर्थातबाधज्ञान इदंतातथारजतकेतादात्म्यकोनिषेधकरताहै रजतकेअसत्वको वहनहींबोधनकरता। तिसकारणसेभ्रमस्थलमें औरकोईख्यातिनहींसंभवती।यातेब्रह्मसेभिन्नसकलजगत् अनिर्वचनीयहै॥ यहअर्थसिद्धहुआ ॥ शंका ॥ यदिअन्यथाख्यातिवादीने अन्यख्यातियोंका निराकरणकिया तिसमेंआपको क्यालाभ होगा उलटाअन्यथाख्यातिवादतुमनेस्वीकारकरलिया॥समाधान ॥ हेवादिन् अन्यथाख्यातिवादीकीरीतिसे इतरख्यातियोंका निराकरण सिद्धहोनेकर पुनःतिनका निराकरणकरना युक्तनहीं । औरसाक्षात् आत्मविचारकाभी तिनकेनिराकरणमें अभावहोनेकर तिनकेनिषेधमें यत्ननहींकिया । औरअन्यथाख्यातिवादकाभी स्वीकारनहींकिया । क्योंकिपूर्व तिसकाभी निषेधकरआएहैं । इसप्रकारअधिष्ठानके साक्षात्कारसेंअनंतर अनिर्वचनीयपदार्थका त्रैकालिकअत्यंताभाव निश्चयबाधहै । यहअर्थसर्वदोषरहित सिद्धहुआ ॥ इसीअर्थको सुरेश्वराचार्योंकेवचनसे दृढकरतेहैं ॥

❀ तत्त्वमस्यादि वाक्योत्थसम्यग्धीजन्ममात्रतः ।
अविद्यासहकार्य्येण नासीदस्तिभविष्यति ॥१॥❀

अ० ॥ तत्त्वमस्यादिमहावाक्यसे उत्पन्नहुआजोदृढ अपरोक्षबोधहै तिसकीउत्पत्तिमात्रसेही कार्यकेसहितअविद्या नपूर्वथी औरनअबहै औरनआगेहोगी । इसश्लोकमें "नासीत्" इसकथनसे अधिष्ठान केसाक्षात्कारसे अनंतर जगतकात्रैकालिक अत्यंताऽभावहीप्रतीत होताहै । यातेत्रैकालिक अत्यंताऽभावकी प्रतीतिहीबाधहै। अविद्या

कीनिवृत्तिबाधनहीं ॥ इति ॥ (४०) अबइसीअर्थको दृढकरनेकेलिये पूर्वपक्षनिरूपण करतेहैं ॥

❋ अथपूर्वपक्ष ❋ विद्याऔअविद्याके विरोध का असंभवनिरूपण॥ ❋

हेसिद्धांतिन् अधिष्ठानके साक्षात्कारकोअविद्याकाबाधकपना आपकैसेकहतेहो।औरयदि तिनकाविरोधहोनेसे विद्याकोअविद्याकी बाधकताआपकहोतोवहकौनविरोधहैतिसकोआपनिरूपणकरो।इसी अर्थकोपूर्वपक्षीविकल्पोंद्वारा स्पष्टकरताहै । क्याविद्यातथाअविद्या काजोएककालमें अनवस्थितपनाहै यहही तिनका परस्परविरोधहै । अथवाएकदेशमें अनवस्थितपनारूपविरोधहै । अथवाबध्यघातक भावविरोधहै अथवाभावाभावरूपविरोधहै । इनमेंप्रथमपक्षतोनहीं संभवता । क्योंकिपूर्वकालमें होनेवालीअविद्याकेसाथ विद्याकी एक कालमें अवस्थिति है ॥ शंका ॥ " पूर्वभावित्व " यह विशेषण पदार्थोंके एककालमें अवस्थानकासाधकनहीं । क्योंकि घटसेपूर्वकालमें होनेवालाजोघटप्रागभावहै तिसकेसाथएककालमें घटकीअवस्थितिनहींहै ॥ समाधान ॥ घटकोप्रागभावकीनिवृत्ति रूपताहोनेसेतिनकीएककालमेंस्थितिनहींसंभवती। क्योंकिप्रतियोगीऔ तिसका प्रागभाव एककालमेंनहीं रहसकते॥ औरअविद्याकीनिवृत्ति तोविद्याजन्यहै यातेअविद्याकीनिवृत्तिकोविद्यासे उत्तरकालमेंहोनेकर विद्यातथाअविद्याकी एककालमें अवस्थिति परिहारकरनेयोग्यही नहीं ॥ शंका ॥ विद्या अविद्याकोक्योंनिवृत्तकरेगी क्योंकितिसको प्रमेयकाप्रकाशकहोनेकर अविद्याकीनिवृत्तिसे विनाहीतिसकीसफल

ताहै॥ समाधान ॥ विद्यासे यदिअविद्याकीनिवृत्तिनहीं मानेंगे तो विद्याकोव्यर्थापत्तिहोगी।क्योंकिप्रमेयकोस्वप्रकाशहोनेकरतिसकाप्रकाश विद्यासेनहींसंभवता । यातेविद्यातथाअविद्याकाएक कालमेंसहअन वस्थानरूपविरोधनहींसंभवता।औरद्वितीयपक्षभीअसंगतहै।क्योंकिभिन्न भिन्नअधिकरणमें स्थितविद्यातथाअविद्याके विरोधकाअभावहै ॥ तिनकाविरोधसिद्धकरनेकेलिये तिनकीएकअधिकरणता अवश्य कहनेयोग्यहै । यातेएकदेशमें अनवस्थितपनारूप विरोधभीनहीं संभवता ॥ औरतृतीयपक्षमें यहविचारकरनेयोग्यहै । किवहवध्य रूपअविद्याकाघातक्याहै । जिसकाकर्त्ताहोनेसे विद्याकोघातकपना कहतेहो।यदिऐसेकहोध्वंसकानामघातहै तिसकेकर्त्ताकोघातककहतेहैं तोइसमेंभीयहविचारणीयहै।क्यावहध्वंसवध्यरूपअविद्यासेभिन्नकोईस्व तंत्रपदार्थहै।इसीपक्षकोस्पष्टकरतेहैं।प्रथमयहध्वंसवध्यरूपअविद्यासेजन्य तोहैनहीं।क्योंकिवहतिससेभिन्नहैऔरभिन्नपदार्थोंकाकार्यकारणभावनहीं संभवतायद्यपिजैसेघटसेभिन्ननिमित्तकारणदंडादिकघटकेजनकहैं।तैसे भिन्नध्वंसकोभीप्रतियोगिरूपतासेवध्यउत्पन्नकरदेगा।तथापि कल्पित प्रतियोगिकध्वंसकोभी कल्पितहोनेकर मुक्तिकोभीकल्पितपनाहोगा। क्योंकि अविद्याकेध्वंसकानामहीमुक्तिहै । औरयदितिसध्वंसकोअक ल्पितमाने तोद्वैतापत्तिहोगी॥औरअविद्याकेज्ञानाऽधीन तिसध्वंसका ज्ञानहोताहै यहभीनहींसंभवता ॥ क्योंकिअविद्याकीनिवृत्तिकालमें प्रमातृत्वादिकोंकाअभावहोनेसे तिसविषयकजन्यज्ञानही असिद्धहै॥ तिसकारणसेसर्व प्रकारअविद्यासे संबंधकाअभावहोनेकर ध्वंसस्वतंत्र हीकोईपदार्थहै ॥ अथवाभिन्नहुआभी स्वतंत्रनहीं किंतुतिसवध्यका

धर्महै ॥ अथवातिसवध्यकास्वरूपहै ॥ प्रथमस्वतंत्रपक्षमाने तोवध्य रूपअविद्याकाध्वंसनहींहोगा ॥ क्योंकिहिमगिरि तथाविंध्यगिरिकी न्याईपरस्पर तिनकाअसंबंधहै । यातेवहध्वंसअविद्याकानहींहोगा । औरद्वितीयपक्षकहो तोधर्मस्वस्थितिकेअर्थ अपनेधर्मीकीदीर्घआयु कीवांछाकरताहै । अन्यथा निराश्रयहुआधर्म कहां स्थितहोगा। यातेद्वितीयपक्षभीअसंगतहै । औरतृतीयपक्षमेंतो विद्या अविद्याका उत्पादकहीहोजायेगी विरोधतिनकाकिसहेतुसेहोगा । यातेतृतीय पक्षभीनहींसंभवता । और चतुर्थपक्षभीअयुक्तहै । क्योंकिविद्या तथाअविद्यायहदोनों भावरूपहैं । औरअविद्याकीप्रागभावरूपतापूर्व निषेधकरआएहैं । अन्यथातिनकीएककालमें सहस्थितिनहींहोगी। इसप्रकारविद्यातथाअविद्याका विरोधकथनकरनेकेअयोग्यहै । इसी सेविद्याअविद्याकाबाधकहै यहकथननहींसंभवता ॥किंवा विद्या तथा अवि केविरोधकीतुल्यताहोनेसेविपरीतहीक्योंनहोअर्थातविद्याहीबाध केयोग्यहो क्योंकिविद्याबाधकहीहैइसनियममेंप्रमाणकाअभावहै। इति

* अथसिद्धांत॥ विद्यातथाअविद्याका उपमर्द्य उपमर्दकभावलक्षण विरोधनिरूपण *

विद्यातथाअविद्याका कौनविरोधहै । इसप्रकारकाप्रश्नहुएविरोध कोनिरूपणकरनेके लियेप्रथमसिद्धांतीविरोधकेकार्यको कथनकरताहै।

मू०॥उपमर्द्यस्वभावत्वमविद्यायाविरोधिता । तत्कर्तृत्वंतुविद्यायायाः प्रकाशतमसोरिव॥४१॥

रोलाछंद ॥ उपमर्द्यस्वभाव कह्योताकोसुनभाई ।
अविद्यामाहि विरोधिपनो यहहैअनुमाई ॥

तत्कर्तृत्वविरोधि पनोविद्यामें आई ।
तमप्रकाशविरोध यथासबजनजगगाई ॥ ३६ ॥

टी० ॥ यद्यपिविद्यातथाअविद्याकाकोई अन्यप्रकारकाविरोध यहांनिरूपणनहींहोसकता। तथापिउपमर्द्यउपमर्दकभावलक्षणविरोध तिनदोनोंकानिरूपणहोसकताहै। अर्थयहउपमर्द्यउपमर्दकभावविरोधका कार्यहैतिसकरकारणरूपविरोधकाअनुमानकियाजाताहैक्योंकिकार्यसे कारणकाअनुमानहोताहै॥औरअविद्याउपमर्दनकरनेके योग्यहीहै ॥ क्योंकिअविद्याकाउपमर्दकत्वरूप जोविद्याकास्वभावहैवहअन्वयव्यतिरेकसेलोकमेंप्रसिद्धहै ॥ अर्थात्विद्याकेहुएअविद्यानहींरहती॥ जैसे "यहशुक्तिहै"इसप्रकारकीशुक्तिविद्याकेहुए अविद्याकाबाधहोताहै ॥ अर्थात्इसशुक्तिमेंअविद्या औरतिसकाकार्यरजततीनकालमेंनहींथे॥ औरशुक्तिविद्याकेअभावहुएशुक्तिविषयकआवरण तथाअन्यप्रकारसे अर्थात्रजतरूपताकरप्रतीतिप्रसिद्धहै ॥ इसप्रकारकेअन्वयव्यतिरेकसे अविद्याहीउपमर्द्यस्वभाववालीहै॥ यहलोकप्रसिद्धिसेकल्पनाकीजाती है ॥ यहांयहअनुमानभीजानना ॥

विमताविद्योपमर्द्याअविद्यात्वात्शुक्त्यविद्यावत्

अ० ॥ विवादकाविषयजोअविद्याहै सोउपमर्द्यस्वभाववाली है ॥ अविद्यारूपहोनेसे जोजोअविद्याहोतीहै॥ सोसोउपमर्द्यस्वभाव वालीहोतीहै जैसेशुक्तिविषयकअविद्याहै ॥ इति ॥ इसअनुमानमें अविद्याउपमर्द्यस्वभाववालीहै यहसाध्यहै । तिसकाअभावरूपविपक्ष अर्थात्अविद्याउपमर्द्यस्वभाववालीनहीं ऐसाविपक्षमाननेमेंबाधकके कथनद्वाराअन्वयव्यतिरेकसिद्धतिनदोनोंकेउपमर्द्यउपमर्दकस्वभावको

दृढकरनेकेलियेविपरीतपनेकीभासिरूपपूर्वपक्षको अनुवादकरकेसिद्धांतीनिराकरणकरताहै ॥ औरपूर्वपक्षीनेजोपूर्वपहकहाथा॥ किविरोधिपनातुल्यहोनेसे अविद्याहीविद्याका उपमर्दकक्योंनहो सोयहकथनभी नहींसंभवता ॥ क्योंकिअविद्याकोविद्याकाउपमर्दकमानेहुएविद्याकी उत्पत्तिहीनहींहोगी ॥ क्योंकिउपमर्दकरूपअविद्याप्रथमहीस्थितहै ॥ यातेविद्याकीउत्पत्तिनहोनी यहीविपक्षमाननेमेंबाधकहै ॥ विद्याही अविद्याकाउपमर्दकहै इसीअर्थमें औरहेतुकहतेहैं ॥ प्रतिनियतस्वभाववालेपदार्थोंमें (पर्य्यनुयोग) यहविपरीतहीक्योंनहो ऐसाकथन नहींकरसकते ॥ जैसेप्रकाशतथातमकाजोप्रतिनियतस्वभावहै उसमें विपरीतस्वभावकीआशंकासंभवतीहीनहीं क्योंकिदृष्टविरोधप्राप्तहोता है । यातेविद्याहीअविद्याकाउपमर्दकहै यहअर्थसिद्धहुआ ॥ इति ॥ शंका ॥ उपमर्दअविद्यासेभिन्नस्वतंत्रपदार्थहै अथवातिसकाधर्म है । इत्यादिविकल्पोंकीप्राप्तिव्यघातकपक्षकीन्याई इसपक्षमेंभीतुल्यहीहोगी॥ समाधान ॥ हेवादिन्व्यघातकपक्षमेंकथनकीए हुएदोषोंकी प्राप्ति इसपक्षमेनहींहोसकती॥ क्योंकि ॥

❀ ब्रह्मात्मनिसाविलासाऽविद्याकालत्रयेऽपिनास्ति ❀

अ० ॥ ब्रह्मात्मामेकार्यसहितअविद्याकालत्रयमेंभीनहींहै । इसनिश्चयकानामबाधका अपरपर्य्यायउपमर्दहै । तिसकोस्वविषयके अबाधितपनेकरप्रमारूपताहै ॥ शंका ॥ यदिअविद्यानहींनिवृत्त होतीतोब्रह्मात्माकासाक्षात्कारनिष्फलहोगा।क्योंकिअविद्याकीनिवृत्ति सेविनाअन्यतिसकाफलकोईप्रतीतनहींहोता॥ समाधान ॥ हेवादिन् ब्रह्मसाक्षात्कारकाबाधरूप उपमर्दहीफलहै। अविद्याकीनिवृत्तितिसका

फलनहीं॥ क्योंकिअधिष्ठानसेभिन्नकरकेअविद्यातत्कार्यकोअसत्होने करतिसकी निवृत्तिकरनेकेअयोग्यहै। याते विद्यासेउत्तरकालमेंउत्पन्न होनेसे बाधहीतिसकाफलहै ॥ इसकारणसेविद्याकीनिष्फलतानहीं॥ शंका ॥ हेसिद्धान्तिन् उपमर्दकोज्ञानरूपमानेहुए तिसज्ञानरूपबाध काकौनविषयहै । क्योंकिविषयसेविनाकोई ज्ञाननहींहोता। औरयदि अविद्यादिकोंका त्रैकालिकअत्यंताभावहीतिसबाधकाविषयआपकहो तोतिसमेंयहविचार कर्तव्यहै क्यावह अत्यंताऽभावअसत्है।अथवासत् हैप्रथमपक्षकहोतोतिसअत्यंताऽभावकेप्रतियोगिरूप अज्ञानादिकोंको सत्पनेकीप्राप्तिहोगी । औरद्वितीयपक्षमेंभी यहविचारणीयहै क्या वहसत्रूपअत्यंताऽभाव आत्मासेभिन्नहै । अथवाअभिन्नहै । प्रथम पक्षमेंतोद्वैतकीप्राप्ति होनेसे अद्वैतश्रुतिकाविरोधप्राप्तहोगा । और द्वितीयपक्षमेंवहबाधअधिष्ठानका साक्षात्कारहीहै । उससेभिन्ननहीं यातेबाधऔविद्याकाजन्यजनकभाव नहींसंभवेगा । इसप्रकारबाध काविषयकोईनहींसंभवता ॥ समाधान ॥ हेवादिन् वृत्तिरूपसाक्षा त्कारउपाधिउपहित आत्माकास्वरूपही त्रैकालिकअत्यंताभावरूपहै औरतिससाक्षात्काररूप शुद्धउपाधिसे कार्यसहितअविद्या ब्रह्मात्मामें कालत्रयमेंभीनहीं"इसप्रकारकाज्ञानआत्माविषयक उत्पन्नहोताहै।याते पूर्वउक्तबाधका विषयसंभवताहै । इसमेंकोईदोषनहीं । औरयदिऐसे कहोकियहपक्षसंप्रदायकेजाननेवालोंमेंसे किसीनेभीस्वीकारनहींकिया सोयहकथनभीनहींसंभवता। क्योंकिवार्त्तिककारोंकी संमतिपूर्वककथन करआएहैं । औरविवरणाचार्योंनेभी यहीपक्षदिखलायाहै । तथाहि उन्होंनेयहकहाहै । "प्रसिद्धअधिष्ठानशुक्त्यादिकोंमें रजतादिकों

केअभावकोबाधबोधनकरताहै।इसप्रकारप्रसिद्धअधिष्ठानमेंअभावप्रति योगित्वहीमिथ्यात्वहै । इसकथनसेयहीपक्षतिन्होने स्वीकारकियाहै। यदिविवरणाचार्योंकोयहपक्षस्वीकारनहोता । तोरजतकेअभावको बाधबोधनकरताहै । यहकैसेकथनकरते । औरतत्त्वदीपनाचार्यतिस अभावपदकोत्रैकालिक अभावपरताकरकेसे व्याख्यानकरते । तिस कारणसेसंप्रदायके जाननेवालोंने यहपक्षअवश्यस्वीकारकियाहै । यातेयहपक्षअसांप्रदायिकनहीं । यहसिद्धहुआ इति ॥ ४१ ॥

* अथपूर्वपक्ष ॥ जीवन्मुक्तिकेअभावप्रतिपादन द्वारासंप्रदायकालोपनिरूपण । *

शंका ॥ हेसिद्धांतिन् विद्याकोअविद्याका उपमर्दकपनायुक्त नहीं।क्योंकिजीवन्मुक्तिका अभावप्राप्तहोताहै । तथाहि ॥ यदि विद्याकोअविद्याका उपमर्दकमाने तो विद्वान्कोविद्याकी उत्पत्ति सेअनंतर कार्यसहितअविद्यासमूल विनाशकोप्राप्तहोगी । तिससे तिसीकालमेंविदेह कैवल्यकीप्राप्तिहुए तात्कालिकहीविद्वान्केदेह का पातहोगा ॥ यातेजीवन्मुक्तिका अभावप्राप्तहोगा ॥ शंका ॥ समूलअविद्याकी निवृत्तिहोतीहै। यहकथनहीनहीं संभवता॥क्योंकि अविद्याको अनादि होनेसे तिसकेमूलकी अनुपपत्तिहै । और अधिष्ठानहीअविद्याकामूलहै । यहकथनभीनहींसंभवता । क्योंकि तिसकोएकसत्यरूप होनेकर कल्पितपनेका असंभवहै । औरयदि अधिष्ठानकोभीकल्पित मानलें तोशून्यताकीप्राप्तिहोगी॥ समाधान यहांइसशंकाकीप्राप्तिनहींहोती।क्योंकि "अहम्" इत्याकारकजोअध्या सहै तिसकोअविद्याकहतेहैं।भाष्यकारश्रीशंकराचार्य्योंनेतैसेहीकहाहै॥

❀ तमेतमेवंलक्षणमध्यासंपंडिताअविद्येतिमन्यन्ते ❀

अ०॥ पूर्वजिसमेंआक्षेपकियागया पुनः जिसमेंसमाधानकिया गया।इसप्रकारकेलक्षणवालाजोअध्यासहै। तिसकोवेदांतशास्त्रकेवेता पंडित "अविद्या" मानतेहैं ॥ इति ॥ तिसअध्यासरूपअविद्याका कार्यकर्तृत्वादिहैं। औरतिसअध्यासकामूलमूलाअविद्याहै।यातेसमूल अविद्याकीविद्यासे निवृत्तिहोतीहै यहकथनसंभवताहै ॥ शंका ॥ सकार्यतथासमूलअविद्याकेनाशहोनेसे विदेहमुक्तिसिद्धहोजायेगी॥ फिरजीवन्मुक्तिसे क्याप्रयोजनहै॥ समाधान ॥ तैसेमानेहुएसंप्रदाय काउच्छेदहोगा ॥ क्योंकि "श्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठम्" इसविशेषणसेजिस पुरुषकोसाक्षात्कार उत्पन्नहुआहै तिसकोहीआचार्यपनाहै । और तिसकोतात्कालिकअर्थातज्ञानसमकालहीविदेहकैवल्यकीप्राप्तिहोनेसे ब्रह्मविद्याकाउपदेशकौनकरेगा ॥ औरउपदेशकेअभावहुए ब्रह्मविद्या कीसंप्रदायकैसेप्रवृतहोगी॥ यातेसंप्रदायकाअभावहोनेकर वेदान्तोंको अबोधकतालक्षण अप्रमाणताकीप्राप्तिहोगी ॥ शंका ॥ तत्त्वज्ञानसे उत्तरकालमेंही विद्वान्केदेहकापातहोताहै यहकथनअयुक्तहै ॥ क्यों किदेहकाकारणजोप्रारब्धकर्मकाशेषहै सोविद्यमानहै।औरप्रारब्धकर्म भीतत्त्वज्ञानसे निवृत्तहोजाताहै यहकथनभीनहींसंभवता॥ क्योंकि प्रारब्धकर्मसे ज्ञानकाविरोधनहीं॥ औरप्रारब्धकर्मके आश्रितज्ञानकी उत्पत्तिहोनेकरभी तिसकीनिवृत्तितत्त्वज्ञाननहींकरता॥ यातेप्रारब्धकर्म केवलसेविद्वान्केशरीरकापातनहींहोता।तिससेउपदेशादिसर्वव्यवहार संभवताहै॥ समाधान ॥ यद्यपितत्त्वज्ञानका प्रारब्धकर्मसेविरोधनहीं तथापि वह प्रारब्धकर्म उपादान कारणसे विना तो स्थित नहीं

केअभावकोबाधबोधनकरताहै।इसप्रकारप्रसिद्धअधिष्ठानमेंअभावप्रति योगित्वहीमिथ्यात्वहै । इसकथनसेयहीपक्षतिन्होने स्वीकारकियाहै। यदिविवरणाचार्योंकोयहपक्षस्वीकारनहोता । तोरजतकेअभावको बाधबोधनकरताहै । यहकैसेकथनकरते । औरतत्त्वदीपनाचार्यतिस अभावपदकोत्रैकालिक अभावपरताकरकैसे व्याख्यानकरते । तिस कारणसेसंप्रदायके जाननेवालोंने यहपक्षअवश्यस्वीकारकियाहै । यातेयहपक्षअसांप्रदायिकनहीं । यहसिद्धहुया इति ॥ ४१ ॥

* अथपूर्वपक्ष ॥ जीवन्मुक्तिकेअभावप्रतिपादन द्वारासंप्रदायकालोपनिरूपण । *

शंका ॥ हेसिद्धांतिन् विद्याकोअविद्याका उपमर्दकपनायुक्त नहीं।क्योंकिजीवन्मुक्तिका अभावप्राप्तहोताहै । तथाहि ॥ यदि विद्याकोअविद्याका उपमर्दकमाने तो विद्वान्‌कोविद्याकी उत्पत्ति सेअनंतर कार्यसहितअविद्यासमूल विनाशकोप्राप्तहोगी । तिससे तिसीकालमेंविदेह कैवल्यकीप्राप्तिहुए तात्कालिकहीविद्वान्‌केदेह का पातहोगा ॥ यातेजीवन्मुक्तिका अभावप्राप्तहोगा ॥ शंका ॥ समूलअविद्याकी निवृत्तिहोतीहै। यहकथनहीनहीं संभवता।।क्योंकि अविद्याको अनादि होनेसे तिसकेमूलकी अनुपपत्तिहै । और अधिष्ठानहीअविद्याकामूलहै । यहकथनभीनहींसंभवता । क्योंकि तिसकोएकसत्यरूप होनेकर कल्पितपनेका असंभवहै । औरयदि अधिष्ठानकोभीकल्पित मानलें तोशून्यताकीप्राप्तिहोगी॥ समाधान यहांइसशंकाकीप्राप्तिनहींहोती।क्योंकि "अहम्" इत्याकारकजो अध्या सहै तिसकोअविद्याकहतेहैं।भाष्यकारश्रीशंकराचार्य्योंनेतैसेहीकहाहै॥

॥ तमेतमेवंलक्षणमध्यासंपंडिताअविद्येतिमन्यन्ते॥

अ०॥ पूर्वजिसमेंआक्षेपकियागया पुनः जिसमेंसमाधानकिया गया।इसप्रकारकेलक्षणवालाजोअध्यासहै। तिसकोवेदांतशास्त्रकेवेता पंडित "अविद्या" मानतेहैं ॥ इति ॥ तिसअध्यासरूपअविद्याका कार्यकर्तृत्वादिहैं। औरतिसअध्यासकामूलमूलाअविद्याहै।यातेसमूल अविद्याकीविद्यासे निवृत्तिहोतीहै यहकथनसंभवताहै ॥ शंका ॥ सकार्यतथासमूलअविद्याकेनाशहोनेसे विदेहमुक्तिसिद्धहोजायेगी॥ फिरजीवन्मुक्तिसे क्याप्रयोजनहै॥ समाधान ॥ तैसेमानेहुएसंप्रदाय काउच्छेदहोगा ॥ क्योंकि "श्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठम्" इसविशेषणसेजिस पुरुषकोसाक्षात्कार उत्पन्नहुआहै तिसकोहीआचार्य्यपनाहै । और तिसकोतात्कालिकअर्थातज्ञानसमकालहीविदेहकैवल्यकीप्राप्तिहोनेसे ब्रह्मविद्याकाउपदेशकौनकरेगा ॥ औरउपदेशकेअभावहुए ब्रह्मविद्या कीसंप्रदायकैसेप्रवृत्तहोगी॥ यातेसंप्रदायकाअभावहोनेकर वेदान्तोंको अबोधकतालक्षण अप्रमाणताकीप्राप्तिहोगी ॥ शंका ॥ तत्त्वज्ञानसे उत्तरकालमेंही विद्वान्‌केदेहकापातहोताहै यहकथनअयुक्तहै ॥ क्यों किदेहकाकारणजोप्रारब्धकर्मकाशेषहै सोविद्यमानहै।औरप्रारब्धकर्म भीतत्त्वज्ञानसे निवृत्तहोजाताहै यहकथनभीनहींसंभवता॥ क्योंकि प्रारब्धकर्मसे ज्ञानकाविरोधनहीं॥ औरप्रारब्धकर्मके आश्रितज्ञानकी उत्पत्तिहोनेकरभी तिसकीनिवृत्तितत्त्वज्ञाननहींकरता॥ यातेप्रारब्धकर्म केवलसेविद्वान्‌केशरीरकापातनहींहोता।तिससेउपदेशादिसर्वव्यवहार संभवताहै॥ समाधान ॥ यद्यपितत्त्वज्ञानका प्रारब्धकर्मसेविरोधनहीं तथापि वह प्रारब्धकर्म उपादान कारणसे विना तो स्थित नहीं

सकता॥ क्योंकिभावकार्यनिरूपादानकहींदेखानहीं।औरयदिवहउपादानकेसहितहैतोक्या आत्मातिसकाउपादानहै।अथवाअविद्यातिसका उपादानहै?।इनमेंप्रथमपक्षतोनहींसंभवता।क्योंकिआत्माकोअकारण होनेकरतिसकी उपादाननताकाअसंभवहै॥औरयदिद्वितीयपक्षकहो तो तिसमेंयहविचारकर्तव्यहै।क्यावहअविद्यानिवृत्तहोगईहै।अथवास्थितहै? प्रथमपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिप्रारब्धकोभी अविद्याकाकार्यहोने करतिसअविद्याकेअभावहुएवहकैसेस्थितहोसकताहै ।किंतुनहींस्थित होसकता॥ जैसेतन्तुकेअभावहुए पटकीस्थितिकिसीप्रकारभीनहींहो सकती।औरप्रारब्धकर्मके फलभोगकानिर्वाहकरूपताकर तत्त्वज्ञानसे उत्तरकुछकालतक अविद्यास्थितरहतीहै। यदियहद्वितीयपक्षमानो तो यहभीनहींसंभवता ॥ क्योंकिविद्यानिष्ठ जोअविद्याकेउपमर्दकपनेका स्वभावहै तिसकीहानिहोगी। औरयदियहकहो किप्रारब्धकर्मकेनिवृत्त होनेसेअनन्तरही विद्यामेंयहस्वभावहोताहै।प्रथमनहीं।सोयहकथनभी असंगतहै॥ क्योंकिएकपदार्थमें दोस्वभावअंगीकारनहींहैं। अन्यथा अग्निमेंभीदाहकत्वतथाअदाहकत्व इनदोस्वभावोंकीप्राप्तिहोगी॥ और यदिऐसेकहो ॥ किप्रथम ज्ञानसेआवरणशक्तिप्रधानअज्ञान निवृत्त होताहै।औरप्रारब्धकर्मकेनिर्वाहकरनेकेलिये विक्षेपशक्तिप्रधानअज्ञान निवृत्तनहींहोता ॥ सोयहकथनभीनहींसंभवता ॥ क्योंकिदोअज्ञानों काअभावहै ॥ एकहीअज्ञान सिद्धांतमेंस्वीकारहै ॥ यद्यपिएकही अज्ञान उभयशक्तिविशिष्टहै तथापिएकहीकालमेंएकपदार्थकीस्थिति तथानिवृत्तिकाविरोधहै ॥ औरयदिऐसेकहो कियज्ञानकीशक्तिमात्र हीज्ञानसेनिवृत्तहोतीहै ॥ सोयहकथनभीसमीचीननहीं ॥ क्योंकि

शक्तिऔरशक्तिकालेकाअभेदहै। अथवाभेदहै? यहविचारकर्त्तव्यहै ॥ यदिप्रथमपक्षकहो तोअज्ञानकीनिवृत्तिभीअवश्यमाननीहोगी।केवल शक्तिकीनिवृत्तिहीविवक्षितहै यहकथननहींसंभवेगा ॥ औरद्वितीय पक्षमेंतोअज्ञानरूपधर्मीकी निवृत्तिहीनहींहोगी।क्योंकिशेषप्रारब्धकर्म केभोगसेपूर्वआवरणशक्तिमात्रकोज्ञाननिवृत्तकरताहैऔरतिसकर्मभोग सेउत्तरकालमेंविक्षेपशक्तिको निवृत्तकरताहै ॥ औरशक्तिकाअज्ञानसे भेदहै।।यातेअज्ञानरूपधर्मीके निवर्तककाअभावहोनेसेतिसकीनिवृत्ति नहींहोगी । औरप्रारब्धकर्मकीनिवृत्तिसे अज्ञानआपहीनिवृत्तहोजाये गा। यहकथनभीनहींसंभवता ॥ क्योंकिप्रारब्धकीनिवृत्तिप्रमाणरूप नहीं ॥ शंका॥ अज्ञानकेनिवर्त्तकका अभावअसिद्धहै। क्योंकिज्ञान हीअज्ञानकानिवर्त्तकहै सोविद्यमानहै।।यद्यपिऐसेमानेहुए जीवन्मुक्ति कीसिद्धिनहींहोगी।। तथापिशेषप्रारब्धकर्मकर वहज्ञानप्रतिबद्धहोताहै औरअप्रतिबद्धकारणहीकार्यकाजनकहोताहै।। यातेशेषकर्मकीनिवृत्ति हुएप्रतिबंधककाअभावहोनेकरअप्रतिबद्धहुआतत्त्वज्ञानअज्ञानकोबाध करेगा।। समाधान ॥ हेसिद्धांतिन्प्रारब्धकर्मकेनाशहुए ज्ञानकाही अभावहै ॥ औरयदिऐसेकहो किप्रारब्धकेनाशसेअनन्तर शरीरका नाशहोजाताहै। क्योंकिप्रारब्धकर्मकानाशशरीरनाशमें हेतुहै । तिस कारणसेप्रारब्धकर्मकेनाशकीउत्पत्तिकालमेंप्रतिबंधककाअभावहै।और देहादिकारणसमुदायभीविनाशअवस्थाके सम्मुखहुआविद्यमानहै ॥ यातेज्ञानतिसकालमेंउत्पन्नहोकर अज्ञानकाबाधकरेगा । सोयहकथन भीसमीचीननहीं। क्योंकिप्रारब्धकर्मकाशेषदेहरूपहीहै तिससेभिन्न तिसकाकारणरूप औरकोईशेषशब्दकाअर्थनहींहै। क्योंकिदेहादिफल

रूपताकरपरिणामकोप्राप्तहुएकर्मका और कोईरूपांतरनहीं ॥ तैसेमाने हुए शेषकाजोनाशहै तिसीकोदेहपातकहतेहैं ॥ तिसकर्मशेषरूपदेह केपातसेअनन्तरकारणकेअभावसेज्ञानकाहीअभावहैतोअज्ञानकोकौन निवृत्तकरेगा ॥ औरदेहपातसेपूर्व प्रारब्धकर्मकरज्ञानप्रतिबद्धहै। याते अज्ञानके निवर्त्तककाअभावसिद्धहै ॥शंका ॥ हेवादिन्यद्यपिमूलाऽ विद्यातोज्ञानकरनिवृत्तहोगई है।तथापितिसका संस्कारजोलेशाऽविद्या नामसेकहाजाताहै तिसकीअनुवृत्तितोसंभवती है।।औरज्ञानतथाक्रिया काहीसंस्कारहोताहैयहनियमनहीं।किंतुवस्तुकाभीसंस्कारहोताहै।क्योंकि संस्कारकोनाशमात्रकर प्रयुक्तताहै तिसकारणसेअपरोक्षआत्मानिष्ठ संस्काररूपदोषकेवशसे देहादिअनात्माकारप्रतीतिकासंभवहोजायेगा। यातेजीवन्मुक्तिकी सिद्धिहोजायेगी। औरयदिज्ञानतथाक्रियाका हीसंस्कारहोताहै यहनियममाने तोसंस्कारशब्दका अन्यहीअर्थहै लेशाऽविद्याजोअविद्याकी अवस्थाविशेषहै तिसीकोसंस्कारकहतेहैं तिससेविद्वान् के शरीरादिकोंकी प्रतीतिका संभवहोजायेगा ॥ समाधान ॥ तिससंस्कारकोभी अविद्याकाकार्यपनाहै। अर्थयहकि प्रथमसंस्कारको अनादिपनातोनहींसंभवता । अन्यथासंस्कारपनेका हीअभावप्रसंगहोगा।औरयदितिसकोसादिमाने तो तिसका उपादान क्याआत्माहै अथवाअविद्याहै ? । प्रथमपक्षतोनहीं संभवता क्योंकि आत्माकोनिर्विकार होनेसेकारणताका अभावहै । औरयदिद्वितीय पक्षकहोतोअविद्याके नाशहुएवह संस्कारकैसेस्थितहोगा । क्योंकि उपादानकाहीअभावहै । और भावकार्यउपादानसहितहीहोताहै यहनियमहै ॥ शंका ॥ अविद्याकीअवस्थाविशेषही लेशशब्दका

वाच्यहुईसंस्कार नामसेकहीजातीहै ॥ समाधान ॥ तिसअवस्था विशेषकाअविद्यासे भेदतथाअभेद निरूपणनहींहोसकता । क्योंकि यदिअवस्थाविशेषका अविद्यासेभेदमाने तोतिसकीवहअवस्थानहीं होगी। औरयदिअभेदमाने तोतिसमेंसंस्कारशब्दका प्रयोगकरना निष्फलहै । औरशक्तिपक्षमें कथनकियेहुएदोषोंकी प्राप्तिहोनेसे भी यहपक्षअयुक्तहै ॥ शंका ॥ (तस्यतावदेवचिरम्) अ० ॥ तिसविद्वान्को तबतकहीविदेहकैवल्यमें विलंबहै ॥ और (सचक्षुरचक्षुरिव) अ० ॥ वहविद्वान्वास्तवसे नेत्रादिइन्द्रिय रहितहै।परन्तुबाधिताऽनुवृत्तिसेनेत्रादिइन्द्रिय सहितकीन्याईहै। और

❀ प्रजहातियदाकामान् सर्वान्पार्थमनोगतान् ।

(भ० गी० अ० २ । (५५)

अ० ॥ हेअर्जुनजिसकालमें यहविद्वान्मनमें प्राप्तसर्वकाम नाओंकोत्यागदेताहै । इत्यादिकश्रुतितथास्मृतिकी प्रमाणतासे विद्वान्को विदेहकैवल्यकीप्राप्तिमें विलंबप्रतीतहोताहै । तिसकारण सेतिसकेशरीरकी स्थितिकल्पनाकीजातीहै। औरवहशरीरकीस्थिति प्रारब्धकर्मसेविना अनुपपन्नहुईतिसकर्मकीभी कल्पनाकरातीहै ॥ यातेजीवन्मुक्तिकी सिद्धिहै ॥ समाधान ॥ (उभेइहैवैषएते तरति) अ० ॥ यहविद्वान्ज्ञानसमकालही पुण्यतथापापरूप दोनोंकर्मोंकोनाशकरताहै ॥ और (क्षीयन्तेचास्यकर्माणि) अ० ॥ इसविद्वान्के कर्मनाशहोजातेहैं । और (ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि) अ० ॥ ज्ञानरूपअग्निसर्वकर्मोंको भस्मकरदेता

रूपताकरपरिणामकोप्राप्तहुएकर्मका औरकोईरूपांतरनहीं ॥ तैसेमाने हुए शेषकाजोनाशहै तिसीकोदेहपातकहतेहैं ॥ तिसकर्मशेषरूपदेह केपातसेअनन्तरकारणकेअभावसेज्ञानकाहीअभावहैतो अज्ञानकोकौन निवृत्तकरेगा ॥ औरदेहपातसेपूर्व प्रारब्धकर्मकरज्ञानप्रतिबद्धहै। याते अज्ञानके निवर्त्तककाअभावसिद्धहै ॥शंका॥ हेवादिन्यद्यपिमूलाऽ विद्यातोज्ञानकरनिवृत्तहोगई है।तथापितिसका संस्कारजोलेशाऽविद्या नामसेकहाजाताहै तिसकीअनुवृत्तितोसंभवती है॥औरज्ञानतथाक्रिया काहीसंस्कारहोताहैयहनियमनहीं।किंतुवस्तुकाभीसंस्कारहोताहै।क्योंकि संस्कारकोनाशमात्रकर प्रयुक्तताहै तिसकारणसेअपरोक्षआत्मानिष्ठ संस्काररूपदोषकेवशसे देहादिअनात्माकारप्रतीतिकासंभवहोजायेगा। यातेजीवन्मुक्तिकी सिद्धिहोजायेगी । औरयदिज्ञानतथाक्रियाका हीसंस्कारहोताहै यहनियममाने तोसंस्कारशब्दका अन्यहीअर्थहै लेशाऽविद्याजोअविद्याकी अवस्थाविशेषहै तिसीकोसंस्कारकहतेहैं तिससेविद्वान् के शरीरादिकोंकी प्रतीतिका संभवहोजायेगा ॥ समाधान ॥ तिससंस्कारकोभी अविद्याकाकार्यपनाहै। अर्थयहकि प्रथमसंस्कारको अनादिपनातोनहींसंभवता । अन्यथासंस्कारपनेका हीअभावप्रसंगहोगा।औरयदितिसकोसादिमाने तो तिसका उपादान क्याआत्माहै अथवाअविद्याहै ? । प्रथमपक्षतोनहीं संभवता क्योंकि आत्माकोनिर्विकार होनेसेकारणताका अभावहै । औरयदिद्वितीय पक्षकहोतोअविद्याके नाशहुएवह संस्कारकैसेस्थितहोगा । क्योंकि उपादानकाहीअभावहै । और भावकार्यउपादानसहितहीहोताहै यहनियमहै ॥ शंका ॥ अविद्याकीअवस्थाविशेषही लेशशब्दका

वाच्यहुईसंस्कार नामसेकहीजातीहै ॥ समाधान ॥ तिसअवस्था विशेषकाअविद्यासे भेदतथाअभेद निरूपणानहींहोसकता । क्योंकि यदिअवस्थाविशेषका अविद्यासेभेदमाने तोतिसकीवहअवस्थानहीं होगी। औरयदिअभेदमाने तोतिसमेंसंस्कारशब्दका प्रयोगकरना निष्फलहै । औरशक्तिपक्षमें कथनकियेहुएदोषोंकी प्राप्तिहोनेसे भी यहपक्षअयुक्तहै ॥ शंका ॥ (तस्यतावदेवचिरम्) अ० ॥ तिसविद्वान्को तबतकहीविदेहकैवल्यमें विलंबहै ॥ और (सचक्षुरचक्षुरिव) अ० ॥ वहविद्वान्वास्तवसे नेत्रादिइन्द्रिय रहितहै।परन्तुबाधिताऽनुवृत्तिसेनेत्रादिइन्द्रिय सहितकीन्याईहै। और

* प्रजहातियदाकामान् सर्वान्पार्थमनोगतान् ।
(भ० गी० अ० २। (५५)

अ० ॥ हेअर्जुनजिसकालमें यहविद्वान्मनमें प्राप्तसर्वकाम नाओंकोत्यागदेताहै । इत्यादिकश्रुतितथास्मृतिकी प्रमाणतासे विद्वान्को विदेहकैवल्यकीप्राप्तिमें विलंबप्रतीतहोताहै । तिसकारण सेतिसकेशरीरकी स्थितिकल्पनाकीजातीहै। औरवहशरीरकीस्थिति प्रारब्धकर्मसेविना अनुपपन्नहुईतिसकर्मकीभी कल्पनाकरातीहै ॥ यातेजीवन्मुक्तिकी सिद्धिहै ॥ समाधान ॥ (उभेइहैवैषएते तरति) अ० ॥ यहविद्वान्ज्ञानसमकालही पुण्यतथापापरूप दोनोंकर्मोंकोनाशकरताहै ॥ और (क्षीयन्तेचास्यकर्माणि) अ० ॥ इसविद्वान्के कर्मनाशहोजातेहैं । और (ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि) अ० ॥ ज्ञानरूपअग्निसर्वकर्मोंको भस्मकरदेता

है। इत्यादिकश्रुतितथास्मृतिका विरोधहोनेसें कल्पनाकीअनुपपत्ति है। यद्यपिजीवन्मुक्तिकाअभाव मानेहुए जीवन्मुक्तिकेप्रतिपादक वचनोंकाविरोधहोगा। तथापिअध्ययनविधिका विरोधहोनेकर जीवन्मुक्तिके प्रतिपादकवचनोंका स्वार्थमेंतात्पर्य्यनहीं।यातेतिनका विरोधनहीं ॥ शंका ॥ यद्यपिजीवन्मुक्तिकाप्रतिपादन साक्षात्तिन वचनोंकाप्रयोजननहीं। तथापिसुखस्वरूपआत्माके साक्षात्कारकेहेतु जोश्रवणादिसाधनहैं। तिनमेंप्रवृत्तिकेजनकहोनेकर परंपरासेजीवन्मुक्तिकाप्रतिपादनतिनकाप्रयोजनहै।यातेस्वार्थमेंतिनकातात्पर्य्यसंभवता है ॥ समाधान॥ जीवन्मुक्तिके प्रतिपादनकरनेवालेशास्त्रकोश्रवणादिकोंमेंप्रवृत्तिकीजनकतास्वीकारकरेहुएयहविचारणीयहैक्यावहशास्त्र श्रवणादिकों मेंसाक्षातहीमुमुक्षुपुरुषोंकीप्रवृत्तिकरानाहै। अथवाश्रवण आदिकोंकेविधायकवाक्यका शेषरूपहोकरप्रवृत्तिकराताहै?।प्रथमपक्ष तोनहींसंभवता।क्योंकितिसमेंविचारके विधानकरनेवालेपदकाअभाव है। औरयदिश्रवणादिविधिका अर्थवादरूपवहशास्त्रहैयहद्वितीयपक्ष मानो तोस्वार्थ में तिसकोप्रमाणतानहींहोगी ॥ शंका॥ जहांप्रमाण काविरोधहो। अथवाप्रमाणकासंवाद होतहांअर्थवादवाक्योंकोप्रमाण तानहींहोती ॥ औरयहांतोवहदोनोंहीनहीं याते "देवताअधिकरण न्याय" सेतिनकोस्वार्थ मेंप्रमाणताकैसेनहींहोसकती ॥ समाधान ॥ शुक्तिकेसाक्षात्कारहुए कार्यसहितअविद्याकाबाधहोताहै॥ औरशुक्तिकेसाक्षात्कारकाअभावहुए सकार्यअविद्याकाबाधनहींहोता ॥ इस प्रकारका अन्वयव्यतिरेकरूपलौकिकप्रमाणहै॥ और (क्षीयंतेचास्यकर्माणि) इत्यादिवैदिकप्रमाणहै ॥ तिनदोनों

काविरोधहोनेसे देवताऽधिकरणन्यायकी यहांप्राप्तिनहीं होसकती यातेजीवन्मुक्तिकेप्रतिपादकशास्त्रकरविद्वान्केदेहकीस्थितिनहींकल्पनाकरसकते ॥ शंका ॥ जैसेधनुषसेछूटेहुए बाणकीक्रियाकाप्रारंभ कियेहुएवेगके नाशसेहीनाशहोताहै अन्यप्रकारसेनहीं । तैसेप्रारब्ध कर्मकाभोगरूपकार्यके नाशसेहीनाशहोताहै अन्यकिसीप्रकारसेनहीं। इसप्रकारशास्त्रकारोंने प्रारब्धकर्मकीस्थितिसिद्धकीहै । यातेजीवन्मुक्तिकासंभवहै ॥ समाधान ॥ दृष्टांतकीविषमताहोनेसेपूर्वकथन नहींसंभवता । क्योंकिदृष्टांतमें तोक्रियाकेउपादानभूतबाणकानाश नहींहुआ ॥ यातेप्रारब्धवेगकेक्षयसे तिसकानाशसंभवताहै । और दार्ष्टांतमें तोप्रारब्धकर्मकेउपादानभूत अज्ञानकीभीनिवृत्तिहुईहै । यातेतिसकी स्थितिनहींसंभवती ॥ शंका ॥

❀ अनारब्धकार्यएवतुपूर्वेतदवधेः ॥ उ०पी०॥४॥१॥१५ ❀

अ० ॥ यहअधिकरणसूत्रहै। यहांअधिकरणरचनाऐसेहै ॥ ज्ञानजन्यजोकर्मकाविनाशहै वहक्यासकलरूपतासे कर्ममात्रकाहोता है । अथवा प्रारब्धकर्मसेभिन्नकर्मकाविनाशहोताहै? । यहसंशयहै । तहांपूर्वपक्षप्राप्तहुआ ॥ (क्षीयन्तेचास्यकर्माणि) इसश्रुतिमें सामान्यरूपतासेसकलकर्मोंकाविनाशश्रवणहोताहै। यातेकर्ममात्रका विनाशहोताहै॥ इसप्रकारपूर्वपक्षकेप्राप्तहुए सिद्धांतनिरूपणकरतेहैं । जोपुण्यतथापापरूपकर्मइसदेहमेंसुखतथादुःखकेअनुभवअर्थप्रवृत्तहुए हैं वहप्रारब्धकार्यवालेकहेजातेहैं। तिनसेभिन्न जोअनारब्धकार्यवाले कर्मजोअनादिसंसारचक्रमेंज्ञानकी उत्पत्तिपर्यन्तसंचयकियेहैं वही विनाशकोप्राप्तहोतेहैं । प्रारब्धकर्मविनाशकोनहींप्राप्तहोते । क्योंकि

॥ तस्यतावदेवचिरंयावन्नविमोक्ष्येऽथसंपत्स्ये ॥

छां० उ० अ० ६।खं १३।२

अ० ॥ तिसविद्वान्कोतबतककहीविलंबहै जबतकप्रारब्धकर्मको भोगकर शरीरकोनहीं त्यागता । तिससेअनन्तर विदेहकैवल्यकोप्राप्त होताहै । इसश्रुतिसेविद्वान्के देहपातका अवधिसुनाजाताहै इस प्रकारसूत्रकारोंने जीवन्मुक्तिका उपपादनकियाहै । और

॥ नत्वारब्धकार्ये सामिभुक्तफले ॥

अ० ॥ आरब्धकार्यवालेजोकर्मजिनकाआधाफलभोगलियाहै तिनकाविनाशनहींहोता। इत्यादिग्रंथकरभाष्यकारोंनेभी जीवन्मुक्ति काप्रतिपादनकियाहै । और ॥

॥ नत्वारब्धविपाकंसंपादितजात्यायुर्वितत्यादिना ॥

अ० ॥ जातितथाआयुऔरधनरूप फलकाजिनकर्मोंनेआरंभ कियाहै तिनकाज्ञानसेविनाश नहींहोता । इत्यादिग्रंथकरवाचस्पति मिश्रोंनेभीजीवन्मुक्ति प्रतिपादनकीहै ॥ तथा

॥ ननुकर्मणामपिनिवृत्तत्वात्कथंद्वैतदर्शनं । नैषदोषइत्यादिना ॥

अ० ॥ शंका ॥ ज्ञानसेसर्वकर्मोंकोभी निवृत्तहोनेसे पुनः विद्वान्कोद्वैतदर्शनकैसेभंभेगा ॥ समाधान ॥ हेवादिन्यहदोषनहीं इत्यादिग्रंथसे विवरणाचार्योंनेभी जीवन्मुक्तिकथनकीहै ॥ और ॥

॥ आरब्धफलशेषैकहेतुत्वात्देहसंस्थितेः । रागादिप्रत्ययोद्भूतिरिपुचक्रादिवेगवत् ॥

अ०॥ प्रारब्धकर्मकेफलकाशेषही विद्वान्केदेहकीस्थितिकाएक हेतुहै इसीकारणसे तिसकोरागादि प्रत्ययोंकीउत्पत्तिकासंभवहै । यहांरागादिकोंकीप्रतीति आभासरूपजाननी । जैसेप्रारब्धवेगवाले बाणकीक्रियाकावेगके नाशसेही नाशहोताहै। औरकुलालकेचक्रकी क्रियाकाभीप्रारब्धवेगकेनाशमेंहीनाशहोताहै । तैसेविद्वान्केदेहका पातभीप्रारब्धकर्मकेफलभोगसे अनन्तरहींहोताहै । इत्यादिग्रंथकरके वार्तिककारोंनेभीजीवन्मुक्तिका उपपादनकियाहै । तिसजीवन्मुक्ति केनस्वीकारकरनेसे तिनसर्वमहानुभावोंकाकथन अयुक्तहोगा । क्योंकिअप्रामाणिकअर्थकाजोशास्त्रकारोंने उपपादनकरनाहैसोव्यर्थ है॥औरजीवन्मुक्तिविषयक सर्वलोकोंकी प्रसिद्धिकाभीव्याघातनहीं होसकता।यातेजीवन्मुक्तिसंभवेहै॥ समाधान॥ शिष्यको अविद्यावत्ता होनेकरगुरुविषयकअ श्रद्धाहोजायेगी । तिस अश्रद्धाकीनिवृत्तिरूप प्रयोजनहोनेकर तिनमहानुभावोंकाकथननिष्फलनहीं किंतुसफलहै औरजीवन्मुक्तिमेंप्रमाणका अभावहोनेकर लोकप्रसिद्धितोअन्धपरं परारूपहोनेसे त्यागनेयोग्यहै । इसप्रकार सर्वदोषोंसे रहित रूपताकर उपपादनकियेहुए विदेहमुक्तिपक्षको समाप्तकरते हुए पूर्वपक्षकाफल निरूपणकरतेहैं ॥ पूर्वउक्तप्रकारसे विद्याको अविद्याकाउपमर्दक स्वभावहोनेकर विद्वान्कोज्ञान समकालही मुक्तिकेप्राप्तहुए उपदेष्टाकेअभावसे विद्याकीउत्पत्ति किसहेतुसे होगी किंतुकिसीहेतुसेनहींहोगी । तिससेसंप्रदायकालोपमाप्तहोगा। शंका ॥ विद्याकीउत्पत्तिमेंआचार्यक्याकरेगा। क्योंकिआपहीयह अधिकारीतर्कादिकोंसे विद्याकोसंपादनकरलेगा । यातेविद्याकी

उत्पत्तिसंभवेहै ॥ समाधान ॥ आचार्य्यकीअपेक्षासेविनाहीविद्या उत्पन्नहोजायेगी यहकथननहींसंभवता । क्योंकिऐसामाननेसेबहुत श्रुतिवचनोंकाविरोधप्राप्तहोताहै॥तथाहि (आचार्यवान्पुरुषोवेद)

अ० ॥ आचार्यवालापुरुषहीआत्माकोजानसकताहै ॥ और

[नैपातर्केणमतिरापनेया] अ० ॥ हेनचिकेतायहआत्मविद्या तर्कसेप्राप्तहोनेयोग्यनहीं और [प्राप्यवरान्निबोधत] अ० ॥ उत्कृष्टआचार्य्योंको प्राप्तहोकरतुमआत्मतत्त्वकोजानो ॥ और

❋ आचार्य्यस्तेगतिंवक्ता छा० अ० ४ खं० १४ कं०१❋

अ०॥ हेब्राह्मणआचार्यहीतुझकोमोक्षमार्गकाउपदेशकरेगा॥और

❋अनन्यप्रोक्तेगतिरत्रनास्ति । प्रोक्तान्येनैवसु ज्ञानायप्रेष्ठ ॥ क० उ० ॥ अ० १ व० २ मं० ८।६॥

अ० ॥ अभेदवादिआचार्यकर कथनकियेहुए आत्मतत्त्व विषयकसंशयनहींहोता । और हेप्रियतमभेदवादीसेभिन्नब्रह्मवेत्ता आचार्यकर कथनकियेहुए वेदान्तवाक्यअपरोक्षबोधकेअर्थहोतेहैं ॥ इत्यादिश्रुतिवचनोंनेआचार्यसापेक्षहीब्रह्मविद्याकीउत्पत्तिकथनकीहै । औरपूर्वउक्तरीतिसेआचार्यकाअभावहै । यातेविद्याकीउत्पत्तिनहींसंभ वती ॥ इतिपूर्वपक्ष ॥ अथसिद्धांत ॥

❋तात्कालिकमुक्तिपक्षकास्वीकारतथासंप्रदायके लोपकापरिहार ॥

समाधान ॥ हेवादिन् ज्ञानसमकालहीविदेहकैवल्यकीप्राप्ति विद्वान्कोहोतीहै।यहपक्षहीश्रेष्ठहै ॥ औरविद्याकीसंप्रदायकाअभाव

होनेकरविद्याका असंभवरूपदोषजोपूर्वपक्षीनेकहाथा।सोभीनहींसंभवता क्योंकि स्वअज्ञानकर कल्पितआचार्यविद्यमानहै ॥ शंका ॥ हे सिद्धांतिन् कल्पितजोमिथ्यारूपआचार्यहै।तिसको उपदेष्टापनाकैसे संभवेगा । औरयदिमिथ्याकोभी उपदेष्टापनामानलें। तोअर्थक्रिया काकर्ताहोनेसेतिसकोमिथ्यापनानहींसंभवेगा।क्योंकिमिथ्यापदार्थअर्थ कासाधकनहींहोता ॥ अन्यथामरुभूमिकेजलसेभी पिपासाउपशम हुईचाहिये ॥ समाधान ॥

मू०॥ कल्पितोप्युपदेष्टास्याद्यथाशास्त्रंसमादिशेत्। नचाविनिगमोदोषोऽविद्यावत्वेननिर्णयात्॥४२॥

स्वैयाछंद ॥ मिथ्यावेदसत्यजिमबोधक तिमकल्पितगुरुदेउपदेश ॥
असतप्रतिबिंबबिंबसतबोधक वादृष्टांतलखोरिददेश ॥
विनिगमविरहदोषनहिआवत यामेंहैइकहेतुविशेष ॥
अविद्यावानशिष्यहैकल्पकयानिर्णयतेतजोक्लेश॥३६॥

टी० ॥ हेवादिन् यद्यपिपूर्वआचार्यका अभावकथनकियाहै । तथापिकल्पितभी अचार्यसत्यकीन्याईसम्यकउपदेशकरसकताहै ॥ शंका ॥ तिसकल्पितआचार्यको उपदेष्टापनायुक्तनहीं । क्योंकिवह निःस्वरूपहै॥ समाधान ॥हेवादिन् निःस्वरूपयदितुमतुच्छपदार्थको कहो तोवहहमअंगीकारनहींकरते ॥ औरयदिमिथ्याकानामनिःस्व रूपहै तोतिसकोउपदेशकर्तृत्वननजायेगा । क्योंकिजैसेकल्पितभी वेदस्वार्थकोबोधनकरदेताहै । तैसेकल्पितभीआचार्यउपदेशकरदेगा॥ औरतत्त्वसाक्षात्कारसे प्रथमअधिकारीको आचार्यनिष्ठमिथ्यात्वज्ञान काअभावहै।औरतत्त्वसाक्षात्कारसेअनंतरआचार्यकीअपेक्षाकाअभाव

होनेसेकोईदोषनहीं ॥ औरशास्त्रकोअपौरुषेयहोनेसे तिसकोकल्पित पनानहींसंभवता यहजोमीमांसककहतेहैं। तिनकेप्रतिअन्यउदाहरण निरूपणकरतेहैं ॥ जैसेकल्पितभीप्रतिबिंब सत्यबिंबकीप्रतीतिकाहेतु स्वीकारकियाहै। तैसेमिथ्याआचार्य्यभी सत्यवस्तुकाउपदेशकरसकता है ॥ यहांयहअनुमानजानना ॥

❋विमतंबिंबपूर्वकंप्रतिबिंबत्वात् संमतवत्❋

अ०॥ विवादकाविषयजोकोईप्रतिबिंबहै वहबिंबपूर्वकहै। जोजो प्रतिबिंबहोताहै । सोसोबिंबपूर्वकहीहोताहै । जैसेप्रसिद्धमुखकाप्रति बिंबहै ॥ इति ॥औरयदिऐसेकहो किबिंबज्ञानमेंप्रतिबिंबज्ञानहीकारण है प्रतिबिंबनहीं । सोयहकथनभी समीचीननहीं । क्योंकिज्ञानमात्र को तोहेतुताहैनहीं।किंतुप्रतिबिंबाऽवच्छिन्नज्ञानकोहेतुताहै। औरप्रति बिंबाऽवच्छिन्नज्ञानकोहेतुतामानेहुए प्रतिबिंबकोभी बिंबज्ञानकीहेतुता दूरनहींहोसक्ती॥ क्योंकिविशिष्टवृत्तिधर्मकोविशेषणमेंवर्तनेकानियम है ॥ यातेकोईअनुपपत्तिनहीं ॥ शंका ॥ एकहीजीवहै । इतरजीवा भासतिसकी अविद्याकरकल्पितहैं यहआपकामतहै। तिसमें शिष्यके अज्ञानकरगुरुकल्पितहै।अथवागुरुकेअज्ञान करशिष्यकल्पितहै?इसप्रकार काविनिगमना विरहदोषप्राप्तहुए शिष्यकी श्रवणादिकों में प्रवृत्तिका अभावहोगा ॥ समाधान ॥ हेवादिन् अज्ञानीकोहीकल्पकपनाहै । क्योंकितिसमेंकल्पनाका बीजभूतअज्ञानविद्यमानहै । औरविद्वान्में कल्पनाकेबीजभूतअज्ञानकाअभावहै । यातेविनिगमनाविरहदोषकी प्राप्तिकाअभावहोनेसे शिष्यकीश्रवणादिकों मेंप्रवृत्तिकासंभवहै । इस प्रकारसर्वअनात्मपदार्थोंकोकल्पितपनाहै । औरभेदकानिरूपणभी

कोईकरनेकोसमर्थनहीं ॥ औरप्रत्यक्षादिप्रमाणाभास भेदकोविषय नहींकरसकते ॥ औरअविद्याकाविद्याकर उपमर्दनहोनेकास्वभावहै॥ औरअन्वयव्यतिरेकादिकोंसेशोधनकियेहैं तत्त्वंपदार्थजिसनेऐसेअधि कारीकोगुरुउपदिष्टतत्त्वमस्यादिमहावाक्यसेभागत्यागलक्षणाकरविद्या कीउत्पत्तिकाभीसंभवहै । औरउत्पन्नहुईविद्याकरकेसच्चिदानंदस्वरूप ब्रह्मात्माकेअभेदकाआवरकजोअज्ञान तिसकाबाधहोताहै ॥ तिससे निर्दोषतथासच्चिदानंदस्वरूपब्रह्ममैंहूं इसप्रकारकेस्वरूपसे अधिकारी अवस्थितहूआकृतार्थताकोप्राप्तहोताहै। इसरीतिसे अबइसआनंदपदकी व्याख्याकोउपसंहारकरतेहैं । जिसकारणसेविनिगमनाविरहादिदोषों काअभावहै। तिसीकारणसेशास्त्रतथागुरुकेप्रसादसेप्राप्त जोतत्त्वमस्या दिमहावाक्य तिनसेउत्पन्नहुएआत्मसाक्षात्कारसे मोक्षकेआविर्भावका प्रतिबंधकजोअज्ञानतत्कार्य्य तिसकाबाधहोताहै। तिससेअनंतरनित्य तथाशुद्ध औज्ञानतथामुक्तस्वभावऔअद्वितीयतथाआनंदस्वरूपब्रह्म मैंहूं । ऐसेयहअधिकारीमानताहै ।तिससेअनंतरसर्वकर्तव्यकाअभाव रूपकृतकृत्यताकोप्राप्तहोताहै॥इसीकारणसे ग्रंथकेआदिश्लोकमें श्रेष्ठ कथनकियाहै ।

❀ आत्मानमानंदं साक्षात् विनिश्चित्य ❀

अ० ॥ आनंदस्वरूपआत्माका श्रुतिसेसाक्षात् निश्चयकरके यहअधिकारीकृतार्थहोताहै ॥ इति ॥ पूर्वकथनकीहुईयुक्तियोंको श्रुतिमूलकता होनेकर तिनमेंआभासपनेकी निवृत्तिकरनेकेलिये आत्माकीआनंदस्वरूपताकथनकरनेवाली श्रुतियोंकोपठनकरतेहैं ।

❀ विज्ञानमानंदंब्रह्म ❀ (बृ० उ० अ० (५) ब्रा० ६ कं० २८)

अ० ॥ विज्ञानतथाआनंदस्वरूपब्रह्महै ॥ और

❀ कोह्येवान्यात्कः प्राण्याद्यदेषआकाशआनंदो नस्यात् ॥ तै० उ० ब्र० व० अनु० ७) ❀

अ० ॥ यदिहार्दाकाशमें यहआनंदस्वरूपआत्मानहोतोअपान चेष्टाकोकौनकरेतथा प्राणनचेष्टाकोकौनकरे। क्योंकिआनंदपूर्वकही प्राणऔरअपानकी क्रियाहोतीहै ॥ और

❀ सैषानंदस्य मीमांसाभवति॥ तै० उ० ब्र० व०अनु०८ ❀

अ० ॥ सोयहआत्माके आनंदस्वरूपका विचारहै ॥ इत्यादि वाक्यसेलेकर ॥

❀ यश्चायं पुरुषेयश्चासावादित्येसएकएव ॥ ❀

(तै) उ० ब्र० व० अनु० ८)

अ०॥जोयहआनंदस्वरूपआत्माइसशरीरमेंहै।औरजोवहआनंद स्वरूपआत्माआदित्यमंडलमें है वहएकहीहै। इत्यादिवाक्यपर्यंत तैतरेयउपनिषद्गत आनंदवल्लीमें आत्माकीआनंदस्वरूपता कथन कीहै। औरतिसीउपनिषद्गतभृगुवल्लीमें ॥

❀ भृगुर्वैवारुणिर्वरुणंपितरमुपससार अधीहिभग वोब्रह्मेति ॥ तै०उ० भृ० व० अनु० १ ❀

अ० ॥ वरुणऋषिकापुत्रभृगुऋषि अपनेवरुणपिताकेसमीप प्राप्तहुआ । औरकहाहेभगवन्मुझेआपब्रह्मउपदेशकरो ॥ इत्यादि वाक्यसेलेकर ॥

❀ आनंदोब्रह्मेतिव्यजानात् तै० उ० भृ० व० अनु० ६ ❀

अ० ॥ आनंदस्वरूपब्रह्महै ऐसेभृगुनेजाना इसवाक्यपर्य्यंत आत्माकीआनंदस्वरूपता कथनकीहै । औरछांदोग्यउपनिषद्के पष्ठमअध्यायमेंभी ॥ (योवैभूमातत्सुखं नाल्पेसुखमस्ति) अ० । जोव्यापकवस्तुहै वहसुखस्वरूपहै।परिच्छिन्नवस्तुमेंसुखनहींहै इत्यादिवाक्योंकर आत्माकी आनंदरूपता कथनकीहै । यहांअनेक वेदकीशाखागत श्रुतियोंको पठनकरनेवाले सिद्धांतीनेआत्माकी आनंदस्वरूपताकेप्रतिपादकवाक्योंकास्वार्थमेंतात्पर्य्यहै।इसमेंअभ्यास रूपलिंगदिखलायाहै ॥ औरकेवलश्रुतिप्रमाणसेहीआत्माकीआनंद रूपतासिद्धनहीं- किंतु मैत्रेयीब्राह्मणमें युक्तिकरभी आत्माकीआनंद रूपतासिद्धहै ॥ तथाहि ॥

❀ नवाअरेपत्युःकामायपतिः प्रियोभवतिआत्म नस्तुकामायपतिःप्रियोभवति। बृ० उ० मै०ब्रा०कं० ६

अ० ॥ अरेमैत्रेयीपतिकीकामनाकेलिये स्त्रीकोपतिप्यारानहीं। किंतुअपनीकामनाकेलिये पतितिसकोप्याराहै। इत्यदिवाक्यसेलेकर

❀ नवाअरेसर्वस्य कामायसर्वं प्रियंभवतिआत्मन स्तुकामायसर्वंप्रियंभवति ॥ (बृ०उ० मै०ब्रा०कं० ६)

अ० ॥ अरेमैत्रेयीसर्वकी कामनाके लियेसर्वप्यारेनहींकिंतु आत्माकीकामनाकेलियेसर्वप्यारेहैं। इसवाक्यपर्य्यन्तआत्माकीआनंद स्वरूपतायुक्तिसेकथनकीहैयातेपूर्वउक्तयुक्तियेंआभासरूपनहीं।इति।४२

❀ अथपूर्वपक्ष। आत्माकी आनंदरूपताकी असिद्धिनिरूपण ❀

आत्माकीआनंदरूपताश्रुतियोंने प्रतिपादनकीहै।ऐसेकथनकरनेवाले सिद्धांतीनेब्रह्मरूपआत्मामें आनंदत्वधर्मकथनकियाहै। यहहमको प्रतीतहोताहै। तैसेसत्चित्आदिशब्दोंकेप्रयोगकर्तासिद्धांतीनेब्रह्मा त्मामेंसत्त्वतथाचित्त्वादिधर्मभी अर्थसेकथनकियेहैं। यहभीप्रतीतहोता है। तिसमेंहमयहविचारकरतेहैं।हेसिद्धांतिन् आनंदत्वादिधर्मआत्मामें वर्ततेहैं।अथवानहींवर्तते।आनंदत्वादिधर्मआत्मामेंहैंइसप्रथमपक्षमेंयह विचारणीयहै। क्यावहधर्मसत्यहैं अथवाआरोपितहैंप्रथमपक्षमेंतोद्वैत कीप्राप्तिहोगी औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता।क्योंकिवहआनंदत्वस्वरूप सेहीकल्पितहै।अथवाआत्मामेंहीवह कल्पितहै। यहविचारकर्तव्यहै प्रथमपक्षमेंतोधर्मीकोअनानंदरूपताकीप्राप्तिहोगी।अर्थयहकोईपदार्थ आनंदस्वरूपनहींसिद्धहोगा॥ अबद्वितीयपक्षकोअन्यअर्थकेकथन द्वारानिषेधकरतेहैं॥ जैसेरजतत्वजिसअधिकरणमेंआरोपकियाजाता है वहअधिकरणरजतरूपनहींहोता॥ तैसेआनंदत्वभीआत्मामेंआरो पितहै वहआत्माआनंदस्वरूपनहींहोसकता॥ शंका ॥हेवादिन् यहअनानंदत्वजोआत्मामें तुमआपादनकरतेहो सोक्याहै। आनंदसे भिन्नकोअनानंदत्वकहतेहो। अथवाआनंदत्वकेअनधिकरणत्वकोअना नंदत्वकहतेहो? प्रथमपक्षमेंतोहमकोआपाद्यकीअप्रसिद्धिहै क्योंकि आनंदसे भिन्नघटादिकअनात्माहैं। आत्माआनंदसेभिन्ननहींयाते आपादनकरनेयोग्यआनंदत्वतिसमें नहींप्राप्तहोता॥ समाधान॥ यद्यपिआनंदभिन्नत्वरूप अनानंदत्वसिद्धांतीकेप्रति आपादनकरने योग्यनहीं तथापि आनंदत्वानधिकरणत्वरूप अनानंदत्व तिसमें होनेकरआनंदरूपतासिद्धनहीं होसकती। इसीअर्थकोसिद्धकरनेके

लियेप्रसंगसेआत्मामेंआनंदत्वअसतहैइसआद्यद्वितीयपक्षकोभीदूषित करतेहैं।औरयहद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता। क्योंकिआनंदत्वकेअनधि करणमेंआनंदव्यवहारकहींदेखनेमेंनहींआता।अर्थयहकिव्यवहारनाम शब्दप्रयोगकाहै।औरआनंदपदकीआनंदत्वविशिष्टमेंहीशक्तिग्रहणकीहै यातेआनंदत्वकेअनधिकरणघटादिकोंमेंआनंदपदकाप्रयोगलक्षणव्यव हार जैसेदेखनेमेंनहींआता।तैसेआत्मामेंभीआनंदपदका प्रयोगलक्षण व्यवहारनहींहोगा।इसप्रकारआनंदत्वानधिकरणत्वरूप अनानंदत्वही सिद्धांतीकेप्रतिआपादनकरनेयोग्यहै।शंका। हेवादिन्जहांप्रसिद्धविषया नंदोंमेंआनंदपदकीशक्तिग्रहणहोतीहै।तहांआनंत्यतथाव्यभिचारदोष केदूरकरनेकेलिये आनंदत्वविशिष्टआनंदव्यक्तियोंमें आनंदशब्द प्रवृत्तहो परन्तुयहब्रह्मानंदतो उपस्थितनहींहै । क्योंकिसर्वप्रमाणोंसे अतीतहोनेकरअलौकिकहै । तिसकारणसे आनंदत्वानधिकरणब्रह्मा नंदमें लौकिकव्यवहारका अभावआपादनकरना हमकोअनिष्टनहीं। और (योवैभूमातत्सुखम्)इसवैदिकसुखादिशब्दकेप्रयोगसेपरी क्षकपुरुषोंकोतिसअलौकिक ब्रह्मानंदमें आनंदव्यवहारसंभवताहै।जैसे स्वर्गमेंवैदिकसुखादिशब्दसे सुखव्यवहारपरीक्षकोंकोस्वीकारहै। याते आत्माआनंदस्वरूपहै ।।समाधान।। हेसिद्धांतिन्अलौकिकआनंदके स्वीकारकरेहुएब्रह्मानंदमेंवैदिकशब्दोंसेआनंदव्यवहारसिद्धहोजायेगा ऐसेकथनकरनेवालेआप हमारेकरपूछनेयोग्यहो । क्यापदार्थरूपता करवेद अलौकिकआनंदको प्रतिपादनकरताहै। अथवावाक्यकाअर्थ रूपताकरप्रतिपादनकरताहै?। प्रथमपक्षकहो तोनहींसंभवता।क्योंकि लौकिकतथावैदिक पदोंकाएकहीअर्थहै ।। शंका ।। लौकिक

आत्माकीआनंदरूपताश्रुतियोंने प्रतिपादनकीहै।ऐसेकथनकरनेवाले सिद्धांतीनेब्रह्मरूपआत्मामें आनंदत्वधर्मकथनकियाहै। यहहमको प्रतीतहोताहै। तैसेसतचित्आदिशब्दोंके प्रयोगकर्त्तासिद्धांतीनेब्रह्मा त्मामेंसत्त्वतथाचित्त्वादिधर्मभी अर्थसेकथनकियेहैं। यहभीप्रतीतहोता है। तिसमेंहमयहविचारकरतेहैं।हेसिद्धांतिन् आनंदत्वादिधर्मआत्मामें वर्त्ततेहैं।अथवानहींवर्त्तते।आनंदत्वादिधर्मआत्मामेंहैंइसप्रथमपक्षमेंयह विचारणीयहै। क्यावहधर्मसत्यहैं अथवाआरोपितहैंप्रथमपक्षमेंतोद्वैत कीप्राप्तिहोगी औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता।क्योंकिवहआनंदत्वस्वरूप सेहीकल्पितहै।अथवाआत्मामेंहीवह कल्पितहै। यहविचारकर्त्तव्यहै प्रथमपक्षमेंतोधर्मीकोअनानंदरूपताकीप्राप्तिहोगी।अर्थयहकोईपदार्थ आनंदस्वरूपनहींसिद्धहोगा॥ अबद्वितीयपक्षकोअन्यअर्थकेकथन द्वारानिषेधकरतेहैं॥ जैसेरजतत्वजिसअधिकरणमेंआरोपकियाजाता है वहअधिकरणरजतरूपनहींहोता॥ तैसेआनंदत्वभीआत्मामेंआरो पितहै वहआत्माआनंदस्वरूपनहींहोसकता॥ शंका॥ हेवादिन् यहअनानंदत्वजोआत्मामें तुमआपादनकरतेहो सोक्याहै। आनंदसे भिन्नकोअनानंदत्वकहतेहो। अथवाआनंदत्वकेअनधिकरणत्वकोअना नंदत्वकहतेहो?। प्रथमपक्षमेंतोहमकोआपाद्यकीअप्रसिद्धिहै क्योंकि आनंदसे भिन्नघटादिकअनात्माहैं। आत्माआनंदसेभिन्ननहींयाते आपादनकरनेयोग्यआनंदत्वतिसमें नहींप्राप्तहोता॥ समाधान॥ यद्यपिआनंदभिन्नत्वरूप अनानंदत्वसिद्धांतीकेप्रति आपादनकरने योग्यनहीं तथापि आनंदत्वानधिकरणत्वरूप अनानंदत्व तिसमें होनेकरआनंदरूपतासिद्धनहीं होसकती। इसीअर्थकोसिद्धकरनेके

लियेप्रसंगसेआत्मामेंआनंदत्वअसत्हैइसआद्यद्वितीयपक्षकोभीदूषित करतेहैं।औरयहद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता। क्योंकिआनंदत्वकेअनधिकरणमेंआनंदव्यवहारकहींदेखनेमेंनहींआता।अर्थयहकिव्यवहारनाम शब्दप्रयोगकाहै।औरआनंदपदकीआनंदत्वविशिष्टमेंहीशक्तिग्रहणकीहै यातेआनंदत्वकेअनधिकरणघटादिकोंमेंआनंदपदकाप्रयोगलक्षणव्यवहारजैसेदेखनेमेंनहींआता।तैसेआत्मामेंभीआनंदपदका प्रयोगलक्षण व्यवहारनहींहोगा।इसप्रकारआनंदत्वानधिकरणत्वरूप अनानंदत्वही सिद्धांतीकेप्रतिआपादनकरनेयोग्यहै।शंका। हेवादिन्जहांप्रसिद्धविषयानंदोंमेंआनंदपदकीशक्तिग्रहणहोतीहै।तहांआनंत्यतथाव्यभिचारदोष केदूरकरनेकेलिये आनंदत्वविशिष्टआनंदव्यक्तियों में आनंदशब्द प्रवृत्तहो परन्तुयहब्रह्मानंदतो उपस्थितनहींहै। क्योंकिसर्वप्रमाणोंसे अतीतहोनेकरअलौकिकहै। तिसकारणसे आनंदत्वानधिकरणब्रह्मानंदमें लौकिकव्यवहारका अभावआपादनकरना हमकोअनिष्टनहीं। और (योवैभूमातत्सुखम्)इसवैदिकसुखादिशब्दकेप्रयोगसेपरीक्षकपुरुषोंकोतिसअलौकिक ब्रह्मानंदमें आनंदव्यवहारसंभवताहै।जैसे स्वर्गमें वैदिकसुखादिशब्दसे सुखव्यवहारपरीक्षकोंकोस्वीकारहै। याते आत्माआनंदस्वरूपहै ॥समाधान॥ हेसिद्धांतिन्अलौकिकआनंदके स्वीकारकरेहुएब्रह्मानंदमेंवैदिकशब्दोंसेआनंदव्यवहारसिद्धहोजायेगा ऐसेकथनकरनेवालेआप हमारेकरपूछनेयोग्यहो। क्यापदार्थरूपता करवेद अलौकिकआनंदको प्रतिपादनकरताहै। अथवावाक्यकाअर्थरूपताकरप्रतिपादनकरताहै?। प्रथमपक्षकहो तोनहींसंभवता।क्योंकि लौकिकतथावैदिक पदोंकाएकहीअर्थहै ॥ शंका ॥ लौकिक

प्रमाणकीविषयतातथाअविषयताकर विषयानंदतथाब्रह्मानंदकीविलक्षणतापूर्वककथनकीहै ॥ समाधान ॥ इसअवांतरविषमतासे यदि लौकिक तथावैदिकपदोंका एकअर्थनहींमानोगेतोलोकवेदाधिकरणन्यायकाविरोधप्राप्तहोगा। औरजैसेनीलपीतादि अवांतरअनेकप्रकारकापटव्यक्तियोंकापरस्परभेदहुएभी सामान्यपटत्वरूपताकर उपस्थितहुए तिनसर्वपटोंकोपटशब्दकीवाच्यताहै ॥ तैसेसर्वआनंदव्यक्तियोंकापरस्परअवांतरभेदहुएभी सामान्यआनंदत्वरूपताकर वेष्टितकीहुई तिनसर्वआनंदव्यक्तियोंको आनंदपदकी वाच्यतायुक्तहीहै ॥ और यदिऐसेकहो किलौकिक आनंदशब्दकीही आनंदत्वविशिष्टव्यक्तिमें शक्तिग्रहणकीहै वैदिकआनंदशब्दकीनहीं।सोयहकथनभी समीचीन नहीं । क्योंकिलौकिकतथावैदिक शब्दोंकाअभेदहै। औरतिनशब्दोंकेभेदकाकथन स्वरादिउपाधिप्रयुक्तहै । इसप्रकारआनंदत्वकेअनधिकरणआत्मामें आनंदव्यवहारनहींसंभवता । लोकवेदाऽधिकरणन्यायजोपूर्वकहाथा।सोपूर्वमीमांसाके प्रमाणलक्षणरूपप्रथमअध्याय में स्थितहै ॥ तथाहि

॥ प्रयोगचोदनाभावादर्थैकत्वमविभागात् ॥

पू० मी० ॥ १ ॥ ३ ॥ २६ ॥

अ० ॥ इसआकृतिअधिकरणमें उपोद्घातरूपताकरलौकिक तथावैदिकपदपदार्थोंकाभेदतथाअभेद विचारकियाजाताहै।।तहांयह अधिकरणरचनाहै । लौकिकतथावैदिकपदपदार्थोंकाभेदहै। अथवा अभेदहै?। इससंशयकेहुएपूर्वपक्षप्राप्तहुआ लोकतथावेदमेंपदोंकाभेद है । क्योंकिस्वर्गादिधर्मकाभेद प्रतीतहोताहै ॥ औरपदोंकेभेदसेतिन

केअर्थकाभीभेदहै ॥ ऐसेपूर्वपक्षकेप्राप्तहुए सिद्धांतनिरूपणकरतेहैं ॥ (अर्थैकत्वं) पदतथापदार्थोंकाअभेदहै। क्योंकि (अविभागात्) यहां प्रत्यक्षप्रत्यभिज्ञाहोतीहै। जोहीवर्णलौकिकपदमेंप्रतीतहोतेहैं वहीवर्ण वैदिकपदमेंप्रत्यभिज्ञाकेविषयप्रतीतहोतेहैं॥ औरवर्णात्मकहीपदहोता है। तिसकारणसेलौकिकपदसे वैदिकपदकाभेद नहींसिद्धहोसकता॥ औरजोस्वरादिधर्मभेदसे पदोंकाभेदपूर्वपक्षीनेकहाथा वहभीनहींसंभ वता॥ क्योंकिअर्थकेभेदकाकारण जोधर्मभेदहै वहीपदकेभेदकाहेतु है ॥ औरसर्वहीधर्म भेदकेहेतुनहींसंभवते ॥ क्योंकिविकल्पसेहोने वालेस्वरादिकों में व्यभिचारहै॥ अर्थयह तहांधर्मकाभेदहुएभीपदका भेदनहीं है॥ इसप्रकारलौकिकतथावैदिकपदपदार्थोंकाअभेदमानेहुए क्रियातथाकारककासंबंधरूपप्रयोगविधियोंकाभीसंभवहै ॥ औरयदि तिनकाएकत्वनहींमानेंगे तोवैदिकपदार्थके ज्ञानका उपायनहोनेकर औरसंबंधकोशास्त्रमात्रकरसिद्धहोनेसे (प्रयोगचोदनाभावात्) प्रयोग विधियोंका अभावप्राप्तहोगा । यातेलौकिक तथावैदिकपदार्थोंका अभेदहीस्वीकारकरनेयोग्यहै। इसप्रकारपदार्थरूपताकरवेदअलौकिक आनंदकोप्रतिपादनकरताहै यहप्रथमपक्षनहींसंभवता । औरवाक्या र्थरूपताकरवेदआनंदस्वरूपताको प्रतिपादनकरताहै यहद्वितीयपक्ष भीसमीचीननहीं । क्योंकिवाक्यार्थत्वरूपताकरभी आनंदत्वकाप्रति पादननहींकरसकते। अखंडार्थमेंवेदका तात्पर्यस्वीकारहै । विशिष्ट अर्थमेंनहीं । औरहमारेमतमेंतोलौकिक तथावैदिक सर्ववाक्यों में वाक्यार्थअलौकिकहीहै । यातेलोकवेदाधिकरणन्यायकाविरोधनहीं। औरब्रह्मानंदकोकामनाकाविषयहोनेसेभीअलौकिकपनानहीं।क्योंकि

सर्वप्रकारसेअलौकिकआनंदमेंकिसीकोभीकामनानहींसंभवती।स्वर्गादिकोंकोभीलौकिक सुखकेसजातीयहोनेसेही पुरुषोंकीतिनमेंकामना होतीहै।। इसप्रकारद्वैतापत्तिआदिकदोषोंसेआनंदत्वकासत्तथाअसत् रूपताकरआत्मामेंनिरूपणहोनेसेआत्माआनंदरूपनहीं।।इतिपूर्वपक्ष।।

❀ अथएकदेशीसंक्षेप शारीरकाचार्यकेमतसे पूर्वपक्षकासमाधान निरूपण । ❀

इसपूर्वपक्षकासमाधानकोईएकआचार्यऐसेकहतेहैं।अनानंदकी व्यावृत्तिमात्रहीआनंदत्वहै प्रसिद्धविषयानंदस्वरूपहीआत्मानहीं।क्योंकिधर्मधर्मिभावअनंगीकारहैयहवार्तासर्वज्ञात्ममहामुनियोंनेकथनकीहै

❀ ब्रह्मेतराणिकिलनास्यवपूंषितेषांबुद्धौस्फुरंत्य परूपनिवृत्तिभावात्॥

अ० ॥ ब्रह्मसेभिन्ननित्यत्वादिक इसब्रह्मकास्वरूपरूपताकर बुद्धिमेंनहींस्फुरणहोते।क्योंकितिननित्यत्वादिकोंकोकालपरिच्छेदादिकोंकीनिवृत्तिरूपताहै ।।याते "आत्मानंदः" इसकाक्याअर्थहै ऐसी अपेक्षाकेहुएकहतेहैं।अनानंदकीव्यावृत्तिमात्रहीआनंदपदकाअर्थ है। तिसकारणसेअनानंदकी व्यावृत्तिरूपउपाधिसेआत्मामें आनंदशब्द प्रवृत्तहोताहै।।आनंदत्वधर्मकोसन्मुखरखकर आनंदशब्दआत्मामेंनहीं प्रवृत्तहोता।।यातेपूर्वउक्तविकल्पोंका अवकाशनहीं।।शंका।।आनंदत्व धर्मकीन्याई वहव्यावृत्तिभीक्यासत्है अथवाअसत्है?। इसविकल्पसे द्वैतापत्यादिदोषपूर्वकीन्याईहीअवस्थितहैं।। समाधान ।।हेवादिन्व्यावृत्तिसेद्वैतकीप्राप्तिनहींहोती।। क्योंकितिसव्यावृत्तिकोअधिष्ठानआत्मासेभिन्नपनानहींहै ।। इसप्रकारआनंदत्वधर्मकोलेकरजोदूषणवादीने

कहेथेतिनकोनिषेधकरके अबतिसीन्यायसेज्ञानत्वादिधर्मप्रयुक्तदूषण समुदायकोनिषेधकरतेहैं ॥ अज्ञानव्यावृत्तिहीज्ञानशब्दसेप्रतीतहोती है ॥ यातेअज्ञानकीव्यावृत्तिस्वरूपआत्मामेंही ज्ञानशब्दकीप्रवृत्तिहै ज्ञानत्वधर्मविशिष्टआत्मामें ज्ञानशब्दकीप्रवृत्तिनहीं ॥ यहरीति सत्यादिशब्दोंमेंभीजानलेनी ॥ इति ॥

※अथएकदेशीके मतकीअसमीचीनताकानिरूपण※

सोयहएकदेशीकामतसमीचीननहीं। तथाहि । आत्मामेंआनंदादि शब्दकीप्रवृत्तिमेंव्यावृत्तिक्याउपाधिहै।अथवाआनंदादिपदोंकावहवाच्य है? प्रथमपक्षकहोतोवहनहीं संभवता।क्योंकिव्यावृत्तिकोआत्मासेभिन्न तुमनेमानानहीं।इसीसेतिसकोउपाधिरूपतायुक्तनहीं । औरद्वितीयपक्ष भीनहींसंभवता।क्योंकिव्यावृत्तिकिसीपदकाअर्थनहींहै।औरव्यावृत्तिको पदार्थमानेहुएअपोहवादकीप्राप्तिभीहोगी॥औरअन्योऽन्याश्रयदोषकी प्राप्तिसेअपोहवादभीयुक्तनहीं। क्योंकिव्यावृत्तिकीसिद्धिअर्थव्यावर्तक धर्मअवश्यकथनकरनेयोग्यहै।अन्यथाव्यावृत्तिकीही सिद्धिनहींहोगी औरव्यावर्तकधर्मकीसिद्धिव्यावृत्तिकेआधीनहै ॥ औरयदिस्वरूपसे व्यावृत्तिकीसिद्धिकहो तोयहभी समीचीननहीं। क्योंकिआत्माअव्या वृत्तस्वरूपहै । यदिआत्माकोअव्यावृत्तस्वरूपनहींमानोगे तोवस्तुपरि च्छेदयुक्तहोनेसे तिसकोअब्रह्मपनाप्राप्तहोगा ॥ यातेयहमतसमीचीन नहीं ॥ इति ॥

※अथएकदेशिविवरणाचार्यकीरीतिसेपूर्व पक्षकासमाधान※

औरकोईअन्यथाचार्यपहकहतेहैं । आनंदत्वादिधर्म जिनमें

कल्पितहैं वहहीआनंदादिपदोंकेअर्थ लोकतथावेदमेंप्रसिद्धहैं॥शंका लोकमेंतोविषयजन्यसुखकोहीआनंदकहतेहैं। तिसमेंआनंदत्वकल्पित नहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् तिसविषयसुखमेंभीआनंदत्वकल्पित है ॥ औरतिनकाधर्मधर्मिभावभेदाऽभेदरूपताकरननिरूपणाहोनेकर अयुक्तहै ॥ शंका ॥

❋ आत्माकल्पितःकल्पितधर्माऽधारत्वात् । मिथ्यारजतवत् ❋

अ०॥ आत्माकल्पितहै। कल्पितधर्मकाआधारहोनेसे । जोजो कल्पितधर्मकाआधारहोताहै । सोसोमिथ्याहोताहै। जैसेमिथ्यारजत है॥ इति ॥ इसअनुमानसेआत्माकोकल्पितपनामानेहुए पुरुषार्थरूप ताकरवहउपादेयनहींहोगा ॥ समाधान ॥ हेवादिन् आनंदत्वको कल्पितमाननेकरआनंदरूपताकी किंचितमात्रभीहानिनहीं । क्योंकि धर्मकोअनुपादेयहोनेकरतिसके आश्रयभूतव्यक्तिकोहीपुरुषार्थरूपता सेउपादेयताहै। औरजोकल्पितधर्मकाआधारहोताहै सोकल्पितहोताहै इसव्याप्तिकाकल्पितरजतके आधाररूपशुक्तिखंडमें व्यभिचारहै। तिस कारणसेयहांयहअनुमानजानना ॥

❋ विमतःआत्माआनंदरूपःआनंदत्वाधिकरणत्वात्। लौकिकानंदवत् ॥❋

अ० ॥ विवादकाविषयआत्मा आनंदस्वरूपहै।आनंदत्वका अधिकरणहोनेसे॥ जोजोआनंदत्वकाअधिकरणहै।सोसोआनंदरूप है॥ जैसेप्रसिद्धविषयानंदहै ॥इति॥ इसप्रकारआनंदत्वधर्मकोसन्मुख रखकरआनंदशब्द आत्मामेंप्रवृत्तहोताहै ॥ औरतिसकोकल्पितहोने

करद्वैतकीप्राप्तिभीनहींहोती ॥ इति ॥

❀ अथएकदेशीकेमतकानिराकरण ॥❀

सोयहएकदेशीकामतभी विनाविचारसे सुंदरवस्तुकीन्याई सुंदरभासताहै । विचारकरनेसे समीचीननहीं । यहांयहतात्पर्य्यहै । आनंदत्वधर्मआनंदशब्दकीप्रवृत्तिमें उपलक्षणहै।अथवाविशेषणहै?॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकिव्यक्तिमात्रमेंशक्तिहोनेसेअनंत शक्तियोंकीकल्पनाप्राप्तहोगी। औरआनंदपदसेकिसीविशेषव्यक्तिकी प्रतीतिभीनहींहोगी । क्योंकिआनंदत्वधर्म सर्वआनंदव्यक्तियोंका समानउपलक्षणहै । किसीविशेषव्यक्तिकाउपलक्षणनहींमाना। याते प्रत्येकव्यक्तिकीसमानरूपतासे उपस्थितिहुए किसीविशेषव्यक्तिकी प्रतीतिआनंदपदसेनहींहोगी । औरद्वितीयपक्षमें यहविचारकर्तव्यहै क्याशुद्धव्यक्तिसेविशिष्टपदार्थभिन्नहै। अथवाअभिन्नहै?॥ इनमेंप्रथम पक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिविशिष्टकोहीआनंदपदका अर्थहोनेसे व्यक्तिमात्रमें आनंदपदकीवाच्यताअनुपपन्नहै।औरतिसविशिष्टको आनंदपदकाअर्थमानेहुएअखंडवाक्यार्थकीअसिद्धिहोगी।औरद्वितीय पक्षभीनहींसंभवता॥ क्योंकिकल्पितआनंदत्वके आश्रयकोअनानंद त्वप्रसंगकीनिवृत्तिनहींहोसकती।' इसीअर्थकोस्पष्टकरतेहैं ।' जो धर्म जिसअधिकरणमें स्वाभाविकनहीं । वहअधिकरणतिसधर्म वालापदार्थनहींहोसकता।यदिऐसेनहींमाने तोकल्पितरजतकेआधार शुक्तिकोभीरजतपदकीअर्थताहोगी। यहांयहतात्पर्य्यहै । कल्पितधर्म केआश्रयकोवास्तवसे तिसधर्मकीआधारतानहीं । यदिऐसेनमानेतो धर्मकोकल्पितपनाही नहींसिद्धहोगा ॥ किंवा ॥

❀ आत्माकल्पितः कल्पितधर्माधारत्वात् ॥ मिथ्यारजतवत् । ❀

इसपूर्वोक्तअनुमानसेआत्माकोकल्पितपनाभीहोगा।औरशुक्ति खंडमेंजोहेतुका व्यभिचारपूर्वकहाथा सोभीनहींसंभवता । क्योंकि कल्पितरजतकीआधारता शुक्तिकेस्वरूपप्रयुक्तनहीं । यदिआधारता कोशुक्तिकेस्वरूपप्रयुक्तमानोगे तोरजतकीनिवृत्तिहीनहींहोगी। और अज्ञातशुक्तिकोही आधारताहै शुद्धकोनहीं।औरअज्ञानविशिष्टशुक्ति कोशुद्धशुक्तिरूपताकाअभावहै । तिसकारणसेहेतुव्यभिचारीनहीं । इसप्रकारदोनोंएकदेशियोंकेमतोंको निषेधकरके अबसिद्धांती स्वमत कीरीतिसे पूर्वपक्षकासमाधाननिरूपणकरताहै ॥

❀ अथसिद्धांतरीतिसे पूर्वपक्षकासमाधान ❀

मू०। उपाधिसंश्रयोह्यात्मा आनंदत्वंतदाश्रयः ।
विशिष्टशक्यपक्षेतु व्यक्तिर्वाशक्तिगोचरः ॥४२

तारकछंद ॥ यहआतमदेवउपाधियुताहो, बिंबरुपधरेसुखआनंदतासो
इमवाच्यविशिष्टविषेयहरीता, पदवाचलव्यक्तिविषेसुनमीता।

टी०॥ यदिलोकमेंआनंदत्वधर्मविशिष्ट आनंदहीआनंदशब्द काअर्थहै तोइसपक्षमेंभीआत्माही आनंदपदार्थहै । क्योंकिविशिष्ट पदार्थविशेषणतथाविशेषादिरूपहीहोताहै। तैसेमानेहुए विशेषणजो आनंदत्वसामान्यहै।औरतिसकाआश्रयभूतजो आनंदव्यक्तिहैवहदोनों आत्माहीहैं। आतमाकोउभयरूपताकिसप्रकारहै । ऐसीजिज्ञासाकेहुए कहतेहैं ।जैसेएकहीस्वरूपजोसर्वकल्पनासेरहितमुखतथाचन्द्रादिहैं ॥ तिनमेंबिंबतथाप्रतिबिंब औस्वरूपयहतीनप्रकारकाव्यवहार उपाधिमें

प्रविष्टत्वकेआरोपसेअनंतरदेखनेमेंआताहै। यहपूर्वलक्षणास्थलमेंकह आएहैं। तैसेसर्वकल्पनासेरहितएकहीआत्माअंतःकरणकीवृत्तिविशेष रूपनानाउपाधियोंमेंप्रतिबिंबितहोकरतिनवृत्तियोंकर अवच्छिन्नहुआ व्यक्तिरूपताकोप्राप्तहोताहै।औरउपाधियोंकरभेदकोप्राप्तहुईतिनआनंद व्यक्तियोंमेंबिंबकीन्याईअनुगतबुद्धिकाउत्पादकहोनेसेआत्माहीआनंद त्वस्वरूपसामान्यकोप्राप्तहोताहै।यातेसर्वप्रकारसेमुख्यआत्माहीआनंद पदकाअर्थहै। इसप्रकारव्यक्तिहीअनुगतबुद्धिका कारणहोनेसेसामा न्यशब्दकावाच्यहै। औरविशेषाकारबुद्धिकाहेतुहोनेसे व्यक्तिशब्द कावाच्यहै। यहवार्त्तातंत्ररत्ननामग्रंथके कर्त्तानेभीकहीहै॥

*** नहिजातिर्नामव्यक्तेरर्थांतरभूतं किमपितत्त्व मस्त्यपितुवस्त्वेवहिएकंव्यावृत्तानुगततयाबुद्ध्यते।**

अ०॥ व्यक्तिसेभिन्नजातिनामकोईभी पदार्थनहींहै॥ किंतु एकहीपदार्थभिन्नभिन्नतथा अनुगतरूपताकरजानाजाताहै॥ इति आत्माकीउभयरूपतालोकमें अप्रसिद्धहै इसअभिप्रायकोलेकरपक्षां तरको सिद्धांतीनिरूपणकरताहै॥ अथवा व्यक्तिहीलोकमें तथावेदमें पदकीशक्तिकाविषयहै॥शंका॥ व्यक्तिशक्तिवादमेंसर्वव्यक्तियोंमेंशक्ति काग्रहणहोताहै।अथवाकिन्हीविशेषव्यक्तियोंमेंशक्तिकाग्रहणहोताहै?। प्रथमपक्षतोनहींसंभवता।क्योंकिव्यक्तियोंकोअनंतहोनेकरपदसेसर्वकी उपस्थितिअनुपपन्नहै औरद्वितीयपक्षभीअसंगतहै॥ क्योंकिजिनविशेष व्यक्तियोंमेंपदकावाच्यवाचकभाव संबंधग्रहणहुआहै तिनसेभिन्न व्यक्तियोंमेंप्रवर्त्तमानहुआशब्द अपनेवाच्यार्थसेव्यभिचारीहोजायेगा। औरयदितिनव्यक्तियोंमेंभी अन्यशक्तिकी कल्पनाकरेंतोअनंतशक्तियों

कीकल्पनाप्राप्तहोगी ॥ यातेव्यक्तिशक्तिपक्षअयुक्तहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्जहांदोनोंपक्षोंमें तुल्यदोषहोनहांपरिहारकीभीतुल्यताहोती है ॥ सोयहांविशिष्टशक्तिपक्षमेंभी आनंत्यतथाव्यभिचारदोषकीतुल्यताहै ॥ अवआनंत्यादिदोष विशिष्टशक्तिपक्षमेंभी उपपादनकरनेके लिये सिद्धांतीविशिष्टकी अनेकरूपताकोनिरूपणकरताहै॥विशेषणकोएकहुएभीविशेष्योंके भेदसे विशेष्यविशेष्यप्रतिविशिष्टकाभेदहै॥ जैसेघटत्वरूप विशेषणकोएकहुएभी घटव्यक्तिरूपविशेष्यकोअनंत होनेकर विशिष्टभीअनंतहैं॥ औरयदिऐसेकहोकिविशेषणकोएकहोने करविशिष्टकीभीएकतासंपादनहोसकतीहै सोयहकथनभीअयुक्तहै। क्योंकिअशक्यअर्थके संपादनकरनेकोकोईभीसमर्थनहींहोसकता ॥ औरवहविशिष्टकीएकता असतहोनेसेजाननेयोग्यभीनहीं ॥ याते विशिष्टकोपदका वाच्यमाननेमेंभी आनंत्य तथाव्यभिचारदोष अवश्यहीप्राप्तहोताहै ॥ शंका ॥ व्यक्तिकोनानाहुएअनुगतव्यवहार कैसेसिद्धहोगा ॥ औरवाच्यभूतव्यक्तिकी अन्यअवाच्यपदार्थोंसे भिन्नरूपताकरप्रतीतिकैसेहोगी । औरआनंत्यादिदोषकापरिहारकैसे है ॥ समाधान ॥ हेवादिन्जिसकारणमे विशिष्टपक्षमेंभीदोषोंकी तुल्यताहैतिसकारणसेआनंदपदकाअवाच्यजोवाच्यताकाअवच्छेदक आनंदत्वहै तिसकरही अनुगत वाच्यव्यवहारतथा अवाच्यकी व्यावृत्तिव्यवहारसंभवताहै ॥शंका॥ हेसिद्धांतिन्अवाच्यजोवाच्यताकाअवच्छेदकहै तिसकरअनुगतादिव्यवहारहोताहैयहआपकैसेकथन करतेहोजिसकारणसेगोपदसेगोत्वविशिष्टव्यक्तिकीहीउपस्थितिहोतीहै। याते तिसवाच्यता अवच्छेदकमेंभीपदकीशक्तिहै।समाधान। हेवादिन्

वाच्यताअवच्छेदकमैंशक्तिकल्पनाकरनेमें प्रमाणकाअभावहै । जैसे कारणताकाअवच्छेदककारणकेस्वरूपसेबाह्यहोताहै। तैसेवाच्यताका अवच्छेदकभीवाच्यसेबाह्यहै। तिसमेंपदकीशक्तिनहीं ॥ औरगोपदसे गोत्वकीप्रतीति तोशक्तिसेंबिनाभीसंभवतीहै । क्योंकिगोपदकीगो व्यक्तिमैंशक्तिग्रहणसे उत्पन्नहुएसंस्कारकेबलसे गोत्वकीउपस्थिति होतीहै ॥ तिसमैंगोपदकीशक्तिनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन् इस प्रकारआपकोभी उक्तसंस्कारसहकृतआनंदादिपदसे आनंदत्वविशिष्ट आत्माकीप्रतीतिहोनेसे आनंदपदसेशुद्धकीउपस्थितिनहींहोगी।तिस सेअखंडवाक्यार्थ नहींसंभवेगा॥ समाधान ॥ हेवादिन् आनंदत्वभी पूर्वउक्तरीतिसेआत्माहीहै । क्योंकिव्यक्तिसेभिन्न सामान्यअंगीकार नहींहै ॥ औरउपाधिकोवाच्यकोटिसे तटस्थहोनेकरआनंदादिपदसे शुद्धलक्ष्यार्थकीहीउपस्थितिसंभवतीहै ॥ यातेअखंडार्थकीअनुपपत्ति नहीं ॥ यहअर्थपूर्वनिरूपणकरआएहैं ॥ तिसकारणसेआत्माकी आनंदस्वरूपतामें कोईभीअनुपपत्तिनहीं ॥ इति ॥ ४३ ॥

❋ अथआचार्य्यकीकृतकृत्यताकानिरूपण ❋

इसप्रकारआत्माकी आनंदादिरूपताश्रुतितथायुक्तिसे निर्णीत हुएतत्त्वमस्यादिमहावाक्यसेउत्पन्नहुए ब्रह्मात्माकेसाक्षात्कारसेआत्माके आवरकअज्ञानकेबाधितहुए स्वात्मारामजोआचार्य्य है वहअपनीकृत कृत्यता जिज्ञासुकेबोधकी दृढताअर्थप्रकटकरताहै॥

मू० ॥ आनंदरूपमात्मानंसच्चिदद्वयतत्त्वकम् ।
अपूर्वादिप्रमाणोक्तंप्राप्याहंतद्वपुःस्थितः ॥४४॥

सवैया ॥ जाहिनिमित्तसबीप्रियलागत तांहितुआनदरूपबखाना॥

बाधविहीनचिदेकसुभावजु आतमद्वैतविहीनलखाना।
श्रुतियुक्तिबखानतजाहसरूपह सोहमितीअपरोक्षपछाना।
जानभलेनिजआतमकोततरूपअवस्थितमैंनिरवाना॥३७॥

टी० ॥ श्रुतिप्रमाण औतिसकेअनुसारीयुक्तिनेजिसआत्माको सतचित्आनंदतथाअद्वैतस्वरूप प्रतिपादनकियाहै ॥ वहसत्चित् आनंदतथाअद्वैतस्वरूपब्रह्ममेंहूंऐसेतिसआत्माकोसाक्षात्कारकरकेतिस आनंदादिरूपताकरही मैंस्थितहुआहूं ॥४४॥ शंका ॥ द्वैतसहितको अद्वयस्वरूपतानहींसंभवती ॥ क्योंकिद्वैतग्राहिप्रमाणकाविरोधहै ॥ समाधान ॥

मू० ॥ योहमद्वयवस्त्वेवसद्वयेदृढनिश्चयः।
प्राप्यचानंदमात्मानंसोहमद्वयविग्रहः ॥४५॥
नास्तिब्रह्मसदानंदामितिमेदुर्मतिःस्थिता।
क्वगतासानजानामियदाहंतद्वपुःस्थितः ॥४६॥

स्व० ॥ द्वैतविहीनजुपूरबमैंसदु तीयविषेदृढनिश्चितहुआ।
आनदआतमलाभभएअब मैंअदुतीयसरूपसुहुआ ।
सतआनदआतमनासतभान सदोपसदाथिरमेमनहुआ ।
नहिजानपरेकहिंभागगयोजबहीततरूपअवस्थितहुआ।३८॥

टी०॥ जोमैंप्रथमअद्वयवस्तुहुआहीभ्रांतिकरद्वैतविशिष्टस्वरूपमेंदृढ निश्चयवालाहुआथा अबआनंदस्वरूपआत्माको प्राप्तहोकरसोई मैं अद्वैतस्वरूपस्थितहूं।तात्पर्य्ययहहै।अद्वैतस्वरूपआत्माकोसत्‌रूपताकर अधिष्ठानताहोनेसेतिससे भिन्नद्वैतकोअज्ञानकरकल्पितपनाहै। याते द्वैतप्रतीतिकोभ्रमपनाहोनेसे अद्वयस्वरूपतामें किसीप्रमाणकाविरो

धनहीं ॥ ४५॥ शंका ॥ ब्रह्मकोसतरूपहोनेसे अधिष्ठानताहै यहकथननहींसंभवता ॥ क्योंकि " ब्रह्मनहीं है" यहप्रतीतिब्रह्मके असत्वपनेकोविषयकरतीहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् "अस्तिब्रह्मेति चेद्वेद"इत्यादिश्रुतिजन्यबोधका विरोधहोनेसे वहप्रतीतिनहींसंभवती इसीअर्थकोस्पष्टकरतेहैं ॥ "सच्चिदानंदस्वरूपब्रह्मनहींहै" यहदुष्ट बुद्धिजोमेरेहृदयमेंस्थितथी जबमैंतिसब्रह्मरूपताकर स्थितहुआ तबमैं नहींजानता जोवह दुर्बुद्धिकहांचलीगई ॥ ४६ ॥ शंका ॥ पूर्वोक्त दुर्मतिकेनाशहुएभी "देहोहम्" इत्यादिआंतरजगत्बाह्यजगत्की न्याईसतहै मिथ्यानहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन्यहतुम्हारा दृष्टांत असिद्धहै "तथाहि" ॥

मू०—पूर्णानंदाद्वयेतत्वे मेर्वादिजगदाकृतिः ।
बोधेऽबोधकृतैवासीदबोधःक्वगतोऽधुना ।४७।
संसाररोगसंग्रस्तो दुःखराशिरिवापरः ।
आत्मबोधसमुन्मेषादानंदाब्धिरहोस्थितः ।४८

स्वै०॥ द्वैतविहीन सुपूरनआनद तत्त्वविषेजगआकृतजोई ।
भासतथी तमआतमकेवल बोधभएअबसोकतगोई ॥
जगरोगनतेबहुपीडितथो दुखराशिसमानभयोअधमोई ।
बोधनिजातमके प्रगटेअब आनदसिन्धुविषेथिरहोई ॥२६॥

टी०॥ पूर्णतथाआनंदऔद्वैतसेरहित अनारोपितस्वरूपआत्मा में मेरुआदिकबाह्यजगत्काआकारजोभासताहैसोअज्ञानकाकार्यहोनेसे मिथ्याहै ॥ शंका ॥ प्रपंचको अज्ञानकाकार्य मानेहुएभीअज्ञानको अबाधितहोनेसे वहअज्ञानब्रह्मकीन्याईसत्यहै।यातेतत्मूलकजगत्भी

मिथ्यानहींकिंतुसत्यहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् जेसेदीपककेउदयहुए प्रतीतनहींहोता जोअन्धकारकहांभागगया ॥ तैसेब्रह्मात्माका साक्षात्कारउदयहोनेसे जानानहींजाता जोअज्ञानकहां चलागया ॥ यातेज्ञानकरबाधकेयोग्य अज्ञानमिथ्याहै औरतत्मूलकजगत्भी मिथ्याहै॥४७॥शंका॥ ज्ञानतथाअज्ञानकाहीविरोधहै । तिसकारणसे सुखस्वरूपआत्माकाआवरक जोअज्ञानहै । तिसकीतत्त्वज्ञानसेनिवृत्ति हुएभीसंसारकीनिवृत्तिकैसेहोगी।क्योंकितिसकेसाथज्ञानकाविरोधनहीं ॥समाधान॥ हेवादिन्उपादानकीनिवृत्तिहोनेसे कार्यकीभीनिवृत्तिहो जातीहै । जेसेतंतुरूपउपादानकेनाशसे पटकानाशहोजाताहै ॥ इसीअभिप्रायसेकहतेहैं । बोधसेपूर्वजोमैंसंसाररूपरोगसे अत्यंतग्रस्त हुआ दुःखकीराशिवत् अतिदीनहुआथा।अबआत्मबोधकेसम्यक्प्रकट होनेसेआनंदका समुद्रहुआ मैंस्थितहूं यहअत्यंतहर्षहै (४८) "आनं दाब्धिः" यहविशेषणपूर्वकारिकामें जोकहाथा तिसका फलउत्तर कारिकामें कहतेहैं ॥

मू० ॥ योहमल्पेपिविषयेरागवानतिविह्वलः।
आनंदात्मनिसंप्राप्तेसरागःक्वगतोऽधुना॥४९॥
यस्यमेजगतांकर्तुःकार्यैरपहृतात्मनः ।
आविर्भूतपरानंदआत्माप्राप्तःश्रुतेर्बलात् ॥५०॥

स्वै० ॥ जुइमेंअतिअल्पविषेसुखमें अतिरागिव्याकुलभायफिरा।
सतआनदआतमलाभभयेअबरागकहांवहजायथिरा ।
जगकेकरतासुभकोजुसरूप सुकारजनेबहुभांतिहिरा ।
अबआविरभूतपरानंदआतम लाभभयोबलवेदशिरा॥४०

टी० ॥ जोमैंअत्यंततुच्छविषयसुखमैंप्रीतिवालाहुआ अत्यंत व्याकुलचित्तहुआथा ॥ अबआनंदस्वरूपआत्माका सम्यकलाभहुए जानानहींजाता । जोवहरागकहांचलागया । और रागमूलकही प्रवृत्तिहोतीहै । औरनिरतिशयसुखमेंसर्वविषयसुखोंकाअंतर्भावहोनेसे निरतिशयसुखकेप्राप्तहुए वहसर्वविषयसुखप्राप्तहोजातेहैं।औरप्राप्तवस्तुमें कामनाकाअभावहोताहै।यातेविषयसुखकेअर्थप्रवृत्तिकाअभावसंभवता है॥४९॥ शंका ॥ अज्ञानकोआनंदस्वरूपआत्माकाआवरकपनानहीं संभवता ॥ क्योंकि सुषुप्तिकालमें अज्ञानकोविद्यमानहुएभीसुखकी प्रतीतिहोतीहै। यदिऐसेनमाने तो "सुखमहमस्वाप्सम्"यहस्मरणभी सुषुप्तिसेउठेहुएपुरुषको नहींहोगा ॥ समाधान॥ हेवादिन् कार्याकार परिणामकोप्राप्तहुआअज्ञान सुखकेभानकाप्रतिबंधकहै । स्वरूपसे प्रतिबंधकनहीं । इसीअभिप्रायसेकहतेहैं । जिसमुझजगतकेअधि ष्ठानकास्वरूपबोधसेपूर्व कार्य्याध्यासोंकरआच्छादितथा । अबश्रुति जन्यबोधसेवहीमेरापरमानंदस्वरूप निरावरणहुआप्राप्तहुआहै ॥५०॥ शंका ॥ हेसिद्धांतिन् आत्माप्रथमसर्वकोअपरोक्षभानहोताहै ॥ क्योंकि "अहमस्मि" यहप्रतीतिसर्वकोहोतीहै ॥ औरतिसआत्मासे भिन्नब्रह्मभीअपरोक्षहै । औरआत्मापूर्वउक्तरीतिसे भानहोताहीहै॥ तैसेमानेहुए ब्रह्मसाक्षात्कारतोप्रथमहीसिद्धहै। पुनःसंसारकाभानकैसे होताहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् यहांआत्माकाज्ञानतुमकैसाकहतेहो क्या "मैंकर्ताहूं" इसप्रकारकाआत्माकाज्ञानहै ॥अथवा "मैंशुद्धब्रह्म स्वरूपहूं"ऐसाआत्माकाज्ञानहै।इनमेंप्रथमपक्षतोनहींसंभवता।क्योंकि वहज्ञानतोअनात्माको विषयकरनेवालाहै । तिससे संसारकीप्रतीति

दूरनहींहोसकती।औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता क्योंकिविचारसेप्रथम ऐसेआत्मसाक्षात्कारकी असिद्धिहै । इसीतात्पर्य्यसेकहतेहैं ॥

मू० ॥ परामृष्टोसिलब्धोसिप्रोषितोसिचिरंमया।
इदानींत्वामहंप्राप्तोनत्यजामिकदाचन ॥५१॥
त्वांविनानिःस्वरूपोहंमांविनात्वंकथंस्थितः।
दिष्ट्येदानींमयालब्धोयोसिसोसिनमोस्तुते५२

स्वै०॥ चिरकालवियुक्तहुते मुझसे अनवेषनतेअवलाभतुझे।
तुझकोहुइप्रापतमेंअवही नहिंदूरकरोंकवहींमेंतुझे।
किहुतोरविनाममरूपनहीं अरुमोरविनाथितकेसतुझे।
हमेरेकरलब्धभए अवहो पुनजोतुम सोतुमवंदतुझे॥२१॥

टी० ॥ हे परमात्मन् दीर्घकालसे आपमेरेसेवियुक्तहुएथे।अब वेदांतविचारसेआपकालाभहुआहै।अबआपकोमें अभेदरूपतासे प्राप्त हुआ कदाचितत्यागनहींकरूंगा ॥ ५१ ॥ शंका ॥ तुमत्यागकरदो तिससेक्यादोषहै ॥ समाधान ॥ हेपरमात्मन् आपसेविनामें निःस्व- रूपहूं । क्योंकिब्रह्मकोमनरूपहोनेकर तिससेभिन्नको असत्पनेकी प्राप्तिहोगी । इसकारणसेआपकात्यागनहींसंभवता । औरमुझसेविना आपकीभीस्थिति कैसेसंभवेगी।क्योंकिब्रह्मको प्रत्यगात्मासेभिन्नमाने हुए जडताकी प्राप्तिहोतीहै । इसलिये आपकोभीमेरा त्यागनहीं संभवता । अत्यंतहर्ष है जो आजमुझसे अभिन्नरूपताकर आपप्राप्तहुए हो । इसकारणमेंजसेआपहो वेसेआपहीहो अन्यकिसीको आपकी तुल्यताका अभाव होनेसे आपउपमासे रहितहो । ऐसे आप कोनमस्कारहै ॥ ५२ ॥ मिथ्याबंधकीनिवृत्ति रूपउपकारकेकर्ता

होनेसेआपनमस्कारके योग्यहो इसीअभिप्रायसेकहतेहैं ॥

मू०॥ देहेऽहंमानानिगडैर्वद्धो ऽवोधाख्यतस्करैः।
चिरंतेदर्शनादेवत्रुटितं वन्धनंक्षणात्॥ ५३ ॥
विशुद्धोऽस्मिविमुक्तोऽस्मिपूर्णात् पूर्णतमाकृतिः
असंस्पृश्यतमात्मानमंतर्ब्रह्माण्डकोटयः ।५४॥

स्वै०॥तन आतम बुद्धि कुबंधहुते नमसंज्ञकचोरनबांधलयो ।
चिरसेतुमरे करदर्शनदेव कुबंधनतूटछिनेकगयो ।
अतिशुद्ध विमुक्तसरूपअहं पुनपूरनतेअतिपूरभयो ।
ममरूपविषेजगकोटिवसे परताहिसपर्शनलेशभयो ॥ ४२ ॥

टी० ॥ अज्ञानादिकचोरोंने देहविषयकअहंबुद्धि आदिकदृढ बंधनोंसेजोमैंचिरकालसेबांधाहुआथा।अबहेस्वप्रकाशस्वरूपपरमात्मन् आपके दर्शनमात्रसेही चोरोंकेसहित वहसकल बंधन एकक्षणमें विनाशकोप्राप्तहोगये ॥ इसहेतुसेआपनमस्कारकेयोग्यहो ॥ ५३॥ शंका ॥ बद्धतथामुक्तमेंक्याविलक्षणताहै?॥ क्योंकिआत्मातोदोनों मेंतुल्यहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन्बद्धतथामुक्तकीविलक्षणतालोकमें हीप्रसिद्धहै ॥ क्योंकिबद्धपुरुषमें मलिनतातथान्यूनताऔरदीनता देखनेमेंआतीहै ॥ औरबंधनसेरहितमुक्तपुरुषमें बद्धसेविलक्षणता शुद्धतादिकदेखेजातेहैं । इसीअभिप्रायसेकहतेहैं॥ मैंअविद्यादिमलसे रहितविशुद्धहूं ॥ क्योंकिद्वितीयवस्तुकाअभावहै । औरपूर्णजो आकाशादिकहैं तिनसेभीमैंअतिपूर्णहूं ॥ यातेत्रिविधपरिच्छेदसेमें रहितहूं ॥ इसनिरतिशयमहत्त्वकोहीसपष्टकरतेहैं । मुझब्रह्मात्माको नस्पर्शकरकेअनंतब्रह्मांडकल्पितरूपताकरमेरेआश्रितहैं।इसीसेमेंपूर्णसे

अतिपूर्णस्वरूपहूं। इसप्रकारआत्माकोसमानहुएभीज्ञानतथाअज्ञानकृत विलक्षणतामुक्ततथाबद्धमेंसंभवतीहै॥५४॥ तत्त्वसाक्षात्कारकासाधन जोअंतःकरणकीशुद्धिहै तिसकेहेतुभूतवेदाऽध्ययनतथायागादिसाधनों काअनुष्ठानभी आत्मसाक्षात्काररूप कार्यलिंगसेब्रह्मवेत्तामेंसिद्धहै । इसीअभिप्रायसेकहतेहैं ॥

❀ मू०॥ तत्त्वमादिवचोजालमावृत्तमसकृत्पुरा ।
इदानींतत्श्रवादेवपूर्णानंदोऽव्यवस्थितः ॥५५॥

चौ० ॥ वेदवाक्यजोआहसमस्ते । अनेकवारपूरवअभ्यस्ते ॥
अवततश्रौतवोधतेकेवल । पूर्णानंदथिरामेंकेवल ॥४३॥

टी० ॥ पूर्वसकलवेदवचनोंका अनेकवारमेंनेअभ्यासकिया । यहवेदवचनोंकाअभ्यास अन्यसाधनोंकाभीउपलक्षकहै।इसलियेअष्टा चत्वारिंशत्संस्काररूपवहिरंग तथानित्यानित्यवस्तुकाविवेक तथा वैराग्यादिअंतरंगसाधनभीमुझमेंप्राप्तहै ॥ अष्टाचत्वारिंशत्संस्कार यहहैं । गर्भाधान १ । पुंसवन २ । सीमंत ३ । जातकर्म ४ । नामकरण ५ । अन्नप्राशन ६ । चौल ७ । उपनयन ८ । चारवेद व्रत १२ । स्नान १३ । सह धर्मचारिणीसंयोग १४ ॥ यहगर्भा धानादिचतुर्दशसंस्कारकहेजातेहैं । चारवेदव्रतयहहैं । प्राजापत्य १ सौम्य २ । आग्नेय ३ । वैश्वदेव ४ ॥ और देवयज्ञ १। भूतयज्ञ २ पितृयज्ञ ३ । ब्रह्मयज्ञ ४ । मनुष्ययज्ञ ५ ॥ यहपांचमहायज्ञहैं । और अष्टका १ । पार्वण २ । श्राद्ध ३ । श्रावणी४ । आग्रहायणी ५ । चैत्री ६ । आश्वयुजी ७ ॥ यहसप्तसोमसंस्थाहैं। औरअग्न्या धान १ । अग्निहोत्र २ । दर्शपूर्णमास ३, ४ । आग्रयण ५ ।

चातुर्मास्य ६। निरूढपशुबन्ध ७। यहसप्तहविसंस्थाहैं ॥ और सौत्रामणि१। अग्निष्टोम २। अत्यग्निष्टोम३।उक्थ ४। षोडशि ५। वाजपेय ६। अतिरात्र ७। यहसप्तपाकसंस्थाहैं। औरअन्नभक्षणकर केवेदसंहिताकाअध्ययन १ । प्रायण २ । कर्म ३ । जप ४ । उत्क्रमण ५ । दैहिक ६ । भस्मकाएकत्रकरना ७ । अस्थियोंका संचयन ८। यहपूर्वउक्तसर्वेमिलाकरअष्टाचत्वारिंशतसंस्कारहोतेहैं। सोब्रह्मवेत्तानेयहसर्वही पूर्वअनुष्ठानकरलियेहैंयहभावहै। इसप्रकार साधनसंपन्नहोकर गुरुशरणपूर्वकवेदांतविचारसेउत्पन्नहुआ जोआत्म साक्षात्कारतिससेहीमुक्तिहोतीहै कर्मसहितज्ञानसेनहीं ॥ इसलिये संन्यासकोभीआत्मसाक्षात्कारकीसाधनताहै॥ इसअर्थकोसूचनकरने केलियेकहतेहैं। अबवेदांतश्रवणादिजन्यआत्मसाक्षात्कारसेहीपूर्ण तथाआनंदरूपताकरमैंस्थितहुआहूं॥५५॥ इतिआनंदपदव्याख्या॥

❋ अथआत्माकीआनंदरूपताकीअस्फुरतिमेंप्रतिबंधकनिरूपणद्वाराअदृष्टद्वयपदकीव्याख्याकाप्रारंभ।

अथपूर्वपक्ष ॥ हेसिद्धांतिन् पूर्वआत्माकीआनंदरूपताकथन की सोनहींसंभवती॥ क्योंकिआनंदरूपताकरआत्माप्रतीतनहींहोता यहांयहअनुमानजानना ॥

❋ आत्मानआनंदरूपःतद्रूपेणाप्रतीयमानत्वात्। घटादिवत्॥❋

अ०॥ आत्माआनंदस्वरूपनहींहै। आनंदरूपताकरनप्रतीतहोनेसे। जोआनंदरूपताकरनहींप्रतीतहोता। वहआनंदरूपनहींहोता। जैसे घटादिकहैं॥इति॥शंका॥यहपूर्वपक्षहीनहींसंभवता॥क्योंकिअद्वयानंद

रूपताकरितसयात्माकोअज्ञानकीविषयताहै॥इसस्थलमेंपूर्वहीआनंद अंशकोअज्ञानकरआवृत्तपनाअस्फुरणमेंकारणकथनकियाहै।यातेपुनः तिसीअर्थकाविचारकरनेसे पुनरुक्तिदोषप्राप्तहोगा ॥ समाधान ॥ तथापिआवरण करनेवालेअज्ञानादिविषयकविचारद्वारातिसीअर्थको अत्यंतदृढकरनेकेलिये "स्थूणानिखननन्याय" सेपुनः ग्रंथकर्त्ता आचार्यप्रवर्त्तमानहोताहै । यातेपुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिनहीं ॥ इसीसे यदिपूर्णानंदस्वरूपआत्माहै तोसंसारकालमें सर्वकोक्योंनहींभान होता? ॥ यहपूर्वपक्षसंभवताहै ॥ शंका ॥ हेवादिन् (मानभूवम् किंतुभूयासमेव) अ० ॥ मैनहोवोंयहनहींकिंतुमैंसर्वकालहोवोंइस प्रकारकीनिरुपाधिक इच्छाकाविषयरूपताकर आत्माप्रथमसर्वकोभान होताहै ॥ वहीसुखकास्फुरणाहै ॥ तिससेभिन्नसुखनहींहै।भावयहपरम प्रीतिकाविषयरूपताकर जोआत्माकास्फुरणहै। यहीआनंदस्वरूपका स्फुणहै।याते "अप्रतीयमानत्व" हेतुस्वरूपासिद्धहै ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् । क्यावास्तवसेनिरतिशय आनंदरूपआत्मा परमप्रीति काविषयरूपताकरभासताहै ॥ अथवानिरतिशयआनंदस्वरूपमेंहूं ऐसायहपुरुषअभिमानकरताहै?प्रथमपक्षतोहमकोभीस्वीकारहै । और द्वितीयपक्षनहींसंभवता ॥ क्योंकितिसप्रकारकेअभिमानकाअभावहै। यद्यपि "सुखमहमस्वाप्सम्" इसपरामर्शमें सुखरूपताकायहपुरुषअभि मानकरताहीहै।क्योंकिअनुभवपूर्वकही स्मृतिज्ञानहोताहै । तथापि

एतस्यैवानंदस्याऽन्यानि भूतानिमात्रामुपजीवन्ति ।

(बृ० उ० अ० ६ ब्रा० ३ कं० ३२)

अ०॥ इसआनंदस्वरूप आत्माकेहीलेशमात्रआनंदकोआश्रयण

करकेअन्यसर्वप्राणधारिजीवनको धारणकरतेहैं ॥ इत्यादिश्रुतिसे मोक्षकालमेंजैसाआनंदस्वरूपआत्मासुनाजाताहै।तैसेआनंदकाअभिमानकिसीकोभीनहींहोता ॥ शंका ॥ हेवादिन्जोसुखसुषुप्तिकालमेंभानहोताहैवहभीनिरतिशयसुखहीहै।क्योंकिनित्यआत्मसुखमेंकिसीप्रकारकीअतिशयतानहींसंभवती ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन्

❀ आनंदंब्रह्मणो रूपंतच्चमोक्षे प्रतिष्ठितम् ❀

अ० ॥ जोआत्माकी आनंदस्वरूपताहै सोमोक्षकालमेंही अवस्थितहै। इसश्रुतिसेमोक्षकालमेंतिस नित्यआनंदकी अभिव्यक्ति श्रवणहोतीहै ॥ यातेसंसारअवस्थासेमोक्षकालमेंआनंदकीअधिकता होनेसे नित्यसुखमेंभी अतिशयताकासंभवहै॥ औरमैंआनंदस्वरूप हूं" इसप्रकारकेअभिमानको ज्ञानविशेषहोनेकरसुषुप्तिकालमेंतिसका अभावहै। यातेतिसकालमें आनंदभासताहुआभी स्पष्टनहींभासता। शंका॥ हेवादिन्आत्माके आनंदस्वरूपकीजोअप्रतीतिहै। सोआत्माकीअनानंदरूपतासेनहीं किंतुसंसारअवस्थामें प्रतिबंधकेसद्भावसेहैइस कारणसेआत्माकीआनंदरूपताके भासमानहुएभी इसपुरुषकोविशेष अभिमाननहींहोता ॥ समाधान ॥

अथआनंदरूपताके अभानमेंप्रतिबंधककाविचार।

हेसिद्धांतिन्वहप्रतिबंधककौनहै । क्याअज्ञानहै॥ अथवातिस काकार्यहै ? प्रथमपक्षमेंभीयह विचारणीयहै ॥ क्याजीवकाअज्ञान आनंदरूपताकेभानमेंप्रतिबंधकहै।अथवापरमात्माकाअज्ञानप्रतिबंधकहै? अन्त्यपक्षतोनहींसंभवता । क्योंकिसर्वज्ञ तथानिर्दोष तिसपरमात्मा निष्ठअज्ञानकाअभावहै । औरप्रथमपक्षभीनहींसंभवता । क्योंकि

❁ नान्योतोस्तिद्रष्टा।अनेनजीवेनात्मना।तत्त्वमसि।❁
अयमात्माब्रह्म ॥

इत्यादिकश्रुतिवचनोंसे तिसजीवात्माका परमात्माकेसाथअभेद श्रवणहोताहै।। यातेतिसजीवमेंभी अज्ञानकाअभावहै।। औरयदिऐसे कहो किजीवनिष्ठभीकल्पनामात्रसेहीअज्ञानहै वास्तवसेनहीं। सोयह कथनभीअसंगतहै। क्योंकिपरमात्मामेंभी अज्ञानप्राप्तहोगा। जिस कारणसेजीवकेसाथ तिसकाअभेदहै ॥ शंका ॥ हेवादिन् अज्ञान जीवात्मामेंभीनहीं है।तथाबिंबरूपपरमात्मामेंभीनहीं है।किंतुनिर्विभाग चेतननिष्ठअज्ञानहै। यहपूर्वनिरूपणकियाहै। यातेवहअज्ञानसर्व रूपतासेआनंदकेभानकाप्रतिबंधकहीहै ॥ समाधान ॥ हेसिद्धांतिन् तिसअज्ञानसेआत्माकीआनंदरूपताकाजोप्रतिबंधहै।सोक्यावास्तवहै। अथवाअनवधानमात्रसेआनंदकीअप्रतीतिहोनेसेवहप्रतिबंधकल्पितहै? प्रथमपक्षतोनहींसंभवता।। क्योंकियदिसंसारअवस्थामेंप्रतिबंधसेरहित आनंदकाभानहीनहींहोता तोकिसकीप्राप्तिसेबंधकीनिवृत्तिहोगी ॥ संसारीकीप्राप्तिसेतोसंसारकीनिवृत्तिनहींसंभवती। औरयदियहद्वितीय पक्षकहो किसंसारअवस्थामेंभी वास्तवप्रतिबंधसेरहितआनंदविद्यमान हीहै परन्तुआनंदस्वरूपआत्मामें अज्ञानसे "अनवधान" अर्थात् प्रमादमात्रहीप्रतिबंधहै वास्तवसेकोईप्रतिबंधनहीं ॥ इसीअर्थकोउप पादनकरतेहैं।केवलअज्ञानसेउत्पन्नहुआ जोद्वैतरूपसंसार तिसकेअंतः पातिजोशब्दादिविषयरूपविष तिसकेआधीनहुआ जोपुरुषहै। पुनः तिनविषयोंकेदर्शनकालमेंभी तिनकीअत्यंतभावनासे प्रादुर्भावहुई जोविषयरूप कुंडितिसकर जिसकाहृदय आकर्षण कियाहुआहै ॥

पुनःपरमप्रियतमतथासर्व जगतके ईश्वरतथासर्व अंगोंमें ओत प्रोत रूपताकर अत्यंतसमीपस्वस्वरूपकेदर्शनकोक्षणमात्रभी जोप्राप्तनहीं होसकता।यहांपरयहभी जानलेना (यत्साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म) इसश्रुतिसेसिद्ध जो "अतिसमीपता" तिसकरएकतादर्शनकेयोग्यहै यहसूचनकिया ॥ और (योवैभूमातत्सुखम्) इसश्रुतिसे ब्रह्म कीसुखरूपताश्रवणहोतीहै।सो"परमप्रियतम"इसपदसेकथनकी।और

❋ आनंदाद्धेवखल्वेमानिभूतानिजायंते ❋

अ०॥ आनंदसेही यहदृश्यमानभूतउत्पन्नहोतेहैं । इसश्रुतिसे अनंदस्वरूपआत्माकोजगत् की कारणता श्रवण होनेसेईश्वरपनाभी कथनकिया।और "ओतप्रोत" पदसेउपादानताकथनकी। इति। तिस पूर्वउक्तविशेषणयुक्तपुरुषको विषयोंकेदर्शनसेआत्मामें सुखरूपताका अनवधानमात्रहीप्रतिबंधहै वास्तवसेकोई प्रतिबंधनहीं ॥ जैसेअपने कंठमेंस्थितमालादिकोंकाअज्ञानसेअनवधानमात्रही प्रतिबंधहोता है वास्तवनहीं ॥ शंका ॥ जैसेविषभीऔषधादिकउपायनसेत्यागाजाता है॥तैसेविवेकसे विषयरूपविषका त्यागभीसंभवता है ॥ समाधान ॥ तिन विषयोंके दर्शनादिकोंकीकामनावाले पुरुषको विवेकहीउदय नहींहोसकता । यातेतिसकात्यागनहीं संभवता ॥ शंका ॥ यद्यपि विवेकनहींसंभवता ॥ तथापिविषयानंदको क्षणिकहोनेसेही तिससे वैराग्ययुक्तहोनातोयोग्यहीहै॥ समाधान ॥ विषयोंकेदर्शनकरहीसर्व आयुकोपूर्णहोनेसेवैराग्यका होनाभीदुर्घटहै। यातेआत्माकीविस्मृति संभवती है । इसप्रकार अद्वैततथासुखस्वरूपआत्मामें दुःखादितया द्वैतसाहित्यादिकोंकादर्शनहीप्रतिबंधहै। यहांअज्ञानकाकार्यप्रतिबंधहै

यहपूर्वकथनकियाहूआद्वितीयपक्षइसीके अंतर्भूत जानलेना। सोयह द्वितीयपक्षभीनहीं संभवता ॥ क्योंकि द्वैतदर्शनरूपप्रतिबंधकेआश्रय कानिश्चयनहींहोसकता ॥ तथाहि ॥

❋ अथद्वैतद्रष्टाकेस्वरूपकाविचारऔरतिसकानिषेध ❋

वहद्वैतद्रष्टाकौनहै।क्यावहपरमात्माहै। अथवाजीवहै?।अथवाकोई अन्यहै?। इनमेंप्रथमपक्षतोनहींसंभवता। क्योंकि तिससर्वज्ञपरमात्मा निष्ठभ्रमकेकारणरूप अज्ञानका अभावहोनेकर तिसकोद्वैतदर्शनकी अनुपपत्ति है। और।

❋ यस्याज्ञानंभ्रमस्तस्यभ्रान्तः सम्यक्चवेत्तिसः ❋

अ० ॥ जिसकोअज्ञानहोताहै तिसीकोभ्रमहोताहै। औरभ्रम युक्तहुआवहीयथार्थजानताहै"॥ इसन्यासेअज्ञानऔभ्रमतथायथार्थ ज्ञानइनतीनोंकोसमानाधिकरणताका निश्चयहोनेसे अविद्यावालेमेंही तिनकासंभवहै ॥ अविद्यादिदोषसेरहित परमात्मामें इनकासंभव नहीं। इसलियेपरमात्मामें द्वैतद्रष्टृत्वनहींसंभवता। औरयदिअविद्या वालाजीवद्वैतकाद्रष्टाहै यह द्वितीयपक्षकहो तोयहभीनहींसंभवता। क्योंकि (नान्योतोऽस्तिद्रष्टा) इत्यादिश्रुतियोंमेंतिसजीव कापरमात्माकेसाथअभेदकथनकियाहै। इसकारणसेसर्वज्ञपरमात्मासे अभिन्नजीवनिष्ठभ्रमकेकारण रूपअज्ञानकाअभावहोनेसेतिसभ्रमका कियाहुआद्वैतदर्शनभीतिसकोनहींसंभवता॥शंका॥जैसे"तदेवेदंमुखम्" इस प्रत्यभिज्ञासेबिंब तथाप्रतिबिंबकी एकताकेहुएभी श्यामतातथा लघुत्वादिधर्मप्रतिबिंबमें भासतेहैं ॥ औरस्वच्छतातथाविशालतादि धर्मबिंबमेंहोतेहैं ॥क्योंकिउपाधिकोप्रतिबिंबके पक्षपातित्वकानियम है

तैसे अज्ञानरूपउपाधिकृत द्वैतदर्शन तथा अल्पज्ञतादिधर्मजीव निष्ठहीहोतेहैं । सर्वज्ञपरमात्मानिष्ठनहींहोते। यातेजीवतथा ईश्वरका अभेदहुएभीबिंबप्रतिबिंबकीन्याई सर्वज्ञतातथाद्वैतदर्शनकीउपपत्तिहै। समाधान॥ यहांदृष्टांततथादार्ष्टांतकी विषमताहोनेसेपूर्वउक्तव्यवस्था नहींसंभवती । इसीकोस्पष्टकरतेहैं ॥ दृष्टांतमेंतोदर्पणरूपउपाधि प्रथमसिद्धहै । तिसमेंप्रतिबिंबभावहोनेसेअनंतर मलिनतातथास्वच्छ तादिधर्मोंकीव्यवस्थाकर उपपत्तियुक्तहै ॥ औरदार्ष्टांतमेंतो अन्यो ऽन्याश्रयदोषप्राप्तहोनेसे सर्वज्ञतादिधर्मोंकी व्यवस्थानहींसंभवती । क्योंकिद्वैतदृष्टिकरप्रकटहुआजो अज्ञानतत्कार्यरूपद्वैतहैतिसकोबिंबप्र तिबिंबभावकाउपाधिहोनेकर तिसमेंप्रवेशसे अनंतरतिसकेसंबन्धसेबिंब प्रतिबिंबभावकीकल्पना होतीहै॥ औरतिसकल्पनाकेहुए प्रतिबिंबरूप जीवद्वैतकाद्रष्टाहै यहकल्पनाहोतीहै ॥ इसप्रकारद्वैतद्रष्टाप्रथमसिद्धहो तोअज्ञानादिरूपउपाधिकीसिद्धि औरउपाधिकेसिद्धहुएद्वैतदृष्टाकी सिद्धिहै । तिसउपाधिकीसिद्धिसेपूर्वद्वैतद्रष्टाके व्यवस्थापककी अनुप पत्तिहै ॥ यातेअन्योन्याश्रयदोषप्राप्तहोनेसे यहप्रकारनहींसंभवता। शंका। अनादिसिद्ध अज्ञानरूपउपाधिमें प्रतिबिंबरूपद्रष्टाकोभी अनादि होनेकर "तिसप्रतिबिंबकल्पनासेपूर्व द्रष्टाकीव्यवस्थानहींसंभवती" यहवादीकाकथननहींसंभवता॥ यातेअन्योऽन्याश्रयदोषकीप्राप्तिनहीं होती॥ समाधान ॥ पूर्वउक्तप्रकारसेजीवद्रष्टाहो परंतुवहसादिहै ॥ अथवाअनादिहै ? । यहविचारकर्त्तव्यहै ॥ प्रथमपक्षकहोतोजीवको द्रष्टापनासिद्धनहींहोगा ॥ क्योंकिअनादिसिद्ध अज्ञानकेद्रष्टाको भीअनादिसिद्धताहीकहनेयोग्यहै । यातेप्रथमपक्षअसंगतहै॥शंका॥

जीवसेभिन्नपरमात्माही अनादिसिद्धद्रष्टाहो।।समाधान।। वहअनादि सिद्धद्रष्टाकथनकरनेके अयोग्यहै ।। शंका द्वैतकेद्रष्टाकाअभावतुम किसप्रकारकहतेहो जिसकारणसे साचीहीद्वैतकाद्रष्टाविद्यमानहै ।। समाधान।। वहसाचीक्यापरमात्माहै।अथवाजीवहै? प्रथमपत्तमेंभीयह कहाचाहिये ।। क्यावहपरमात्मारूपसाची स्वअविद्यादिकोंकाद्रष्टाहै अथवाजीवनिष्ठ अविद्यादिकोंकाद्रष्टाहै ? ।। इनमेंप्रथमपत्ततो नहींसंभवता।क्योंकितिससर्वज्ञपरमात्मानिष्ठ स्वअविद्याकाअभावहोने करतिसकाद्रष्टापनाअनुपपन्नहै ।। औरसर्वज्ञकोभीअन्यकीअविद्या काद्रष्टाहोनेसेकोईविरोधनहीं यदियहद्वितीयपत्तकहो तोतिसमें भीयह विचारकर्त्तव्यहै । क्याजीवब्रह्मकाभेदवास्तवहै अथवाअवास्तवहै? ।। अन्त्यपत्ततोनहींसंभवता ।। क्योंकिअपनेसेभिन्नजीवकीअविद्याका द्रष्टाहोनेकरपरमात्माको भ्रांतपनाप्राप्तहोगा।।तात्पर्ययहहै।किस्वविषय कतोअविद्याकाअभावहै ।। क्योंकिवहसर्वज्ञहै।औरअपनेसेभिन्नअन्य कोईअविद्याकाआश्रयनहींहै ।। इसकारणसेस्वभिन्नमें अविद्याको देखतेहुएपरमात्मानिष्ठ भ्रांतत्वप्रसंगअवश्यहोगा ।। औरयदिब्रह्ममें भ्रांतपनानिवारणकरनेकेलिये जीवब्रह्मकावास्तवहीभेदहै यहप्रथम पत्तस्वीकारकरो तोयहभीनहींसंभवता।।क्योंकि (नान्योतोस्ति द्रष्टा) इसशास्त्रकाविरोधप्राप्तहोगा ।।शंका ।। परमात्माहीद्वैतका द्रष्टाहो।औरद्वैतकाद्रष्टामाननेसे सर्वज्ञताकाभीविरोधनहीं । क्योंकि अविद्याकेनिवर्त्तकप्रमाणजन्यज्ञानकी आश्रयताका नामसर्वज्ञतानहीं किंतुस्वरूपचेतनसेअपनेमेंअध्यस्तसर्वजगतकीप्रकाशकताहीसर्वज्ञता है।।औरस्वरूपचेतनअविद्याकाविरोधीभीनहीं।क्योंकितिसकोअविद्या

कासाधकरूपनाहै ॥ यातेपरमात्माहीद्वैतकाद्रष्टाहै ॥ समाधान ॥ परमात्माकोद्वैतद्रष्टृत्वनहींसंभवता ॥ क्योंकि ॥ (निरवद्यंनिरंजनं) श्र० ॥ वहपरमात्माअविद्यासेरहितहै ॥ औरतत्कार्यसेभीरहितहै ॥ इसश्रुतिने अविद्यातत्कार्यकातिसमें निषेधकथन कियाहै । औरयदिऐसेकहो कियहवाक्यवास्तव अविद्याकानिषेध कहै ॥ कल्पितअविद्याका निषेधकनहीं । यातेअविद्याके निषेधकवाक्यकाअन्यविषय होनेकर कल्पितअविद्यादिकों के निषेध कोवहनहींकथनकरता ॥ सोयहकथनभीसमीचीननहीं । क्योंकि अविद्यामात्रमेंशक्तिवाला जोअविद्याशब्दहै तिसकोवास्तवअविद्या परमानेहुए लक्षणाकीप्राप्तिहोगी। औरमुख्यअर्थकीअनुपपत्तिसेविना लक्षणाकास्वीकारदोषरूपहै ।किंवा॥ वास्तवरूपअविद्याप्रसिद्धहै।वा नहीं? । प्रथमपक्षमेंतोद्वैतापत्तिहोगी। औरब्रह्मकीन्यांइतिसकानिषेध भीनहींसंभवेगा। । औरद्वितीयपक्षमेंभीनिषेधनहींसंभवता । क्योंकि अप्रसिद्धवस्तुकानिषेध कोईनहींकरसकता किंतुप्रसिद्धकाही निषेध कियाजाताहै ॥ इसप्रकारपरमात्माकोद्वैतद्रष्टृत्वनहींसंभता ॥ और अनादिसिद्धजीवरूपसाक्षीद्वैतकाद्रष्टाहै।यहद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता क्योंकिजीवभावकोअविद्याकेउत्तरभावीहोनेकर अनादित्वकाअसंभव है ।।औरयदिऐसेनमानेतोअविद्याकीनिवृत्तिहुएभीजीवभावकीनिवृत्ति नहींहोगी ॥ क्योंकिअनादिभावकीनिवृत्तिनहींहोती ॥ औरसंसारिभावकेअनिवृत्तहुएअनिर्मोक्षप्रसंगहोगा ॥ पूर्वजीवसादिहैवाअनादि है यहदोविकल्पकियेथे। तिनमेंअनादिपक्षका निराकरणइसपूर्वउक्त अनादिपक्षके निराकरणसेहीजानलेना ॥ इति ॥ अत्रअन्यहीकोई

द्रष्टाहै इसतृतीयपक्षको निषेधकरतेहैं॥ औरतृतीयपक्षभीनहींसंभवता क्योंकिजीवतथापरमात्मासेभिन्नसर्वअनात्मपदार्थोंकोजडहोनेकरद्रष्टापनेकाहीअसंभवहै॥ औरयदिऐसेकहो किजीवतथाईश्वरइनदोनोंमें अनुगत जोसामान्यचेतनहै वहींद्वैतकाद्रष्टाहै॥ सोयहकथनभीनहीं संभवता॥ क्योंकितैसेमानेहुए अविद्याकोभीतिसअनुगतचेतननिष्ठ हीकथनकरनाउचितहै ॥ तिसकारणसेपरमात्माकीन्याईनिर्दोष तथा भ्रमसेरहितजीवकोभीअनायाससर्वज्ञतातथानित्यमुक्ताकीप्राप्तिहोगी क्योंकितिसमेंभी परमात्माकीन्याईअविद्याकाअभावहै ॥ किंवाजीव तथाईश्वरमेंअनुगतसामान्यचेतन द्वैतकाद्रष्टाहै । इसपक्षमेंअन्योन्याश्रयदोषकीभीप्राप्तिहोतीहै ॥ तथाहि ॥तृतीयपक्षमेंअनुगतचेतनको द्रष्टापनासिद्धहुए तिसकेआधीनउपाधिशब्दकेवाच्यरूपअज्ञानादिकों कीसिद्धिहै।औरतिसउपाधिकेसिद्धहुएतिसकेआधीनबिंबप्रतिबिंबसंज्ञक परमात्मातथाजीवरूपदोप्रकारकेविभागकी अपेक्षाकरसामान्यचेतनरूप तृतीयप्रकारकीसिद्धिहै॥इसप्रकारअन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिसेयहपक्षभी समीचीननहीं ॥ यातेंद्वैतद्रष्टाकीअसिद्धिहोनेकर तिसकेआश्रितरहने वालाद्वैतदर्शनरूपप्रतिबंधभीअसिद्धहै ॥ इति ॥

ॐ अथगुरुशिष्यकेसंवादद्वारापुनःद्वैतद्रष्टाकेस्वरूप काविचार ॐ

शंका॥हेशिष्य अविद्याकोअनंगीकारकरेहुए तिसविषयकप्रश्न औरआक्षेपनहींसंभवता ॥ इससेतुमप्रश्नकर्त्ता अथवाआक्षेपकर्ताको हीअविद्याकाद्रष्टापनायुक्तहै॥यहवार्त्ता[प्रश्नस्यज्ञानपूर्वत्वात्] इसकारिकाकेव्याख्यानमें जोअविद्याविषयक प्रश्नकरनेवालाहै वही

अविद्याकाद्रष्टाहै॥ ऐसेअर्थसेकथनकरआएहैं ॥अथवा।आक्षेपकरने वालाहीतिसकाद्रष्टाहै।इसप्रकारद्वैतद्रष्टाकास्वरूपपूर्वनिरूपणकरनेसे पुनःतिसविषयप्रश्ननहींसंभवता।समाधान। हेभगवन्यद्यपिसामान्यसे मुझद्वैतद्रष्टाकास्वरूपपूर्वनिरूपणकियाहै।तथापितिसीमुझद्वैतद्रष्टाका स्वरूपअबविशेषकरआपनेतत्त्वनिर्णयकेअर्थ कथनकरनाचाहिये।और यदिआपऐसेकहोकिजोतुमअपनेआत्माकोभीनहींजानते"कियहमैंहूं" औरयहमैंपूछताहूं ॥ ऐसेतुझकोप्रश्नकरनाहीकैसेसंभवेगा । क्योंकि कौनद्वैतकाद्रष्टाहै?इसप्रकारकाप्रश्नअविद्याकेद्रष्टातुझको अपनेस्वरूप केनजाननेकरनहीं संभवता ॥ प्रश्नकेविषयकाअज्ञानहुए तिसविषय कशब्दप्रयोगकीहीअयोग्यताहै । सोयहआपकाकथनभीसमीचीन नहींप्रतीतहोता ॥ क्योंकिअज्ञातअर्थविषयकहीप्रश्नसंभवताहै॥ यदि ऐसेनहींमानोगे तोप्रष्टव्यअर्थके ज्ञानसेतथाप्रष्टव्यअर्थके अज्ञानसे प्रश्नकरनानहींसंभवेगा ॥ और

नापृष्टःकस्यचिद्ब्रूयान्नचान्यायेनपृच्छतः॥
जानन्नपिचमेधावीजडवल्लोकमाचरेत् ॥

अ० ॥ यहविद्वान्नपूछाहुआ किसीकोनकथनकरे ॥ और अन्यायसेअर्थात्केवलबुद्धिकी परीक्षाकेअर्थ प्रश्नकरनेवालेकोभीन कथनकरे॥ औरसर्वअर्थकोजानताहुआभी तथाअर्थकीस्मृतिवाला हुआभीजडकीन्याईलोकमेंविचरे ॥इसन्यायसे आपभीविद्वानकथन करनेकोअसमर्थहै । यातेसर्वशास्त्रआरंभका रोदनहोजायेगा । अर्थात्निष्फलहोगा ॥ शंका ॥ हेशिष्य प्रश्नकेविषयकाअज्ञानहुए तिसविषयकशब्दका उच्चारणरूपशब्दरचना कैसेसंभवेगी॥ क्योंकि

तिसकारणसे शरीरहीआत्माहै । ऐसेस्थूलदर्शिचार्वाकवौधकहतेहैं । और कोईइन्द्रियोंकोही आत्मा कहतेहैं क्योंकि ज्ञानके साथइन्द्रियों का अन्वयव्यतिरेक प्रतीतहोताहै ॥ जब इंद्रियहों तोज्ञान होताहै मृतशरीरमेंइंद्रियनहींहोते तबज्ञानभीनहींहोता ॥ इसप्रकारकेअन्वय व्यतिरेकसेइन्द्रियोंकोज्ञानकीकारणतासिद्धहुएउपादानकोश्रेष्टताहोने सेतिनइन्द्रियोंकोद्रष्टापनाउचितहै। और "अहंकाणः । अहंबधिरः" इत्यादिअहंप्रत्ययकी विषयताभी तिनमेंहोनेसे इन्द्रियहीद्रष्टाहैं । और कोईएक ऐसेकहतेहैं । स्वप्नमेंइन्द्रियोंको स्वस्वव्यापार सेउपरतहुए मनकीतिसकालमें अनुवृत्तिहोनेसे तथाबंध मोक्षादि सर्वव्यवहार मनकेआधीन होनेकर और " अहंमनः " इसअहं प्रत्ययकीविषयतासे मनहीआत्माहै । यद्यपि "अहंमनः" यहप्रतीति स्पष्टनहीं।तथापि "हर्षशोकवानहम्"यहप्रतीति सर्वकोप्रसिद्धहै।और हर्षशोकादिधर्मवालामनहीहै। याते"अहंमनः" यहप्रतीतिभीसंभवती है।औरक्षणिकविज्ञानवादीवौध तोयहकहतेहैं।क्षणिकविज्ञानरूपबुद्धि सेभिन्नमनकाअभाव है क्योंकिबुद्धिकेआधीनही मनकाव्यापार होताहै।यातेविज्ञानहीआत्माहै।यहांबुद्धिपर्य्यंतपदार्थोंकाजोकथनहैवह अन्यअन्तरपदार्थोंकाभी उपलक्षकहै ॥ इसलियेयथायोग्यअंतरतथा अव्यभिचारित्वतासेजो संभवहो वहभीस्वस्वरूपकरग्रहणकरनेयोग्यहै बुद्धिसेअंतरजोआनंद मयकोशहैतिसकोनैयायिकऔरभाट्टतथाप्राभा करमतवाले तथाशून्यवादिवौधआत्मा कहतेहैं । यातेइनमें किसी एकको अथवा इनके समुदायको तुम आत्मरूपताकर ग्रहण करो इसप्रकारश्री गुरुकरशिष्यकास्वरूपउपदेशकियेहुए अबशिष्यतिन

सबकोनिषेधकरताहै ॥ समाधान ॥

* देहआत्मवादादिकोंका निराकरण *

हेभगवन् तिनशरीरादि पदार्थोंके मध्यकोईएकएक अथवा तिनके समुदायको आत्मस्वरूपताकी अनुपपत्तिहै । तिनको आत्म स्वरूपताकी अनुपपत्तिमें चारप्रकारका अन्वयव्यतिरेक हेतुरूपता करकहतेहैं ॥ जिसकारणसेशरीरादिकसर्वपदार्थ अज्ञानकाकार्यहैं इसीसेतिनकोव्यभिचारी होनेकर आत्मरूपतानहींसंभवती ॥ इस कथनसेकार्यकारणका अन्वयव्यतिरेकदिखलाया । यद्यपिअज्ञानही कारणहै आत्मानहीं यातेअज्ञानकोही आत्मरूपताहोगी । तथापि अज्ञानकीअधिष्ठानतासे आत्माकोकारणता पूर्वअनेकवार प्रति पादनकरआएहैं । औरअहंप्रत्ययभी इनमेंउपचारिकहै ॥ क्योंकियह सर्वही ममप्रत्ययकाविषयहैं । याते "ममेदंशरीरम्" इसभेदप्रतीतिसे आत्माकातथाशरीरका भेदप्रतीतहुए "अहंमनुष्यः" यहअभेदप्रतीति उपचारिकहै। औरयहजोपूर्वकहाथा॥ कि "ममात्मा" यहभेदप्रतीतिजैसे उपचारिकहै।तैसे "ममेदंशरीरं" यहभेदप्रतीतिभीउपचारिकहोजायेगी। सोयहविपरीतकथनभी समीचीननहीं ॥ क्योंकिदृष्टांतकीविषमताहै। तथाहि ॥ दृष्टांतमेंतोआत्मशब्दकी समीपतासे वहसंबंधप्रत्ययउप चारकेयोग्यहै । क्योंकिअपनेमें अपनाभेद नहींसंभवता। औरयहां दार्ष्टांतमेंतोआत्मशब्दकीसमीपताहैनहीं । यातेसंबंधप्रत्ययउपचारके योग्यनहींहोसकता ॥ औरदेहादिकोंमें अहंप्रत्ययतोआत्माकेअध्या ससेभीसंभवताहै ॥ शंका ॥ अहंप्रत्ययकोदेहादिकोंमें आत्माके अध्याससेमानेहुए "ममेदंशरीरादि" यहांममपदसेउत्तरवर्तिषष्ठिविभक्ति

सेकौनसंबंधप्रतिपादनकियाहै ॥ समाधान ॥ हेभगवन्शेषशेपि भावसंबंधकोही षष्टिविभक्तिबोधनकरतीहै। क्योंकिजैसेछत्रचामरादि इतरअनात्मपदार्थमेरेभोगकासाधनहैं।तैसेयहशरीरादिकभीमेरेभोगका साधनहैं याते अनात्माहै । औरइनकोमेराशेषहोनेसेभी अनात्मताहै। इसहेतुसेइनमेंकोईएक अथवाइनकासमुदाय मेरास्वरूपनहींहोसकता। क्योंकिआत्मवस्तु अज्ञानतत्कार्यसे विलक्षणहै ॥ औरहेयउपा देयसेरहितस्वभावहै ॥ यहांआत्मामें अहेयरूपता कहनेवालेशिष्यने तिसकी आनंदरूपता औरशरीरादिप्रपंचनिष्ठ दुःखरूपतासूचनकी। और इसकथनसे दुःखित्वतथापरमप्रेमास्पदत्वके अन्वयव्यतिरेकभीदिखला दिये । औरसर्वविकारोंसेरहितहोनेसे आत्मा अनुपादेयहै । औरजैसे देहादिकों में अहप्रत्ययगौणहै।तैसे आत्मामेंवहप्रत्ययगौणनहीं। क्योंकि आत्मामेंममप्रत्यकी विषयताका अभावहै। औरआत्मापरमप्रियतमहोने सेअन्यसर्व अनात्मपदार्थोंमें अनुपसर्जन अर्थात्प्रधानहै । औरअपने सेभिन्नसर्व अनात्मपदार्थोंकाप्रकाशकहोनेसेसाक्षिस्वरूपहै। इसकथन सेसाक्षीतथासाक्ष्यके अन्वयव्यतिरेकदिखलादिये। औरअज्ञानादिसर्व कल्पितपदार्थोंमें अनुगतहोनेकर यहआत्मा अव्यभिचारिस्वभावहै ॥ और अर्थसेदेहादि व्यभिचारिस्वभावहै । इस कथनसे अनुगततथा व्यभिचारिकाचतुर्थ अन्वयव्यतिरेकभी दिखलादिया । इस प्रकार स्थूलशरीरसेलेकरबुद्धिपर्य्यन्तपदार्थ कोईभीमेरास्वरूपनहीं॥शंका॥हे शिष्यदेहसेआदिलेकरबुद्धिपर्य्यंतपदार्थोंसेभिन्नजोस्वरूपतुमनेपरिशेष कियाहै वहीतुम अपनास्वरूपनिश्चयकरो॥समाधान॥ हेभगवन्तिस प्रत्यक्चेतनकामुझको अज्ञानहै। और यदिआप यहकहो किअज्ञान

कोत्यागकरके तिसकाविषयजोस्वरूपमात्र प्रत्यक्‌चेतनतत्त्वहैवहअप नास्वरूपग्रहणकरनेयोग्यहै । सोयहकथनभीनहींसंभवता ॥ क्योंकि तिसप्रत्यक्‌चेतनकोभीजीवतथाईश्वरऔतिनसेभिन्नशुद्धचेतनमात्ररूप करनिर्णयकरनेकीअसामर्थ्यसेसंदेहकीविषयताहै॥शंका॥हेशिष्यजीव तथाईशादिरूपताकरनिर्णयकरनेसेक्याप्रयोजनहैवस्तुकाजैसास्वरूपहै वहतुमकोनिर्णीतहीहै ॥समाधान॥ हेभगवन्‌सकलविशेषरूपतत्त्वके जाननेकीइच्छावालेप्रतियहउत्तरनहींसंभवता॥यातेविशेषस्वरूपआपने कथनकरनाचाहिये ॥ शंका ॥ हेशिष्य सामान्यविशेषभावसेरहित आत्मवस्तुमेंविशेषकरजाननेकीइच्छाहीनहींसंभवती ॥ समाधान ॥ हेभगवन्‌ तिससामान्यविशेषभावसे रहितवस्तुकास्वरूपही आपकर कथनकरनेयोग्यहै ॥ शंका ॥ हेशिष्यजोसंदिग्धअर्थहोताहै वही जिज्ञासाकाविषयहोताहै।औरअज्ञानपर्य्यंतपदार्थोंसेभिन्नरूपताकरपरि शेषसेनिश्चितवस्तुमें संशयनहींसंभवता । औरसंशयके असंभवसे जिज्ञासाकीअनुपपत्तिहै।यातेतिसकेस्वरूपविषयकप्रश्नसेक्याप्रयोजन है ? ॥ समाधान ॥ हेभगवन्‌ स्वरूपविषयकअज्ञानतोअबपर्य्यंतभी निवृत्तनहींहुआ । यातेजिज्ञासाकासंभवहै ॥ शंका ॥ अज्ञानन निवृत्तहो।परन्तुनिश्चितवस्तुमेंसंदेहकेनदेखनेसे जिज्ञासाकैसेसंभवेगी समाधान॥अज्ञानकेस्थितहुएहीविवेकदृष्टिसेतिसअज्ञानसेभिन्नआत्मा कास्वरूपनिर्णयहुएभी तिसहीअज्ञानकर विषयकीहुईवस्तुमेंसंदेहकी उपपत्तिहै।क्योंकिविवेकज्ञानकोअन्वयव्यतिरेकरूपयुक्तिकरजन्यहोने सेपरोक्षताहैयातेतिसकोअपरोक्षसंशयादिकोंकानिवर्त्तकपनानहींसंभ वता ॥शंका॥ अज्ञानादिकोंसे आत्मवस्तुको भिन्नरूपताकरनिश्चित

हुएभीअज्ञान औतत्प्रयुक्तसंशयहोताहै ॥ इसतुम्हारेकथनसेअज्ञानादिकोंकेविद्यमानहुए निश्चयहीनहींहोगा। औरयदिनिश्चयतुम मानोंगे॥तोअज्ञानादिकोंका सद्भावनहीहोगा॥इसीअर्थकोस्पष्टकरते हैं। अध्यस्तसेजोअधिष्ठानकाभेदहै इसीकोविवेककहतेहैं। और कल्पितअज्ञानकेस्वरूपकीस्थितिहुएतिसकेअधिष्ठानआत्माकाअन्यत्व रूपविवेककिसीप्रकारभी ज्ञातनहीहोसकता॥ क्योंकिअध्यस्तपदार्थ काअधिष्ठानकेसाथ तादात्म्यहोनेकर तिससेभिन्नअध्यस्तकेस्वरूप काअभावहै। औरयदिविवेकदृष्टिसे अधिष्ठानरूपआत्मवस्तुनिश्चित है तोतिसमेंअध्यस्तअज्ञानअथवातिसकाकार्यतिससे भिन्नकरकेतिस अधिष्ठानमेंनहींहै ॥ ऐसेनिर्णयकरकेहीआत्मतत्त्वनिश्चयकरनेयोग्य है ॥ तैसेमानेहुए तिसमे अज्ञानकेअभावसे संदेहकीअनुपपत्तिहै। औरसंशयकेअभावसे प्रश्नभीनहींसंभवता ॥ समाधान ॥ हेभगवन् इतनेकथनसेभीद्वैतद्रष्टाकास्वरूप आपनेनहींकथनकिया। यद्यपि आपकरकथनकीहुईयुक्तिसेअज्ञानादिकोंकेनिषेधहुए मोक्षसंबंधीशुद्ध विकाररहितचेतनशेषरहताहै ॥ परन्तुअनिष्टप्राप्तिसे तिसकोद्वैतका द्रष्टापनानहींसंभवता ॥ क्योंकियदिशुद्धकूटस्थचेतनकोद्वैतकाद्रष्टा मानोंगे तोमोक्षकालमेंभी द्वैतदर्शनकीप्राप्तिहोगी।यहीअनिष्टप्रसग है ॥ शंका ॥ हेशिष्यमोक्षकोनित्यहोनेकर वहसर्वकालमे विद्यमान है ॥ यातेसर्वहीकालमोक्षकालहीहै ॥ यद्यपिमोक्षकोज्ञानकरसाध्य होनेसेतिसको नित्यपनाअसिद्धहै ॥ तथापि ॥

(विमुक्तश्चविमुच्यते) अ०॥ प्रथमभीमुक्तहीथा परंतुअज्ञान केअभावसेअविमुक्तपनेकाभ्रमहुए तत्त्वसाक्षात्कारकरअज्ञानकेबाधित

हुएविमुक्तहोताहै ॥ ऐसाउपचारिककथनहोताहै ॥ इसशास्त्रसेमोक्ष कोप्रथमहीसिद्धहोनेसेजन्यपनानहीं है॥औरयदितुमऐसेनहींमानोगे तोमोक्षकोकादाचित्कहोनेसे अनित्यत्वप्रसंगहोगा। औरअजन्यहोने से मोक्षकोनित्यपनाहै। यातेमोक्षकालमेंद्वैतकादर्शनअनिष्टनहींहै ॥ क्योंकिइसकालमेंद्वैतका दर्शनविद्यमानहै औरमोक्षभीविद्यमानहै ॥ समाधान ॥ हेभगवन्द्वैतदर्शनतथामोक्ष इनदोनोंकाएककालमें होनाक्यालौकिकअनुभवकेबलसे आपकल्पनाकरतेहो। अथवाश्रुतिके बलसेकल्पनाकरतेहो? । प्रथमपक्षमेंतोलौकिक अनुभवकाविरोधप्राप्त होगा । क्योंकिद्वैतदर्शनकालमें कोईभीमोक्षकोनहीं अनुभवकरता। प्रत्युतसर्वलोकद्वैतकोही अनुभवकरतेहैं ॥ यातेप्रथमपक्ष अयुक्तहै । औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता।क्योंकिसर्वलोकोंसेविरुद्ध अर्थकोश्रुति भीनहींप्रतिपादनकरसकती ॥ औरयदिलोकविरुद्धअर्थकोभीश्रुति प्रतिपादनकरेगी॥ तोशिलाप्लवनादिवाक्योंकोभी स्वार्थमेंप्रमाणता हुईचाहिये । इसप्रकारसर्वलोकोंके अनुभवकाविरोधहोनेसे सर्वही कालमोक्षकालहै यहकथननहींसंभवता। तैसेमानेहुएद्वैत द्रष्टाका स्वरूपभीनिर्णीतनहुआ।यातेतिसकास्वरूपआपनेकथनकरनायोग्यहै यहशिष्यकाअभिप्रायहै ॥ इतिपूर्वपक्ष ॥ (अथसिद्धांत ॥)

यहांपर्यंतगुरुशिष्यकेसंवादद्वारापूर्वपक्षनिरूपणकिया। अबगुरुशिष्य केसंवादद्वाराहीसिद्धांतनिरूपणकरतेहैं। द्वैतकेअनुभवकरनेवालेमोक्ष कोनहींअनुभवकरसकते । शिष्यकेइसकथनकोआश्रयणकरकेश्री गरुउत्तरकथनकरतेहैं ॥ समाधान ॥ हेशिष्यअनुभव तथादर्शनशब्द कोपर्यायहोनेसे जोसर्वद्वैतकेअनुभवकरनेवालेहैं वहीद्वैत केद्रष्टाहैं ॥

यहतुमनेआपही निश्चयकरलियाहै । इसकारणसे अपनीबुद्धिकर निश्चितअर्थमेंपुनःप्रश्नकरनाअतिआश्चर्यहै । औरतिसमेंहमारेनिरूपणकापरिश्रमभीपिष्टपेपणन्यायसेव्यर्थहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्‌द्वैतकेअनुभवकरनेवालेहीद्वैतकेद्रष्टाहैं । ऐसेनिर्णयहुएभीमोक्षकोकादाचित्कहोनेसे अनित्यत्वकीप्राप्तिमेंकौनउत्तरहै॥ समाधान ॥ हेशिष्य इनकोजोद्वैतकादर्शनहै वहद्वैतदर्शनही सच्चिदानंदपरिपूर्णआत्मस्वरूपमोक्षके अनुभवकाप्रतिबंधकहै । यहतुमनिश्चयकरो । तैसेमानेहुएमोक्षनित्यहीहै। परन्तुप्रतिबंधकेवशसेपुरुषोंकोतिसकाअनुभवनहीं होता । जैसेअंधकाररूपप्रतिबंधसे गृहकेमध्यदेशमें अवस्थितहुए घटादिकोंका अनुभवनहींहोता॥ शंका ॥हेभगवन् द्वैतदर्शनकोपूर्व उक्तविशेषणयुक्तमोक्षकाप्रतिबंधकहुएजिनकोद्वैतदर्शनहैतिनकोप्रतिबंधहो। परन्तुमुझद्वैतकेनदेखनेवालेकोकिसकारणसेमोक्षकाअनुभव नहींहोता?यातेद्वैतदर्शनमोक्षके आविर्भावकाप्रतिबंधकनहीं॥समाधान हेशिष्यद्वैतका अद्रष्टापना तुझको असिद्धहै । इसीअर्थकेसिद्धकरनेके लियेहमतुमसेयहपूछतेहैं । क्यातुमद्वैतके अनुभवकरनेवालेपुरुषोंसे भिन्नहोजिसकरद्वैतकोनहीं देखते?॥शंका॥हेभगवन्‌इसमेंक्यासंशयहै। क्योंकिमैंतिनकोअपनास्वरूपनहींदेखता । जिसकारणसेतिनकेसुख दुःखादिकोंकामुझकोलेपनहींहै । इसीसेमुझकोसुखदुःखादिकोंके लेपकाअभावद्वैतद्रष्टाओंसेमेरेभेदविना अनुपपन्नहुआ तिनसेमेरेभेदको कल्पनाकराताहै । यातेभेदमेंसुखादिव्यवस्थाकी अनुपपत्तिरूपअर्थापत्तिप्रमाणहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्यद्रष्टाओंकेभेदमें प्रमाणकथन करनेवालेतुझने द्वैतकाअनुभवितृत्व अपनेमेंस्थापनकिया । इसीको

स्पष्टकरतेहैं । अतिआश्चर्यहै । अनेकप्रकारसेदेव तथातिर्य्यक्औ मनुष्यादिभेदकर भिन्न तिनद्वैतद्रष्टाओंको देखताहुआतू मैं द्वैतको नहींदेखता ऐसेकथनकरनेवालेतुभकावचनकैसे विश्वासकरनेयोग्य होगा ॥ किंतुमिथ्यावादिपनातुभकोप्राप्तहोगा॥ शंका ॥ हेभगवन् कथामेंप्रतिवादीके व्यामोहकरनेकेलिये अयथार्थभीकथनकरनेयोग्य होताहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य मोक्षकीकामनावाले तथासंन्यासी औतत्त्वकेजाननेकी इच्छावालेतुभको यहमिथ्याभाषणकरनाउचित नहीं । पूर्वयहकथनकियाथा क्यातूइनसेभिन्नहैं जिसकरद्वैतकोनहीं देखता?। यहांक्याशब्दसेसूचनकियेहुएअभेदपक्षकोशिष्यग्रहणकरता है ॥ शंका ॥ हेभगवन्मैंआपसेअभिन्नहूं । यातेमुभको जोमिथ्या वादित्वआपकहतेहो । वहमिथ्यावादित्वआपमैंहीप्राप्तहोताहै ॥ यहांयहअभिप्रायहै।जैसेदर्पणादिउपाधिकेभेदसे प्रतिबिंबोंकेऔपाधि कभेदकोग्रहणकरके चलनादिव्यवस्थाकी उपपत्तिहै । तैसेसुखादि व्यवस्थाकीअनुपपत्तिसेऔपाधिकभेदकोग्रवणकरकेव्यवस्थाकासंभवहै। यातेव्यवस्थाकीअनुपपत्तिकोस्वभावविकआत्माकेभेदकाप्रमापकपना नहीं ॥ इसहेतुसेमैंउपालंभके योग्यनहींहुं ॥ अबइसीपक्षकोस्वीकार करके श्रीगुरुउत्तरकथनकरतेहैं ॥समाधान॥ हे शिष्य यदिद्वैतद्रष्टा वास्तवसेतेरेसेभिन्ननहीं हैं किंतुतेराआत्माहीहैं।तोऐसेमानेहुएमुभको आत्मरूपदेखताहुआतूकैसेदेखताहै अर्थात्क्यामुभकोद्वैतसहितदेखता हैंअथवाअद्वितीयरूपदेखताहैं॥ प्रथमपक्षमेंतोयहऔरदोषतुमकोप्राप्त होगा।क्योंकिजोमैंविद्वान्तथातेराहीआचार्यओब्रह्मरूपतासेअवस्थित औरद्वैतकीवार्त्ताकोभी नजाननेवाले तिसमुभको तुमसद्वितीयरूप

कल्पनाकरतेहो ॥ कलंकरहितमेंकलंकदेखनामहानदोषहै । और आत्माकोसद्वितीयदेखनेमें श्रुतिका विरोधभीप्राप्तहोगा ॥ क्योंकि

❀ एकमेवाद्वितियं नेहनानास्तिकिंचन । ❀

इत्यादिश्रुतियों में आत्माकी अद्वितीयरूपताही कथनकीहै ॥ यातेप्रथमपक्षनहींसंभवता । औरआपकोमें अद्वितीयरूप देखताहूं । यदिइसद्वितीयपक्षकोमानो तोइसपक्षमें यद्यपिपूर्वकथनकियेमिथ्या भाषणादिदोषोंकी प्राप्तिनहींहोती । तथापिइसकालमें तुमने हमको अद्वितीयआत्मरूपकिसहेतुसेजाना अर्थातअवपूर्णात्माकादर्शनतुम्भ कोकिसहेतुसेप्राप्तहुआ? ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् पूर्वउक्तप्रत्युत्तर रूपआपकेवचनसे मैनेअद्वितीयआत्माकोजाना ॥ यद्यपिवचनको युक्तिका प्रतिपादकहोनेसे उपजीव्यप्रमाणकीअपेक्षाहै । तथापिपूर्व कथनकिया जो (एकमेवाद्वितीयम् ॥) इत्यादिशास्त्रयही उपजीव्यप्रमाणहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्ययदियुक्तिसहकृत शास्त्रसे अद्वैत आत्माकासाक्षात्कार तुमको उत्पन्नहोगया तोइससे पश्चात्अन्यज्ञातव्यका अभावहोनेसे प्रश्ननहींसंभवता ॥ क्योंकि आत्मवस्तुकेज्ञातहुए तिससेभिन्नअन्यअज्ञात वस्तुकोईनहींजो प्रष्टव्यहो ॥ शंका ॥ हेभगवन्यद्यपिआत्माको ज्ञातहोनेसे तिस विषयकप्रश्ननहींसंभवता । तथापिअनात्मातोअज्ञातहै तिसविषयक प्रश्नसंभवताहै । समाधान ॥ हेशिष्यआत्माकादर्शनहुए इतरसर्व अनात्मपदार्थका दर्शनहोजाताहै । यहवार्ताश्रुतिमेंप्रसिद्धहै ।

❀ आत्मनोवाअरेदर्शनेन श्रुत्यामत्याविज्ञानेनेदं सर्वंविदितं ॥ ❀ वृ० उ० अ० (४) ब्रा० (४) (५)

अ० ॥ अरेमैत्रेयीआत्माके दर्शनसेअर्थात विचारकेसा १क आपातज्ञानसे और तिसकरसाध्यविचाररूप श्रवणसे तथामनन सेउत्पन्नहुए विज्ञान अर्थात साक्षात्कारसेयहसर्वअनात्मपदार्थ जानेजातेहैं।इसश्रुतिसे आत्मज्ञानसे सर्वकाज्ञान कथनहोनेसे अज्ञात वस्तुकाअभावहोनेकर औरकोईजाननेयोग्य शेषनहींरहा ॥ याते प्रश्ननहींसंभवता ॥ शंका ॥ हेभगवन् क्याश्रुतिने कथनकियाजो अर्थ वहीग्रहणकरनेयोग्यहै। अथवायोग्यअर्थ ग्रहणकरनायोग्यहै?। प्रथमपक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकि (शिलाप्लवन्ति) अ० ॥ शिलातरतीहैं। इत्यादिवाक्योंका अर्थभीस्वीकार करनेयोग्यहोगा। औरयदिद्वितीयपक्षकहो तोतिसमेंयोग्यतानहींसंभवती। क्योंकिइतर सर्वअनात्मपदार्थआत्मासेभिन्नहैं।अथवाअभिन्नहैं?। यहविचारणीयहै प्रथमपक्षतोनहींसंभवता।क्योंकिअन्यकेज्ञानसे अन्यकेजाननेकोकोई भीसमर्थनहींहोता। जैसेघटकेदर्शनसे पटकाभीदर्शनहोजाताहै ऐसे कथनकरनेकोकोईभीसमर्थनहीं। यदिऐसेनहींमाने तोघटऔपटका अभेदप्राप्तहोगा। औरद्वितीयपक्षभी नहींसंभवता। क्योंकिप्रत्यक् तथापराक्रूपतासे आत्मातथाअनात्माके स्वभावकाविरोधहै। किंवा आत्मा तथाअनात्माकाअभेदमानेहुए क्याआत्मामेंअनात्माकाअंत र्भावहै। अथवाअनात्मामें आत्माकाअंतर्भावहै?। प्रथमपक्षतोनहीं संभवता।क्योंकिपरमार्थसत्यस्वरूपआत्मासेअभिन्नअनात्माका(नेति. नेति)वाक्योंसेनिषेधकरनेकोअशक्यहोनेकरतिसकाबाधनहीं संभवेगा औरयदिद्वितीयपक्षमानो तोअनात्माकेअन्तर्भावहोनेकर आत्माका. भीबाधहोजायेगा। तिससेशून्यहीशेषरहेगा ॥ यातेआत्माकेदर्शनसे

सर्वहीअनात्मपदार्थदेखेजातेहैं यहकथनअयुक्तहै ॥ इति ॥

❀ अथआत्मदर्शनसेसर्वजगतकादर्शनानिरूपण ❀

अधिष्ठानकास्वरूपही अध्यस्तकास्वरूपहोताहै।क्योंकिअधिष्ठान सेभिन्नरूपताकरतिसका निरूपणनहींहोसकता । यहवार्त्ताघटकी आत्मरूपताकेविचारादिकों में अनेकवारपूर्व निरूपणकीगईहै ॥ यातेअध्यस्तकीअधिष्ठानसे भिन्नसत्ताकाअभावहुए जगतकेअधिष्ठान आत्माकास्वरूपजानेहुए जगतकास्वरूपभीजानाजाताहै॥ इसप्रकार जगत्काविदितपनाअर्थातज्ञानपनाब्रह्मात्माके अभेदज्ञानसेयुक्तिकर संभावनाकियाजाताहै ॥ तिसकीयोग्यताहोनेकर श्रुतितिसकोबोधन करतीहीहै ॥ ऐसेउत्तरकोश्रीगुरुकथनकरतेहैं ॥समाधान ॥

मू०॥ आत्मसत्तैवद्वैतस्यसत्तानान्यायतस्ततः ।
आत्मन्येवजगत्सर्वंदृष्टेदृष्टंश्रुतेश्रुतम् ॥५६॥

भूलना ॥ आत्मरूपहिद्वैतकोरूपरिदजान नअन्यसरूपहैताहिकेरो ।
जासकेदेखनेजगतसबदृष्टहुइ श्रवणतेश्रवणहुइजातहेरो।
मननतेमननहुइजातत्तणएकमें जानयहमरममनवेदकेरो।
ज्ञातव्यअवशेषनहिरह्यो कोईयाहेतुतेप्रश्नबनेतेरो॥४४॥

टी० ॥ हेशिष्ययहपूर्वउक्तदोष नहींसंभवता ॥ क्योंकिआत्म सत्तासेभिन्नअज्ञानतत्कार्य्यरूपद्वैतकीसत्ताकाअभावहै ॥ जैसेरज्जुके स्वरूपकादर्शनहुएतिसमेंअध्यस्तमालादंडादिकोंका स्वरूपदेखाजाता है।तैसेआत्माकेदर्शनहुए सर्वअनात्मपदार्थदेखेजातेहैं॥यहवार्त्ताअनुप पन्ननहींकिंतुउपपन्नहै॥ यहांपरयहअर्थजानलेना॥ कारिकामेंकथन कियाहुआ "सत्ता" शब्दस्वरूपकावाचकहै । नैयायिकोंकोअभिमत

सत्तासामान्यकावाचकनहीं ॥ क्योंकितिससत्ताजातिकोविशेषव्यक्ति कीअपेक्षासहितहोनेकर परमार्थरूपताकीअनुपपत्तिहै। इसीकारणसे दृष्टांतमेंस्वरूपशब्दकाहीग्रहणकियाहै ॥ इति ॥

❀ अथविधिनिषेध उपदेशकीव्यवस्थानिरूपण ❀

पूर्वउक्तयुक्तिसे आत्मासे भिन्नरूपताकर अभिमतसकल अनात्मपदार्थोंको आत्मरूपताकेसिद्धहुए तिससेभिन्नकरकेतिनका असत्त्वजानेहुए *विधिनिषेधशास्त्रभीउपपन्नहोसकताहै* ॥ अबइसी अर्थकोनिरूपणकरतेहैं ॥ हेशिष्य आत्मस्वरूपसेइतरद्वैतकेस्वरूपका अभावहोनेसे विधिनिषेधशास्त्रकीभी अनुपपत्तिनहीं । तिनमेंप्रथम विधिशास्त्रको उदाहरणकरतेहैं ॥

❀ इदंसर्वंयदयमात्मा। सदेवसौम्येदमग्रआसीत्। एकमेवाद्वितीयम् ॥ ऐतदात्म्यमिदंसर्वं । ब्रह्म वाइदमग्रआसीत् । अहंमनुरभवंसूर्य्यश्च ॥ यत्रत्वस्यसर्वात्मैवाभूत् । नारायणएवेदंसर्वं यद्भूतंयच्चभाव्यम् ॥ ❀

अ० ॥ जोब्राह्मणत्वजातिआदिकसर्वजगत् प्रत्यक्षादिप्रमाण करउपस्थितअर्थात् प्रसिद्धहै वहसर्वजगत्आत्माहीहै ॥ औरहेप्रिय दर्शनश्वेतकेतो यहसर्वजगत् अपनीउत्पत्तिसे पूर्वकालमें एकसत् *आत्मरूपहीथा यहकार्यजातकिंचित्मात्रभीनहींथा* । आत्माकेभेद मेंजोनिमित्तहै तिसकोनिषेधकरतेहैं॥ वहआत्माद्वैतसेरहितहै । और यहसर्वजगत्आत्मस्वरूपहीहै । औरयहदृश्यमानजगत् उत्पत्तिसेपूर्व ब्रह्मात्मस्वरूपहीथा । औमैंमनुहुआतथामैंहीसूर्यहुआ । औरजिस

निर्विशेषअवस्थामें इसविद्वान्कोसर्वजगतआत्मरूपहीहुआ ॥ और यहभूतभविष्यत वर्त्तमानकालीनसर्वजगत् नारायणस्वरूपहीहै। इत्यादिकविधिशास्त्रहै ॥ अबनिषेधशास्त्रकोपठनकरतेहैं।

❀ नेहनानास्तिकिंचन। अथातआदेशोनेतिनेति॥नह्ये तस्मादितिनेत्यन्यत्परमस्ति। अतोन्यदार्त्तं। नतुतत्द्वितीयमस्ति॥ नैवेहकिंचनाग्रआसत्॥ नासदासीन्नोसदासीत् ॥ ❀ बृ० उ० ॥

अ० ॥ (अथ) सत्यस्वरूपकेनिरूपणसे अनंतर (अतः) जिसकारणसेसत्यकाजोसत्यहै वहीनिरूपणकरनेयोग्य शेषरहताहै तिसीकारणसे (आदेशः) ब्रह्मकाउपदेशअर्थात्ब्रह्मकेस्वरूपका प्रतिपादनहै॥ तिसब्रह्ममें गुणक्रियादिकशब्दकी प्रवृत्तिकेनिमितोंका अभावहोनेसेवहयहीहै ऐसेकथनकरनेकी अयोग्यताकेहुएभीप्रपंचका अपवादकरके तिसनिषेधकाअवधिभूत अधिष्ठानब्रह्मस्वरूपहै ॥ इस प्रकारश्रुतिरूपशब्दकथनकरताहै ॥ तिसउपदेशकाहीस्वरूपकहतेहैं। (नेतिनेति)जोजोदृश्यरूपतासेप्राप्तहैवहब्रह्मनहीं।(हि) जिसकारण से (एतस्मात्नेतीति) इसनिषेधमुखउपदेशसे (नअन्यत्परमस्ति)और अधिकउपदेशब्रह्मकानहींसंभवता। तिसकारणसे यहीब्रह्मका उपदेश संभवताहै। औरइसब्रह्मात्मासेभिन्नसर्वजगतमिथ्याहै। औरसुषुप्तिअव स्थामेंसाभासअंतःकरणरूपप्रमातृउपलक्षितद्वैतप्रपंचकाअभावहै।और इसअधिष्ठानब्रह्ममेंउत्पत्तिसेपूर्वकिंचितमात्रभीनहींथा।औरतिसकालमें सूक्ष्मप्रपंचनहींथा । औरस्थूलप्रपंचभीनहींथा। इत्यादिनिषेधशास्त्र है। यातेआत्मासेभिन्नद्वैतकाअभावमानेहुए यहदोनोंप्रकारकाउप

देशभीसमीचीनहोसकताहै। जैसेइसलोकमेंरज्जुरूपअधिष्ठानमेंमाला सर्पादिकोंके आरोपवालेपुरुषको विधितथानिषेधरूप दोप्रकारका उपदेशहोताहै। कियहसर्पमालादिकरज्जुस्वरूपहैं। वाइसमेंमालादिक नहीं हैं। तैसेप्रकरणमेंभीजानना॥ शंका॥ हेभगवन् यद्यपिआत्मा कादोप्रकारकाउपदेशसंभवताहै।तथापिदोनोंप्रकारकेउपदेशों में कौन साउपदेशश्रेष्ठहै॥ समाधान॥ हेशिष्य यद्यपिदोनोंप्रकारकेउपदेशों कोएकअर्थत्वकाही बोधकपनाहै ।तथापिविधिमुखउपदेशमेंकिंचित् अतिशयताभीहै॥ तथाहि ॥तिसविधिमुखउपदेशमें दृश्यमानपदार्थों काजोस्वरूपहै सोआत्माहीहै। ऐसेकथनकरेहुए तिसआत्मासेभिन्न किंचित्मात्रभीनहीं किंतुआत्माही एकरसपरिपूर्णहै। यहज्ञान विधि वाक्यसेसाक्षात्ही उदयहोताहै।औरनिषेधमुखउपदेशसे तोसर्वदृश्य केनिषेधकरेहुएनिषेधकाअधिष्ठानरूपताकरआत्माकाज्ञान अर्थसेहोता है साक्षात्नहीं॥ इतनेमात्रहीदोनों उपदेशोंकी विलक्षणताहै॥ औरकोईविलक्षणतानहीं॥ शंका॥ हेभगवन् जबविधिमुखउपदेश कोअतिशयहोनेकरतिससेही परमपुरुषार्थकीप्राप्तिहोतीहै॥ तोपुनःदो प्रकारकेउपदेशकीप्रवृत्तिकैसेसंभवेगी॥ समाधान॥ हेशिष्य अधि कारीभेदसेदोनोंप्रकारके उपदेशकीउपयोगताहै । इसीअर्थकोप्रथम दृष्टांतद्वारास्पष्टकरतेहैं जैसेकोईपुरुषरज्जुमें सर्पभ्रमकोप्राप्तहोकरभय सेकम्पायमानहोताहै । तिसकेप्रति रज्जुकेस्वरूपकाज्ञाताकोईदयालु पुरुष "नाऽयंसर्पः"ऐसानिषेधमुखउपदेशही प्रथमकथनकरताहै॥औरं "अयंरज्जुरेव" ऐसाविधिमुखउपदेशनहींकरता॥ तैसेजोपुरुषजन्मा दिसंसारदुःखसेअत्यंतभययुक्तहुआ तिसकीनिवृत्तिकीहीप्रथमकामना

करताहै ॥ तिसकेप्रतिप्रथमनिषेधवाक्यहीउपयोगीहै॥औरविधिवाक्य पश्चात्कहनेयोग्यहै ॥ औरजैसेरज्जुमें सर्पभ्रमकोप्राप्तहोकरमणिमंत्र औषधादिकोंसे तिसकेप्रतीकारज्ञानकर निर्भयहुआजोपुरुषहै वहरज्जु केज्ञातापुरुषसेपूछ्नाहै। यहपुरोवर्त्तिपदार्थक्याहै ॥ तिसकेप्रति "अयं रज्जुरेव" ऐसाहीउत्तरदेनायुक्तहै॥ "नाऽयंसर्पः" ऐसानिषेधरूपउत्तर युक्तनहीं ॥ तैसेजोपुरुषसंसारसे अत्यंतउद्वेगयुक्तनहीं।किंतुइसदृश्य मानजगतका वास्तवस्वरूपक्याहै ॥ ऐसीजिज्ञासाकरताहै।तिसपुरुष केप्रति [इदंसर्वंयदयमात्मा] इत्यादिविधिवाक्योंसेहीउत्तरदेना युक्तहै ॥ औरनिषेधमुखउपदेशपश्चात्कहनायोग्यहै ॥ इसप्रकार अधिकारीकेभेदसे दोनोंप्रकारके उपदेशोंकाउपयोगहोनेकर किसीको भीव्यर्थतानाहींहोसकती ॥ इसहेतुसे विधितथानिषेधरूपदोनोंप्रकार केउपदेशोंकरसतचित्‌आनंदपरिपूर्णस्वरूपप्रत्यक्‌आत्माहै ॥ यहअर्थ सिद्धहुआ ॥ इति ॥ ७६ ॥

[पुनःद्वैतद्रष्टाकेस्वरूपकाविचार] शंका॥हेभगवन्‌यद्यपि द्वैतद्रष्टावास्तवमुझसेभिन्ननहीं ।इसपक्षमें अद्वैतआत्मसाक्षात्कारको सिद्धहोनेकरआत्मासेभिन्न अनात्माके स्वरूपकाअभावहोनेसेसर्व अनात्मपदार्थभी विदितअर्थातजानेजानेहैं ॥ यातेपूछनेयोग्यअन्य पदार्थकोईशेषनहींरहा ॥ तथापिवहद्वैतद्रष्टाकौनहै ॥ यहअबपर्यंत भीनिर्णयनहींहुआ ॥ समाधान ॥ हेशिष्य यदितुमद्वैतद्रष्टाओंसे भिन्ननहींहो तोतुमप्रश्नकरनेवालेही द्वैतकेद्रष्टाहो ॥ शंका ॥ हे भगवन्‌मैंकौनहूं ॥ अर्थयह ॥ क्यामैंसंसारिस्वभावहूं ॥अथवाति‌स सेविलक्षणअसंसारिस्वभावहूं?॥ यद्यपिदेहादिकोंकीआत्मरूपताको

निषेधकरनेवालेऔरकर्तृत्वादि प्रपंचकोमिथ्यात्वबोधन करनेवाले शिष्यनेब्रह्मरूपताआत्माकी पूर्वनिर्णीतकीहै ॥ यातेतिसमेंपुनःउत्तर नहींसंभवता ॥ तथापिपदार्थशोधनद्वाराअर्थसे ब्रह्मात्माकीएकता सिद्धहोतीहै ॥ औरयहांतोसाक्षात्शब्दसे वहएकताकथनकरने योग्यहै ॥ यातेतिसकेअर्थ इसविचारकाआरंभसंभवताहै । इसप्रकार जिसनेतत्त्वंपदार्थशोधनकियेहैं । औरशरणागतहै । तिसअधिकारी केप्रति कृपापरवशहुएश्रीगुरु पुनः उत्तरनिरूपणकरतेहैं॥ समाधान॥ हेशिष्यतूअसंसारिब्रह्मस्वरूपहैं ॥ शंका ॥

❀ द्वैतद्रष्टृपदार्थके अवयवनकानिरूपण ॥ ❀

हेभगवन् यदिमुझद्वैतके द्रष्टाका ब्रह्मकेसाथअभेदहै । तोब्रह्म कोविकारिपनाप्राप्तहोगा। यद्यपिविकारसमूह अविद्याकाकार्यहोनेसे मिथ्याहै ॥ यहपूर्वअनेकप्रकारसे निरूपणकरआएहैं । तथापिअन्य प्रकारसेतिसकानिर्णयकरनेकेलिये इसविचारकाआरंभहै। समाधान। हेशिष्यब्रह्मकोद्वैतद्रष्टासे अभिन्नमानेहुए विकारिपनेकीप्राप्तिहोगी । ऐसेकथनकरनेवालेतुझको हमयहपूछतेहैं। यहांद्वैतद्रष्टामेंतीनपदार्थ वर्त्ततेहैं। द्वैतऔरतिसकीदृष्टि औरएकस्वरूपहै।तहांतिनमेंजोस्वरूपहै तिसकेसाथब्रह्मकाअभेदहोनेसेद्वैतद्रष्टाकेसाथअभेदमानेहुएविकारित्व कीप्राप्तिजोतुमअपादनकरतेहो सोसर्वप्रकारसे नहींसंभवती। क्योंकि वहविकारक्याहै।द्वैतहै अथवातिसकीदृष्टिहै?॥यहवक्तव्यहैयदिद्वैतको विकारकहो तोयहपक्षसमीचीननहीं ॥ क्योंकिब्रह्मसेभिन्नसकलद्वैत का "नेतिनेति" यहश्रुतिनिषेधकरतीहै॥ शंका ॥ हेभगवन् "भूतले

घटोनास्ति"इसप्रकारनिषेधकियाहुआभीघट जैसेमृत्तिकाकाविकारहै॥ तैसेश्रुतिकरनिषेध कियाहुआभीद्वैत किसीका विकारक्योंनहो?

समाधान ॥ हेशिष्य परमतकीरीतिसेसर्वथाघटकानिषेधनहीं। किंतु सन्मुखदेशवर्तिभूतलमे अन्यदेशमें घटविद्यमानहै ॥ औरप्रपंचतो अधिष्ठानब्रह्मसेअन्यस्थलमेंहैनहीं ॥ जोअधिष्ठानमेंभीतिसका अभावबोधनकियातोअसत्होनेसेवहकिसीकापरिणामनहींहोसकता। इसमेंउचितदृष्टांतकोकहतेहैं।जैसेअसत्नरशृंगकिसीकाभीपरिणामनहीं

शंका ॥ हेभगवन् नरशृंगसेद्वैतनिष्ठविलक्षणताहै ॥ क्योंकिनरशृंग किसीकोप्रत्यक्षनहींप्रतीतहोता ॥ औरयहप्रपंचतोसर्वकोप्रत्यक्षप्रतीत होताहै॥इसप्रकारद्वैतमेंनरशृंगसेविलक्षणताकाप्रयोजकधर्मदृष्टिहैइसी हेतुसेद्वैतकोविकारपनासंभवताहै॥समाधान॥हेशिष्यप्रपंचकोनरशृंग सेविलक्षणतामानेहुए तिसकेविकारपनेमें द्वैतत्वधर्मप्रयोजकनहीं ॥ किंतुअपरोक्षप्रतीतिरूपदृष्टिकेसाथ संबंधित्वरूपधर्मप्रयोजकहै ॥ तैसेमानेहुए (सविशेषणेहि) इसन्यायसेदृष्टिकेप्राप्तहुएद्वैतनिष्ठविकार पनाप्राप्तहोताहै॥औरदृष्टिकेअप्राप्तहुएद्वैतमेंविकारपनानहींप्राप्तहोता॥ यातेदृष्टिहीविकारहै'यहपक्षतुमकोमाननाउचितहै॥ किंवा ज्ञान तथा ज्ञेयकाभेदपूर्वनिरासकियाहै॥यातेपरिशेषसेभीदृष्टिकोहीविकारकहना योग्यहै।इसप्रकारश्रीगुरुकरअंगीकारकरायेहुएदृष्टिनिष्टविकारत्वपक्षको शिष्यअंगीकारकरताहै॥शिष्यउवाच॥हेभगवन्दृष्टिहीविकारहैयहपक्ष मुझकोस्वीकारहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्यदृष्टिशब्दसेक्यावृत्तिका ग्रहणहैअथवाविषयनिष्ठअभिव्यक्तहुएफलनामवालेचेतनकाग्रहणहै?॥ इनमेंप्रथमपक्षकहो तोनहींसंभवता ॥ क्योंकिवृत्तिकोस्वभावसेजड

होनेकरप्रकाशकपनेकी अनुपपत्तिहै ॥ यातेतिसको दृष्टिपनानहीं संभवता । औरद्वितीयपक्षभीअसंगतहै । क्योंकिफलचेतनकोआत्म स्वरूपसेअभिन्नहोनेकर आत्माकेपरिणामपनेकाअसंभवहै । जिस कारणसेअपनाआपही परिणामनहींसंभवता॥ किंवा ॥ यदिआत्मा भी परिणामकोप्राप्तहोताहै।तोक्यावहसर्वरूपतासेपरिणामकोप्राप्तहोता है।अथवाकिसीएकदेशसे परिणामकोप्राप्तहोताहै?प्रथमपक्षमेंतोआत्मा काहीअभावप्राप्तहोगा सोअनिष्टहै। यातेप्रथमपक्षअसंगतहै । और द्वितीयपक्षभीनहींसंभवता । क्योंकिआत्मानिरवयवहै॥ यातेकार्त्स्न्य तथाएकदेश विकल्पसंज्ञकदोषकी प्राप्तिहोनेकर परिणामपक्षनहींसंभ वता॥ शंका ॥हेभगवन् यहकार्त्स्न्यअर्थात् सर्वरूपता तथाएकदेश विकल्पाख्यदोषविवर्त्तपक्षमें भीतुल्यहीहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य विवर्त्तकेस्वरूपकाहीतुझको अज्ञानहै।यदिविवर्त्तकास्वरूपतुम जानते तोयहदोषकीआशंका तुझकोनहोती ॥ क्योंकिअधिष्ठानकेस्वरूपसे भिन्नविवर्त्तकिंचित्मात्रभीवस्तुनहीं । जिसकोआश्रयणकरकेकार्त्स्न्य तथाएकदेशविकल्पाख्यदोषकी प्राप्तिहो किंतुअधिष्ठानहीदोषकेवश सेविलक्षणाकारसेभासमानहुआ विवर्त्तकहाजाताहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् वहविलक्षणाकारहीकिसकाहै। यहआपनेकहाचाहिये ॥ समाधान ॥ हेशिष्यक्याप्रातिभासिकआकारकिसकाहै यहतुमपूछते हो।अथवावास्तवआकारकिसकाहै यहपूछतेहो?॥ यदिप्रथमपक्षकहो तोवहप्रातीतिकआकार अधिष्ठानकाहीहै । यहहमअनेकवारशोधन करआएहैं । औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता । क्योंकिवास्तवआकार तोवहकिसीकाभीनहीं।जिसकारणसेआत्माकी वास्तवअनात्माकारता

निषेधवाक्योंकर बाधितहोनेसेनहींसंभवती॥औरआत्मासेअन्यस्थल मेंतिसआकारकी अप्रतीतिहोनेसे वहांभी तिसकाअभावहै । याते वास्तवसेविलक्षणाकार किसीकाभीनहीं यहसिद्धहुआ ॥ शंका ॥ हेभगवन् विवर्त्तवादकेव्याजअर्थात्बहानेसेअसत्ख्यातिवादकाहीयह आपनेउपपादनकियाहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य असत्ख्यातिवाद कायहउपपादननहीं।क्योंकिअसत्ख्यातिवादीचार्वाकनेऐसेअंगीकार नहींकिया।तथाहि तिसकेमतमेंतोज्ञान अध्यस्तनहीं । औरहमारेमतमें तोख्याति अर्थात्ज्ञानभीअध्यस्तहै । यातेसर्वरूपतासेसमतानहीं औरसमताकेअभावहुए परसिद्धांतकीप्राप्तिभीनहींहोसकती । और सर्वपदार्थोंकोशून्यकहनेवालेवादीकामत तोपूर्वहीनिरासकरआएहैं॥ शंका ॥ हेभगवन् ख्यातिनामस्वरूपचेतनकाहै । तिसकोअध्यस्त मानेहुए शून्यताकी प्राप्तिहोगी॥ यातेख्यातिनिष्ठअध्यस्तपनाक्याहै समाधान॥ हेशिष्य स्वरूपसेरजतकीन्याई ख्यातिअध्यस्तहै यहहम नहींकहते ॥ किंतुवास्तवसेनिःप्रकारिकख्यातिकोअर्थात्प्रकारशून्य ख्यातिकोआकारांतररूपताकरभानहोनेसे वहअध्यस्तहै।ऐसेहमकहते हैं।यातेशून्यताकीप्राप्तिनहींहोती॥ शंका ॥हेभगवन् तिसआकारांतर कास्वरूपकहाचाहिये। यदिआकारांतरकोआप आत्मस्वरूपहीमानोगे तोआत्मरूपताकरही वहसर्वकोक्योंनहींप्रतीतहोता? ॥समाधान ॥ हेशिष्य द्वैतकावास्तवस्वरूपआत्माहीहै।यहप्रतीतिक्याआत्माकेअपरो क्षज्ञानवालेकोआपादनकरतेहो।अथवाअज्ञानीकेप्रतिआपादनकरतेहो? प्रथमपक्षमेंतोहमकोभीइष्टापत्तिहै । क्योंकिआत्माकेअपरोक्षज्ञानवाले पुरुषकोयहद्वैतनिर्विकल्पकख्यातिअर्थात्आत्मस्वरूपहीभासताहै ॥

औरद्वितीयपक्षभीनहींसंभवता।क्योंकिअन्यप्रकारकेआकारकीप्रतीति कालमेंस्वरूपप्रतीतिकाविरोधहोनेसे भ्रांतपुरुषकोतिसकीअयोग्यताहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् भ्रमज्ञानकाविषयअधिष्ठानसेभिन्नकोईहै ? अथवानहीं।।यदिअन्त्यपक्षकहो तोतिसकोभ्रान्तपनाकैसेहोगा। क्योंकिउसनेअधिष्ठानहीदेखाहै।। औरयदिप्रथमपक्षकहो तोतिसविषयका स्वरूपआपकरकथनकरनेयोग्यहै।।समाधान।।हेशिष्य अधिष्ठानसेभिन्न किंचित्मात्रभीनहीं ॥ यद्यपिऐसामानेहुएतिसकोभ्रांतपनानहींहोगा तथापिअन्यवस्तुविषयकप्रतीतिकोअन्यविषयत्वकेअभिमानसेहीतिस कोभ्रांतपनाहै । जैसेलोकमेंरज्जुकोदेखताहै । और "अयंसर्पः" ऐसे सर्पकाअभिमानकरताहै ॥ तैसेआत्माकोदेखताहै । और "इदंजगत्" ऐसाअभिमानकरताहै।।औरयदितुमयहकहो किवहअभिमानक्याहै । सोतुमश्रवणकरो।। परमार्थसेस्थितविषयकोभासमानहुएभी जोतिसमें असत्निश्चयअर्थात्भ्रमहै वहीअभिमानहै।। शंका ॥ हेभगवन् यदि वास्तवसेपुरुषकोरज्जुविषयकहीप्रत्ययहोताहै तोपुनः "यहसर्प है" ऐसे सर्पकेउल्लेखवालाहोकरवहप्रत्ययकैसेस्फुरणहोताहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्यरज्जुतथासर्पका सादृश्यहै । तिसीसेसर्पकी प्रतीतिहोतीहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् यदिसादृश्यदोषको आपअध्यास का कारणकहोगे । तोआत्मामें अन्याकारताकीप्रतीति नहींहुईचाहिये । क्योंकिनिरवयवहोनेसे तिसमेंअनात्माके सादृश्यकाअभावहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्यआत्मामें तोअज्ञानरूपदोषकेवशसेही अन्याकार ताकीप्रतीतिकासंभवहै । यातेसादृश्यसे अथवाअज्ञानसे भ्रमप्रत्यय संभवताहै । इसकारणसेही "नायंसर्पः" इसबाधकेउत्तररज्जुहीमैंने

सर्परूपताकरदेखी।ऐसेयहपुरुषमानताहै । याते "अयंसर्पः" यहप्रत्यय असत्‌रूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्‌क्यासर्पउसने देखाहीनहीं ? यदि आपइस अर्थको स्वीकारकरलोगेतो अनुभवकाविरोधप्राप्तहोगा । क्योंकिभ्रमकालमें सर्पकाअनुभवसर्वपुरुषोंकोप्रसिद्धहै ॥समाधान॥ हेशिष्यभ्रांतपुरुषके अनुभवकाविरोधहुएभी विरोधनहींहोता।क्योंकि तिसभ्रांतपुरुषकोक्याप्रतीतहुआक्यानहींप्रतीतहुआइसप्रकारकेविवेक का अभावहै ॥ औरभ्रांतिसेरहितपुरुषकोऐसाअनुभवहोतानहीं इसी से अनुभवकाविरोधनहीं है ॥शंका॥ हेभगवन् "रज्जुहीमैंनेदेखीसर्प नहींदेखा"ऐसेकथनकरेहुएप्रामाणिकपुरुषकेअनुभवकेअनुसारदृष्टांतमें तोअधिष्ठानरज्जुऔरतिसकोविषयकरनेवालीप्रतीतियहदोपदार्थवर्त्ततेहैं सर्पतथासर्पकाज्ञानयहदोनोंनहीं हैं। क्योंकिभ्रांतपुरुषकीप्रतीतिआदर करनेयोग्यनहीं । औरभ्रांतिज्ञानऔतिसकेविषयकाअसत्त्वपूर्वसमीप हीकथनकरआएहैं।औरदार्ष्टांतमेंतोस्वप्रकाशचेतनआत्माहीअधिष्ठान है । तिसविषयकदूसरीप्रतीतिकास्वीकारनहीं। क्योंकिअधिष्ठानऔर तिसकीप्रतीतियहदोनोंआत्माहीहैं।।ऐसेमानेहुएअधिष्ठानहीस्वस्वरूप कोनत्यागकरकेरूपांतरसेभासमानहुआविवर्त्तहै। यहपक्षदूरहुआ।क्यों किअधिष्ठानसेभिन्नविवर्त्तकास्वरूपदिखलानेकेअयोग्यहै । यातेरूपां तरकाअभावहोनेसे भानकर्तृत्वकाभीअभावहै । इससेस्वसिद्धांतका परित्यागअतिस्पष्टहै॥ समाधान ॥ हेशिष्य स्वसिद्धांतकात्यागनहीं होता ॥ क्योंकितिसविवर्त्तवादकोमध्यमअधिकारियोंकेप्रतिबोध मात्रप्रयोजनवालाहोनेकरउपनिषदोंकेतात्पर्यकी विषयतातिसमेंनहीं है ॥ तात्पर्य्ययहहै ॥ किजैसेमंदरकेशिखरपरआरूढहोनेकीइच्छा

वालापुरुषसोपानकेएकपर्वसे दूसरेपर्वपरचरणरखताहुआमंदरकेशिखर परआरूढहोजाताहै । इससोपानारोहणन्यायसे अद्वितीयचेतनमेंबुद्धि केप्रवेशअर्थप्रपंचका प्रथमआरोपकरके निषेधकरतीहुई श्रुतिभगवती विवर्तमेंपर्य्यवसानताकोप्राप्तहोतीहै ॥ वास्तवसेअन्याकारप्रतीतिके सद्भावप्रतिपादनमेंश्रुतिकातात्पर्य्यनहीं । अन्यथासमन्वयअधिकरण काविरोधप्राप्तहोगा॥क्योंकितिसमिथ्याप्रतीतिकोआत्माकीन्याईप्रमाण सिद्धहोनेकरतिससेहीद्वैतकीप्राप्तिहोजायेगी। यातेविवर्त्तमेंभीवास्तवसे श्रुतिकातात्पर्य्यनहीं। इसीसेस्वसिद्धांतकीभीहानिनहीं॥शंका॥हेभग वन्‌वहद्वैतदृष्टिमिथ्याहीहै।यातेदूसरीसत्यवस्तुकाअभावहोनेसे द्वैतकी प्राप्तिनहींहोती ॥ समाधान ॥ हेशिष्य द्वैतदृष्टिनिष्ठयहमिथ्यात्व क्याहै ॥ क्यात्रैकालिकअसत्त्वका नाममिथ्यात्वहै । वाअसत्पनेके तुल्यहुएभीकादाचित्कप्रतीति विषयत्वरूपमिथ्यात्वहै? द्वितीयलक्षण गतपदोंकाप्रयोजनकहतेहैं॥ यदि "असत्" मात्रहीमिथ्यात्वकालक्षण कहतेतोगगनकमलादिकोंमें अतिव्याप्तिहोती । तिसकेनिवारण अर्थ "कादाचित्कप्रतीतिविषयत्व" यहपदकथनकियाहै।औरप्रतीतिभी यहांअपरोक्षहीविवक्षितहै ॥ औरअसतनामसद्विलक्षणकाहै । और यदिकादाचित्कप्रतीतिविषयत्वही मिथ्यात्वकालक्षणकहें तोवृत्ति व्याप्यत्वरूपताकर आत्मामेंभीमिथ्यात्वप्राप्तहोगा ॥ तिसकीनिवृत्ति अर्थ "असत" यहविशेषणकथनकियाहै। आत्मासत्तसेविलक्षणनहीं किंतुसतरूपहै ॥ यातेतिसमेंमिथ्यात्वके लक्षणकीअतिव्याप्तिनहीं होती॥और"कादाचित्क"पदस्वरूपकथनपरहै। वहकिसीकाव्यावर्त्तक नहीं । यातेलक्षणकायहनिष्कर्षसिद्धहुआ ।

सद्वैलक्षण्येसति अपरोक्षप्रतीतिविषयत्वंमिथ्यात्वम्।

अ० ॥ सतसेविलक्षणहुआ अपरोक्षप्रतीतिकाजोविषयहोसो मिथ्याहै ॥ इति ॥ इसप्रकारद्वितीयपक्षगतमिथ्यात्वका लक्षणकह करअबत्रैकालिकअसतरूपहीप्रतीतिनिष्ठमिथ्यात्वहै।इसप्रथमपक्षकोइष्टा पत्तिसेदूषितकरतेहैं । प्रथमपक्षकहोतोवहहमकोभीस्वीकारहै। क्योंकि श्रुतिभगवतीद्वैतका त्रैकालिकअत्यंताभाव बोधनकरतीहै।औरद्वितीय पक्षभीनहींसंभवता । क्योंकितिसमिथ्याप्रतीतिसेभी अद्वैतकीहानि पूर्वकीन्याईहीअवस्थितहै । इसीअर्थकोस्पष्टकरतेहैं । "अयंसर्पः" इसप्रतीतिकोमिथ्या कथनकरनेवालेवादीनेतिस प्रतीतिविषयकऔर प्रतीतिअवश्यकहनेयोग्यहै ॥ क्योंकिमिथ्यात्वकालक्षणप्रतीति कर्मत्वअर्थात्प्रतीतिविषयत्वकरघटितहै जैसेमानेहुएवहप्रतीतिभि थ्यामिथ्याहै। अथवापारमार्थिकसतरूपहै ॥ वातुच्छहै? ॥अन्त्यपक्ष तोनहीं संभवता । क्योंकि अन्यप्रतीतिकीन्याई प्रथमप्रतीतिकोभी तुच्छताप्राप्तहोगी ॥ औरमध्यमपक्षभीनहींसंभवता।।क्योंकिद्वैतकी प्राप्तिहोतीहै । वहअनिष्टहै॥ औरअनवस्थादोषकीप्राप्तिहोनेसेप्रथम पक्षभीअसंगतहै ॥ यातेपूर्वउक्तमिथ्यात्वकालक्षणनहींसंभवता ।

शंका ॥ हेभगवन् "अयंसर्पः" इसप्रथमप्रतीतिकेमिथ्यात्वकानिर्वाह करनेकेलियेतिसविषयक अन्यप्रतीतिकास्वीकारहै ॥ औरतिसके माननेसेअनवस्थादोषकीभीप्राप्तिनहींहोती ॥ क्योंकिवहअन्यप्रतीति साक्षिरूपहै । औरतिससाक्षीकोस्वप्रकाशताहोनेकर अन्यप्रतीतिकी भीअपेक्षानहीं। औरतिसकोआत्मस्वरूपहोनेकरद्वैतकीभीप्राप्तिनहीं।

समाधान ॥ हेशिष्य (असंगोह्ययंपुरुषः) इसश्रुतिसेसाक्षि

निष्ठअसंगतहै । औरसंबंधसे विना प्रकाशकताका असंभवहै ॥ औरसाक्षीमेंकादाचित्कपनेकीभी अनुपपत्तिहै। क्योंकिवहनित्यहै ॥ इसीअर्थकोस्पष्टकरतेहैं॥ हेशिष्यसाक्षिशब्दसेअविद्याकीवृत्तिमेंआरूढ चेतनकाग्रहणहै।अथवाशुद्धचेतनमात्रकाग्रहणहै?॥ प्रथमपक्षतोनहीं संभवता ॥ क्योंकिविशिष्टपदार्थमिथ्याहोताहै ॥ यदिविशिष्टकोभी पारमार्थिकमानों तोविशेषणरूपवृत्तिकोभीपारमार्थिकत्वप्रसंगहोगा ॥ औरविशिष्टकोमिथ्यामानेहुए अनवस्थादोषपूर्वकीन्याईही अवस्थित है॥औरयदिऐसेकहो किवृत्तिमेंप्रतिबिंबितचैतन्यस्वस्वरूप तथावृत्तिइन दोनोंकोप्रकाशकरदेगा।क्योंकिवहस्वप्रकाशस्वरूपहै ॥ सोयहकथन भीनहींसंभवता ॥ क्योंकिलक्षणमें प्रतीतिविषयत्वकथनकियाहै ॥ औरएकहीपदार्थ मेंकर्तृकर्मविरोधहोनेसेप्रतीतिविषयत्वका असंभवहै॥ औरशुद्धचेतनमात्र साक्षिशब्दकाअर्थहै यहतृतीयपक्षयदिकहो तो तिसमेंयहविचारणीयहै वहसाक्षीस्वसंबंधिपदार्थकोप्रकाशकरताहै ॥ अथवास्वअसंबंधीकोभीप्रकाशकरताहै?॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता॥ क्योंकितिसकाकिसीपदार्थसेसंबंधनहीं।यहअर्थश्रुतिमेंप्रसिद्धहै। और द्वितीयपक्षभी नहींसंभवता॥ क्योंकिप्रदीपादिकों मेंस्वसंबद्धअर्थका हीप्रकाशकपनादेखाहै ॥ स्वअसंबद्धकानहीं ॥ तैसेसाक्षीभीस्वअसं बद्धअर्थकोकैसेप्रकाशकरेगा किंतुनहींकरसकता ॥ किंवा ॥ द्वैत दृष्टिजोहै।सोक्याप्रमाणसिद्धहै।अथवाभ्रमसिद्धहै?। प्रथमपक्षतोनहीं संभवता । क्योंकिअद्वैतप्रतिपादकश्रुतिकाविरोधप्रसंगहोगा । और द्वितीयपक्षभीनहींसंभवता । क्योंकिभ्रांतिसिद्धपदार्थनियमसेअसत् होताहै । औरयदिभ्रांतिसिद्ध पदार्थकोभीसत्मानोगे । तोतिसको

भ्रांतिविषयत्वकाहीअभावहोगा । इसपूर्वकथनसेयहअर्थसिद्धहुआ कियात्मानिष्ठद्वैतदृष्टिकदाचित्भीनहींसंभवती । इसीअर्थकोयह श्रुतिभीकहतीहै ॥

❁ यद्वैतन्नपश्यति पश्यन्वतन्नपश्यति । ❁ वृ० उ०

अ०॥ जोयहआत्मासुषुप्तिकालमेंकिसीद्वैतपदार्थकोनहींदेखता सोदेखताहुआभीनहीं देखता।तात्पर्य्ययहहै॥ तिसकालमेंआत्मादेखता नहीं इसहेतुसेजडहै ऐसेनहींजानना किंतुआत्मातोअलुप्तदृष्टिहै परन्तुकोईअनात्मपदार्थवहांहैनहीं यातेकिसकोदेखे॥ यहश्रुतिअलुप्त दृष्टिस्वरूपआत्मानिष्ठ द्वैतदृष्टिकोनिवारणकरतीहै ॥ और

❁ बालानप्रतिविवर्त्तोऽयंब्रह्मणः सकलंजगत् ।
अविवर्त्तितमानंदवर्त्ततेकृतिनःसदा ॥ १ ॥ ❁

अ० ॥ (बालान्) मध्यमअधिकारियोंकेप्रतियहसर्वजगत् ब्रह्म काविवर्त्तकथनकियाहै । और (कृतिनः) उत्तमअधिकारियोंको तोविवर्त्तसेरहितआनंदस्वरूपब्रह्मही सर्वदाकालवर्त्तमानहै ॥ १ ॥ यहस्मृतिभीआत्मानिष्ठद्वैतदर्शनका अभावहीमानतीहै । इसप्रकार आत्मामेंद्वैतदर्शनका अभावश्रुतितथास्मृतिकरसिद्धहैइति॥ शंका ॥ हेभगवन्कार्यसहित अज्ञानरूपद्वैतकाआत्मामेत्रैकालिकअत्यंताभाव है ॥ इसपक्षमेंनित्यमुक्ततथा असंसारीआत्माकोतत्त्वमस्यादिशास्त्र करसाध्यप्रयोजनकाअभावहोनेसेशास्त्रकोनिष्फलताकीप्राप्तिहोगी। तथाहितत्त्वमस्यादिशास्त्रक्याप्रत्यक्ब्रह्मके अभेदकोप्रकाशकरताहै। अथवातिसकेअज्ञानादिकोकी निवृत्तिकरताहै । प्रथमपक्षतो नहीं संभवता । क्योंकिप्रत्यक्ब्रह्मका अभेदचेतन रूपहोनेसेस्वप्रकाशहै॥

औरद्वितीय पक्षभी नहींसंभवता ॥ क्योंकि अत्यंत असतपदार्थ नित्यही निवृत्तहै ॥ इसप्रकारदोनोंपक्षोंमें शास्त्रकीनिष्फलता है ॥ समाधान ॥

*अथअसतकानिवर्त्तकरूपकरशास्त्रकीसफलता कानिरूपण ॥ *

हेशिष्यनित्यमुक्त तथाअसंसारी आत्मानिष्ठ अत्यंतअसत संसारकानिवर्त्तकरूपनाकरही शास्त्रकीसफलताहै । और "नासी दस्तिभविष्यति" इत्याकारकबाधका उत्पादकत्वहीसंसारकानिवर्त्तक त्व शास्त्रनिष्ठजानना॥औरध्वंसकानामनिवृत्तिनहींहै।क्योंकितिसको पूर्वनिपेधकरआएहैं॥ औरवहसंसारकानिवर्त्तकत्वभी शास्त्रकोप्रत्यक तथाब्रह्मकेअभेदगोचर अपरोक्षवृत्तिके उत्पादनद्वाराहीजानना। यह भावहै॥ शंका ॥हेभगवन्अत्यंतअसत पदार्थकोनित्यहीनिवृत्तहोने करतिसमेंशास्त्रकाव्यापार निष्फलहीहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्ययदि शास्त्रअसत कोनहींनिवृत्तकरता।तोक्यासतकोनिवृत्तकरताहै। अथवा अनिर्वचनीयको निवृत्तकरताहै? ॥ यहविचारणीयहै । प्रथमपक्षतो नहींसंभवता । क्योंकिजैसेअसतको शास्त्रनहीं निवृत्तकरता तैसे सतकोभीनिवृत्तनहींकरता। जिसकारणसे सतकोशास्त्रनिवृत्तकरताहै यहभीकहींनहींदेखा।अन्यथासत्आत्माकीभीनिवृत्तिहोगी॥औरयदि अनिर्वचनीयकोशास्त्रनिवृत्तकरताहै।यहद्वितीयपचकहोतोवहभीनहीं संभवता । क्योंकितिसकीनिवृत्तिभीशास्त्रकर देखनेमेंनहींआती ॥ कारणयहहै।किअनिर्वचनीयपदार्थ निवृत्तहोताहै । इसवार्त्तामेंवादी तथाप्रतिवादीकोनिर्णीतस्थलकोईभीनहीं ॥ यातेअनिर्वचनीयको

भीशास्त्रनहींनिवृत्तकरता ॥ शंका ॥ हेभगवन् जगत्कोग्रत्यंत असत्ग्रापनेकथनकिया । ग्रौरतिसकानिवर्त्तकशास्त्रहै ॥ यहवार्त्ता ग्रापनेतर्कसेप्रतिपादनकीहै ॥ प्रमाणकरसिद्धनहीं । इसग्राशंकाको · श्रीगुरु निषेधकरतेहुए ग्रौर शास्त्रकी सार्थकरूपतासे प्रमाणताको उपसंहारकरतेहुए उत्तरकहतेहैं॥ समाधान ॥ हेशिष्य जिसकारणसे प्रपंचग्रत्यंतग्रसतहै।इसीकारणसे

❀ विमुक्तश्चविमुच्यते। निवृतंचानिवर्त्तते ॥ ❀

इत्यादिशास्त्रमें ग्रत्यंतग्रसतसंसारका निवर्त्तकरूपताकरही शास्त्र निष्ठप्रामाणयकीसिद्धिहै।यहश्रुतिग्रन्यग्रर्थपरहैइसग्राशंकाको निवारणकरनेवाला संक्षेपशारीरकग्रारलोक पठनकरतेहैं ॥

❀ नित्यबोधपरिपीडितंजगद्विभ्रमंनुदतिवाक्यजामतिः।
वासुदेवनिहतंधनंजयोहन्तिकौरवकुलंयथापुनः॥❀

(अ० २ श्लो० १८)

ग्र० ॥ नित्यज्ञानस्वरूपग्रात्मामें स्वप्रकाशस्वरूपबोधकेप्रभाव से यहजगतरूपभ्रम "पीडित" कहियेग्रसतहै।तिसनित्यनिवृत्तसंसारको हीतत्त्वमस्यादि वाक्यसेउत्पन्नहुग्रासाक्षात्कारपुनःनिवृत्तकरताहै।जैसे श्रीकृष्णभगवान्करहननकरेहुएकौरवकुलकोपुनःग्रर्जुनहननकरताहै। यहस्मृतिभी नित्यबोधस्वरूपग्रात्माकेस्वरूपकाविचारकरकेजगत्रूप भ्रमकेग्रत्यंतग्रसत्त्वकोहीकथनकरतीहै। यातेग्रसत्की निवृत्तिकरके हीशास्त्रकीसफलताहै।यहग्रर्थसिद्धहुग्रा॥क्रिया॥शास्त्रको ग्रनर्थक रूपताकरग्रप्रामाणयकाजोग्रापादनहै।सोग्रद्वैतवादीकेमतिहै।ग्रथवा ग्रद्वैतवादीकेमतिहै?प्रथमपक्षकहोतोब्रह्मसे भिन्नशास्त्रग्रसतरूपहै ऐसे

माननेवालेवादियोंकेप्रतिशास्त्रनिष्ठअप्रमाणताकीप्राप्तिरूपदोषहोगा॥ क्योंकिवहप्रमाणकोहीमुख्यमानतेहैं॥औरअद्वैतवादियोंकेप्रतितिसदोष केआपादनकीअयोग्यताहै ॥ क्योंकिजोद्वैतकीवार्त्ताभीनहींजानते। किंतुसदाहीअद्वैतहै ऐसामानतेहैं । तिनकोयहदोषकैसेप्राप्तहोसकता है॥ शास्त्रअथवातिसकीप्रमाणता ब्रह्मसेभिन्नतिनकोस्वीकारहीनहीं यदिब्रह्मसेभिन्नइनदोनोंकोमाने तोइनदोनोंकरहीअद्वैतकीहानिहोगी ॥ शंका ॥ हेभगवन् यदिवेदको आपअप्रमाणमानोगे तोआपको पाखंडत्वप्राप्तहोगा॥क्योंकिवहवेदकोप्रमाणनहींमानता॥ समाधान॥ हेशिष्य वेदमेंहमअप्रमाणताभी नहींमानते॥ यातेपाखंडपनेकीप्राप्ति हमकोनहींहोती॥ औरवास्तवसेतोपाखंडत्वभी आत्मासेभिन्नअत्यंत असत्तहीहै।अद्वैतवादीकेप्रतितिसकाआपादनहीनहींसंभवता॥ यहभाव है ॥ शंका ॥ हेभगवन् वेदकीअप्रमाणताके अनंगीकारकरेहुएभी तिसकीप्रमाणता आपअंगीकारकरतेहो॥वानहीं?प्रथमपक्षमेंतोद्वैतकी प्राप्तिहोगी। योंकिब्रह्मसेभिन्न तिसकीप्रमाणता आपनेमानीहै। और द्वितीयपक्षमें ब्रह्मात्माकेअभेदकीअसिद्धिहोगी। क्योंकितिसमेंप्रमाण काअभावहै ॥ समाधान ॥

अथअद्वैतनिष्ठअप्रामाणिकत्वशंकाकापरिहारनिरूपण

हेशिष्य यहतुम्हाराविकल्प द्वैतदर्शीकेप्रतिहै।अथवाअद्वैतदर्शी केप्रतिहै? । प्रथमपक्षकहो तोहमारीक्याहानिहै । क्योंकिप्रमाणके आधीनआत्माकी सिद्धिमाननेवाले द्वैतदर्शीकेप्रति तिसदोषकीप्राप्ति होगी। औरद्वितीयपक्षमें तोप्रमाणप्रमेयभावकीहीअसिद्धिहै॥क्योंकि [यत्रत्वस्यसर्वात्मैवाभूत्] इसश्रुतिनेअद्वैत आत्माकाही

प्रतिपादनकियाहै ॥ किंवा॥ प्रमाणकाअन्वेषण तुमकिसलियेकरते हो।यदियहकहो। किअद्वैतआत्माकीप्रतीतिकेअर्थ प्रमाणकाअन्वेषण है तोयहकथननहींसंभवता । क्योंकिस्वप्रकाशरूपताकरही अद्वैत आत्माकीसिद्धिहै ॥ यहअर्थविस्तारसे पूर्वनिरूपणकरआएहैं॥ और यदिअज्ञानकीनिवृत्तिअर्थ प्रमाणकी अपेक्षाकहो तो भीअद्वैतकोसिद्ध होनेकरतिसमें प्रमाणकी अपेक्षानहीं।यातेअद्वैतको अप्रामाणिकताकी प्राप्तिनहींहोसकती ॥इति ॥ द्वैतदर्शीकिप्रति तिसकोदोषरूपताहै यह पूर्वकहाथा। तिसकोग्रहणकरके पुनःशिष्यशंकाकरताहै ॥

॥अथद्वैतदर्शित्वपदार्थकेविचारनिरूपणपूर्वकद्वैत निष्ठतुच्छत्वकाप्रतिपादन॥

शंका ॥ हेभगवन् द्वैतदर्शित्व क्याआत्माकाधर्महै ॥ अथवा आत्माकास्वभावहै?॥ प्रथमपक्षमेंभीपुनः यहविचारकर्तव्यहै। वहधर्म क्यासत्‌है अथवा असत्‌है?॥द्वितीयपक्षतोनहींसंभवता॥ क्योंकिअसत् वंध्याकेपुत्रकोकिसीका धर्मपनादेखानहीं ॥ औरप्रथमपक्षकहोगे तो द्वैतकीप्राप्तिहोगी॥औरआद्यद्वितीयपक्षमेंदर्शनकाद्वैतकोविशेषणपना हीकहनेयोग्यहै उपलक्षणपनानहीं।क्योंकिद्वैतको उपलक्षणमानेहुए "दर्शित्व" हीआत्माकास्वभावसिद्धहोगा । वहस्वदर्शित्वरूपनाकर भीवनसकताहै। यातेद्वैतपदकाग्रहणव्यर्थहोगा । इससेयहअर्थसिद्ध हुआ।किद्वैतविशिष्टदर्शित्वआत्माकास्वभावहैऐसेमानेहुएसर्व द्वैतकी भीस्वतः सिद्धिहोगी ॥ क्योंकि विशिष्टवृत्तिधर्मका विशेषणमें वर्त्तनेकानियमहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य द्वैतकोआत्माकास्वभाव मानेहुए तिसकीभीस्वतःसिद्धिहोगी।यहतुम्हाराकथननहींसंभवता ।

क्योंकिइसमेंयहविचारकर्तव्यहै। क्याआत्मास्वरूपहीद्वैतहै ऐसाअंगीकारकरके तुमद्वैतकीस्वप्रकाशताआपादनकरतेहो। अथवास्वतंत्ररूपताकरद्वैतकी स्वप्रकाशताकहतेहो?। प्रथमपक्षमेंतोहमकोभीइष्टापत्तिहै। क्योंकिआत्माकी स्वप्रकाशतास्वतःसिद्धहै। औरद्वितीयपक्षभीनहीं संभवता॥ क्योंकि (निवृत्तंचनिवर्त्तते) यहश्रुतिआत्मासे भिन्न सर्वकीतुच्छताबोधनकरतीहै। औरपूर्ण आत्माकेप्रतिपादकश्रुतिवाक्यकरसिद्धपूर्ण आत्मस्वरूपकीअनुपपत्तिसेभी द्वैतनिष्ठतुच्छताहै। यातेस्वतः अथवापरसेद्वैतकीसिद्धि अयोग्यहोनेसे द्वैतअत्यंतअलीकहै॥ इति। श्रुतिसिद्धआत्माके स्वरूपकीअनुसारतासेद्वैतकोतुच्छपनाकथन किया॥ तिसकेउपपादनकरनेकेलिये पुनःशिष्यआशंकाकरताहै॥

ॐ अथलौकिकतथापरीक्षकपुरुषोंकरतुच्छत्ववादका अनंगीकारनिरूपण ॐ

शंका॥हेभगवन् आत्मासेभिन्नद्वैत औतिसकादर्शन यहदोनों तुच्छहैं॥ इसमेंयहप्रष्टव्यहै। कियहमतलौकिकपुरुषोंको स्वीकारहै। अथवापरीक्षकपुरुषोंको स्वीकारहै?॥ यहांपरशास्त्रसंस्काररहितबुद्धिवालेपुरुष लौकिककहेजातेहैं॥ औरशास्त्रसंस्कारसहित बुद्धिवाले पुरुषपरीक्षककहेजातेहैं॥ यदिप्रथमपक्षकहो तोवहनहींसंभवता॥ क्योंकितिनलौकिकपुरुषोंको प्रपंचविषयक अबाधितत्वबुद्धिकबीभीदूर नहींहोती तोतिसमेंतुच्छत्वबुद्धि तोअत्यंतदूरसेहीनिरासकीगई॥ औरद्वितीयपक्षभी नहींसंभवता॥ क्योंकिसर्वपरीक्षकोंकीएकमति नहींहै॥ तथाहि॥ तिनमें सर्वप्रमाणप्रमेयव्यवहारकेलोपकरनेवाला प्रामाणिक जोसर्वशून्यवादीहै॥ तिसनेसर्वपदार्थोंका तुच्छपनास्वी

कारकियाहै॥औरशून्यत्वसेविरुद्ध नित्यतथाअनित्यकेविभागकरकोई
कआकाशादिकपदार्थ सकलकालमेंसत्यहैं॥ औरकोईकघटादिपदार्थ
कादाचित्कसत्यहैं॥इसप्रकार कणाद तथागौतमादि प्रामाणिकपुरुषों
नेस्वीकारकियाहै ॥ औरदोनोंप्रकारकी पदार्थोंकीसत्तासेविरुद्धसर्व
कालमें सर्वपदार्थोंकी सत्ताहै। यहसांख्य तथायोगशास्त्रकेकर्ता
कपिल तथापतंजलिमहर्षिने स्वीकारकियाहै ॥ क्योंकि तिनकेमत
मेंकार्यभीसत्है ॥ तथाहि।प्रथमवहकार्यउत्पत्तिसे पूर्वभीअसत्नहीं।
क्योंकि तिसकालमेंभी सूक्ष्मरूपसे कार्य्य विद्यमानहै ॥ औरवर्त्त
मान कालमें तो विद्यमान होने से ही कार्य असत् रूप नहीं ॥
और ध्वंसभी तिरोधानमात्ररूपहै अभावकानाम ध्वंसनहीं ॥
याते नाशसे अनन्तरभी तिरोधानहुआ कार्यविद्यमान है ॥
इसप्रकार सर्वकालमें सर्वपदार्थ सत्रूपहैं। यहसांख्यतथापातं
जलादिकोंकामतहै ॥ इसरीतिसे सर्वपरीक्षकोंका परस्परविरोध
होनेसे आत्मासेभिन्न सर्वअनात्मामें तुच्छता किसीकोभीस्वीकारनहीं
तैसेहुएलौकिक तथापरीक्षकपुरुषोंसेविरुद्ध जगत्का तुच्छत्व कैसे
स्वीकारकरनेकेमार्गमें आरूढहोगा किंतुनहींहोगा। औरयदिआप
ऐसेकहो किपरीक्षकोंका मतभीपरस्परविरुद्धहोनेसे त्यागनेयोग्यहै॥
सोयहकथनभी नहींसंभवता। क्योंकितिसतिसशून्यतथासर्वदासत्त्व
तथाकादाचित्कसत्त्वादिजोपक्षहैं।तिनमेंएकएकपरीक्षकका अंगीकार
तोअव्याहतहै अर्थात्अबाधितहै। औरतुच्छत्वपक्षमें तोकिसीका
भीअंगीकारनहीं।यातेवही त्यागनेयोग्यहै। औरयदिसिद्धांतीऐसेकहे
कितुच्छत्वपक्षमें परीक्षकके अंगीकारकाअभाव असिद्धहै। क्योंकि

मुझपरीक्षकका अंगीकारतिसमेंविद्यमानहै ॥ सोयहकथनभीअसंगतहै। क्योंकितुझकोअप्रामाणिकपनाहैअर्थात्प्रमाणसेपरीक्षाकरकेव्यवहारकरनेवालेकानामपरीक्षकहै। औरतुच्छतामेंकोई प्रमाणनहीं है। यदितुच्छतामेंभीकोईप्रमाण मानोगे तोतुच्छपनेकीहीहानि होगी ॥शंका॥ वस्तुकेदोरूपनहींसंभवते। इसहेतुसेसर्वपक्षप्रामाणि कहीहैं। यहनहींकथनकरसकते । इसप्रकारसर्वको परस्परविरुद्ध होनेकर इनमेंकौनपरीक्षकहै।औरकिसकामतसमीचीनहोनेसेउपादेय है। औरकिसकामतअसमीचीनहोनेसे त्यागनेयोग्यहै। इसअर्थमें नियामककाअभावहोनेसे एककाभी ग्रहणनहींहोगा। किंतुसर्वमतों कात्यागहोगा ॥ समाधान ॥ नित्यतथानिर्दोषवेदमूलकताकेसद्भाव तथाअसद्भावकोही इनकी विशेषतामें नियामकताहै ॥ अर्थात् जिसकामतवेदमूलकहै। वहग्रहणकरनेयोग्यहै ॥ औरजिसकामतवेद मूलकनहीं वहत्यागनेयोग्यहै। जैसेपाखंडियों कामतवेदमूलकन होनेसेत्यागनेयोग्यहै॥ इसप्रकारशिष्यद्वारा पूर्वपक्षकेप्राप्तहुए श्रीगुरु द्वारासिद्धांतीउत्तर निरूपणकरताहै ॥ समाधान ॥

ॐ अथश्रुतिप्रमाणसे तुच्छत्ववादकाउपपादन ॐ

हेशिष्य यहतोअत्यंत हर्षकीवार्त्ताहै ॥ क्योंकिअंतकोजाकर भीपुनःयदिश्रुतिपरही तुम्हाराविश्वासहै ॥ तोश्रुतिसिद्धजोनिर्दोष मतहैवहीग्रहणकरनेयोग्यहै । तिससेभिन्नसर्वहीत्यागनेयोग्यहैं ॥ क्योंकिवहअप्रामाणिकहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इतरमतअप्रामाणिकहैं यहकथनअयुक्तहै। क्योंकिइतरपक्षभी प्रत्यक्षादिप्रमाणमूलकहीहैं। समाधान ॥ हेशिष्य श्रुतिकाविरोधहोनेसेप्रत्यक्षादिकप्रमाणआभास

रूपताकोप्राप्तहोतेहैं॥यातेइतरमतोंमें अप्रमाणिकतासिद्धहै॥ शंका॥ हेभगवन्श्रुतिसाक्षातप्रपंचकी तुच्छताकेबोधनमेंतात्पर्य्यवाली नहीं क्योंकिसमन्वय अधिकरणकाविरोधहोगा। तिसमेंसर्ववेदकातात्पर्य्य एकअद्वितीयवस्तुमें प्रतिपादनकियाहै॥ समाधान॥ हेशिष्यश्रुतियें तोआत्मासेभिन्न सर्वअनात्मपदार्थोंमेंतुच्छताकाअभिमानकरतीहैं। उनश्रुतियोंकोहीपठनकरतेहैं॥

❀सदेवसोम्येदमग्रआसीत्एकमेवाद्वितीयं।नेहनानास्तिकिंचन।सएषनेतिनेतीति।❀

❀अथतस्यायमादेशअमात्रश्चतुर्थोऽव्यवहार्य्यः प्रपंचोपशमः शिवोऽद्वैतः॥

अ०॥ यहनित्यअपरोक्षआत्माकार्यकारण तथास्थूलसूक्ष्मरूप नहीं। अथनिसकायहनिषेधमुखउपदेशहै। तथाहि॥ जोवस्तुप्रमाकाविषयहो तिसकोमात्राकहतेहैं।जोमात्रासेभिन्नहो।सोअमात्रकहाजाताहै। अर्थात्अप्रमेयहै॥ अथवा॥ मात्रानामअवयवकाहै।तिससेरहितकानामअमात्रहै। इसकथनसेस्वगतभेदकानिषेधआत्मामें सिद्धहुआ॥ औरतुरीयचेतनकानामहीचतुर्थहै॥और(अव्यवहार्यः) कथनादिव्यापारकाअविषयहै॥ तिसआत्माकीपुरुषार्थरूपताको कहतेहैं॥ (प्रपंचोपशमः) दुःखरूपप्रपंचकाअत्यंताभावरूपहै॥ यहांआत्माकोप्रपंचाभावरूपतातबीसिद्धहो जबप्रपंचअसतरूपसिद्धहो। क्योंकिअसतकाअभावसतरूपहोताहै॥ जैसेअसतसर्पकाअभाव सतरज्जुरूपहै॥ इसकथनसे विजातीयभेदकाभीआत्मामेंनिषेधकिया तिसआत्माकी सुखरूपताकहतेहैं॥ (शिवः) वहआत्मासुखस्वरूपहै।

और (अद्वैतः) सजातीयभेदसेरहितहै ॥ इसप्रकार त्रिविधभेदका निषेधकरनेसे श्रुतार्थापत्तिप्रमाणप्रपंचकात्रैकालिकअभावबोधनकरता है ॥ शंका ॥ इसप्रकारत्रैकालिकअभावकाप्रतियोगिरूपताकरजब श्रुतिबोधनकरेगी ॥ तोप्रपंचकीप्रमाणसेसिद्धिप्राप्तहोगी ॥ समाधान भ्रांतिकरउपस्थितहुएपदार्थकोभी अभावकीप्रतियोगिता संभवतीहै यदिऐसेनमानें तो (नसुरांपिबेत्) अ० ॥ सुराकोयहपुरुषपान नकरेइत्यादिनिषेधकवाक्योंसेभीसुरापाननिष्ठप्रामाणिकताहुईचाहिये जैसेरागसेप्राप्तसुरापानकेनिषेधकोश्रुतिबोधनकरतीहै।परन्तुतिसनिषेध काप्रतियोगिरूपताकरसुरापानप्रामाणिकनहींहोसकता॥ तैसेदार्ष्टांत मेंभीजानना ॥ और "श्रुतियें अभिमानकरतीहैं" ॥ इसकथनसे समन्वयअधिकरणकाविरोधभीदूरहुआजानना ॥ क्योंकिसजातीय आदिकभेदसेरहितअद्वैतआत्माको श्रुतिबोधनकरतीहै। यदिप्रपंचकी तुच्छताकोश्रुतिनमाने तोविवक्षितआत्माकी सिद्धिहीनहींहोगी ॥ इसप्रकारअद्वैतआत्माकीसिद्धिके[illegible]है। तात्पर्य्यतोअद्वैतआत्मामेंहीहै ॥ [illegible] ॥ शंका ॥ हेभगवन् श्रुतिप्रपंचकीतुच्छताकोहीक्योंमानतीहै ॥ जिस कारणसेउक्तआत्माके स्वरूपकीसिद्धितोप्रपंचको मिथ्यामाननेसेभी बनसकतीहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य तिसआत्मासेभिन्नकिसीप्रकार काभी द्वैतमानेहुए अर्थात् मिथ्यारूपताकर अथवा सत्रूपता करद्वैतकी सत्तामानेहुएभी अद्वैतसिद्धांतकी हानि होतीहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्यदिप्रपंचकी तुच्छताहीश्रुतिअनुसारीहै। तोविवर्त्त वादतथापरिणामवादका स्वीकारकिसलियेकियाहै ॥ समाधान ॥

❀ विवर्त्तवादादिकोंकेस्वीकारकीव्यवस्था तथा जगत्कीतुच्छतानिरूपणकाउपसंहार ❀

हेशिष्यजिसकारणसे प्रपंचकाकिसीप्रकारसेभी मत्त्वमानेहुए अद्वैतसिद्धांतकीहानिहोतीहै ।तिसीकारणसेजगत्निष्ठतुच्छताश्रुति अनुसारीहै । औरविवर्त्तवादतथापरिणामवादको युक्तितथालौकिक प्रमाणमूलकहोनेसेवहभी अधिकारिभेदसे स्वीकारकियेजातेहैं। याते विरोधनहीं ॥ अर्थयह किमध्यमअधिकारीकेलिये विवर्त्तवादहै।और मंदअधिकारीकेलिये परिणामवादहै । यहअर्थगौडपादाचार्य्यो नेभीकहा है ॥

❀ तुच्छानिर्वचनीयाचवास्तवीचेत्यसौत्रिधा ।
ज्ञेयामायात्रिभिर्बोधैःश्रौतयौक्तिकलौकिकैः १॥❀

अ०॥श्रुतिजन्यतथायुक्तिजन्यऔरप्रत्यक्षादिप्रमाणजन्ययहजो तीनप्रकारकेबोधहैं। तिन्होंकरअज्ञानतत्कार्यतुच्छतथा अनिर्वचनीय औरपरिणामरूपताकर तीनप्रकारसेही जाननेयोग्यहै।अर्थात्जोपुरुष लौकिकप्रमाणकोआश्रयणकरनेवालेहैं।तिनकोतोअज्ञानतत्कार्यसत्य भासताहै ॥ यहपरिणामवादवेदांतवादकीप्रथमभूमिकाहै । और युक्तिको आश्रयणकरनेवालेनिपुणमतिपंडितोंको यहअज्ञानतत्कार्य अनिर्वचनीयभासताहै ॥ यहविवर्त्तवादवेदांतवादकीदूसरीभूमिका है । औरउत्तमभूमिकामें आरूढविद्वान् जिसकोश्रुतिजन्यबोधप्राप्त हुआहै तिसकोअज्ञानतत्कार्य तुच्छरूपतासे भासताहै ॥ इति ॥ इस प्रकारप्रपंचकीतुच्छतामें श्रुतिप्रमाणकोकथनकरके अवतिसमेंस्मृति कीसंमतिभीकहतेहैं। वसिष्ठभगवान्भी प्रपंचकीतुच्छताकोआश्च

य्यंकीन्याईकथनकरतेहैं ॥

अहोनुचित्रं यत्सत्यंब्रह्मतद्विस्मृतं नृणाम् ।
यदसत्यमविद्याख्यं तत्पुरःपरिवल्गति ॥ १ ॥
अहोनुचित्रं पद्मोत्थैर्बद्धास्तंतुभिरद्रियः ।
अविद्यमानायाविद्यातयाविश्वंखिलीकृतम् ॥२॥

अ० ॥ हेरामबहुतआश्चर्य्यहै । जोसत्यब्रह्मथावहपुरुषोंको विस्मृतहोगया । औरजोअसत्यअविद्यातत्कार्यथा वहसन्मुखसत्य प्रतीतहोताहै ॥१॥ हेरामबहुतआश्चर्यहै । जैसेकमलसेउत्पन्नहुए तंतुओंकरपर्वतबांधेहुएहैं तैसेअविद्यमानअर्थात्असत्जोअविद्यातिस करही सर्वजगत्दृढकियाहुआहै ॥ इति ॥

❀ अथअदृष्टद्वयपदकी व्याख्याकाउपसंहार ❀

हेशिष्य जिसहेतुसेद्वैतऔतिसकादर्शन तुच्छहोनेसे असतहै तिसीहेतुसे स्वतःसिद्धशुद्धबुद्धऔमुक्तस्वभावपरिपूर्णआनन्दस्वरूप आत्माकीअदृष्टद्वयता उपपन्नतरहै। अर्थयहजोअतिशयकरसंभवती है । तात्पर्य्ययहहै । द्वैतकोविवर्त्तमानेहुएभी अदृष्टद्वयताआत्माकीउप पन्नहै। अबतोप्रपंचकोतुच्छमानेहुएवहउपपन्नतरहै । अदृष्टद्वयही आत्माकावास्तवस्वरूपहै इसअर्थमेंश्रुतिप्रमाणनिरूपणकरतेहैं ।

नानिरोधोनचोत्पत्तिर्नबद्धोनचसाधकः ।
नमुमुक्षुर्नवैमुक्तइत्येषापरमार्थता ॥१॥
तदेवनिष्कलंब्रह्मनिर्विकल्पंनिरंजनम् ।
तत्ब्रह्माहमितिज्ञात्वाब्रह्मसंपद्यतेध्रुवम् ॥२॥
निर्विकल्पमनंतंचहेतुदृष्टांतवर्जितम् ।

अप्रमेयमनादिंचयज्ज्ञात्वामुच्यतेबुधः ॥३॥

अ० ॥ नकोईप्रलयहै । औरनकोईउत्पत्तिहै॥ औरनकोईबांधा हुआहै ॥ औरनकोई वैदिककर्मके अनुष्ठानकरनेवाला साधकहै । औरनकोईमुमुक्षुहै॥ औरनकोईमुक्तहै।यहीवास्तवसेसिद्धांतहै ॥(१) औरवहीब्रह्मतत्त्व(निष्कलं)निरवयवहै॥और (निर्विकल्पं) विशेषरूप नहीं । और (निरंजनम्) अविद्यादिदोषसेरहितहै । सोततपदका लक्ष्यअर्थब्रह्ममैंहूं।ऐसेसाक्षात्कारकरकेयहअधिकारिपुरुषआपही(ध्रुव) निश्चलकूटस्थब्रह्मभावकोप्राप्तहोताहै ॥२॥ औरजोब्रह्म(निर्विकल्पम्) गुणक्रियाजातिसेरहितहै । और (अनंतं) नाशसेरहितहै । और (हेतुवर्जितं) आपअकार्य्यहै । और (दृष्टांतवर्जितं) अनुपमअर्थात् अपनीतुल्यतासेरहितहै॥ इसकथनसे सजातीयभेदकानिषेधकिया॥ और (अनादिं) आपकिसीकाकारणनहीं । और (अप्रमेयं) अविषय स्वभावहै।ऐसेब्रह्मस्वरूपकोयहअधिकारीआत्मरूपतासेसाक्षात्कारकर केअविद्यातत्कार्यरूपबंधनसेमुक्तहोताहै ॥३॥ इत्यादिकश्रुतिवाक्य आत्मतत्त्वकोंद्वैतदर्शनसेशून्यत्वहीप्रतिपादनकरतेहैं । यातेअदृष्टद्वय स्वरूपहीआत्माहै । यहअर्थसिद्धहुआ ॥[इतिअदृष्टद्वयपदव्याख्या]

मू०। अथआत्मसाक्षात्कारकाफलतथातिसकोनिपेक्ष मोक्षकीसाधनताकानिरूपण॥

शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारकाआत्मतत्त्वहो।परन्तुतिससेक्या सिद्धहोताहै ॥ समाधान ॥

*मू० ॥ सत्यंज्ञानमनंतचपूर्णानंदविग्रहम् ।
मांत्रवर्णिकमात्मानंविनिश्चित्यविमुच्यते ॥८७॥

चौ ॥ सत्यज्ञानअनंतस्वरूपं । पूर्णआनंदरूपअनूपं ।
मंत्रउक्तआतमपहचाना । तांकरकियोबंधसबहाना ॥४४॥

टी० ॥ हेशिष्य जिसहेतुसेपूर्वउक्तवास्तववृतांतहै । तिसीसे "सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म" इसमंत्रवर्णकरसिद्धसत्य तथाज्ञान औरअनंत तथापूर्णऔरआनंदस्वरूपआत्माको अपनेसेअभिन्न अर्थात् "सोई मैं हूं" ऐसेसाक्षात्कारकरके यहअधिकारीअविद्यादिबंधनसे विमुक्तहोताहै यातेआत्मसाक्षात्कारसे स्वस्वरूपावस्थानरूपफलसिद्धहोताहै ॥इति ॥४७॥शंका॥ हेभगवन् यदिऐसाज्ञानकिसीकोहो तोघटादिज्ञानकी न्याईतिसकीउपलब्धिभीहो । परन्तुसाधनकेअभावसेऐसाज्ञानकिसी कोउत्पन्नहीनहींहोता॥ समाधान ॥ हेशिष्यऐसाज्ञानकिसीकोउत्पन्न नहींहोतायहतुम्हाराकथनअसंगत है ॥ क्योंकि तिसकासाधनमहा वाक्यरूपप्रमाण विद्यमान है ॥ और अनुपलंभ काविरोधभी नहीं संभवता ॥ क्योंकि ॥

❋ पश्यन्प्रतिपेदे । योयोदेवानांप्रत्यबुद्ध्यत सएवतदभवत् ❋

इत्यादिश्रुतियोंसेवामदेवादिकों में तिसज्ञानकीउपलब्धिप्रसिद्ध है॥ और साधनों के विद्यमानहुएभी ज्ञाननहींउत्पन्नहोतायहकथन अयुक्त है॥ क्योंकि वेदाध्ययनादि साधनों के अनुष्ठानसे जिसको विविदिषाउत्पन्नहुई है ॥ और ॥

अथातोब्रह्मजिज्ञासा ॥ शा० । १ । १ । १॥

इससूत्रमेंअथशब्दसेसूचनकिये हूए विवेकादिचतुष्टयसाधन संपन्नजोपुरुष है ॥ तिसकोश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकरउपदिष्टमहावाक्य

केविचारसेअनंतरज्ञानकीउत्पत्तिदेखनेमें आती है ॥ सूत्रकायहअर्थ है ॥ (अथ) साधनचतुष्टयसंपत्तिसेअनंतर (अतः) जिसकारणसे वेदहीअग्निहोत्रादिकर्मोंका अनित्यफल और ब्रह्मज्ञानकानित्यफल बोधनकरताहै ॥ इसीहेतुसेयहअधिकारी (ब्रह्मजिज्ञासा) ब्रह्मज्ञानके अर्थवेदांतविचारकरे ॥ इति ॥ शंका ॥ हेभगवन्जिनपुरुषोंनेवेदान्त काश्रवणकियाहै ॥ तिनको भी संसारकीप्रतीतिपूर्वकीन्याईहीदेखने मेंआती है ॥ समाधान ॥ हे शिष्य असंभावनातथाविपरीतभावना यहदोनोंआत्मसाक्षात्कारकेप्रतिबंधकहैं ॥ तिनकानिवर्त्तकमननतथा निदिध्यासनसहकृतऔश्रुतिकेतात्पर्यज्ञानकेअनुकूलमानसव्यापाररूप ऐसाजोवाक्यकाविचाररूपश्रवणतिसकेअनुष्ठानसेप्रतिबंधसेरहितज्ञान अवश्यउत्पन्नहोताहै॥ यदिऐसेनहींमाने तोतादृशआत्माकेस्वरूपका प्रतिपादकजोशास्त्रहै।तिसकोअप्रमाणताकीप्राप्तिहोगी।शंका।हेभगवन् ज्ञानसेमोक्षहोताहै इसकथनकाक्याअर्थहै। क्याज्ञानहीमोक्षकासाधन हैयहतिसकाअर्थहै।अथवाज्ञानभीसाधनहै तथाअन्यकर्मादिभीसाधन हैंयहतिसकाअर्थहै? ॥ प्रथमपक्षतोनहींसंभवता ॥ क्योंकि ॥

❀ विद्यांचाविद्यांचयस्वेदोभयंसह ❀ उ० ई० मं०(११)

अ०—ज्ञानतथाकर्मइनदोनोंकेसमुच्चयकोजोजानताहै। इत्यादि समुच्चयप्रतिपादकवाक्यका विरोध होगा ॥ और द्वितीयपक्षभीनहीं संभवता ॥ क्योंकि ॥

❀ कर्मणैवहिसंसिद्धिमास्थिताजनकादयः ❀
भ० गी० अ० ३ ॥ २० ।

अ०—कर्मकरकेही जनकादिक अधिकारिपुरुष मोक्षकोप्राप्तहुएहैं।

इत्यादिकेवलकर्मसे मोक्षप्रतिपादकवाक्योंका विरोधप्राप्तहोगा ॥ यातेउत्पन्नहुएज्ञानकोभीसाधनांतरकी अपेक्षाहोनेकरफलदेनेकेलिये वहविलंबकरताहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्ययहसमुच्चयवादनहींसंभवता क्योंकि ॥

तद्धैतत्पश्यन्नृषिर्वामदेवः प्रतिपेदेअहंमनुरभवं सूर्य्यश्चेति । ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति । तरतिशोक मात्मवित् ॥

अ०-(तत) ब्रह्मको (एतत) मैं हूं ऐसे (पश्यन्) साक्षात्कार करताहूआइसदर्शनसेहीऋषिभावकोप्राप्तहूआनामसेवामदेव(प्रतिपेदेह) निश्चयकरआत्मज्ञानकाफलरूपसर्वात्मभावकीप्राप्तिकेप्रतिपादक "मैं हीमनुहुआ" तथा "मैंहीसूर्य्यहूआ" ॥इत्यादिमंत्रोंकोदेखताभयाइत्यादिकश्रुतियोंसेआत्मज्ञानऔरतिसकेफलमोक्षकोएककालीनत्वकाकथन होनेसेमध्यमेंअन्यसाधनतथाकालकेविलंबकाअभावप्रतीतहोताहै। जैसे "भुंजन्तृप्यति" अ० भोजनकरताहूआतृप्तहोता है ॥ यहां भोजन औतृप्तिकेमध्यमेंऔरकोईकार्यनहींप्रतीतहोता ॥ तैसे "पश्यन्प्रतिपेदे" यहांभीदर्शनतथासर्वात्मभाव की प्राप्तिरूपफलकेमध्यकार्यांतर अर्थात् अन्यकिसीसाधनकीप्रतीतिवर्त्तमानार्थिक "शतृ" प्रत्ययकेकथनसेनहीं है। औरजिसकालमेंब्रह्मकोजानताहैतिसीकालमेंब्रह्मरूपहोताहै। इस कथनसेब्रह्मज्ञानतथाब्रह्मरूपताहोनेको एककालमेंप्रतीतिहोनेसेकाल काविलंबभीनहींप्रतीतहोता ॥ औरकर्महीमुक्तिके साधनहैं ॥ यह कथनभीसमीचीननहीं ॥ क्योंकि

तमेवविदित्वाऽति मृत्युमेतिनान्यःपंथाविद्यतेऽयनाय

इत्यादिकश्रुतियें अन्यसाधनका निषेधकरतीहैं ॥ और पूर्व जोस्मृतिकाविरोधतुमने कहाथावहभीनहींसंभवता ॥ क्योंकि "संसिद्धि" शब्दसेवहांतत्त्वज्ञानकाहीग्रहणहै ॥ और

❀ कषायेकर्मभिःपक्वेततोज्ञानं प्रवर्त्तते ॥ ❀

अ०॥ कर्मोंकेअनुष्ठानसे पापरूपमलकेनिवृत्तहुए तिससेअनंतरज्ञानप्रवर्त्तमानहोताहै॥इसशास्त्रसेकर्मोंकोतत्त्वज्ञानकाकारणभूतजो अंतस्करणकीशुद्धितिसकीहेतुताप्रतीतहोतीहै।इसकथनसेसमुच्चयप्रतिपादकवाक्यकाविरोधभीनिवारणकिया।क्योंकितहांही (अविद्या मृत्युंतीर्त्वा) इसवाक्यशेषकरके मृत्युरूपपापोंका निवर्त्तकत्वही अविद्याशब्दकेवाच्य कर्मोंकोप्रतीतहोताहै ॥ यातेज्ञानहीमुक्तिरूप फलकासाधनहै । यहअर्थनिर्दोषसिद्धहुआ ॥ यदिऐसेहै । अर्थात् आत्मज्ञानहीमुक्तिकासाधनहै । तोअवश्यहीजन्मादिसंसारदुःखसे भयभीतहुएपुरुषोंनेतिससंसारदुःखकी निवृत्तिकासाधन जोतत्त्वज्ञान वहश्रवणादिसाधनोंकर संपादनकरनेयोग्यहै यहअर्थप्रकरणकेउपसंहारमिषसेकहतेहैं ॥ तिसहेतुसेसंन्याससहिततत्त्वज्ञानहीयत्नसेसंपादनकरनेयोग्यहै ॥ यहां ॥

❀ त्यागएवहि सर्वेषांमुक्तिसाधनमुत्तमम् ॥ ❀

अ० ॥ यज्ञदानादिजोपरंपरासे मोक्षकेसाधनहैं ॥ तिनसर्वके मध्यसंन्यासहीमोक्षका उत्तमसाधनहै । इसशास्त्रकोआश्रयण करकेसंन्याससहिततत्त्वज्ञानमोक्षका साधनकहाहै ॥ यत्नसेतिसके संपादनमेंयहहेतुहै कितिसतत्त्वज्ञानके अभावहुएमहान्हानिश्रुतिने

कथनकीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (नचेदिहावेदिर्महतीविनष्टिः)

अ० ॥ यदिहमइससंसारमंडलमें ब्रह्मकोअपनाआत्मारूपनहींजानेंगे तोतिससेहमब्रह्मात्मसाक्षात्कारसेरहितहोंगे॥शंका॥ ब्रह्मसाक्षात्कारसे रहितहोजायेंतिसमेंक्यादोषहै॥समाधान॥ब्रह्मसाक्षात्कारकेअभावहुए जन्ममरणादिस्वरूपअनंतपरिमाणयुक्त विनाशप्राप्तहोगा ॥ तिसींसे अवश्यहीब्रह्मात्मसाक्षात्कारअधिकारिपुरुषोंने संपादनकरनायोग्यहै। इति ॥ ब्रह्मात्मसाक्षात्कारके उत्पन्नहुए संसारकीनिवृत्तिहोतीहै।इस अर्थमेंब्रह्मविद्पुरुषोंका अज्ञानतत्कार्य्यकीनिवृत्ति रूपफलसहितउद्गार अर्थात्अनुभवभीप्रमाण रूपताकर स्मरणकियाजाताहै॥तथाहि॥

❀ विद्याविग्रहमग्रहेण पिहितं प्रत्यंचमुच्चैस्तरा ।
मुत्कृष्योत्तमपूरुषंमुनिधियामुंजादिषीकामिवाकोशात्
कार्यकारणरूपविकृतात् पश्यामि निः संशयम् ॥
नासीदस्तिभविष्यतिक्वनुगतःसंसार दुखोदधिः ॥ ❀
स० शा० ४।५२ ॥)

अ०॥स्वप्रकाशचिद्एकरसजोपुरुषोत्तमहै। सोअत्यंतउच्चैरूपता करअविद्यासेआच्छादितहै। सहस्रोंप्रकारकेयत्नोंमें जोआच्छादितपने कोदुर्भेद्यताहै॥यहहीतिसपिधाननिष्ठ उच्चैस्तरत्वहै। औरवहीपुरुषोत्तम (प्रत्यक्) सर्वकाअंतरात्माहै जिसको (मुनिधिया)श्रुतिअनुकूलमनन सेतीतीक्ष्णकियेहुएविवेकज्ञानकरमुञ्जसे तूलीकीन्याईबाह्य अंतर्भावसे अनेकप्रकारकेविकारको प्राप्तहुएअन्नमयादिपंचकोशनसेपृथक्करके संशयसेरहित सोउत्तमपुरुषमैंहूं । इसप्रकारमैं देखताहूं । जिसब्रह्म

दर्शनकेप्रभावसेयहसंसार दुःखकासमुद्रनपूर्वथा। औरनअबहै। औरन आगेहोगा ॥ जानानहींजाता जोकहांगया। अर्थात्कभीहुआहीन था ऐसेप्रतीतहुआ ॥ ५३ ॥ तथापिआभासरूपद्वैतअसंभावितभी प्रतीतहोताहै ॥ यहकहतेहैं ॥

※पश्यामिचित्रामिवसर्वमिदंद्वितीयं॥तिष्ठामिनिष्कल चिदेकवपुष्यनंते । आत्मानमद्वयमाचिंत्यसुखैक रूपं पश्यामिदग्धरशनामिवचप्रपंचम् ※ ॥

सं० शा० अ० ४ ॥ ५४ ॥

अ० ॥ सर्वइसद्वैतकोचित्रकीन्यांई मैंदेखताहूं । इतनेमात्रसे अर्थात्आभासरूपजीवनसेमुक्तिकीकिंचितभीविकलतानहीं यहकहते हैं (तिष्ठामीति) औरनिरवयवतथाचेतनएकस्वरूपअनंतआत्मामें मैं स्थितहूं ॥ औरद्वैतसेरहिततथामनकाअविषय औआनंदएकस्वरूप आत्माकोमैंदेखताहूं ॥ शंका ॥ संसारदर्शन तथाब्रह्मदर्शनइनदोनों कोविरुद्धहोनेसे एककालमेंतिनकी स्थितिकैसेहोगी॥ समाधान ॥ दग्धरज्जुकीन्याईइसप्रपंचकोमैंदेखताहूं ॥ यातेप्रतिभासमानद्वैतको अर्थक्रियाकासामर्थ्यनहीं ॥ अर्थयह ॥ किअद्वैतदर्शनकरद्वैतप्रपंच काबाधहीहोजाताहै ॥ यातेपूर्वउक्तशंकानहींसंभवती ॥ ५४ ॥ शंका ॥ द्वैतदर्शनसे अद्वैतदर्शनकाहीबाधक्योंनहो ॥ समाधान ॥

※अद्वैतमप्यनुभवामिकरस्थबिल्वतुल्यं शरीरमहिनि र्ल्वयनीववीक्षे । एवंचजीवनमिवप्रातिभासनंचनिः श्रेयसाधिगमनंचममप्रसिद्धम् ॥※सं० शा०अ० ४।५५

अ० ॥ अद्वैतकोभीहस्तपरस्थितविल्वफलकीन्याई मैंअनुभव करताहूं । इसलियेअद्वैतअनुभवकोकदाचित्भीपरोक्षतानहीं ॥ और जैसेसर्पनेपरित्यागकीहुईजोत्वचाहै वहसर्परूपभासतीहै।तैसेशरीरादि संसारबाधितहुआभीभासताहै।यातेद्वैतदर्शनसे अद्वैतदर्शनकाबाधनहीं होता। अन्यथावस्तुकेस्वभावकापरित्यागप्राप्तहोगा । इसप्रकारजीवत कीन्याईप्रतीति तथामोक्षकीप्राप्ति यहदोनोंमुमुक्षकोप्रसिद्धहैं॥ ५५ ॥ तत्वसाक्षात्कारकालमेंशरीरबाधकेयोग्यहै । यहतोक्याहीकथनकरने योग्यहै। परन्तुतत्त्वसाक्षात्कारसे पूर्वभीद्वैतप्रपंचकीप्रतीति जोमुझको हुई तिसमेंभीमुझकोआज आश्चर्य्यभानहोताहै ॥ अर्थात् प्रथमही यहप्रपंचबाधितथा यहकहतेहैं॥

❀ आश्चर्य्यमद्यममभातिकथंद्वितीयं नित्येनिरस्त निखलेशिवाचित्प्रकाशे । आसीत्पुरेतिकिमिमाः श्रुतयोनपूर्वं येनद्वितीयमभवत्तिमिरप्रसूतम् ❀

सं० शा० अ० ४ ॥ ५७

अ० ॥ आजमुझकोयहआश्चर्य्यभासताहै।किजोनित्यतथा अज्ञानतत्कार्यसेरहित तथाआनंद औस्वप्रकाशआत्मामें यहद्वैतपूर्व कैसेस्थितहुआ ॥ शंका ॥ इसमें क्याआश्चर्य्यहै पूर्वकालमेंश्रुति जन्यबोधनहींथा । औरअबवहश्रुतिजन्यबोधविद्यमानहै।यातेतिस करद्वैतबाधितहोगया ॥ समाधान ॥ तत्त्वज्ञानकेजनकवेदांतवाक्य क्यापूर्वनहींथे जिसकर यहअज्ञानसेउत्पन्नहुआद्वैत आत्मामेंउपस्थित हुआ । अर्थात् अज्ञानकेनिवर्तकतत्त्वज्ञानकेउत्पादकअनादिसिद्ध निर्पेक्षकारणरूपवेदांतवाक्यपूर्वभीविद्यामानहीथे।तोभीअज्ञानादिद्वैत

प्रतीतहुआ यहहमकोआश्चर्य्यहै ॥ ५७ ॥ इसप्रकारशास्त्र और आचार्य्यकेप्रसादसेजिसअधिकारीकोब्रह्मात्मतत्त्वकादृढसाक्षात्कारउदय हुआहै ॥ तिसकेगुरुभक्तिकीप्रकटताभीस्मरणकीजातीहै । क्योंकि गुरुभक्तिसेभीयहब्रह्मविद्याउत्पन्नहोतीहै ॥ तथाहि ॥

त्वत्पादपंकजसमाश्रयणंविनामेसन्नप्यसन्निवपरः पुरुषःपुरासीत् । त्वत्पादपद्मयुगलाश्रयणादिदानीं नासीन्नचास्तिनभविष्यतिभेदबुद्धिः । यस्मात्कृपा परवशोममदुश्चिकित्संसंसाररोगमपनेतुमसिप्रवृत्तः त्वत्पादपंकजरजः शिरसादधानःत्वामाशरीरपतना दहमप्युपासे ॥ सं० शा० अ० ४ । ५८ । ५९॥

अ० ॥ हेभगवन् आपकेचरणारविंदोंकोसम्यक्आश्रयणकरने सेविनामुझकोपूर्वसर्व अनात्मासेउत्कृष्ट तथापूर्णरूपआत्मा सतभी असतकीन्याईप्रतीतहुआ । अबआपकेदोनोंचरणकमलोंकेआश्रयण सेवहभेदबुद्धि नपूर्वथी औरनअबहै औरनआगेहोगी ॥ ५८ ॥ जिसकारणसे कृपापरवशहुए आपमेरे असाध्यरोगके निवृत्तकरनेको अर्थात् संसारकेनाशकरनेकोप्रवृत्तहुएहो । इसीकारणसेआपकेचरण कमलोंकीरजशिरपरधारणकरताहुआमैंआपकोशरीरकेपातपर्य्यंतसेवन करूंगा ॥ ५९ ॥ यातेब्रह्मविद्याकीकामनावाले जिज्ञासूजनोंनेगुरु भक्तिअवश्यअनुष्ठानकरनीचाहिये ॥इति॥ शंका ॥

❀अथविद्यासेसंसारकीअनिवृत्तिनिरूपण❀

हेसिद्धांतिन् विद्याकरअविद्याकाबाधहुएभी संसारकीनिवृत्ति

कैसेहोसकतीहै। कैसायहसंसारहै।जोइसलोक तथापरलोकमें संचार वालाहै । तथानानाप्रकारकीयोनियोंकीप्राप्तितथापरिहारकरकेअनेक प्रकारकेदुःखकरसंयुक्तहै । तिसकीविद्याकरनिवृत्तिकैसेहोगी।क्योंकि तिसकेकारणकामकर्मादि तोपूर्वकीन्याईहीस्थितहैं । औरयदिआप ऐसेकहो किकर्मसंसारका उपादानकारणनहीं। किंतुअविद्याउपादान कारणहै। वहअविद्याजबज्ञानसेनिवृत्तहोगई तबअविद्यामूलकसंसार भीनिवृत्तहोजायेगा । सोयहकथनभीनहींसंभवता । क्योंकिजैसेवै शेषिकमतमेंउपादान कारणकेनाशहुएभी एकक्षणपर्यंतकार्यपश्चात् अवस्थितरहताहै । तैसेयहांभी उपादानकारणरूपअविद्याकेनाशहुए प्रपंचकीअनिवृत्तिकीशंकादूरनहींहोसकती। औरयदिऐसेकहोकिद्वितीय क्षणमेंकार्यआपहीनाशहोजायेगा । यातेदोषनहीं । सोयहकथनभी असंगतहै । क्योंकिप्रथमक्षणकीन्याई उत्तरक्षणमेंभीप्रपंचकी अनुपपत्तिका अभावअनुमानकरसकतेहैं । सोअनुमानयहहै ॥

❀ अविद्यानिवृत्त्युत्तरतृतीयक्षणः प्रपंचानुपपत्त्या भाववान् । क्षणत्वात् । अविद्यानिवृत्त्युत्तर द्वितीयक्षणवत् ॥ ❀

अ० ॥ अविद्याकीनिवृत्तिसे उत्तरजोतृतीयक्षणहै वहप्रपंचकी अनुपपत्तिकेअभाववालाहै । क्षणहोनेसे । अविद्याकीनिवृत्तिसेउत्तर द्वितीयक्षणकीन्याई ॥ इति ॥ तिसकारणसेअज्ञानकेनिवृत्तहुएभी संसारकीनिवृत्तिनहींहोगी ॥ क्योंकितिसकीनिवृत्तिमें प्रमाणका अभावहै । यातेप्रयत्ननिष्फलहै ॥ समाधान ॥

अथतत्त्वज्ञानसेसंसारकीनिवृत्तिकाप्रकारनिरूपण।

हेवादिन् तत्त्वज्ञानका जैसेअज्ञानकेसाथविरोधहै। तैसेकर्मोंके साथभीतुल्यहीविरोधहै। यातेधर्मतथाअधर्मरूपकर्मभी तत्त्वज्ञानकर निवृत्तहोजातेहैं॥ यहअर्थश्रुति तथायुक्तिकरप्रसिद्धहै॥ तथाहि।

मू०॥ कर्ममूलमनर्थानांतञ्च ज्ञानेनबाध्यते।
क्षीयन्तचास्यकर्माणितथाचश्रुतिशासनम्॥५८॥

दो०॥ कर्ममूलअानर्थको कियोज्ञाननेराप।
तज्ञकर्मसवनाशहुइ तैसेश्रुतिवचभाष॥ ४८॥

टी०॥ ज्ञानकेउत्पन्नहुएभी कर्ममूलकसंसारकीअनुवृत्तिहोगी यहजोवादीनेकथनकिया सोनहींसंभवता॥ क्योंकिअविद्याकीन्याई अनर्थोंकेमूलभूतकर्मोंकाभी ज्ञानकरबाधहोजाताहै। जैसेज्ञानका अविद्याकेसाथविरोधहे तैसेतिसअविद्याकेकार्यकेसाथभीविरोधतुल्य हीहै। जैसेरज्जुकेसाक्षात्कारसे तिसकीअविद्याके निवृत्तहुए अविद्याकेकार्य्यसर्पादिकोंकीनिवृत्तिनहींहोती यहकथननहींसंभवता तैसेब्रह्मात्माके साक्षात्कारसे मूलाऽविद्याकी निवृत्तिहुए तिसकेकार्य प्रपंचकीअनुवृत्तिहोतीहै। यहकथनभीनहींसंभवता॥ औरयदितुम ऐसेकहोकि (यतोज्ञानमज्ञानस्यैवनिवर्त्तकम्) अ०॥ जिसकारणसेज्ञानअज्ञानकाहीनिवर्त्तकहै। यहजोशास्त्रकारोंकाअव धारणहै। सोज्ञानकोकार्यकानिवर्त्तकमानेहुए असमीचीनहोजायेगा सोयहकथनभीनहींसंभवता॥ क्योंकिअज्ञानकाकार्यअज्ञानसेभिन्न नहीं। अज्ञानकेअभावहुए तिसकीसत्तानहींप्रतीतहोती।यातेतिनके

कथनसेविरोधनहीं । औरतत्त्वज्ञानसे अज्ञानकेनिवृत्तहुएकर्मोंकी निवृत्तिमेंप्रमाणकाअभावहै यहवादीका कथनभीनहींसंभवता ॥ क्योंकिसाक्षात्श्रुतिही इसअर्थमेंप्रमाणहै ॥ तथाहि ॥

❀ भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः ।
क्षीयन्तेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥ ❀

अ०॥परकहियेहिरण्यगर्भादि वहहैं "अपर"कहियेनिकृष्टजिससे तिसकानामपरावरअर्थात्परब्रह्महै।तिसपरब्रह्मकाअपनेआत्मासेअभिन्न रूपताकरसाक्षात्कारहुए इसविद्वान्पुरुषकीचिद्जडग्रंथिअर्थात्देहादि कोंमेंजोआत्मबुद्धिवहनिवृत्तहोजातीहै । औरसर्वसंशयनाशहो जातेहैंऔरसर्वकर्मभी निवृत्तहोजातेहैं ॥ इति ॥ औरयदिवादी ऐसेकहे कियहवाक्यअशुभकर्मोंकी निवृत्तिकाबोधकहै ॥ सोयह कथनभीनहींसंभवता। क्योंकिकर्मशब्दशुभतथाअशुभमेंसाधारणहै। औरविद्याकासामर्थ्य दोनोंकेनाशमेंसाधारणहै ॥ और

❀ ब्रह्मात्मैकत्वविज्ञानंशाब्दंदैशिकपूर्वकम् ॥
बुद्धिपूर्वकृतंपापंकृत्स्नंदहतिवन्हिवत् ॥ १ ॥

अ० ॥ श्रोत्रिय तथाब्रह्मनिष्ठआचार्यकरउपदिष्टमहावाक्य रूपशब्दसेउत्पन्नहुआजोब्रह्मात्माके अभेदकाअपरोक्षज्ञानहै वहबुद्धि पूर्वककियेहुए सर्वपापकर्मोंकोदाह अर्थात् नाशकरताहै। जैसेअग्नि सर्वकाष्टकोभस्मकरदेताहै । इसस्मृतिसे बुद्धिपूर्वककियेहुएपापकर्मों कानाशकथनकियाहै । और

❀ यथैधांसिसमिद्धो ऽग्निर्भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन ।
ज्ञानाऽग्निसर्वकर्माणिभस्मसात् कुरुतेतथा ।
(भ० गी० अ० ४ ॥ ३७ ॥)

अ० ॥ हेअर्जुनजैसेप्रज्वलितअग्निसर्वकाष्ठोंकोभस्मरूपकर देताहै । तैसेतत्त्वज्ञानरूपअग्निभीसर्वकर्मोंकोनाशकरताहै । इस वाक्यमेंश्रीकृष्णभगवान्जीनेभी सर्वशब्दसे सकलपुण्यपापकर्मोंको ग्रहणकरकेतिनसर्वकाज्ञानअग्निसे दाहनिरूपणकियाहै ॥ किंवा ॥ जिसविद्वान्केदर्शनमात्रमेंअन्यपुरुषोंकेपापनिवृत्तहोजाते हैं तिसब्रह्म रूपब्रह्मवेत्ताकेपापकर्मनाशहोजातेहैं यहतोक्याहीकथनकरनाहै ।इसी अर्थकोभगवान्वसिष्ठजीनेभीकहाहै ॥

❀ यस्यानुभवपर्य्यन्तं तत्वेबुद्धिःप्रवर्त्तते ।
तत्दृष्टिगोचराः सर्वेमुच्यंतेसर्वपातकैः॥ ❀

अ०—जिसपुरुषकीअपरोक्षअनुभवपर्यंत बुद्धिआत्मतत्त्वमेंप्रव र्तमानहोतीहै तिसकीकृपादृष्टिकाविषयहुए सर्वजनसर्वपापोंसेमुक्तहो जाते हैं ॥१॥ इति ॥ औरतैसेहीकुलपवित्रत्वकीहेतुताभीब्रह्मवेत्ताको स्मृतिमेंकथनकीहै ॥ तथाहि ॥

❀ कुलंपवित्रं जननीकृतार्था विश्वंभरापुण्यवती चेतन । अपारसंवित्सुखसागरेऽस्मिन् लीनंपरे ब्रह्मणियस्यचेतः । ❀

अ०—देशकालादिपरिच्छेदसेरहित तथाचेतनऔआनंदकेस मुद्रइसपरब्रह्ममें जिसपुरुषकाचित्तलीनहुआहै ॥ तिसकीकुलपवित्रहै औरतिसकीमाताभीकृतार्थहै ॥ औरतिसब्रह्मवेत्ताकरवहपृथ्वीभीपुण्य

वालीहोतीहै जहांकिवहब्रह्मविद्पुरुषनिवासकरताहै ॥१॥इति॥४८॥

इसप्रकारपूर्वउक्तयुक्तिसे जैसाब्रह्मात्माकाअभेदविज्ञानकथन कियाहै। तिसकरयहअधिकारीपुरुषकृतार्थहोताहै ॥ इसअर्थमेंकिंचित मात्रभीविवादकरनेयोग्यनहीं ॥इति॥[अवांतरप्रयोजननिरूपण तथा ग्रंथकाउपसंहार]अबमुमुक्षुपुरुषोंकीप्रवृत्त्यर्थग्रन्थकास्तवनकरतेहैं॥

*प्रकाशानंदयतिना कृतिनाआत्मशुद्धये।
सिद्धांतमुक्तावल्येषा रचितारंध्रवर्जिता ॥१॥*

अ०—ब्रह्मात्मसाक्षात्कारसंपन्न मुमुक्षुप्रकाशानंदयतिनेअंतस्करणकीशुद्धिकेअर्थदोषरूपछिद्रसेरहितयहवेदांतसिद्धांतमुक्तावलीरचना कीहै ॥ १ ॥ यहमुक्तावलीकहांसमर्पितहै ॥ ऐसीआकांक्षाकेहुए कहतेहैं ॥

*अद्वैतानंदसंदोहा सत्यज्ञानादिलक्षणा ।
नारायणसमासक्ता श्रियासापत्न्यदूषिता ॥२॥*

अ०—अद्वैततथाआनंदकेसमूहकीप्राप्तिहै जिससेऔरसत्यज्ञानादिस्वरूपआत्माकोबोधन करनेवाली जोयहसिद्धांतमुक्तावली सोनारायणमेंसम्यक् आसक्तहै अर्थात्समर्पितहै। औरलक्ष्मीके साथसपत्नीभावकरदूषितहै अर्थात् अन्यसर्वदोषसेरहितहै ॥२॥ अबग्रंथकाअवांतरप्रयोजनकहतेहैं ॥

*शृणुप्रकाशरचितां सद्वैततिमिरापहां ।
वादीभकुंभनिर्भेदसिंहदंष्ट्राधरी कृताम् ॥३॥*

अ० ॥हेवादियोंकेजयकरनेकीइच्छावालेपुरुषमुमुक्षप्रकाशानंद

कररचनाकीहूईइससिद्धांतमुक्तावलीकोतृश्रवणकर कैसी यहसिद्धांत मुक्तावलीहै जोद्वैतकेसहितअज्ञानकोनाशकरनेवालीहै॥ तथावादी रूपहस्तियोंके मस्तकोंकोभेदनकरनेवालेसिंहकी दाढ़ेंभीजिसकरतिर स्कारकीगईहैं ॥ इसलियेवादियोंकेजयकरनेकीइच्छावालेपुरुषोंने इसीकाअभ्यासप्रयत्नसेकरनाचाहिये । यहभावहै ॥ ३ ॥ दुर्विज्ञेय अर्थसकलरूपतासेइसमेंकथनकियाहै यहकहतेहैं ॥

वेदांतसारसर्वस्वमज्ञेय मधुनातनैः ।
अशेषेणामयोक्तंतत्पुरुषोत्तमयत्नतः ॥ ४ ॥

अ० ॥ वेदांतोंकासर्वसार जोइदानींकालकेपुरुषोंकरजानना कठिनहै । वहसारअर्थसकलरूपताकर परमात्माकीप्रेरणासेप्राप्तहुए प्रयत्नकरमेंनेकथनकियाहै ॥ ४ ॥ ब्रह्मज्ञानमेंसर्वकर्मोंकाअंतर्भाव कहतेहुएग्रंथकोसमाप्तकरतेहैं ॥

❀ स्नातंतेनसमस्ततीर्थसलिलेसर्वापिदत्तावनिःयज्ञा नांचकृतं सहस्रमखिलादेवाश्चसंपूजिताः॥ संसारा च्चसमुद्धृताःस्वपितरस्त्रैलोक्यपूज्योप्यसौ।यस्य ब्रह्मविचारणे क्षणमपिस्थैर्य्यं मनःप्राप्नुयात्॥५॥ ❀

अ० ॥ जिससाधनसंपन्नअधिकारीकाचित्तएकक्षणमात्रभीब्रह्म विचारमेंस्थिरताकोप्राप्तहुआहै ॥ तिसनेसर्वतीर्थोंकेजलोंमेंस्नानकर लिया ॥ औरसर्वपृथ्वीभीतिसनेदानकरदी ॥ औरहज़ारोंयज्ञोंका अनुष्ठानभी तिसनेकरलिया । औरसर्वदेवताओंकापूजनभी तिसने करलिया ॥ औरसंसारसेअपनेपितरोंकाउद्धारभी तिसनेकरलिया ॥

औरतीनलोकोंमेंस्थितप्राणियोंकरपूजनेयोग्यभीवहीहै । क्योंकि ब्रह्मवेत्ताब्रह्मस्वरूपहै। औरब्रह्मविद्यामेंसकलकर्मतथाउपासनाकेफलका अंतर्भावहै ॥ इसलियेब्रह्मविद्याकेअर्थमुमुक्षुजनोंनेसदाप्रयत्नकरना यहभावहै ॥४॥ इति ॥ अबटीकाकारश्रीनानादीक्षितविद्वान्स्वविनय पूर्वकग्रंथकीसमाप्तिमेंनिर्गुणवस्तुनिर्देशरूपमंगलकोकरतेहुएइसदीपिका नाम्नीटीकाकोसमाप्तकरतेहैं ॥ यद्यपिवहमूलटीकायहांलिखीनहींगई यातेइनश्लोकों कीव्याख्याकरनीअयुक्तहै तथापिवहटीकासमग्र यहां भाषामेंविद्यमानहै यातेइनश्लोकोंकीभाषाव्याख्यायुक्तहीहै ॥

❋ नानादीक्षितसंज्ञेन विदुषेयंविनिर्मिता।
सिद्धान्तमौक्तिकश्रेणीदीपिकात्मप्रकाशिका॥१ ❋

अ० ॥ नानादीक्षितसंज्ञिकमुझविद्वान्नेयहसिद्धांतमुक्तावली कीदीपिकानाम्नीटीकारचनाकीहै । कैसीवहटीकाहै जोआत्मतत्त्व केप्रकाशकरनेवालीहै ॥ १ ॥ अबअगलेश्लोकमेंअपनीनम्रताको प्रकटकरतेहैं ॥

❋विदितसकलवेद्यैर्नप्रशंसंतिलोकेग्रथितमपिमहद्भिः
किंपुनर्मादृशेन।इतिविफलसमेऽस्मिन् वाङ्मयेऽहं
प्रवृत्तः स्वमतिविमलतायैक्षन्तु महांतिसंतः॥२॥❋

अ०॥ सकलवेदार्थकेजाननेवाले महानुभावपुरुषोंकररचनाकरे हुएग्रंथोंकोभी सकलजनश्लाघानहींकरते।तोमुझजैसेमनुष्यकररचना करेहुएग्रंथको लोगश्लाघानहीं करेंगेयहतोक्याहीकथनकरनाहै। इस लियेनिष्फलतुल्यइसवाणीरूपग्रंथ रचनामें मैंप्रवृत्तहुआहूं । परन्तु अपनेअंतःकरणकीशुद्धिकेअर्थ मेरीप्रवृत्तिसफलहै।यातेशांतचित्तमहात्मा

मेरेदोषोंकोक्षमाकरनेकेयोग्यहैं।२।अववस्तुनिर्देशरूपमंगलकोकरतेहैं॥

यदज्ञानादिदंभातीयज्ज्ञानाच्च प्रलीयते ।
ब्रह्मस्यांतदहंनित्यं नित्यसंवितसुखाद्वयम् ॥३॥

अ० ॥ जिसकेअज्ञानसेयहदृश्यमान जगतभानहोताहै । औरजिसकेज्ञानसेअत्यंतनाशहोताहै ॥ सोनित्यतथाचेतनस्वरूप औरआनंदतथाअद्वयस्वरूपब्रह्मसदामेंहूं ॥ ३ ॥

अवटीकानिर्माणका स्थानकहतेहुएसमाप्तकरतेहैं ।

अधिकाश्युपविश्वेशमियं सिद्धांतदीपिका ।
निर्मिताराजतांशश्वत्सदानंद प्रदायिनी ॥ ४ ॥

अ० श्रीकाशीजीमें विश्वेश्वरमहादेवजीकेसमीपयहसिद्धांत दीपिकानाम्नीटीका रचनाकीहै।सोमुमुक्षुपुरुषोंको सदाआनंदकेदेने वालीहुईनिरंतरविराजमानहो ॥ (४) इति ॥

गीयामा० ॥ विनाशजाको काहूविधसो नाहिकोऊपावहै ।
जोसर्वजगअवभासको आनंदपरमसुभाव है ॥
सजातीयआदिद्वैतजामेंदृष्टनांहिआवहै ।
सोआतमाहे रामरमियो निखल वेदवताव है ॥ १ ॥

क०॥ सोईशुद्धब्रह्मपर मायिकस्वरूपधर देवनकेहितकर जगप्रगटएहैं । नीलमेघसमश्याम तनद्युतिअभिरामअतिछविपिखकाममनमोल जएहैं।नैनछविपिखमृग मीनमुरझायरहे कंजखंजभृंगमन माहि विसमएहैं। कमलसदोषपद कमलअदोषसदा ताहिंरघुनाथको प्रणामहमकऐहैं ॥ २ ॥

तोटकछंद०॥ चहराममएगुरुनानकहैं, कलिदोषनदाहकपावकहैं।
जहदर्शनतेनिरयादिटरे, पदकंजनताहिनमोहमरे ॥३॥

चौ०॥ श्रीगुरुअंगदजनहितकारी, अमरदासजनकेदुखहारी।
रामदासगुरुपरमकृपालू, श्रीगुरुअर्जुनजनप्रतिपालू ॥ ४ ॥
तुरकननाशकहरीगोविंद, श्रीहरीरायभक्तबखशिंद।
श्रीहरीकृष्णजननसुखदान,धर्मकेतुगुरुनवममहान ॥ ५ ॥

दो० ॥ इनसबगुरुवनकेसदा चरणकमलधरसीस।
वंदोंविनकरजोरकर धरोंध्यानअहिनीस ॥ ६ ॥

स्वै०॥मुखजाहिंशशीसमशोभतहै परदोषविहीनतिसेअधिकाई।
नैनसरोजसमंपिखिये परहैकरुणारसकीसरसाई।
भुजदंडअहीसमशोभतहैं परदीननपालकताउचताई।
तांगुरुगोविंदकेहरकेपद दुंदनमोममहोयसदाई ॥ ७ ॥

अनंगशेषर॥ रचाअगारभोगमोक्ष सेवकानहीतसे परोपकारवीचनीत चीतकोहुलासहै।हनामहातमोजिने सतीमतीप्रकाशदेक्षमादयादमो सुशीलजाहिंमेंनिवासहै। रिदेअडोलधीर आस्यकंजहैविकाशजां पिखेत्रितापशांतहोत दोषभीविनासहै। हमेंअधारहैसदा धरोंसुचीत ताहिके पदारविंदकोनमो जुमोरपूरआसहै ॥ ८ ॥

दो० ॥ वेदपादकेआदिके वर्णवामगतिसान।
ममसद्गुरुकोनामहै भक्तनकोसुखदान ॥ ९ ॥

शिषरणी० ॥ रचीजांकीलीला सकलजगमेंहै वचनकी। गुणावंती शोभा अकथशशिजैसे वदनकी।महावानीजानी दुरत सबहूकेदलनमें।नमोवारंवारंभवदुखकोहेजननिमे ॥१०

सो० ॥ श्रीगुरुचरणध्यान भयोसहायकनीतमम ॥
कारजभयोमहान बुधजनकोजुहर्षप्रद ॥ ११ ॥

स्वैया ॥ मोत्तददोहरिनामनरोतम मित्रवरंममनीतसहाई ।
तांहिकिप्रेरनधारहियेइस कारजकीमनमेंहुलसाई ।
सबसज्जनसंतनसोविनती ममदोषछमोंमतिमेंलघुताई ।
भयिग्राजसमासगिरीमुक्तावलि सीयपतिप्रतिदीनचढ़ाई ॥१२

क०॥मुकतियुकतिपुनसारमतिदेनवारीसारस्रुतीसमजगजानोमुकतावली
संशयविपरीतज्ञानवादीतर्कनगिरिनाशवेकोकुलिशबिडौजमुकतावली
त्यागभोगग्रावलीकोधरेमुक्तावलीजोकटेदुखग्रावलीकोयहीमुकतावली
ग्रानंदभुवनमध्यदीपिकाप्रकाशयुनवेदकेसिद्धांतनकीलसेमुकतावली॥ १३

दो० ॥ सिद्धीदरशननाथशशि संवतफल्गुणमास ।
श्वेतपत्ततिथिवेदशशि सुतग्रहिपूरविलास ॥ १४ ॥

सो० ॥ श्रीगुरुग्रर्जुनथान तरनतारनविख्यातजग ।
तहांरंभइतिजान रिषीकेशसुरसरितटे ॥ १५ ॥

इतिश्री १०८ मन्निर्मलसृताऽवतंसब्रह्मविदुत्तमहरिहरिपूज्यपाद
शिष्येणगुरुदत्तसिंहसाधुनाविरचितायांवेदांतसिद्धांतमुक्तावली
भाषायांउत्तरार्द्धम् ॥

इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाऽचार्यस्वामिप्रकाशाऽनंदयतिवरविरचित
वेदांतसिद्धांतमुक्तावलीग्रंथस्य श्रीनानादीक्षितविरचितसिद्धांत
दीपिकाटीकोपेतस्य श्रीमन्निर्मलसृताऽवतंस ब्रह्मविदुत्तम
हरिहरिपूज्यपादशिष्येण गुरुदत्तसिंहसाधुनाविर
चिताऽनंदभुवनाख्याप्राकृतभाषाटीकासमाप्ता
॥ ओ३म् ॥

॥ ओ३म् ॥

अथश्रीवेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली मूलकारिकायाः शब्दार्थबोधिनी भाषाटीकाप्रारम्भः ॥

दो० ॥ नैनवैनमनजानको नैनवैनमनजान ।
सोमैं द्वैतविनाशविन चिदानंदनिशान ॥ १ ॥

सवैया ॥ वन्दनदोकरजोरकरों रघुनंदनकोसवदूषनिकन्दन ।
कन्दनदासनकेभवफन्धन हैजनतापमिटावनचन्दन ।
चन्दनतारकपावकथौरवि जोतिनजोतिकरेसवनन्दन ।
नन्दनहीननकोकरनन्दन हैममपालकवैरघुनन्दन ॥२॥

चौ० ॥ गुरुनानकगोविन्दहरिवरके । चरणकमलकोवन्दनकरके ।
स्वगुरुपदपङ्कजधरध्यानूं । मूलकारिकाअर्थवखानूं ॥ ३ ॥

अदृष्टद्वयमानंदमात्मानं ज्योतिरव्ययम् ।
विनिश्चित्यश्रुतेः साक्षाद्युक्तिस्तत्राभिधीयते ॥१॥

भा० ॥ (अव्ययम्) विनाशसेरहित (ज्योतिः) स्वप्रकाश (आनंदम्) परमपुरुषार्थ (अदृष्टद्वयम्) द्वैतदर्शनसेरहित (आत्मानम्) आत्माको (साक्षात्श्रुतेः) साक्षातउपनिषदसे (विनिश्चित्य) निश्चय करके (तत्र) उक्तचतुष्टयविशेषणविशिष्टआत्मामें (युक्तिः) श्रुति अनुसारीतर्क (अभिधीयते) निरूपणकियाजाताहै ॥ १ ॥

आत्मानित्योऽथवानित्यो भेदस्त्वाद्येस्फुटोमतः ।
अन्त्येतुकृतहानिः स्यादकृताभ्यागमस्तथा ॥२॥

भा० ॥ (आत्मानित्यः) आत्मानित्यहै (अथवा अनित्यः) अथवाअनित्यहै (तुआद्ये) प्रथमपक्षमें (भेदः) देहादिकोंसेआत्मा काभेद (स्फुटोमतः) स्पष्टहीअंगीकारहै । (तुअन्त्ये) औरद्वितीय पक्षमें (कृतहानिः) कियेहुयेकर्मनकाभोगसेविनानाश [तथा] और तैसेही (अकृताभ्यागमः) नकियेहुएकर्मनकेफलकी प्राप्तिरूपदोष (स्यात्) होगा ॥ २ ॥

जीवाश्रयाब्रह्मपदाह्यविद्या तत्त्वविन्मता ।
तद्विरुद्धमिदं वाक्यमात्मात्वज्ञानगोचरः ॥ ३ ॥

भा० (अविद्या) अज्ञान (जीवाश्रया) जीवकेआश्रितहै । और (ब्रह्मपदा) ब्रह्मकोविषयकरताहै। यहवार्ता (तत्त्ववित्मता) यथार्थजाननेवालोंको अंगीकारहै।इसलिये [आत्मातुअज्ञानगोचरः] आत्माही अज्ञानकाविषयहै [इदंवाक्यम्] यहवादीका कथन (तत्विरुद्धम्) तिनके कथनसे विरुद्धहै ॥ [हि] जीवआश्रित अज्ञानमानेहुएभीतिसकोउपाधिहोनेकरआत्माश्रयदोषनहींआता॥३॥

प्रत्यक्षादिप्रमाणानां प्रमात्वंपरतोयदि ।
अनवस्थास्फुटातत्र स्वतस्त्वेदोषसंशयः ॥ ४ ॥

भा० ॥ [प्रत्यक्षादिप्रमाणानाम्] प्रत्यक्षादिप्रमाणोंनिष्ठ [यदि] जोकदाचित् [परतोप्रमात्वम्] परतोप्रमात्वमानोंतो (तत्र) तिसपक्षमें [अनवस्थास्फुटा] अनवस्थादोषस्पष्टहीप्राप्तहोगा ॥ और

[स्वत स्त्वे] परमात्मकोस्वतःआह्यत्वमाननेमें (दोपसंशयः) दोषकी संभावनाहोगी ॥ ४ ॥

॥जीवब्रह्मप्रयोगाभ्यामेकं वस्त्वथवाद्वयम्।

आद्येत्विष्टंममैवस्यात् द्वितीयेत्वन्मतक्षतिः॥५॥

भा० ॥ (जीवब्रह्मप्रयोगाभ्याम्) जीवऔरब्रह्मइनदोशब्दोंसे [एकंवस्तु] एकहीपदार्थकहतेहो [अथवाद्वयम्] अथवादोपदार्थ कहतेहो । [आद्ये] प्रथमपक्षमें [तु] ब्रह्मशब्दसेभीआत्माकाही कथनहोनेसे [ममैव] मेराही [इष्टम्] इष्टसिद्ध [स्यात्] होगा ॥ [द्वितीये] द्वितीयपक्षमें [त्वन्मतक्षतिः] तेरेमतकीहानिहोगी ॥५॥

॥अविद्यास्वाश्रयाभिन्नविषयास्यात्तमोयतः।

यथावाह्यंतमोदृष्टंतथाचेयंततस्तथा ॥६॥

भा० ॥ [अविद्यास्वाश्रयाभिन्नविषयास्यात्] अविद्याअपने आश्रयसेअभिन्नकोविषयकरनेवालीहै ॥ (यतः) जिसकारणसे (तमः) तमरूपहै । (यथा) जैसे (वाह्यंतमः) वाह्यअन्धकार(दृष्टम्) अपनेआश्रयसेअभिन्नकोविषयकरताहुआदेखाहै। (तथाचइयम्) तैसे हीयहअविद्या(ततः)तमरूपहोनेसे(तथा)स्वाश्रयाभिन्नविषयणीहै॥६

॥ब्रह्मात्मनोर्विभिन्नत्वेभेदः स्वाभाविकोयदि।

औपाधिकोऽथवाभेदः सर्वथानुपपत्तिकः॥७॥

भा० ॥ (ब्रह्मात्मनोर्विभिन्नत्वे) ब्रह्मऔरआत्माकाभेदमानेहुए (यदि) क्या (स्वाभाविकः भेदः) तिनकास्वरूपप्रयुक्तभेदहै (अथवाऔपाधिकःभेदः) अथवाउपाधिप्रयुक्तभेदहै॥ (सर्वथा) सर्व

प्रकारसे (अनुपपत्तिकः) भेदनहींसंभवता ॥ ७ ॥

❀ लौकिकीवैदिकीचापिनाऽज्ञानेदृश्यतेप्रमा ।
कार्य्यंदृष्ट्याऽथकल्प्यंचेल्लाघवादेकमेवतत् ॥८॥

भा० ॥ [अज्ञाने] अज्ञानमें [लौकिकी] लौकिकप्रत्यक्षादि प्रमाण [च] अथवा [वैदिकी] वेद [प्रमाण्यपि] प्रमाणभी [नदृश्यते] नहींदेखाजाता [अथचेत्] यदि [कार्य्यंदृष्ट्या] प्रपंच रूपकार्य्यकोदेखकर [तत्] वहअज्ञान [कल्प्यम्] कल्पनाकरने योग्यहैतो [लाघवात्] लाघवसे [एकमेव] एकहीस्वीकारकरो॥८॥

❀वन्धमोक्षव्यवस्थास्याज्जीवाभेदेकथंतव ।
यथादृष्टंतथैवास्तुदृष्टत्वात्स्वप्नदृष्टवत् ॥९॥❀

भा० ॥ [तव] तेरेमतमें [जीवाभेदे] जीवको एकमानेहुए (बन्धमोक्षव्यवस्था)बन्धतथा मुक्तिकीव्यवस्था(कथंस्यात्) कैसेहोगी (उ०) (यथादृष्टम्) जैसेतेरेमतमेंव्यवस्थादेखीहै । (तथाएवअस्तु) तैसेहीहमारेमतमेंहो (दृष्टत्वात्) देखनेसे (स्वप्नदृष्टवत्) स्वप्नमेंबन्ध मुक्तिकीव्यवस्थाजैसेदेखीजातीहै तैसे ॥९॥

❀अज्ञातसत्त्वंनेष्टंचेद्व्यवहारःकथंभवेत् ।
नह्यदर्शनमात्रेणविपरणोनाशनिश्चयात् ॥१०॥

भा० ॥ (चेत्) यदि (अज्ञातसत्त्वम्) प्रपंचनिष्ठअज्ञातसत्ता (नइष्टम्) अंगीकारनहींतो (व्यवहारः) व्यवहार(कथंभवेत्) कैसेहोगा (हि) जिसकारणसे (अदर्शनमात्रेण) पुत्रादिकोंकेअदर्शनमात्रकर तिनका (नाशनिश्चयात्)अभावनिश्चयसेकोईभीपुरुष (विपरणः न)

विषादयुक्तनहींहोताइसवास्तेप्रपंचकीअज्ञातसत्तामाननीयोग्यहै ॥१०

॥सत्त्वत्रयंवदन्वादीप्रष्टव्योऽत्राधुनामया ।
सत्यंद्वैतमसत्यंवानासत्येत्रिविधंकुतः ॥११॥

भा० ॥ [सत्त्वत्रयम्] त्रिविधसत्ता (वदन्) कहताहुआ (वादी) एकदेशी (अत्र) यहां (अधुना) अब (मया)मेरेकर (प्रष्टव्यः) पूछनेयोग्यहै ॥ क्या (सत्यंद्वैतम्) द्वैतसत्यहै (वाअसत्यम्) अथवा अनिर्वचनीयहै ॥ (न) प्रथमपक्षनहींसंभवता । क्योंकिद्वैतापत्तिरूप दोषहै ॥ और (असत्ये) प्रातीतिक द्वैतमानेहुए (त्रिविधम्) तीन प्रकारकीसत्ता (कुतः)-किसहेतुसेहै ॥ ११ ॥

॥द्वैतभेदेप्रतिज्ञानंप्रत्यभिज्ञाकथंवद ।
दशानांयुगपत्सर्पभ्रमेयद्वत्तथैवसा ॥१२॥

भा० प्र० ॥ (प्रतिज्ञानम्) ज्ञानज्ञानप्रति (द्वैतभेदे) द्वैतकाभेद मानेहुए (प्रत्यभिज्ञा) सोईयहप्रपंचहै यहप्रतिभिज्ञा (कथम्) किस प्रकारहोगी (वद) यहतुमकहो ॥ उ० ॥ (यद्वत्) जैसे (युगपत्) एककालमें (दशानाम्) दशपुरुषोंको (सर्पभ्रमे) सर्पभ्रमहुएभ्रमरूप प्रतिभिज्ञाहोतीहै (तथाएव) तैसेही (सा) वहप्रपंचगोचरप्रतिभिज्ञा भ्रमरूपहै ॥ (१२)

॥सर्पभ्रमाद्विशेषोऽस्तिजाग्रद्बोधेऽन्यथाकथम् ।
इन्द्रियादेरुपादानंतदभावेयतोनधीः १३॥

भा० ॥ (सर्पभ्रमात्) सर्पभ्रमसे (जाग्रद्बोधे) जाग्रत्ज्ञानमें (विशेषःअस्ति) विलक्षणताहै । (अन्यथा) यदिऐसेनमाने तो

(इन्द्रियादेः) इन्द्रियादिकोंका (उपादानम्) ग्रहण (कथम्) कैसेहोगा (यतः) जिसकारणसे (तत्अभावे) इन्द्रियोंकेअभावहुए (धीः) जाग्रत ज्ञान (न) नहींहोता ॥ १३ ॥

❀इन्द्रियाणांकारणत्वेभवेच्चोद्यंतदातव ।
स्वप्नभ्रमेयथातेषामन्वयव्यतिरेकधीः ॥१४॥❀

भा० ॥ हेवादिन् (इन्द्रियाणाम्) इन्द्रियोंको (कारणत्वे) जाग्रत्ज्ञानकेप्रतिकारणताकेहुए [तदा] तब (तव) तेरा (चोद्यम्) विकल्प(भवेत्) होसकेपरंतुऐसेनहीं क्योंकि (यथा) जैसे(स्वप्नभ्रमे) स्वप्नभ्रममें (तेषाम्) इन्द्रियोंका (अन्वयव्यतिरेकधीः(अन्वयव्यतिरेकज्ञानभ्रमरूपहै तैसेजाग्रत्ज्ञानकेप्रतिजानो ॥ १४ ॥

❀मृदादीनांकारणत्वंनचेदिष्टंघटंप्रति ।
अविद्यायाःकारणत्वंकथंसिद्धयेत्प्रमांविना॥१५॥

भा० ॥ (चेत्) यदितुमको (मृदादीनाम्) मृत्तिकादिकोंकी (कारणत्वं) कारणता (घटंप्रति) घटकेप्रति (इष्टंन) स्वीकारनहींहै ॥ तो (प्रमांविना) प्रमाणसेविना (अविद्यायाः) अविद्याको (कारणत्वम्) प्रपंचकीकारणता (कथम्) कैसे (सिद्धयेत्) सिद्धहोगी ॥ १५ ॥

❀यथासतोजनिर्नैवमसतोपिजनिर्नच ।
जन्यत्वमेवजन्यस्यमायिकत्वसमर्पकम् ॥१६॥

भा० ॥ (यथा) जैसे (सतः) सत्की (जनिः) उत्पत्ति (न) नहींहोती । (एवं) इसी प्रकार (असतःअपि) असत्की भी (जनिः) उत्पत्ति (नच) नहींहोती ॥ इसवास्ते (जन्यस्य) कार्य

प्रपंचनिष्ठ (जन्यत्वंएव) कार्यपनाही (मायिकत्वसमर्पकम्) आविद्यक पनेकाज्ञापकहै ॥ १६ ॥

❋प्रतीतिमात्रसत्त्वंचेत् सत्त्वंप्रातीतिकंमतम् ।
अविरोधान्ममापीष्टं तद्भेदेवदकाप्रमा ॥१७॥❋

भा० ॥ (चेत्) यदि(प्रातीतिकंसत्त्वम्) प्रातभासिकसत्ता(प्रतीतिमात्रसत्त्वम्) प्रतीतिमात्रसत्ताही(मतम्)स्वीकारहै। तोइसपक्षमें (अविरोधात्)विरोधकाअभावहोनेसे(ममअपि)मुझकोभी(इष्टम्)इष्टापत्तिहै॥ (तद्भेदे) औरज्ञानज्ञेयकेभेदमें(काप्रमा) कौनप्रमाणहै (वद) यहतुमकहो अर्थात् ज्ञानज्ञेयकेभेदमें कोईभीप्रमाणनहीं ॥ १७ ॥

❋ प्रत्येतव्यप्रतीत्योश्चभेदः प्रामाणिकःकुतः ।
प्रतीतिमात्रमेवैतत् भातिविश्वंचराचरम् ॥१८॥ ❋

भा० ॥ (प्रत्येतव्यप्रतीत्योःच) ज्ञानऔरज्ञेयका (भेदः) भेद कुतः) किसहेतुसे (प्रामाणिकः] प्रमाणसिद्धहैकिंतुकिसीहेतुसेनहीं । इसवास्ते (एतत्) यह (विश्वम्)संसार(चराचरम्)स्थावरजंगमरूप जो (भाति) भानहोताहै। वह (प्रतीतिमात्रंएव) ज्ञानमात्रहीहै।॥१८॥

❋ ज्ञानज्ञेयप्रभेदेनयथा स्वाप्नंप्रतीयते ।
विज्ञानमात्रमेवैतत्तथा जाग्रच्चराचरम् ॥१९॥❋

भा० (यथा) जैसे(स्वाप्नं)स्वप्नकालीनजगत्विज्ञानमात्रस्वरूपहुआ भी (ज्ञानज्ञेयप्रभेदेन] ज्ञानतथाज्ञेयकेभेदविशिष्ट (प्रतीयते) प्रतीत होताहै।(तथा) तैसेही (एतत्) यह (जाग्रतचराचरं) जाग्रत्कालीन स्थावरजंगमरूपजगत् (विज्ञानमात्रंएव) विज्ञानमात्रस्वरूपहीहै॥१९॥

तन्तोर्भेदेपटायद्वच्छून्य एवस्वरूपतः ।
आत्मनोपितथैवेदं भानमात्रंचराचरम् ॥ २० ॥

भा०॥ (यद्वत्) जैसे (तन्तोः) तंतुसे (भेदे) भिन्नकियेहुए (पटः) पट (स्वरूपतः) स्वरूपसे (शून्यःएव) असत्हीहोजाताहै ॥ (तथाएव)तैसेही(इदम)यह(चराचरम्)स्थावरजंगमरूपजगत्(आत्मनः अपि) आत्मसेभिन्नकियाहुआभी असतरूपहीहै ॥ क्योंकि (भान मात्रम्) विज्ञानमात्रस्वरूपहै ॥२०॥

रज्जुर्यथाभ्रान्तदृष्ट्यासर्प रूपाप्रकाशते ।
आत्मातथामूढबुद्ध्याजगद्रूपः प्रकाशते ॥ २१ ॥

भा० ॥ (यथा) जैसे (रज्जुः] जेवरी [भ्रान्तदृष्ट्या] भ्रान्त पुरुषकीदृष्टिसे[सर्परूपा] सर्परूप (प्रकाशते] प्रतीतहोतीहै । [तथा] तैसे (मूढबुद्ध्या) अज्ञानीकीदृष्टिसे [आत्मा] आत्माभी [जगत् रूपः] जगत्रूप [प्रकाशते] प्रतीतहोताहै ॥ २१ ॥

आत्मन्येवजगतसर्वं दृष्टिमात्रमतत्त्वकम् ।
उद्भूयस्थितिमादाय विनश्यतिमुहुर्मुहुः ॥ २२ ॥

भा० ॥ (सर्व जगत्) सकलप्रपंच (दृष्टिमात्रम्) प्रतीतिमात्र (अतत्त्वकम्) तथा अवास्तवरूप (आत्मनिएव) आत्मामेंही(उद्भूय) उत्पन्नहोकर तथा (स्थितिम्) स्थितिको (आदाय)ग्रहणकरके (मुहुः मुहुः) पुनः पुनः (विनश्यति) विनाशहोताहै ॥२२॥

पूर्णानन्दाद्वयेशुद्धे पापक्षेपादिवर्जिते ।
प्रतिबिंवमिवाभाति दृष्टिमात्रंजगत्त्रयम् ॥२३॥

भा० ॥ (पूर्णानंदा द्वये) पूर्ण औ आनंद तथा द्वैतसे रहित. (शुद्धे) अविद्या मल रहित तथा (पापदोषादिवर्जिते) पाप औ रागादि दोषसेरहित आत्मामें (जगत्त्रयम्) त्रयलोकात्मक प्रपंच (दृष्टिमात्रम्) प्रतीतिमात्र (प्रतिबिंबंइव) प्रतिबिंबकेसमान (आभाति) भासताहै ॥ २३ ॥

*यत्तत्त्वंवेदगुह्यंपरमसुखतमं नित्यमुक्तस्वभावम्।
सत्यंसूक्ष्मात्सुसूक्ष्मंमहदिदममृतंमुक्तमात्रैकगम्यम्।
यस्यांशेलेशमात्रंजगदिदमखिलंभ्रांतिमात्रैकदेहम्।
प्रत्यग्ज्योतिस्वरूपंशिवमिदमधुनाकथ्यतेयुक्तितोऽत्र ॥ २४

भा०॥ (यत्तत्त्वम्) जोअनारोपित आत्माहै (वेदगुह्यम्) वहवेद प्रमाणकरहीजाननेयोग्यहै । और.परमसुखतमम्) वहसर्वोत्कृष्टअत्यंतसुखस्वरूपहै । और (नित्यमुक्तस्वभावम्) सदाही अविद्यातत्कार्य्यसे रहितस्वरूपहै । और (सत्यम्) तीनोंकालमेंबाधशून्यहै । और(सूक्ष्मात्सुसूक्ष्मम्) प्रधानादिकोंसे अत्यंतसूक्ष्महै । पुनः (महत्) वहनिर्पेक्षव्यापकहै और (इदं अमृतम्) यहपूर्वोक्ततत्त्वहीमोक्षस्वरूपहै । और [मुक्तमात्रैकगम्यम्] केवलमुक्तपुरुषकरहीजाननेयोग्यहै ॥ और इदं शिवम्) यहहीईश्वररूपहै ॥ (यस्यअंशे) जिसतत्त्वकेमायिकप्रदेशमें (भ्रांतिमात्रैकदेहम्) केवलभ्रममात्रस्वरूप (इदम्) यह (अखिलम्) सर्व (जगत्) प्रपंच[लेशमात्रम्] लेशमात्रस्थितहै । (औरप्रत्यक्) सर्वसे अंतरहै।तथा (ज्योतिः) स्वप्रकाशस्वरूपहै। (अधुना) अब [युक्तितः) श्रुतिअनुसारीतर्कसे (अत्र)इसमें (कथ्यते)निरूपणकियाजाताहै।२४।

❀आत्माऽयंसर्वसंबद्धो भानुभासकउच्यते ।
नित्योऽयमविनाशित्वादुपादेयःकथंभवेत् २५ ॥ ❀

भा०॥(आत्माअयम्)यहआत्मा(सर्वसंबद्धः) सर्वकोसाथसंबन्ध वालाहै । और (भानुभासकः) आदित्यवत्प्रकाशक (उच्यते] श्रुति नेकहाहै॥ और [अविनाशित्वात्] अविनाशिहोनेसे [अयम्] यह आत्मा (नित्यः] नित्यहै । वह [उपादेयः] ग्रहणकेयोग्य [कथम्] किसप्रकार (भवेत्) हो किंतुनहींहोसकता ॥२५॥

❀यआत्मासर्ववस्तूनांयदर्थंसकलंजगत् ॥
आनंदाब्धिः स्वतंत्रोसावनादेयः कथंवद ॥२६॥

भा० (सर्ववस्तूनाम्]सर्वअनात्मपदार्थोंका [यः) जो [आत्मा) स्वरूपहै। और(यत् अर्थम्) जिसकेवास्ते[सकलंजगत्]सर्वजगत् है और जो [आनंदाब्धिः) आनंदकासमुद्रहै।और (स्वतंत्रः)स्वतंत्रहै । (असौ) वहआत्मा (अनादेयः] ग्रहणकेअयोग्य (कथम्] किसप्रकार होसकताहै हेवादिन् [वद] यहतूकथनकर ॥२६॥

❀यदन्यत्वस्तुतत्सर्वंयद्भेदेनरश्रृंगवत ।
सत्तासर्वपदार्थानामनादेयः कथंवद॥२७॥

भा० ॥ (यत्अन्यत्] जिससेभिन्नरूपताकरमानाहुआ [ततसर्वं वस्तु] वहसर्वअनात्मा [यत्भेदे] जिसआत्मासेभिन्नक्रियाहुआ [नर श्रृंगवत) नरकेश्रृंगसमअसत्होजाताहै॥और (सर्वपदर्थानाम] सकल अनात्मपदार्थोंकाजो [सत्ता] स्वरूपहै ! वह [अनादेयः] ग्रहणके अयोग्य [कथम्] किसप्रकारहै [वद] यहतूकथनकर ॥२७॥

❀यद्वशेप्राणिनःसर्वेब्रह्माद्यःक्रमयश्चये ।
ईशानःसर्वभूतानामनादेयःकथंभवेत् ॥२८॥❀

भा०॥ (ब्रह्मादयः) ब्रह्मासेआदिलेकर (क्रमयःच) औरकृमिप पर्यन्त (ये) जो (सर्वे) सर्व (प्राणिनः) प्राणधारीहैं वह (यद्वशे) जिसकेवशमेंवर्ततेहैं । और (सर्वभूतानां) सर्वभूतोंकाजो (ईशानः) नियन्ताहै (अनादेयः) वहअनुपादेय (कथं) किसप्रकार (भवेत) हो किंतुनहींहोसकता ॥२८॥

❀यच्चक्षुःसर्वभूतानांमनसोयन्मनोविदुः ।
यज्ज्योतिर्ज्योतिषां देवोनोपादेयःकथंविभुः ॥२९॥

भा०॥ (यत्) जोआत्मा (सर्वभूतानाम्) सकलभूतोंका (चक्षुः) प्रकाशकहै । और (यत्) जोआत्मा (मनसः) मनकाभी 'मनः' साक्षी है ऐसे (विदुः) ब्रह्मवेत्ताजानतेहैं । और (यत्) जोआत्मा (ज्योतिषां) सूर्य्यादिज्योतियोंकाभी (ज्योतिः) प्रकाशकहै । वह (देव) स्वप्रकाश (विभुः) व्यापक आत्मा (कथं) कैसे (उपादेयःन) उपादेयनहीं किंतु वहउपादेय अर्थात् पुरुषार्थरूपहै ॥२९॥

❀मोदप्रमोदपक्षाभ्यामानंदात्मातमोगतः ।
जीवयत्यखिलाँल्लोकान्नोपादेयःस्वयंकुतः॥३०॥❀

भा० ॥ (आनंदात्मा) आनंदस्वरूपआत्माही (तमोगतः) अज्ञानोपहितहुआ (मोदप्रमोदपक्षाभ्याम्) मोद औरप्रमोद इन दोनों पक्षोंकरके (अखिलान्लोकान्) सर्वलोकोंको (जीवयति) जीवावता है । वह (स्वयं) आप (कुतः) किसहेतुसे (उपादेयःन) पुरुषार्थ रूपनहीं ॥ ३० ॥

❀ यस्यानंदसमुद्रस्यलेशमात्रंजगत्गतम् ।
प्रसृतंब्रह्मलोकादौसुखाब्धिंकःपरित्यजेत् ॥३१॥❀

भा० ॥ (यस्य) जिस (आनंद समुद्रस्य) आनंदसमुद्रका (लेशमात्रं) लेशमात्रआनंद (जगतगतम्) जगत्‌मेंप्राप्तहै और (ब्रह्म लोकादौ) ब्रह्मलोकादिकोंमें (प्रसृतं) फैलाहुआहै । तिस 'सुखाब्धिं' सुखसमुद्रको (कः) कौन (परित्यजेत्) परित्यागकरे किंतुकोईनहीं त्यागता ॥ ३१ ॥

❀हैरण्यगर्भमैश्वर्य्यंयस्मिन्दृष्टेतृणायते ।
सीमासर्वपुमर्थानामपुमर्थःकथंभवेत्॥३२॥❀

भा० ॥ (यस्मिन्दृष्टे) जिसआत्माकेसाक्षात्कारहुए (हैरण्य गर्भऐश्वर्य्यं) हिरण्यगर्भका ऐश्वर्य्य (तृणायते)तृणाकेसमानहोजाता है । औरजो (सर्वपुमर्थानां) सर्वपुरुषार्थोंकी (सीमा) अवधिहै । वह (अपुमर्थः)अपुरुषार्थरूप(कथं) कैसे (भवेत्) हो किंतुनहींहोसकता३२

❀यत्कामाब्रह्मचर्य्यन्तइन्द्रादयःप्राप्तसंपदः ।
स्वस्वभोगंत्यजंत्येवमपुमर्थःकथंनृणाम्॥३३॥❀

भा० ॥ (प्राप्तसंपदः) संपदाकीप्राप्तिवाले (इन्द्रादयः) इन्द्रादिक 'यत्कामाः' जिसआत्माकीकामनावालेहुए (ब्रह्मचर्य्यन्तः) ब्रह्मचर्य्य कोधारणकरतेहुए (स्वस्वभोगम्) अपनेअपनेभोगको (त्यजन्ति) त्यागतेभये । तो (एवम्) इसप्रकार (नृणाम्) मनुष्योंकोवहआत्मा (अपुमर्थः) अपुरुषार्थरूप (कथम्) किसप्रकार होसके किंतुनहींहो सकता ॥ ३३ ॥

❀यद्दृक्षाफलाःसर्वावैदिक्योविविधाक्रियाः।
यागाद्याविहितास्तस्मिन्नुपेक्षावदतेकथम्॥३४॥❀

भा०॥ (सर्वाः) सर्व (वैदिक्यः) वेदोक्त (विविधाः) नाना प्रकारकी (यागाद्याः) यागादिरूप (क्रियाः) क्रियायें (विहिताः) जो विधानकीहैं। कैसीवहक्रियायेंहैं (यद्दृक्षाफलाः) जिसआत्माके दर्शनकीइच्छाहीफलहै जिन्होंका (तस्मिन्) तिसआत्मामें 'ते' तुझ को [कथम्] किसप्रकार [उपेक्षा] अनुपादेयताहै [वद] यहतू कथन कर॥ ३४॥

❀यद्दृष्टिमात्रतःसर्वाःकामाद्याःदुःखभूमयः।
विनश्यन्तिक्षणेनासावुपादेयःकथंनते॥३५॥❀

भा०॥ [यत्दृष्टिमात्रतः] जिसकेदर्शनमात्रसे [कामाद्याः] कामादिक [सर्वाः] सर्व [दुःखभूमयः] दुःखकेकारण 'क्षणेन' एक क्षणमात्रसे 'विनश्यंति' विनाशहोजातेहैं 'असौ' वहआत्मा 'ते' तुझको 'कथम्' किसप्रकार 'नउपादेयः' पुरुपार्थरूपनहीं यहतूकथन कर॥ ३५॥

❀अहलादरूपतायस्यसुषुप्तेसर्वसाक्षिकी।
तत्रोपेक्षाभवेद्यस्यतदन्यःस्यात्पशुः कथम्॥३६॥❀

भा०॥ 'यस्य' जिसआत्माकी 'अहलादरूपता' आनंदस्वरूपता 'सुषुप्ते' सुषुप्तिमें 'सर्वसाक्षिकी' सर्वपुरुषोंकेअनुभवसिद्धहै। 'तत्र' तिसआत्माविषयक 'यस्य' जिसको 'उपेक्षाभवेत्' अनुपादेयताहो 'तत्अन्यः' तिससेभिन्न 'कथम्' औरकिसप्रकार 'पशु स्यात्' पशुहोगा किंतुवहीपशुहै॥ ३६॥

❀विरुद्धयोरभेदोहिनवेदेनप्रमीयते।
अनन्यगतिकत्वेनमानान्तरस्यबाधनम् ॥३७॥❀

भा० ॥ 'विरुद्धयोः' विरुद्धधर्मवालोंका 'अभेदः' एकत्व 'हि' जिसकारणसे 'वेदेन' वेदने 'नप्रमीयते' नहींबोधनकियाहैइसीसे 'अनन्यगतिकत्वेन' अन्यगतिकाअभावहोनेकर 'मानांतरस्य' अन्यप्रमाणका 'बाधनं' बाधयुक्तहै अन्यथानहीं ॥ ३७ ॥

❀ब्रह्माऽज्ञानाज्जगज्जन्मब्रह्मणोऽकारणत्वतः।
अधिष्ठानत्वमात्रेणकारणंब्रह्मगीयते ॥३८॥

भा० ॥ 'ब्रह्मणः' ब्रह्मको 'अकारणत्वतः' अकारणहोनेसे 'ब्रह्मअज्ञानात्' ब्रह्मकेअज्ञानसे 'जगत्जन्म' प्रपंचकीउत्पत्तिहोती है। और 'अधिष्ठानत्वमात्रेण' प्रपंचकाअधिष्ठानमात्रहोनेकर 'कारणं ब्रह्म' ब्रह्मकारणहै। ऐसा [गीयते] वेदान्तोंमेंकथनकियाहै ॥३८॥

❀प्रश्नस्यज्ञानपूर्वत्वादाक्षेपेप्रतियोगिधीः।
अवश्यंभाविनीपूर्वाविरोधःस्यादितोऽन्यथा ॥३९

भा० ॥ [प्रश्नस्य] प्रश्नको [ज्ञानपूर्वत्वात] ज्ञान पूर्वकहोनेसे ज्ञातमेंप्रश्नव्यर्थहै । और [आक्षेप] निषेधमें [प्रतियोगिधीः] प्रतियोगिज्ञान (अवश्यंभाविनीपूर्वा]अवश्यपूर्वहोताहै ॥ [इतः] इससे 'अन्यथा' अन्यप्रकारमानेहुए'विरोधःस्यात' विरोधहोगा।३९

❀साक्षात्कृतेत्वधिष्ठानेसमनन्तरनिश्चितिः
अध्यस्यमानंनास्तीतिबाधइत्युच्यतेबुधैः ॥४०॥❀

भा० ॥ [तुअधिष्ठानेसाक्षात्कृते] अधिष्ठानकेसाक्षात्कार

हुएपुनः [समनंतरनिश्चितिः] तिससेअनंतरजोनिश्चयउत्पन्नहोता हैकि [अध्यस्यमाने] कल्पितपदार्थ [नास्ति] अधिष्ठानमेंकालत्रय मेंनहींहै [बाधःइति] यहीबाध [बुधैः] विद्वानोंने [उच्यते] कथन कियाहै ॥ ४० ॥

❀उपमर्द्यस्वभावत्वमविद्यायाविरोधिता ।
तत्कर्तृत्वंतुविद्यायाःप्रकाशतमसोरिव॥४१॥❀

भा०॥ [उपमर्द्यस्वभात्वे] उपमर्दकेयोग्यस्वभाव (अविद्यायाः] अविद्यानिष्ठ (विरोधिता) विरोधिपनाहै । (तु) और (तत्कर्तृत्वं) उपमर्दकत्वरूपविरोधिपना [विद्यायाः] विद्यानिष्ठहै ॥ [प्रकाश तमसोःइव) जैसेप्रकाशऔरअन्धकारका विरोधहै ॥ ४१ ॥

❀कल्पितोप्युपदेष्टास्याद्यथाशास्त्रंसमादिशेत् ।
नचाविनिगमोदोषोऽविद्यावत्त्वेननिर्णयात्॥४२॥

भा०॥'यथाशास्त्रम्' जैसेकल्पितभीशास्त्र 'स्यात्'बोधनकरता है।तैसे'कल्पितःअपि' कल्पितभी 'उपदेष्टा' आचार्य 'समादिशे' सम्यक्उपदेशकरसकताहै। 'अविद्यावत्त्वेन' शिष्यकोअज्ञानीहोनेकर 'निर्णयात्' निर्णयहोनेसे 'अविनिगमःदोषःनच' विनिगमनाविरह दोषनहींप्राप्तहोसकता ॥४२॥

❀उपाधिसंश्रयोह्यात्माआनंदत्वंतदाश्रयः ।
विशिष्टशक्यपक्षेतुव्यक्तिर्वाशक्तिगोचरः ॥४३॥❀

भा० ॥ 'विशिष्टशक्यपक्षे' आनंदत्वविशिष्टआनंदआनंदपद कावाच्यहै इसपक्षमें 'उपाधिसंश्रयः' उपाधियुक्तहुआ 'हिआत्मा'

आत्माही 'आनंदत्वं' आनंदत्वधर्म 'तु' और 'तदाश्रयः' तिसका आश्रयआनंदव्यक्तिरूपहै 'वा' अथवा 'व्यक्तिः' आनंदव्यक्ति 'शक्तिगोचरः' आनंदपदकीशक्तिकाविषयहै । इसपक्षमेंभीकोईदोष नहीं ॥ ४३ ॥

॥ आनंदरूपमात्मानंसच्चिदद्वयतत्त्वकम् ।
अपूर्वादिप्रमाणोक्तंप्राप्याहंतद्वपुःस्थितः ॥४४॥

भा० ॥ 'अपूर्वादिप्रमाणोक्तम्' श्रुतिआदिकप्रमाणकर सिद्ध 'आनंदरूपम्' आनंदस्वरूपतथा (सच्चिदद्वय तत्त्वकम्) सतचित् अद्वयस्वरूप (आत्मानम्) आत्माको (प्राप्य) साक्षात्कारकरके (तद्वपुः) आनंदादिस्वरूपही (अहम्) मैं (स्थितः) स्थित हुआहूं ॥ ४४ ॥

॥ योहमद्वयवस्त्वेवसद्वयेदृढनिश्चयः ।
प्राप्यचानंदमात्मानंसोहमद्वयविग्रहः ॥४५॥

भा० (यःअहम्)जोमैं (अद्वयवस्तुएव) अद्वैतवस्तुही [सद्वये] द्वैतविशिष्टमें [दृढनिश्चयः] दृढअभिमानवालाहुआथा [सःअहम्] सोमैं (च)पुनः (आनंदंआत्मानम्) आनंदस्वरूपआत्माको (प्राप्य) प्राप्तहोकर (अद्वयविग्रहः) अद्वैतस्वरूपस्थितहुयाहूं ॥ ४५ ॥

॥ नास्तिब्रह्मसदानंदमितिमेदुर्मतिःस्थिता ।
क्वगतासानजानामियदाऽहंतद्वपुःस्थितः ॥४६॥

भा० ॥ (सत्आनन्दम्) सत्यरूपआनन्दस्वरूप (ब्रह्मनास्ति) ब्रह्मनहींहै । (इतिदुर्मतिः) यहदुष्टबुद्धि (मेस्थिता) मुझमेंस्थितथी।

(यदा) जिसकालमें [अहम्] मैं (तद्वपुः)सत्यादिस्वरूप (स्थितः) स्थितहुआ [साक्वगता) वहकहांगई (नजानामि) यहमैंनहीं जानताहूं ॥ ४६ ॥

*पूर्णानन्दाद्वयेतत्त्वेमेर्वादिजगदाकृतिः ।
बोधेऽबोधकृतैवासीदबोधःक्वगतोऽधुनाः ॥४७॥*

भा० ॥ [पूर्णानंदाद्वयेतत्त्वे) पूर्णतथाअद्वयानंदस्वरूपमें [मेर्वादिजगत्आकृतिः) सुमेरुआदिकजगत्काआकार [अबोधकृता एवआसीत्) अज्ञानकृतहीथा (अधुना) अब (बोधे) आत्म साक्षात्कारकेहुए (अबोधः) वहअज्ञान (क्वगतः) कहांगया ॥४७॥

*संसाररोगसंग्रस्तोदुःखराशिरिवापरः ।
आत्मबोधसमुन्मेषादानन्दाब्धिरहोस्थितः॥४८॥*

भा० ॥ (संसाररोगसंग्रस्तः) जो मैं संसाररूप रोग कर सम्यक् ग्रसाहुआथा और (दुःखराशिःइवअपरः) दुःखराशिकी न्याईनिकृष्टथा [आत्मबोधसमुन्मेषात्] अबआत्म साक्षात्कारके सम्यक्उदयहोनेसे (आनंदाब्धिः) आनंदकासमुद्र (स्थितः) मैं स्थित हुआहूं (अहो) यहबहुतआश्चर्यहै ॥ ४८ ॥

*योऽहमल्पेपिविषयेरागवानतिविह्वलः
आनन्दात्मनिसंप्राप्तेसरागःक्वगतोऽधुना ॥४९॥*

भा० ॥ (यःअहम्) जोमैं (अल्पेअपिविषये) तुच्छविषयजन्य सुखमेंही (रागवान्) प्रीतिवालाथा (अतिविह्वलः) अत्यंतव्याकुल हुआथा (अधुना) अब (आनंदात्मनिसंप्राप्ते) आनंदस्वरूपआत्माके सम्यक्प्राप्तहुए (सरागः) वहराग (क्वगतः) कहांचलागया ४९ ॥

भा० ॥ [अबोधाख्यतस्करैः] अज्ञानसंज्ञिकचोरोंने [देहे) शरीर में (अहंमाननिगडैः) अहंअभिमानरूपीबन्धनोंकर (चिरबद्धः) दीर्घ कालसेमैंपूर्वबांधाहुआथाअब(देव) हेस्वप्रकाशात्मन् (तद्दर्शनातएव) तेरेसाक्षात्कारमात्रसे (बन्धनम्) वहबन्धन (क्षणात्त्रुटितं) एक क्षणमात्रसेतूटगया ॥ ५३ ॥

❋विशुद्धोऽस्मिविमुक्तोऽस्मिपूर्णात्पूर्णतमाकृतिः।
असंस्पृश्यतमात्मानमन्तर्ब्रह्माण्डकोटयः॥५४॥❋

भा० ॥ (विशुद्धःअस्मि) मैंअविद्यादिमलसेरहितहूं। (विमुक्तः अस्मि) औरबंधनसेरहितहूं॥(पूर्णात्पूर्णतमाकृतिः) औरआकाशादि सेअतिपूर्णस्वरूपहूं॥ [तंआत्मानम्] तिसमेरेस्वरूपको (असंस्पृश्य) नस्पर्शकरके (ब्रह्माण्डकोटयः) अनंतब्रह्मांड (अन्तः) मुझमेंनिवास करें तोमेरीक्याहानिहै ॥ ५४ ॥

❋तत्त्वमादिवचोजालमावृत्तमसकृत्पुरा।
इदानींतत्श्रवादेवपूर्णानन्दोऽव्यवस्थितः॥५५॥❋

भा० ॥ (पुरा) पूर्व (तत्त्वंआदिवचः) तत्त्वं आदिक वचनोंका (जालं) समूहअर्थात्संपूर्णवेदका (असकृत्) अनेक वार (आवृत्तं) मैंनेअभ्यासकिया (इदानीं) अब (तत्श्रवात्एव) वेदांत विचारजन्यसाक्षात्कारसेही (पूर्णानंदोऽव्यवस्थितः)पूर्णआनन्दस्वरूप मैंस्थितहुआहूं ॥ ५५ ॥

❋आत्मसत्तैवद्वैतस्यसत्तानान्यायतस्ततः।
आत्मन्येवजगत्सर्वंदृष्टंदृष्टंश्रुतेश्रुतम्॥५६॥❋

❀यस्यमेजगतांकर्तुःकार्यैरपहृतात्मनः ।
आविर्भूतपरानन्दआत्माप्राप्तःश्रुतेर्बलात् ॥५०॥

भा० ॥ पूर्व (यस्यमे) जिसमुझ (जगतांकर्तुः) सकलजगत्के अधिष्ठान (कार्यैःअपहृतात्मनः) तथाकार्याऽध्यासोंकरआच्छादित स्वरूपको (श्रुतेःबलात्) अवश्रुतिजन्यबोधसे (आविर्भूतपरानंदः) निरावरणपरमानंद (आत्माप्राप्तः) स्वरूपप्राप्तहुआ ॥ ५० ॥

❀परामृष्टोऽसिलब्धोऽसिप्रोषितोऽसिचिरंमया ।
इदानींत्वामहंप्राप्तोनत्यजामिकदाचन ॥५१॥

भा० ॥ (मया) मेरेसे (चिरम्) दीर्घकालसे (प्रोषितःअसि) तूवियुक्तथा (परामृष्टःअसि) अवतूपरामर्शक्रियागयाहै । इसीसे (लब्धःअसि) तूप्रत्यक्तहुआहै । (इदानीं) अव (त्वांअहंप्राप्तः) तुझ कोमैंप्राप्तहुआ (कदाचन) कभी(नत्यजामि) नहींत्यागताहूं ॥५१॥

❀त्वांविनानिःस्वरूपोऽहंमांविनात्वंकथंस्थितः ।
दिष्टयेदानींमयालब्धोयोऽसिसोऽसिनमोऽस्तुते ॥५२

भा० ॥ (त्वांविना) तेरेविना (अहंनिःस्वरूपः) मैनिःस्वरूपहूं। और (मांविना) मेरविना (त्वं) तू (कथंस्थितः) कैसेस्थितहोसकता हैं । (दिष्टया) वडाहर्षहै (इदानीं) अव (मया) मेरेकर (लब्धः) तू लब्धहुआहैं (यःअसि) जोतूहैं (सःअसि) सोतूहैं (तेनमःअस्तु) तेरेताईनमस्कारहो ॥ ५२ ॥

❀ देहेऽहंमाननिगडैर्वद्धोऽवोधाख्यतस्करैः ।
चिरंतेदर्शनादेवत्रुटितं वन्धनंक्षणात् ॥ ५३ ॥❀

भा० ॥ [अबोधाख्यतस्करैः] अज्ञानसंज्ञिकचौरोंने [देहे) शरीर में (अहंमाननिगडैः) अहंअभिमानरूपीबन्धनोंकर (चिरंबद्धः) दीर्घ कालसेमैंपूर्वबांधाहुआथाअब(देव) हेस्वप्रकाशात्मन् (तेदर्शनात्तएव) तेरेसाक्षात्कारमात्रसे (बन्धनम्) वहबन्धन (क्षणात्त्रुटितं) एक क्षणमात्रसेतूटगया ॥ ५३ ॥

※विशुद्धोऽस्मिविमुक्तोऽस्मिपूर्णात्पूर्णतमाकृतिः।
असंस्पृश्यतमात्मानमन्तर्ब्रह्माण्डकोटयः॥५४॥ ※

भा० ॥ (विशुद्धः अस्मि) मैंअविद्यादिमलसेरहितहूं। (विमुक्तः अस्मि) औरबंधनसेरहितहूं॥ (पूर्णात्पूर्णतमाकृतिः) औरआकाशादि सेअतिपूर्णस्वरूपहूं॥ [तंआत्मानम्] तिसमेरेस्वरूपको (असंस्पृश्य) नस्पर्शकरके (ब्रह्माण्डकोटयः) अनंतब्रह्मांड (अन्तः) मुझमेंनिवास करैं तोमेरीक्याहानिहै ॥ ५४ ॥

※तत्त्वमादिवचोजालमावृत्तमसकृत्पुरा।
इदानींतत्श्रवादेवपूर्णानन्दोऽव्यवस्थितः ॥५५॥ ※

भा० ॥ (पुरा) पूर्व (तत्त्वंआदिवचः) तत्त्वं आदिक वचनोंका (जालं) समूहअर्थात्संपूर्णवेदका (असकृत्) अनेक वार (आवृत्तं) मैंनेअभ्यासकिया (इदानीं) अब (तत्श्रवात्एव) वेदांत विचारजन्यसाक्षात्कारसेही (पूर्णानंदोऽव्यवस्थितः) पूर्ण आनन्दस्वरूप मेंस्थितहुआहूं ॥ ५५ ॥

※आत्मसत्तैवद्वैतस्यसत्तानान्यायतस्ततः।
आत्मन्येवजगत्सर्वंदृष्टंदृष्टंश्रुतंश्रुतम् ॥५६॥※

भा० ॥ (यतः) जिसकारणसे (द्वैतस्यसत्ता) द्वैतकीजोसत्ताहै वह (आत्मसत्ताएव) आत्मसत्ताहीहै (नअन्या) भिन्नसत्तानहीं ॥ (ततः)तिसीकारणसे (आत्मनिदृष्टेएव)आत्माकेदर्शनहुएनिश्चयकर (जगत्सर्वंदृष्टम्) सर्वजगत्देखाजाताहैऔर [श्रुते] आत्माकेश्रवण हुए (श्रुतं) सर्वजगत्सुनाजाताहै ॥ ५६ ॥

॥ सत्यंज्ञानमनन्तंचपूर्णानन्दविग्रहम् ।
मान्त्रवर्णिकमात्मानंविनिश्चित्यविमुच्यते॥५७॥ ॥

भा० ॥ (सत्यं) सत्यऔर (ज्ञानं) चेतनऔर (अनंतं) त्रिविध परिच्छेदरहित (च) और (पूर्णानंदविग्रहम्) पूर्णआनंदस्वरूप [मान्त्रवर्णिकम्]मंत्रप्रतिपाद्य [आत्मानम्] आत्माको [विनिश्चित्य] साक्षात्कारकरके [विमुच्यते] विशेषकरमुक्तहोताहै ॥ ५७ ॥

॥ कर्ममूलमनर्थानांतच्चज्ञानेनबाध्यते ।
क्षीयन्तेचाऽस्यकर्माणितथाचश्रुतिशासनम् ॥५८॥

भा० ॥ [अनर्थानाम्) जन्मादिअनर्थोंका [कर्ममूलम्] मूलजोकर्म है ॥ [तत्च] पुनःवहकर्म [ज्ञानेन] ज्ञानकर [बाध्यते] बाधितहोजाताहै (तथाच) तैसेही [श्रुतिशासनम्] श्रुति मेंकहाहै [च अस्य] औरइसब्रह्मवेत्ताके [कर्माणि] कर्म [क्षीयन्ते] क्षयहोजातेहैं ।इससेपुनः वहसंसारकोनहींप्राप्तहोता। किंतुस्वस्वरूप भूतमहिमामेंअवस्थितहोताहै ॥५८॥

दो० ॥ ब्रह्मरिपिग्रहअञ्जलखसंवतअश्विनमास ।
सितदशमींअहिकलानिधिइतियहवाकविलास ॥१॥
रघुनन्दननन्दनपुरेभयोरंभयहजान ।
लवपुरमेंपूरनभयोबुधजनकोसुखदान ॥ २ ॥

शा० ॥ यःप्रह्लादपरानुरागवशगः स्तम्भेनृसिंहाकृतिः ।
त्रेतायामसुरेशनाशनपटूरामोऽभिरामोवपुः ।
कंसादीन्हननायविश्वजनकःकृष्णोऽभवद्यः प्रभुः ।
योवैश्रीगुरुनानकः कलियुगेतंदेवदेवंभजे ॥ १ ॥

इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्यस्वामिप्रकाशाऽनंदयतिवरविरचित
वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावलीमूलकारिकायाःश्री१०८ मन्निर्मलसूता
वतंन्सब्रह्मविदुत्तम हरिहरिपूज्यपादशिष्येण गुरुदत्तसिंह
साधुनाविरचिताशब्दार्थबोधिनीभाषाटीकासमाप्ता॥

॥ ओ३म् ॥

॥ श्रीरामाऽर्पणमस्तु ॥

—०—



भा० ॥ (यतः) जिसकारणसे (द्वैतस्यसत्ता) द्वैतकीजोसत्ताहै वह (आत्मसत्ताएव) आत्मसत्ताहीहै (नअन्या) भिन्नसत्तानहीं ॥ (ततः)तिसीकारणसे (आत्मनिदृष्टेएव)आत्माकेदर्शनहुएनिश्चयकर (जगत्सर्वंदृष्टम्) सर्वजगत्देखाजाताहैऔर [श्रुते] आत्माकेश्रवण हुए (श्रुतं) सर्वजगत्सुनाजाताहै ॥ ५६ ॥

*सत्यंज्ञानमनन्तंचपूर्णानन्दविग्रहम् ।
मान्त्रवर्णिकमात्मानंविनिश्चित्यविमुच्यते॥५७॥*

भा० ॥ (सत्यं) सत्यऔर (ज्ञानं) चेतनऔर (अनंतं) त्रिविध परिच्छेदरहित (च) और (पूर्णानंदविग्रहम्) पूर्णआनंदस्वरूप [मान्त्रवर्णिकम्]मंत्रप्रतिपाद्य [आत्मानम्] आत्माको [विनिश्चित्य] साक्षात्कारकरके [विमुच्यते] विशेषकरमुक्तहोताहै ॥ ५७ ॥

*कर्ममूलमनर्थानांतच्चज्ञानेनबाध्यते ।
क्षीयन्तेचाऽस्यकर्माणितथाचश्रुतिशासनम् ॥५८॥

भा० ॥ [अनर्थानाम्) जन्मादिअनर्थोंका [कर्ममूलम्] मूलजोकर्म है ॥ [तत्च] पुनःवहकर्म [ज्ञानेन] ज्ञानकर [बाध्यते] बाधितहोजाताहै (तथाच) तैसेही [श्रुतिशासनम्] श्रुतिमेंकहाहै [चअस्य] औरइसब्रह्मवेत्ताके [कर्माणि] कर्म [क्षीयन्ते] क्षयहोजातेहैं ।इससेपुनः वहसंसारकोनहींप्राप्तहोता। किंतुस्वस्वरूपभूतमहिमामेंअवस्थितहोताहै ॥५८॥

दो० ॥ ब्रह्मरिपिग्रहअञ्जलखसंवतअश्विनमास ।
सितदशमीअहिकलानिधिइतियहवाकविलास ॥१॥
रघुनन्दननन्दनपुरेभयोरंभयहजान ।
लवपुरमेंपूरनभयोबुधजनकोसुखदान ॥ २ ॥

शा० ॥ यःप्रह्लादपरानुरागवशगः स्तम्भेनृसिंहाकृतिः ।
त्रेतायामसुरेशनाशनपटूरामोऽभिरामोवपुः ।
कंसादीन्हननायविश्वजनकःकृष्णोऽभवद्यः प्रभुः ।
योवैश्रीगुरुनानकः कलियुगेतंदेवदेवंभजे ॥ १ ॥

इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्यस्वामिप्रकाशाऽनंदयतिवरविरचित वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावलीमूलकारिकाणांःश्री१०८ मन्निर्मलसृता वतंस्सब्रह्मविदुत्तम हरिहरिपूज्यपादशिष्येण गुरुदत्तसिंह साधुनाविरचिताशब्दार्थबोधिनीभाषाटीकासमाप्ता॥

॥ ओ३म् ॥

॥ श्रीरामाऽर्पणमस्तु ॥



अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति
कर	०	२	१२
दया	द्या	८	१०
क	का	१२	८
पूर्वा	पूर्व	१२	१६
पदार्थों	पदों	१३	५
त्त	त्ता	१६	१२
०	से	१८	९
य	प	१९	७
विद्वन्	विद्वान्	२०	६
से	स	१	९
० सूचकइसलक्षणयुक्त सूत्रोंके		४	१२
त्त	त्ता	५	१६
०	यहां	७	१९
न	न्	१५	५
र्द्धे	द्ध	१५	१७
।	र	१६	१५
त	त्त	२३	९
द्ध	द्धि	२५	३
प्र	प्रा	२५	८
ह	हो	२५	८
प्र	प्रा	२५	९
है	०	२६	९
ए	ऐ	२७	१३
जे	तै	३४	१९
ति	वि	३७	२
न्ये	न्यो	३८	२२
ल्य	त्स्य	५१	५
स	से	६३	६
छा	छ	६४	८
वानी	मानी	६६	८
दे	हे	६६	१६
श	श्य	६८	१३
न	स	६८	१५
घा	धा	७७	१७
तैसी	तैसी	७९	१०
द	दे	७९	१५
०	व	७९	२२
किया	क्या	८०	१८
मकों	मेंको	८०	१९
त्य	स्य	८१	२
त	तु	८१	११

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति
य	व	८१	११
प्र	प्रा	८२	२०
या	पा	८२	२२
मेंभी	मेंभी	८८	९
कसें	केसं	९२	२१
मेंकौ	मेंको	९४	२
ह	है	९४	९
हि	ह	९६	६
विंभवि	विं	९८	१२
हि	ह	९८	२२
०	र	१००	१०
व्यव	व्याव	१००	१२
त्रै	त्रि	१०१	१०
व्यव	व्याव	१०१	१३
एक	०	१०२	१५
द्वितीय	प्रथम	१०६	२०
भा	गरा	१०७	१०
की	का	१०८	२२
ज्ञ	ज्ञा	१११	१५
ज्ञ	ज्ञा	११६	१५
को	की	११८	६
या	या	११९	१३
क	०	११९	१५
क्तुश्र	क्तश्रु	१२५	२
त	ता	१२५	११
०	है	१२५	१२
त	तू	१३९	११
द	न	१४३	६
किंतु	याते	१४४	९
अथ	अर्थ	१४६	२
ओ	औ	१४६	११
ओ	औ	१४६	१८
यीं	यों	१५०	८
सस	सम	१५१	७
का	क	१६४	६
गय	गा	१६४	११
०	ट	१६४	१३
तित्त	त्तित्व	१६४	१४
०	प्र	१६५	५
य	व	१६५	११
०	निन	१६६	४
द	द्	१६६	२१
छि	छि	१६८	[illegible]
भ्य	भग	११८	[illegible]

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
तैते	तैसे	१६९	११
ा	ज्ञा	१७२	१३
ा	ज्ञा	१७५	२२
तन्च	तंत्र	१७७	१४
ह	है	१७८	१
०	त	१७८	१७
०	व	१७८	१९
०	को	१८९	२२
ता	त	१९४	१७
०	र	१९४	२२
रप	ल्य	१९७	१५
का	क	२०२	१९
म्टि	मृ	२०९	१
व	वि	२०९	१५
व	वि	२०९	१९
त्म	त्मा	२१०	२
नि	सि	२१०	२२
मानेहुए	०	२१३	१६
०	मानेहुए	२१३	१७
आ	अ	२१९	१४
ग्र	गृ	२२७	११
ग्र	गृ	२२७	१२
०	वि	२३१	२२
छे	च्छे	२३२	१२
सतं	स्तं	२३६	२
नि	ति	२३८	६
च	चि	२३८	८
गा	णि	२४१	९
आत्म	आत्मा	२४२	१६
त	तू	२४६	५
ध्य	व्य	२४९	१
०	य	२५०	२१
अ	आ	२५५	२२
घ	ध	२५७	७
क	के	२५८	९
प	०	२५८	११
त्म	त्मा	२५८	१२
सुमु	मुमु	२५८	२१
प्र	प्रा	२६४	७
क	०	२६६	१०
श्य	शय	२७१	१
र्मे	र्भे	२७४	८
ना	न	२८६	१५
न	न्	२९१	१७

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति
त्मा	त्म	२१६	६
करता	करणता	२१८	१४
त्क्त	त्यक्त	२१८	१६
कृत्तं	कर्तृ	२१९	२२
त्य	त्प	३११	७
अ	आ	३१४	२२
यों	क्यों	३१९	४
संभंति	संभवति	३२३	१०
अनुप	अनुपप	३२५	११
अभे	अभेद	३२५	१७
अनुग	अनुगत	३२९	१०
त्य	त	३२९	११
त	ता	३४२	११
द	दू	३४४	१
त	०	३४८	१५
थोभ	थभे	३४८	१६
त्मा	त्म	३५०	१५
श	श्य	३५२	१०
०	न	३६३	१३
०	कि	३६८	११
द्वि	द्वि	३७३	१९
ह्मन	न्नल	३७७	१८
प	पि	३७८	१३
०	य	३७९	६
०	प्रथम	३८४	१०
प्रथम	०	३८४	११
द्ध	घ	३८६	५
सां	सा	३८७	१६
या	क्या	३९१	६
म	०	३९३	१
०	अ	३९३	१३
व	स्व	३९४	८
०	म	३९४	२२
वु	बु	३९६	६
क	०	३९९	७
०	य	४००	१४
अपा	आय	४००	१६
प्रा	म	४००	१८
०	वा	४०५	१७
•	के	४०८	२
व्य	व्य	४२५	२२
भंभे	संभवे	४२६	१८
यों	याँ	४२६	१९
आनं	अनानं	४३१	१९

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
०	न	४३८	४
ध्मा	ध्या	४४०	९
पा	प्या	४४२	१८
द्वे	द्वे	४४७	४
ति	ग्ग	४५३	१३
०	में	४५४	९
द्धे	दृश्ये	४५७	७
द्दु	द्र	४५६	१३
द्धि	द्ध	४६४	५
रचा	रचना	४६४	६
चि	धि	४६६	६
द	द्द	४७६	१२
ज्च	ञ्च	४७७	१५
०	र	४७७	२२
अ	आ	४८१	१८
माण	णाम	४८३	३
त	ता	४८६	१
तृ	द्धि	४८६	१२
आर	और	४६७	६
त्मा	त्म	४६५	१
०	मा	४६७	२०
जम्य	जन्य	५००	१२
मुसु	मुमु	५०१	१६
त्यीव	त्यवि	५०२	२२
ति	त	५०५	१६
न्त	न्ते	५१२	११
अ	०	५१३	११
तत्वे	तत्त्वे	५१४	११
चेत	चते	५१४	१८
मे	में	५१५	२०

मूल कारिका

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
य	०	३	१२
मात	माति	७	५
टा	टो	८	६
अत्	तत्र	६	३
त	त्	६	७
ग	ग्	६	६
त	त्	६	१२
को	के	१०	३
०	त्	१५	१४